

श्रीमते रामानुजाय नमः

नालायिरा दिव्यप्रबंधम्

24 प्रबंधों के सार के साथ 108 श्रीवैष्णव दिव्यदेशों की झांकी



संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

श्रीमते रामानुजाय नमः

नालायिर दिव्यप्रबंधम्

24 प्रबंधों के सार के साथ **108** श्रीवैष्णव दिव्यदेशों की झांकी



संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

Nalayira Divyaprabandham

First Edition : 2012

Author :
Srikrishna Prapnnachari , Ph. D.
1-D Takshashila Apartment,
Abhaya Khand 3 Indirapuram, Pin 201010
Prapnnachari@rediffmail.com

Available at :
1. 1-D Takshashila Apartment, Abhaya Khand 3
   Indirapuram, Pin 201010
   www.myswamyjee.in
2. Sri Vaishnavasri, 214,East Uthara Street
   Srirangam, Trichy-620006.
   Ph:0431 2434398, 98842 89887, 9042453934,
   www.srivaishnavasri.com
3. Uttaradhi Mutham, East Mada Street, Varadraj Perumal
   Temple, Kanchipuram, 9789368941

ISBN 978 - 93 - 5067 - 885 - 5
Printed Copies : 500
Rs. 100/= Postage Extra

Printed at :
Sri Ranganachiyar Achagam, 214 East Uthara Street,
Srirangam, Trichy-620006.
Ph: 0431 2434398

Author's other published Titles :
1. The Crest Jewel : *Srimadbhagwat Mahapuran* with *Mahabharat* (English) ISBN 978 -81-7525-855-6
2. Thiruppavai (Hindi)

श्रीमते रामानुजाय नमः

समर्पण

भक्तामृतं विश्वजनानुमोदनम्सर्वार्थदं श्रीशठकोपवाङ्गमयम्।
सहस्रशाखोपनिषत्समागम्नमाम्यहं द्राविड़वेदसागरम्।।

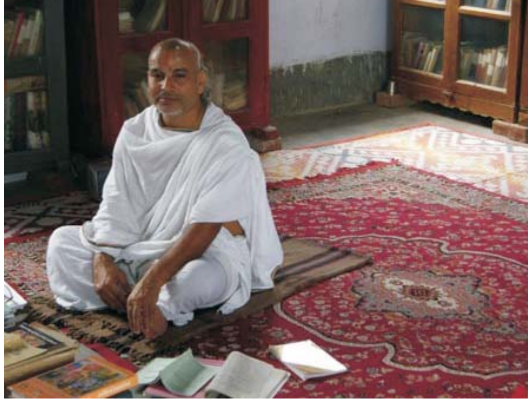


श्रीमद्भगवत पराङ्कुशाचार्य स्वामी जी

कौंडिन्यगोत्र सरसीरूह बालभानुम्।श्रीरंगदेशिक पादाब्ज रसैक भृंगम।
श्रीराजेन्द्रसूरी चरणाश्रितमप्रमेयम। श्रीमत्पराङ्कुशगुरूं शरणं प्रपद्ये।



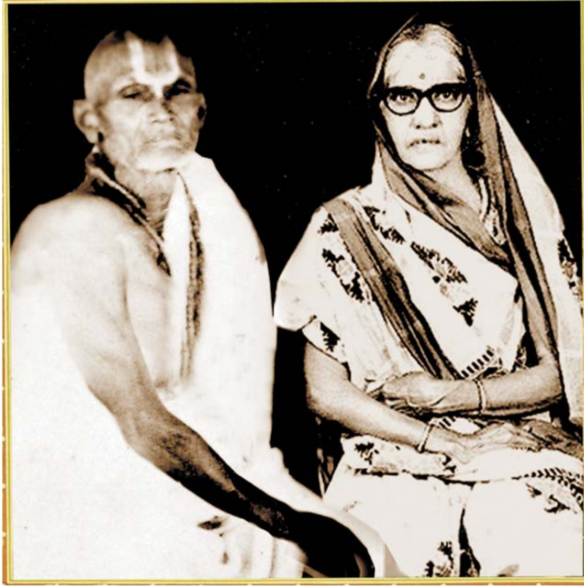
अनन्तश्रीविभूषित स्वामी रंगरामानुजाचार्य



108 श्री स्वामी हरेरामाचार्य

श्रीमन्तौ महान्तौ प्रणमामि मूर्ध्ना

श्रीमते रामानुजाय नमः



पिता श्रीराघवा चारी   माता श्रीमती सकलमती देवी

श्रीमद्भगवतो पराङ्कुशगुरोः पदरजस्य अनुचरम्।
भजाम्यऽहम्मातुः पितुः उभयोः पादारविन्दम् ।।

विषय सूची

श्रीमते रामानुजाय नमः
दिव्यप्रबंधम परिचय

शान्तानन्तमहाविभूति परमं यद्ब्रह्मरूपं हरे
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम्।
(वरदवल्लभ स्तोत्र ः श्रीयामुनाचार्य स्वामी)

अनन्त गुण विभूति विभूषित ब्रह्म का प्रिय रूप अर्चामूर्ति में अत्यंत प्रिय एवं अद्भुत होता है।

व्यूह पर वैभवन व्यापहुँ कौन पाते यत्न से
भगवान अर्चा रूप धर कर जनन से मिल सुगम से।।
(अर्चागुणगान ः श्री पराङ्कुशाचार्य स्वामी)

भगवान चार परात्पर स्वरूप 'परब्रह्म', 'व्यूह यानी वासुदेव संकषण प्रद्युम्न तथा अनिरूद्ध', 'विभव यानी विशेष अवतार जैसे राम कृष्णादि', तथा 'सर्वव्याप्त यानी अर्न्तयामी' से कहीं अधिक सुगम एवं सुलभ होकर अर्चा रूप में मंदिरों में विराजते हैं। श्रीवैष्णवों में पूज्य गौरवशाली पूर्वजों की दो दीर्घा है। पहली दीर्घा बारह आळवार संतों की है तथा दूसरी दीर्घा आळवार संतो के बाद के आचार्यगणों की है। बारह आळवार संतों का जीवनकाल द्वापर से कलियुग तक माना जाता है। इनमें से एक आळवार 'आंडाल' नारी वर्ग की हैं जो मां लक्ष्मी के अवतार हैं। बारह आळवार संत के नाम हैं ः पोय्गै आळवार (सरोयोगी), भूतद आळवार (भूतयोगी), पेयआळवार (महयोगी), तिरूमळिसै आळवार (भक्तिसार स्वामी), नम्माळवार (शठकोप स्वामी), मधुराकवि आळवार, कुलशेखरआळवार, पेरिय आळवार (विष्णुचित्त स्वामी), आंडाल, तोंडराडिप्पोडि आळवार (भक्तांघ्रिरेणु स्वामी), तिरूप्पण आळवार (मुनिवाहन या योगीवाहन स्वामी), तथा तिरूमंगै आळवार (परकाल स्वामी)। सभी बारह आळवार संतों के वैभव का बखान अनुगत अध्याय में किया गया है। वर्तमान आचार्यो की परंपरा श्रीनाथमुनि से प्रारंभ होती है। श्री यामुनाचार्य, श्री रामानुजाचार्य आदि संतगण आचार्य की कोटि में आते हैं। 'स्वामी' एक सम्मान सूचक शब्द है जो प्रसंगवश भगवान के लिये भी प्रयोग में आता है तथा वरदराज भगवान को वरदराज स्वामी भी कहा जाता है। रामानुजाचार्य को इसीतरह प्रायः रामानुज स्वामी कहा जाता है। तामिलनाडु में आम बोलचाल की भाषा में अनजाने व्यक्ति को सम्मान पूर्वक 'स्वामी' कहकर संबोधित करते हैं। आळवार संतों ने विभिन्न स्थलों के मंदिरों के अर्चाविग्रह की बन्दना तमिल

पदों में की है जिनके संकलन को दिव्यप्रबंधम कहा जाता है। दिव्य अर्चाविग्रह से विभूषित ऐसे स्थलों की संख्या **108** हैं और ये स्थल दिव्यदेश कहे गये हैं। यह तो स्पष्ट है कि श्री वैष्णव दिव्यदेश भगवान के विभिन्न अर्चा रूप के लिये दर्शनीय हैं। भगवान के अर्चारूप इस धराधाम के आठ स्थलों पर स्वयं व्यक्त बताये गये हैं। ये आठ स्थल हैं 'बदरीनारायण' 'शालग्राम' 'नैमिषारण्य' 'पुष्कर' 'वेंकटाद्रि' 'श्रीरंगम' 'श्रीमूषणम' तथा 'तोताद्रि नांगुनेरी'। आळवार संत के प्रबंधों में पुष्कर एवं श्रीमूषणम को छोड़कर बाकी सभी छः स्वयंव्यक्त दिव्यदेश की अर्चाविग्रह की बंदना की गयी है तथा इसके अतिरिक्त एक सौ और अन्य दिव्यदेश भी दिव्यप्रबंधम के भगवान की दिव्यगाथा के विषयवस्तु हैं।

108 दिव्यदेश में से **105** यहां भारत वर्ष में दर्शनीय हैं। एक दिव्य देश नेपाल में मुक्तिनारायण या शालग्राम नाम से विख्यात है। बाकी **2** दिव्यदेश, वैकुंठ तथा क्षीरसागर, मनुष्य की दृष्टि से परे हैं। **82** दिव्य देश तमिलनाडु में, **13** केरल में, **2** आंध्रप्रदेश में (तिरूमला एवं अहोविलम), **1** गुजरात में (द्वारका), **3** उत्तराखंड में (बदरीनारायण, जोशीमठ तथा देवप्रयाग), तथा **4** उत्तरप्रदेश में (नैमिषारण्य, अयोध्या, मथुरा, तथा वृन्दावन) हैं। भगवान कृष्ण के लीलास्थल गोकुल, गोवर्द्धन, वृन्दावन एवं यमुना एक ही दिव्यदेश वृन्दावन के नाम से गिने जाते हैं। पाशुर

ज्ञात है कि दिव्यदेश के मन्दिरों में नारायण हरि के भिन्न भिन्न अर्चारूप हैं। इन अर्चा विग्रहों की प्रशस्ति **12** आळवार संतों द्वारा स्वतः स्फूर्त हृदयोद्गार से की गयी है जो **23** पृथक पृथक प्रबंध के रूप में संकलित हैं और इन सबों के समेकित संकलन को दिव्यप्रबंधम्कहते हैं। दिव्यप्रबंधम्में कुल चार हजार पासुर या पद हैं इसलिये इसे 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम्' कहते हैं। ज्ञात हो कि तमिल में 'नालयिरा' का शाब्दिक अर्थ है 'चार हजार'। मूल पासुर तमिल में हैं। कालकम में इनका लोप हो गया था परंतु श्री नाथमुनि के अथक परिश्रम से नम्माळवार की कृपा हुई और ये सब पुनः प्राप्त हुए। बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिये इस संकलन को चार भागों में बांटा गया है एवं हर भाग को सहस्रगीति कहते हैं। सामन्यतया अगर मात्र सहस्रगीति शव्द का प्रयोग होता है तो इसे नम्माळवार का 'तिरूवायमोळि' ही समझा जाता है। सारे **23** प्रबंधों में यह सर्वोत्तम महत्व वाला प्रबंध है। दिव्य प्रबंधम्में संकलित सारे प्रबंधों का एक विहंगम अवलोकन तालिका **1** में किया जा सकता है।

तालिका 1 ः दिव्यप्रबंधम में संकलित प्रबंध

संकलन	आळवार प्रबंध	पासुरों की गिनती रीति 1	पासुरों की गिनती रीति 2
प्रथम सहस्रगीति मुदल आयिरम			
पेरियाळवार	1 पेरियाळवार तिरूमोळी	1 से 473	1 से 473
आंडाल	2 तिरूप्पावै	474 से 503	474 से 503
	3 नाच्चियार तिरूमोळी	504 से 646	504 से 646
कुलशेखराळवार	4 पेरूमाल तिरूमोळी	647 से 751	647 से 751
तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	5 तिरूच्चन्दविरूत्तम	752 से 871	752 से 871
तोंडरादिप्पोडियाळवार (भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी)	6 तिरूमालै	872 से 916	872 से 916
	7 तिरूप्पळिळयळुच्चि	917 से 926	917 से 926
तिरूप्पाणाळवार	8 अमलनादिपिरान्	927 से 936	927 से 936
मधुरकवियाऴवार	9 कण्णिनुण्शिरूत्ताम्बु	937 से 947	937 से 947
द्वितीय सहस्रगीति इरान्दाम आयिरम			
तिरूमङ्गैयाळवार (परकाल स्वामी)	10 पेरिया तिरूमोळि	948 से 2031	948 से 2031
	11 तिरूक्कुरून्दाण्डगम्	2032 से 2051	2032 से 2051
	12 तिरूनेडुन्दाण्डगम्	2052 से 2081	2052 से 2081
तृतीय सहस्रगीति मून्राम आयिरम (इयर्पा)			
पेय्गैयाळवार	13 मुदल्तिरूवन्दादि	2082 से 2181	2082 से 2181
भूदत्ताळवार	14इराण्डाम् तिरूवन्दादि	2182 से 2281	2182 से 2281
प्याळवार	15 मून्राम तिरूवन्दादि	2282 से 2381	2282 से 2381
तिरूमळिशैयाळवार	16 नान्मूगन तिरूवन्दादि	2382 से 2477	2382 से 2477
नम्माळवार	17 तिरूविरूत्तम	2478 से 2577	2478 से 2577
	18 तिरूवाशिरियम	2578 से 2584	2578 से 2584
	19 पेरिया तिरूवन्दादि	2585 से 2671	2585से2671
तिरूमङ्गैयाळवार	20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	2672	2672
	21 शिरिय तिरूमडल	2673 से 2710	2673
	22 पेरिय तिरूमडल	2711 से 2790	2674
तिरूवरङ्गत्तमुदनार	23 इरामानुश नुट्रन्दादि	2791 से 2898	-
चतुर्थ सहस्रगीति नान्गाम आयिरम			
नम्माळवार	24 तिरूवाय्मोळि	2899 से 4000	2675 से 3776

तालिका 1 में एक और ध्यान देने योग्य बात है कि इसमें 23 के बदले 24 प्रबंध के नाम

दिये गये हैं। प्रबंध संख्या **23** को रामानुज नुट्रन्दादि कहते हैं जो आळवार संतों की रचना नहीं है और यह रामानुज स्वामी के शिष्य कुरेश स्वामी के प्रियशिष्य श्री मुदनार की कृति है जिसे सुनकर रामानुज स्वामी ने अपने जीवनकाल में इसकी स्वीकृति दे दी थी। नित्यानुसंधानम में प्रायः इसका पाठ तिरूवाय्मोळि के बाद किया जाता है। पासुरों की संख्या गिनने की दो रीतियां प्रचलित हैं। रीति **2** में 'शिरिय तिरूमडल' तथा 'पेरिय तिरूमडल' जो कमशः प्रबंध **21** एवं **22** हैं, के पासुरों को समेकित रूप से एक एक ही माना गया है जबकि पाठ की वस्तु सामग्री तथा उनके कम में कोई अंतर नहीं है। प्रबंध **23** यानी रामानुज नुट्रन्दादि को कोई पासुर की गिनती में नहीं रखा जाता है।इस तरह से प्रबंध **24** यानी तिरूवायमोळी की गिनती **2675** से शुरू कर कुल **1102** पासुरों को लेने पर दिव्य प्रबंधम्के कुल समेकित पासुर **3776** होते हैं।

पासुरों को पहचानने की एक और रीति है जो 'शतक एवं दशक' की संख्या से संबोधित होती है। जैसे कि पेरियाआळवार तिरूमोळी में पांच शतक हैं एवं प्रारंभ के चार शतक में **10** दशक हैं तथा अंतिम पांचवे शतक में **4** दशक हैं। पहले शतक का पहला दशक **12** पासुरों का है।इसमें भगवान को चिरंतन प्रसन्नरूप से विराजमान रहने के लिये गाया हुआ 'पल्लांडु' है। इसतरह से अन्य प्रत्येक दशक में **10** से **11** पासुर हैं जिसमें अंतिम पासुर फलश्रुति का है। 'शतक दशक' पासुर की रीति में अगर कोई कहता है **2।7।3** देखिये तो इसका अर्थ हुआ कि **2**रे शतक के **7**वें दशक का **3**रा पासुर। यह रीति ज्यादा प्रचलित है जो 'पेरयि आळवार तिरूमोळी' के अतिरिक्त 'पेरिया तिरूमोळी' तथा 'तिरूवायमोळी' के पासुरों को पहचानने में उपयोग में लाया जाता है। यह विदित है कि 'पेरिया तिरूमोळी' में **11** शतक हैं जबकि नम्माळवार वाले 'तिरूवायमोळी' में **10** शतक हैं।

दिव्य प्रबंधम् के **4000** पासुर को एक एक हजार के समूह में भी बांटा गया है जिसे सहस्रगीती कहते हैं।प्रथम सहस्रगीती में कुल **9** प्रबंध हैं जो पासुर **1** से पासुर **947** तक है। द्वितीय सहस्रगीती में **3** प्रबंध हैं जो पासुर **948** से **2081** तक हैं। तृतीय सहस्रगीती में **11** प्रबंध हैं जो पासुर **2082** से **2898** तक हैं। चतुर्थ सहस्रगीती में **1** प्रबंध है जो अतिविशिष्ट नम्माळवार द्वारा विरचित है और इसे 'तिरूवायमोळी' कहते हैं। इसमें **2899** से **4000** तक (या दूसरी रीति से **2675** से **3776** तक) पासुर हैं। एक हजार एक सांकेतिक शब्द है। प्रथम खंड एवं तृतीय खंड में एक हजार से कुछ कम पासुर हैं तो दूसरे एवं चौथे हजार वाले खंड में एक हजार से

ज्यादा पासुर भी हैं। एक रीति से दूसरी रीति में तिरूवायमोळी में पासुर की संख्या में भिन्नता के द्वंद को 'शतक एवं दशक' की पद्धति से दूर किया जाता है।

कुछ तमिल शब्द जो यथारूप प्रयोग में लाये गये हैं उनके हिंदी समतुल्य का संग्रह तालिका **2** में किया गया है।

तालिका **2** ः कुछेक तमिल शब्द एवं हिन्दी समतुल्य

तमिल	हिन्दी	तमिल	हिन्दी	तमिल	हिन्दी
तिरू	श्री	प्पल्लांडु	पलांडु	आदि	आषाढ़
नालायिर	चार हजार	मार्गळी	मार्गशीर्ष	आवनी	सावन
पासुर	पद	ताइ	पौष	पुरट्टासी	भादपद
पेरूमाल	भगवान	मासि	माघ	ऐप्पासी	आश्विन
कोइल	मन्दिर	पांगुनी	फाल्गुन	कार्तिकै	कार्तिक
पेरिय	श्रेष्ठ	चित्रै	चैत	कण्णन	कृष्ण
शिरिय	लघु	विकाशी	वैशाख	तिरूवाडी	चरणारविंद या गरूड़ जी
तायर	लक्ष्मी माता	आणि	ज्येष्ठ		

दो प्रबंध ऐसे हैं जो मात्र एक दशक यानी **10** पासुर से बने हैं। ये हैं भक्तांघ्रिरेणु स्वामी का तिरूप्पळिळयळुच्चि तथा मुनिवाहन स्वामी का अमलनादिपिरान। इसके बाद मधुराकविआळवार का कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु है जो मात्र **11** पासुर का बना है जो नम्माळवार की प्रशस्ति में रचा गया है।

प्रबंधों की संख्या के विचार से सबसे अधिक प्रबंध परकाल स्वामी के हैं जो छः की संख्या में है। इसके बाद नम्माळवार के चार प्रबंध हैं जो चारो वेद के सार हैं। आंडाल, भक्तिसार स्वामी, तथा भक्तांघ्रिरेणु स्वामी द्वारा दो दो प्रबंध रचे गये हैं। बाकी **7** आळवार संतों के एक एक प्रबंध हैं। इस तरह से **12** आळवार संतो द्वारा **23** प्रबंध विरचित हैं।

पासुरों की संख्या के दृष्टिकोण से सबसे बड़ा प्रबंध **1102** पदों का नम्माळवार का तिरूवायमोळी है। इसके बाद परकाल स्वामी का पेरिया तिरूमोळी है जिसमें **1084** पासुर हैं। नम्माळवार ने चार प्रबंधों में **1296** पासुरों की सहायता से अधिकतम पासुरों की रचना की। इसे कुल मिलाकर **1253** पासुर हैं। तीसरे स्थान पर विष्णुचित्त स्वामी हैं जिनके द्वारा कुल **473** पासुरों की रचना की गयी और यह मात्र एक ही प्रबंध में संकलित है। चौथे स्थान पर भक्तिसार स्वामी हैं जिनके दो प्रबंधों में **216** पासुर हैं।

पांचवें स्थान पर आंडाल हैं जिनकी दो रचनाओं में कुल **173** पासुर हैं। इसमें से **30** पासुरों का 'तिरूप्पावै' सबसे अधिक पावन एवं लोकप्रिय है। छठे स्थान पर कुलशेखार आळवार का 'पेरूमाल तिरूमोळी' है जिसमें कुल **105** पासुर हैं। सातवें, आठवें, एवं नौवें स्थान पर एक एक सौ पासुर वाली रचनायें सरोयोगी, भूतयोगी, एवं महयोगी की हैं। दसवें स्थान पर भक्तांघ्रिरेणु स्वामी हैं जिनके दो प्रबंधों में कुल **55** पासुर हैं। ग्यारहें स्थान पर मधुराकवि आळवार हैं जिनके **11** पासुर का एक प्रबंध है तथा बारहवें स्थान पर मुनिवाहन स्वामी हैं जिनके एक प्रबंध में **10** पासुर हैं।
108 दिव्यदेशों में से आळवार संतों ने पृथक पृथक रूप से उनका यशोगान किया है जिनके संदर्भ सम्बन्धित आळवार संत के प्रबंध में उपलब्ध हैं। उपरोक्त कमों का तथा यशोगान वाले दिव्यदेश की संख्या का विहंगम अवलोकन तालिका **3** में किया जा सकता है।

तालिका **3** ः आळवार संत के प्रबंध, पासुर, एवं दिव्यदेश की संख्या

कमांक	आळवार संत	कुल पासुर	कुल प्रबंध	कुल दिव्यदेश
1	नम्माळवार	**1296**	**4**	**39**
2	परकाल स्वामी	**1253**	**6**	**85**
3	विष्णुचित्त स्वामी	**473**	**1**	**20**
4	भक्तिसार स्वामी	**216**	**2**	**17**
5	आंडाल	**173**	**2**	**11**
6	कुलशेखर आळवार	**105**	**1**	**10**
7	सरोयोगी	**100**	**1**	**6**
8	भूतयोगी	**100**	**1**	**14**
9	महयोगी	**100**	**1**	**17**
10	भक्तांघ्रिरेणु	**55**	**2**	**5**
11	मधुराकवि	**11**	**1**	**1**
12	मुनिवाहन स्वामी	**10**	**1**	**3**

तुलसी कानन में मां लक्ष्मी विष्णुचित्त स्वामी को एक नवजात शिशु के रूप में मिली जो कोदै, गोदै, तथा आंडाल आदि विभिन्न नामों से जानी गयीं तथा आपका परिणय रंगनाथ भगवान से हुआ। लक्ष्मी के पिता एवं भगवान रंगनाथ के ससुर होने के कारण विष्णुचित्त स्वामी को 'पेरिय आळवार' कहा गया। आपके द्वारा विरचित प्रबंध को

'पेरियाळवार तिरूमोळी' कहा गया है तथा दिव्यप्रबंधम में यह सबसे प्रथम स्थान पर संकलित है। पेरियाळवार तिरूमोळी का प्रथम दशक **12** पासुरों से बना है तथा इसे 'पलांडु' कहा जाता है। भगवान की शोभायात्रा के प्रारंभ में तथा दिव्यप्रबंधम के पाठ के प्रारंभ में 'पलांडु' का पाठ अवश्य किया जाता है।

तालिका **1** के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि 'तिरूमोळी' नाम से चार प्रबंध हैं। 'तिरूमोळी' का शाब्दिक अर्थ है 'तिरू' यानी सम्मानजनक तथा पवित्र 'श्री', तथा 'मोळी' का अर्थ है 'बचन'।अतः तिरूमोळी का अर्थ हुआ 'पवित्र वचन'। पेरिय आळवार यानी विष्णुचित्त स्वामी की रचना को 'पेरियाळवार तिरूमोळी' कहा गया। आंडाल के प्रबंध 'तिरूप्पावै' तथा 'नाच्चियार तिरूमोळी' कहे जाते हैं। सभी प्रबंधों में 'तिरूप्पावै' की महिमा सर्वोपरि है। 'नाच्चियार' का अर्थ 'लक्ष्मी' है अतः आपकी दूसरी रचना को 'नाच्चियार तिरूमोळी' कहा गया। कुलशेखर आळवार के प्रबंध को 'पेरूमाल तिरूमोळी' कहा गया है। 'पेरूमाल' का शाब्दिक अर्थ है 'भगवान' या 'परम श्रेष्ठ'। कुलशेखर आळवार को पेरूमाल आळवार भी कहा जाता है अतः आपकी रचना 'पेरूमाल तिरूमोळी' हुई। परकाल स्वामी की रचना को 'पेरिया तिरूमोळी' कहते हैं यानी सभी चार तिरूमोली में यह सबसे ज्यादा पासुरों वाला होने के कारण सबसे बड़ा प्रबंध है।

तिरूवन्दादि नाम से कुल पांच प्रबंध हैं। तिरूवन्दादि का अर्थ है अंत एवं आदि। जब एक पासुर का अंतिम शब्द दूसरे पासुर का शुरू का शब्द बनता है तो इस शैली को तिरूवन्दादि कहते हैं। सरोयोगी, भूत योगी, एवं महयोगी की रचनायें तिरूवन्दादि की शैली पर हैं तथा प्रत्येक में **100** पद हैं। भक्तिसार स्वामी की **96** पासुर की एक रचना 'नान्मुगन तिरूवन्दादि' है। नम्माळवार की चार रचनाओं में से एक का नाम 'पेरिया तिरूवन्दादि' है जो अथर्व वेद का सार माना जाता है। जबकि पासुरों की संख्या के विचार से इसमें मात्र **87** पद ही हैं परंतु इसे 'पेरिया तिरूवन्दादि' यानी 'श्रेष्ठ' तिरूवन्दादि कहा गया।

नम्माळवार का 'तिरूवायमोळी' परम पवित्र प्रबंध है जिसका पाठ भगवान के समक्ष मंदिरों में ही होता है। 'तिरूप्पावै' तथा 'पलांडु' का पाठ मंदिर के बाहर भीतर सर्वत्र किया जाता है परंतु तिरूवायमोळी का पाठ केवल मंदिर के भीतर भगवान की उपस्थिति में ही किया जाता है। तिरूवायमोळी का शाब्दिक अर्थ है 'तिरूवाय' यानी 'भगवान का पवित्र श्रीमुख' एवं 'मोळी' यानी 'वचन'। अतः भगवान के मुखारविन्द से निकले वचन 'तिरूवायमोळी' हुआ।द्रष्टव्य तिरूवायमोळी **7**।**09**। गीता की तरह

यह परम पवित्र प्रबंध है तथा सर्वदा भगवान की उपस्थिति में ही पढ़ा जाता है। संपूर्ण तिरूवायमोळी तिरूवन्दादि शैली पर विरचित है तथा इसमें **1102** पासुर हैं। इसके पाठ में चार छः घंटे लगते ही हैं अतः जहां समयाभाव रहता है वहां लोग 'तिरूप्पावै' के पाठ का ही सहारा लेते हैं क्योंकि तिरूप्पावै मात्र **30** पदों की रचना है। तिरूप्पावै का पाठ घर तथा मंदिर सर्वत्र होता है। एक और महत्वपूर्ण बात है कि नम्माळवार ने अपनी रचना तिरूवायमोळी के **5।02** में रामानुज स्वामी के आगमन की भविष्यवाणी की है। तिरूप्पण आळवार यानी योगीवाहन स्वामी या मुविवाहन स्वामी की रचना 'अमलनादिपिरान' **10** पासुरों का सबसे छोटा प्रबंध है। इसमें आळवार संत ने रंगनाथ भगवान के पादकेशादि सौंदर्य का बखान करते हुए बड़ी अद्भुत बंदना की है। अतः इसका पाठ प्रायः तिरूवायमोळी के उपसंहार के रूप में किया जाता है।

भक्तांघ्रिरेणु स्वामी का प्रबंध 'तिरूप्पळ्ळियळुच्चि' **10** पासुरों से बना है तथा यह रंगनाथ भगवान का सुप्रभातम है जो भगवान को प्रातः जगाने के लिये किया जाता है। प्रातःकाल नित्यानुसंधानम में किये गये प्रबंध पाठ के प्रारंभ में प्रायः इसका पाठ होता है। धनुर्मास का प्रातःकालीन पाठ 'तिरूप्पळ्ळियळुच्चि' से ही प्रारंभ होता है।

दिव्य प्रबंधम के सभी प्रबंधों का हिन्दी में सरल भावार्थ श्रीमान्सुन्दर कीदम्बी द्वारा तैयार किया हुआ देवनागरी लिपि के पासुरों को उपयोग में लाते हुए किया गया है। इसके लिये दास श्रीमान् का सदा आभारी है जिनकी अनुमति इस तरह के कैंकर्य के लिये दास को मिल चुकी है। देवनागरी में उपलब्ध पासुरों को श्रीमान्के www.prapatti.com से लिया गया है। एक बार फिर अपना आभार श्रीमान्द्वारा किये गये महान कैंकर्य के लिये प्रकट करते हैं कि देवनागरी में पासुरों को न उपलब्ध रहने पर इस तरह के कैंकर्य की कल्पना करने का साहस नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त श्रीमान्से अन्य महत्वपूर्ण वेब साईट का लिंक भी प्राप्त हुआ जिससे दास का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ। श्रीबरदराज स्वामी से श्रीमान्के ऊत्तरोत्तर प्रगति के लिये प्रार्थना है।

तिरूमला तिरूपति देवस्थान द्वारा अंग्रेजी में सात खंडों में प्रकाशित '**108** वैष्णव दिव्य देशम' जो डा0 सुश्री एम एस रमेश आई ए एस की कृति हैं दिव्यदेश के साथ दिव्यप्रबंधम को समझने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। सुश्री रमेश एवं ति ति देवस्थानम को दास विनम्र आभार प्रकट करता है।

डा0 एस जगतरक्षकण का 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम' जिसकी अंग्रेजी टीका श्री राम भारती द्वारा की गयी है हिन्दी के इस कैंकर्य में बड़ा ही सहायक हुआ है। डा0 एस

जगतरक्षकण तथा श्रीराम भारती का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।
भगवान देवराज वरदराज स्वामी की कृपा से कांचीपुरम में परम विद्वान श्री कोईल अन्नन स्वामी से बड़ा मनोबल बढ़ा और दास आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। पेरूमाल कोईल कांचीपुरम के श्रीनम्माळवार सन्निधि के स्वामी टी ए भास्यम् ने दिव्यदेशों के बारे में अपने स्वानुभूत ज्ञान से लाभ करा कर इस कैंकर्य को बड़ा सुगम बना दिया। हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।
श्री डी वासुदेवन, श्री हरिकृष्णन, श्रीधरन एवं वयोवृद्धा माताजी डी कन्नाबाईअम्माल के परमस्नेहमयी कृपा से कांचीपुरम में ठहराव का ठौर मिला। इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये शब्द नहीं हैं। श्री गोपाल अय्यर ने इस अवधि को बाधाविहीन रखकर बड़ा ही यश एवं उपकार पूर्ण कार्य किया। आप सभी श्रेष्ठजन भगवान बरदराज के विशेष दयापात्र हैं।
दिव्यप्रबंधम के विभिन्न प्रबंधों के विषयवस्तु का वर्णन करने के पूर्व आळवार संतों का जीवन वृतांत दिया गया है जो 'आळवार वैभव' नाम के अध्याय में प्रस्तुत है। भक्तिरस से सरोवर प्रेम में स्वयं को नायकी के रूप में रखकर परकाल स्वामी एवं नम्माळवार ने भगवान से नायक के रूप में दर्शन देने के लिये निवेदन किया है। कतिपय अवसरों पर भगवान रूपी नायक से नायकी के रूप में आपकी नोंक झोंक काफी मधुर हैं। कुछेक पासुरों में नायकी की मां एवं उसकी सखियों की चिंता को भी चित्रित किया गया है। ऐसे प्रसंगों के सार को 'परकाल नायकी' तथा 'परांकुश नायकी' की तालिका **6** एवं **7** संदर्भित प्रबंध के विषय वस्तु के साथ साथ प्रस्तुत किया गया है। विदित है कि नम्माळवार का एक नाम परांकुश है अतः आपकी रचना में नायकी के पात्र को 'परांकुश नायकी' कहा जाता है। अपनी रचनाओं में अधिकांश अवसरों पर आप नायकी रूप में विद्यमान हैं इसी कारण से दिव्यदेशों की सन्निधियों में आपके उत्सव विग्रह को नायकी के रूप में विशेष तरह की जूड़ा के साथ संवारकर अर्चना वंदना की जाती है। वर्तमान समय में दिव्यदेश के मंदिरों के अर्चक वैष्णव समाज में मोटी एवं लंबी सुन्दर शिखा रखने की प्रथा परांकुश नायकी के जूड़ा श्रृंगार से जुड़ा हुआ है।
तालिका **1** में उल्लिखित प्रबंधों के कम का अनुसरण करते हुए उनके विषयवस्तु उसी कम में प्रस्तुत किये गये हैं। इस तरह से प्रारंभ 'पेरियाळवार तिरूमोळी' से करके अंत 'तिरूवायमोळी' पर किया गया है। 'पेरियाळवार तिरूमोळी' के प्रारंभ से जिस दिव्यदेश के यशोगान का संदर्भ आया है उसी कम में वहां उस दिव्यदेश का भी संक्षिप्त पचिय दे दिया गया है। जैसे सभी प्रबंधों का पाठ 'प्पलांडु' के गान से पारंभ होता है इसीलिये

दिव्यदेश के परिचय का प्रारंभ 'प्पलांडु' की रचना वाले स्थान मदुरै के दिव्यदेश 'तिरूकूडल आळगर' से किया गया है। एक बार किसी दिव्यदेश का संदर्भ पूर्व के किसी प्रबंध में आ गया है तो बाद के प्रबंध में उस दिव्यदेश के परिचय की पुनरावृति नहीं की गयी है। ऐसे बहुत सारे दिव्यदेश हैं जिनके यशोगान अधिकतम आळवार संतों ने अपनी रचनाओं में किया है। उदाहरण के लिये 'वेंकटम' तथा 'श्रीरंगम'। दिव्यप्रबंधम में इनका प्रसंग बार बार आता है परंतु इनके परिचय का उल्लेख एक ही बार 'पेरियाळवार तिरूमोळी' में किया गया है। अतः 'पेरियाळवार तिरूमोळी' वाले भाग में एक बार इनके परिचय का उल्लेख हो जाने के बाद दूसरे आळवार संत के प्रबंध वाले भाग में उसे दुहराया नहीं गया है। इस तरह से **108** दिव्यदेशों का उतरोत्तर परिचयात्मक विवरण दिव्यप्रबंधम के विषयवस्तु के साथ ही साथ प्रस्तुत किया गया है। इस तरह से प्रथम हजारवाले भाग में **27** दिव्यदेशों का, दूसरे हजारवाले भाग में **58** दिव्यदेशों का, तीसरे हजार वाले इयर्पा में **4** दिव्यदेशों का, तथा अंतिम तिरूवायमोळी वाले सहसगीति में **19** दिव्यदेशों का वर्णन प्रस्तुत है। श्रीवैष्णव समाज में श्रीरंगम को सर्वाधिक प्रधानता दी जाती है तथा इसे 'कोइल' शब्द से संबोधित किया जाता है। इसकी बंदना दिव्यप्रंबधम में मधुराकवि को छोड़कर बाकी सारे **11** आळवार संतों ने की है। ज्ञात है कि मधुराकवि ने आळवार तिरूनगरी एवं नम्माळवार के अतिरिक्त किसी की गाथा नहीं गायी है। वरदराज पेरूमाल कांचीपुरम को 'पेरूमाल कोइल' से संबोधित किया जाता है। इनकी बंदना तीन आळवार संतों ने की है। ये संत हैं ः परकाल स्वामी, भूतयोगी, एवं महयोगी। दिव्यदेश वेंकटम को 'तिरूमल' कहा जाता है। इस दिव्यदेश की बंदना भक्तांघ्रिरेणु स्वामी तथा मधुराकवि आळवार के अतिरिक्त सभी **10** आळवार संतों ने की है। परमपद वैकुंठ की बंदना **9** संतों ने तथा क्षीराब्धि की बंदना **10** संतों ने की है। श्रीनाथमुनि को ज्ञानज्योति दिखाने वाला दिव्यदेश कुंभकोणम में स्थित 'कुडन्दै' की बंदना **7** संतों ने की है। मालिरूञ्जोलै (आळगार कोईल), द्वारका तथा अयोध्या की बंदना **6** आळवार संतो द्वारा की गयी है। इसीतरह से मथुरा, वृन्दावन, तिरूकोट्टियूर एवं कन्नपुरम की बंदना **5** आळवार संतों द्वारा की गयी है। अधिकतम दिव्यदेशों की बंदना करने वाले परकाल स्वामी हैं जिन्होंने **85** दिव्यदेशों का यशोगान किया। नम्माळवार ने **39** दिव्यस्थानों का यशोगान किया है।

चित्र संख्या **1** से यह स्पष्ट है कि श्रीरंगम की प्रशस्ति **11** आळवार संतों ने की है तथा तिरूवेंकटम की प्रशस्ति **10** आळवार संतों ने की। तिरूवेंकटम पर कुल **264** पासुर की रचना हुई है जबकि श्रीरंगम पर कुल **226** पासुर रचे गये। यह भी द्रष्टव्य है कि

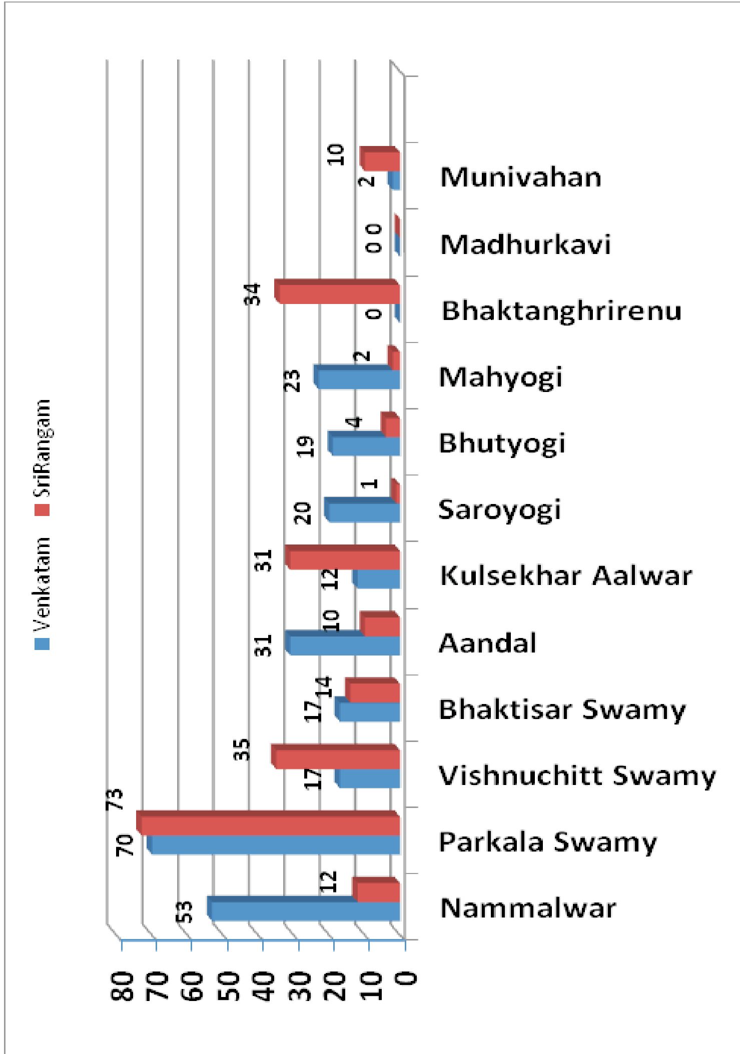
परकाल स्वामी, भक्ताघ्रिरेणु स्वामी, विष्णुचित्त स्वामी, तथा मुनिवाहन स्वामी के श्रीरंगम की प्रशस्ति में तिरूवेंकटम की प्रशस्ति की तुलना से अधिक पासुर हैं। सारे दिव्यदेश में प्रभु विभिन्न स्वरूपों तथा मुद्राओं में दर्शन देते हैं। **27** दिव्यदेश में प्रभु शयनावस्था में हैं, जबकि **21** दिव्यदेश में आप बैठे हुए मुद्रा में हैं। बाकी **60** दिव्येदश में आप खड़े स्वरूप में दर्शन देते हैं।

परिशिष्ट में अरईर सेवई का समावेश अतिरिक्त सूचना देता है। चार सबसे छोटे प्रबंधों को हिन्दीपद में रूपान्तरित कर हृदयग्राही बनाने के लिये परिशिष्ट में दिया गया है। तिरूप्पावै के मूल तमिल पद को भी परिशिष्ट में नित्यानुसंधान के पाठ के उद्देश्य से दिया गया है। तिरूवायमोळी पर उपलब्ध त़मिल व्याख्यान के बारे में सूचना परिशिष्ट के अंत में देखा जा सकता है।

हे मन ! चल, अब व्याकरणबद्ध भाषागत त्रुटियों पर से ध्यान हटाकर, दिव्यप्रबंधम के प्रवाह में अवगाहन करते हुए दिव्यदेशों की झांकी का आनंद उठा।

श्रीमन्नारायण चरणौ शरणं प्रपद्ये। श्रीमते नारायणाय नमः।

विनीत दास
श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी
कांचीपुरम
19 अक्टूबर **2011**



चित्र संख्या 1 ः तिरूवेंकटम एवं श्रीरंगम की महिमा पर आळवार संतों द्वारा रचे गये पासुरों की संख्या

आळवार वैभव

प्रारंभ के तीन आळवार संत अयोनिज थे तथा संयोग से तीनों का प्रार्दुभाव विभिन्न स्थल पर स्थित भिन्न तालाब में उनके फूल से हुआ था। बाकी अन्य संतों के माता पिता का इतिहास प्राप्त है।

आळवार संतों के अवतार काल का सम्यक ज्ञान उपलब्ध नहीं है। एक मान्यता से इनका अवतार **4200** ई पूर्व से **2700** ई पूर्व ज्ञात है जो द्वापर के अंत से कलि के प्रारंभ का द्योत्तक है। ऐसा समझा जाता है कि कलि के प्रारंभ **3102** ई पू के पूर्व ही यानी द्वापर के अंतिम वर्षों में मुदल आळवार तथा भक्तिसार स्वामी का अवतार हुआ। नम्माळवार कलि के प्रथम वर्ष में अवतरित हुए तथा अन्य सभी उनके बाद के काल के हैं। कुछ भाषाविद आळवार संत की तमिल रचनाओं के विश्लेषण से इनलोगों का जीवन काल ईस्वी सदी **5** वीं से **9** वीं के बीच निर्धारित करते हैं।

प्रारंभ के तीन आळवार संत समकालीन थे तथा इनसे सम्बन्धित एक बहुत ही रोचक कथा प्रसिद्ध है। विषम मौसम की स्थिति में तीनो संत दैवसंयोग से तिरूकोइलूर में एकत्रित हुए। यह स्थान तमिलनाडु के प्रसिद्ध वन्नामलै से **30** कि मी दक्षिण में तथा विल्लुपुरम से **30** कि मी पश्चिम में अवस्थित है। दिन का समय था परंतु घोर वर्षा के बादल से सर्वत्र अंधकार छा गया था। इसी काल में सरोयोगी, भूतयोगी, तथा महयोगी स्वतंत्र रूप से घूमते हुए तिरूकोइलूर पहुंच गये। वर्षा से बचने के लिये सर्वप्रथम सरोयोगी किसी के घर की छोटी देहली में आकर टिक गये। इनके आगमन के शीघ्र ही बाद भूत योगी पधारे और छोटी देहली में वर्षा से त्राण पाने के लिये प्रवेश करना चाहे। देहली इतनी संकीर्ण थी कि दो जन कठिनाई से बैठ सकते थे परंतु सरोयोगी ने भूत योगी का खड़ा होकर स्वागत करते हुए भीतर प्रवेश करा लिया। शीघ्र ही बाद तीसरे संत महयोगी भी इसी स्थान पर पधारे। सरोयोगी एवं भूतयोगी खड़े हो गये तथा महयोगी का वहां स्वागत किया। स्थान संकीर्ण होने के कारण तीनों जन कठिनाई से ही खड़े रह सकते थे। वर्षा से रक्षा हेतु किसी तरह तीनों संत खड़े होकर एक दूसरे को सुरक्षित स्थान पाने में सहायता प्रदान किये। घोर वर्षा से अंधकार इतनी घनी हो गयी थी कि तीनो संत एक दूसरे का मुंह नहीं देख पाते थे। तीनों संतों ने इसी बीच एक चौथे आदमी की हठात उपस्थिति का अनुभव किया। मेघ के घोर गर्जन के बीच बड़े जोर की बिजली चमकी और क्षण भर के लिये वह स्थान पूर्णतया प्रकाशित हो गया। तीनों संतों ने अपने बीच एक अत्यंत सुंदर मुखमंडल वाले चौथे जन का दर्शन किया। यह चौथे व्यक्ति स्वयं नारायण थे तथा इनके छवीले मुखमंडल से मुग्ध होकर तीनों संतों ने

स्वतःस्फूर्त पृथक पृथक एक एक सौ प्रशस्ति के पद गाये। संतगण नारायण के मनोहारी मुखमंडल के शाश्वत दर्शन का आनंद लेना चाह रहे थे परंतु जब बिजली चमकती थी तभी वह आनंद मिलता था बाकी समय में अंधकार के अभिशाप से वे आनंद लाभ से बंचित रह जाते थे। फलस्वरूप संतजनों ने ज्ञान ज्योति की बहुत ही सुन्दर कल्पना की जो उन्हें शाश्वत दर्शन का आनन्द दे सका।

सरोयोगी ने समूची पृथ्वी को एक ऐसा दीपक माना जिसमें सागर का तेल भरा है एवं सूर्य इस दीपक का एक जाजवल्यमान बत्ती है। इसके प्रकाश में आपने नारायण हरि के मुखमंडल के दर्शन का बहुत ही अनोखा वर्णन किया।

भूत योगी ने अपने पदों से प्रेम का ऐसा दीपक जलाया जो प्रभु प्राप्ति के लिये उत्पन्न उत्कट चाह रूपी तेल से भरा हुआ है तथा हृदय ही जिसकी बत्ती है।

महयोगी के पदों में प्रभु को सुशोभित करने वाले प्रकाशपुंज चक्र एवं शंख की रश्मिराशि में नारायण के वक्षस्थल पर कमल निवासनी लक्ष्मी के स्वरूप के दर्शन लाभ के आनन्द का विवरण है।

1। <u>पोय्गै आळवार या सरोयोगी</u>

आपको पोय्गै आळवार, कासार योगी, पोय्गै पिरान, तथा पद्म मुनि आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। विष्णु कांची या छिन्ना कांची में अवस्थित यथोक्तारी भगवान के मंदिर के पार्श्ववर्ती तालाब में आपका प्रार्दुभाव एक कमल के फूल से हुआ था। तमिल में छोटे तालाब को 'पोय्गै' कहते हैं इसीलिये आपको पोय्गै आळवार कहा गया। श्रवण आपका अवतार नक्षत्र है। 'इयप्पसी' यानी आश्विन मास यानी **15** अक्टूबर से **15** नवम्बर की अवधि में पड़ने वाले शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि मंगलवार को सिद्धार्थ वर्ष में आप प्रकट हुए। आप नारायण प्रभु के पंचायुधों में से पाञ्चजन्य के अंश से अवतरित हैं।

इयर्पा नाम से लोकप्रिय दिव्य प्रबंधम के तीसरे हजार वाले भाग का पहला प्रबंध 'मुदल तिरूवन्दादि' कहा जाता है।तालिका **1** द्रष्टव्य। यह एक सौ पासुरों यानी पदों का प्रबंध है जो आपने तिरूकोइलूर में अन्य दो समकालीन आळवार संतों की उपस्थिति में नारायण के स्वरूप की भव्य झांकी के उपरांत रचा था। इन पदों की यह विशेषता है कि पहले पद का अंतिम शब्द दूसरे पद के प्रारंभ का शब्द है और इसीलिये इसे 'तिरूवन्दादि' कहते हैं यानी एक का अंत दूसरे का आदि है। आपने जिन **6** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) अरंगम यानी श्रीरंगम, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) वेग्का यानी यथोक्तकारी भगवान कांची, (v) कोइलूर जहां तीनों

आळवार संतों का समागम हुआ था, (vi) क्षीरसागर।

2। भूताळवार या भूत योगी

आपको भूतद आळवार भी कहते हैं। आपका अवतार चेन्नै से **55** कि मी दूर सागरतटीय नगर ममलापुरम या महावलीपुरम में एक तालाब के माधवी फूल में हुआ था। यह स्थान महाबली के यज्ञस्थल के लिये प्रसिद्ध रहा है जहां वामन भगवान ने तीन पग भूमि की याचना की थी। वर्तमान में यह स्थान तिरूकडमल्लै यानी थलशयनम पेरूमाल के मंदिर के सामने दर्शनीय है। भूतद अळवार का अवतार धनिष्ठा नक्षत्र में नवमी तिथि को सिद्धार्थ वर्ष के इयप्पसी माह में हुआ। आप कौमोदकी गदा के अंश से अवतरित हैं। ध्यातव्य है कि आप सरोयोगी के समकालीन थे तथा उनके ही अवतार माह में ही आपका भी प्रादुर्भाव हुआ। इयर्पा का दूसरा प्रबंध 'इरन्दाम तिरूवन्दादि' के नाम से जाना जाता है एवं इसमें **100** पद हैं जो आपने तिरूकोइलूर में सरोयोगी तथा महयोगी की उपस्थिति में नारायण प्रभु की प्रशस्ति में रचा। एक पद के अंत का शब्द दूसरे पद का आदि शब्द बनता है इसीलिये यह तिरूवन्दादि कहा जाता है। आपने जिन **14** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी है वे हैं ः (i) अरंगम यानी श्रीरंगम, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) तिरूक्कोट्टियूर यानी गोष्ठीपूर्ण स्वामी का अवतार स्थल, (v) मलिरूमसोलै यानी आळगार कोईल, (vi) तिरूनिर्मलै, (vii) क्षीरसागर, (viii) तिरूतन्कल, (ix) पडकम या पांडवदूत कांची, (x) अत्तियुर यानी वरदराज पेरूमाल कांची, (xi) कुडन्दै यानी सारंगपानी कुंभकोनम, (xii) तंजै मामणि, (xiii) कोइल्लुर, (xiv) कडमल्लै महाबलीपुरम।

3। पेय आळवार या महयोगी

आपका अवतार चेन्नै शहर के मैलापुर क्षेत्र के आदिकेशव भगवान के मंदिर की पुष्करणी के अल्ली पुष्प से सिद्धार्थ वर्ष के इयप्पसी माह की दसमी तिथि को शतभिषा नक्षत्र में गुरूवार को हुआ। आप नारायण के नंदक खड्ग के अंश से अवतरित हैं। आप सरोयोगी, एवं भूतयोगी के समकालीन हुए। आपकी तिरूकोइलूर की **100** पदों वाली रचना दिव्य प्रबंधम के इयर्पा भाग का तीसरा प्रबंध है एवं 'मून्राम तिरूवन्दादि' के नाम से जाना जाता है। आपने जिन **17** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी है वे हैं ः (i) क्षीरसागर, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) तिरूवल्लीकेणी पार्थसारथी भगवान चेन्नै, (iv) वेग्का यानी यथोक्तारी भगवान कांची, (v) वेलुक्कै यानी नरसिंह भगवान कांची, (vi) कुडन्दै सारंगपानी कुंभकोणम, (vii) पडगम यानी पाण्डव दूत कांची, (viii) वैकुंठ, (ix) अयोध्या, (x) कडिगै यानी शोलंगिर, (xi) श्रीरंगम, (xii) तिरूकोट्टियूर, (xiii)

विण्णगरम यानी ओप्पलीअप्पन, (xiv) अहोविलम (xv) अत्तियूर यानी कांची वरदराज, (xvi) मालिरूञजोलै, (xvii) अष्टभुज कांची।

4। तिरूमळिशै आळवार या भक्तिसार स्वामी

चेन्नै शहर के समीप पुन्नमल्लै के पास तिरूमळिशै या महिषापुर नामक स्थान में भार्गव मुनि के यहां आपका प्रादुर्भाव हुआ था। संतानहीन दंपति के यहां आप एक विशेष यज्ञ संपादन के पश्चात पधारे। पौष महीने का मधा नक्षत्र आपका अवतार नक्षत्र है। आप नारायण के सुदर्शन चक्र के अंश से अवतरित हैं। जन्म के समय में आप हाथ पैर विहीन शिशु थे। माता पिता ने दुखी मन से आपको बॉस की झरमुट में रख दिया। तदुपरांत नारायण एवं लक्ष्मी ने पधारकर आपको हाथ पैर से युक्त कर दिया।

संयोग से आपकी रोने की आवाज एक पथिक को सुनायी पड़ी एवं वह आपको उठाकर अपने घर ले गया। संतानहीन होने के कारण पति पत्नी ने बड़े प्यार से आपको अपनी संतान के रूप में स्वीकार किया। पति का नाम 'अंदानन' था तथा पत्नी का नाम 'पनग्या' था। आश्चर्य की बात थी कि विना कोई भोजन या नींद के आप एक स्वस्थ शिशु के रूप में बढ़ते रहे। इस तरह की खबर सुनकर एक वृद्धपुरूष आपका दर्शन करने आये एवं आपको 'इमपेरूमान' यानी नारायण की संतान के रूप में स्वीकार करते हुए 'तिरूमळिशै पिरान' के नाम से सम्बोधित किया। तत्पश्चात्उन्होंने आपको गाय का दूध दिया जो आप सहर्ष पी गये। अंदानन एवं पनग्या ने वृद्धपुरूष को नित्य आकर दूध पिलाने का अनुरोध किया। वृद्धपुरूष नियमित रूप से आकर बालक को गाय का दूध पिलाते थे। उन्होंने पनग्या को बालक के पात्र से बचे हुए दूध को नित्य पी जाने का परामर्श दिया। इससे अंदानन एवं पनग्या को एक संतान की प्राप्ति हुई जिसका नाम 'काणी कण्णन' रखा गया। बाद में काणि कण्णन ही तिरूमळिशै आळवार का सदा साथ रहने वाला शिष्य हुआ।

कालक्रम में तिरूमळिशै आळवार कांची में पोय्गै आळवार के अवतार स्थल के पास जाकर रहने लगे तथा यथोक्तारी भगवान की सेवा करने लगे। यहां इनकी सेवा में एक वृद्धा रहती थी। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर तिरूमळिशै आळवार ने वृद्धा से पूछा कि उसकी मन में किसी चीज के लिये चाह है क्या। वृद्धा ने अपने को एक सुन्दर युवती के रूप में देखना चाहा। आळवार संत के वरदान से वह एक सुन्दर युवती हो गयी। इस युवती के सुन्दरता से मोहित हो स्थानीय राजा ने व्याह कर लिया। समय बीतने पर राजा वृद्ध हो गये परंतु वह युवती चिरंतन सौंदर्य से विभूषित होकर नवयौवना ही बनी रही। जब राजा ने इसका रहस्य जानना चाहा तो युवती ने तिरूमळिशै आळवार वाली

आशीर्वाद की कथा से राजा को अवगत करा दिया। राजा ने तिरूमळिशै आळवार के शिष्य कण्णन को बुलाकर अपनी प्रशस्ति में तिरूमळिशै आळवार से कुछ पद रचने की आज्ञा दी। कण्णन ने राजा को मना कर दिया कि आळवार संत भगवान के अतिरिक्त किसी अन्य के लिये पद नहीं रचते। तब राजा ने कण्णन से ही अपने बारे में पद रचने को कहा। कण्णन ने भी ऐसा करने से मना कर दिया। राजा क्रोध में आ गये तथा उन्होंने कण्णन को राज्य छोड़कर दूसरे जगह चले जाने का आदेश दे दिया। आळवार संत के समीप आकर कण्णन ने सारी बात बता दी। कण्णन के साथ तिरूमळिशै आळवार भी राजा का नगर छोड़कर बाहर चल दिये। इस तरह से यथोक्तकारी भगवान भी आळवार संत के पीछे पीछे नगर से बाहर चलने लगे। यह देखकर अन्य प्रजा भी भगवान के पीछे पीछे नगर से बाहर निकल गयी। नगर में घोर सन्नाटा छा गया। राजा ने अपनी गलती महसूस की तथा नगर से बाहर जाकर कण्णन एवं आळवार संत को मनाकर पुनः नगर में ले आया। नगर से बाहर भगवान के साथ आळवार संत तथा कण्णन जहां रात बिताये थे उसे कांची का 'ओरक्काई' कहते हैं। नगर में लौटने के पश्चात भगवान बाईं करबट सोये जबकि जाने के पूर्व वे दायीं करवट शयन कर रहे थे। आज भी कांचीपुरम में यथोक्तकारी भगवान बाईं करवट सोये दर्शन देते हैं।

तिरूमळिशै आळवार द्वारा विरचित दो रचना दिव्य प्रबंधम के भाग हैं। प्रथम हजार वाले भाग में तिरूमळिशै आळवार का एक प्रबंध है जिसे 'तिरूच्चन्द विरूत्तम' कहते हैं। इसमें पदों यानी पासुरों की कुल संख्या **120** है। यह एक विशेष तरह की लय पर आधारित रचना है। इसमें गोकुल, एवं क्षीरसागर के अतिरिक्त अरंगम उर यानी श्रीरंगम दिव्य देश की सबसे पहले प्रशंसा करते हैं। तत्पश्चात् कुडन्दै का मंगलानुशासन करते हैं। बीच बीच में वेंकटम की गाथा है। कांची के पडकम यानी पाडवदूत, उरगम यानी त्रिविकम भगवान, एवं वेग्का यानी यथोक्तकारी भगवान की लीला का बखान है।

आपका दूसरा प्रबंध तीसरे हजार वाले भाग यानी इयर्पा में है जिसे 'नान्मूगम तिरूवन्दादि' कहते हैं और इसमें कुल **96** पासुर हैं। आपने जिन **17** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी है वे हैं ः (i) गोकुल, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) तिरूकोट्टियूर, (v) चेन्नै मयिलै तिरूवल्लीकेणी, (vi) तिरूकुरूंगुडी, (vii) कुडन्दै, (viii) वेग्का कांची, (ix) तिरूवल्लूर , (x) तिरूप्पेर, (xi) अनबिल, (xii) क्षीरसागर, (xiii) द्वारका, (xiv) तिरूकपिस्थलम (xv) अरंगम उर यानी श्रीरंगम, (xvi) उरगम कांची, (xvii) पडकम कांची।

5 । नम्माळवार

नम्माळवार को मारन, शठकोप, परांकुश, शठारि आदि नामों से स्मरण किया जाता है। तमिलनाडु के पांडय देश में अवस्थित कुरूगुर नगर में वेल्लालर जाति के राजघराने में परमाधि वर्ष के वैशाख मास के शुक्ल चर्तुदशी को विशाखा नक्षत्र में शुक्रवार को वैकुंठलोक के दिव्यपार्षद एवं सेनापति विष्वकसेन के अंश से नम्माळवार का अवतार हुआ। तमिलनाडु में तिरची नगर से दक्षिण कन्याकुमारी तक का क्षेत्र पांडय देश कहा जाता है। ताम्रपर्णी नदी के किनारे अवस्थित आळवार तिरूनगरी प्राचीन कुरूगर का आधुनिक नाम है और यह स्थान तिरूनेलवेली से **35** कि मी पर स्थित है तथा सड़क तथा रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है।

आपके पिता का नाम 'कारी' तथा मां का नाम 'उदयमंगै' है।आपके माता पिता ने तिरूक्कुरूंगुडी के भगवान 'नाम्बी नारायण' से संतान प्राप्ति के लिये प्रार्थना की। आपकी मां गर्भधारण के पश्चात अपने मैके 'परिशरम' में थी और आपका आविर्भाव ननिहाल में ही हुआ।जन्म के पश्चात आपने न तो आंखें खोली और न मुंह खोला। परिणामतः आप बिना दूध के शांत भाव से चुपचाप रहे। आपके माता पिता ने आपको आळवार तिरूनगरी स्थित आदिनाथ भगवान के मंदिर में लाया। जब तक आप भगवान के समक्ष रहे आश्चर्यमय रूप से आंखे खोल आदिनाथ भगवान के दिव्य विग्रह का दर्शन करते रहे। मंदिर से बाहर आते पुनः आपने आंखे बंद कर ली। माता पिता ने आपको एक पालने में रख भगवान आदिनाथ के मंदिर में छोड़ दिया। मंदिर परिशर में स्थित इमली वृक्ष के खोड़र में जाकर आपने स्वयं अपना स्थान ले लिया तथा समाधि जैसी अवस्था में बिना आंखे खोले **16** वर्ष तक स्थित रहे।

आळवार तिरूनगरी के पास तिरूकोलुर स्थान के ब्राह्मण कुल के वरीय विद्वान मधुराकवि उत्तरभारत की यात्रा पर अयोध्या में थे। एक रात मधुरा कवि ने दक्षिण आकाश में एक ज्योति पुंज देखा। यह ज्योति पुंज कई रात तक दिखता रहा। मधुरा कवि इस ज्योति पुंज की दिशा में यात्रा करने लगे और अंततः जब वे आळवार तिरूनगरी पहुंचे तो ज्योति पुंज नम्माळवार में विलीन हो गया। तब से आप नम्माळवार की अनवरत सेवा में लग गये। नम्माळवार ने आळवार तिरूनगरी के इमली के पेड़ से ही विभिन्न दिव्य देश के अर्चाविग्रह की प्रशस्ति गायी है। मधुरा कवि ने नम्माळवार द्वारा रचित सभी पदों का सावधानी से संग्रह किया। नम्माळवार की संस्तुति में आपने ग्यारह पदों की रचना की जो दिव्यप्रबंधम के प्रथम एक हजार वाले भाग का नौवां प्रबंध है।इस प्रबंध को 'कण्णिनुण शिरूताम्बु' के नाम से जाना जाता है।

नम्माळवार का तमिल में शाब्दिक अर्थ है 'हमारे अपने आळवार'। नम्माळवार के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लोगों ने आळवार संत को यह नाम दिया है। भगवान के मंदिर में तीर्थ के बाद सिर पर शठारी रखने की प्रथा है। यह शठारी नम्माळवार का प्रतिनिधि है जो भगवान के युगल चरणारविंद का प्रतीक है। कथा है कि जब कविचक्रवर्ती कंबन अपनी तमिल रामायण भगवान रंगनाथ को प्रथमबार समर्पित करने गये तो भगवान ने अर्चक के माध्यम से कंबन कवि से नम्माळवार पर कविवर द्वारा विरचित किसी रचना के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। परिणामस्वरूप कंबन कवि ने भगवान का आदेश शिरोधार्य कर रात भर में **100** पदों वाली 'शठकोपार अन्तादि' की रचना कर प्रातःकाल भगवान रंगनाथ को समर्पित किया।

नम्माळवार की सभी तमिल रचनाओं को चार प्रबंधों में संजोगा गया है जो चारो वेद के सार माने जाते हैं। सभी रचनायें विभिन्न दिव्यदेश के अर्चाविग्रह की स्तुति में रचे गये हैं। नम्माळवार ने कभी भी आळवार तिरूनगरी नहीं छोड़ा परंतु 'नायकी भाव' में सूक्ष्म रूप से विभिन्न मंदिरों के अर्चाविग्रह से आपका साक्षात्कार हुआ जो आपकी रचनाओं के विषयवस्तु में सर्वव्याप्त है। आपकी रचनाओं की नायिका को 'परांकुश नायकी' से सम्बोधित किया जाता है। श्रीवैष्णव मंदिरों में नम्माळवार की उत्सव मूर्ति को नायकी की वेषभूषा में सजाया जाता है जिसमें सिर पर विशेष तरह का जूड़ा दर्शनीय है। वर्त मान में श्रीवैष्णव भक्तों के शिर पर मोटी शिखा 'परांकुश नायकी' के जूड़ा का प्रतिनिधित्व करती है।

नम्माळवार की रचनाओं में 'रहस्य त्रयी' का उद्घोष है। इसमें 'जीव' 'जगत' तथा 'ई श्वर' की शाश्वत सत्ता को स्पष्ट किया गया है। 'जीव' एवं 'दृश्यजगत' 'परब्रह्म नारायण' के दिव्य शरीर के शाश्वत अवयव हैं परंतु नारायण प्रभु अपने अवयवों के गुणों से सर्वथा भिन्न भी हैं और समरूप भी हैं। यह रहस्य मात्र अनुभूति का वस्तु है जिसे किसी भौतिक प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

नम्माळवार के चारो प्रबंध दिव्यप्रबंधम के तीसरे एवं चौथे हजार में संकलित हैं। सभी चार प्रबंधों को मिलाकर पासुरों की कुल संख्या **1296** है। पासुरों की संख्या के विचार से दिव्यप्रबंधम में सबसे अधिक पासुर नम्माळवार के हैं। उल्लिखित प्रबंधों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है।

✎ तिरूवायमोळी ः यह दिव्यप्रबंधम के चौथे हजार का अकेला प्रबंध है। इसे सहस्रगीती भी कहते हैं। सभी प्रबंधों में इसे सर्वोत्तम महत्व प्रदान किया गया है। यह सामवेद का प्रतिनिधि है तथा गीता की तरह भगवान के श्रीमुख से निकला हुआ प्रबंध

है। तिरूवायमोळी में कुल **1102** पद या पासुर हैं जो **10** शतकों में संकलित हैं। प्रत्येक शतक में दस दशक हैं तथा एक दशक में दस पासुर के अतिरिक्त ग्यारहवां पासुर उस दशक की फलश्रुति है। अपवाद के रूप में दूसरे शतक के सातवें दशक में **13** पासुर हैं जिसके **12** पासुर में भगवान के केशव से दामोदर पर्यन्त नाम की संस्तुति है तथा **13** वें पासुर में फलश्रुति है। प्रत्येक दशक तिरूअंतादि की शैली में है जिसमें एक दशक का अंतिम शब्द आगे वाले दशक का प्रथम शब्द बनता है। सभी प्रबंधों को मिलाकर आपने कुल **39** दिव्यदेशों की महिमा गायी है।

1।क्षीरसमुद।**2**।वैकुण्ठ। **3**।बदरी।**4**।तंजै मामणि ।**5**।अयोध्या ।**6**।मथुरा।**7**।द्वारका दुवरापदि।**8**।वेंकटम।**9**।श्रीरंगम्।**10**।तेन तिरूप्पेर ।**11**।कुडन्दै ।**12**।मलीरूमसोलै ।**13**।तिरूक्कोलूर।**14**।वेग्का यथोक्तकारी कांचीपुरम।**15**।तिरूतन्का कांची ।**16**।तिरूक्कुरूंगुडी।**17**।तिरूकन्नपुरम ।**18**।ओप्पली अप्पन तिरूविण्णगर ।**19**।वानमामलै ।**20**।आदिपिरान कुरूगुर आळवार तिरूनगरी ।**21**।तुलैविल्ली मंगलम्अरविन्दलोचन एवं देवपिरान ।**22**।तिरूप्पेरियल ।**23**।वरगुणमंगै।**24**।श्रीवैंकुठम ।**25** ।तिरूपुलिंगुडी।**26**।मायाकुत्तन ।**27**।तिरूवारन्विल्लै या अरनमूला।**28**।तिरूमूळिकुळम ।**29**।तिरूवान वान्डूर ।**30**।तिरूवाल्लावाळ ।**31**।तिरूनावै ।**32**।तिरूवनंदपुरम।**33**।तिरूप्पुलियूर कुट्टनाट्टु ।**34**।तिरूक्काटकरै।**35**।तिरूवत्तारू ।**36**।तिरूच्चेंगनूर ।**37**।तिरूक्कडित्तानम ।**38**।तिरूवनपरिशरन ।**39**।तिरूमोगूर ।

तमिल भाषा में प्रेमी के प्रेम की पराकाष्ठा को 'मडल' से चित्रित करने की परंपरा है। इसमें प्रेमी उन्मत्त की भांति नारियल वृक्ष के धड़ को घोड़ा के रूप में प्रयोग में लाता है। फटे चिटे कपड़े पहन कर प्रेमी अपनी प्रेमिका के चित्र का ध्वज धारण कर नगर की गलियों में फेरी देते हुए प्रेमिका को धिक्कारता है। प्रेमी की इस तरह की गतिविधि से समाज के लोगों का ध्यान आकर्षित होता है और प्रेमिका प्रेमी से मिलने को बाध्य हो जाती है। नम्माळवार ने भी तिरूवायमोळी के पांचवे शतक के तीसरे दशक में नायकी की ओर से नायक नारायण प्रभु को 'मडल' की धमकी दी है। प्रथा के विपरीत प्रेमिका ही यहां पेमी के विरोध में 'मडल' करती है। इसी शैली पर परकाल स्वामी की दो स्वतंत्र रचनायें हैं जो 'शिरीय तिरूमडल' तथा 'पेरिय तिरूमडल' के नाम से जानी जाती हैं तथा दोनों रचनायें दिव्यप्रबंधम के इयर्पा में संकलित हैं।

✐ तिरूविरूत्तम ः यह **100** पदों की रचना है तथा विरूत्तम गीत शैली पर आधारित है। इसे दिव्यप्रबंधम के तीसरे हजार वाले इयर्पा में रखा गया है। तमिल शब्द 'विरूत्तम' का शाब्दिक अर्थ है 'कोई घटना'। वास्तव में इसमें भगवान के प्रेम में विभोर नायकी के मनोभाव की घटनाओं का सजीव चित्रण है। इसे ऋक् वेद का सार मानते हैं। यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) वैकुंठ, (ii) तिरूमल यानी

वेंकटम, (iii) वेग्का कांची, (iv) तिरूतन्कल यानी दीपप्रकाश कांची, (v) श्रीरंगम, (vi) क्षीरसागर

✐ तिरूवाशिरियम ः यह यजुर्वेद का सार है तथा इसमें कुल **7** पासुर हैं जो भगवान की लीला गाथा से भरे हैं। इसे दिव्यप्रबंधम के इयर्पा वाले अंश में रखा गया है तथा यहां क्षीरसागर दिव्यदेश की महिमा की बन्दना की गयी है।

✐ पेरिया तिरूवन्दादि ः **87** पदों की यह रचना अंतादि शैली पर है तथा इयर्पा का एक भाग है। इसे अथर्व वेद का सार मानते हैं। इस प्रवंध में (i) वैकुंठ, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) क्षीरसागर की महिमा का वर्णन है।

6। मधुराकवि आळवार

मधुराकवि आळवार का जन्म नम्माळवार के पूर्व हो चुका था। जैसे सूर्य के उदय के पूर्व उनकी किरणें दृश्यमान होती हैं उसी तरह नम्माळवार रूपी सूर्य के आगमन के पूर्व ही मधुराकवि का आविर्भाव हुआ। मधुराकवि का अवतार ईश्वर वर्ष के चैत्र मास में शुक्ल चतुर्दशी तिथि को चित्रा नक्षत्र में शुकवार को गरूड़ के अंश से हुआ। आळवार संत का अवतार स्थल आळवार तिरूनगरी से **3** कि मी पूरब में तिरूकोलुर नामक स्थान है। अयोध्या तीर्थयात्रा के कम में आपने दक्षिण आकाश में एक प्रकाशपुंज देखा। उस प्रकाश पुंज का अनुगमन करते हुए आप आळवार तिरूनगरी में इमली के वृक्ष के खोड़र में ध्यानस्थ नम्माळवार तक पहुंच गये। नम्माळवार के पास आकर आपने एक बड़े पत्थर को जमीन पर पटक कर जोर की आवाज उत्पन्न की। नम्माळवार ने मुस्कुराते हुए आंख खोलकर मधुराकवि को देखा। मधुराकवि ने नम्माळवार से एक प्रश्न पूछा 'जीव का चैतन्य कहां रहता है ?' नम्माळवार ने छूटते ही कहा 'जीवात्मा का वास नारायण में है'। मधुराकवि उसी समय से नम्माळवार की सेवा में लग गये तथा उनके श्रीमुख से निकले सभी वचनों का आपने सावधानी से संग्रह किया जो सभी दिव्यप्रबंधम के प्रबंध हैं। नम्माळवार की प्रशस्ति में रचे गये आपके **11** पद का प्रबंध 'कण्णिनुण शिरूताम्बु' दिव्यप्रबंधम का एक महत्वपूर्ण भाग है। आपकी प्रस्तुति में कुरूगुर यानी आळवार तिरूनगरी दिव्यदेश की महिमा का बखान है।

कालकम में जब सभी आळवारो संतों की रचनाओं का लोप हो गया तो श्रीनाथमुनि ने मधुराकवि के **11** पदों वाले 'कण्णिनुण शिरूताम्बु' को बड़े उद्यम से प्राप्त कर नम्माळवार की सन्निधि में उसका **12000** बार पाठ किया। फलस्वरूप नम्माळवार ने प्रसन्न होकर श्रीनाथमुनि को सभी लुप्त प्रबंध उपलब्ध करा दिये। आज जो दिव्यप्रबंधम उपलब्ध है वह नम्माळवार से प्राप्त होने पर श्रीनाथ मुनि द्वारा संकलित

किया गया है।

<u>7। कुलशेखर आळवार</u>

आपका अवतार स्थल तिरूवंजीक्कोळम है जो वर्तमान में केरल के प्रसिद्ध नगर त्रिशूर के पास अवस्थित कोडंगलूर का एक हिस्सा है। आप एक संपन्न राजघराने में माघ महीने की शुक्ल द्वादशी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र में गुरूवार के दिन भगवान के कौस्तुभ मणि के अंश से अवतरित हुए। आपके राजमहल में वैष्णवों को बड़ा सम्मान दिया जाता था। राजमहल में वैष्णवों की संख्या की उतरोत्तर वृद्धि से तंग आकर मंत्रीगणों ने एक चाल चली और भगवान के सुवर्ण पात्र की चोरी की घोषणा कर उसे आगत वैष्णवों की करतूत बतायी। राजा को वैष्णवों पर बहुत ही विश्वास था। अतः राजा ने एक विषधर सर्प को घड़े में बंद कर मंगवाया। राजा ने घोषणा की कि वे अपना हाथ उस घड़े में डालेंगे और अगर कोई वैष्णव दोषी होगा तो सर्प उनको डस लेगा अन्यथा वे सर्प के विष दंश से मुक्त रहेंगे। मंत्रियों को बहुत ही आश्चर्य हुआ जब राजा को सांप ने छुआ तक नहीं। सभी मंत्री राजा के विश्वास के सामने नतमस्तक हो गये।

एकबार रात में राजा अपने आवास की सीढ़ी से भूखंड से ऊपर के खंड पर जा रहे थे। आप भगवान के चिंतन में विभोर थे कि भगवान कृष्ण से आपका साक्षात्कार हुआ। तत्काल आपकी कवि शक्ति जागृत हो गयी तथा भगवान की प्रशंसा में आपने संस्कृत में प्रशस्ति पदों की रचना कर डाली जो 'मुकुन्दमाला' के नाम से प्रसिद्ध है।

एकबार भगवान राम के कथा चरित्र श्रवण के क्रम में जब कथावाचक बानरी सेना के साथ समुद्र किनारे भगवान राम का मां सीता का लंका से प्राप्ति हेतु प्रतीक्षा प्रसंग सुना रहे थे तो राजा ने भाव विभोर हो कथा को अपने समय की घटना समझकर राजसेना को भगवान की सहायतार्थ शीघ्र प्रस्थान का आदेश दे दिया। कहते हैं राजा के साथ सेना समुद्र किनारे तक गयी और भगवान राम ने आपको लक्ष्मण तथा जानकी के साथ समुद्र की ओर से वापस आते हुए दर्शन दिया। इस कथा का दूसरा पक्ष यह भी सुना जाता है कि कथावाचक ने सेना कूच के गंभीर आदेश को शीघ्र ही यह कहकर टलवा दिया कि भगवान लंका पर विजयी होकर मां सीता को साथ ले अयोध्या सिधार गये हैं। आळवार संत का भगवान के चरित्र में ऐसी घोर निष्ठा थी। जीवन के बाद के वर्षों में आपने राजपाट से सन्यास ले लिया और श्रीरंगम में भगवान के कैंकर्य में लग गये। आपकी तिरूमला के श्रीनिवास भगवान पर इतनी अटूट श्रद्धा थी कि भगवान के मंदिर के प्रवेश द्वार पर आपने सीढ़ियां बनना पसंद किया जिससे कि दर्शन हेतु आने वाले भक्तों के चरण रज से आप अनवरत रंजित होत रहें। आपकी असीम भक्ति के सम्मान

में भगवान वेकटेश के प्रवेश सीढ़ी को 'कुलशेखर पड़ी' कहा जाने लगा।
दस दशकों में संकलित आपकी रचना को 'पेरूमाल तिरूमोळी' कहते हैं जो दिव्यप्रबंधम के प्रथम हजार वाले भाग का एक महत्वपूर्ण अंश है एवं इसमे कुल **105** पासुर हैं। इसका एक दशक देवकी की उस मनोस्थिति का बहुत ही भावुक चित्रण करता है जिसमें देवकी भगवान कृष्ण के बाललीला के दर्शन से बंचित रह गयीं तथा बाललीला का आनंद यशोदा को मिला। आपने रामायण की कथा को अपनी रचनाओं में बहुत ही महत्व दिया है जिसके माध्यम से कौसल्या का लोरी गाकर भगवान को सुलाना तथा संक्षिप्त रामायण रोचक तरीके से प्रस्तुत हैं।
जिन **10** दिव्य देशों की महिमा आपने सुनायी है वे हैं ः (i) श्रीरंगम, (ii) वेंकटम, (iii) वित्तुवक्कोडु, (iv) तिरूकन्नपुरम, (v) तिल्लै चित्रकूट यानी चिदंबरम, (vi) तिरूवाली, (vii) उरैयूर, (viii) यमुना, (ix) अयोध्या, (x) क्षीरसमुद्र ।

8 | पेरियाळवार या श्रीविष्णुचित्त स्वामी

'पेरिय' तमिल शब्द है जिसका अर्थ है 'वरीय' या 'वरिष्ठ'। श्रीविष्णु चित्त स्वामी का अवतार तमिलनाडु में मदुरै से **80** कि मी पर अवस्थित श्रीविल्लीपुत्तुर में क्रोदना वर्ष के ज्येष्ठ मास में एकादशी तिथि को स्वाती नक्षत्र में रविवार को हुआ। आपके पिता का नाम मुकुन्द भट्ट तथा मां का नाम पदमवल्ली है।आप भगवान के वाहन तथा रथ के अंश से अवतरित हुए। बचपन से ही आप में भगवान की सेवा भावना कूट कूट कर भरी हुई थी। फूल तुलसी उगाकर माला बनाना आपका मुख्य कार्य था। श्रीविल्लीपुत्तुर के बटपत्रशायी भगवान की माला से सेवा अर्पित करने में आप आजीवन तल्लीन रहे।
पांडय क्षेत्र के राजा बल्लभ देव जी की बहुत प्रसिद्धी थी। राजा प्रजा की भलाई हेतु रात में वेष बदलकर विचरण किया करते तथा प्रजा की आवश्यकता से अपने को अवगत करते। एक रात राजा को एक वृद्ध विद्वान ब्राह्मण से भेंट हुई जो काशी से गंगा स्नानकर सेतु बंध रामेश्वरम जा रहे थे। राजा ने ब्राह्मण से पूछा "अच्छे पुनर्जन्म को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?' उन्होंने राजा को बताया 'जैसे दिन में रात की आवश्यकता के लिये काम करते हैं तथा गीष्म एवं बसंत ऋतु में वर्षा ऋतु के लिये तैयारी कर वस्तुसामग्री एकत्र करते हैं उसीतरह से इस जीवन में अगले जीवन के लिये प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है।' इश परामर्श से प्रभावित होकर राजा ने विद्वज्जनों की एक सभा बुलाई।उस सभा का यह निश्चित करना मुख्य उद्देश्य था कि इस जीवन में कौन सा कार्य करके श्रेष्ठ अगला जन्म प्राप्त किया जा सकता है।सर्वोत्तम

विचार देने वाले के लिये ऊंची राशि के पुरस्कार की भी घोषणा की गयी।
इधर बटपत्रशायी भगवान ने श्रीविष्णु चित्त स्वामी को स्वप्न में राजा की सभा में भाग लेने को प्रेरित किया। उधर राजा के धार्मिक सलाहकार शेल्वानांबी ने भी राजा को उत्प्रेरित कर श्रीविष्णुचित्त स्वामी को निमंत्रण भेजा। सभा में अपनी बारी आने पर श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने नारायण के प्रति शरणागति को सर्वोत्तम मार्ग बताया। आळवार संत विजेता घोषित हुए तथा पुरस्कार की राशि के अतिरिक्त राज सम्मान के साथ हाथी पर सबार होकर एक शोभायात्रा के साथ श्रीविल्लीपुत्तुर के लिये प्रस्थान किये। इस शोभा यात्रा को देखने वैकुंठलोक से भगवान भी गरूड़ पर सबार हो चले। गरूड़ की गति से असंतुष्ट भगवान स्वयं कूदकर श्रीविष्णुचित्त स्वामी की शोभायात्रा देखने पधार गये। जब आळवार संत को भगवान के दिव्य स्वरूप पर दृष्टि पड़ी तो उन्होंने हाथी के मस्तक से सज्जा के सामान को लेकर वाद्य यंत्र के रूप में प्रयोग किया तथा भगवान की अलौकिक छवि को शाश्वत रूप से निहारते रहने की मंगल कामना करने हेतु स्वतःस्फूर्त्त पदों की रचना कर डाले जो आज 'प्पल्लाण्डु' के नाम से विख्यात है। भगवान की सभी शोभायात्रा का प्रारंभ तथा अंत 'प्पल्लाण्डु' गान से होता है। श्रीविष्णुचित्त स्वामी स्वयं से ज्यादा भगवान की रक्षा के लिये चिंतित हो गये। 'भगवान को कोई नजर दोष न लगा दे' इस भावना से ओत प्रोत होकर आपने प्पल्लाण्डु गाया। चूँकि आप एक सच्चे अभिभावक के रूप में भगवान के लिये चिंतित हो गये अतः आपको 'पेरिय' शब्द से सम्बोधित किया गया और 'पेरिय आळवार' के नाम से प्रसिद्ध हुए।
श्रीविल्लीपुत्तुर आकर आपने सारी राशि भगवत कैंकर्य में समर्पित कर स्वयं माला बनाने के काम में लग गये। आळवार संत को कोई संतान नहीं थी। एकदिन तुलसीकानन में एक नवजात बालिका पड़ी हुई मिली। आपने बड़े लाड़ प्यार से इस बालिका का लालन पालन किया। यही बालिका गोदा देवी हुई जो श्रीरंगनाथ से ब्याही गयीं। बारह आळवार संतों की श्रृंखला में गोदा देवी भी एक आळवार हैं।
श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने भगवान की संस्तुति में 'पेरियाळवार तिरूमोळी' की रचना की जो दिव्यप्रबंधम का पहला प्रबंध है और इसमें कुल **473** पासुर हैं जो पांच शतकों में संकलित है। आळवार संत के लिये तमिल में बड़े सम्मान से कहा जाता है कि आपने 'पू मालै' यानी पुष्पमाला की सेवा के साथ साथ 'पा मालै' यानी नारायण तत्व की गीतभरी काव्यात्मक सम्यक व्याख्या की। आपके प्रबंध में जिनकी प्रशस्ति गायी गयी है वे **20** दिव्यदेश हैं : (i) तिरूकोट्टियूर, (ii) वेंकटम, (iii) तिरूकुरूंगुडी, (iv) तिरूवेल्लारै, (v)

तिरूमालैरूञशोलै, (vi) तिरूप्पेर, (vii) कुडन्दै, (viii) कण्णपुरम, (ix) गोवर्द्धन, (x) देवप्रयाग, (xi) तिरूवरंगम्यानी श्रीरंगम्, (xii) शालग्राम, (xiii) द्वारका, (xiv) अयोध्या, (xv) मथुरा (xvi) वैकुंठ, (xvii) बदरी, (xviii) श्रीविल्लीपुत्तुर, (xix) क्षीराब्धि, (xx) चिदंबरम।

9। आंडाल या गोदा देवी

आपको कोदै, गोदा मां, गोदम्मा, रंगनायकी आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। तमिलनाडु में मदुरै से **80** कि मी दूर तेनकाशी के पासी विरूदनगर रोड पर स्थित श्रीविल्लीपुत्तुर नगर में श्रीविष्णुचित्त स्वामी को आप तुलसी कानन में आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में मंगलवार को एक नवजात शिशु के रूप में मिलीं। आपको नीलादेवी तथा एक अन्य मान्यता से भूदेवी का अवतार माना जाता है। एक मान्यता से आप **8** जून **3104** ई पू में प्रकट हुई। आपकी रचनाओं की भाषा के आधार पर एक अन्य मान्यता आपके अवतार को **8**वीं ईस्वी सदी के पूर्वार्द्ध में मानती हैं। सीता की तरह आन्डाल भी पृथ्वी से निकली हैं। आन्डाल को श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने तुलसी के बागीचे में पाया था। भगवान की सेवा के लिये माला बनाने में आन्डाल अपने पिता की सहायता किया करती थीं। पिता की अनुपस्थिति में माला की सुन्दरता को ये स्वयं गले में धारण कर आइने में देखकर परखती थीं। एक दिन पिता ने इस चीज को देख लिया और दुःखी मन से माला को अपवित्र समझ उस दिन भगवान को कोइ माला अर्पि त नहीं की। भगवान ने इन्हें स्वप्न देकर आन्डाल के पहनी हुई माला को हीं चढ़ाने का निर्देश दिया। उस दिन से श्रीविष्णुचित्त स्वामी आन्डाल को अवतार के रूप में देखने लगे। जब ये विवाह योग्य हुईं तव आन्डाल ने श्रीरंगनाथ भगवान से ही संबंध बानाने का निश्चय किया। भगवान श्रीरंगनाथ के निर्देश से आन्डाल को डोली में सजाकर भगवान के मंदिर में अतिउत्साह पूर्वक लाया गया। तदुपरान्त आन्डाल ने अपने को भगवान की सन्निधि में तिरोहित कर दिया।

दिव्यप्रबंधम में आपकी दो रचनायें प्रथम एक हजार वाले भाग में सम्मिलित है। आपकी प्रथम रचना 'तिरूप्पावै' है तथा दूसरी रचना 'नाच्चियार तिरूमोळी' है। श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कंध **10** के अध्याय **22** की कात्यायनी व्रत की तरह आन्डाल धनुर्मास में **30** दिन व्रत करती थीं जिसका उद्देश्य श्रीकृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करना था। तिरूप्पावै के **30** पासुर इसी प्रयास का सजीव चित्रण है। पासुर **1** में आन्डाल अपनी सखियों को सूर्योदय से पूर्व जागकर स्नान कर पूजा के लिये आमन्त्रित करती हैं तथा पासुर **2** में व्रत के नियमों के पालन का विवरण है जिसके अनुसार इस

अवधि मे दूध घी का त्याग कर जूड़े में फूल नहीं बांधना तथा भक्ति साहित्य का पाठ करते हुए संतजनों को सम्मान तथा दान करना है। पाशुर **3** एवं **4** में भगवान की महत्ता तथा व्रत के फल चित्रित हैं। पासुर **5** में पूजा की विधि का वर्णन है। पाशुर **6** से **15** तक सखियों को जगाने के उपकम का वर्णन है। पाशुर **16** में नंद जी के राजमहल के द्वारपाल को जगाया जाता है। पासुर **17** में नंदजी, यशोदा, बलराम तथा श्रीकृष्ण को जगाया जाता है। पाशुर **18** से **20** तक भगवान श्रीकृष्ण की सहभागिनी नप्पिनाय जो नीला देवी हैं, को जगाया जाता है। **21** से **23** पासुर तक भगवान से बातचीत को चित्रित किया गया है। पाशुर **24** से **29** तक भगवान की प्रार्थना तथा पूजा व्रत के उद्देशय से भगवद कैंकर्य करने का आश्वाशन प्राप्त कर उत्साह की पूर्णाहति में घी उत्पलावित खीर समर्पित कर श्रृंगार कर भगवान का चिर सन्निधि प्राप्त करना है। पाशुर **29** तो पूर्ण समपर्ण और शरणागति को चित्रित करता है जो वैष्णवता तथा उसकी प्रपन्नता का द्योत्तक है। पाशुर **30** में आन्डाल स्वयं को फलदायी तिरूप्पावै को रचने वाली बताती हैं।तिरूप्पावै के कई शाब्दिक अर्थ हैं। जो ज्यादा लोकप्रिय है वह है "श्रेष्ठ व्रत"। एक और सटीक अर्थ है। "तिरू" यानि "सम्मानजनक", और "प्पावै" यानि "विवाह योग्य कन्या"। तिरूप्पावै में भगवान नारायण के विभिन्न अवतारों का यशोगान किया गया है । त्रिविकम भगवान को पाशुर **3, 17** एवं **24** में; क्षीरसागरशायी भगवान को **2, 4** एवं **6** में; राम को **10, 12, 13** में; तथा श्रीकृष्ण को कईयों में चित्रित किया गया है। श्रीलक्ष्मी नृसिंह को पासुर **23** में विशेष रूप से वर्णित किया गया है। तिरूप्पावै अति पवित्र प्रबंध है तथा इसका पाठ घरों एवं मंदिरों में नित्य अतिश्रद्धा से किया जाता है। धनुर्मास के **30** दिन तिरूप्पावै के पाठ के साथ विशेष उत्सव की तरह मनाये जाते हैं।आन्डाल के **143** पासुर की "नाच्चियार तिरूमोलि"का एक भाग है "वार्णम अयराम" है जिसमें आन्डाल ने भगवान श्रीकृष्ण से विवाह के विभिन्न कार्यकमों का सजीव चित्रण किया गया है और जो "सप्तपदी" पर जाकर पूरा होता है।तमिलनाडु के प्रत्येक परिवार मे वर वधू के कल्याणार्थ विवाह के अवसर पर "वार्णम अयराम" का विधिवत पारायण आवश्यक रूप से किया जाता है। इसमें जिनकी प्रशस्ति गायी गयी है वे **11** दिव्यदेश हैं ः (i) वैकुंठ, (ii) वेंकटम, (iii) पुदुवै यानी श्रीविल्लीपुत्तुर, (iv) तिरूमालैरूञशोलै, (v) कण्णपुरम, (vi) मथुरा, (vii) क्षीरसागर, (viii) तिरूवरंगम्यानी श्रीरंगम्, (ix) आयप्पादी यानी वृन्दावन तथा गोवर्द्ध न एवं यमुना, (x) द्वारका, (xi) कुडन्दै।

<u>**10**।तोंडराडिप्पोडि आळवार या भक्ताघ्रिरेणु स्वामी त</u>मिलनाडु के तिरिचीरापल्ली

शहर के पास तिरूमंडागुडी नगर में आपका आविर्भाव प्रभव वर्ष के मार्गशीर्ष महीने में कृष्ण चतुर्थी को ज्येष्ठा नक्षत्र में मंगलवार के दिन भगवान के वैजयन्तीमाला के अंश से हुआ। आप वैदिक ब्राह्मण कुल के थे और आपका बचपन का नाम विप्रनारायण था।आपके पिता 'वेद विसरधर' परम विष्णुभक्त थे। कथा है कि विप्रनारायण ने भगवान के दिव्यपार्षद विष्वकसेन से संसार के धर्मकृत्य को समझा। एक दिन विप्रनारायण **108** दिव्यदेश की यात्रा पर निकले। आपके दर्शन का सबसे पहला दिव्यदेश श्रीरंगम हुआ। भगवान रंगनाथ के विग्रह से आप इतना प्रभावित हुए कि अन्य दिव्यदेश की यात्रा स्थगित कर आप श्रीरंगम में ही रूक गये। एक स्थान पर सुन्दर तुलसी एवं फूल का उद्यान विकसित कर एक छोटी पर्णकुटी में रहने लगे तथा नित्य भगवान रंगनाथ को सुन्दर माला बनाकर अर्पित करने लगे। एक बार देवी तथा देवदेवी नामकी दो सुन्दर नर्तकी बहनें आप के उद्यान की सुन्दरता देख मुग्ध हो गयीं। वे लोग आपसे बात करना चाहती थी परंतु आप भगवान रंगनाथ की पुष्पसेवा में इतने तल्लीन थे कि दोनों बहनें आप से तिरस्कृत अनुभव की। छोटी बहन देवदेवी ने आपको अपने प्रेम जाल में बांध लेने का ठान लिया। आपके उद्यान में रहकर देवदेवी आपकी हरतरह से सेवा करने लगी। दैवसंयोग से एक वर्षा की रात आप उसके त्रियाचरित्र के जाल में फंस गये। भगवान रंगनाथ का पुष्प कैंकर्य छोड़कर तब से आप उसके साथ उन्मत्त की भांति रहने लगे। उस नर्तकी की खुशी के लिये आप धन कमाने में लग गये तथा अपनी सारी कमाई उस नर्तकी को अर्पित करते गये। एक दिन वह उद्यान छोड़कर अपने बड़ी बहन से मिलने गयी। आप भी उसके पीछे हो लिये। आपके पास कुछ भी धन न देखकर उसकी मां ने आपको धक्का देकर घर से बाहर कर दिया।आपकी यह स्थिति देख भगवान रंगनाथ को दया आ गयी। भगवान की लीला से एक बटुक भगवान का चांदी का पात्र नर्तकी को विप्रनारायण के उपहार के रूप में दे आया। मंदिर में पुजारी पात्र को न देखकर उसकी खोज करने लगे। इस अपराध के लिये वह नर्तकी पकड़ी गयी परंतु अंततः विप्रनारायण ही दोषी पाये गये और राजा के कारागार में बंद कर दिये गये। भगवान ने राजा को स्वप्न देकर विप्रनारायण को कारागार से मुक्त कराया। तब से विप्रनारायण ने नर्तकी से पिंड छुड़ा लिया तथा पुनः भगवान की सेवा में लग गये। आप मंदिर के प्रवेश द्वार पर बैठकर दर्शनार्थी भक्तों की चरण धूली को अपने सिर पर धारण करते थे। इसीके कारण से आपका नाम भक्तांघ्रिरेणु पड़ा। आपकी दो रचनायें दिव्यप्रबंधम के प्रथम हजार में सम्मिलित हैं तथा ये रचनायें भगवान रंगनाथ की श्रद्धामय भक्ति भाव से ओतप्रोत हैं। पहली रचना

'तिरूमालै' कही जाती है जिसमें कुल **45** पासुर हैं। तिरूमालै में आपने अपनी इन्द्रियों की शिकार का संदर्भ दिया है तथा अपने आपको भगवान का पुष्पमाला कैंकर्य करने वाला बताया है। आपकी दूसरी रचना **10** पासुरों की है तथा इसे 'तिरूप्पळिळयळुच्चि' कहते हैं। इसमें भगवान रंगनाथ को प्रातः जगाने की बंदना है। आपके दोनों प्रबंधों में तिरूअरंगम यानी श्रीरंगम दिव्यदेश की महिमा गायी हुई है।

11। तिरूप्पण आळवार या योगीवाहन मुनि

आप 'मुनिवाहन' तथा 'पाण' नाम से भी सम्बोधित किये जाते हैं। आपका आविर्भाव श्रीरंगम के पास उरैयूर या अलगापुरी स्थान में पुर्तुमादी वर्ष के कार्तिक महीने में रोहिणी नक्षत्र में बुधवार के दिन भगवान के 'श्रीवत्स' के अंश से हुआ। आप अन्त्यज कुल के संगीत प्रेमी घराने से आये। इस संगीत प्रेमी कुल को तमिल में 'बानर' कहते हैं। आपको पद रचने तथा सुरीली आवाज में गाने का नैसर्गिक कला प्राप्त था। नित्य आप भगवान रंगनाथ के भक्तों पर पद रचकर पण वाद्ययंत्र की संगति पर उसे कावेरी के किनारे बैठ गाते रहते। नीच कुल में जन्म के कारण आपका मंदिर में प्रवेश नहीं था। कहते हैं आप कावेरी के दूसरे किनारे पर बैठते थे क्योंकि मंदिर के किनारे पर आपको बैठना वर्जित था। उसी किनारे से ही आप भगवान की संगीत सेवा समर्पित करते। एक दिन रंगनाथ भगवान ने वरीय अर्चक लोकसारंग मुनि को तिरूप्पण आळवार को अपने कंधे पर बिठाकर मंदिर में लाने को कहा। लोकसारंग मुनि ने वैसा ही किया जैसा उन्हें भगवान ने उत्प्रेरित किया था। तिरूप्पण आळवार के मना करने पर भी लोकसारंग मुनि ने कंधे पर बैठाकर रंगनाथ भगवान के समक्ष आळवार संत को प्रस्तुत किया। आळवार संत ने इस जीवन में अपनी आंखों से भगवान के दर्शन की कल्पना ही नहीं की थी। जब आपने भगवान की छवि देखी तो अश्रुपूरित नयनों से आपादमस्तक भगवान के सौंदर्य का वर्णन **10** पासुरों में तत्काल भगवान के समक्ष ही कर दिया। यह रचना 'अमलनादिपिरान' के नाम से दिव्यप्रबंधम के प्रथम हजार वाले भाग में सम्मिलित है। चूंकि आप लोकसारंगमुनि के कंधे पर भगवान के मंदिर में लाये गये इसलिये आपका नाम 'मुनिवाहन' या 'योगीवाहन' हो गया। आप पण वाद्ययंत्र पर संगीत प्रस्तुत करते थे इसलिये आप 'तिरूप्पण आळवार' नाम से सम्बोधित किये जाते रहे। आपके इस प्रबंध में वेंकटम एवं अरंगम (श्रीरंगम) दिव्यदेश की गाथा प्रस्तुत है।

12। तिरूमंगै आळवार या परकाल स्वामी

आपको कलकन्रि या कलियन नाम से भी जाना जाता है। तमिल नाडु के शिरकाळी या तिरूवाली तिरूनगरी के समीपस्थ तिरूकुरयलुर में आपका आविर्भाव नलवृषम वर्ष के

कार्तिक महीने में कृत्तिका नक्षत्र में गुरूवार को भगवान के सारंग धनुष के अंश से हुआ। आपके पिता चोल राजा के मुख्य सेनापति थे। आपके माता पिता नारायण के परम भक्त थे।आप पर इस संस्कार का अमिट प्रभाव पड़ा। आपके बचपन का नाम नीळन था। आपकी कुशाग्र बुद्धि एवं साहस के पुरस्कार में तिरूमंगै नाडु के राजा ने आपको मुख्य सेनापति पर नियुक्त किया। आपने अपनी कवि हृदय का प्रदर्शन कर नार्कविप पेरूमाल कवि का हृदय जीत लिया जिससे आपको 'नार्कविप पेरूमाल' की उपाधि से विभूषित किया गया। बीते वर्षो में राजा ने आपको आलिन नाडु का राजा बनाकर आपकी राजधानी तिरूमंगै घोषित कर दी। चूंकि आप समय की सीमा में नहीं बंधे थे इसलिये आपका नाम 'कालन' एवं 'परकालन' भी लोकप्रिय हो गया। अपने जीवन को पूर्णतया वैष्णवता के प्रचार प्रसार में समर्पित करने के पूर्व आप 'तिरूमंगै मन्नन' के नाम से जाने जाते रहे। कथा है कि सुमंगली नाम की अप्सरा की एक सहेली से कपिल मुनि ने दुखी होकर उस अप्सरा को पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप दे दिया। परिणामस्वरूप उस अप्सरा का तिरूवाली के पास तिरूवेळळैकुळम के एक तालाब में कुमुद के फूल में जन्म हुआ।एक वैद्य ने उस नवजात शिशु का अपनी संतान की तरह पालन पोषण किया। यह बालिका बहुत ही सुन्दर एवं कुशाग्र बुद्धि की थीं। तिरूमंगै की नजर जब इस किशोरी पर पड़ी तो आपने उससे व्याह का प्रस्ताव रख दिया। किशोरी एक ही शर्त पर व्याह को तैयार हुई कि तिरूमंगै मन्नन एक वर्ष तक नित्य **1008** वैष्णवों को भोजन करायेंगे। तिरूमंगै ने शर्त स्वीकार कर ली तथा बाद में दोनों परिणय सूत्र में बंध गये।**1008** वैष्णवों को मंगैमदम नामक स्थान पर एक वर्षतक प्रतिदिन भोजन के लिये व्यव्स्था की गयी तथा भोजन का कार्यकम नियमित रूप से चलने लगा। धीरे धीरे इस कार्य के लिये परकालन स्वामी के पास पर्याप्त धन की कमी होने लगी। प्रारंभ में आपने राजा के कर की राशि को इस कार्य में खर्च कर दिया। परिणामस्वरूप राजा ने कुपित होकर आपको बिना अन्न पानी के नरैयूर नाच्चियार कोईल में बंदी की तरह कैद में डाल दिया। नाच्चियार कोईल कुंभकोणम से **10** कि मी पर अवस्थित है। तीसरे दिन पेरूमाल ने आपकी प्रार्थना पर कांचीपुरम के वेगवती नदी में एक स्थान पर गड़ी धनराशि की सूचना दी। आपने इसे प्राप्त कर राजा के कारागार से अपने को मुक्त किया।पेरूमाल की सूचना पर नदी से धन की प्राप्ति पर राजा आपसे प्रभावित होकर सारा धन आपको वापस कर दिया।आप इस धन का सदुपयोग वैष्णवों के भोजन में करने लगे और क्रमशः आपको अधिक धन की आवश्यकता हुई।

तदुपरांत धन की टोह में आपने जंगल में धनी यात्रियों को लूटना शुरू कर दिया परंतु

वैष्णव भोजन का कम चलता रहा। आपकी निष्ठा से प्रसन्न होकर एक दिन नारायण स्वयं लक्ष्मी के साथ बहुमूल्य आभूषण धारण कर एक नवविवाहत दंपति के रूप में यात्री बनकर जंगल के रास्ते से गुजरे। परकालन ने दिव्यदंपति के सारे आभूषण छीनकर उसे एक गट्ठर में बांध चलने को तैयार हुए। परंतु वह गट्ठर इतना भारी हो गया कि परकालन के लिये उसे उठाना कठिन था। परकालन ने गुस्से में नारायण दंपति पर तलवार खींच ली कि किसी जादू टोना के कारण उनलोगों ने गट्ठर को भारी कर दिया। नारायण की कृपा कटाक्ष जैसे ही परकालन के आंखो पर पड़ी कि उसे ज्ञान हो गया और वह नारायण के चरणों पर गिर पड़ा। यह स्थान वेदराजपुरम के नाम से जाना जाता है जो आळवार संत के जन्मस्थान तिरूकुरैयालुर से **5** कि मी पर है। वेदराजपुरम से **3** कि मी पर 'तिरूवाली तिरूनगरी' दो स्थान पास पास अवस्थित हैं और दोनों स्थल एक ही दिव्यदेश के रूप में प्रसिद्ध हैं। जब भगवान ने आळवार संत को जंगल में लूटे जाने के बाद अष्टाक्षर मंत्र से परिचय कराया था उस समय भगवान कल्याण तिरूकोळम यानी परिणय परिधान में थे। यहां कावेरी को अष्टाक्षर गंगा कहते हैं। इस मंत्र की विधिवत दीक्षा आळवार संत को 'तिरूनरैयूर' में दी गयी जो स्थान 'नाच्चियार कोइल' के नाम से विख्यात एक दिव्यदेश है। यहां पेरूमाल दो भुजा से शंख चक धारण कर आळवार संत को वैष्णव बनाने के लिये प्रसिद्ध हैं। कुमुदवल्ली से विवाह के पूर्व परकालन को 'तिरूमंगै मन्नन' कहा जाता था परंतु जब तिरूनरैयूर के भगवान ने आपको विधिवत अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा देकर वैष्णव बनाया तो आप 'परकाल स्वामी' या 'तिरूमंगै आळवार' के रूप में जाने गये और तत्पश्चात् ही आप कुमुदवल्ली से परिणय सूत्र में बंधे। नारायण से दीक्षित हो परकालन अब परकाल स्वामी हो गये। अष्टाक्षर मंत्र का परकाल स्वामी से बहुत ही तादाम्य संबंध है। ऐसी मान्यता है कि तिरूकण्णपुरम के भगवान सोवरीराजा ने आळवार संत को अष्टाक्षर मंत्र की पूरी व्याख्या बतायी है। इसीलिये तिरूकण्णपुरम अष्टाक्षर मंत्र की सिद्धि के लिये विख्यात है।

विभिन्न दिव्यदेशों के अर्चा विग्रहों का दर्शन करते हुए आप उनकी प्रशस्ति में पद रचने लगे। सभी बारह आळवार में आपने अधिकतम दिव्य देशों की यात्रा कर उनका यशोगान किया है।

✐आपकी **6** रचनायें दिव्यप्रवंधम के प्रमुख भाग हैं। नम्माळवार के बाद प्रभु की प्रशस्ति में सबसे ज्यादा पासुरों की रचना करने वाले आप द्वितीय आळवार हैं। द्वितीय हजारवाले दिव्यप्रवंधम में सभी तीन प्रबंध तिरूमंगै आळवार के द्वारा विरचित हैं।

आपकी बाकी तीन रचनायें इयर्पा के अंश हैं। सभी छः प्रबंधों के पासुरों की कुल संख्या **1253** हैं जबकि नम्माळवार के सभी प्रबंधों में कुल **1296** पासुर हैं। इस तरह से पासुरों की संख्या के विचार से दिव्यप्रबंधम के योगदान में नम्माळवार प्रथम स्थान पर हैं तथा आप द्वितीय स्थान पर हैं। आपकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है।

✐ पेरिया तिरूमोळी ः यह चार हजारवाले पासुरों के दिव्यप्रबंधम का द्वितीय हजार का प्रबंध है। यह **11** शतकों में संकलित है तथा इसमें कुल **108** दशक हैं। इसमें पासुरों की कुल संख्या **1084** है। यह प्रबंध अधिकतम दिव्यदेश की प्रशस्ति गाता है। आळवार संत तमिलनाडु स्थित कुंभकोनम के 'कुडन्दै' तथा तंजावुर के 'तंजैमामणि' के अर्चा विग्रहों की बंदना करने के पश्चात अपनी यात्रा हिमालय के दिव्यदेशों से पारंभ करते हैं। कमशः आप आंध्रप्रदेश के दिव्य देश 'तिरूमला' तथा 'अहोविलम' का यशोगान करते तमिलनाडु तथा केरल के दिव्यदेशों का भ्रमण करते हैं।

✐ तिरूक्कुरून्दाण्डगम ः इसमें पासुरों की कुल संख्या **20** है तथा यह भी दूसरे हजार वाले दिव्यप्रबंधम का एक प्रबंध है जिसका स्थान पेरिया तिरूमोळी के बाद है।

✐ तिरूनेडुन्दाण्डगम ः यह दूसरे हजारवाले दिव्यप्रबंधम का तीसरा प्रबंध है तथा इसमें पासुरों की कुल संख्या **30** है। इस प्रबंध में आळवार संत ने अपने आप को नायकी के रूप में प्रभु से मिलन को चित्रित किया है। जैसे नम्माळवार की रचनाओं की नायकी 'परांकुश नायकी' नाम से जानी जाती है आपके प्रबंधों की नायकी 'परकाल नायकी' के नाम से विख्यात है।

✐ तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै ः यह तीसरे हजार वाले दिव्यप्रबंधम 'इयर्पा' का एक प्रबंध है तथा यह मात्र एक पासुर से बना है।

✐ शिरिय तिरूमडल ः यह तीसरे हजार वाले दिव्यप्रबंधम 'इयर्पा' का एक प्रबंध है तथा **77** पंक्तियों वाला मात्र एक पासुर से बना है। पासुर गिनती की दूसरी रीति के अनुसार इसमें **38** पासुर गिने जाते हैं। नम्माळवार की तरह तिरूमंगै आळवार ने प्रेमिका की प्रेम पराकाष्ठा को 'मडल' की प्रथा से चित्रित किया है।

✐ पेरिय तिरूमडल ः यह तीसरे हजार वाले दिव्यप्रबंधम 'इयर्पा' का एक प्रबंध है तथा **148** पंक्तियों वाला मात्र एक पासुर से बना है। पासुर गिनती की दूसरी रीति के अनुसार इसमें **80** पासुर गिने जाते हैं। शिरिय तिरूमडल में 'शिरिय' शब्द का अर्थ है 'छोटा' तथा पेरिय तिरूमडल में 'पेरिय' का अर्थ है 'बड़ा'। इस प्रबंध में आळवार संत ने बड़े स्तर पर प्रेमिका की प्रेम पराकाष्ठा को 'मडल' की प्रथा से चित्रित किया है।

श्रीरंगम के श्रीरंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार तथा कई परकोटों का निर्माण आपकी अमर

कृति है। इस महान कार्य को आप पास के दिव्यदेश ऊत्तमार कोईल में रहकर करते थे। कहते हैं कि पेरूमाल स्वयं एक साहूकार बनकर आपको तराजू से तौलकर पुस्तिका में लेखा दर्ज कर धन प्रदान कर रहे थे। एकबार जब आपने साहूकार से उसका विशेष परिचय जानना चाहा तो साहूकार वहां से कूचकर गया और आप उसका पीछा करने लगे। अंततः वह तराजू तथा लेखा पुस्तिका के साथ अदनूर दिव्यदेश के मन्दिर में प्रवेश कर गया। अदनूर के पेरूमाल आज भी सिरहाने के नीचे तराजू तथा बायें हाथ में लेखा पुस्तिका रखकर भुजंगशयनावस्था में दर्शन देते हैं।

इस घटना के बाद परकाल स्वामी को पुनः धन की कमी हो गयी। आपने अपने उद्यम से नागपत्तनम के पास बहुत सारा स्वर्ण प्राप्त किया तथा श्रीरंगम लौटने के रास्ते तिरूकन्नंगुडी के पास थकावट के कारण एक खेत में समस्त स्वर्ण को जमीन में गाड़कर पास के इमली वृक्ष के नीचे सो गये। वृक्ष को आपने स्वर्ण की रखवाली का भार दे दिया। जब किसान खेत में हल जोतने आया तो वृक्ष ने बहुत सा पत्ता आपके ऊपर गिराकर आपको जगा दिया। खेत से गड़े हुए स्वर्ण को जब आप निकालने लगे तब किसान ने आपका विरोध किया। आपने किसान से प्रतिरोध में उस जमीन पर अपना स्वामित्व घोषित कर दिया तथा उसका कागजात लाकर दिखाने तक किसान को खेत जोतने से मना कर दिया। आपकी इस घटना को देखकर पास के एक कुंए से एक महिला ने आपको पानी लेने से मना कर दिया। आपने कुपित होकर कुंए को सूख जाने का शाप दे दिया। भूखे एवं प्यासे आपने वहां रात वितायी। आपकी सेवा भावना से प्रसन्न होकर पेरूमाल ने बूढ़े ब्राह्मण का रूप धरकर आपको भोजन कराया। रात में ही आपने खेत से स्वर्ण निकाल लिया तथा श्रीरंगम के लिये प्रस्थान कर गये। चलते समय प्रसन्न होकर आपने वृक्ष को चिरंतन बने रहने का वर दिया जिसके परिणामस्वरूप आज भी तिरूकन्नंगुडी में वह जागता हुआ इमली वृक्ष तथा सूखा हुआ कुंआ वर्तमान है।

पेरिया तिरूमोळी के सातवें शतक का दसवां दसक दिव्यदेश तिरूकन्नमंगै के भगवान की स्तुति है। यह स्थान कुंभकोनम से **40** कि मी पर तथा तिरूवरूर से **6** कि मी पर स्थित है। फलश्रुति के अंतिम पाशुर **7।10।10** में आळवार संत ने बताया है कि भक्तों को तो पाठ करने से लाभ होगा ही भगवान को भी स्वयं इसके पाठ करने से उनका ज्ञान बढ़ेगा। ऐसी मान्यता है कि भगवान ने आळवार संत की वाणी को पेरियावचन पिल्लै के रूप में अवतार लेकर चरितार्थ किया। पेरिया वचन पिल्लै स्वामी का अवतार नक्षत्र भगवान कृष्ण का जन्म नक्षत्र रोहिणी है। आळवार संत का अवतार नाम पिल्लै के स्वरूप में हुआ जिनका अवतार नक्षत्र कार्तिक मास का कृत्तिका है। नाम

पिल्लै स्वामी पेरियावचन पिल्लै स्वामी के गुरू थे। इस तरह से भगवान ने पेरियावचन पिल्लै स्वामी के स्वरूप में पधारकर नामपिल्लै स्वामी के स्वरूप में अवतरित आळवार संत का शिष्यत्व स्वीकार किया।

मार्गशीर्ष महीने के वैकुंठ एकादशी के उत्सव में आळवार तिरूनगरी से नम्माळवार का विग्रह शोभायात्रा में श्रीरंगम लाकर उत्सव मनाना आपकी देन है। उत्सव के उपरांत आळवार संत का विग्रह पुनः आळवार तिरूनगरी वापस ले जाने की परंपरा थी परंतु रामानुज स्वामी के काल से श्रीरंगम में ही नम्माळवार की सन्निधि बनाकर उत्सव विग्रह की स्थापना की गयी जो धनुर्मास तथा वैकुंठ एकादशी के उत्सव में सम्मिलित होते हैं।

नांगुनेरी के पास तिरूकुरूंगुडी में आपका मोक्ष हुआ तथा मोक्ष के पूर्व आपने अपनी एक स्वर्ण प्रतिमा को हृदय से लगा कर उसमें अपनी संपूर्ण शक्ति का समावेश कर दिया था। बाद में उस प्रतिमा को तिरूनांगुर में तिरूवाली के पास अवस्थित तिरूनगरी में लाकर स्थापित कर दिया गया है।

सभी प्रबंधों को मिलाकर आपने कुल **85** दिव्यदेशों की महिमा गायी है।

1।क्षीरसमुद।**2**।वैकुण्ठ। **3**।जोशीमठ तिरूप्पिरूती ।**4**।बदरी।**5**।तंजै मामणि ।**6**।शिंगवेल कुन्डरम अहोविलम।**7**।अयोध्या।**8**।मथुरा।**9**।गोकुल वृन्दावन आय्यपादि। **10**।द्वारका दुवरापदि।**11**।शालग्राम।**12**।वेंकटम।**13**।तिरूकोट्टियूर या तिरूगोष्ठीयूर ।**14**।श्रीरंगम्।**15**। ते ना तिरूप्पोर।**16**।वोल्लारै या तिरूवल्लारै ।**17**।तिरूवल्लूर ।**18**।कुडन्दै।**19**।तिरूमेय्यम।**20**।तिरूकण्णगुंडि । **21**। तिरू प्पावला वन्नम कांची ।**22**।मलीरूमसोलै ।**23** तिरूवल्लिक्केणि एवं मयिलै ।**24**।नरैयूर या तिरूनरैयूर या नाच्वियार कोइल ।**25**।उरैयूर या तिरूकोळी।**26**।तिरूकूडल मदुरै।**27**।तिरूक्कोइलूर ।**28**।तिरूनीर्म लै।**29**।तिरूकडलमल्लै।**30**।तिरूनिन्रवूर।**31**।तिरूविडवन्दै।**32**।पुतकुली या तिरूपुतकुळी।**33**।परमेच्चुर विण्णगरम कांचीपुरम श्रीवैकुंठ ।**34**।अष्टभुज कांचीपुरम।**35**।पडकम या पांडव दूत कांची।**36**।उरूगम उलगलंदा त्रिविकम कांचीपुरम़।**37**।नीरगम कांचीपुरम।**38**।कारगम कांचीपुरम।**39**।कारवण्णम कांचीपुरम़ ।**40**।नीलातिंगल तुण्डम कांचीपुरम़ ।**41**।कल्वानूर कांचीपुरम़ ।**42**।कांची यानी वरदराज ।**43**।वोग्का यथोक्तकारी कांचीपुरम।**44**।तिरूतन्का कांची।**45**।कांची वेलुक्कै।**46**।तिरूवयिन्दपुरम ।**47**।तिल्लै चित्रकूट या चिदंबरम ।**48**।कळि शिरामा विण्णगर ।**49**।वयल आलि तिरूवाली।**50**।नांगुर मणिमाड क्कोईल ।**51**।नांगुर वैकुण्ठ विण्णगरम ।**52**।नांगुर अरिमेय विण्णगरम ।**53**।नांगुर तिरूत्तेवनार तोगै।**54**।नांगुर वण पुरूषोत्तम।**55**।नांगुर शेमपोनशेयी कोयिल या पेरू अरूळाळन ।**56**।नांगुर तिरूतेत्री अम्बलम ।**57**।नांगुर तिरूमणिक कूडम ।**58**।नांगुर कावलमपाडि।**59**।नांगुर तिरूवेल्लकुलम ।**60**।नांगुर तिरूपार्त्तन पल्लि ।**61**।इंदलूर ।**62**।तिरूवेल्लियंगुडि ।**63**।तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि।**64**।तिरूक्कुडलूर या अधितुराइ पेरूमाल

।65। तिरूक्कुरूंगुडी।66। तिरूत्तानकल।67। करंबनूर।68। तिरू नन्दिपुर विण्णगरम।69। तिरूच्चेरै।70। तिरूकण्णमंगै।71। तिरूच्चिरूपुलियूर।72। तिरूकन्नपुरम।73। ओप्पलीअप्पनतिरूविण्णगर।74। तिरूनागै।75। तिरूप्पुल्लाणि।76। कंडियूर।77। कडिगै।78। तल्लैच्चांगु नाणमदियम।79। तिरू अलंदूर।80। अदनूर।81। तिरूमूळिकुळम।82। तिरूवल्लवाळ।83। तिरूप्पुलियूरकुट्टनाट्टु।84। नैमिषारण्य।85। तिरूमोगूर।

अरैयर सेवई

1। पृष्ठभूमि समीक्षा ः आळवार संतों की वाणी को ही दिव्यप्रबंधम कहते हैं। पुष्पार्चना, दीपार्चना, तथा नैवेद्यार्पण आदि भगवद कैंकर्य की तरह दिव्यप्रबंधम का पाठ भी एक भगवदसेवा है जिसका एकमात्र उद्देश्य भगवदनाम तथा उनके अनंत कल्याण गुणों का स्मरण एवं संकीर्तन करना है। श्रीवैष्णव दिव्यदेश के मंदिरों में दिव्यप्रबंधम की सेवा दो तरह से की जाती है। पहली सेवा है जिसमें प्रायः श्रीवैष्णवजन समूह में एकत्र होकर एक विशेष तरह के स्वर में ऊंची आवाज में इसका पाठ करते हैं। दूसरी सेवा है



जिसमें विशेष चुने हुए परिवार के पांच छः सदस्य विशेष वेश भूषा से सुसज्जित होकर (संलग्न चित्र देखें) मृदु स्वर में कुल्लीतालम यानी झाल बजाते हुए अभिनय के साथ भगवान के समक्ष धनुर्मास में, मीन मास में, तथा कर्क मास में दिव्यप्रबंधम की प्रस्तुति करते हैं। विशेष परिवार के सदस्य को अरैयर कहते हैं तथा इनके द्वारा की गयी प्रस्तुति को अरैयर सेवई या अरैयर सेवा कहते हैं।

अरैयर सेवई का शुभारंभ परकाल स्वामी ने किया था। बाद में दिव्यप्रबंधम का भी लोप हो गया तथा इस तरह की सेवा सार्वजनिक रूप से ठप पड़ गयी थी। **10** वीं शताब्दी में कट्टुमन्नारकोइल में अवतरित नाथमुनि स्वामी ने इसका पुनर्द्धार किया तथा एक मजबूत परंपरा का शुभारंभ किया। कुडन्दै दिव्यदेश यानी कुंभकोनम के सारंगपाणी या अमुदै पेरूमाल के मंदिर में श्री नाथमुनि स्वामी ने एक महिला को कुछ पद गाते सुना जिसका प्रारंभ 'अर्वामुदे' से हुआ था तथा अंत यह बताते हुए हुआ कि ये पद कुरूगुर के शठकोपन द्वारा रचित एक हजार वाले पदों के अंश हैं। श्रीनाथ मुनि स्वामी ने बाकी पदों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाही तो उन्हें निराश होना पड़ा। एक अन्य उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त घटना कुंभकोनम का न होकर कट्टु मन्नार कोई ल की ही है जहां नाथमुनि स्वामी ने पहली बार मेलेकोटे से आये कुछ भक्तों के द्वारा 'अर्वामुदे' से शुरू होने वाले पद सुना था जिसके अंत में यह बताया गया था कि ये पद कुरूगुर के शठकोपन द्वारा रचित एक हजार वाले पदों के अंश हैं। हजार पदों का पता लगाते वे कुरूगुर यानी आळवार तिरूनगरी पहुंचे। मधुराकवि आळवार के बंशजों ने **11** पद वाला 'कन्निनुन शिरूताम्बु' उन्हें उपलब्ध कराया। यह रचना मधुराकवि की है तथा इसमें नम्माळवार की वंदना है। नाथमुनि स्वामी ने इसका **12000** बार पाठ कर नम्माळवार को सुनाया। फलस्वरूप नम्माळवार प्रसन्न हो गये तथा अपनी एकहजार पद वाली 'तिरूवायमोळी' के अतिरिक्त अन्य आळवार संतों की भी सभी रचनायें नाथमुनि स्वामी को उपलब्ध करा दी जिसे नालायिरा दिव्यप्रबंधम कहा गया। इसमें चार हजार पद हैं। इसके बाद नाथमुनि स्वामी ने इस उपलब्धि को कुंभकोनम के सारंगपाणि के मंदिर में 'अध्ययन उत्सव' के रूप में आयोजित कर सार्वजनिक किया। नाथमुनि स्वामी स्वयं एक सिद्धहस्त गायक, वाद्ययंत्र के मर्मज्ञ यानी संगीतज्ञ एवं कुशल नर्तक भी थे। तब से 'अध्ययन उत्सव' की परम्परा का प्रारंभ हुआ और यह अनेको दिव्यदेश में धनुर्मास में मनाया जाने लगा। नाथमुनि स्वामी के दो भतीजे 'कीळै अकात्तु आळवान' एवं 'मेलै अकात्तु आळवान' ने इसके प्रचार प्रसार में मनोयोग से सहयोग किया। फलस्वरूप श्रीरंगम में नामपेरूमाल ने इन दोनों को 'मानवला पेरूमाल अरैयर' तथा 'नाद विनोद अरैयर' की उपाधि से विभूषित किया। नाथमुनि स्वामी को वेदांतदेशिक स्वामी ने कहा है 'तालम वळंगी तमिळ मरै इन्निसै टंड वल्लल' यानी 'जिन्होंने तमिल वेद को संगीत एवं ताल का स्वर दिया'। आळवार तिरूनगरी में नाथमुनि स्वामी का दुर्लभ चित्र पाया जाता है जिसमें वे स्वयं तिलक लगाये शिर के ऊपर ऊंची टोपी पहने बायें हाथ में वीणा उठाये ज्ञान मुद्रा वाले दाहिने हाथ के साथ अरैयर सेवई की प्रस्तुति करते देखे

जाते हैं। वर्तमान में नाथमुनि स्वामी के अनुयायी बंशज को अरैयर कहते हैं तथा इनकी प्रस्तुति सर्वदा अभिनय एवं वाद्ययंत्र के साथ संपन्न होती है। रामानुज स्वामी ने अपने समय में नाथ मुनि से संचालित अरैयर सेवई की जड़ मजबूत करके मंदिर में 'देवगान धुन' के परिपालक गायकों एवं नर्तकों का एक अलग समाज ही खड़ा कर दिया जो मंदिर प्रबंधन तथा भगवदसेवा के एक आवश्यक अंग बन गये।

2। <u>दिव्यप्रबंधम ः इसैप्पा एवं इर्यपा</u>

लय एवं ताल के साथ जो वाद्य यंत्र पर गाकर प्रस्तुत किये जाते हैं वे इसैप्पा हैं। तात्पर्य यह है कि इसैप्पा संगीत के साथ गाने वाला गीत है जबकि इर्यपा कविता है जिसका पाठ किया जा सके। दिव्यप्रबंधम के तीसरे हजार की सभी रचनायें इयर्पा हैं जबकि प्रथम हजार की तथा द्वितीय हजार की एवं चौथे हजार की अन्य सभी रचनायें इसैप्पा हैं। प्रथम हजार का प्रारंभ पेरिया आळवार तिरूमोळी से होता है।तिरूप्पालन्डु की प्रस्तुति स्वयं पेरियाआळवार यानी विष्णुचित्त स्वामी ने हाथी पर बैठे बैठे उसके अलंकरण में लगे घंटियों को बजाकर किया था।इसीतरह से मुनिवाहन स्वामी वीणा पर गाते रहते थे और उनका अमलनादिपिरान वीणा की संगति पर गा करके रचा गया। तिरूवायमोळी के दसको की फलश्रुति में गाने एवं नाचने की बात कही हुई है। इसीलिये अरैयर सेवई में केवल इयर्पा को छोड़कर अन्य सभी सहस्रगीतियों की प्रस्तुति की जाती है।

3।<u>अरैयर सेवई के तीन अवसर ः</u>

अरैयर सेवई उत्सव मूर्ति के समक्ष संपन्न होती है तथा नाथमुनि स्वामी ने श्रीरंगम में वर्ष में तीन उत्सवों पर इसे संपन्न करने की शुरूआत की थी।इन अवसरों को 'तिरूवत्तियायनम' कहते हैं ः **1**। धनुर्मास यानी तिरूप्पावै का मास तथा अध्ययन उत्सव। **2**। 'पंगुनी उत्तरम' यानी तमिल फाल्गुन माह **15** मार्च से **15** अप्रैल के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में नामपेरूमाल का परिणय उत्सव। **3**। 'आदि पुरम' यानी तमिल आषाढ़ माह **15** जुलाई से **15** अगस्त के बीच के पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आंडाल का अवतार। धनुर्मास का अध्ययन उत्सव **20** दिनों का होता है जिसमें अरैयर सेवई संपन्न होती है। अन्य दोनों पंगुनी उत्तरम तथा आदि पुरम में **10** दिनों की अरई सेवा संपन्न होती है।

4।<u>अध्ययन उत्सव एवं अरैयर सेवई</u> ः प्रायः धनुर्मास में वैकुण्ठ एकादशी के **10** दिन पूर्व से लेकर वैकुण्ठ एकादशी के **10** दिन बाद तक की अवधि को 'अध्ययन उत्सव' कहते हैं जिसमें अरैयर लोग दिव्यप्रबंधम की पस्तुति भगवान के समक्ष करते हैं। ज्ञात

है कि धनुर्मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को वैकुण्ठ एकादशी कहते हैं। धनुर्मास को मार्गळि मास कहते हैं जो मार्गशीर्ष यानी अगहन का महीना होता है। तमिल पंचाग से इसकी अवधि लगभग **15** दिसंबर से **15** जनवरी तक की होती है। श्रीरंगम, आळवार तिरूनगरी, श्रीविल्लीपुत्तुर, तथा तिरूनारायणपुरम मेलेकोटे की अरैयर सेवा बहुत ही विख्यात है तथा दूर दूर से भक्तगण एकत्र होकर संपूर्ण प्रस्तुति को अपनी आंखो से देखते हुए तथा कानों से श्रवण करते हुए गीत संगीत मय 'देवगान' के धुन पर आधारित नृत्य पूर्ण भगवत कैंकर्य का आनंद लेते हैं।

वैकुण्ठ एकादशी के **10** दिन पूर्व वाली सेवा को 'पगल पत्तु' कहते हैं जिसका अर्थ हुआ **10** दिनों तक दिन में की गयी पस्तुति। वैकुण्ठ एकादशी के **10** दिन वाली अवधि को 'इरा पत्तु' कहते हैं तथा इस अवधि में अरैयर सेवई रात में प्रस्तुत की जाती है।

दिव्यप्रबंधम की संरचना में 'तिरूमोळी' एवं 'तिरूवायमोळी' का ही विशेष योगदान है। पेरिया आळवार यानी विष्णुचित्त स्वामी, आन्डाल, कुलशेखर आळवार, तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी की वाणी को तिरूमोळी कहते हैं जो दिव्यप्रबन्धम के प्रथम हजार तथा द्वितीय हजार के पदों में संग्रहित हैं। नम्माळवार की वाणी को 'तिरूवायामोळी' कहते हैं जो दिव्यप्रबन्धम्के संपूर्ण चौथे हजार में **1102** पाशुरों में संकलित है। अरैयर सेवई में 'तिरूमोळी' एवं 'तिरूवायमोळी' की ही प्रस्तुति की जाती है। इयर्पा नाम से सम्बोधित होने वाले दिव्यप्रबन्धम के तीसरे हजार को अरयैर सेवई के विषय वस्तु में स्थान नहीं मिला है क्योंकि यह गीत न होकर कविता के तर्ज पर आधारित है जो पाठ के लिये अनुकूल है।

अध्ययन उत्सव के पगल पत्तु कहे जाने वाले पहले **10** दिन यानी पूर्वाद्ध में 'तिरूमोळी' की प्रस्तुति के साथ प्रथम हजार एवं द्वितीय हजार के अन्य छोटे छोटे प्रबन्धों की भी प्रस्तुति होती है। 'इरा पत्तु' कहे जाने वाले अंतिम **10** दिन यानी उत्तरार्द्ध में 'तिरूवायमोळी' की प्रस्तुति होती है। अरैयर सेवई के कार्यकम को समझने की सुगमता के लिये श्रीरंगम में मनाये गये अद्यतन अध्ययन उत्सव के विषय वस्तु की झांकी यहां उपस्थापित है।

पगल पत्तु की प्रस्तुति को मुख्यतया दो विभाग में बांटा गया है। एक है जिसमें सारी प्रस्तुतियां भगवान के लिये उनके समक्ष दिव्यप्रबंधम से की जाती हैं। दूसरा वह भाग है जिसमें भक्तों के लाभ के लिये भगवान के दिव्यचरित्र की कथाओं का अभिनय प्रस्तुत किया जाता है। इन प्रमुख कथाओं में वामनावतार, अमृतमंथन, कालियदहन, रावणवध, तथा कंसवध आदि सम्मिलित हैं। दूसरा भाग प्रायः पगल पत्तु के चुने हुए

दिनों में ही सम्पन्न करने की परंपरा है ः चौथा दिन, सातवां दिन से दसवां दिन तक।
5।0 श्रीरंगम के अध्ययन उत्सव की एक झांकी ः **25** दिसम्बर **2011** से **15** जनवरी **2012** तक।

।5।1 श्रीरंगम में पगल पत्तु ः

✐ **5** जनवरी **2012** को वैकुण्ठ एकादशी मनाई गयी। पगल पत्तु का प्रारंभ **26** दिसम्बर **2011** से हुआ परंतु इसके एक दिन पूर्व यानी **25** दिसम्बर **2011** को **19ः45** संध्या से **21ः00** रात्रि तक तिरूनेडुन्दाण्डगम्की पस्तुति 'मिन्नीरूवई' पाशुरम तथा 'तन्वीकन्पदी' पाशुरम के व्याख्यानम के साथ अरैयर सेवई भगवान के गर्भगृह के समक्ष जगमोहना में की गयी। ज्ञात हो कि द्वितीय हजार का 'तिरूनेडुन्दाण्डगम्' नाम का यह प्रबंध परकाल स्वामी द्वारा विरचित है जिसमें आळवार संत ने प्रियतम भगवान को प्राप्त करने हेतु 'परकाल नायकी' के मनोभाव का चित्रण किया है।

✐ **26** दि **2011** पहला दिन ः समय **7ः15** प्रातः से **18ः15** संध्या। पेरूमाल का धनुर्लग्न में प्रातः **6ः30** बजे गर्भगृह से प्रस्थान।**7ः15** बजे गर्भगृह से बाहर प्रथम प्राकार के भीतर ही पूरब तरफ अर्जुन मंडप में विराजना। पटाक्षेप **7ः15** से **7ः45** तक। **7ः45** से **13ः00** अपराह्न तक अरैयर सेवई में तिरूप्पल्लाण्डु के पदों का अभिनय तथा व्यारूयान। पेरियाळवार तिरूमोळी के **200** पदों की प्रस्तुति।पटाक्षेप तथा नैवेद्यम **10** से **14ः00** तक। तिरूप्पावै गोष्ठी **14ः00** से **15ः00** तक। पटाक्षेप तथा नैवेद्यम् **15ः00** से **16ः00** तक। उभयदर का सम्मान तथा भक्तों की सेवा **16ः00** से **17ः30** तक। पटाक्षेप **17ः30** से **18ः15** तक। संध्या **18ः15** बजे अर्जुन मंडप से प्रस्थान, तथा गर्भगृह में रात्रि **21 ः 45** बजे प्रवेश।

✐ **27** दि **2011** दूसरा दिन ः समय **7ः15** प्रातः से **18ः15** संध्या। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7ः45** से **13ः00** बजे अपराह्न तक अरैयर सेवई में आटरील इरून्दु, तन्नोरायिरम पाशुरों का अभिनय तथा व्याख्यान, एवं पेरिया आळवार तिरूमोळी के **240** पाशुर प्रस्तुत किये जाते हैं। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✐ **28** दि **2011** तीसरा दिन ः समय **7ः15** प्रातः से **18ः15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7ः45** से **13ः00** बजे अपराह्न तक अरैयर सेवई ः सेन्नीयोंगु पाशुरम का अभिनय व्याख्यान। सातवें पाशुर तिरूपोलिन्द सेवदी वरई अभिनय। अरैयर श्री शठकोपन

सधितल। तिरूप्पावै मार्गळि तिंगल पाशुरम का अभिनय व्याख्यान। सेन्नीयोंगु **11** पाशुर तिरूप्पावै के **30** पाशुर नाच्चियार तिरूमोळी के **123** पाशुर। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✐ **29** दि **2011** चौथा दिन ः समय **7:15** प्रातः से **18:15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7:45** से **12:00** बजे दोपहर तक अरैयर सेवई ः कन्नन एन्नुम कारून दैवम। इरूलिरीया पाशुर अभिनय व्याख्यानम। नाच्चियार तिरूमोळी **20** पाशुर। पेरूमाल तिरूमोळी **105** पाशुर। तिरूच्चन्दविरूत्तम **120** पाशुर। पटाक्षेप तथा नैवेद्यम **12:00** से **13:00** बजे तक। **13:00** से **15:00** बजे तक सेवा का दूसरा भाग ः कंस बध। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✐ **30** दि **2011** पाचवां दिन ः समय **7:15** प्रातः से **18:15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7:45** से **13:00** बजे अपराह्न तक अरैयर सेवई ः तिरूमलै मुदल पाशुर अभिनय व्याख्यानम। छठा पाशुर 'अरंगनारक्कु आटशिय्याते' वरै अभिनयम। तिरूवरूत्तनम**,** तिरूमालै**,** तिरूपळिळयेच्ची **55** पाशुर। अमलनादिपिरान पाशुर अभिनय व्याख्यानम। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✐ **31** दि **2011** छठा दिन ः समय **7:15** प्रातः से **18:15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7:45** से **13:00** बजे अपराह्न तक अरैयर सेवई ः नम्माळवार की प्रशस्ति में रचे गये मधुराकवि आळवार का **11** पदों वाला प्रबंध 'कण्णिनुम शिरूताम्बु' एवं परकाल स्वामी के पेरिया तिरूमोळी के 'वदिनेन वदि' पाशुर का अभिनय व्याख्यानम तथा **250** पाशुर। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✐ **1** जनवरी **2012** सातवां दिन ः समय **7:15** प्रातः से **18:15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7:45** से **12:00** बजे दोपहर तक अरैयर सेवई ः 'तुविरीया' पाशुर अभिनय व्याख्यानम। पेरिया तिरूमोळी के **210** पाशुर। पटाक्षेप तथा नैवेद्यम **12:00** से **13:00** बजे तक। **13:00** से **15:00** बजे तक सेवा का दूसरा भाग ः वामनावतार की प्रस्तुति। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✎ **2** जनवरी **2012** आठवां दिन ः समय **7ः15** प्रातः से **18ः15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7ः45** से **12ः00** बजे दोपहर तक अरैयर सेवई ः 'पंडै नानमरै' पाशुर अभिनय व्याख्यानम। पेरिया तिरूमोळी के **250** पाशुर। पटाक्षेप तथा नैवेद्यम **12ः00** से **13ः00** बजे तक। **13ः00** से **15ः00** बजे तक सेवा का दूसरा भाग ः अमृतमंथन की प्रस्तुति। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।

✎ **3** जनवरी **2012** नौवां दिन ः समय **7ः15** प्रातः से **18ः15** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7ः45** से **12ः00** बजे दोपहर तक अरैयर सेवई ः 'तेल्लीयीर' पाशुर अभिनय व्याख्यानम। पेरिया तिरूमोळी के **200** पाशुर। पटाक्षेप तथा नैवेद्यम **12ः00** से **13ः00** बजे तक। **13ः00** से **15ः00** बजे तक सेवा का दूसरा भाग ः मुत्तुक्कुरी की प्रस्तुति तथा 'मिन्नुरूवै' पाशुर का अभिनय व्याख्यानम।मुत्तुक्कुरी व्याख्यानम अभिनय। अरैयर तीर्थ। श्री शठकोपन साधितल। पहले दिन की तरह अन्य कार्यक्रम तथा पेरूमाल का अर्जुन मंडप से गर्भगृह तक वापसी।।

✎ **4** जनवरी **2012** दसवां दिन ः मोहिनी अलंकार 'नाच्चियार तिरूकोलम'। समय **6ः00** प्रातः से **20ः30** संध्या तक। गर्भगृह से प्रस्थान कर नामपेरूमाल का अर्जुन मंडप में पहले दिन की तरह पधारना। प्रातः **7ः30** से **11ः30** बजे दोपहर तक अरैयर सेवई ः 'इरक्कम इन्नरी' पाशुर अभिनय व्याख्यानम। पेरिया तिरूमोळी के **174** पाशुर। तिरूक्कुरून्दाण्डगम् के **20** पाशुर। तिरूनेडुन्दाण्डगम्के **30** पाशुर। **11ः30** से **14ः30** बजे तक सेवा का दूसरा भाग ः रावण वध। तिरूमोळी शातमुरै। अरैयर तीर्थ। श्री शठकोपन साधितल। **14ः30** से **15ः00** तक नैवेद्यम। **15ः00** से **17ः00** तक उभयर सम्मान तथा भक्तों की अर्चना दर्शनाादि। **17ः00** बजे पगल पत्तु मंडप यानी अर्जुन मंडप से प्रस्थान।**17ः30** आर्यभट्ट द्वार पर आगमन। **19ः00** बजे कोट्टारा प्रदक्षिणा के बाद गरूड़ मंडप में आगमन। आळवार के सम्मान के बाद गरूड़ मंडप से **20ः00** बजे प्रस्थान तथा **21ः00** बजे रात्रि तक गर्भगृह वापसी।

।**2** श्रीरंगम में इरा पत्तु ः

✎ **5** जनवरी **2012** इरा पत्तु का पहला दिन ः वैकुण्ठ एकादशी। समय **3ः30** प्रातः से **24ः00** मध्यरात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थानतील इरून्तु पुरपदु यानी भगवान का गर्भगृह से प्रातः **3ः30** बजे प्रस्थान। परमपद वसल तिरूप्पु या स्वर्ग वसल तिरूप्पु

यानी प्रातः 4ः30 बजे खुलना तथा 22ः00 बजे तक रात्रि में परमपद वसल का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में प्रातः 7ः30 बजे पदार्पण, तथा 8ः30 प्रातः से 18ः00 संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या 18ः00 से 20ः00 तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'उयर्वर उयर्नालम' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के पहले 10 दशक के पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या 20ः00 से 21ः00 तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य 21ः00 से 22ः00 तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन 22ः00 से 23ः30 तक। पटाक्षेप 23ः30 से 24ः00 तक। मध्यरात्रि में 24ः00 बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ 6 जनवरी 2012 को प्रातः 1ः15 बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ 6 जनवरी 2012 इरा पत्तु का दूसरा दिन ः समय 11ः00 पूर्वाह्न से 21ः30 रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से 11ः00 बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन 12ः00 बजे दोपहर। 12ः00 से रात्रि 20ः00 तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न 14ः00 बजे पदार्पण, तथा 14ः00 से 14ः30 तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। 14ः30 से 17ः00 संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या 17ः00 से 19ः00 तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'किलारोलियिलामै' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के दूसरे 10 दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या 19ः00 से 19ः30 तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य 19ः30 से 20ः00 तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन 20ः00 से 21ः00 तक। पटाक्षेप 21ः00 से 21ः30 तक। रात्रि में 21ः30 बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ 22ः30 बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ 7 जनवरी 2012 इरा पत्तु का तीसरा दिन ः समय 11ः00 पूर्वाह्न से 21ः30 रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से 11ः00 बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन 12ः00 बजे दोपहर। 12ः00 से रात्रि 20ः00 तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न 14ः00 बजे पदार्पण, तथा 14ः00 से 14ः30 तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। 14ः30 से 17ः00 संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या 17ः00 से 19ः00 तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'ओळिविल कलमेल्लम' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के तीसरे 10 दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या 19ः00 से 19ः30

तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य **19ः30** से **20ः00** तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन **20ः00** से **21ः00** तक। पटाक्षेप **21ः00** से **21ः30** तक। रात्रि में **21ः30** बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ **22ः30** बजे गर्भ गृह में प्रवेश।

✐ **8** जनवरी **2012** इरा पत्तु का चौथा दिन ः समय **11ः00** पूर्वाह्न से **21ः30** रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से **11ः00** बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन **12ः00** बजे दोपहर। **12ः00** से रात्रि **20ः00** तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न **14ः00** बजे पदार्पण, तथा **14ः00** से **14ः30** तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। **14ः30** से **17ः00** संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या **17ः00** से **19ः00** तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'आनरून देवुम' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के चौथे **10** दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या **19ः00** से **19ः30** तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य **19ः30** से **20ः00** तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन **20ः00** से **21ः00** तक। पटाक्षेप **21ः00** से **21ः30** तक। रात्रि में **21ः30** बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ **22ः30** बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ **9** जनवरी **2012** इरा पत्तु का पाचवां दिन ः समय **11ः00** पूर्वाह्न से **21ः30** रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से **11ः00** बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन **12ः00** बजे दोपहर। **12ः00** से रात्रि **20ः00** तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न **14ः00** बजे पदार्पण, तथा **14ः00** से **14ः30** तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। **14ः30** से **17ः00** संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या **17ः00** से **19ः00** तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'अर्वामुदे' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के पांचवे **10** दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या **19ः00** से **19ः30** तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य **19ः30** से **20ः00** तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन **20ः00** से **21ः00** तक। पटाक्षेप **21ः00** से **21ः30** तक। रात्रि में **21ः30** बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ **22ः30** बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ **10** जनवरी **2012** इरा पत्तु का छठा दिन ः समय **11ः00** पूर्वाह्न से **21ः30** रात्रि तक। णामपेरूमाल मूलस्थान से **11ः00** बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन **12ः00** बजे दोपहर। **12ः00** से रात्रि **20ः00** तक परमपद का खुला रहना।

पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न **14ः00** बजे पदार्पण**,** तथा **14ः00** से **14ः30** तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। **14ः30** से **17ः00** संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या **17ः00** से **19ः00** तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'उलगम उन्दा पेरूवाया' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के छठे **10** दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या **19ः00** से **19ः30** तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य **19ः30** से **20ः00** तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन **20ः00** से **21ः00** तक। पटाक्षेप **21ः00** से **21ः30** तक। रात्रि में **21ः30** बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ **22ः30** बजे गर्भ गृह में प्रवेश।

✐ **11** जनवरी **2012** इरा पत्तु का सातवां दिन तिरूक्कायैथला सेवा ः समय **15ः15** अपराह्न से **23ः30** रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से **15ः15** बजे अपराह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन **16ः15** बजे दोपहर। **16ः15** से रात्रि **20ः00** तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न **17ः45** बजे पदार्पण।संध्या **18ः00** से **18ः15** तक नम्माळवार का नाच्चियार तिरूक्कोळम यानी परांकुश नायकी के स्वरूप में भगवान से मिलना। **18ः15** से **18ः30** तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। संध्या **18ः30** से **21ः30** तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'कंगलुम पगलुम' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के सातवें **10** दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या **21ः30** से **22ः00** तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य **22ः00** से **22ः30** तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन **22ः30** से **23ः00** तक। पटाक्षेप **23ः00** से **23ः30** तक। रात्रि में **23ः30** बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ **24ः45** बजे गर्भ गृह में प्रवेश।

✐ **12** जनवरी **2012** इरा पत्तु का आठवां दिन वेदुपरै यानी अश्ववाहन सेवा ः समय **16ः30** अपराह्न से **23ः00** रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से **16ः30** बजे अपराह्न में घोड़े की सवारी पर प्रस्थान। परमपद वसल बन्द। पेरूमाल का व्यलाली यानी घोड़े पर पेरूमाल का यत्र तत्र दौड़ना **17ः30** से **18ः30** तक तथा तिरूमंगै मन्नन वेदुपरै यानी परकाल स्वामी का पेरूमाल को रोककर लूटना। एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में संध्या **19ः00** बजे नामपेरूमाल का पदार्पण। **10ः00** से **19ः30** तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। संध्या **19ः30** से **21ः00** तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'नेदुकारमदिमै' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के आठवें

10 दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या 21ः00 से 22ः00 तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन 22ः00 से 22ः30 तक। पटाक्षेप 22ः30 से 23ः00 तक। रात्रि में 23ः00 बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ 13 जनवरी 2012 को 24ः45 बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ 13 जनवरी 2012 इरा पत्तु का नौंवा दिन ः समय 11ः00 पूर्वाह्न से 21ः30 रात्रि तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से 11ः00 बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन 12ः00 बजे दोपहर। 12ः00 से रात्रि 20ः00 तक परमपद का खुला रहना। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में अपराह्न 13ः30 बजे पदार्पण, तथा 13ः30 से 14ः00 तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। 14ः00 से 16ः30 संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन। संध्या 16ः30 से 18ः30 तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'मालैनानीर' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के नौवें 10 दशक पाशुर की प्रस्तुति। तिरूप्पावै गोष्ठी संध्या 18ः30 से 19ः00 तक। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य 19ः00 से 19ः30 तक। उभयदर को सम्मान तथा भक्तों को सेवा दर्शन 19ः30 से 20ः00 तक। पटाक्षेप 20ः00 से 20ः30 तक। रात्रि में 20ः30 बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा वीणा वादन के साथ 21ः45 बजे गर्भगृह में प्रवेश।

✐ 14 जनवरी 2012 इरा पत्तु का दसवां एवं ग्यारहवां दिन ः समय 9ः00 से दूसरे दिन यानी जनवरी 15, 2012 के 10 बजे पूर्वाह्न तक। नामपेरूमाल मूलस्थान से 9ः00 बजे पूर्वाह्न में प्रस्थान। परमपद वसल आगमन 10ः00 बजे दोपहर। 10ः00 से समस्त रात्रि पर्यन्त परमपद का खुला रहना। चन्द्रपुष्करणी में 10ः30 बजे तीर्थवारी। पेरूमाल का एक हजार खंभो वाले तिरूमामणि स्थान मंडप में पूर्वाह्न 11ः30 बजे पदार्पण, तथा 11ः30 से 12ः00 तक पटाक्षेप एवं नैवेद्यम। 12ः00 से 18ः30 संध्या तक भक्तों की अर्चना तथा दर्शन।18ः30 से 21ः00 तक तिरूमंजन।पटाक्षेप तथा नैवेद्यम्21ः00 से 23ः00 तक। रात्रि 23ः00 से 15 जनवरी के 3ः00 प्रातः तक अरैयर सेवई ः तिरूवायमोळी 'ताळ तामरै' पाशुरम अभिनय व्याख्यानम। तिरूवायमोळी के दसवें 10 दशक पाशुर की प्रस्तुति। पटाक्षेप तथा भगवान को नैवेद्य प्रातः 3ः00 से 4ः00 तक। भक्तों को सेवा दर्शन प्रातः 4ः00 से 6ः00 तक। नम्माळवार मोक्षम प्रातः 6ः00 से 7ः00। तुलसी एवं तीर्थ गोष्ठी प्रातः 7ः00 से 8ः00 तक। उभयदर सम्मान एवं भक्तों की अर्चना प्रातः 8ः00 से 9ः00 तक। पटाक्षेप प्रातः 9ः00 से 9ः30 तक। 9ः30 बजे गर्भगृह के लिये प्रस्थान तथा 10ः00

से **10ः30** तक गर्भगृह में प्रवेश । **10ः30** बजे अर्वन नैवेद्यम ।

✐**15** जनवरी **2012** अध्ययन सेवा का **11** वां एवं अंतिम दिन में इर्यपा सेवा ः पुरापादु यानी गर्भगृह से **12ः15** दिन में प्रस्थान । **13ः00** बजे संकान्ति मंडप सेरूतल यानी आगमन । **17ः30** में संकान्ति मंडप से गर्भगृह के लिये प्रस्थान । रात्रि में भगवान के गर्भगृह के समक्ष जगमोहन में रात्रि **20ः00** से **21ः00** तक इर्यपा का पाठ । **15** जनवरी की रात्रि **21ः00** से **16** जनवरी के प्रातः **2ः00** तक चंदन मंडप मे इर्यपा सेवा संपन्न ।

<u>दिव्य प्रबंधम (मुदल आयिरम) ः एक विहंगम अवलोकन</u>

मुदल आयरिम यानी दिव्य प्रबंधम का यह प्रथम हजार है जिसमें **947** पासुर हैं और यह सात आळवार द्वारा विरचित नौ प्रबंधों के योगदान से बना है । सभी प्रबंधों का सार संक्षेप निम्नवर्णित कंडिकाओं में दिया गया है ।

<u>प्रबंध संख्या **1** ः पेरियाळवार तिरूमोळी</u>

यह पेरिया आळवार की कृति है । पेरिया आळवार को ही श्री विष्णुचित्त स्वामी कहा जाता है तथा आप आंडाल यानी गोदम्मा के पिता जी हैं । आणि (ज्येष्ठ) मास के स्वाति नक्षत्र में आप गरूड़ के अंश से तमिलनाडु के मदुरै नगर से **80** कि मी दूर तेनकाशी के पास विरूदनगर रोड पर श्रीविल्लीपुत्तुर नगर में अवतरित हैं । इसमें पासुरों यानी पदों की कुल संख्या **473** है । स्पष्टतः यह पांच शतकों में है । इसमें दशकों की कुल संख्या **44** है । कुछ अपवाद के अतिरिक्त प्रत्येक दशक प्रायः दस से ग्यारह पासुरों से बने हैं । जिनकी प्रशस्ति गायी गयी है वे दिव्यदेश हैं ः (i) तिरूकोट्टियूर, (ii) वेंकटम, (iii) तिरूकुरूंगुडी, (iv) तिरूवेल्लारै, (v) तिरूमालैरूजशोलै, (vi) तिरूप्पेर, (vii) कुडन्दै, (viii) कण्णपुरम, (ix) गोवर्द्धन, (x) देवप्रयाग, (xi) तिरूवरंगम्यानी श्रीरंगम्, (xii) शालग्राम, (xiii) द्वारका, (xiv) अयोध्या, (xv) मथुरा ।

वेंकटम, तथा तिरूमालैरूजशोलै की प्रशस्ति अनेकों बार की गयी है । तिरूकोट्टियूर, एवं तिरूवेल्लारै पर एक एक स्वतंत्र दशक, तथा श्रीरंगम, एवं तिरूमालैरूजशोलै की प्रशस्ति में कई स्वतंत्र दशक विरचित हैं । इसके अतिरिक्त एक पासुर में बदरी, वैकुंठ, शालग्राम, एवं आय्यपाडी यानी गोकुल वृन्दावन, तथा चार पासुरों में अयोध्या, मथुरा का, और तीन पाशुरों मे द्वारका का यशोगान है ।

प्रारंभ के शतक **1ः01** से लेकर शतक **3ः06** तक भगवान कृष्ण की गाथा है । बाद के दो शतक **3ः07** एवं **3ः08** में कृष्ण के प्रेम में विभोर एक गोपी की मां के अर्न्तमन की दशा का वर्णन है । शतक **3ः09** में राम एवं कृष्ण की तुलनात्मक गाथा का वर्णन है ।

3ः10 में हनुमान जी ने लंका में सीता जी को राम कथा सुनायी है। इसके बाद के शतकों में विभिन्न दिव्यदेश विशेष कर तिरूकोट्टियूर, देवप्रयाग, श्रीरंगम, तथा तिरूमालैरूञशोलै की महत्ता को चित्रित किया गया है। **4ः05** में भगवान से जुड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। **4ः06** में स्वामी जी ने घर में संतान का नाम नारायण के विभिन्न नामों में चुनकर कोई एक नाम रखने को समझाया है। अंतिम कुछेक शतक में स्वामी जी ने भगवान से शाश्वत संबंध बन जाने का संकेत दिया है। **5ः02** में रोग व्याधि को बड़े विश्वास से बाहर ही रूकने को कहा है क्योंकि भीतर तो सर्वत्र भगवान की उपस्थिति से भरा हुआ है वहां रोगादि को ठहरने के लिये स्थान कहां है। भगवान के पांचों दिव्य आयुधों को भी सविनय चेतावनी दी है कि वे स्वामी जी के भीतर पेरूमाल के शयनकक्ष की भलीभांति रक्षा करें। **5ः03** में तिरूमालैरूञशोलै के पेरूमाल सुन्दरराजा यानी सुन्दरबाहु भगवान से अपने उद्धार की विशेष प्रार्थना करते हैं। अंतिम शतक **5ः04** में उनके भीतर भगवान के प्रवेश करके स्थान लेने से उपलब्ध प्रत्यक्ष लाभों को बताते हैं।

स्वतंत्र रूप से सबसे बड़ा प्रबंध नम्मालवार का 'तिरूवायमोळी' है जिसमें कुल **1102** पासुर हैं। इसके बाद तिरूमंगैआळवार यानी परकाल स्वामी का 'पेरिया तिरूमोळी' है जिसमें पासुरों की संख्या **1084** है। तब स्थान पेरियाळवार यानी विष्णुचित्त स्वामी के 'पेरियाळवार तिरूमोळी' का है जिसमें **473** पासुर हैं। इसके बाद सभी प्रबंध छोटे छोटे हैं जिसमें आन्डाल का 'नाच्चियार तिरूमोळी' **143** पासुरों के साथ सबसे बड़ा है।

दिव्य देशों के भगवान की गाथा में कृष्णावतार एवं रामावतार की कथा को सब आळवार संतों ने प्रस्तुत किया है। ऐसा देखा गया है कि कृष्ण प्रभु के प्रति प्रेम को निम्नलिखित रूपों में प्रकट किया गया है।

(i) माता यशोदा के रूप में बालक कृष्ण के नित्य कार्यकलापों का चित्रण जिसमें स्नान, श्रृंगार, स्तन पान, भोजन, खेल, मक्खन चोरी, गाय चराना, असुरों का नाश, पड़ोसिन की शिकायत सुनना तथा कृष्ण को दंडित करना आदि सम्मिलित हैं। इसमें वात्सल्य प्रेम की प्रधानता है।

(Ii) प्रेमिका के रूप में कृष्ण के मनोरंजन संबंधी कार्यकलापों में रूचि लेना, जैसे ः (a) बांसुरी सुनकर एकत्र होना, (b) कृष्ण की छेड़खानी से आनंद लेना जिसमें पात्र फेंककर उसकी गति के साथ कृष्ण का नृत्यादि देखना, (c) कृष्ण द्वारा चीर हरण, बालू के घरौंदों को तोड़ना, बरबस आलिंगन कर लेना, कंगन चुरा लेना आदि मिलन का आनंद है।

(iii) प्रेमिका के रूप में कृष्ण की प्रतीक्षा में रहकर तड़पना यानी वियोग की वेदना।
(iv) प्रेमिका की मां के रूप में (a) बेटी के प्रति कृष्ण के रवैये, तथा (b) कृष्ण के लिये बेटी को सर्वस्व न्योछावर कर तड़पते रहना आदि क्रिया कलापों से चिन्तित होकर बेटी के कल्याण की कामना करना या कृष्ण की शिकायत करना।

श्रीविष्णुचित्त स्वामी 'पेरियाळवार तिरूमोळी' में मां यशोदा के वात्सल्य प्रेम को अतिविस्तार से चित्रित करते हैं जो प्पलांडु के बाद से लेकर शतक **3ः03** तक यानी पासुर **13** से **253** तक है। गोपियों का मधुर मिलन का प्रसंग शतक **3ः04** में यानी पासुर **254** से **264** तक है। बेटी का प्रभु के प्रति अतिशय अनुराग से विस्मित एवं चिन्तित मां का प्रसंग शतक **3ः07** तथा **3ः08** में पासुर **286** से **316** तक चित्रित है। गोवर्द्धन की महत्ता शतक **3ः05** में है। मुरली की टेर का सर्वव्यापी चमत्कारिक प्रभाव जिससे देव, मनुष्य तथा अन्य प्राणी प्रभावित होते हैं शतक **3ः06** में वर्णित हैं। भगवान की अर्चना में केशवादि बारह नामों का अपना बड़ा ही महत्व है। **2 ः 03** के **13** पासुर में से शुरू के बारह पासुरों में केशव से दामोदर पर्यन्त बारह नामों से कृष्ण को यशोदा बुलाती है तथा अपना काम भी करती है। तेरहवें पद में प्रभु अच्युत नाम से संबोधित किये जाते हैं। नम्माळवार के तिरूवायमोळी में **(2 ः 07)** केशव से दामोदर पर्य न्त बारह नामों का बड़ा ही सुन्दर यशोगान है।

पहला शतक का पहला दशक **(1 ः 1** या पासुर **1** से **12** तक**)** : यह **12** पासुरों से बना है जो प्पलांडु के नाम से लोकप्रिय है। भगवान की उत्सव यात्रा या नित्यानुसंधान का प्रारंभ प्रणव की तरह प्पलांडु से किया जाता है। इसके प्रथम पासुर में स्वामी जी ने भगवान की अलौकिक श्याम छवि तथा चरणारविंद के दर्शन का अनंत काल तक लाभ मिलते रहने की कामना की है। दूसरे पासुर में भगवान के वक्षस्थल पर मां लक्ष्मी का दर्श न तथा दिव्य आयुध चक्र एवं शंख के दर्शन के आनंद का वर्णन है। तीसरे पासुर में कोदंड राम प्रभु का यशोगान है तथा सांसारिक चीजों से मन को हटाकर भगवान को सुगंधित चंदन समर्पण करने का स्पष्ट निदेश है। चौथा पासुर भगवान के दिव्य मंत्र 'नमो नारायणाय' के ऊच्च उदघोष से दिगदिगांतर को गुंजायमान करने का है। पांचवें में असुरों के विनाशक हृषिकेश प्रभु की चरण वंदना के साथ हजार नाम से अभिषेक करने का है। छठे पासुर में श्रवण नक्षत्र में अवतार लेने वाले सर्वविघ्न विनाशक नृसिंह भगवान की प्रशस्ति है। सातवें पासुर में प्रभु के दिव्य आयुध चक्र की वंदना है। आठवें में गरूड़ ध्वज प्रभु की कृपा से सुस्वादु भोज्य प्रसाद की निरंतर उपलब्धि की कृतज्ञता ज्ञापित की गयी है। तिरूवोनम यानी श्रवण नक्षत्र में अवतार लेने वाले नारायण प्रभु से

प्रसाद स्वरूप प्राप्त पीतांबर तुलसी माला आदि के लिये कृतज्ञता नौवें पासुर में प्रकट की गयी है। आपका नाम ही मंत्र है तथा मथुरा में पधारकर आपने कंस का नाश किया इसकी प्रशस्ति दसवें पासुर में है। ग्यारहवें पासुर में 'नमो नाराणाय' के साथ प्रभु के अन्य दिव्य नामों का निरन्तर गान करते रहने की कामना प्रकट की गयी है तथा प्रभु के प्रति आचार्य की तरह सर्वसमर्पण को ज्ञापित किया गया है। अंतिम पासुर सारंग धनुष धारण करने वाले प्रभु का 'नमो नारायणाय' के साथ यशगान करने बाले सम्मिलित सभी भक्तों की प्रशस्ति है। प्पलांडु का प्रारंभ एवं अम्त धनुर्धारी राम भगवान के स्मरण से हुआ है।बीच के पदों में नाम लेकर कृष्ण तथा नृसिंह भगवान की बंदना है। 'नमो नारायणाय' की महत्ता के साथ हजार नामों यानी श्रीविष्णु सहस्रनाम के गान का महत्व दर्शाया गया है।

ःःः

दिव्यदेश **1**। तिरूकूडल ः

1। स्थान ः तमिल नाडु के मदुरै शहर में रेलवे जंक्शन से **1** कि मी की दूरी पर अवस्थित तिरूकुडल आळगर का मंदिर है और **108** दिव्य देशों मे से यह एक है।

2। विग्रह स्वरूप ः भगवान थल खंड में वैकुण्ठनाथ जैसे बैठे हुए मुद्रा में चर्तुभुजी हैं। दोनों तरफ द्विभुजी श्रीदेवी एवं भूदेवी बैठी मुद्रा में हैं। भगवान का उत्सव विग्रह खड़े मुद्रा में हैं तथा श्रीदेवी एवं भूदेवी भी खड़ी मुद्रा में हैं। ऊपर के अन्य दो तलों पर वीच वाले तल पर भगवान सूर्यनारायण कहे जाते हैं तथा खड़े मुद्रा में हैं। सबसे ऊपर के तल पर पल्लिकोण्डा नाम से जाने जाते हैं तथा भुजंग शयनावस्था में हैं। तीनो तल के स्वरूप अष्टाक्षर मंत्र के तीनों चरण के द्योत्तक हैं। नीचे का स्वरूप 'ॐ' का बीच का, स्वरूप 'नमो' का, तथा ऊपर का स्वरूप 'नारायणाय' का प्रतिनिधित्व करते हैं। नीचे के तल में मूल विग्रह को "आहूय वरदान" विग्रह भी कहा जाता है क्योंकि भगवान नीचे के दाहिने हाथ से अभय मुद्रा में वरदराज भगवान की तरह हैं तथा बायें हाथ से अपने पास आने के लिये तलहथी तक उंगलियों को मोड़कर आह्वान करते हैं। ऊपर के दोनों हाथ दायें में चक्र एवं बायें में शंख धारण किये हुए हैं। तायर को मधुरावल्ली कहते हैं तथा तीर्थ हेम पुष्करणी है। यहां का विमान अष्टांग विमान है। विमान की छाया कभी भी जमीन पर नहीं पड़ती है। भगवान के दायें स्वतंत्र परिसर में तायर की स्वतंत्र सन्निधि है तथा भगवान के बायें स्वतंत्र परिसर में आन्डाल की स्वतंत्र सन्निधि हैं। तायर चतुर्भुजी तथा बैठी मुद्रा में हैं जबकि आन्डाल खड़ी मुद्रा में द्विभुजी हैं।

3। महिमा ः इसी स्थान पर श्रीविष्णुचित्त स्वामी को भगवान का साक्षात्कार हुआ था

और भगवान की प्रशंसा में उन्होंने तिरूप्पलांडु की रचना की। प्रसंग इसतरह है कि तत्कालीन राजा वल्लभ देव ने मोक्ष प्राप्ति के उत्तम उपाय की जानकारी के लिए एक बार विद्वत सभा का आयोजन किया। राजा के आध्यात्मिक गुरूओं में एक सल्व नांबि थे़ और भगवान कुदल आलगर ने सल्व नांबि को उत्प्रेरित कर राजा से पेरियाळवार को भी विवेचन के लिए आमंत्रित करवाया। उधर भगवान कुदल आळगर ने स्वप्न में पेरियाळवार को भी मदुरै पहुंचने के लिए प्रेरित किया। उस सभा में पेरियाळवार नारायण की महत्ता को प्रतिपादित कर राजा से बहुसम्मानित एवं पुरस्कृत हुए। राजा ने पेरियाळवार का शिष्यत्व स्वीकार कर स्वयं चवर सेवा करते हुए सारे मदुरै नगर में पेरियाळवार को अलंकृत हाथी से उत्सव यात्रा में ले गये। इस महती शोभा यात्रा को देखने के लिए अन्य देवताओं के अतिरिक्त भगवान कुदल आळगर भी भूदेवी एवं श्रीदेवी के साथ गरूड़ पर सवार होकर आये। शोभा यात्रा में भगवान को एक दर्शक के रूप में देखकर पेरियाळवार (यानी श्री विष्णुचित्त स्वामी) उनकी छवि से मुग्ध हो गये। साथ ही उनको यह संदेह हुआ कि भगवान की इस मनोहारी छवि को कहीं अन्यों की नजर न लग जाए। अतः हाथी के अलंकरण से रत्नों को झाल के रूप में उपयोग करते हुए प्पल्लाण्डु गीत से भगवान को सम्मानित करते हुए उनकी रक्षा एवं क्षेमकुशल की कामना करने लगे। इसतरह से पल्लाण्डु का गायन स्वतः श्री विष्णुचित्त स्वामी जी के मुखारविन्द से उस शोभा यात्रा में भगवान के लिये चिरंतन मंगलकामना हेतु फूट पड़ा। चूंकि भगवान के दर्शन के पश्चात् आप अपने लिये कुछ न मांगकर उन्हीं की मंगल कामना करने लगे इसलिये आपको अभिभावक के रूप में बालक के प्रति वात्सल्यभाव से ओतप्रोत देखकर 'पेरिय' यानी 'वरीय' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

कुडल आळगर कोईल वर्त्तमान में वेगवती के पास है परन्तु पुराकाल में यह वेगवती की दूसरी धारा कृतमाला के किनारे था। इसी कृतमाला नदी की कथा श्रीमद्भागवत में मत्सयावतार के लिए प्रसिद्ध है। कूडल या कूदल का अर्थ जुड़ना भी है। चूँकि दो नदियां यहां पुनः जुड़ जाती हैं इसलिए कूडल नाम हुआ।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी, पाशुर **1762**।

प्रथम शतक का दूसरा दशक **(1 ः 2 या पासुर 13 से 22 तक)** ः **10** पासुरों वाले द्वितीय दशक में तिरूकोट्टियूर (पासुर **13** एवं **22**) दिव्य देश की विशेषता को बताते हुए भगवान कृष्ण के अवतार की गाथा है। तिरूकोट्टियूर दिव्य देश गोष्ठीपूर्ण स्वामी का अवतार स्थल है और गोष्ठीपूर्ण स्वामी ने श्री रामानुज स्वामी को अठारह बार के

अथक परिश्रम के बाद अष्टाक्षर मंत्र की रहस्योपरक व्याख्या समझायी थी। इस दशक में भगवान कृष्ण केशव के जन्म की खुशखबरी से गोपजन एक दूसरे के ऊपर दही हल्दी एवं तेल उड़ेल रहे हैं। नवजात शिशु का प्रथम स्नान कराने के कम में जब मां यशोदा मुलायम हल्दी से जीभ साफ करने लगती हैं तो मुंह के भीतर सातो लोकों की झांकी मिलती है। बारह दिन के बाद विशेष उत्सव मनाया जाता है। प्रारंभ से ही शिशु के चमत्कार का साक्षात्कार होता है कि जो भी गोद लेता है वह उन्हें संभाल नहीं पाता है। या तो भगवान अपना वजन बढ़ा लेते हैं या हाथ पैर ऐसा फेंकते हैं कि संभालना कठिन हो जाता है।

°°

दिव्य देश **2** ः तिरूकोट्टियूर या तिरूगोष्ठीयूर

1।स्थान ः तिरूकोट्टियूर या तिरूगोष्ठीयूर तमिलनाडु के मदुरै शहर से **70** कि मी पर अवस्थित है । यह कराइकोडि के पास तिरूपथूर से करीब **7** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः यहां का मंदिर सौम्य नारायण पेरूमाल का है जो भुजंगशयनावस्था में हैं।यहॉ के विमान को अष्टांग विमान कहते हैं तथा पुष्करणी तिरूपरकडल या देवपुष्करणी कही जाती है। पूर्वाभिमुख भुजंगशयन मूलावर को 'स्थित नारायण' या 'उर्ग मेल्लानयन' कहते हैं। यहां तायर को तिरूमामगल, नीलामामगल या कुलमामगल कहते हैं। अष्टांग विमान के ऊपर बहुत बड़ा कलश स्थापित है परंतु इसकी विशेषता है कि इसकी छाया कभी भूमि पर नहीं पड़ती। चारों दिशाओं में दो दो विमान होने से यह अष्टांग विमान कहा जाता है। यह तीन तलों से बना है। पहले तल को परकडल यानी क्षीरसागर कहते हैं। इसमें सौम्य नारायण भूमि देवी एवं नीला देवी के साथ हैं और स्वयं भुजंगशयनावस्था में हैं। पेरूमाल को कदम्ब मुनि, ब्रह्मा, इन्द्र, तथा मधुकैटभ ने घेर रखा है। दूसरे तल पर श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ पेरूमाल खड़े हैं और पेरूमाल को उपेन्द्रनारायण कहा जाता है। तीसरे तल को परमपदम कहा जाता है तथा यहां पेरूमाल श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ बैठे हुए हैं।पेरूमाल को परवासुदेवन कहते हैं। विमान पर हिरण्य वध को दर्शाते कई प्रतिमायें बनी हैं।

3। महिमा ः पांडियन राजा श्री मारन वल्लभन के दरवार में विख्यात कवि श्री सेल्व नांबी का यह जन्मस्थल है। विदित है कि श्री सेल्व नांबी ने ही राजा को श्री विष्णुचित्त स्वामी को नारायण परतत्व की व्याख्या के लिये आमंत्रित करने के लिये उत्प्रेरित किया था। श्री सेल्व नांबी की बंश परंपरा में बाद में तिरूगोष्ठीयूर नांबी (यानी गोष्ठीपूर्ण स्वामी) हुए जो श्री रामानुज स्वामी के अष्टाक्षर मंत्र के आचार्य हुए।अठारह बार के

अथक परिश्रम के बाद श्री रामानुज स्वामी मंत्र का रहस्य समझ सके और शीघ्र ही उन्होंने मंदिर के गोपुर से मंत्र के रहस्य को सार्वजनिक कर दिया। इस से नाराज होकर गोष्ठीपूर्ण स्वामी ने रामानुज स्वामी को गुरू प्रतिज्ञा भंग करने के अपराध में नरकगामी होने को बताया क्योंकि दीक्षा के पूर्व रामानुज ने मंत्र के रहस्य को सार्वजनिक नहीं करने की शपथ ली थी। जब रामानुज को ज्ञात हुआ कि इस मंत्र के रहस्य को जानने से मोक्ष मिलता है तब उन्होंने गोपुर की ऊंचाई से इसे सबको बता दिया। गोष्ठीपूर्ण के क्रोध करने पर रामानुज ने कहा कि अगर हमारे अकेले नरक जाने से अन्य बहुतों को मोक्ष मिलता है तब यह नरक हमें स्वीकार है। रामानुज की उदारता से प्रभावित होकर गोष्ठीपूर्ण स्वामी ने रामानुज को 'एम्पेरूमनार' कह कर पुकारा और तब से रामानुज 'एम्पेरूमनार' कहे जाने लगे। रामानुज स्वामी के सम्मान में यहां के विमान के तीसरे तल पर रामानुज स्वामी की प्रतिमा स्थापित है।

हिरण्यकशिपु के बध के लिये यहां देवों एवं ऋषियों की सभा होने के कारण इसे गोष्ठीपुरम या गोष्ठीयूर भी कहते हैं। अंततः हिरण्यकशिपु का बध अहोबिलम में हुआ।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी, पासुर **13 22 173 360** से **370** तक।भक्तिसार स्वामी, नान्मूगन तिरूवन्दादि ः पासुर **2415**। परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळीः पासुर **1550, 1838** से **1847** तक, **1856**।पेरिय तिरूमडल ः पासुर **2674**।भूत आळवार इरण्डाम तिरूवन्दादि ः पासुर **2227, 2268**।पेय आळवार मुन्राम तिरूवन्दादि ः पासुर **2343**

ဝဝ

दिव्य देश **3**ः तिरूवडमदुरै या मथुरा

1।स्थान ः यह दिव्यदेश उत्तरप्रदेश में आगरा के पास अवस्थित है। यहां रेलवे का जंक्शन है तथा यह स्थान राजमार्ग एवं रेलमार्ग से सुगमता से जुड़ा हुआ है।

2।विग्रह स्वरूप ः कारागार के रूप में भगवान कृष्ण की जन्मस्थली आज भी दर्शनीय है। यमुना किनारे अवस्थित **250** वर्ष पुराना द्वारकाधीश जी के मंदिर में अर्चना पूजा की जाती है। प्राचीन धरोहरों को मुगलों ने नष्ट कर दिया था अतः वर्तमान में यहां आळवार के काल का स्थान दर्शन को उपलब्ध नहीं है। डर्शन के लिये मात्र कृष्ण के काल की माटी तथा यमुना नदी उपलब्ध हैं।

3 महिमा ः भगवान कृष्ण ने कंस से छीनकर यहां अपनी राजधानी बनायी थी परंतु जरासंध एवं यवनों के आक्रमण के कारण भगवान ने मथुरा को त्यागकर नयी राजधानी

द्वारका में बसायी थी। हालांकि अपने महाप्रयाण काल के समय आपने द्वारका को भी समुद्र में डूबने दिया तथा अभिमानी यदुवंशियों का समूल नाश होने दिया। आपके कुल में एकमात्र ब्रजनाभ ही जीवित थे जो अनिरूद्ध के पुत्र थे। अर्जुन एवं परीक्षित की सहायता से ब्रजनाभ ने मथुरा को पुनः नये तरीके से बसाया। भगवान राम के काल में मथुरा का उद्धार शत्रुघ्न ने लवणासुर का वध करके किया था।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी : पासुर **10, 277, 297, 396, 399**। आंडाल, तिरूप्पावै : पासुर **478**।आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी :पासुर **538, 539, 560, 569, 617, 624, 634**। भक्ताघ्रिंरेणु , तिरूमालै ः पासुर **916**।परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी ः पासुर **1512, 1527, 1833,** शिरिय तिरूमडल ः पासुर **2673**। नम्माळवार तिरूवायमोली ःपासुर **3663, 3723, 3783** से **3790** तक।

ःः

दिव्यदेश **4**। आय्यपादी या वृन्दावन तथा गोकुल एवं गोवर्द्धन

4।1।वृन्दावन ः

क। स्थान ः यह यमुना नदी के किनारे अवस्थित है तथा मथुरा से **10** कि मी पर सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। मथुरा जंक्शन से नैरो रेल गेज पर सीमित आवृति की एक रेल कोच मथुरा से वृन्दावन जाती है परंतु यात्रा की सुगमता सड़क मार्ग से ही है।

ख। विग्रह स्वरूप एवं महिमा ः भगवान कृष्ण की बाललीला के लिये अलौकिक रूप से विख्यात क्षेत्र वृन्दावन है। काल के विक्षेप में मुगलों ने इस क्षेत्र के प्राचीन स्मारकों को नष्ट कर दिया। श्रीमदभागवत के दशम स्कंध की कथाओं के स्थान तथा आळवार संतों का संदर्भ अब प्रतीक रूप में दर्शनीय हैं। यमुना किनारे रास की स्थली, कदंब का वृक्ष, तथा कालीय दह आज भी यात्री बड़ी श्रद्धा से दर्शन करते हैं। भतरौढ़ बिहारी जी का मंदिर द्वारकाधीश जी के बगीचा के पास एक छोटी टिल्हे पर अवस्थित है। भूखे बालक कृष्ण को गाय चराने के कम में यहीं उनके सखाओं के साथ यज्ञ पत्नियों ने दोपहर में भोजन कराया था।

आज के दिन नाथमुनि द्वारा संस्थापित श्रीवैष्णव गोवर्द्धन गद्दी का मुख्यालय श्रीरंगजी मंदिर दक्षिण भारत की शैली पर ई सन **1851** से दर्शनीय है। मथुरा के राधाकृष्ण सेठ युगलबंधु एवं रंगदेशिक स्वामी जी के परिश्रम से यहां गोदा रंगमन्नार का कल्याण विग्रह तिरूकोळम परिधान में गरूड़ जी के साथ गर्भगृह में श्रीविल्लीपुत्तुर की शैली पर

दर्शनीय हैं।

ग।दिव्यप्रबंधम संदर्भः वृन्दावन का संदर्भ आंडाल के नाच्चियार तिरूमोळी में पासुर **637** से **646** तक मिलता है।वृन्दावन को अधिकांश 'आय्यपाडि' नाम से सम्बोधित किया गया है। आय्यपाडि के संदर्भ निम्नवत हैं। पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी : पासुर **14, 16, 132, 145, 231, 235, 239, 263, 281**। आंडाल तिरूप्पावै **474**। आंडाल नाच्चियार तिरूमोळी ः **618, 630, 636, 638**। प्रकाल स्वामी पेरिया तिरूमोळी ः **1021, 1435, 1993, 1994, 1995.** । शिरिय तिरूमडल **2673**।

<u>**4**।**2**।गोकुल</u> ः नंद बाबा का गांव जहां यशोदा के साथ भगवान कृष्ण का कुछ समय बीता था मथुरा से यमुना पार करके **18** कि मी पर अवस्थित है। कंस से प्रेरित असुरों के आतंक से बालक कृष्ण की रक्षा हेतु नंदबाबा अपने परिवार मित्र तथा कुटुम्बों के साथ गोकुल छोड़कर वृन्दावन आ गये थे। इस स्थान के दर्शन से दही तथा मक्खन की हांडी फोड़ने की कथा एवं यमलार्जुन का उद्धार आज भी भक्तलोग श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

<u>दिव्यप्रबंधम में इसका संदर्भ</u> भक्तिसार स्वामी के तिरूचन्दविरूत्तम में मिलता है ः पासुर **758** तथा परकाल स्वामी के पेरिय तिरूमोळी के पासुर **1392**।

<u>**4**।**3**।गोवर्द्धन ः</u> मथुरा रेलवे जंक्शन से **22** कि मी पश्चिम में सड़क मार्ग से गोवर्द्धन स्थान सुगमता से जुड़ा हुआ है। गाय बछड़ों एवं ग्वालबालों की चोरी के बाद ब्रह्मा का मानमर्दन करने वाले कृष्ण ने इन्द्र को भी सही रास्ते पर ला कर खड़ा कर दिया। इन्द्र के वार्षिक यज्ञ का भाग भगवान कृष्ण ने स्वयं ग्रहण करके इन्द्र को कुपित कर दिया। अनावरत घोर वृष्टि से रक्षा हेतु कृष्ण ने अपने हाथ पर गोवर्द्धन पर्वत को छाता की तरह उठाकर सबों को त्राण दिलाया। इसकी कथा श्रीमदभागवत के स्कंध **10**।**25** से **10**।**27** तक द्रष्टव्य है। आळवार संतों का संदर्भ यहां मूलरूप में दर्शनीय है। गोवर्द्धन की पूजा मुख्यतया परिक्रमा से की जाती है। परिक्रमा मार्ग दो भाग में बंटा है। दक्षिण की परिक्रमा **10** कि मी की है एवं गोवर्द्धन पर्वत के पूरब दक्षिण तथा पश्चिम होते हुए गोवर्द्धन मंदिर पर पूरी हो जाती है। दूसरी परिक्रमा **11** कि मी की है जो उत्तर की ओर उद्धव कुण्ड, राधा कुण्ड, तथा कुसुम सरोवर होते गोवर्द्धन जी पर आकर पूरी होती है। परिक्रमा के काल में भक्त गण प्रायः पैदल चलते हैं और अर्चना के रूप में दूध की धार से मार्ग को सिंचित करते जाते हैं। दक्षिण परिक्रमा मार्ग में गोविन्द कुण्ड या सुरभी कुण्ड महत्वपूर्ण है जहां कामधेनु ने बालक कृष्ण को दूध से अभिषेक किया था और आपको गोविन्द कहा जाने लगा। इन्द्र ने भी इसी स्थान पर अपना आत्मसमर्पण कर

बालक कृष्ण से क्षमा मांगी तथा ऐरावत से आकाशगंगा का जल मंगाकर दूध अभिषेक के बाद जल से भगवान का अभिषेक कराया और विधिवत पुष्पमालाओं से अर्चना की।

<u>दिव्यप्रबंधम में गोवर्द्धन का संदर्भ</u> ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **264** से **274**। आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी ः **624 634 638**। परकाल स्वामी, तिरूनेडुन्दान्डगम ः**2080**।

ःःः

पहला शतक का तीसरा दशक **(1 ः 3 या पासुर 23 से 43 तक)** ः तीसरा दशक **21** पासुरों का है और इसमें भगवान कृष्ण का चरणारविंद से लेकर केशांत तक की अद्भुत छवि का वर्णन है। भगवान शिशु रूप में अपने पैर के एक अंगूठे को मुंह में डालकर चूस रहे हैं। आपको देखकर एकत्रित गोपियां बताती हैं कि यह बालक देवकी से यशोदा को मिला है। पैर की दसो अंगुलियां के नख प्रकाश दीप की तरह चमक रहे हैं। दोनों पैरों में चांदी के बलय पहने प्रभु स्तन से दूध पीने के बाद कैसे सो रहे हैं। घुटने एवं जांध पुष्ट हैं। हस्ता नक्षत्र से दसवें **(1।3।6 या पासुर 28)** नक्षत्र यानी श्रवण में आपका देवकी के गर्भ से जन्म हुआ है एवं वसुदेव आपके पिता हैं। प्रभु का सुन्दर कमरबन्द हीरे मोती से बने हैं। गंभीर नाभी है। आप अकेले भी खेल में मस्त रहते हैं। प्रभु का आकर्षक उदर है। संप्रति मां ने दूध पिलाने के बाद सुलाकर एक पुरानी रस्सी से बांध रखा है **(1।3।9 या पासुर 31)** जिससे कि जागकर कहीं भागने का प्रयास न करें। दिव्य वक्षस्थल है जिससे प्रभु ने युगल वृक्षों का नाश किया। बाहें बहुत सुन्दर हैं। चार पांच महीना के अन्तर्गत ही आपने शकटासुर एवं पूतना का नाश किया। यही बाहें शंख एवं चक्र धारण करते हैं।आपको यशोदा ने अपने पुत्र की तरह पाला है।जगत को निगलने वाले का गला कितना सुन्दर है। गोपियां आपके अधर का रस पान आपको अपने गोद में लेकर करती हैं। आंख नाक एवं मुस्कान भरा चेहरा कितने सुन्दर हैं। देवकी के लाल की आंखें एवं भौं अतीव आकर्षक हैं। कान में सुन्दर मकराकृत कुण्डल लटक रहे हैं।आप प्रलय काल में सात लोक सात पर्वत सात समुद्र सात पृथ्वी को निगलने वाले हैं। बालू से महल बनाकर खेलने वाली गोपियों के हाथ से उनके खिलौने लेकर भागने वाले प्रभु स्वर्ण छड़ी लेकर गाय चराने जाते हैं।

पहला शतक का चौथा दशक **(1 ः 4 या पासुर 44 से 53 तक)** ः इसमें दस पासुर हैं। मां यशोदा प्रभु को प्रसन्न रखने के लिये झूले में झुलाकर लोरी सुनाती हैं। यशोदा कहती हैं कि आपका स्वर्ण झूला ब्रह्मा ने दिया है। रत्नजड़ित कमरधनी शिव तथा पैरों

का घुंघरू इन्द्र का दिया हुआ है। देवगन का दिया हुआ पाजेब, पंच आयुधों की आकृति के समान दानों से बने हार, दक्षिणावर्त शंख आदि है। वरूण ने समुद्री मूंगे तथा मोती की माला भेजी है। लक्ष्मी ने तुलसी तथा करपक्कम फूल की माला दी है। पृथ्वी देवी ने सोने का कंगन, केशपाश तथा ललाट के आभूषण दिये हैं। पार्वती ने सुगंधित इत्र, हल्दी चूर्ण, काजल आदि भेजे हैं।

पहला शतक का पांचवा दशक **(1 ः 5** या पासुर **54** से **63** तक**)** ः इसमें दस पासुर हैं। मां यशोदा भगवान कृष्ण के मनोरंजन के लिये भिन्न भिन्न उलाहने देकर चांद को प्रभु के पास में बुलाती हैं। बादलों के पीछे न छिप कर आप नटखट गोविंद के पास आकर खेलिये। आप तो संतान संपन्न हैं इसलिये प्रभु के छोटे हाथों से आमंत्रित होकर आप शीघ्र आइये। हमारे प्रभु वेंकटम **(1 । 5 । 3** या पासुर **56)** वाले प्रभु हैं। प्रभु के मुंह से लार टपक रहा है तथा तोतली बोली से आपको बुलाते हैं। शंख चक्र धारण करने वाली भुजायें अंगड़ाई भर रही हैं। आपके आने से ये सो जायेंगे अन्यथा नहीं सोने पर इनको दूध नहीं पचेगा। इनको छोटा समझ कर इनकी उपेक्षा नहीं कीजिये। समस्त जगत को निगलने वाले तथा माबली यानी बली राजा से दान में भूमि लेने वाले आप ही हैं। सभी घड़ों के मक्खन से ये अपना पेट भर चुके हैं। ऐसा न हो कि आपकी उपेक्षा देख आप पर ये अपने चक्र का संधान कर दें।

ःः

दिव्य देश **5** । तिरूवेंकटम

1 स्थान ः आंध्रप्रदेश के तिरूपति शहर से **19** कि मी ऊपर पहाड़ पर अवस्थित वेंकटेश भगवान को धारण करने वाला पर्वत माला को तिरूमला या तिरूमलय कहते हैं। तिरूपति एक रेलवे स्टेशन है तथा पास के रेनीगुंटा रेलवे जंक्शन से सुगमता पूर्वक राजमार्ग से जुड़ा हुआ है। चेन्नई तथा बंगलोर से राजमार्ग से सुगमता पूर्वक यहां पहुंचा जा सकता है। तिरूपति का हवाई अड्डा बंगलोर हैदराबाद दिल्ली आदि शहरों से वायुयान के नियमित उड़ान से जुड़ा हुआ है।

2 । विग्रह स्वरूप ः तिरूमला में मूलावर चतुर्भुज रूप में पूर्वाभिमुख खड़े हैं एवं श्रीनिवास कहे जाते हैं। ऊपर के दायें एवं बायें हाथों में चक्र तथा शंख विराजमान हैं। नीचे का दायां हाथ शरणागति बताकर वरद मुद्रा में है तथा नीचे का बायां हाथ जांघ पर टिका हुआ है और भक्तों को अपनी ओर आह्वान करते हुए यह संकेत देता है कि संसार रूपी समुद्र में जांघ से नीचे ही पानी है। अतः मेरे पास आने पर भवसागर में डूबने का भय त्याग दो। उत्सव मूर्ति को मलयप्पास्वामी कहते हैं जो सर्वदा श्रीदेवी एवं

भूदेवी के साथ रहते हैं। प्रत्येक शुक्रवार को मूलावर का तिरूमंजन होता है तथा उत्सवविग्रह का नित्य तिरूमंजन होता है। विमान को आनंद निलयम कहते हैं तथा तीर्थ स्वामी पुष्करणी, आकाश गंगा, पापविनाशिनी एवं चक्रतीर्थ है। यहां आदिवराह का लक्ष्मी के साथ पृथक सन्निधि है जो स्वामी पुष्करणी के पश्चिम में अवस्थित है जबकि श्रीनिवास भगवान का मंदिर परिसर पुष्करणी के दक्षिण तट पर अवस्थित है। श्रीनिवास भगवान के मंदिर के विमान में भगवान के पर, व्यूह, वैभव, तथा अर्चा स्वरूप के दर्शन होते हैं। श्रीनिवास भगवान के मंदिर के भीतरी प्राकार में योग नरसिंह, बरदराज भगवान, ज्ञानमुद्रा में रामानुज स्वामी तथा विष्वकसेन की सन्निधि है। बाहर के प्राकार में रंगनाथ भगवान की सन्निधि है। बाहर के प्राकार में नित्य दिन कल्याण उत्सव मनाया जाता है।

3। महिमा ः संपूर्ण पर्वतश्रेणी नारायण के शरीर के रूप में स्थित होकर परम पूज्य है। पर्वत के ऊच्चतम शिखर पर जहां भगवान का मंदिर है उसे तिरूमला या तिरूमलय तथा पर्वत की तलहटी को तिरूपति कहते हैं। तिरूमलय का अर्थ है पवित्र पर्वत। लक्ष्मी के रूप में पद्मावती जी का मंदिर तिरूपति में है जो तिरूचानूर भी कहा जाता है। उत्सव मूर्ति को पदमावती तथा मूलविग्रह को अलमेरमंगै कहते हैं। इसके अतिरिक्त तिरूपति में गोविंदराज जी का शयन मुद्रा में तथा कोदंडाराम के अलग अलग प्रसिद्ध मंदिर हैं।

तिरूपति से तिरूमला पैदल यात्रा के प्रारंभ में अलिपीरी में भगवान का चरणचिह्न विराजमान है जो प्रभु ने रामानुज स्वामी को जब वे पर्वत के नीचे तिरूमलय नांबी से रामायण पढ़ा करते थे दर्शन देने के लिये प्रकट किया था। विदित है कि पर्वत को नारायण स्वरूप होने के कारण रामानुज स्वामी पांव पैदल नहीं चढ़ना चाहते थे इसलिये तिरूमलय नांबी नित्य नीचे आकर रामानुज स्वामी को रामायण पढ़ाते थे। इसी प्रसंग में भगवान ने भी अपना चरणारविंद प्रकट कर रामानुज स्वामी को निरंतर दर्शन लाभ उपलब्ध कराया। रामानुज स्वामी की सक्रियता के कारण उनके अनन्त नामक अन्यतम शिष्य ने भगवान के पुष्प कैंकर्य की परम्परा को सम्पुष्ट किया। इसी के सम्मान में उनको 'अनंताअळवार' कहा जाने लगा। अनन्ताअलवार ने एक तालाब के निर्माण में श्रीनिवास भगवान की सेवा भी स्वीकार नहीं की तथा इस श्रमसाध्य कार्य को अपनी गर्भवती पत्नी के साथ अकेले ही सम्पादित किया। जब भगवान द्रवित होकर बटुक के रूप में अनन्ताअलवार की पत्नी की सहायता करने लगे तब अनन्ताअलवार ने कुदाल फेंककर उनके ऊपर प्रहार किया जिससे भगवान की ठुड्ढ़ी कट गयी और आज भी

उपचार स्वरूप मूलावर की ठुड्ढी में औषध की तरह पच्ची कपूर लगाया जाता है।' वेंकटाचल इतिहासमाल' अनन्ताअलवार द्वारा रचित अनुपम संस्कृत पुस्तक है जो रामानुज स्वामी के समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का विशद विवरण प्रस्तुत करता है। कन्या राशि में सूर्य के रहने से श्रवणा नक्षत्र के **10** दिन पूर्व से श्रीनिवास भगवान का बह्मोत्सव मनाया जाता है जो श्रवणा नक्षत्र के दिन स्वामी पुष्करणी में चक्रत आळवार के स्नान से पूरा होता है। बाकी दिनों भगवान विभिन्न बाहनों पर शोभायात्रा में भक्तों को दर्शन देते हैं। सामान्यतया यहां पहला दर्शन लक्ष्मीवराह का करने के उपरांत श्रीनिवास भगवान का दर्शन करने की प्रथा है। उत्तर माडा वीथी में लक्ष्मी हयग्रीव, राधा कृष्ण, तथा लक्ष्मी नरसिंह की सन्निधि है। दक्षिण माडावीथि में तिरूमला नांबी की स्वतंत्र सन्निधि है। तिरूमलय पर्वत शेष के स्वरूप में है तथा शेष का शिर तिरूमलय में, पेट अहोविलम में, तथा पूंछ श्रीशैलम में है।यह सात पर्वतों की श्रृंखला है ः वेंकटादि, शेषादि, वेदाचलगिरि, गरूड़ाद्रि, वृषभाद्रि, अंजनादि, नारायणाद्रि या अनंताद्रि।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः विभिन्न आळवार संत ने इसे वेंकटम पर्वतश्रेणी, वेंकटम, तिरूमल तथा तिरूमलय आदि नामों से सम्बोधित किया है।

वेंकटम पर्वतश्रेणी ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी, **180 184 247**।आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी, **504 506 535 577** से **586** तक।कुलशेखर आळवार पेरूमाळ तिरूमोळी **677** से **687** तक। षोगीवाहन स्वामी, अमलनादि पिरान, **929**।पोय्गै आळवार या सरोयोगी, मुदल तिरूवन्दादि **2107 2121**।भूतद आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2234**। नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2558**, तथा तिरूवायमोळी **3143** से **3153** तक, **3209 3689 3964**।

वेंकटम ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **56 104 207 463**। आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी, **546 577** से **586** तक **602 604**।कुलशेखर आळवार, पेरूमाळ तिरूमोळी **680**। भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्द विरूत्तम **799 811 832**, तथा नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2415**, **2420** से **2429** तक, **2470 2471**।योगीवाहन स्वामी, अमलनादि पिरान, **927**।परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1018** से **1057** तक, **1275 1312 1371 1388 1404 1518 1519 1550 1572 1660 1811 1836 1849 1933 1946 1978 2001 2038 2059 2060 2067**, तथा शिरय तिरूमडल **2673**, एवं पेरिय तिरूमडल **2674**। पोय्गै आळवार या सरोयोगी, मुदल

तिरूवन्दादि **2108 2118 2119 2120 2149 2157 2158 2163 2173 2180** । भूतद आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2206** से **2209** तक़, **2214 2226 2227 2229 2235 2253 2256 2257** । पेय आळवार या महयोगी, मून्राम तिरूवन्दादि **2295 2307 2311 2313 2320 2326 2331 2339 2340 2342 2343 2344 2349** से **2354** तक, **2356 2370** । नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2485 2487 2492 2508 2527** , तथा तिरूवायमोळी **2978 3072 3085 3172 3285**, **3551** से **3560** तक, **3682 3810 3940** ।

<u>तिरूमल</u> ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **11 151 269 332 380 390 401 406 412 435** । आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी, **552 577 596 632 644** । भक्तिसार स्वामी, नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2395** । परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1469 1497 1998 2021 2065** । पोय्गै आळवार, मुदल तिरूवन्दादि **2089 2118 2133 2134 2142 2145 2151 2156** । भूतद आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2198 2211 2213 2223 2245** । पेय आळवार या महयोगी, मून्राम तिरूवन्दादि **2301 2344** । नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2484 2509 2525 2529 2540 2564 2565 2570**, तथा पेरिय तिरूवन्दादि **2653** एवं, तिरूवायमोळी **2949 3214 3271 3701 3864 3964** ।

<u>तिरूमलय</u> ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1521 2069** । भूतद आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2251** । पेय आळवार या महयोगी, मून्राम तिरूवन्दादि **2344** ।

पहला शतक का छठा दशक **(1 ः 6 या पासुर 64 से 74 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं । भगवान के विभिन्न मनोहारी नृत्यभंगिमाओं को बताते हुए मां यशोदा प्रभु को नाचने के लिये उत्साहित करती हैं। बटपत्र के बालमुकुन्द, हिरण्यकशिपु के नाश के लिये नरसिंह स्वरूप वाले, माबली का मान मर्दित करने वाले वामन आदि अवतारों की गाथा गाकर यशोदा प्रभु को नाचने के लिये आमंत्रित करती है। शकटासुर, पूतना, कालिय नाग, यमलार्जुन, कुवलयापीड़ हाथी, मल्ल योद्धाओं के नाश का स्मरण कराती है। नप्पिनाय की प्राप्ति के लिये सात बैलों को शमित करने के प्रसंग का उदाहरण देती है । आपही दिव्य देश तिरूक्कुरूंगुडी, तिरूवल्लारै, तिरूमालरूञ्शोलै तथा तिरूकण्णपुरम **(1 । 6 । 8** या पासुर **71)** के प्रभु हैं । अंत में दूध दही घी का प्रलोभन देकर प्रभु को नाचने के लिये उत्साहित करती हैं ।

दिव्यदेशः 6 । तिरूक्कुरूगुंडी

1 । स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु के तिरूनेलवेली से 35 कि मी पर अवस्थित नांगुनेरी (वानमामलै या तोतादरी) से करीब 15 कि मी पर स्थित है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः भगवान की सन्निधि पहाड़ के नीचे तथा ऊपर दोनों जगहों पर है । नीचे के मंदिर में आप खड़े मुद्रा में तिरूपति बाला जी के समरूप चतुर्भुज रूप में हैं । ऊपर का दायां हाथ चक्र एवं बायां शंख धारण किये हुए है । नीचे का दायां वरद यानी शरणागति मुद्रा में है तथा बायां हाथ जांघ पर स्थित है । मूलावर पूर्वाभिमुख हैं तथा ऊंची मूर्ति होने के कारण हिन्दी भाषियों द्वारा अपभ्रंश में 'लंबे नारायण' भी कहे जाते हैं । मंदिर के एक प्राकार में शिव जी की सन्निधि है तथा आपने शिव जी को यहां सुदर्शन मंत्र दिया था । यहां के मंदिर में काष्ठ में बहुत ही सुन्दर एवं कलापूर्ण कढ़ाई की हुई है । यहां भगवान विशेषतया 'नांबि' की उपाधि से जाने जाते हैं और 'नांबि नारायण' कहे जाते हैं । मूलावर 'वैष्णव नांबि' या 'बटुक नांबि' कहे जाते हैं । उत्सव विग्रह को 'अळगिया नांबी' या 'सुन्दरपरिपूर्णम' कहते हैं । तायर को कुरूंगुडी नाच्चियार कहते हैं । परकडल यहां का तीर्थ है तथा विमान को पंजखेदक कहते हैं । 9 कि मी ऊपर पहाड़ की सन्निधि को 'मलय नांबी' कहते हैं । ऊपर जाने के रास्ते में करीब 700 मी दूर एक नदी बहती है जिसे तिरूप्परकडल कहते हैं और इसके किनारे की सन्निधि को 'तिरूप्परकडल सन्निधि कहते हैं जहां बामन भगवान का मंदिर है । राजा बली की भी स्वतंत्र सन्निधि है । पहाड़ के ऊपर के मंदिर में भगवान देवगन तथा ऋषिगन को दर्शन देते हैं परंतु भक्तगन भी यहां जीप से पहुंच कर दर्शन प्राप्त करते हैं ।

3 । महिमा ः वैष्णव का रूप बनाकर आपने रामानुज स्वामी से दीक्षा ली थी इसलिये 'वैष्णव नांबि' कहे जाते हैं । एक कथा के अनुसार यह सुना जाता है कि मलय देश यानी केरल क्षेत्र के मंदिरों में तमिलनाडु की तरह पूजा विधि सुनिश्चित करने रामानुज स्वामी का वहां पदार्पण हुआ । वहां के अर्चकों ने अपनी पुरातन विधि को ही चालू रखने के लिये भगवान से प्रार्थना की । फलस्वरूप अर्चकों की विनती मानकर भगवान ने रामानुज स्वामी को सोये हुए अवस्था में तिरूकुरूंगुडी लाकर रख दिया । रामानुज स्वामी की पूजा की सामग्री लेकर साथ चलने वाला बटुक केरल में ही रह गया । भगवान ने स्वयं तिरूकुरूंगुडी में बटुक बनकर रामानुज स्वामी को उनकी पूजा की सामग्री उपलब्ध करायी । अपनी पूजा के उपरांत जब रामानुज स्वामी दर्शन के लिये मंदिर गये तब

उनके साथ साथ चलने वाला बटुक भगवान की सन्निधि में लुप्त हो गया। मंदिर से **2** कि मी दक्षिण पश्चिम में रामानुज स्वामी की स्वतंत्र सन्निधि है जहां रामानुज स्वामी अंजली मुद्रा में न विराजकर वरद यानी शरणागति हस्त मुद्रा में हैं। यहां भूगर्भ में एक सन्निधि हैं जहां रामानुज स्वामी के पास भगवान बटुक रूप में विराजते हुए दर्शन देते हैं। इशलिये आप 'बटुक नारायण' कहे गये। वाराह भगवान ने अपने विशाल स्वरूप को संकुचित कर इस स्थान पर लघु रूप में बदल लिया था तथा लक्ष्मी के साथ एक कुटी में निवास किया था। परकाल स्वामी को यहां मोक्ष मिला था तथा आपका वृन्दावन **2** कि मी उत्तर खुली जगह में दर्शनीय है। नम्मालवार की माता उदय एवं पिता कारी ने संतान के लिये तिरूकुरूंगुडी के नंबी नारायण की अर्चना की थी। फलस्वरूप नम्मालवार का प्रादुर्भाव हुआ। तिरूकुरूंगुडी को दक्षिणबदरी तथा सिद्धाश्रम भी कहते हैं। कभी यह 'अरैयर सेवा' के लिये प्रसिद्ध था। धनुर्मास में दिव्यप्रबंधम को गान एवं अभिनय के साथ प्रस्तुत करने का कार्य 'अरैयर' परिवार के लोग करते हैं जो नाथमुनि के बंशज माने जाते हैं। भगवान स्वयं वैष्णव बनकर अरैयर प्रस्तुति का आनंद लेते सुने जाते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ःपेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **71**। भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्द विरूत्तम **813**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1005 1399 1470, 1788** से **1807** तक, **2065** तथा पेरिय तिरूमडल **2674**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3006 3210, 3385** से **3395** तक।

ःः

दिव्यदेश **7**। तिरूवल्लारै

1।स्थान ः यह तिरिची श्रीरंगम से करीब **20** कि मी की दूरी पर तुरैयूर मार्ग पर अवस्थित है। मंदिर **100** फीट ऊंचे श्वेत पत्थर के पहाड़ पर स्थित है। इसे श्वेतगिरी या वल्लारै कहते हैं।

2।विग्रह स्वरूप ः भगवान खड़े मुद्रा में चतुर्भुज स्वरूप में पूर्वाभिमुख हैं और आप पुण्डरीकाक्ष के नाम से विख्यात हैं। ऊपर के हाथ में चक्र प्रयोग मुद्रा में है। नीचे का दायां हाथ अभय मुद्रा में है तथा बायां गदा के साथ है। उत्सवमूर्ति को चंदमारी कन्नन तथा कम्पतडियन कहते हैं। गर्भगृह में श्रीदेवी एवं भूदेवी के अतिरिक्त भगवान के दायें तरफ गरूड़ जी तथा बायीं ओर आदिशेष मनुष्य विग्रह में खड़े हैं। सूर्य एवं चन्द्र चॅवर सेवा करते दर्शन देते हैं। मार्कण्डेय मुनि भी गर्भगृह में विराजमान हैं।विमान को विमलाकृति विमान कहते हैं। पुष्करणी दिव्य, गंध, पद्म, वराह आदि नाम से जाने

जाते हैं। तायर के मूलावर को सेनवगवल्ली या पंकयाशेल्वी कहते हैं।उत्सव विग्रह पंकजवल्ली कही जाती हैं।तायर शालग्राम की माला पहनती हैं जो अन्यत्र शायद ही देखा जाता है। यहां का तालाब स्वस्तिक के आकार का है जिसके कारण एक ओर स्नान करने वाले दूसरे ओर स्नान करने वाले को नहीं दिखता है। इसे सास पतोहू सरोवर भी कहते हैं। यहां मूलावर सुदर्शन **16** हाथ से युक्त तथा उत्सव मूर्ति **8** हाथ से युक्त हैं। 'कार्यसिद्धि आंजनेय' की आंख बहुत ही आकर्षक है तथा देखने में जीवित आंख की तरह प्रतीत होती है।

3।महिमा ः राजा शिवि चक्रवर्ती एक श्वेत वराह का पीछा करते यहां आये और वराह लुप्त हो गया। मार्कण्डेय मुनि तब यहां तपस्या रत थे। राजा के पूछने पर मुनि ने पूजा एवं दूध से अभिषेक की राय दी। भगवान ने प्रकट होकर राजा को दर्शन दिया। नाच्चियार कोइल की तरह यहां हरेक उत्सव में लक्ष्मी को प्राथमिकता दी जाती है।एक बार भगवान कहीं से देर से लौटे तो लक्ष्मी ने स्पष्टीकरण पूछ दिया। जिस द्वार से भगवान का प्रवेश हुआ था उसे 'नड़ी केट्टा वसल' कहते हैं। कुंभकोनम के सारंगपानी मंदिर की तरह यहां भी दक्षिणायन एवं उत्तरायण प्रेवश द्वार पृथक पृथक है।

श्रीनाथ मुनि के दो अन्यतम शिष्य तिरूवल्लारै के निवासी थे ः पुण्डरीकाक्ष एवं कुरूगै कवलाप्पार । पुण्डरीकाक्ष का जीवन दिव्य प्रबंधम के प्रचार प्रसार में बीता था। भगवान तिरूवेंकटाचलपति के तिलक के अवतार वेदांत देशिक स्वामी ने "हंस संदेशम्" में पांच दिव्यदेशों को बहुत प्रधानता दी है ः (i) तिरूमला तिरूपति, (ii) कांचीपुरम ः जहां उनका जन्म हुआ था, (iii) तिरूवल्लारै ः जहां के उनके परमाचर्य इंगल अलवान थे, (iv) श्रीरंगम, (v) तिरूमलैरूञ्जोलै । यहां तिरूवल्लारै में रामानुज स्वामी ने **12** वर्षों तक निवास किया था। जब रामानुज स्वामी को कुरेश स्वामी की सेवा उपलब्ध नहीं थी, क्योंकि कृमिकुठार की क्रूरता से कुरेश स्वामी अपनी आंख गंवाचुके थे, तब रामानुज स्वामी को श्रीरंगम में लिखने की सहायता इंगल अलवान से मिली थी। पहले इनका नाम विष्णुचित्तार था, और इनकी प्रज्ञा की प्रखरता से प्रसन्न होकर रामानुज स्वामी ने इनको नाम इंगल अलवान नाम से पुकारने लगे थे।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **71, 192** से **201** तक। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1368** से **1387** तक, **1851** तथा शिरय तिरूमडल **2673,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**।

ºº

दिव्यदेश **8**।तिरूमालैरूञ्जोलै

1। स्थान ः यह स्थान मदुरै से लगभग **20** कि मी पर स्थित है। इसे तिरूमालैरूञजोलै या तिरूमलिरून्शोलै या अळगर कोइल भी कहते हैं। मदुरै रेलवे जंक्शन के पास वाले बस स्टैंड से अळगर कोईल के लिये नगर बस सेवा सुलभता से उपलब्ध है।

2। विग्रह स्वरूप ः अळगर मलय पर्वत की तलहटी के मंदिर के मूल विग्रह भगवान अळगर कहे जाते हैं तथा उत्सव मूर्ति को सुन्दरराजा या सुन्दरबाहु कहते हैं। भगवान को सुन्दरराजा के अतिरक्ति "कल्लाळगर" एवं "तिरूमालैरून्सओलै नांबि" भी कहते हैं। आप चतुर्भुज स्वरूप में खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुखी हैं। ऊपर दायें हाथ में चक्र तथा बायें में शंख विराजता है। नीचे का दायां हाथ शरणागति का संकेत देकर वरद मुद्रा में तिरूमला के भगवान बालाजी की तरह है तथा बायां हाथ गदा पर टिका है। मूलावर तथा उत्सव मूर्ति दोनों यहां पंचायुध से युक्त हैं। श्रीरंगम तथा ऊरैयूर की तरह भगवान का चक्र यहां प्रयोग मुद्रा में है। भगवान के पार्श्व में श्रीदेवी एवं भूदेवी खड़ी होकर विराजती हैं। विमान को सोमसुन्दर कहते हैं तथा पुष्करणी नुपुर गंगा या शिलाम्बु है। नुपुर गंगा का दर्शन पर्वत पर **10** कि मी ऊपर जाने पर मिलता है। भगवान की सन्निधि के दायें तरफ तायर की स्वतंत्र सन्निधि है तथा बायें आन्डाल की स्वतंत्र सन्निधि है। आन्डाल का मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा उत्सव मूर्ति बैठी हुई मुद्रा में दर्शन देती हैं। तायर को कल्याणसुन्दरवल्ली नाच्चियार कहते हैं। योग नरसिंह का स्वरूप क्रोध के कारण उग्र है तथा आपको नित्य दूध दही तथा नुपुर गंगा के जल एवं अन्य औषधियों से तिरूमंजन कराया जाता है। कहते हैं कि आपके क्रोध को सुगमता से बाहर निकलने के लिये आपकी सन्निधि में ऊपर एक छेद बना है।

3। महिमा ः अळगर का शाब्दिक अर्थ सुन्दरता है इसीलिये मंदिर को "अळगर कोईल" भी कहते हैं। इसे "तिरूमल ईरूम सोलै" यानि बागों वाले भगवान का पर्वत भी कहा जाता है। मुरूय पर्वत वृषभ के रूप में दिखता है और चारों तरफ के अन्य पर्वत गाय की तरह दिखते हैं। महाभारत काल में इसीलिये इसको वृषभाद्रि के रूप में वर्णित किया गया है। कूरत्त आळवार यानी रामानुज स्वामी के अन्यतम शिष्य अपनी आंखें खोने के बाद सुन्दरबाहु स्तवन में यहां के पेरूमल की प्रशस्ति गाये हैं।

गोदम्मा यानी आन्डाल ने अळगर पेरूमल यानि सुन्दरबाहु को एक सौ घड़े पायसम एवं मक्खन से अर्चना करने की मनौती रखी थी जो पूरा नहीं हो सका था और बाद में रामानुज स्वामी ने **100** घड़े पायसम एवं नवनीत का भोग लगा कर इस मनौती को पूरा किया। तत्पश्चात्ही वे श्रीविल्लीपुत्तुर आन्डाल के दर्शन के लिए पहुंचे। कहते हैं रामानुज स्वामी का सुन्दरबाहु भगवान को आन्डाल की भूली बात को पूरा करने से

आन्डाल इतनी प्रसन्न हुई कि वे वरामदे तक आगे बढ़कर रामानुज स्वामी को अपना "अग्रज भाई" मानते हुए स्वागत के लिए आगयी। आज भी श्रीविल्लीपुत्तुर में आन्डाल की उत्सवमूर्त्ति वहीं वरामदे में रखी जाती हैं। कहते हैं रंगनाथ भगवान ने सुन्दरराजा भगवान के स्वरूप में आन्डाल से व्याह रचाया।

अळगर मलय में नूपुर गंगा का बहुत बड़ा महत्त्व है। जब त्रिविक्रम रूप में भगवान सब लोकों तक अपने पवित्र पग को बढ़ा दिये तब ब्रह्मा उनके चरण को धो कर चरणामृत का लाभ लेने लगे। उसी समय चरण धोने के अन्तराल में भगवान के पाजेव से लगकर जल की कुछ बूंदें इस पर्वत पर भी आईं और वहीं से नूपुर गंगा का प्रार्दुभाव हुआ। सुन्दरबाहु भगवान की संपूर्ण उत्सव मूर्त्ति एक विशेष तरह के स्वर्ण धातु से ही बनी हुई है जो अन्य किसी मंदिर में नहीं है। अपवाद में मात्र तिरूअनन्तपुरम के अनन्तशयनम भगवान हैं जहां का उत्सव विग्रह इसी तरह के सोने से बना हुआ है। सुन्दरबाहु भगवान का तिरूमंजन मात्र नूपुरगंगा के जल से ही कियाजाता है। जब कभी भी अन्य जल से तिरूमंजन कराया गया भगवान की मूर्त्ति काली हो गयी। अतः नित्य नूपुर गंगा के जल से ही तिरूमंजन होता है। वर्ष में एक बार पौष शुक्ल द्वादशी को भगवान नुपुर गंगा में स्नान करने जाते हैं।

सुन्देश्वर के नाम से जाने गये मदुरै के शिव जी का कल्याण उत्सव एवं अळगर कोईल के सुन्दरबाहु भगवान का कल्याण उत्सव चैत्र मास में मनाया जाता है। अपनी बहन पार्वती जी से मिलने सुन्दरबाहु भगवान स्वयं मदुरै जाते हैं जिसमें नौ दिनों की उत्सव अवधि में से अळगर पेरूमाल का तीन दिन इसी कार्यक्रम में व्यतीत हो जाता है। दिव्यश्री चरितम तथा शिल्पादिकारम एवं प्राचीन साहित्य में यहां के मंदिर एवं भगवान का स्पष्ट उल्लेख है। श्रीरंगम की तरह प्रवेश द्वार को 'आर्यन वसल' कहते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ःपेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **71 258 338** से **359** तक **453** से **462** तक। आंडाल नाच्चियार तिरूमोळी **534 587** से **596** तक। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1022 1114 1329 1573 1634 1765, 1818** से **1837** तक, **1855 1969 2020 2034** तथा शिरय तिरूमडल **2673** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**। भूत आळवार, इरण्डाम तिरूवन्दादि **2227 2229 2235**। पेय आळवार, मून्राम तिरूवन्दादि **2342**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3110** से **3120** तक **3957** से **3967** तक **3968 3973**।

००

पहला शतक का सातवां दशक **(1 ः 7 या पासुर 75 से 85 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। भगवान ताली बजाते हैं और यशोदा भिन्न भिन्न घटनाओं का स्मरण कराते हुए आनन्द लेती हैं। जिस हाथ से मावली से धरती का उपहार लिया तथा घड़ों का मक्खन खा जाते हैं उन्हीं हाथों से ताली बजाइए। ये वही हाथ हैं जो युद्ध में रथ चलाये, सागर पर बाण चलाकर सेतु बनाये, हिरण्यकशिपु के पेट फाड़े, तथा बासुकी से समुद्र मंथन किये।

पहला शतक का आठवां दशक **(1 ः 8 या पासुर 86 से 96 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। भगवान लड़खड़ाते हुए चलते हैं। यशोदा विभिन्न स्थितियों की कल्पना कर उत्सुकता पूर्वक प्रभु को गिरते परते चलते हुए देखने के लिये लालायित है। सोचती हैं कि चरण में विद्यमान चक्र एवं शंख के चिह्नों को जमीन पर अंकित करते हुए बलदेव के पीछे पीछे आ रहे हैं क्या ? गंगा जल से भी पवित्र मूत्रांग के स्राव के साथ आ रहे हैं क्या ?

पहला शतक का नौवां दशक **(1 ः 9 या पासुर 97 से 107 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। थोड़ी देर ध्यान विचलित होने पर भगवान पीछे से आकर यशोदा के कमर से लिपट जाते हैं। प्रभु के वैभव का स्मरण कर मां आनंदित होती हैं। शंख चक्र गदा धनुष एवं खड्ग धारण करने वाले हाथ, चंदन के उपहार में कुब्जा की रीढ़ सीधी करने वाले हाथ, अर्जुन के रथ हांकने वाले हाथ, माबली के गुरू शुक्राचार्य के आंख को कुश से वेधने वाले हाथ, माबली के पुत्र नमुची को हवा में उछालने वाले हाथ, शिव के कापालिक भिक्षा पात्र को भरने वाले हाथ (पासुर **105**), तथा चुराये गये वेद को उद्धार करने वाले हाथ हमसे लिपटे हैं।

पहला शतक का दसवां दशक **(1 ः 10 या पासुर 108 से 117 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। ऊपर के नौंवे दशक में यशोदा खड़ी हैं परंतु अब बैठ गयी हैं तथा प्रभु को अपनी पीठ की ओर से आकर पीछे से लिपटने का आनंद लेती हैं। दो गेंद के ऊपर फूल की तरह टिके मूत्रांग से प्रभु स्राव करते पीछे से लिपटते हैं। प्रभु की गाथा गाते हुए कहती हैं ः नन्दक खड्ग धारण करने वाले प्रभु अर्जुन के आश्रय हैं एवं आपने युद्धक्षेत्र में रथ चलाकर विजयश्री दिलवायी। आप वामन रूप में छाता धारण कर यज्ञशाला पहुंचे। ऊखल को उलटकर उसके ऊपर चढ़कर आप मक्खन चुराते हैं। बालू के टीले पर बांसुरी वादन के साथ आप नृत्य करते हैं। सत्यभामा को इन्द्र के बाग से कल्प वृक्ष लाकर आपने ही दिया।

दूसरे शतक का पहला दशक **(2 ः 01 या पासुर 118 से 127 तक)** ः इसमें **10** पासुर

हैं।भगवान कृष्ण अपना मुंह ढककर गोपियों को डराते हुए कौतुक करते हैं। अनेकों दृष्टांत देकर गोपियां प्रभु का यशगान करती हैं तथा कौतुक से मनोरंजन करती है। दस गांव भी नहीं देने वाले कौरवों के यहां दूत बनकर गये।आपसे युद्ध में भीष्म थर्रा गये।गर्मपानी के कुंड में कूदकर कालिय के फनों पर नृत्य करते हुए बांसुरी बजाते रहे। मथुरा में कंश के विनाशक प्रभु ने हमारे रेशमी वस्त्र चुरा लिये। हमारे घड़ों को मक्खन दही से खालीकर दिया तथा यशोदा से मार खाये। कुनी के कारण राज पाट भरत को देकर जंगल चले गये। गजेन्द्र को आपदा मुक्त करने वाले आप प्रभु हैं।

दूसरे शतक का दूसरा दशक **(2 ः 02 या पासुर 128 से 138 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। यशोदा भगवान को दूध पीने के लिये जगाती हैं और साथ में इनके करतूतों का उलाहना देती हैं।आपका पेट पिचका है आपने रात में भी बिनास्तन पान के सो गये। जब से आप पधारे हैं दही मक्खन घी का पता नहीं चलता कहां गायब हो जाता है। अन्य लोग भी यही शिकायत करते हैं। नन्द जी तथा मैं स्वयं आप में कोई सुधार नहीं ला सकी। कंश नाराज है और आपके पीछे लगा है। आपको बाहर जाने से कितना मना करती हूं।आपकी छवि से सभी दांतो तले उंगली दबाकर यही कहते हैं कि आप मां बाप की अमित तपस्या के फल होंगे।धूल में नाचने मत जाइये। आप स्वयं पद्मनाभ हैं।

ºº

दिव्यदेश **9**। श्रीविल्लीपुत्तुर

1।स्थान ः मदुरै से **75** कि मी पर अवस्थित यह दिव्यदेश श्रीविष्णुचित्त स्वामी एवं आंडाल यानी गोदा देवी का अवतार स्थल है। रेल तथा सड़क से यह स्थान सुगमता से जुड़ा हुआ है।

2।विग्रह स्वरूप ः एक बड़े परिसर में अलग अलग कई परिसर हैं तथा बड़े परिसर के उत्तर पूर्व कोण पर बटपत्रशायी भगवान का मंदिर है। इसके बाद उत्तर पश्चिम कोण में स्वतंत्र परिसर में रंगमन्नार मंदिर है जो विष्णुचित्त स्वामी का मूल निवास हुआ करता था। दोनों मंदिर के बीच में नंदवनम नाम का तुलसी कानन है जहां आंडाल एक नवजात शिशु के रूप में विष्णुचित्त स्वामी को मिली थी। नंदवनम के बाद चकत आलवार की वृहत सन्निधि है। इसे सटे एक स्वतंत्र परिसर में यहां के दो भुजावाले बटपत्रशायी भगवान शेषशय्या पर शयनावस्था में हैं। भटपत्रशायी भगवान का दायां हाथ सिर के तरफ मुड़कर सीधा फैला हुआ है तलहथी शय्यासन से नीचे लटकने की स्थिति में है। बायां हाथ केहुनी तक पर्यंक पर पड़ा हुआ है तथा केहुनी से तलहथी तक

ऊर्ध्व दिशा में खड़ा है। तलहथी, कनिष्ठा, तथा अनामिका उंगली भगवान की तरफ खुली हैं एवं अन्य उंगलियां मुड़ी हुई हैं। नाभिकमल पर ब्रह्मा विराज रहे हैं। दायें चरणारविंद के तरफ श्रीदेवी एवं बायें के तरफ भूदेवी बैठी सेवा रत हैं। श्रीदेवी का विग्रह भू देवी के विग्रह से थोड़ा बड़ा है। भगवान का सिर दक्षिण दिशा में तथा चरणारविंद उत्तर दिशा में है तथा भगवान पूर्व की ओर भक्तों को खुली आंखों से देख रहे हैं। उत्तर की दीवार पर शिव की उपस्थिति दिखती है। दक्षिण में भगवान के सिर के पास गरूड़ एवं विष्वकसेन 'सेनै मुदलियर' खड़े हैं। विल्ली एवं कन्दन भी गर्भगृह में उपस्थित हैं। सूर्य चंद्र तथा वरूण भी उपस्थित हैं। मार्कण्डेय एवं भृगु मुनि बैठे हुए हैं। बटपत्रशायी भगवान की उत्सव मूर्ति खड़ी है तथा चतुर्भुज हैं एवं वरदराज भगवान के स्वरूप में हैं एवं दोनों पार्श्व में श्रीदेवी एवं भूदेवी विराजती हैं। भगवान का गर्भगृह प्रथम खंड पर है एवं आपके नीचे भू खंड में लक्ष्मी नृसिंह की सन्निधि है। बटपत्रशायी भगवान के परिसर में गोपुर के तरफ से प्रवेश के बाद ही दायें तरफ पेरिया आलवार की सन्निधि है तथा बायीं ओर नम्मालवार एवं रामानुज स्वामी की अलग अलग सन्निधियां हैं। इसके बाद ही बटपत्रशायी भगवान की सन्निधि के लिये प्रवेश होता है।

बटपत्रशायी मंदिर के समीप वाले क्षेत्र में ही आंडाल का स्वतंत्र परिसर में विशाल मंदिर है जो रंगमन्नार मंदिर कहा जाता है। यहां आंडाल, रंगनाथ भगवान एवं गरूड़जी साथ साथ गर्भगृह में खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख विराजमान हैं। मूलावर की तरह ही तीनों उत्सवमूर्ति खड़े मुद्रा में हैं। तीनों विग्रह दो भुजा वाले हैं। रंगनाथ भगवान बीच में हैं तथा आन्डाल बायीं तरफ खड़ी हैं एवं गरूड़ जी दायें तरफ खड़े हैं। भगवान के दायें हाथ में कमर की ऊंचाई तक राजदंड है तथा बायें हाथ में कंधे की ऊंचाई तक एक छड़ी है जो परिणय परिधान का एक अंग माना जाता है। अमावस्या एवं एकादशी को भगवान धोती धारण करते हैं और अन्य दिन परिणय परिधान का प्रतीक जोड़ा जामा में रहते हैं। आन्डाल के दायें हाथ में सुग्गा विराज रहा है तथा बायां हाथ सीधा लटक रहा है। गरूड़ जी अंजलिबद्ध मुद्रा में हैं। रंगमन्नार सन्निधि सीढ़ियों से चढ़ कर पहुंचा जाता है। सीढ़ी चढ़ने के पहले ही बायें हाथ में नारायण के बायें जांध पर बैठीं लक्ष्मी जी के विग्रह का दर्शन होता है जो विष्णुचित्त स्वामी के आराध्य देव थे। सीढ़ीयां चढ़ने के बाद रंगमन्नार सन्निधि के गर्भगृह के पहले विष्णुचित्त स्वामी का कुँआ है जिसमें वर्तमान में जल नहीं है और इसी कुँए में आन्डाल माला धारण कर माला का सौंदर्य निहारती थीं। यह कुँआ काच के ढ़क्कन से ढ़का हुआ है। आन्डाल के उत्सव विग्रह को शुडिक्कोडुत नाच्चियार कहते हैं तथा मूलविग्रह आन्डाल या गोदै नाच्चियार कही जाती

हैं।

यहां का विमान समसन तथा सौम्य विमान कहा जाता है। पुष्करणी को तिरूमुक्कुड़म कहते हैं।

3। महिमा ः कहते हैं दो ऋषि प्रारब्धवश विल्ली एवं कन्दन व्याधा बनकर जन्म लिये। दोनों एक दिन एक बाघ का पीछा कर रहे थे। कन्दन विल्ली से विछुड़ गया तथा बाघ से मारा गया। विल्ली ने बहुत खोजा परंतु कन्दन का पता नहीं चला। थककर वह पेड़ के नीचे सो गया। भगवान ने स्वप्न में उसे कन्दन का पता बता दिया तथा वहां भगवान की पूजा करने के लिये मन्दिर बनाने का निदेश दिया। विल्ली ने जहां मन्दिर का निर्माण कर भगवान की स्थापना की वह श्रीविल्लीपुत्तुर के नाम से जाना गया।

बाद के काल में श्रीविल्लीपुत्तुर में विष्णुचित्त स्वामी का भगवान के गरूड़ वाहन के अंश से प्रादुर्भाव हुआ तथा भू देवी आन्डाल बनकर तुलसी कानन में विष्णुचित्तस्वामी को एक नवजात शिशु के रूप में मिली। क्रमशः भगवान की सेवा में आंडाल पिता की सहायता करने लगी। एक दिन भगवान के लिये माला गूथ कर उसे पहन कर परख रही थी कि इससे भगवान का सौंदर्य कितना बढ़ेगा। पिता ने देख लिया एवं दुःखी मन से उस दिन भगवान को कोई माला अपिर्त नहीं की। भगवान ने स्वप्न में आळवार संत को बताया कि आंडाल द्वारा धारण किया हुआ माला ही हमें अर्पित की जाय। आळवार संत ने वैसा ही करना शुरू किया। उस समय से आंडाल कोदै या गोदै कहे जाने लगी। आंडाल के इच्छानुसार उसका व्याह रंगनाथ भगवान से हुआ। गर्भगृह में प्रवेश करते ही आंडाल भगवान में तिरोहिते हो गयी। **30** पासुरों की आंडाल की रचना 'तिरूप्पावै' अतिपावन प्रबंध है एवं नित्य इसका पाठ भगवदानुसंधान में किया जाता है। तमिल मार्गळि माह यानी धनुर्मास में इसे नित्य प्रातः एक माह तक विशेष रूप से श्रीवैष्णवों मंदिरों में समवेत रूप से नित्यानुसंधान में प्रस्तुत किया जाता है।

आन्डाल जिस सरोवर में धनुर्मास के स्नान के लिये जाती थीं वह मंदिर परिसर से पश्चिम उत्तर की तरफ लगभग **2** कि मी पर अवस्थित है। सरोवर से आधे कि मी पश्चिम में कुरेश स्वामी का प्रसिद्ध उद्यान है जहां रहकर उन्होंने अपने जीवन काल के कुछ वर्ष व्यतीत किये थे। मानवला मा मुनि तथा वेदान्त देशिक स्वामी की स्वतंत्र सन्निधि रंगमन्नार मंदिर के पहले ही अवस्थित है।

गोदम्मा यानी आन्डाल ने अळगर पेरूमाल यानि सुन्दरबाहु भगवान को एक सौ घड़े पायसम एवं मक्खन से अर्चना करने की मनौती रखी थी जो पूरा नहीं हो सका था और बाद में रामानुज स्वामी ने **100** घड़े पायसम एवं नवनीत का भोग लगा कर पूरा

किया। तत्पश्चात् ही वे श्रीविल्लीपुत्तुर आन्डाल के दर्शन के लिए पहुंचे। कहते हैं रामानुज स्वामी का सुन्दरबाहु भगवान को आन्डाल की भूली बात को पूरा करने से आन्डाल इतनी प्रसन्न हुई कि वे वरामदे तक आगे बढ़कर रामानुज स्वामी को अपना "अग्रज भाई" मानते हुए स्वागत के लिए आगयी। आज भी श्रीविल्लीपुत्तुर में आन्डाल की उत्सवमूर्त्ति वहीं वरामदे में रखी जाती हैं।

श्रीविल्लीपुत्तुर का राजगोपुर **12** मंजिल का **192** फीट ऊंचा है। इसे तमिलनाडु राज्य का प्रतीक चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया है। कवि चकवर्ती कंबन ने यहां के गोपुरम की महत्ता एवं सौंदये का बखान करते हुए मुग्धकारी कविता रची है।

आदिमास यानी आषाढ़ के कर्क महीने में पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में रथ यात्रा निकलती है। यह आन्डाल का अवतार उत्सव है। यहां उत्सव में आन्डाल की सवारी रंगनाथ भगवान की सवारी से आगे आगे चलती है। फाल्गुन मास यानी मीन माह के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र को आन्डाल का परिणय **10** दिनों के लिये बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है। धनुर्मास का उत्सव श्रीरंगम की तरह 'अरैयर सेवा' से संपन्न किया जाता है। भगवान के समक्ष नाथमुनि के बंशज 'अरैयर सेवा' दिव्यप्रबंधम की प्रस्तुति गान एवं अभिनय के साथ करते हैं। अध्ययन उत्सव के 'पगल पत्तु' वाली अवधि में आन्डाल एवं रंगनाथ भगवान की सवारी निकलती है जिसका सम्मान विष्णुचित्त स्वामी के बंशज 'पिरांता वित्तु सीयर' अर्पित करते हुए करते हैं। धनुर्मास का अंतिम आठ दिन गोदा जी की सवारी तिरूमुक्कुड़म यानी सरोवर को जाती है। जहां अपराह्न में गोदा जी को तेल लगाकर स्नान कराया जाता है। रात्रि तक सबारी सन्निधि में वापस आ जाती है।

4 दिव्यप्रबंधम संदर्भ ःपेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **133** । प्रायः प्रत्येक दशक की फलश्रुति में पुदुवै नगर यानी श्रीविल्लीपुत्तुर का उल्लेख मिलता है। आंडाल तिरूप्पावै **503** तथा नाच्चियार तिरूमोळी **513 523 533 549 555 566 576 586 606 626 636** ।

ःः

दूसरे शतक का तीसरा दशक **(2 ः 03** या पासुर **139** से **151** तक) ः इसमें **13** पासुर हैं। यहां भगवान के कान छेदने के संस्कार का चित्रण है। शुरू के बारह पासुरों में केशव से दामोदर पर्यन्त बारह नामों से कृष्ण को बुलाकर अपना काम करती है। तेरहवें पद में प्रभु अच्युत नाम से संबोधित किये जाते हैं। णम्माळवार के तिरूवायमोळी में **(2 ः 07)** केशव से दामोदर पर्यन्त बारह नामों का बड़ा ही सुन्दर यशोगान है। भगवान की अर्चना में इन बारह नामों का अपना बड़ा ही महत्व है। मंगलमय सामग्री पान सुपारी आदि

एकत्रित कर यशोदा कृष्ण को कान छेदने की सूचना देती हैं तथा यह आश्वासन देती हैं बिना कष्ट दिये कान छेद कर धागा पिरोऊंगी। सुन्दर मकराकृत कर्णफूल दिखाकर पास बुलाती हैं तथा अन्य प्रलोभन भी देती हैं। बताती हैं कि आपके साथी के कानों में सुन्दर कर्णफूल लटक रहे हैं आप भी उसी तरह से सुशोभित हो जाइये। पका कटहल का मधुर फल तथा स्तन का दूध पिलाने का लालच दिखाती हैं। बड़ा अप्पम यानी पूआ का प्रलोभन देती हैं। आपने तूफान से गायों की रक्षा पर्वत को ऊपर उठाकर किया। सीता के लिये धनुषभंग करने वाले तथा पृथ्वी को मापने वाले आप ही हैं। यशोदा कान छेदने में सफल हो जाती है। परंतु कष्ट से आहत हो कृष्ण कर्णफूलों को फेंकते हुए यह कहते हैं कि हमें स्तन का दूध नहीं चाहिए और भाग चलते हैं। यशोदा मनाकर छेद में धागा पिरो देना चाहती है। इस तरह से सफल होने पर जामुन फल का लालच दिखा कर्णफूल भी धारण करा देती हैं।

दूसरे शतक का चौथा दशक **(2 ः 04 या पासुर 152 से 161 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। भगवान कृष्ण को स्नान कराने की तैयारी है। मुख पर अवशिष्ट दही एवं धूल भरे शरीर से गंध आ रही है। मां यशोदा रात को इस तरह से सोने से मना कर देती हैं एवं स्नान कराने की तैयारी करती हैं। यह भी बताती हैं कि आज आपका जन्म नक्षत्र श्रवण का दिन है। कुछेक शरारती कार्यो के बारे में भी चेतावनी देती है कि आपने आज बछड़ो के कान में कीड़ा डालकर उन्हें नाहक दौड़ाते रखा। तेल, फली का चूर्ण, गर्म पानी, हल्दी आदि एकत्रित करती हैं। स्नानोपरांत सज्जा के लिये चंदन लेप काजल भी तैयार करती हैं। खाने के लिये हलवा देने को बताकर लालच देती हैं। पुनः शरारत की उलाहना देती हैं जिसमें तेल का घड़ा उलटना, बच्चों को चुट्टी काटकर सोये से जगाना, उनकी आंख की पलकों को उलट देना आदि। फिर फल का लालच देकर पास बुलाती हैं। मानसिक दबाव बनाने के लिये बताती हैं कि आपके जन्म के बाद दही मक्खन देखना कठिन हो गया है। आपको सब बातों में इतनी स्वतंत्रता दे रखी है। आज आपने बछड़े की पूंछ में ताड़ का पत्ता बांधकर उसे दौड़ाकर मनोरंजन का पात्र बनाया। सांप को पूंछ से पकड़कर घुमाया। एक बछड़े को ताड़ के वृक्ष पर पटक कर सारे फल गिरा दिया। गौशाला की धूल से आच्छादित आपका मुखमंडल तो मनोरम दिखता है परंतु अन्य लोग खिल्ली उड़ायेंगें तथा आपकी चहेती नप्पिनाय यानी नीला देवी भी हंसेगी।

दूसरे शतक का पांचवां दशक **(2 ः 05 या पासुर 162 से 171 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। स्नान के बाद केश संवारने के लिये कौआ को आमंत्रित किया जाता है। भगवान

को तिरूप्पेर (**2**।**5**।**1** या पासुर **162**) दिव्य देश का प्रभु बताते हुए काग को कंघा करने के लिये बुलाया जाता है। यशोदा प्रभु की विभिन्न गाथाओं का स्मरण कराती हैं जिसमें दुष्ट गाड़ी का तोड़ना, पूतना का स्तन पान करना, मरूदु वृक्षों का नाश करना, बकासुरा नरकासुर आदि का नाश करना, तथा मक्खन चुरा कर खाना आदि सम्मिलित है। काग को यत्र तत्र मृतकों की बली के लिये दौड़ते रहने से मना करती हैं और बताती हैं कि कृष्ण का कंघा करना अतिश्रेयस्कर कार्य है। यशोदा बताती हैं कि सुन्दर वामन स्वरूप को देखकर बली की पत्नियां बड़ी प्रसन्न हुयी थीं। यशोदा कहती हैं कि ऐसे प्रभु के केश का कंघा करो जिनके हजार नाम हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **10**। तिरूप्पेर या कोइलाडी

1।स्थान ः यह तमिलनाडु में तिरीची से **24** कि मी पर तथा अन्बिल से **8** कि मी पर है।इसे अधिकतर 'कोइलाडी' के नाम से पुकारा जाता है। मन्दिर कावेरी के किनारे एक छोटी सी पहाड़ी पर अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर 'अप्पा कूडतन' या 'आदि रंगनाथ' कहे जाते हैं जो भुजंगशयनावस्था में पश्चिमाभिमुख हैं तथा एक हाथ में मधुर पुआ से भरा हुआ घड़ा लिये हुए हैं।भगवान का बायां हाथ केहुनी के ऊपर ऊर्ध्व दिशा में खड़ा है जो इन्द्र के मान मर्दन करने का प्रतीक बताया जाता है। उत्सव विग्रह को 'अळगिया मानवलन' या 'अप्पल रंगम' कहते हैं। श्रीरंगम से भी पहले आपने यहां दर्शन दिया था इसलिये 'आदि रंगनाथ' कहे जाते हैं। तायर को इन्दिरादेवी तथा उत्सव विग्रह को महालक्ष्मी कहते हैं। विमान तथा पुष्करणी इन्द्र के नाम से जाना जाता है।

3।महिमा ः आपने मार्कण्डेय मुनि तथा उपरिसर्वासु राजा को यहां दर्शन दिया था। राजा भगवान के भक्त थे तथा नित्य ब्राहणों एवं भूखे को अच्छा भोजन कराते थे। एक बार भगवान बूढ़े ब्राहण के रूप में आकर अकेले सारा भोजन खा गये तथा और भोजन मांगने लगे। राजा ने उन्हें विश्राम करने का आग्रह किया एवं बड़े घड़े में स्वादिष्ट पुआ बनाकर लाया। भगवान ने घड़े में हाथ डालकर पूआ देखा और बहुत प्रसन्न हुए। कहते हैं मार्कण्डेय मुनि की आयु प्रारंभ में मात्र सोलह वर्ष की थी। अपने पिता के कहने से इस क्षेत्र में आकर आपने शिव की आराधना की जिनसे इन्हें 'भागवत कवच' मिला जिसके अनुष्ठान से भगवान का दर्शन उसी समय हुआ जब वे बूढ़े ब्राहण के रूप में राजा के यहां घड़े का पुआ देख रहे थे। शिवजी के बताये तरीके से मुनि ने भगवान को एक सौ बार साष्टांग किया। भगवान ने प्रसन्न होकर चिरंजीवी होने का

वरदान दिया। 'भागवत कवच' में केशवादि नाम उसी कम में है जैसा कि नम्माळवार ने तिरूवायमोळि के **2**।**07** में दिया है। हालांकि इसमें **12** से अधिक नाम हैं और दामोदर के बाद के नामों का कम है संकषर्ण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरूद्ध, पुरूषोत्तम, नरसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, हरि, एवं कृष्ण।

तिरूवायमोळी के **10**।**08**।**11** में तेनतिरूप्पेर की प्रशस्ति है। कहते हैं तिरूवायमोळी का यह अंतिम दिव्यदेश है जिसका उल्लेख नम्माळवार ने किया। अतः यह स्पष्ट है कि नम्माळवार को मोक्ष तिरूप्पेर यानी कोईलाडी में मिला।

<u>भागवत कवचम का सारांश</u>। **1** केशव सिर की रक्षा करें। **2** नारायण केश की रक्षा करें। **3** माधव ललाट की रक्षा करें। **4** गोविंद आंखों की रक्षा करें। **5 + 6** विष्णु एवं मधुसूदन नाक एवं कानों की रक्षा करें। **7** त्रिविकम गर्दन की रक्षा करें। **8 + 9** वामन एवं श्रीधर दोनों होंठ की रक्षा करें। **10** हृषीकेश दांत की रक्षा करें। **11** पद्मनाभ जीभ की रक्षा करें। **12** दामोदर दोनों कंधों की रक्षा करें। **13** संकर्षण छाती की रक्षा करें। **14** वासुदेव पेट की रक्षा करें। **15** प्रद्युम्न पीठ की रक्षा करें। **16** अनिरूद्ध दोनों पार्श्वों की रक्षा करें। **17** पुरूषोत्तम कमर की रक्षा करें। **18** नरसिंह जांघ की रक्षा करें। **19** अच्युत दोनों घुटनों की रक्षा करें। **20** जनार्दन घुटठी की रक्षा करें। **21** उपेन्द्र पैर की रक्षा करें। **22** हरि अंगूठे की रक्षा करें। **23** कृष्ण पूरे शरीर की रक्षा करें।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **162 173 205**। भक्तिसार स्वामी नान्मूगनतिरूवन्दादि **2417**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **991 1399 1428** से **1437** तक **1606 1851 1857 2048 2050 2059 2060 2070** तथा शिरय तिरूमडल **2673** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3968** से **3978** तक।

ºº

दूसरे शतक का छठा दशक (**2** ः **06** या पासुर **172** से **181** तक) ः इसमें **10** पासुर हैं। मां यशोदा कौआ से भगवान को गाय चराने के लिये छड़ी लाने के लिये कहती हैं। कृष्ण नजर से बचने के लिये गले में ताड़ के पत्ता का सुरक्षायंत्र पहने हैं। यशोदा कहती हैं कि कोट्टियूर, तिरूप्पेर, एवं कुडन्दै (**2**।**6**।**2** या पासुर **173**) वाले प्रभु ही हमारे कृष्ण हैं। प्रभु की प्रशस्ति गाते हुए बताती हैं कि आप कंस तथा केशिन का नाश करने वाले हैं। युद्ध में अर्जुन का रथ हांकने वाले हैं। आप बटपत्रशायी तथा शेषशायी हैं। सीता के कारण चित्रकूट में कौआ को एक आंख की हानि सहनी पड़ी थी। यशोदा चेतावनी देती हैं कि ऐसा न हो कि दूसरी आंख भी गंवानी पड़े। शागर पर सेतु बांध कर आपने लंका में रावण का नाश किया तथा राज्य विभीषण को दिया। आप वेंकटम पर्वत श्रेणी (**2**।**6**।**9** या पासुर **180**) के नाथ हैं।

°°°

दिव्य देश **11**। कुडन्दै

1।स्थानः **108** दिव्य देश में से कुडन्दै या तिरूकुडन्दै अकेला स्थान है जहां सारंगपानी का मंदिर है और यह कुंभकोनम स्टेशन से **3** कि मी की दूरी पर अवस्थित है। कुडन्दै से **15** कि मी की परिधि में **9** और दिव्य देश अवस्थित हैं।

2।विग्रह स्वरूप ः मूल विग्रह उद्योग या उत्थान शयनावस्था में हैं यानि कि शरीर का ऊपर का भाग "भगवान अब उठना ही चाहते हैं" का संकेत करता है । कहते हैं कि परकाल स्वामी तिरूमंगै आलवार ने भगवान से प्रश्न किया "दंडकारण्य में घूमने के कारण आपके पैर थक गये हैं क्या ? कृपया उठकर उत्तर दीजिए। भक्तप्रवण भगवान आलवार को प्रसन्न करने के लिए उठने ही वाले थे और इसी मुद्रा में भगवान यहां दर्शन देते हैं इसीलिए उत्थान या उद्योग शयनावस्था कहा जाता है। पद **173** एवं **177** यहां के मूल विग्रह की स्तुति है। मूल विग्रह को अर्वामुदम यानी अमृत तथा मेतु श्रीनिवास कहा जाता है।उत्सव विग्रह सारंगपानी कहे जाते हैं। तायर को कोमलवल्ली कहते हैं। विमान को वैदिक विमान कहते हैं तथा पुष्करणी हेमपुष्करणी या पोतरामरै कुळम नाम से जाना जाता है। गर्भगृह में श्रीदेवी एवं भूदेवी सेवा करती हैं तथा सप्तऋषि देवतागन एवं पवित्र तीर्थ प्रार्थना करते हैं। पाताल श्रीनिवास एवं भगवान राम की स्वतंत्र सन्निधि है। गर्भगृह में प्रवेश के लिये दक्षिणायन एवं उत्तरायन के लिये पृथक प्रवेश द्वार है।

3।महिमाः हिमालय पर रखा हुआ अमृत कलश प्रलय जल में बहते हुआ आया और कुंभकोनम में आकर स्थिर हो गया। शिव जी के बाण से अमृत छिलक कर यहां पोतरामरै कुळम यानी सरोवर में गिरा। एक कथा के अनुसार नारद जी ने लक्ष्मी से बता दिया कि भगवान श्रीनिवास ने पद्मावती के साथ विवाह किया है। लक्ष्मी नाराज हो गयीं। भगवान पाताल में छिप गये और पाताल श्रीनिवास कहे गये।भगवान को प्राप्त करने के लिये लक्ष्मी इस स्थान पर पोतरामरै सरोवर में कमल पर प्रकट हुई तथा हेम ऋषि यानी भृगु ऋषि ने इनका पालन पोषण किया। भगवान रथ पर आये और लक्ष्मी के साथ व्याह रचाकर यहीं रह गये।

इसी स्थान पर श्री नाथमुनि स्वामी सर्वप्रथम एक महिला से दिव्य प्रवंधम के तिरूवायमोळी के 'आरावमुदे ... **5**।**8**' पद का गान सुनकर मुग्ध हो गये थे। उश गीत के अंत में यह आता था कि उस गीत के दस पद **1000** पद वालों गीतों की माला का एक भाग है। उक्त महिला से सभी पदों की उपलब्धि की जिज्ञासा करने पर श्रीनाथमुनि

को निराश होना पड़ा था। परन्तु उन्होंने प्रयास छोड़ा नहीं और आलवार तिरूनगरी में मधुराकवि आळवार के **11** पासुर् की उपलब्धि हुई। इसी **11** पासुर के **12000** बार गायन के पश्चात नम्माळवार प्रसन्न हुए और अपनी तिरूवायमोळी के अतिरिक्त विभिन्न समय में विरचित भिन्न भिन्न आलवारों के सभी पदों को श्रीनाथ मुनि को चमत्कारिक रहस्योद्घाटन से प्राप्त करा दिया। इसतरह से कुल **4000** पद एकत्रित हुए थे जिसे "नालयिरा प्रबंधम" की संज्ञा से संबोधित किया गया और दिव्य प्रबंधम् कहा जाने लगा है।

अतः कुडन्दै के भगवान अर्वामुदम के अनुग्रह द्वारा ही श्रीनाथमुनि को दिव्य प्रवंधम् मिला। इसी कृतज्ञतावश श्रीनाथमुनि ने कुडन्दै में मारगळि माह के प्रथम दिन को "अध्ययन उत्सवम्" के उपलक्ष में दिव्य प्रवंधम् के विशेष पाठ की परंपरा की स्थापना की जो आजतक कायम है। कुडन्दै के सारंगपानी मंदिर में मारगळि माह के **19** वें दिन एक अनोखी परंपरा है कि पेरूमाल को लक्ष्मी तायर के श्रृंगार में तथा लक्ष्मी तायर को पेरूमाल के श्रृंगार में अलंकृत किया जाता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार पेरियाळवार तिरूमोळी **173 176 177 183** आंडाल नाच्चियार तिरूमोळी **628**। भक्तिसार स्वामी तिरूचन्दविरूत्तम **807** से **812** तक एवं नान्मूगन तिरूवन्दादि **2417**। परकाल स्वामी पेरिय तिरूमोळी **949 954 991 1078 1202 1205 1394 1526 1538 1570 1606 1732 1759 1853 1949 1975 2010 2037 2045 2068 2070 2080** तथा तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै **2672** एवं शिरय तिरूमडल **2673** और पेरिय तिरूमडल **2674**। भूत आळवार इरण्डाम तिरूवन्दादि **2251 2278**। पेय आळवार मून्राम तिरूवन्दादि **2311 2343**। नम्माळवार तिरूवायमोळी **3418** से **3429** तक **3685 3687 3985**।

ஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃஃ

दूसरे शतक का सातवां दशक **(2 ः 07 या पासुर 182 से 191 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। स्नान के बाद चंदनादि का लेप कर काग को मनोरंजन के लिये बुलाकर माता यशोदा भगवान का फूल से श्रृंगार करती हैं। भगवान के मक्खन एवं दही चुराने तथा जंगल में गऊओं के पीछे दौड़ने आदि करतूतों का उलाहना देती हैं। बताती हैं कि आपको दंडित करते देख दूसरे बहुत प्रसन्न होते हैं। गोपियों की राह रोक छेड़खानी से आप बाज आइये। आपही श्रीरंगम तथा वेंकटम के नाथ हैं। बकासुर का चोंच चीरना, कुवलयापीड़ हाथी का अंत करना, सूर्पनखा की नाक एवं रावण के सिर काटने वाले आप ही हैं। अपनी ओछी बुद्धि के कारण हमने आपको दंडित कर दिया। नप्पिनाय के

लिये वृषभों पर नियंत्रण, कंस के मल्लयोद्धाओं का नाश, निर्भयता पूर्वक कंस पर जानलेवा छलांग लगाने वाले, हिरण्यकशिपु की छाती चीरने वाले, कौतुक में मक्खन के खाली घड़े को उछालकर उसे फिर कुशलता से पकड़ने वाले आप कुडन्दै दिव्यदेश में शयनावस्था में हैं।मलिकन असुर को चक्र चलाना सीखाकर उसके सिर काटने वाले श्रीरंगम दिव्यदेश में आप शयनावस्था में हैं।नित्यसूरी से घिरे वैकुंठ में विराजने वाले समस्त जगत को उदरस्थ कर बटपत्र पर शिशुस्वरूप में सोते हैं। आइये आपको विभिन्न सुगंधित फूलों से सजा दूँ।

दिव्यदेश **12**। वैकुंठ

1।स्थान ः यह दिव्यदेश सामान्य चक्षु से दृश्यमान नहीं है। इसे परमपद तथा त्रिपादविभूति या नित्यविभूति कहते हैं। दृश्यमान जगत के तीनगुना क्षेत्र में विस्तृत यह लोक जीव का चरमलक्ष्य है।

2।विग्रह स्वरूप ः नित्यसूरी एवं दिव्यपार्षदों के साथ वैकुंठनाथ चतुर्भुज रूप में बैठे हुए अवस्था में पार्श्ववर्ती श्रीदेवी भूदेवी एवं नीला देवी से सेवित दक्षिणमुखी होकर विराजते हैं। विरजा नदी यहां का तीर्थ है तथ पुष्करणी को इरमदा कहते हैं।प्रभु का विमान अनंतनाग कहा जाता है।

3।महिमा ः इस दिव्यदेश का विवरण (i) नम्माळवार के तिरूवायमोळी का **10**।**09** यानी 'शुळिवशुम्बु', (ii) रामानुज स्वामी के 'वैकुंठ गद्यम', (iii) पिल्लैलोकाचार्य की 'अर्चिरादिगति', (iv) कुरेश स्वामी के 'वैकुंठ स्तवन', तथा (v) श्रीमदभागवत के स्कंध **3**।**15** में मिलता है। नम्माळवार ने तिरूवायमोळी **10**।**9**।**9** में कहा है कि परमपद हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। यहां पहुंचने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता। श्रीभाष्य में रामानुज स्वामी ने इसे प्राप्त करने के लिये दो मार्ग बताये हैं ः पहला, विना शर्त्त के शरणागति यानी प्रपत्ति, तथा दूसरा, ब्रह्मविद्या साधना।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ःपेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **190 277 399 472**। आंडाल, नाच्चियार तिरूमोळी **482 523**। भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **796** एवं नान्मूगन तिरूवन्दादि **2400 2446 2454 2460 2476**।मुनिवाहन स्वामी, अमलनादि पिरान **927**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **2042**। पेयैआळवार, मुदल तिरूवन्दादि **2113 2149 2158**।भूतआळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2184 2185 2192**।पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि **2313 2342**।नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2491**, तथा तिरूवायमोळी **2946 3064 3091 3224 3264 3654**

3655 3689 3809 3851 3964, 3979 से **3989** तक।

°°

दूसरे शतक का आठवां दशक **(2 ः 08** या पासुर **192** से **201** तक) ः इसमें **10** पासुर हैं।काग से छड़ी मंगवाने के बाद भगवान फूल चंदनादि से सज धज कर गाय चराने जाते हैं। सायंकाल की गोधूली वेला में वन से लौटकर चौराहे पर खड़े हैं। मां देखकर डर जाती हैं कि कहीं लाड़ले को कोई नजर न लगा दे। तुरंत पास जाकर बताती हैं कि हमारे हाथ की छड़ी आपके लिये नहीं है। चलिये घर चलिये। नजर से बचाने का उपाय दीपक आदि न्योछावर कर करने लगती हैं तथा साथ में उलाहना भी देती हैं एवं प्रशस्ति भी गाती हैं।आपकी अर्चना हेतु इन्द, ब्रह्मा, एवं शिव ने पुष्प भेजे हैं तथा वे अदृश्य होकर यहां खड़े हैं।आपने बालू से खेलती बालाओं का घरौंदा नष्ट कर दिया और जब मैंने डांट पिलायी तो आपने पायस खाना छोड़ दिया। बच्चों की शिकायत है कि उनकी आंखों में बालू झोकने के अलावे आप उनकी पिटाई भी करते हैं। आप वेल्लारै दिव्यदेश के नाथ हैं। यहां दुष्ट बालकों की दुष्टता से आप भी बदनाम होते हैं। कंस ने एक काले वदन तथा लाल केश वाली राक्षसी को आपके पीछे लगा दिया है। जब आपने अर्जुन वृक्ष तथा पूतना का नाश किया तो मैं आपको समझ नहीं सकी थी। शिव की अदृश्य उपस्थिति से लाभ लेते हुए कृष्ण को डराकर यशोदा कहती हैं कि देखिये हाथ में नरखोपड़ी लिये खंभे के पीछे कोई खड़ा है। शीघ्र आइये, आपको नजर से सुरक्षित रखने का मुखमंडल पर दीपक से न्योछावर कर उचित उपचार करूँ।

दूसरे शतक का नौवां दशक **(2 ः 09** या पासुर **202** से **212** तक) ः इसमें **11** पासुर हैं।पड़ोस की नारियां यशोदा से कृष्ण बलराम की शरारत की शिकायत करती हैं कि जैसे इमली क्षण भर में घाव को खा जाती है उसीतरह ये दोनों बालक भरे हुए घड़े का मक्खन निगल जाते हैं। यह सुनकर यशोदा जब उनके पीछे दौड़ती हुइ घर वापस बुलाती हैं तब ये दोनों भाई भागते हुए यशोदा की पकड़ से बाहर निकल जाते हैं। यशोदा वामनावतार की प्रशस्ति गाकर वापस बुलाना चाहती है। नारियां पुनः कहती हैं कि घड़े का घी पीने के बाद उसे पत्थर पर जोर से फोड़ते हैं। पड़ोस में इस तरह की घटना शोभा नहीं देती। आप यशोदा इन्हें नियंत्रित करो। यशोदा बुलाती हैं कि तिरूप्पेर दिव्य देश के शयनावस्था वाले प्रभु घर आईये। भगवान यह कहते हुए घर में तेजी से घुसते हैं कि हां हमने दूध पिया है। षशोदा रास्ता रोक गोद में उठाकर पुचकारने लगती हैं। पड़ोसिन पुनः बखान करती हैं कि दूध दुहने के बाद उसे आग पर गरम करने के लिये रख कर ऊपर की मंजिल पर अधिक ईंधन लाने गयी। तबतक

नटखट शालग्राम प्रभु आये दूध पिया, बर्तन उलटकर रख दिया, और चंपत हो गये। यशोदा कृष्ण को वेंकटम के नाथ से संबोधित करते हुए कहती हैं कि पड़ोस की उलाहना मैं कैसे सहूँ। पड़ोसिन आगे बखान करती है कि कैसे भगवान का जन्म नक्षत्र श्रवण के उपवास के पूर्व **12** वें नक्षत्र के दिन उसने नैवेद्य पकाया और ये सब खा गये तथा साथ में ये भी बता गये कि इतना पकवान पर्याप्त नहीं था। इनसे पूछो कि यह कौन सा तरीका है। यशोदा भगवान को सावधान करती हैं कि प्रेमविहीनों के घर नहीं जाना चाहिये। पुनः दूसरी पड़ोसिन कहती है कि मीठे तिल का लडडू तथा कुछ नमकीन पकाकर घड़े में रखी थी। ये घर में घुसकर सब खा गये और बताते गये कि ये तो मेरा प्रिय भोज्य पदार्थ है। शीघ्र वापस लौटकर आये और छींके का मक्खन भी खा गये। अपने लाड़ले से पूछ लो। इनकी और करतूत सुनो। घर में घुसकर मेरी बेटी की चूड़ी उतरवा लिये। पीछे के दरवाजा से बाहर आये तथा उसे बाजार में बेचकर जामुन फल खरीद लिये। पूछने पर कहा "मैं कहाँ था वहाँ"।

ºº

दिव्यदेश **13**। शालग्राम

1। स्थान ः इस क्षेत्र को मुक्तिनारायण या मुक्तिनाथ या शालग्राम कहते हैं। यह स्थान नेपाल के पोखरा शहर से करीब **100** कि मी पर है। वर्तमान में कंकरीला मार्ग से जीप से भी यहाँ जा सकते हैं। सुगम विकल्प है कि पोखरा से जोमसोम **20** मिनट में हेलीकोप्टर से पहुंचें तथा वहां से पैदल **10** घंटे में, या घोड़ा से **5** घंटे में, या जीप से **2** घंटे में मुक्तिनाथ पहुंचा जा सकता है। मार्ग में पड़ने वाली नदी कृष्णा गंडकी कही जाती हैं जिसमें शालग्राम शिला विभिन्न स्वरूपों में मिलते हैं। जोमसोम से चलने पर मध्य रास्ते में काकवेनी में पितरों को पिंडदान भी किया जाता है।

2। विग्रह स्वरूप ः चतुर्भुजी मूलावर मुक्तिनाथ कहे जाते हैं जो तपस्या रत बैठे मुद्रा में दोनो पार्श्व में खड़ी श्री एवं भू देवी से सेवित हैं। आपके कपोल के पसीने से गंडकी नदी निकली हैं। रामानुज स्वामी तथा गरूड़ जी की छोटी मूर्ति भगवान के साथ ही के आसन पर पार्श्वभाग में दर्शन देती हैं। विमान को कनक विमान तथा पुष्करणी को गंडकी नदी और चक्र तीर्थ कहते हैं।

3। महिमा ः गंडकी ने घोर तपस्या करके भगवान विष्णु को प्रसन्न किया। वरदान स्वरूप भगवान ने शालग्राम के रूप में गंडकी में बास करने का वचन दिया। भगवान ही बज्रकीट कीड़ा बनकर गंडकी नदी में प्रवाहित होने वाले विभिन्न आकार एवं रंग के पत्थरों के भीतर प्रवेश करके दिव्याकृति का निर्माण करते रहते हैं। काम पूरा करके

बज्रकीट कीड़ा अपने आप पत्थर से लुप्त हो जाता है। गंडकी में मिलने वाले शालग्राम सुदर्शन चक्र से अंकित अनेकों स्वरूप में मिलते हैं। मान्यता है कि जिस घर में **12** से अधिक शालग्राम रहते हैं वह घर दिव्यदेश जैसा पवित्र हो जाता है। एक अन्य कथा बताती है कि तुलसी ही गंडकी नदी के रूप में बहती हैं तथा भगवान स्वयं शालग्राम बनकर इसमें निवास करते हैं। मुक्तिनाथ में गोमुख की **108** धारायें भगवान की सेवा में विराजमान हैं। पास के ज्वालामुखी में गर्म पानी की धारा बहती है तथा नीले एवं पीले रंग की लौ जल के ऊपर निरंतर स्वयंमेव जलते रहती है। कहते हैं दो रंग की लौ ब्रह्मा एवं शिव के प्रतीक हैं जो भगवान की सेवा के लिये यहां विराजमान हैं। निम्न तापमान तथा हिमालय की स्थिति के कारण हवा वर्फीली रहती है तथा अक्टूबर या अप्रैल मई का दर्शन **3** डिग्री सेल्सियस तापक्रम में वर्ष का सबसे सुखद एवं सुरक्षित दर्शन माना जाता है। नेपाल नरेश की धर्मपत्नी ने मुक्तिनाथ से आधे कि मी पर रानीपौआ में यात्रियों के रात्रि विश्राम के लिये सुखद आवासीय व्यवस्था कर रखी है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ःपेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **206 399**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **988** से **997** तक।

ºº

दूसरे शतक का दसवां दशक **(2 ः 10** या पासुर **213** से **222** तक**)** ः इसमें **10** पासुर हैं।गोपियां यशोदा से कृष्ण की शरारत की शिकायत करती हैं। हमलोग नदी में खेलरही थीं। ये हमलोगों पर बालू फेंकते हुए आये तथा हमलोगों की साड़ी एवं कंगन लेकर चंपत हो गये। ये कुरून्दु के पेड़ पर दिखे परंतु इन्होंने हमारी मांग की कोई परवाह नहीं की। कमल के तालाव में घुसकर चौड़े फन वाले नाग पर नृत्य किया। गोपियां प्रशस्ति गाते हुए कहती हैं कि ये धेनुकासुर को ताल वृक्ष पर पटकने वाले हैं तथा इन्द्र के विरोध में गऊओं की रक्षा के लिये पर्वत को अपनी भुजा पर उठाने वाले हैं। ग्वालिनों के दूध मक्खन चट कर उनकी बाहों में बंध जाते हैं। पूतना का प्राण हरने वाले वामन रूप में पृथ्वी का तीन पग मांगकर संपूर्ण ब्रह्मांड को मापने वाले गजेन्द्र के उद्धारक हैं तथा वराह स्वरूप में पृथ्वी का उद्धार करने वाले हैं। इन्होंने हमें लूट लिया।

तीसरे शतक का पहला दशक **(3 ः 01** या पासुर **223** से **233** तक**)** ः इसमें **11** पासुर हैं। भगवान के चमत्कारों को देखकर यशोदा डर गयी हैं। पूतना का प्राण हरण, गाड़ी का तोड़ना, वृक्ष का नाश करना, बछड़े को फल के पेड़ पर पटक मारना आदि विभिन्न घटनाओं को स्मरण कर कृष्ण से कहती है कि हमें आपको दूध पिलाने में डर लगता है। गाड़ी भरे दूध दही घी को पी जाना तथा घड़ो को उलट देना, गोपियों का वस्त्र

हरण एवं श्रृंगार से छेड़खानी जैसी शरारत का भी उलाहना देती है। आपके प्रादुर्भाव के बाद हमें अपयश ज्यादा मिला है। आप गोपियों को जबरन बाहों में समेट लेते हैं। उनके पिता जब चरवाही में, तथा माता दूध वेचने जाती हैं, तब आप गोपियों को अज्ञात स्थान पर ले जाते हैं।

तीसरे शतक का दूसरा दशक **(3 ः 02 या पासुर 234 से 243 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। भगवान को जंगल में गाय चराने के लिये भेजकर उनकी करतूतों को याद कर पछताती हैं। स्नान के बाद आप किशोरियों के बालू के घरौंदों को तोड़ते, एक घर से दूसरे घर में घूमते, धूल धूसरित गलियों में घूमते, बालाओं को अपनी मीठी बातों में उलझाते, गोपियां आपकी शिकायत करने आती, दूध घी पी जाते परंतु हमने आपको नंगे पांव बिना छाता के शिकारी वाले जंगल में गायों के पीछे भेज दिया। हाय हमने कितनी गलती की। बारह महीने गर्भ में रहने के बाद आप आये और हमने अपने स्तन के अमृत से आपको पाला।

तीसरे शतक का तीसरा दशक **(3 ः 03 या पासुर 244 से 253 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। भगवान सायंकाल गायों के साथ लौटते हैं। देखकर यशोदा बहुत प्रसन्न होती हैं। सिर की पगड़ी झुक गयी है। कान पर कुमुद फूल के गुच्छे लटक रहे हैं। साथ ही पश्चाताप भी करती है कि सुबह भोजन कराके श्रीरंगम के नाथ को क्यों जंगल भेज दिया था। धूल से भरे शरीर वाले कृष्ण का स्नान की तैयारी कर रखी है। बताती है कि भोजन तैयार है एवं पिता ने भी भोजन नहीं किया है आपकी प्रतीक्षा में हैं। आप वेंकटम के नाथ हैं और आपने पादुका छाता बांसुरी मांगा था परंतु सब छोड़ जंगल चले गये। आप पाञ्चजन्य से शत्रुओं को त्रस्त करने वाले हैं परंतु वस्त्र एवं तलवार छोड़कर आप जंगल चले गये। आपने विषैले सर्प के फन पर नृत्य किया। एक कौर में इन्द्र के लिये एकत्रित समग्र भोज्य सामग्री को चट कर गये। रोज कौन कहे एक दिन भी इतना भोजन कहां से मैं लाऊंगी। आपका जन्म नक्षत्र श्रवण के आने में मात्र अब सात दिन रह गये हैं। आज गोपियों को बुलाकर अंकुरार्पण करूगीं। आज से आप उत्सव के दिन तक सज धज कर घर रहेंगे जंगल नहीं जायेंगे।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **14** । क्षीराब्धि

1 । स्थान ः इसे तिरूपरकडल कहते हैं तथा भौतिक चक्षु से यह दृश्यमान नहीं है।

2 । विग्रह स्वरूप ः भगवान यहां योगनिद्रा में आदिशेष पर व्यूह स्वरूप में दक्षिणमुखी होकर शयनावस्था में विराजते हैं। आपको क्षीराब्धिनाथ भी कहते हैं। विमान को

अष्टांग विमान कहते हैं तथा पुष्करणी अमृत तीर्थ और परकडल है। तायर कडलमगल नाच्चियार एवं भूदेवी हैं।

3।महिमा ः भागवत स्कंध **8**।**4**।**18** में गजेन्द्रमोक्ष के कम में भगवान ने क्षीराब्धि की पूजा को सर्वश्रेयस्कर बताया है। पुराणों के अनुसार विभवातार का स्रोतस्थल क्षीराब्धि ही है।व्यूह के वासुदेव स्वरूप केशव, नारायण, तथा माधव हैं। संकर्षण स्वरूप गोविन्द, विष्णु, एवं मधुसूदन हैं। पद्युम्न स्वरूप त्रिविकम, वामन, एवं श्रीधर हैं। अनिरूद्ध स्वरूप में हृषीकेश, पद्यमनाभ, तथा दामोदर हैं। भागवत स्कंध **3**।**8** में ब्रह्मा को क्षीराब्धिनाथ के दर्शन का प्रसंग मिलता है। समुद्रमंथन से प्राप्त वस्तुओं के कम हैं ः **1**।विष हलाहल जिसे शंकर जी ने कंठ में रख लिया,।**2**। कामधेनु जो यज्ञ सामग्री को सुलभ बनाने हेतु ऋषियों की मिलीं, ।**3**।उच्चैश्रवा घोड़ा जो दैत्यपति बली को मिला,।**4**।ऐरावत हाथी जिसे इन्द्र ने ग्रहण किया,।**5**।कौस्तुभ मणि जिसे भगवान विष्णु ने प्राप्त किया। **6**। कल्पवृक्ष देवों को मिला। **7**।अप्सरा देवों को मिली। **8**। लक्ष्मी भगवान विष्णु को मिलीं। **9**।वारूणी सुन्दर स्त्री दैत्यों ने लिया।**10**।हाथ में अमृत कलश लिये धनवन्तरी।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **250 427 439 452 471**।आंडाल, तिरूप्पावै **475** नाच्चियार तिरूमोळी, **516 551**।कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी **665 680**। भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **766 768 769 774 779 780 832 843 846 861**, एवं नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2384 2417 2456 2460**।भक्ताघ्रिरेणु स्वामी, तिरूमालै **889**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **962 1003 1006 1019 1341 1347 1398 1618 1744 1828 2060 2066 2001**। पोय्गै आळवार, मुदल तिरूवन्दादि **2086 2106 2123 2180**।भूतद आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2184 2209 2235 2236 2251**।पेय आळवार या महयोगी, मून्राम तिरूवन्दादि **2292 2311 2312 2313 2317 2342**। नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2556**, तथा पेरिय तिरूवन्दादि **2618 2669 2670** एवं, तिरूवायमोळी **3059 3068 3187 3191 3678 3689 3894 3964**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

तीसरे शतक का चौथा दशक **(3 ः 04** या पासुर **254** से **263** तक**)** ः इसमें **10** पासुर हैं।भगवान सायंकाल चरवाही से लौटते हैं। गोपियां लौटने के दृश्य को देखकर प्रसन्न हो जाती हैं।भोजन भूलकर बाहर आती हैं तथा अपना हृदय कृष्ण पर न्योछावर कर

देती हैं। मेघ की तरह रंगीन छतरियों की दृश्यावली दिख रही है। भगवान सुन्दर बस्त्रों आभूषणों एवं फूलों से सुसज्जित हैं। थके लौट रहे हैं। एक हाथ किसी सखा के कंधे पर टिका है तथा दूसरा शंख धारण किये हुए है। उनका धनुष, मुकुट तथा तलवार साथी लोग लेकर कर पीछे पीछे चल रहे हैं। यशोदा गोपियों को रास्ते से अलग खड़ा होने की राय देती हैं। ऐसा न हो आप सबों को कंगन खोना पड़े। एक गोपी दूसरी से पर्वत उठाने वाले कृष्ण के सलोने छवि की बखान करती है तथा अपनी दशा का भी चित्रण करती है। मेरे उरोज अनियंत्रित हैं, वस्त्र ढ़ीले पड़ गये हैं, कंगन खिसक रहा है। तिरूमालीरूञ्शोलै के प्रभु नृत्य का प्रदर्शन करने लगते हैं। एक गोपी कपोल कल्पित भावना में कहती है कि अगर इस रास्ते आ गये तो रोककर पूछूंगी 'हमारा गेंद आपने ले लिया है' तथा अधरों का चुंबन करूंगी। गोपबालाओं की मां कहती हैं कि अपनी बेटी को दूर हट जाने को कहा है। ऐसा न हो कि कंगन एवं वस्त्र ढ़ीले पड़ जायें। एक मां ने कहा 'मेरी बेटी नहीं मानी और बांसुरी बजाते कृष्ण का रास्ता रोक खड़ी हो गयी।' हाथीदांत का उसका बाहुपाश गिर गया तथा वदन सिकुड़ गया।

तीसरे शतक का पाचवां दशक **(3 ꞉ 05 या पासुर 264 से 274 तक)** ꞉ इसमें **11** पासुर हैं। यहां गोवर्द्धन धारण का वर्णन है। इन्द्र के लिये एकत्रित भोजन भगवान चट कर गये। वर्षा से त्राण के लिये आपने पर्वत छाता की तरह उठा लिया। सात दिन तक अनवरत वर्षा हुई। गऊओं को पर्वत के नीचे शरण मिली। वराह रूप में धरनी धारण करने वाले प्रभु गोवर्द्धन धारण कर लिये। प्रभु की लंबी भुजा छाता का डंडा बना तथा पांचो उंगलियां कमानी की तरह छाते को संभाले खड़ी थी। फनधारी शेष जैसे पृथ्वी को धारण करते हैं उसी तरह पांचों उंगलियां गोवर्द्धन धारण किये थीं। गोवर्द्धन उस प्रभु का विजय छत्र बन गया था जिनकी उंगलियां विजय ध्वज की तरह फहरा रही थीं। आप अनंत नाग पर सोते हैं, कालिय नाग को भयाक्रांत कर देते हैं, तथा नागारि गरूड़ की सवारी करते हैं।

तीसरे शतक का छठा दशक **(3 ꞉ 06 या पासुर 275 से 285 तक)** ꞉ इसमें **11** पासुर हैं। यहाँ बांसुरी वादन के प्रभाव को चित्रित किया गया है। बांसुरी की तान सुन गोपियों के उरोज उठने लगे तथा वे सभी घर छोड़ कृष्ण के पास एकत्रित हो गयीं। बांसुरी वादन के समय प्रभु बायें कंधे पर शरीर का वजन देकर खड़े हो गये तथा दोनों हाथ एक साथ हो गये, भौंहे सिकुड़ गयीं, पेट ऊपर चढ़ गया, और मुंह संकुचित हो गया। आपकी बांसुरी की टेर सुन अपसरायें गाना एवं नाचना छोड़ शांत हो गयीं। तंबूरा वाले तुम्बुरू, तथा वीणा वाले नारद, अपने वाद्ययंत्र भूल गये। गंधर्व गन

लज्जित हो गये। देवगन यज्ञ का भाग भूल धरती पर आ गये। पक्षीगन घोसला छोड़ कृष्ण को घेर लिये। गायें कान स्थिर कर शिर नीचा किये शांत खड़ी हो गयीं। हिरनी घास छोड़ शांत खड़ी रही। वृक्षों ने अमृत धार एवं फूलों की झड़ी लगा दी। उनकी टहनियां उस दिशा में झुक गयीं जिस दिशा में प्रभु मुरली वादन कर रहे थे।

तीसरे शतक का सातवां दशक **(3 ः 07 या पासुर 286 से 296 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। यहां गोपियों की माताओं का विस्मित मन चित्रित किया गया है। नन्हीं उम्र की बेटी का प्रभु से अनुराग देख मातायें अचंभित हैं। टूटी फूटी भाषा बोलती है, साड़ी भी नहीं संभाल पाती, घरौंदा बनाना नहीं जानती, सभी दांत निकलने बाकी हैं, चोटी नहीं बांध पाती परंतु शेषशायी भगवान का हाथ पकड़े आ रही है। शंख चक्र गदा खड्ग एवं धनुष के चिह्नों घरौंदा से सजाती है। सदा अलौकिक नाथ का ध्यान करती है। जहां जाती है तुलसीधारी को खोजती है। 'कलछी जिसने नमक का स्वाद नहीं चखा' जैसी सीधी सादी नहीं रह गयी। जो मांगती है सब गहने देती हूं परंतु हमारा साथ छोड़ कया फूल के रंग वाले प्रभु का नाम ले उधर ही चल देती है। सदा केशव तथा हजार नाम का पाठ करती है। जैसे 'कलछी बेंट से टूट कर दाल में गिरती है' मेरी बेटी सदा केशव की शरण लेती है। निरंतर नारायण से मोहग्रस्त हो समस्त जगत को निगलकर बट पत्र पर सोने वाले का ध्यान करती है।

तीसरे शतक का आठवां दशक **(3 ः 08 या पासुर 297 से 306 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। कृष्ण के लिये बेटी को घर छोड़कर चले जाने पर मां चिंतित है। बर्फ से सूखे कमल वाले तालाब की तरह हमारा घर सूना हो गया है। हमारी कुंवारी बेटी को कृष्ण भगा ले गये। क्या वह मथुरा पहुंच गयी होगी ? हमारे कुल में कलंक तो नहीं लग जायेगा ? क्या दामोदर ब्याह कर बट की परिक्रमा करते उत्सव मनायेंगे ? क्या यशोदा पुत्रवधू का सम्मान करेंगी ? मेरी सुन्दरी बेटी को देखकर कृष्ण सोचेंगे 'क्या इसकी मां अब तक जीवित होगी ?' क्या बेटी को जंगली बहेलिये की जिंदगी मिलेगी या पूर्व की रानियों की तरह सम्मान पायेगी ? क्या उसे नौकरानी की तरह तो नहीं रखेंगे ?

तीसरे शतक का नौवां दशक **(3 ः 09 या पासुर 307 से 317 तक)** ः इसमें **11** पासुर हैं। कृष्ण एवं राम की गरिमा गान करते दो गोपियों को चित्रित किया गया है। दोनों एक दूसरे को अपने अपने प्रभु का गुणगान कर आनंद मनाने को कहती हैं।

कृष्ण गोपी ः इन्द्र ने जब स्वर्ग का फूल देने से मना कर दिया तो गरूड़ वृक्ष उखाड़ लाये और सत्यभामा के बाग में लगा दिया।

रामगोपी ः परशुराम ने राम को रास्ता रोक धनुष चढ़ाने को कहा तो राम ने उनसे धनुष एवं तप दोनों ले लिये। इसके पूर्व आपने ताड़का का बध किया था।
कृष्ण गोपी ः रूक्मिणी को रथ पर ले जाते समय जब रूक्मी ने रोका तो कृष्ण ने उसके शिर काट लिये।
रामगोपी ः सौतेली मां के कहने पर राम शीघ्र ही शांत मन से वन को चले गये।
कृष्ण गोपी ः पांचो भाईयों के दूत बनकर युद्ध कराया। पांच फनवाले कालिय पर अनुग्रह किया।
रामगोपी ः भरत राजमुकुट देने गये तो राम प्रभु ने अपना पादुका दे दिया।
कृष्ण गोपी ः पांच फनवाले कालिय के दह को नृत्य से मटमैला कर उसपर अनुग्रह की।
रामगोपी ः कैकेयी के कहने पर राम ने भरत को राज दे दिया। वन में सूर्पनखा के नाक कान काटे।
कृष्ण गोपी ः दुष्ट गाड़ी एवं मरूदु पेड़ का नाश किया, वन में गाय चराये, बांसुरी से चमत्कार किया।
रामगोपी ः सागर पर सेतु बांध लंका गये। रावण का शिर काट विभीषण को राजा बनाया।
तीसरे शतक का दसवां दशक **(3 ः 10 या पासुर 318 से 327 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं। लंका में सीता माता के साथ हनुमान का संबाद। हनुमान अपना प्रामाणिक परिचय देते हुए रामकथा सुनाते हैं। जनकपुर में धनुषभंग के बाद परशुराम ने रोष दिखाया तो राम प्रभु ने उनको धनुष तथा तपस्या से हीन कर दिया। आपने गोधूली वेला में एक बार राम प्रभु को चमेली की माला से बांध दिया था। कैकेयी के दो वरदान को दशरथ अस्वीकार न कर सके और राम लक्ष्मण वन को आ गये। भाला धारण करने वाले गुहन को प्रभु ने गंगातट पर अपना सखा बनाया। पथरीले रास्ते से चित्रकूट पर्णशाला में पहुंच भरत ने दंडवत किया। चित्रकूट में एक काग ने आपके स्तन पर चोंच मारा। राम प्रभु के तिनका ने उसका पीछा किया। अंत में समर्पण करने पर उसकी आंख ले कर उसे जीवन दान दिया। हिरण्यमयी हिरण की क्रीड़ा से मुग्ध आपने राम प्रभु को उसके पीछे भेजा। लक्ष्मण भी उनके पीछे गये। बन्दरों के राजा सुग्रीव की सहायता से आपकी खोज में बंदरों को भेजते समय राम प्रभु ने यह कथा सुनायी। दूसरा प्रमाण उनके हाथ की यह अंगूठी है। सीता माता हनुमान से आश्वस्त हो अंगूठी को अपने सिर पर चढ़ाकर प्रसन्न हुई।

ःः

दिव्यदेश 15 | अयोध्या या तिरूअयोधि या तिरूअयोत्ति नगर

1 | स्थान ः यह दिव्यदेश उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ से **70** कि मी पूरब में अवस्थित है | रेलमार्ग पर बनारस या मुगलसराय से दिल्ली तथा हरिद्वार जाने वाले मार्ग पर अयोध्या एक स्टेशन है |

2 | विग्रह स्वरूप एवं महिमा ः यहां के पेरूमाल श्रीराम भगवान हैं तथा तायर सीता देवी हैं | तीर्थ सरयू नदी है तथा विमान पुष्पक है | कहा जाता है कि विष्णु ने वैकुंठ से अयोध्या की प्रतिछाया ब्रह्मा को दी और उन्होंने इसे सूर्य को दे दी | सूर्य से अयोध्या मनु को प्राप्त हुआ और मनु ने इसे सरयू के दक्षिण किनारे पृथ्वीलोक में स्थापित कर दिया | भगवान राम ने रंगनाथ भगवान विभीषण को अयोध्या में ही उपहार में दिया था जो वर्तमान में श्रीरंगम में विराजते हैं |

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **312 314 316 321 325 399** | कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी **724 725 741 748** | भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **766 768 769 774 779 780 832 843 846 861,** एवं नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2384 2417 2456 2460** | भक्ताघ्रिरेणु स्वामी, तिरूप्पळिळयळुच्चि **920** | परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1875** | पेयआळवार मुन्राम तिरूवन्दादि **2332 2333** | नम्माळवार तिरूवायमोळी **3605** |

ºº

चौथे शतक का पहला दशक **(4 ः 01 या पासुर 328 से 337 तक)** ः इसमें **10** पासुर हैं | प्रभु को खोजने वाले एवं देखने वाले के बीच का संवाद | अगर आप राम प्रभु का निवास खोज रहे हैं तो प्रभु नरसिंह रूप में देखे गये थे | हाथी को दंतहीन करने वाले, राक्षसों की सेना का संहार करने वाले, तथा एक बाण से सात वृक्षों को वेधने वाले राम प्रभु ने सीता के लिये जनक के धनुष यज्ञ में धनुष तोड़ा | सागर में बटपत्र पर निश्चिंत सोने वाले बालक प्रभु को अगर खोजते हैं तो वे ही नप्पिनाय के लिये सात वृषभों को शांत करते देखे गये हैं | अगर आप तिरूमल प्रभु को खोजते हैं जिनकी पूजा ब्रह्मा एवं शिव करते हैं तो उन्हें रूक्मिणी का अपहरण करते देखा गया है | पूतना का स्तन पान कर प्राणहीन करने वाले को अगर आप खोजते हैं तो वे द्वारका में सोलह हजार रानियों से घिरकर सिंहासनारूढ़ देखे गये हैं | श्वेत शंख वाले प्रभु को अगर आप खोजते हैं तो वे हनुमानध्वज वाले रथ को युद्ध में हंकाते देखे गये हैं | जयद्रथ के पक्षधर राजाओं से लड़ने वाले कृष्ण को अगर आप खोजते हैं तो युद्धक्षेत्र में चक्र से सूर्य को छिपा कर अर्जुन से जयद्रथ का बध कराते देखे गये हैं | एकबार में पृथ्वी पर्वत सब को निगलकर

फिर उगलने वाले को अगर आप खोजते हैं तो वे वराह के रूप में धरनी का उद्धार कर भू देवी से ब्याह रचते देखे गये हैं।

०००

दिव्यदेश **16**। द्वारका या दुवरापदि

1।स्थान ः द्वारका भगवान कृष्ण की राजधानी के रूप में जानी जाती है। यह स्थान गुजरात में समुद्र के किनारे अवस्थित है।सड़क मार्ग तथा रेल मार्ग पर अवस्थित यह दिव्यदेश सुगमता पूर्वक अहमदावाद या राजकोट से पहुंचा जा सकता है।द्वारका की दूरी अहमदावाद से करीब **500** कि मी है तथा राजकोट से यह स्थान **200** कि मी पर है। रेल मार्ग में अंतिम स्टेशन ओखा है एवं द्वारका स्टेशन ओखा से एक स्टेशन पहले ही है।

2।विग्रह स्वरूप ः जब यदुवंशियों का गृह कलह से नाश हुआ था भगवान ने मूल मंदिर को समुद्र में डूबो दिया था। वर्तमान मंदिर भगवान के प्रपौत्र ने निर्मित कराया। भगवान का मूलविग्रह चतुर्भुज रूप में खड़े अवस्था में पश्चिमाभिमुखी है और आप ऊपर के दाहिने हाथ में गदा धारण किये हैं तथा बायें हाथ में चक्र है। आपका नीचे का दायां हाथ चरणाश्रय को इंगित करता है तथा बायें हाथ में शंख धारण किये है। आपकी सन्निधि के ठीक सामने जगमोहन के दूसरे किनोर पर मां देवकी की सन्निधि है।

सत्यभामा के साथ आपकी पटरानियां अलग अलग सन्निधियों में एक पृथक प्राकार में स्थित हैं। मां रूक्मिणी का मंदिर यहां से **2** कि मी दूर अवस्थित है। इसीतरह से प्रद्युम्न तथा अनिरूद्ध की सन्निधियां पृथक प्राकार में अवस्थित हैं। सत्यभामा की सन्निधि के पास लक्ष्मीनारायण की सन्निधि है इसमें लक्ष्मी तथा नारायण एक ही शरीर में दो शिर के साथ हैं।

इस दिव्यदेश का तीर्थ गोमती नदी है जो मंदिर के सटे दक्षिण में समुद्र में प्रवाहित होती है। देर रात में तथा प्रातः **5** बजे तक नदी सूखी जैसी रहती है जबकि दिन के **10** बजे से समुद्र का ज्वार इस नदी में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न करता है। प्रातः **4** बजे इस तीर्थ में दीपदान का बहुत महत्व है। भगवान द्वारकाधीश जी की मंगला आरती **7** बजे प्रातः तथा दूसरी आरती **10ः45** बजे पूर्वाह्न में दर्शनीय है। संध्या की आरती **7ः45** बजे की तथा रात की आरती **8ः30** बजे एक अनोखी रीति से संपादित होती है। प्रतिदिन भगवान के मंदिर के शिखर पर विशाल नूतन ध्वज फहराया जाता है तथा दिन में करीब **10** बजे यह कार्यक्रम उत्सव का दृश्य उपस्थित करता है। भक्तगण दो वर्ष पूर्व में

अग्रिम राशि जमाकर ध्वजारोहण का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। भगवान के मंदिर में विशेष अर्चना के रूप में भगवान का राजभोग प्राप्त किया जा सकता है जो दिन के **1** बजे अपराह्न में प्राप्त होता है। यहां के विमान को हेमकूट विमान कहते हैं।

3। महिमा ः मथुरा छोड़कर आपने अपनी नयी राजधानी यहीं बसायी। मूल द्वारका तथा भेंट द्वारका ओखा से कुछ दूर जाकर समुद्र के बीच स्थित है जहां पानी वाली नाव या जहाज से भक्तगण विशेष रूप से दर्शनार्थ जाते हैं। भेंट द्वारका में भक्तराज सुदामा यानी कुचेला से आपका मिलन स्थान दर्शनीय है। द्वारका से मूल तथा भेंट द्वारका तक की पूरी यात्रा गाइड के प्रावधान के साथ स्थानीय नगर निगम बस द्वारा संचालित करती है जो प्रातः **8** बजे से प्रारंभ होकर दिन के **2** बजे पूरी होती है। मूल द्वारका में भगवान प्रातः काल बालक के स्वरूप में दर्शन देते हैं तथा अपराह्न में राजा की तरह और रात में वृद्ध संत की तरह दर्शन देते हैं। ओखा के मार्ग में गोपी तालाब का दर्शन होता हैं जिसके बारे में कथा ऐसी है कि जब उद्धव जी ब्रज की गोपियों को द्वारका ला रहे थे तो इस तालाब में स्नान के कम में भगवान ने अदृश्यरूप से गोपियों का चीर हरण किया था। द्वारका का समुद्र में डूबने के पूर्व भगवान कृष्ण ने अर्जुन को **16000** रानियों को मथुरा पहुंचाने का दायित्व दिया था। मार्ग में रानियों ने यहां ठहरकर स्नान किया और भगवान कृष्ण एक भील नवयुवक के रूप में रानियों का वस्त्र चुरा ले गये। अर्जुन ने जब प्रतिरोध किया तो भील नवयुवक ने अर्जुन को हठात बांध कर जमीन पर सुला दिया। इस तरह से अर्जुन का महाभारत युद्ध का अजेय धनुर्धारी होने अभिमान चूर हुआ।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **333 398 399 415 472**। आंडाल नच्चियार तिरूमोळी **507 541 594 625**। । भक्तिसार स्वामी, नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2452**। भक्ताघ्रिरेणु स्वामी, तिरूप्पळिळयळुच्चि **916**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1504 1524**। नम्माळवार तिरूवायमोळी **3295 3368**।

ஃஃ

चौथे शतक का दूसरा दशक (**4** ः **02** या पासुर **338** से **348** तक) ः इसमें **11** पासुर हैं और यहां तिरूमालरूञशोलै की गाथा चित्रित है जो तमिलनाडु के मदुरै से **20** कि मी पर अवस्थित एक प्रसिद्ध दिव्य देश है। यहां सुन्दरबाहु भगवान विराजमान हैं। त्रिविकम रूप में धरा मापने के कम में भगवान का चरण जब सत्यलोक में पहुंचा तो ब्रह्मा ने चरण धोकर पादोदक लिया। भगवान के पैर के नुपूर से छिटक कर जल का

कण तिरूमालरूञशोलै में गिरा जिससे नुपूर गंगा प्रवाहित हुई। इसमें अपसरायें स्नान करती हैं। रावण के सिर एवं सूर्पनखा के नाक काटने वाले प्रभु यहां शाश्वत रूप से विराजमान हैं। स्वर्ग के कल्पतरू के फूल यहां प्रवाहित होते हैं। गोवर्द्धन पर्वत उठाने वाले गजेन्द्र की रक्षा करने वाले तथा कुवलयापीड़ का नाश करने वाले प्रभु यहां विराजमान हैं। जिन भुजाओं पर कुब्जा ने चंदन लेप किया उसी भुजाओं से प्रभु ने मल्ल योद्धाओं का नाश किया। सौ के विरूद्ध पांच के लिये रथ चलाने वाले प्रभु ने अर्जुन के घोड़े के लिये एक बाण से जल प्रपात उत्पन्न किया। प्राचीन पांडया राजा नेदुमारन ने कुदै मदुरै में प्रभु का विजयोत्सव मनाया। यहां भौंरे प्रभु के हजारनामों का निरंतर गान करते रहते हैं।

चौथे शतक का तीसरा दशक **(4 ः 03** या पासुर **349** से **359** तक**)** ः इसमें **11** पासुर हैं और पीछे के दशक से ही तिरूमालरूञशोलै की गाथा आगे चल रही है और इस दशक के बाद आगे के दशक **5 ः 03** में पासुर **453** से **462** तक पुनः यह गाथा चलेगी। यहां उस प्रभु का निवास स्थान है जिन्होंने रूक्मिणी के कारण उसके भाई रूक्मी को रथ में बांधकर लज्जित किया। प्रभु ने कालिय नाग, कुवलयापीड़ हाथी, यमलार्जुन, अरिष्टनेमी वृषभ, तथा कंस का नाश किया। नरकासुर का गले में फंदा डालकर नाश किया और सोलह हजार रानियों को मुक्त किया। माबली के पुत्र बाणासुर की पुत्री ऊषा को कैद से प्रभु ने मुक्त कराया। आपने गाली की बौछार करने वाले शिशुपाल का बड़े शांत भाव से अंत किया। तिरूमालरूञशोलै पर्वत सब पर्वतों का अभिभावक माना (पासुर **353**) जाता है । पांचाली द्रौपदी का कष्ट प्रभु ने सौ भाइयों की पत्नियों पर डाल दिया। सीता की रक्षा के लिये यहां के प्रभु ने लंकेश का नाश किया। वराह रूप में धरती का उद्धार करने वाले प्रभु ने धरती को वामन बन कर मापा। प्रभु ने सबको निगल कर पुनः बाहर कर दिया जो प्रभु की लीला शाश्वत रूप से चलती रहती है। यह पर्वत हजार फन पर शेषशायी हजार भुजा वाले हजार मुकुट से सुशोभित प्रभु के शासनाधीन है। यह पर्वत अष्टाक्षर मंत्र की साक्षात नैसर्गिक प्रतिनिधित्व करता है जो मात्र अनुभव से समझा जा सकता है।

चौथे शतक का चौथा दशक **(4 ः 04** या पासुर **360** से **370** तक**)** ः इसमें **11** पासुर हैं और यह तिरूकोट्टियूर दिव्य देश के भक्तो की प्रशंसा से परिपूर्ण है। यह सेल्व नांबी एवं गोष्ठी पूर्ण स्वामी का अवतार स्थल है और इसकी चर्चा पूर्व में प्रथम शतक के पहले दशक में की जा चुकी है। सेल्व नांबी ने ही राजा को उत्प्रेरित कर विष्णुचित्त स्वामी को नारायण परतत्व की व्याख्या के लिये आमंत्रित कराया था। ब्रह्मा इन्द्र एवं रूद्र के

कर्त्तव्यों का निर्धारण करने वाले प्रभु का यहां निवास है। यहां के निवासी सत्यवादी एवं प्रतिदिन अतिथियों के स्वागत में प्रसन्न रहते हैं। ये लोग पांच तत्व, पांच यज्ञ, पांच कर्मेन्द्रिय, एवं पांच ज्ञानेन्द्रिय के परस्पर संबध से भली भांति परिचित हैं। नरसिंह भगवान में इनकी आस्था प्रशंसनीय है। ऐसे लोगों के बीच रहने का अवसर महान तपस्या से मिलता है। सेल्व नांबी जैसे सरल महान चित्त भक्त से प्रभु अति प्रसन्न रहते हैं। अकाल की अवधि में जब मुट्ठी भर अन्न दुर्लभ रहता है यहां के निवासी आगन्तुकों के लिये अपना भंडार सदा खुला रखते हैं। आश्चर्य है कि इस धरा पर प्रभु ने कुछ ऐसे लोगों को बनाया है कि वे प्रभु का एक बार भी नाम नहीं लेते। ऐसे लोग अपनी मां के गर्भ के भार हैं। हाथ की अंगुलियां प्रभु का नाम जपने के लिये है परंतु अनभिज्ञ लोग इसका प्रयोग केवल भोजन करने के लिये करते हैं। ऐसे लोगों का पीने वाला जल एवं पहरने वाला वस्त्र सभी पापपूर्ण हैं। ऐसे लोगों के मुंह में तो पशु की तरह केवल घास भर देना चाहिए।

चौथे शतक का पाचवां दशक **(4 ঃ 05 या पासुर 371 से 380 तक)** ঃ इसमें **10** पासुर हैं और यहां प्रभु से नहीं जुड़ने वाले प्राणियों के लिये जीवन के अंतिम काल के लिये कुछ अमूल्य परामर्श दिये गये हैं। शरीरांत काल में जो धन परिवार से मन हटाकर केशव के चिंतन में लगाते हैं वे महान हैं। शरीर किसी भी दयनीय स्थिति में हो परंतु 'नमो नारायण' का जप नहीं छोड़ने का है। माधव को मनमंदिर में स्थापित कर देने का है जिससे अंत काल में परिवार वाले की संपत्ति के बारे में अन्वेषण से आप अनसुने रहें। इन्द्रियों के नियंता हृषीकेश भगवान को समर्पित हो जाने से यमदूत की क्षति से आप मुक्त रहेंगे। इसके पहले कि यमदूत मोटी रस्सी से आपको घसीटना शुरू करें आप मधुसूदन प्रभु को नहीं भूलें। गोविंद नाम का स्मरण आपको मृत्यु पीड़ा से मुक्त रखने वाला है।

चौथे शतक का छठा दशक **(4 ঃ 06 या पासुर 381 से 390 तक)** ঃ इसमें **10** पासुर हैं और यहां प्रभु के नाम पर संतान का नाम रखने का लाभ चित्रित किया गया है। सांसारिक वस्तुओं के लोभ में अन्य नाम न रखकर केशव श्रीधर गोविंद वैकुंठ माधव दामोदर आदि नामों से अपनी संतान को पुकारो। नारायण की मां कभी नरकगामी नहीं होती। मरणशील मां की मरणशील संतान मरणशील नाम से पुकारे जाने पर कभी मुक्ति के साधन नहीं हो सकते। याद रखो अमृत गंदे मुंह से भी ग्रहण करने पर अमरता ही प्रदान करता है।

चौथे शतक का सातवां दशक **(4 ঃ 07 या पासुर 391 से 401 तक)** ঃ इसमें **11** पासुर हैं

और यहां भागीरथी तथा अलकनंदा के संगम देवप्रयाग के रघुनाथ प्रभु की प्रशस्ति गायी हुई है। मूलविग्रह खड़े मुद्रा में चतुर्भुज स्वरूप में भागरथी की ओर देख रहे हैं। श्री विष्णुचित्त स्वामी ने स्थान का नाम 'कण्डम कडिनगर' से संबोधित किया है तथा प्रभु को 'पुरूषोत्तम' कहकर पुकारा है। स्थानीय जन यहां प्रभु को रघुनाथ जी के नाम से भजते हैं। संगम के जल में शिव के शिर पर चढ़े कोन्रै के फूल तथा नारायण के चरण कमल पर चढ़े तुलसी का दर्शन होता है। त्रिविक्रम प्रभु का ब्रह्मा द्वारा लिया गया चरणोदक शिव की जटाओं से प्रवाहित हाकर गंगा के रूप में दर्शनीय हैं। हिमालय से सागर तक की यात्रा में गंगा भक्तों के कर्मजनित दोषों का निवारण करती हैं। पुरोषत्तम प्रभु अपने दिव्य आयुधों चक, शंख, खड्ग, धनुष, हल, कुल्हाड़ी एवं गदा से असुरों का नाश करते हैं। यहां के प्रभु शालग्राम, वैकुंठ, अयोध्या, बदरी, मथुरा, एवं द्वारका के नाथ हैं। गंगा में यज्ञोपरांत प्रवाहित सामग्रियों की प्रचुरता है जिसे दूसरे याज्ञिक जन भी छानकर उपयोग में लाते हैं। 'ॐ' के तीन वर्णो ('अ' 'उ' 'म') तथा अष्टाक्षर मंत्र के तीनों शब्दों यानी कि 'ॐ नमो नारायणय' पर ध्यान करने से 'परत्व, सौलभ्य, एवं भोग्यत्व' तीन रूप वाले सर्वव्याप्त प्रभु के साथ 'तीन गुणों वाले जीवात्मा यानी अनर्न्याह शेषत्व, अनन्य शरणत्व, अनन्य भोग्यत्व' का संबंध सुनिश्चत होता है।

°°

दिव्य देश **17**। देवप्रयाग या तिरूकण्डम

1। स्थान ः उत्तराखंड के ऋषिकेश से **60** कि मी पर बदरीनारायण के रास्ते में देवप्रयाग अवस्थित है।देवप्रयाग से आगे बढ़ने पर बायें का रास्ता गंगोत्री को जाता है जबकि सीधा रास्ता बदरीनारायण की ओर जाता है।

2। विग्रह स्वरूप ः भगवान चतुर्भुजी स्वरूप में अलकनंदा एवं भागीरथी के संगम पास ही भागीरथी की धारा को देखते हुए खड़े मुद्रा में हैं। भगवान को नीलमेघ तथा पुरूषोत्तम नाम से भी जाना जाता है। विमान को मंगल विमान कहते हैं। यहां का तीर्थ गंगा है।

3।महिमा ः राम प्रभु ने लंका से लौटने के बाद यहां तपस्या की थी। विदित है कि अलकनंदा बदरीनारायण से आती है और रास्ते में रूद्र प्रयाग में केदारनाथ की ओर से आने वाली मंदाकिनी नदी को अंगीकार करती है। रूद्र प्रयाग से अलकनंदा आगे बढ़कर देवप्रयाग में गंगोत्री से आने वाली भागीरथी को अंगीकार कर पुण्य शलिला गंगा के नाम से प्रवाहित होती हैं।संपूर्ण हिमालय शिव की जटा का प्रतिनिधित्व करता है और त्रिविक्रम प्रभु का चरणोदक विभन्न स्थलों से विभिन्न धाराओं में प्रवाहित होकर

देवप्रयाग में गंगा रूप में दर्शन देता है। गंगा स्नान एवं दर्शन ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज इलाहाबाद, तथा काशी में सुलभता से होता है। यमुनोत्री से मथुरा वृन्दावन के रास्ते आनेवाली यमुना को गंगा प्रयागराज में अंगीकार करती हैं। काशी एवं पटना के बीच में अयोध्या से आनेवाली सरयू तथा मुक्तिनाथ नेपाल से आनेवाली गंडकी का संगम है। इस संगम स्थल को गजेन्द्र मोक्ष के लिये पूजा जाता है। यहां पास में श्रीमदभागवत के प्रसिद्ध पात्र जड़भरत जी का मंदिर है। इस स्थान पर अन्नदान का बहुत महत्व है। श्वेतकेतु नामक एक बहुत धार्मिक राजा थे। शरीर छूटने पर इनकी आत्मा भूख से व्याकुल होकर ब्रह्मा के पास पहुँची। ब्रह्मा ने उसे अगस्त्य मुनि के पास भेज दिया। अगस्त्य मुनि ने राजा से पुण्य का प्रतीक उनकी स्वर्ण की अँगूठी मांग ली तथा उसे अपने एक शिष्य को देते हुए कहा कि इसे बेचकर देवप्रयाग में अन्नदान का आयोजन करो। ऐसा करते ही राजा की आत्मा की क्षुधा शांत हो गयी।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **391** से **401**।

ºº

चौथे शतक का आठवां दशक (**4 ः 08** या पासुर **402** से **411** तक) ः इसमें **10** पासुर हैं और यहां से आगे के दो दशकों तक तिरूअरंगम यानी श्रीरंगम के प्रभु की प्रशस्ति प्रस्तुत है। कावेरी के किनारे यह स्थल गुरू संदीपनी के खोये पुत्र को वापस लाकर देनवाले कृष्ण प्रभु का है। प्रभु ने प्रसूत गृह से लुप्त होने वाले शिशुओं को उनके अभिभावक को उपलब्ध कराया था। आपने अपनी बहन सुभद्रा के पति अर्जुन को युद्ध क्षेत्र में गुरू की तरह मार्गदर्शन प्रदान किया तथा अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को गर्भ में संरक्षित रखा। कुब्जा एवं रानी के कारण आप राज छोड़कर वन को चले गये तथा वरदान का दुरूपयोग करने वाले रावण का अंत किया। यहां के भौंरे पाताल लोक में असुरों का नाश करने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं। प्रभु ने वृहत वराह का रूप लेकर दाढ़ों पर पृथ्वी का तथा नरसिंह रूप में श्वेत दांतो से हिरण्यकशिपु का उद्धार किया। आपने ही मधु कैटभ का अंत किया।

ºº

दिव्य देश **18**। तिरूअरंगम यानी श्रीरंगम

1। स्थान ः तमिलनाडु के तिरिचिरापल्ली शहर के पास **6** कि मी पर स्थित कावेरी से घिरा यह दिव्य देश श्रीरंगम के नाम से जाना जाता है।

2। विग्रह स्वरूप ः यहां के मूलावर रंगनाथ भगवान कहे जाते हैं तथा दो भुजा के स्वरूप में दक्षिणाभिमुख हो पश्चिम दिशा में सिर रखकर आदिशेष पर अर्द्धखुली आंखों

के साथ शयन करते हैं। दायां हाथ केहुनी से मुड़कर सिर के नीचे टिका है तथा बायां हाथ पार्श्व मे शरीर से सटे सीधा पर्यंक पर लेटा हुआ है। उत्सव विग्रह नामपेरूमाल कहे जाते हैं तथा खड़े अवस्था में चतुर्भुजी स्वरूप में हैं। आपका स्वरूप कांची के वरदराज भगवान से मिलता है परंतु आपका चक प्रयोग मुद्रा में है। गर्भगृह में स्वतंत्र पर्यंक पर उत्सव विग्रह श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ विराजते हैं। खड़े अवस्था के नामपेरूमाल के दोनों पार्श्व में उत्सवमूर्ति श्रीदेवी एवं भूदेवी बैठी हुई मुद्रा में द्विभुजी हैं।

यहां के विमान को प्रणव विमान कहते हैं जिस पर पूरब से पश्चिम दिशा में चार कलश हैं तथा चार कलश उत्तर से दक्षिण दिशा में हैं। विमान के दक्षिण दिशा में परवासुदेव का विग्रह है, पश्चिम दिशा में अच्युत का विग्रह है, उत्तर दिशा में अनन्त का विग्रह है, तथा पूरब दिशा में गोविंद का विग्रह है। चारो विग्रह को एक एक कलश से विभूषित किया गया है। इस तरह से प्रणव विमान के ऊपर **12** कलश हैं।

यहां रंगनायकी तायर की स्वतंत्र सन्निधि एक स्वतंत्र परिसर में है। गर्भगृह में तायर के तीन विग्रह एक के पीछे दूसरा, दूसरे के पीछे तीसरा की व्यवस्था से स्थित हैं। तायर चतुर्भुजी हैं। सबसे आगे का विग्रह उत्सव विग्रह हैं जो अपने ही परिसर में उत्सव में शोभायात्रा में निकलती हैं और रंगनायकी कही जाती हैं। पीछे के दोनों विग्रह श्रीदेवी एवं भूदेवी हैं। तायर कभी भी अपने परिसर से बाहर नहीं जाती हैं।

आन्डाल का स्वतंत्र परिसर में दो स्वतंत्र सन्निधियां हैं जो कोदंड राम की सन्निधि के पार्श्व में है। एक को अंतः आन्डाल तथा दूसरे के बाहय आन्डाल सन्निधि कहते हैं। भीतर वाली आन्डाल की सन्निधि परमपद वसल के पास वाली चंद्रपुष्करणी के पूरब में अवस्थित है। जबकि बाहर वाली सन्निधि चौथे प्राकार में पश्चिम तरफ है।

श्रीरंगम का मंदिर परिसर सात घेरों में है तथा भारत के सभी मंदिरों से सबसे बड़े क्षेत्र में फैला है। सातो घेरों की समेकित लंबाई **9** कि मी है तथा सबसे बाहर के घेरा की परिधि **3** कि मी लंबी है। रामानुज स्वामी का अधिकतम समय यहीं बीता और यहां आपकी अलग सन्निधि है। मधुर कवि आळवार को छोड़कर सभी आळवार ने श्रीरंगम की महिमा गायी है। मधुरकवि ने किसी दिव्य देश की प्रशस्ति न गाकर मात्र अपने गुरूदेव नम्माळवार की प्रशस्ति **11** पासुरों में गायी है जो दिव्य प्रबंधम का एक हिस्सा है और कण्णिनुण्शिरूताम्बु के नाम से पासुर **937** से **947** तक मुदल आयरिम यानी प्रथम एक हजार में वर्णित है।चकत आळवार यानी सुदर्शन चक की स्वतंत्र सन्निधि स्वतंत्र परिसर में है जो रामानुज स्वामी की सन्निधि वाले प्राकार में ही पश्चिम छोर पर है जबकि रामानुज स्वामी की सन्निधि प्राकार के पूर्वी छोर पर अवस्थित है। सभी आळवार संतों

की अलग अलग सन्निधियां हैं। कूरेश स्वामी की अलग सन्निधि है।

3। महिमा ः यह स्थान 'कोइल' के नाम से जाना जाता है। श्रीवैष्णव समाज में 'कोइल' का तात्पर्य श्रीरंगम है। 'पेरूमाल कोइल' कांची के वरदराज प्रभु के लिये कहा जाता है तथा 'तिरूमला' तिरूपति के वेंकटेश प्रभु के लिये प्रसिद्ध है। धरा पर स्वयं व्यक्त आठ स्थलों में सर्वोपरि महत्ता का है। आठ स्वयंव्यक्त स्थल हैं श्रीरंगम, वेंकटम, तोताद्री, श्रीमूषणम, पुष्कर, नैमिशारण्य, बदरी, एवं शालग्राम। श्रीरंगम के भुजंगशयनम अवस्था वाले मूलावर दक्षिण की ओर देखकर विभीषण को अनुगृहीत करते हैं। यहां का प्रणव विमान तथा शेषशायी भगवान का दर्शन सबसे पहले ब्रह्मा को हुआ था। इसे सत्यलोक ले जाकर बिरजा नदी के किनारे स्थापित कर ब्रह्मा ने सूर्य को पूजा का उत्तरदायित्व दे दिया।आप रंगनाथ प्रभु के नाम से पुकारे जाते हैं। कालकम में सूर्य वंशी राजा के अनुरोध पर ब्रह्मा ने रंगनाथ भगवान को अयोध्या के लिये दे दिया। भगवान राम ने लंका विजय के बाद अपने कुलदेव रंगनाथ भगवान को उपकार के उपहार में विभीषण को दे दिया। जब विभीषण आपको ले कर लंका जा रहे थे तो मार्ग में कावेरी से आवृत्त स्थल पर रखकर संध्या वंदन करने लगे। पूजा के बाद जब विग्रह को ले जाने के लिये उपकम किया तो भगवान ने जाने से मना कर दिया और बताया कि वे इस रमणीक स्थल पर ही रहेंगे। विभीषण यहां नित्य आकर भगवान की पूजा करते हैं। दिल्ली के मुस्लिम नबाव ने नामपेरूमल का उत्सव विग्रह श्रीरंगम से ले जाकर अपनी बेटी को उपहार में दे दिया था। बेटी को भगवान से स्नेह प्रेम हो गया। जब नामपेरूमल श्रीवैष्णवों के उपकम से वापस आये तो नबाब की बेटी भी भगवान को ही अपना पति मानते हुए श्रीरंगम में आकर रहने लगी और स्वतंत्र सन्निधि तुल्लक नाच्चियार बीबी नाच्चियार की स्मृति है। धनुर्मास के 'पगल पत्तु' में नामपेरूमाल एक दिन लुंगी पहन कर तुल्लक नाच्चियार की सन्निधि में आते हैं। धनुर्मास में वैकुंठ एकादशी से दस दिन पहले की अवधि 'पगल पत्तु' कही जाती है और इस अवधि में दिव्यप्रबंधम के प्रथम एक हजार तथा पेरिया तिरूमोळी की अभिनयपूर्ण प्रस्तुति अर्जुन मंडप में नामपेरूमाल के समक्ष प्रातःकाल से लेकर दिन के **1** बजे तक संपन्न होती है। वैकुंठ एकादशी से बाद का दस दिन 'इरा पत्तु' कहा जाता है जिसमें रात में एक हजार खंभे वाले तिरूमामणि मंडप में नामपेरूमल के समक्ष 'तिरूवायमोळी' अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जाता है। धनुर्मास के अंतिम **20** दिन यानी 'पगल पत्तु' तथा 'इरा पत्तु' की अवधि में मूलावर रंगनाथ भगवान आपादमस्तक मोती से सजकर अपनी अनोखी छटा के साथ भक्तों को दर्शन देते हैं। वैकुंठ एकादशी से नम्मालवार के मोक्ष के दिन तक 'इरा पत्तु' वाली

अवधि में आठवें दिन को छोड़कर बाकी सभी दिन नामपेरूमाल भगवान 'परमपद वसल' से निकलते हैं और भक्तों को भी इस अवधि में परमपद वसल से प्रवेश का लाभ मिलता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **183 189 212 245 402** से **432** तक। आंडाल, नच्चियार तिरूमोळी **607** से **616** तक। कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी **647** से **676** तक, **728**। भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **772, 800** से **806** तक, **812 844 870**, तथा नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2384 2411 2417 2441**। भक्ताघ्रिरेणु स्वामी, तिरूमालै **873 874 877 879, 881** से **888** तक, **890** से **904** तक, **907 908 910 911 913 914 916**, . एवं तिरूप्पळिळयळुच्चि **917** से **926** तक। मुनिवाहन स्वामी, अमलनादिपिरान **927** से **936** तक। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1019 1213 1378** से **1427** तक **1506, 1571 1664 1829 1978 2029 2038 2043 2044 2050 2062 2063 2065 2069 2070 2073** से **2076** तक, एवं शिरय तिरूमडल **2673**, तथा पेरिय तिरूमडल **2674**। पोय्गै आळवार, मुदल तिरूवन्दादि **2087**। भूत आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2209 2227 2251 2269**। पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि **2342 2343**। नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2505**, तथा तिरूवायमोळी **3572** से **3582**।

ःः

चौथे शतक का नौवां दशक। **4 ः 09** या पासुर **412** से **422** तक। इसमें **11** पासुर हैं और पूर्ववर्ती दशक से ही श्रीरंगम दिव्य देश की प्रशस्ति प्रारंभ होकर इस दशक में भी वर्णित है। श्रीरंगम के प्रसूनों में रंगनाथ भगवान तथा मां रंगनायकी की छवि का दर्शन होता है। वन से लौटकर आने के आश्वासन के प्रतीक में आपने अपना पादुका छोटे भाई भरत को दिया। विभीषण तथा लंका के कल्याण हेतु प्रभु दक्षिण दिशा को निहारते हैं। मक्खन का घड़ा सहजता से फोड़ने में जो आनन्द आप लेते थे उसी तरह का सहज आनंद दुष्ट यमलार्जुन, क्रोधी हाथी, प्रलंबासुर, दुर्दांत केशिन, जानलेवा शकट, एवं शक्तिशाली मल्ल योद्धाओं का नाश करके आपने लिया। अपने भक्तों को लंबी सीढ़ी से सूर्य लोक के रास्ते वैकुंठ में ले जाकर अपनी सेवा का अवसर प्रदान करते हैं। आप द्वारका के मनोरम प्रभु हैं। श्रीरंगम में उपलब्ध कमल पुष्प आपकी नाभि के कमल के समान सुन्दर हैं। जब नारद जी ने एक बार गंगा में स्नान कर एक कछुआ की प्रशंसा की तो कछुआ ने गंगा की ओर संकेत करते हुए उसकी प्रशंसा की। गंगा ने सागर की

प्रशंसा की, सागर ने पृथ्वी की, पृथ्वी ने पर्वत की, पर्वत ने चार मुख वाले ब्रह्मा की, ब्रह्मा ने चारों वेद की, वेद ने अग्नि यज्ञ की, तथा यज्ञ ने रंगनाथ प्रभु की श्रद्धापूर्ण अर्च ना एवं स्नेह भरी दक्षिणा की प्रशंसा की। प्रभु आप ऐसे तिरूअरंगम में रहते हैं जहां हंसगण कमल से उत्पलावित जलाशयों से मधुर ध्वनि में पक्षीराज गरूड़ की प्रशंसा करते हैं। आपने पांडवों को विजयश्री दिलायी तथा कौरवों के खून से जूड़ा बांधने की द्रौपदी की प्रतिज्ञा पूरी कराई। गर्भ में खाक होने से आपने ही परीक्षित को बचाया। माबली तथा हिरण्यकशिपु के मानमर्दन करने वाले आप ही हैं।आपने ही मत्स्य, कच्छप, सूकर, सिंह, वामन, तीनों राम ःप्रशुराम, राम, बलराम तथा कृष्ण के रूप में अवतार लिया और अंततः कल्कि अवतार लेंगे।

चौथे शतक का दसवां दशक ।**4** ः **10** या पासुर **423** से **432** तक।ः इसमें **10** पासुर हैं। पूर्ववर्ती दो दशकों की तरह यह दशक भी श्रीरंगम के शेषशायी प्रभु के श्रीचरणों में मृत्यु से पूर्व ही समपर्ण को एकमात्र आश्रय बताता है जिससे कि मृत्यु के समय प्रभु की कृपा बनी रहे। आपने गजेन्द्र को राहत दिलायी। जब मैं मृत्यु पाश में बंध जाउंगा तब आपका नाम विस्मृत हो जायेगा। अतः यह मेरी अग्रिम प्रार्थना है। मेरी मृत्यु के समय मुझे अवश्य याद रखें। अभी याद कर सकता हूं इसीलिए अभी यहीं आपके नाम को रटे लेता हूँ। जब उसलोक का प्रवेशद्वार नजदीक आयेगा और यमदूत पैरों से ठोकर मारते हुए जब मुझे पकड़ लेंगे तो उसे 'रूको' कहने की भी शक्ति मेरे पास नहीं रहेगी। आपकी लीला को ब्रह्मा एवं शिव भी पार नहीं पाते। आपहीं तीनों लोकों तथा तीन वर्णों वाले प्रणव मंत्र हैं। यह निर्णय लेते हुए कि आदमी मरणशील होगा, आपने ही मृत्यु के देवता काल की सृष्टि की।

पांचवें शतक का पहला दशक ।**5** ः **01** या पासुर **433** से **442** तक।ः इसमें **10** पासुर हैं।विष्णु चित्त स्वामी अपने गीत को निम्न स्तर का होने पर भी प्रभु को स्वीकार करने की प्रार्थना करते हैं। कौआ की तरह कर्कश रहने पर तथा मूर्ख जैसा व्यवहार करने के बाद भी आप हमें गाथा गाने का अवसर दें। कौआ की बोली भी भविष्य का कुछ संकेत देती है। सेवक के शब्द खोटे रहने पर भी क्या स्वामी सहन नहीं करते। हरिन के चितकवरा चिह्न उसके लिये भार नहीं होते। हम आप पर ध्यान करना भी नहीं जानते और बार बार 'नमो नारायण' कहते हैं। हमारी शक्ति इसी में है कि हम आपके भक्त हैं और आपके मंदिर में रहते हैं। भोजन और वस्त्र की हमें कोई चिन्ता नहीं रहती इसलिए कि आपकी सेवा के फलस्वरूप जो आवश्यक होगा वह स्वयं मिल जायेगा। प्रभु का यह बंधुआ मजदूर कभी भूखे नहीं रहा। हॉ जिस दिन आपका नाम विछुड़ जाता है वह

दिन अशुभ दिन हो जाता है। आपके अलौकिक सौंदर्य के दर्शन का मैं आकांक्षी हूं। विनती है, हर दिन अपनी पूजा के अवसर की खुशी मिलने की स्वीकृति दें। वामन, माधव, मधुसूदन, प्रभु आप विश्वास न करने वालों के लिए सिंह के समान हैं।

पांचवें शतक का दूसरा दशक ।**5 ः 02** या पासुर **443** से **452** तक। ः इसमें **10** पासुर हैं। विष्णुचित्त स्वामी व्याधि को चेतावनी देते हैं कि प्रभु का प्रवेश हो जाने के कारण इस शरीर में उसके लिये कहीं जगह है नहीं। सागरशायी प्रभु ने हमें अपना लिया है और यह किला अब संरक्षित है। पुरानी स्थिति है नहीं। यहां अब नरसिंह प्रभु शयन करते हैं अतः रोगादि अपनी रक्षा करें। मेरा शरीर माधव का मंदिर है यहां रोगादि के लिये स्थान नहीं है। दो पर्वतों के बीच की खाड़ी में असहाय हम पड़े हैं। प्रभु हमारी रक्षा कीजिये। हमारे ललाट पर आपके चरणारविंद का चिह्न यानी उर्ध्वपुण्ड्र तिलक हमारे हृदय कमल में आपके निवास का संकेत है। हमारे भीतर सागर में शयन करने वाले प्रभु क्षीरसागर तथा शेषशय्या के साथ प्रवेश कर चुके हैं। हे चक्र शंख खड्ग धनुष दिक्पाल पक्षीराज सभी सावधान होकर हमारे भीतर प्रभु के शयनकक्ष की रक्षा कीजिये।

पांचवें शतक का तीसरा दशक ।**5 ः 03** या पासुर **453** से **462** तक। ः इसमें **10** पासुर हैं। पूर्व के दशक में प्रभु के प्रवेश की घोषणा के बाद तिरूमालेरूञशोलै के प्रभु से विशेष रूप से निवेदन किया जा रहा है कि एक बार प्रवेश के बाद आपको अब बाहर नहीं जाने देंगे। बंधनों को काटकर और सांसारिक दुःखों के भंवरजाल से आपने मुक्त कराया। मैं जानता हूँ आप मेरे भीतर प्रवेश किए हुए हैं। अब क्या आपको हम छोड़कर जाने देंगे ? आपने किसी के साथ सच्चाई नहीं निभाई। ऐसा न हो आप चले जायें इसलिए कमल सी कोमल माता लक्ष्मी की शपथ देता हूं। अगर अब हम अन्य किसी के द्वार पर जायें तो क्या आपकी महिमा पर आघात नही पहुंचेगा ? लंबी दूरी की यात्रा में आपके चरण कमल की छांह छोड़ कुछ भी नहीं मिला। ब्रह्मा, शिव या अन्य कोई देवता पुनर्जन्म की व्याधि की औषधि नहीं जानते। हमें पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त कर अपने विशाल मंदिर के परिसर में सेवा में लगा लीजिए। आज और कल के भवंर में हम कितने ऋतु एवं काल से पकड़ लिये गये हैं। जब हम गर्भ में थे उस समय भी आपकी सेवा करने की ईच्छा थी। आज हम यहां आकर आपको पा गये हैं। कैसे आपको हम जाने देंगे ?

पांचवें शतक का चौथा दशक ।**5 ः 04** या पासुर **463** से **473** तक। ः इसमें **11** पासुर हैं। पूर्व के दशकों में हृदय क्षेत्र में भगवान का प्रवेश हो जाना चित्रित किया गया है।

इस अंतिम दशक में उससे मिलने वाले लाभ को गिनाते हुए उसे स्थायी बनाने की कामना की गयी है। हमारा शरीर एवं आत्मा आपके चक्र से चिह्नित हो चुका है। हम आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं। जब से आपने हमें अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया है तब से पुनर्जन्म का सागर सूख कर पवित्र स्थल हो गया है। मृत्यु की तरह भयावनी छाया में दिखने वाले इस जगत की सभी यातनायें अपनी गांठ ढीलीकर बिना कुछ बोले झाड़ी में जा छिपी हैं। आपके नामामृत को जी भर पीया है। जैसे सोने की शुद्धता पत्थर पर रगड़ कर परखते हैं उसी तरह आपके नाम को हमने अपने जीभ पर रगड़ा है। सदा के लिये आपको हमने अपने भीतर रख लिया है तथा अपने आप को आपके भीतर रख दिया है।

<u>प्रबंध संख्या **2** ः तिरूप्पावै</u>

श्रीवैष्णव भक्ति साहित्य की एक अनुपम कृति तिरूप्पावै है।इसके रचियता आन्डाल स्वयं लक्ष्मी के अवतार के रूप में जानी जाती हैं। आपका अवतार स्थल श्रीविल्लीपुत्तुर है जो तमिलनाडु में मदुरै से **75** कि मी की दूरी पर तेनकाशी के पास विरूदनगर रोड पर स्थित है। आन्डाल और इनके पिता श्री विष्णुचित्त स्वामी बारह आलवारों में आते हैं। सीता की तरह आन्डाल भी पृथ्वी से निकली हैं। आपका अवतार नक्षत्र कर्क मास में यानी आषाढ़ का पूर्वाफाल्गुनी है। आपको श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने तुलसी के बागीचे में पाया था। भगवान की सेवा के लिये माला बनाने में आन्डाल अपने पिता की सहायता किया करती थीं। पिता की अनुपस्थिति में माला की सुन्दरता को ये स्वयं गले में धारण कर आइने में देखकर परखती थीं । एक दिन पिता ने इस कार्य को देख लिया और माला को अपवित्र समझ दुःखी मन से उस दिन भगवान को कोइ माला अर्पित नहीं की। भगवान ने इन्हें स्वप्न देकर आन्डाल की पहनी हुई माला को हीं अर्पित करने का निर्देश दिया। उस दिन से श्रीविष्णुचित्त स्वामी आन्डाल को अवतार के रूप में देखने लगे। जब ये विवाह योग्य हुई तव आन्डाल ने श्रीरंगनाथ भगवान से ही संबंध बनाने का निश्चय किया। भगवान श्रीरंगनाथ के निर्देश से आन्डाल को डोली में सजाकर भगवान के मंदिर में अतिउत्साह पूर्वक लाया गया। तदुपरान्त आन्डाल ने अपने को भगवान की सन्निधि में तिरोहित कर दिया।

श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कंध **10**, अध्याय **22** की कात्यायनी व्रत की तरह आन्डाल धर्नुमास में **30** दिन व्रत करती थीं जिसका उद्देश्य श्रीकृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करना था। तिरूप्पावै के **30** पासुर इसी प्रयास का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं। पासुर **1** में आन्डाल अपनी सखियों को सूर्योदय से पूर्व जागकर स्नान कर पूजा के

लिये आमन्त्रित करती हैं, तथा पासुर **2** में व्रत के नियमों के पालन का विवरण है जिसके अनुसार इस अवधि मे दूध घी का त्याग कर जूड़े में फूल नहीं बांधना तथा भक्ति साहित्य का पाठ करते हुए संतजनों को सम्मान तथा दान करना है। पाशुर **3** एवं **4** में भगवान की महत्ता तथा व्रत के फल चित्रित हैं। पासुर **5** में पूजा की विधि का वर्णन है। पाशुर **6** से **15** तक सखियों को जगाने का वर्णन है। पाशुर **16** में नंद जी के राजमहल के द्वारपाल को जगाया जाता है। पासुर **17** में नंदजी, यशोदा, बलराम तथा श्रीकृष्ण को जगाया जाता है। पाशुर **18** से **20** तक भगवान श्रीकृष्ण की सहभागिनी नप्पिनाय, जो नीला देवी हैं, को जगाया जाता है। **21** से **23** पासुर तक भगवान से बातचीत को चित्रित किया गया है। पाशुर **24** से **29** तक भगवान की प्रार्थना तथा पूजा व्रत के उद्देश्य से भगवद कैंकर्य करने का आश्वाशन प्राप्त कर उत्सव की पूर्णाहुति में घी उत्पलावित खीर समर्पित कर श्रृंगार के साथ भगवान की चिर सन्निधि प्राप्त करना है। पाशुर **29** तो पूर्ण समपर्ण और शरणागति को चित्रित करता है जो वैष्णवता तथा उसकी प्रपन्नता का द्योत्तक है। पाशुर **30** में आन्डाल ने स्वयं को फलप्रदायी तिरूप्पावै का रचनाकार बताया है।

तिरूप्पावै के कई शाब्दिक अर्थ हैं। जो ज्यादा लोकप्रिय है वह है "श्रेष्ठ व्रत"। एक और सटीक अर्थ है। "तिरू" यानि "सम्मानजनक", और "प्पावै" यानि "विवाह योग्य कन्या"। तिरूप्पावै में भगवान नारायण के विभिन्न अवतारों का यशोगान किया गया है । त्रिविक्रम भगवान को पाशुर **3, 17** एवं **24** में, क्षीरसागरशायी भगवान को **2, 4** एवं **6** में, राम प्रभु को **10, 12, 13** में, तथा भगवान श्रीकृष्ण को बहुतों पासुरों में चित्रित किया गया है। पासुर **23** में श्रीलक्ष्मी नृसिंह विशेष रूप से वर्णित हैं।

आन्डाल का तिरूप्पावै 'दिव्य प्रबंध' का एक महत्वपूर्ण भाग है। **24** प्रबंधो के समूह को 'दिव्य प्रबंध' कहते हैं। इसमें कुल मिलाकर **4000** पासुर हैं। प्रथम प्रबंध पेरिया आळवार यानी विष्णुचित्त स्वामी का है जिसे 'पेरियाळवार तिरूमोळि' कहते हैं और इसमें **473** पासुर हैं और इसके प्रथम **12** पासुर को 'तिरू प्पलांडु' कहते हैं जो प्रणव मंत्र 'ॐ' का प्रतीक हैं। विभिन्न उत्सवों के अवसर पर विभिन्न प्रबंधों का पारायण किया जाता है परंतु सभी पारायण का प्रारंभ 'तिरू प्पलांडु' से होता है । तिरूप्पावै दूसरा प्रबंध है जिसमें **30** पासुर हैं एवं पासुरों की समेकित श्रृंखला में यह **474** से **503** तक के पासुरों में वर्णित है। अन्य प्रबंधों के लिये पूर्व की तालिका **1** द्रष्टव्य है।

टिप्पणी : **1**। नीचे दिये गये हिन्दी अनुवाद में " " के अन्दर के शब्द मूल तमिल में नहीं हैं परंतु तात्पर्य को स्पष्ट करने के लिये इसका समावेश किया गया है। पाठ के उद्देश्य से मूल तमिल पद पुस्तक

के अंत में परिशिष्ट में दिया गया है।

2। ऐसा लगता है कि पूर्व में चांद्र मास के आधार पर ही व्रत की प्रथा थी क्योंकि तिरूप्पावै के पहले पद में प्रारंभ का दिन मार्गळि माह यानी मार्गशीर्ष माह के पूर्णिमा को बताया गया है। बाद में तमिलनाडु में सूर्य की गति पर आधारित पचांग को मानने से धनु राशि में सूर्य के प्रवेश पर तिरूप्पावै व्रत का प्रारंभ माने जाने लगा।

तिरूप्पावै के **30** पासुर जो मूल तमिल से हिन्दी में रूपान्तरित किये गये हैंः

1।अगहन मास, पूर्णिमा का शुभ दिन
स्नान "यमुना को" चाहे वो चले, सुसज्जित बालायें
सुन्दर भव्य आयपादी "वृन्दावन" की ऊच्चाभिलाषी बालायें
तेज भुजाल निष्ठुर कार्य "दुष्टों के नाश हेतु" वाले नंदगोपन, के कुमार
सुन्दर आँखोंवाली यशोदा के मृगशावक
श्याम वदन, सुन्दर आँखें जगमग दिनकर, चाँद सा मुख
नारायण स्वयं हम पर कृपा करेंगे
संसार से प्रशंसित स्नान, आओ श्रीव्रत करें।**474**

प्रथम पद निमंत्रण का है। गोदम्मा अपने नजदीकी सखियों को पवित्र व्रत के लिए उत्साहित करती हैं। धनुर्मास का यह व्रत प्रातःकाल में यमुना स्नान का है। प्रारंभ का दिन अगहन यानि मार्गशीर्ष के पूर्णिमा का है जो प्रायः धनुर्मास (जब सूर्य धनु राशि में हो) के प्रारंभ काल के आसपास होता है। इससे यशोदा के लाड़ले पुत्र सुन्दर सलोने कृष्ण प्रसन्न होंगे। नन्दजी इनकी रक्षा में निष्ठुर होकर तत्पर रहते हैं। कोई भी छोटी सी छोटी घटना से कृष्ण की रक्षा के लिए सदा हाथ में भुजाल (तेज भाला) लिए तैयार रहते हैं। कृष्ण तो स्वयं नारायण हैं और इस व्रत की पूर्त्ति से इनका आशीर्वाद हमें अवश्य मिलेगा।

टिप्पणी ः ऐसा लगता है कि पूर्व में चांद्र मास के आधार पर ही व्रत की प्रथा थी क्योंकि तिरूप्पावै के इस पहले पद में प्रारंभ का दिन मार्गळि माह यानी मार्गशीर्ष माह के पूर्णिमा को बताया गया है। बाद में तमिलनाडु में सूर्य की गति पर आधारित पचांग को मानने से धनु राशि में सूर्य के प्रवेश पर तिरूप्पावै व्रत का प्रारंभ माने जाने लगा जो अब मार्गळि की पूर्णिमा से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है।

2।संसार में जन्म पाया, अपने इष्टदेव हेतु
सुनो, क्षीरसमुद्र के
योगनिद्रासायी नाथ चरणों की वन्दना गायें
घी नहीं खायें, दूध नहीं खायें, प्रातः स्नान करें
काजल न लगायें, जूड़ा फूल न बाधें
त्याज्य कार्य न करें, मिथ्या कहानी न पढ़ें
योग्य जनों, दीन जनों, संतों "को" दान दें
अपना उद्धार सोचें, प्रसन्न रहें, आओ श्रीव्रत करें।**475**

द्वितीय पद में गोदम्मा बताती हैं कि जीवन की सार्थकता प्रभु की चरण बन्दना में है। नारायण हरि क्षीर सागर में योगनिद्रा में लीन हैं। दोनों पार्श्व में भू देवी एवं नीला देवी सेवारत हैं। श्रीचरणों में मन को समर्पित करने के ऊपाय स्वरूप बताती हैं कि व्रत के दिनों में दूध घी का त्याग कर दें। इससे मन का आलस दूर होगा। श्रृंगार के साधन, जूड़ा में फूल, और आंखों में काजल, का भी त्याग कर दें। भगवत कथा के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को न पढ़ें। संत पुरूषों एवं याचकों की सेवा में यथा शक्ति दान दें। इस तरह से प्रसन्न रहकर श्रीव्रत करें।

3। बढ़ कर, संसार मापा, सर्वोत्तम नाथ का नाम गायें
अपना श्रीव्रत "का" करें स्नान
दुष्टों से रहित देश पूरा "होगा", माह में तीन वर्षा होगी
बढ़ेंगे बड़े धान के खेत, छोटी मछलियाँ खेलेंगी
सुन्दर फूलों में चकमक मधुमक्खियां सोयें
स्थिर गायें खड़ी, गोप दूहें, थन पकड़ कर
वर्त्तन भरें, उदार बड़ी गायों से
टिकाऊ ऊन्नति, परिपूर्ण रहें, आओ श्रीव्रत करें। **476**

तृतीय पद में त्रिविक्रम भगवान यानि वामन भगवान की महत्ता का स्मरण कराते हुये बताती हैं कि इनकी असीम कृपा से संपन्नता सद्यः आयेगीं। महीना में तीन बार वर्षा होगी। पृथ्वी धान की फसल से पूर्ण होगी। जल की पर्याप्तता में छोटी मछलियां आनन्दित रहेगीं। गोदम्मा चाहती हैं कि मछली बनकर वे निरंतर सागरशायी प्रभु का दर्शन करती रहें। मधुमक्खी बनकर फूल में ही सो जाना चाहती हैं। यह फूल प्रभु की श्यामल सौंदर्य का है जिसमें चिरकाल के लिये बन्द हो जाना चाहती हैं। स्थायी संपन्नता को चित्राकिंत करते हुए कहती हैं कि स्थिर गायें निरंतर दूध देंगी। सभी पात्र दूध से उत्पलावित रहेंगे। वास्तव में वे, अनंतशायी प्रभु के क्षीर समुद्र में आत्मसात हो जाना चाहती हैं।

4। समुद्र व वर्षा के नाथ, कुछ नहीं रोकें
समुद्र करें प्रवेश पानी ले, गरजते ऊपर उठें
जगत के मुख्य नाथ स्वरूप सम शरीर श्याम
चौड़ा सुन्दर कंधा, पद्मनाभ हाथों " में "
चक्र जैसी बिजली "चमके ", शंख जैसी गर्जन
बिना देर के, बाण जैसी वर्षा
ऊन्नत संसार हेतु हो, हम भी
अगहन माह स्नान "का " आनन्द लें, आओ श्रीव्रत करें। **477**

चतुर्थ पद में, वर्षा के बादल का स्वरूप, प्रभु की श्यामलता, का स्मरण कराता है। बादल का गर्जन, पाञ्चजन्य के घोष का, और चमकती बिजली, सुदर्शन चक की प्रभा को, याद दिलाते है। वर्षा की बौछार भगवान राम के तीखे बाणों के समान रमनीक दिखते हैं। गोदम्मा का यह पद सर्वब्याप्त प्रभु के लिये प्रेम जागृत करता है।

5 | लीलादेव मथुरा किशोर
पवित्र यमुना, गोपों का आश्रय
पवित्र ज्योति, मातृ यश वृद्धिकारक
दामोदर की पूजा, ताजा एवं
सुगंधित पुष्प से करें , पूजा नमन
एवं, हम कीर्तिगान
ध्यान करें, आगत अनागत
सारे पाप तृणवत जलें, उनके नाम से, आओ श्रीव्रत करें | **478**

यमुना किनारे के किशोर दामोदर भगवान हैं | ऊखल में रस्सी से मां यशोदा ने इन्हें बांधकर दामोदर नाम से प्रसिद्ध कर दिया | गोपजनों के सहारा एवं अपनी मां देवकी तथा यशोदा के यश को बढ़ाने वाले हैं | इनकी पूजा पूर्व एवं भविष्य के सारे पापों को नाश करने वाले हैं | इनकी पूजा में सुगंधित फूल का अर्पण तथा प्रेम से उनका यशगान पर्याप्त है |

6 | पक्षी कलरव कर रहे, पक्षिराज आरोही "के" मंदिर में
श्वेत शंख नाद कर रहे, सुन नहीं रहे
जागो बच्चों, राक्षसी के विषैले स्तन पान किया
शकट "छली " का ठोकर "पैरों " से नाश किया
क्षीर सागर शेषसायी, जीवन स्त्रोत " हैं "
संतों योगियों का शनैः शनैः
ध्यान टूटा, "उनके " हरिनाम के ऊच्च्व स्वर
हृदय में प्रवेश कर रहे, व आनंद दे रहे, आओ श्रीव्रत करें | **479**

पहले के पांच पद भगवान के रूप और नाम के यशोगान का है | छठे से पन्द्रह तक के पद गोदम्मा द्वारा अन्य सखियों को जगाने के प्रयास का है | प्रातःकाल के आगमन को प्रमाणित करते हुए अनेकों उदाहरण देकर गोदम्मा अपनी सखियों को जगाती है | पक्षियों की आवाज, पक्षीराज गरूड़ के सवारी नारायण के मंदिर में शंखनाद, तथा योगी जन का ध्यान टूट कर हरिनाम उच्चारण की आवाज, हृदय को आनंदित कर रहे हैं | क्षीरसागर के अनंतशायी भगवान ने ही पूतना एवं शकटासुर का नाश नंदकिशोर के रूप में किया |

7 | भरद्वाज " अळियन " पक्षियों की चहक
बोलती भाषा, सुने नहीं, गूंगी लड़कियों
गले के आभूषणों के किंकिण शब्द
जूड़ा फूलों के सुगंध, मंथन
दही का घोष, मिला नहीं
नेता किशोरियों के, नारायण की मूर्ति

व केशव का गुणानुवाद, सुनती नहीं, सो रही हो
सुन्दरियों, खोलो "दरवाजा", आओ श्रीव्रत करें । **480**

सातवें पद में प्रातः काल के पूर्ण आगमन के सारे लक्षणों का वर्णन है। पक्षियों की चहक (केशु केशु बोल रही हैं जो केशव का छोटा नाम है), घर में अन्य लड़कियों की कियाशीलता से होने वाले शब्दों को तो सुनो। जागकर ब्यस्त होने से घर की अन्य महिलायों के सिर के जूड़ा के फूल, हिलडुलकर सुगंध विखेर रहे हैं, तथा उनके आभूषण की मधुर आवाज मनोहर हैं। क्या ये भी जगाने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। घर में मथे जाने वाले दही की हांडी की आवाज नहीं सुनती! ओ प्रमुख सखी! भगवान नारायण एवं केशव (केशी राक्षस का मुंह फाड़ने वाले) का नामगान भी नहीं सुनती!

8। पूरब का आकाश श्वेत हो रहा, गायें
सर्वत्र चर रहीं, व्रत के उत्सुकता से जाने वाली
को रोक, तुम्हारी प्रतीक्षा है
पुकारें, खड़े हैं खुश
जागो बाले, गाते व्रत मनाते हुए
घोड़ा राक्षस का मुँह फाड़ा, "कंस के" योद्धाओं को पराजित किया
देवाधिदेव की अर्चना करें
द्रवित होकर कुशल क्षेम पूछें, आओ श्रीव्रत करें । **481**

गोदम्मा इस आठवें पद में सुवह होने के अन्य और लक्षणों को बताती हैं। पूरब दिशा का आकाश साफ दिखरहा है, गायें चरने के लिए बाहर आ चुकी हैं (अगर नहीं जागोगी तो कृष्ण दर्शन के लाभ से बंचित रह जाओगी क्योंकि वे शीघ्र हीं गायों के पीछे जंगल चले जायेगें)। अन्य सखियां आ चुकी हैं, हम उन्हें तुम्हारे लिये रोक रखे हैं। चलो जागो और देवताओं के सिरमौर, जिन्होनें केशी घोड़ा राक्षस का मुंह फाड़ा, कंस के पहलवानों को ध्वस्त कर दिया, की पूजा करें। वे कृपालु हैं, हमारा कुशल अवश्य पूछेगें।

9। रत्नजटित कक्ष दीपों से प्रकाशित
सुगन्धित धूप "अगरवत्ती " की महक में, गद्दे पर सो रही
मेरी चाची की बेटी, सुन्दर मणिजड़ित किवाड़ का साकल खोलो
चाची, उस लड़की को जगाओ, जो तुम्हारी बेटी है
गूंगी है, बहरी है, या थकी है
या जादू टोने से सोयी है
बड़े जादूगर, माधवन,
वैकुंठन के नाम अति फलदायक हैं, आओ श्रीव्रत करें । **482**।

नौवें पद में गोदम्मा एक सर्वसंपन्न (नित्य मुक्त की भांति जो स्वयं आनन्द में मग्न है) सखी को जगाती हैं। घर रत्नों से अलंकृत है, तथा कमरे सुंदर दीपों से प्रकाशित हैं। आरामदायक गद्दे हैं,

सुंगधित वातावरण है। किवाड़ खोलने के लिये आग्रह करते हुये चाची (सखी की मां) से निवेदन करती हैं, "इस लड़की को जगाओ। लगता है थकी होगी, या फिर तो बहरी गूंगी हो गयी होगी ? सचमुच सोयी है, या जादू टोने के असर में है ?" इसे माधव एवं वैकुंठन भगवान के नाम से अवश्य लाभ होगा। वे बड़े जादूगर भी हैं।

10। तपश्रम से स्वर्ग जा रही, ओ सजनी
ऊत्तर भी न देती, दरवाजा न खोलती
सुगंधित तुलसी माला पहने नारायण
का यशगान वरदायक है, बहुत पहले
एक दिन मृत्युग्रस्त हुआ कुभंकर्ण
क्या उसकी लंबी नींद प्रकट हुई, या उसने तुम्हें नींद दी
नींद से उत्पीड़ित, सखी रत्न
स्थिर चित्त होकर दरवाजा खोलो, आओ श्रीव्रत करें ।**483**

इस पद में एक प्रमुख सखी को गोदम्मा जगाती हैं। यह नित्य मुक्त की तरह आनंद में मग्न सोयी सी दिखती है, दरवाजा भी न खोलती, और न कोई जबाव देती है। लगता है कुंभकर्ण की नींद इसे सता रही है। भगवान नारायण यानी कि कृष्ण जो गले में तुलसी की माला के सुगंध से उन्मादित हो रहे हैं, के नामगान से ही जागेगी। ओ सखीशिरोमणि! आ दरवाजा खोल।

11। युवा गायें दुही गयीं
दुश्मन विदारक गोपों, की स्वर्णलता
सांप के फनजैसी अधोभाग वाली, वन की मोरनी
बाहर आओ, सुहृद मित्र सभी कुटुंब
आये तुम्हारे आंगन
श्याम घन, नाम गान करते
न हिलती, न बोलती,
सौभगे क्यो सोयी हो, आओ श्रीव्रत करें ।**484**

एक अति सुन्दरी मोरनी जैसी सखी, जो सुगठित शरीर वाली है और अच्छे कुल की है (गायों से संपन्न शक्तिशाली परिवार), जो अपने पिता की स्वर्णलता जैसी लाड़ली है, को जगाते हुए गोदम्मा कहती हैं कि सभी प्यारी सखियां आकर तुम्हारे आंगन में सांवले सलोने कृष्ण का नाम गा रही हैं। जागो न ! हिलो तो सही, कुछ बोल तो, या नित्य मुक्त का आनंद अकेली लेती रहोगी ? आनंद का फल सबको बांटने में है।

12। पुकारती गायें, बछड़ों को स्नेह वश
वत्स स्मरण थन सद्यः दूध बहाता
भींगा घर पंकिल है दूध से, प्रगतिशील गोप की बहन

सिर पर ओस लिए तुम्हारे प्रवेश द्वार के बाहर खड़े
दक्षिण लंका के शासक का नास करनेवाले "का "
मन हर्षकारी गीत हैं हम गाते, तुम मुँह नहीं खोलते
कम से कम जाग तो सही, क्या घोर निद्रा
दूसरे घर के सभी लोग भूले नही "जाग गये ", आओ श्रीव्रत करें । **485**

यह पद पूर्ववर्ती पद की तरह ऐसी सखी को जगाने का है जिसका भाई गौरवशाली है। पूर्व के पद में पिता को संबोधित किया गया है और इस पद में भाई को। बहुत सारी गायें हैं। भाई आवश्यक भगवत कैंकर्य से बाहर गया है। गायें इसी कारण दूही नहीं गयी हैं। गायें बछड़ों को याद कर थन से दूध बहाकर घर को पंकिल कर रहीं हैं। गोदम्मा कहती हैं कि सुबह के ओस की परवाह किए वगैर हम सभी आये हैं। भगवान राम का गुणानुवाद कर रहे हैं। केवल तुम ही सोयी हो, बाकि सभी लोग जाग चुके हैं।

13। "बकासुर" पक्षी का मुंह फाड़ा, दुष्ट राक्षस "रावण" का
सिर काटा, उनकी कीर्तिगान करते जाते
सभी किशोरियाँ श्रीव्रत स्थल पहुँच गये
शुक्र ऊग आये, गुरू अस्त हुए
पक्षी कलरव करें, देखो सुमनसी सुन्दरी, मृगनयनी
कठोर शीतल जल में डुबकी नहीं लगाती
सोयी सेज पर, ओ बालिके, अच्छा दिन "है आज"
छोड़ युक्ति आलस, हमारे संग, आओ श्रीव्रत करें । **486**

यह पद एक ऐसी सुन्दर आंखोवाली सखी को जगाने का है जो भगवत आनंद में लिप्त सोयी जान पड़ती है। गोदम्मा बताती हैं कि सुवह का तारा शुक्र उग आया है, पक्षियां कलरव कर रही हैं, भगवान कृष्ण एवं राम का यशगान करती अन्य सखियां स्नान के लिये जा चुकी हैं। उसे जगाकर शीतल जल में स्नान के लिये प्रेरित किया जा रहा है। टिप्पणी ः प्रातः काल का व्रत है इसलिये शुक्र पूर्व में उदय लेगें। अगहन महीने में शुक्र का पूर्व में उदय लेना पुराकालीन ग्रहों की स्थिति का द्योत्तक है। संप्रति इस तरह की आवृति दृष्टगत नहीं है।

14। पिछाड़े बाग के तड़ाग में
लाल कमल खिल गये, कुमुदिनी सकुचे
केसरिया वस्त्र संत गण
पवित्र मंदिर में शंख वादन हेतु जा रहे
हमें पहले जगाओगी, वादा से बोला था
ओ बाले, जागो, निर्लज्ज बड़बोला
शंख चक्रधारी, वक्षस्थल विशाल

कमलनयन के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें ।**487**

अब बारी एक ऐसी सखी को जगाने का है जिसने कल वादा किया था कि सब को जगायेगी परंतु सब भूलकर स्वयं सो रही है (बोलने में चतुर है अतः इसको जगाकर ले चलें भगवान कृष्ण को बाक्पटुताा से प्रभावित करेगी)। दिन निकलने पर है अब, लाल कमल खिलने लगे तथा कुमुदिनी बंद होने लगी। साधुलोग केसरिया वस्त्र पहने मंदिर में शंख नाद करने के लिए जा रहे हैं। आओ कमलनयन भगवान का हम भी यश गान करें। (टिप्पणी : वर्तमान में दक्षिण भारत के मंदिरों में शंखनाद शायद ही होता है।)

15। दो दलों का संवाद एक बाहर **1** एक भीतर **2**

आश्चर्य, सुगनी सो रही **1**

कठोर वचन मत बोल, मैं शीघ्र आ रही **2**

वाक्पटुता से हैं पूर्व अवगत **1**

वागविवाद में आगे हो, हम हैं वंचित लाभ से **2**

शीघ्र चलो और सारे काम हैं **1**

सभी जाने वाले आ गये **2** हाँ बाहर आ गिन ले **1**

शक्तिशाली हाथी "कुवलयापीठ" संहारे, रण में दुश्मनों को मारे

गजेन्द्र नायक के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें । **488**

सखियों के जगाने का यह अंतिम पद है। भीतर सोयी हुई सखी भगवत आनन्द में निमग्न बतायी जाती है। जब बाहर वालों ने उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट किया तो शीघ्र उसने आने का वादा किया। वह बाद विबाद नहीं करना चाहती और नाम भजन का लाभ लेना चाहती है। अतः उसे तुरत बाहर आकर गजेन्द्र उद्धारक और कंश के निष्ठुर हाथी के संहारक भगवान का यशोगान करने को कहा गया।

16। रक्षक हमारे नंदगोपन राय के

किला "पुष्पसज्जित" तोरण द्वार, रक्षक

खोलिए रत्न जटित द्वार घुंघरू संग साकल

यमुना यात्रा उद्घोष हेतु ढोल देने को

नीलमणि नायक कल ही वचन देय

नूतन सज्जित हम आये, जगाने, गाते

पहले पहले "भोर में", मातृवत दया करें

अस्वीकार न करें, पट खोलें, आओ श्रीव्रत करें। **489**

पूर्व के दस पदों में, **6** से लेकर **15** तक, दस सखियों को जगाया गया (अनुमान किया जाता है कि गोदम्मा अपने से पूर्ववर्ती दस आलवारों को जगायी हैं)। सभी अब भगवान कृष्ण के पिता नन्द जी के फाटक पर द्वारपाल से प्रार्थना कर रही हैं कि प्रवेश का सुन्दर दरवाजा खोलिये। भगवान ने कल हमें यशगान के लिये सुन्दर ढ़ोल (यशोगान रूपी कैंकर्य का ऊत्तम साधन) देने को कहा था। आप में माता

की करूणा है, अतः दरवाजा खोल कर हमें अनुगृहित करें। बिना नाम लिये द्वारपाल से विनती की गयी है। द्वारपाल आचार्यश्री की तरह प्रवेश देने के अधिकारी हैं। सम्मान में आचार्य का नाम नही लिया जाता, उसीतरह यहां द्वारपाल का भी नाम नहीं लिया गया है। पिता का नाम लेना उनकी गौरव गाथा है जिससे कि उन्हें भगवान के पिता होने का गौरव मिले।

17। वस्त्र, जल, भोजन, खुशी देत
जन नायक नन्दगोप, जागिये
जननायिका कुलदीपिका
सजनी, यशोदा जागिये
गगन भेद, विशाल रूप, मापा त्रैलोक को
देवराय, नींद छोड़ जागिये
स्वर्ण पायल पाद, समुन्नत बलदेव
भ्राता सहित जागिये, आओ श्रीव्रत करें। **490**

इस पद में गोपियों का द्वार खुलने के बाद सबों के शयनकक्ष के समीप पहुंचने का आभास मिलता है। वे एक एक कर सब को जगा रही हैं ः- सबके मालिक, अन्न, जल, भोजन तथा खुशी बांटने वाले नन्दगोप जी को, फिर माता यशोदा को, तथा स्वयं भगवान को जिन्होंने तीनो लोक को त्रिविक्रम रूप में माप डाला, और फिर भाई बलदेव जी को, जो अपने पैर में सुन्दर सोने का आभूषण पहने रहते हैं।

18। दर्शाते उत्साह हाथी का, न भागते "रण से ", शक्तिमान वक्ष स्थल
उस नन्दगोप की पुत्रवधू, ओ नप्पिनाय
सुगंधित केशवाली, दरवाजा खोलिये
जागे, सभी पक्षी पुकारें, देख
माधवी शिखर से कुहु करे कोयल, देख
गेंद पकड़े उंगलियों से, उन आपके पति का गुन गायें
लाल सरोरूह हाथ, कर किंकिणि बाजे, आप
आयें, खोलें हर्ष से, आओ श्रीव्रत करें। **491**

यह पद श्रीवैष्णवों के लिये अति महत्वपूर्ण है। कहा जाता है आचार्य प्रवर भाष्यकार स्वामी श्रीरामानुज स्वामी इस पद को गुनगुनाते हुए एक बार अपने गुरू के दरवाजे पर पहुंचे। गुरू पुत्री ने जब दरवाजा खोला तो वे साष्टांग अडियन की मुद्रा में जमीन पर लेट कर उसे प्रणाम किया। बेटी ने दौड़ कर अपने पिता को अनपेक्षित स्थिति से अवगत कराया। गुरू ने रामानुज स्वामी से इस पद के स्मरण का सवाल पूछा, और वस्तुस्थिति भी वैसी ही थी कि रामानुज स्वामी उस समय तिरूप्पावै के इसी पद का स्मरण करते हुए गुरू गृह के प्रवेश द्वार पर खड़े थे। फलतः उन्होंने गुरू पुत्री में नीला देवी का दर्शन पाया।

इस पद में गोपियां लक्ष्मी नप्पिनाय यानी कि नीला देवी से प्रार्थना करती हैं कि वे यशस्वी ससुर नन्दजी

की पुत्रबधु हैं, जो रण में हाथी के उत्साह से अपनी चौड़ी छाती के साथ शत्रुओं का शमन करते हैं। फिर इनको सुन्दर एवं सुगंधमय केशवाली हैं, कहकर यह याद दिलाती हैं कि कोयल वृक्ष पर आवाज कर सुवह होने का प्रमाण दे रही हैं। आप अपने हाथ में संपूर्ण सृष्टि को गेंदवत रखती हैं। हम आपके पतिदेव का यशगान करने आये हैं अतः अपने सुन्दर लालिमापूर्ण हाथों से दरवाजा खोलिये। कहते हैं भगवान राम ने जनकपुर के राजपथ से सीता को अपने महल में हाथ से गेंद फेंकने का खेल खेलते देखा था। गेंद का रंग बार बार बदल रहा था। विश्वामित्र जी ने बताया, जमीन पर गेंद का श्वेत रंग सीता जी के नख के रंग को दर्शता है। हवा में उसका नीला रंग उनकी नीली आंखों का रंग ले लेता है, और हाथ मे लाल रंग उनकी रक्तिम हथेली के रंग का द्योतक है।

19। तैल दीप "कक्ष में ", हस्ति दंत पैर पलंग पर
कोमल गद्दे सोये
पुष्प गुच्छा सजे बाल, नप्पिनाय "जिनके " वक्षस्थल
रख सिर सोय, विशाल वक्ष स्थल "वाले ", मुंह खोलिये
कजरारे नयनों वाली, अपने पतिदेव
देर ही सही, कभी भी, जगाइये, देख
क्षणमात्र भी विलगाव आप नहीं चाहती
शुभ स्वभाव वाली, क्या यह न्याय है, आओ श्रीव्रत करें। **492**

पद **18**, **19** एवं **20** नप्पिनाय को विभिन्न नामों से संबोधित करते हैं। पद **19** में पहले भगवान से प्रार्थना है कि आप दीपों से प्रकाशित कक्ष में हाथी के दांतों से बने पलंग पर नप्पिनाय के वक्षस्थल पर सिर रख सोये हैं , कृपा कर अपना मुंह खोलिये और हमसे कुछ बोलिए। कोई उत्तर न मिलने पर फिर नप्पिनाय से गोपियां कहती हैं कि अब देर हो रही है , सुवह होने को आया, आप इन्हें कभी भी जगाइये , पर जगाइये। यह कहां का न्याय है कि आप इनसे क्षणभर भी अलग नहीं होना चाहती हैं। हमें भी आप से न्याय की प्रार्थना है। भगवान वैकुंठनाथ त्रिपादविभूति में श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीलादेवी के साथ नित्य विराजमान रहते हैं। गोदम्मा ने इस पद में नीला देवी को नप्पिनाय से संबोधित करते हुए अपनी आगे की प्रार्थना की है। इस प्रसंग में श्री पराशर भट्ट के श्लोक का तिरूप्पावै के पाठ करने के प्रारंभ में सर्वथा स्मरण किया जाता है।

नीलातुङ्ग स्तनगिरितटी सुप्तमुद्बोध्य कृष्णं ।
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरस्सिद्धमध्यापयन्ती ।।
स्वोच्छिष्टायां स्त्रजिनिगलितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते ।
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः ।।

श्रीपराशर भट्ट भाष्यकार रामानुज स्वामी के सर्वप्रिय शिष्य श्री कुरेश स्वामी के पुत्र थे । इनका विष्णु सहस्त्रनाम पर 'भगवद्गुण दर्पण' नाम से व्याख्यान अति प्रसिद्ध रचना है। कहते हैं श्रीरंगम में श्रीपराशर भट्ट को एक बार राजकोप का भाजन बनना पड़ा क्योंकि इन्होनें राजा को मन्दिर विस्तार के र्निमाण में श्रीवैष्णवों के तत्कालिन निवास को तोड़ने से मना कर दिया था। उस समय दीर्घकाल तक

इन्हें श्रीरंगम से निष्कासित कर दिया गया था और उस अवधि में नप्पिनाय को प्रसन्न करने के लिये इन्होनें उक्त श्लोक से उनकी आराधना की थी।

20। तैंतीस "करोड़ " देवताओं के जाते
भय दूर करने आप, नायक जागिये
पूर्ण सर्वशक्तिशाली, आप दुश्मनों का
नाश करें, आप नायक जागिये
कुंभवत कोमल कुच, अरूण होंठ, सुन्दर कटि
नप्पिनाय, सुन्दर सजनी, जागिये
पंखा, दर्पण, हमे देय, अपने पतिदेव जगाइये
अभी शीघ्र हम नहा सकें, आओ श्रीव्रत करें ।**493**

इस पद में पुनः भगवान तथा लक्ष्मी दोनों से एक एक कर प्रार्थना है। प्रथम भगवान को गोदम्मा कहती हैं कि आपने तो तैंतीस (करोड़ों ः **11** रूद्र , **8** वसु , **12** आदित्य , **2** अश्विनी कुमारों से निःसृत) देवताओं का दुःख दूर किया है। कृपा कर जागिये। पुनः लक्ष्मी से प्रार्थना करती हैं तथा उनकी सुन्दरता का बखान करती हैं। पंखा तथा आईना मांगते हुए कहती हैं कि आप नाथ को जगाइये। (पंखा तथा आईना भगवत कैंकर्य के साधन हैं। भगवान अलंकार के बाद आईना में अपना स्वरूप झांक कर देखना चाहते हैं।)

21। पूर्ण घट से दूध छलके
बहुत दूध दें, दूधारू उदार गउयें
कुमार नन्दगोपन के जागिये
शक्तिशाली बड़े "इस " जगत " में "
एक मात्र "प्राण " दीप दिखें, जागिये
शत्रु पराजित आपके द्वार पड़े
स्वतः आये, आपके चरणाश्रित वैसे ही
पूजा करें, आये हम, यश गान करें, आओ श्रीव्रत करें ।**494**

इस पद से गोपियां पुनः भगवान का यशगान करती हैं और उन्हें जगाती हैं। कहती हैं कि आप नन्दजी के लाड़ले हैं जिनके पास अनगिनत गायें हैं और सभी वर्त्तन दूध से भरे रहते हैं। हारे हुए राजागण (जो जरासंध के पराभव के बाद उसके कारागार से स्वतंत्र किये गये) आपके पास शरणागत हुए हैं। ज्म भी आपकी पूजा करने और गाथा गाने आपके पास आये हैं।

22। सुन्दर बड़े संसार के राजागन, मान
छोड़ , आपके पलंग " पैर " नीचे

एकत्रित, हम आए आप पास
मधुर किंकिणि, मुंह खोलिए, कमल फूल
सुन्दर नयन, थोड़ी सी देखिए हमारी ओर
चंद्र सूर्य वत जागें
दोनो नयन, प्रदान करें हमें, अगर आप खोलें
मृत्यु से त्राण दें, आओ श्रीव्रत करें ।**495**

पद **21** तथा **22** गोदम्मा भगवान को जागने का प्रार्थना करती हैं। सभी राजागण अपना अभिमान छोड़ आपके पलंग के पांवों के पास एकत्रित हैं। उनलोगों की तरह हम भी यहां आये हैं। आप अपनी कृपा कटाक्ष से हमें अनुगृहित करें। कमलनयन सुन्दर आंखें खोलकर सूर्य और चांद की तरह हमारे हृदय को प्रकाशित करें। सुन्दर घुंघरूओं की तरह आप अपनी आधी खुली हुई सुन्दर आंखों से हमें देखने की कृपा करें। (घुंघुरू आधी खुली हुई आंख की तरह दिखती है)।

23।इस पद में श्री लक्षमी नृसिंह वंदना है

वर्षा काल, पर्वत गुफा, सपत्नी सोयें
धीर सिंह जागें, ज्वालामयी आंखें
गर्दन केश झाड़ें सब ओर
संभल कर, खड़ा हों, गर्जन करें, तैयार
जाने को, विष्णुकांता फूल की तरह आप सुन्दर
खड़े हों, आप आयें, आशीष करें, सज्जित
सिंहासन विराजें , हमारे आने का
उद्देश्य जान अनुगृहित करें, आओ श्रीव्रत करें ।**496**

यह पद भगवान के लक्ष्मी नृसिंह स्वरूप की प्रार्थना है। वर्षा काल में सोये हुए सिंह जागने पर अपना केश झाड़कर गर्जते हुए जैसे खड़ा होता है उसी तरह आप अपने सुन्दर श्यामल शरीर से अपने सिंहासन पर विराजमान होकर हमें दर्शन देकर अनुगृहित करें।

24।एक बार संसार मापा गया श्रीचरणों से, हम पूजें
जाकर दक्षिण लंका जीता , हम पूजें
नष्ट किया "शकटासुर " चक्का ठोकर से, हम पूजें
बछड़ा फेंका "वत्सासुर " चरण से, हम पूजें
पर्वतराज छत्रवत लिया सौम्य स्वभाव, हम पूजें
जीते दुश्मनों को हाथ के भुजाल से, हम पूजें
इस तरह सेवा कर, हम यशगान कर उद्धार हों
आज हम आये, कृपा करें, आओ श्रीव्रत करें ।**497**

भगवान जागकर लक्ष्मी के साथ अब सिंहासनारूढ़ हो गोपियों को दर्शन देगें। पलंग से सिंहासन तक की गति को देखकर गोदम्मा भगवान का मंगलाशासन करती हैं। श्रीचरणों की प्रार्थना मे कहती हैं ः- उन चरणों का मंगलाशासन हो जिनसे त्रिविक्रम अवतार में संसार को मापा, लंका जाकर राक्षसों को जीता, शकटासुर तथा वत्सासुर का नाश किया। पुनः गोवर्धन धारण के लिये मंगलाशासन हो। शत्रुओं को तेज हथियार से जीते, इसके लिये मंगलाशासन हो।

25। एक सौभाग्यवती के यहाँ जन्मे, एक रात
एक सौभाग्यवती के यहाँ पले छिपे हुए
सह न सका, आपको नुकसान का सोंचा
सभी चाल विफल हुए, कंस के पेट में
आग की तरह सर्वनायक, आप पास
भिक्षा हेतु, आए हम उद्धार का, देखें, आप देंगे
लक्ष्मी जैसा सौंदर्य, सेवा अवसर, गान करें
दुःख दूर हो, हों हम खुश, आओ श्रीव्रत करें। **498**

इस पद में कृष्णावतार का रहस्य वर्णित है। देवकी के यहां जन्म और यशोदा के यहां लालन पालन तथा कंस का नाश । यशगान से दुःख दूर होकर प्रसन्नता का आशीर्वाद मिले यही गोदम्मा की प्रार्थना है।

26। नायक नीलमणि, अगहन का व्रत
पूर्वजों से आ रहा, हम क्या चाहें, अगर आप पूछें
जगत को जगाने वाली, आवाज का
दुग्ध श्वेत, आपके पाञ्चजन्य
की तरह शंख, शक्तिमान
वृहत ढ़ोल, पलांडु गायक
तैल दीप, ध्वज, वृहत छत्र
हे नायक, प्रदान करें, आओ श्रीव्रत करें । **499**

इस पद में दर्शन पश्चात्गोपियों ने पुरातन काल से अपने पूर्वजों द्वारा मान्य व्रत की सफलतापूर्ण पूर्त्ति हेतु शंख, ढ़ोल, गायक, दीप, ध्वज, और बड़े छाता की मांग की। ये सभी भगवत कैंकर्य के ऊत्तम साधन हैं।

27। दुश्मनों को जीतें, वीर गोविंदा, आपके
गीत गायें, हम ढ़ोल का पुरस्कार पायें
सारा देश प्रशंसा करें, आभूषण सुन्दर
कंगन, कंधों का, कान की बाली
पाजेब दूसरे अन्य गहने हम पहनें

सुन्दर वस्त्र धारण करें, तब दूध चावल
घी उत्पलावित, हाथ केहुनी तक "घी ढ़रके"
साथ हम खायें, आओ श्रीव्रत करें ।**500**

भगवान से संवाद होने पर गोपियां अतिप्रसन्न हुई। गोविंद का जयघोष करती हुई ढ़ोल पर प्रभु का यशगान की कामना कीं तथा अपने को आभूषित कर घी मिश्रित खीर भोज का आयोजन करने को ठानी। गोविंद नाम का गान **27, 28,** और **29** पद तक लगातार किया गया है।

28। गायों के पीछे वन में, हम भोजन करें
अनभिज्ञ रहे हम, ग्वालों में आप
जन्मे, हमारा बड़ा अहोभाग्य
कोई गलती नहीं, गोविंदा आपसे
हमारा संबंध टूटे नहीं, न आप तोड़ें
निर्दोष बच्चे हम, स्नेह वश
छोटे नाम से पुकारें, गुस्सा न करें
नाथ हमें उद्धार करें, आओ श्रीव्रत करें । **501**

अब प्रसन्न हो सभी जंगल में सहभोज को चले। गोविंद से त्रुटियों की क्षमा याचना की और अपना शेष शेषी के चिरंतन संबंध को टिकाऊ रखने की दुहाई कीं।

29। भोर में, हम पास आये आपके पूजे
चरण कमल, प्रशंसा गाये, कृपया सुनें
पशु सेवा से जीविका पाया, उसमें जन्में आप भी
चढ़ावा हमारा लिये बिना, जायें नहीं आप
केवल आज के लिए दया नही चाहिए, देखिए, गोविंदा
सात सात जन्म आपके साथ
शान्ति शाश्वत सुख हमें मिल, केवल आपके सेवक रहें
अन्य चाह मिटीं रहें, आओ श्रीव्रत करें ।**502**

गोपियों के साथ गोदम्मा का यह अंतिम पद है जिसमें गोविंद नाम का गान किया गया है। प्रातःकाल से ही गोविंद नाम का स्मरण प्रारंभ हुआ। गोविंद से इस जीवन का नाता जोड़कर अगले जन्मों तक सम्बंध बने रहने की कामना कीं। सेवक सेव्य सम्बंध के अतिरक्त और कोई चाह नहीं रहे, यही अन्र्त मन से गोदम्मा की ईच्छा है।

30। जहाज से भरे समुद्र मंथन किया, नाथ माधवन, और नाथ केशवन
चांद सी सुमुखी अलंकृत किशोरियां, आयीं पूजा कीं
पायीं कल्याण श्रेयस, सुन्दर पाठ श्रीविल्लीपुत्तुर का

ताजा कमल फूल माला पहनें अर्चक, श्री गोदा कहे
सुन्दर तमिल माला तीस का
पढ़े नित्य इसे, चार पर्वतों मे फैले वक्षस्थल
लाल आंखें, सुन्दर मुख, तिरूमाल "श्रेष्ठ भगवान " से
कहीं भी दया पायें, परम सुख पायें, आओ श्रीव्रत करें ।**503**

अंतिम पद में गोदम्मा इसके नित्य पाठ का फल बताती हैं। केशव एवं माधव की कृपा की दुहाई देते हुए प्रभु के सुन्दर स्वरूप के ध्यान की सलाह दी हैं।

गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः।तिरूप्पावै संपूर्णम्।

<u>प्रबंध संख्या **3**ः नाच्चियार तिरूमोळी</u>

आन्डाल का **143** पासुर का "नाच्चियार तिरूमोळी" दिव्य प्रबंधम् का तीसरा प्रबंध है जो **504** से **646** तक के पासुरों में है। इसमें जिनकी प्रशस्ति गायी गयी है वे दिव्यदेश हैं ः (i) वैकुंठ, (ii) वेंकटम, (iii) श्रीविल्लीपुत्तुर, (iv) तिरूमालैरूञशोलै, (v) कण्णपुरम, (vi) मथुरा, (vii) क्षीरसागर, (viii) तिरूवरंगम् यानी श्रीरंगम्, (ix) आयप्पादी यानी वृन्दावन तथा गोवर्द्धन एवं यमुना, (x) द्वारका, (xi) कुडन्दै।

इस प्रबंध की कुछ विशेषताओं का सार नीचे दिया जा रहा है।

क।शुरू के दशक में कृष्ण प्राप्ति के प्रयास वर्णित हैं जिसमें कामदेव की पूजा है। बाद के दशकों में भगवान से मिलन के कुछ संस्मरण हैं कि कैसे कृष्ण प्रभु ने वस्त्र चुराकर मनोविनोद किया।

ख।छठे दशक के पासुर **556** से **566** तक "वार्णम आयिरम" का वर्णन है जिसमें आन्डाल ने भगवान श्रीकृष्ण से विवाह के विभिन्न कार्यकमों का सजीव चित्रण दिया है जो "सप्तपदी" पर जाकर पूरा होता है। तमिलनाडु के प्रत्येक परिवार में वर वधू के कल्याणार्थ विवाह के अवसर पर "वार्णम आयिरम" का विधिवत पारायण आवश्यक रूप से किया जाता है।

ग।नौवें दशक से तेरहवें दशक तक वियोग तथा वियोग जनित वेदना का सजीव चित्रण है तथा प्रभु को बुलाने के लिये दूत आदि भेजने के उपकम को चित्रित किया गया है। उपचार के रूप में प्रभु की तुलसी मुकुट एवं वस्त्रादि से स्पर्श करने को कहा गया है। अंतिम दशक भी उपचार का ही है परंतु इसमें मिलन का संकेत है कि प्रभु वृन्दावन में मिल गये।

घ। नौवें दशक के पासुर **592** एवं **593** का सुन्दरराजन प्रभु को सौ घड़े मक्खन एवं सौ घड़े पायस के भोग के बहुचर्चित मिन्नत का उल्लेख है। यह अधूरा रह जाने के कारण रामानुज स्वामी ने इसकी पूर्ति की।

च। बारहवें दशक के पासुर **618** में प्रदर्शित वृन्दावन आने की आंडाल की कामना अधूरी रह गयी थी। श्रीरंगदेशिक स्वामी द्वारा ईस्वीसन् **1851** में वृन्दावन में श्रीगोदारंगमन्नार मंदिर का निर्माण इसी उद्देश्य की पूर्ति है। यहां प्रभु परिणय परिधान में विराजते हैं। दो भुजाधारी विग्रह के दाये हाथ में बंसी कंधे पर टिकी है तथा बायां हाथ परिणय छड़ी को भूमि पर टिकाये हुए है।

पहला दशक ः इसमें **10** पासुर हैं। सौंदर्य एवं प्रेम के देवता कामदेव से आंडाल प्रार्थना करती हैं कि उनका मन वेंकटम के प्रभु गोविंद पर स्थिर कर दीजिये। बसंत के महीने में गली बुहारना तथा सुन्दर बालू से गली को सजाना एवं प्रातः स्नान कर होम आदि करने का मुख्य उद्देश्य बकासुर का चोंच फाड़ने वाले तथा द्वारकाधीश जी की प्राप्ति है। मेरे उरोज कृष्ण को समर्पित हैं। जैसे यज्ञ की वस्तु श्रृगाल के छूने पर दूषित होकर त्याग दी जाती है उसी तरह मेरा व्याह नश्वर मनुष्य से होने पर मेरे लिये शरीर रखना संभव नहीं होगा। कामदेव प्रभु आप आशीर्वाद दीजिये कि हम सलोने कृष्ण को देख सकें तथा मेरे वदन का स्पर्श धरा मापनेवाले प्रभु करें। दिन में तीन बार आपके चरणों पर पुष्प इसीलिये चढ़ाती हूं कि कृष्ण को प्राप्त करने के लिये आपका आशीर्वाद मिल जाये।

दूसरा दशक ः इसमें **10** पासुर हैं। गोप किशोरियों के बालू के बने खेल के घरौंदों को कृष्ण तोड़ देते हैं तथा विकृत कर देते हैं। किशोरियां कहती हैं कि वे लोग बसंत ऋतु के देवता कामदेव की प्रीतक्षा में हैं। गलियों को साफसुथरा रखना कामदेव के स्वागत के लिये है। कृष्ण को सागर पर सेतु बांधने वाले रावण का नाश करने वाले तथा वृहत कदमों से पृथ्वी मापने वाले आदि नामों से संबोधित करते हुए अपने घरौंदों को नष्ट न करने के लिये विनती करती हैं तथा उनकी पत्नियों के नाम शपथ देती हैं। कृष्ण ने किशोरियों को अपनी बाहों में समेटा तो उनलोगों ने दर्शको की प्रतिक्रिया से कृष्ण को संवेदनशील रहने के लिये सावधान किया।

तीसरा दशक ः इसमें **10** पासुर हैं। कृष्ण ने गोप किशोरियों के वस्त्र चुरा लिये हैं। गोपियां कृष्ण से शिकायत के क्रम में कहती हैं कि हम ऊषा काल में इस ताल में स्नान को आये और अब सूर्योदय हो गया। हमारे कपड़े लौटा दीजिये। आपको कैसे पता चला हम यहां स्नान कर रहे हैं ? हमारी मां इस घटना को कभी नहीं सहेंगी। ध्यान रखिये कि इस ताल को बहुत लोग देख रहे हैं। हमें पता है आप बन्दरों के स्वामी हैं।

शीतल पानी में कमल के डंठल हमें विच्छू की तरह कष्ट दे रहे हैं। यहां से आपको हमारे भाई डंडा मारकर भगायेंगे तो आपको कैसा लगेगा? आप लंका के नाश करने वाले हैं। सारा ब्रह्मांड को आप जानते हैं। हमारा घर यहां से दूर है। हमारी मां कैसे यह सब सहेगी? आपकी मां की पुत्रबधू तो हम हैं नहीं। लोग यह सब देखकर क्या कहेंगे? आपको जो चाहिए हम सबकुछ देंगे। अर्द्धरात्रि में कंस के चंगुल से छूटने वाले पर यशोदा का कोई नियंत्रण नहीं है। कुरून्दु के वृक्ष से हमारे वस्त्र लौटा दीजिये और यहां से चुपके से निकल जाइये।

चौथा दशक ः इसमें **11** पासुर हैं। सुन्दर जूड़े से सजकर आंडाल भगवान कृष्ण को आमंत्रित करती हैं। आश्चर्य से कहती हैं कि क्या हम मालिरूञ्शोलै के प्रभु के शयन कक्ष में प्रवेश पा सकेंगे ? क्या वेंकटम एवं कण्णपुरम के पेरूमाल हमें हाथ पकड़ कर ले जायेंगे ? आप देवकी एवं वसुदेव के यशस्वी पुत्र हैं। कदंब के पेड़ से कालिय नाग के फन पर जब आपने छलांग लगायी तो सभी गोप जन आपको सम्मानपूर्ण भय से देखने लगे। आप कहीं नर्तक रूप में हमारे पास आ तो नहीं रहे हैं ? मथुरा में कंस के हाथी एवं कंस का आपने अंत किया। आपने राक्षसी पक्षी, वृक्ष, अशिष्ट शिशुपाल का अंत किया। द्वारकाधीश तथा आकाश एवं पृथ्वी को मापने वाले सुन्दर वामन प्रभु कहीं आ तो नहीं गये ?

पाचवां दशक ः इसमें **11** पासुर हैं। अपने प्रेमी भगवान कृष्ण को बुलाने के लिये आंडाल मंदिर की पक्षियों में पहले काले कोयल को आग्रह करती है। समस्त प्राणियों के सम्राट माधव से प्रेम करके हमने अपना कंगन गंवा दिया। सभी तरह के फूलों के बागों में कूकने वाले कोयल जाकर प्रभु को लिवा लाओ। _मातली के रथ पर सवार होकर रावण का एक एक सिर काटने वाले वेंकटम के प्रभु को बुला लाओ। प्रतीक्षा में मैं मात्र नरकंकाल रह गयी हूं। _धरा को मापने वाले श्रीविल्लीपुत्तुर के निवासी प्रभु को बुलाओ। हे कोयल! मैं तुम्हें मीठे फल खाने वाले अपने तोता से मैत्री करा दूंगी। क्षीरसागरशायी प्रभु के विछोह में मेरा मुस्कान चला गया। छाती की धड़कन तेज हो गयी। सारंगधारी तिरूमल प्रभु एवं मेरे बीच अनेक रहस्यमयी बाते हैं। या तो मेरा कंगन ला दो या प्रभु को बुला दो। प्रभु की अनुपस्थिति में चांद एवं वायु भी कष्ट ही देते हैं। अगर नहीं बुला सकोगे तो तुम्हें इस बाग से निकाल देंगे।

छठा दशक ः वारणम आयरिम का यह प्रसिद्ध दशक है तथा इसमें **11** पासुर हैं। अपनी सखी से आंडाल मीठे सपने का बखान करती है। पूरा नगर पताकों से सजा हुआ है। हजारों हाथियों से घिरे पांव पैदल नारायण हमारे पास आये हैं एवं सुपारी वृक्ष की छांव

में खड़े हैं। हमारे साथ परिणय का कल का दिन निश्चित हुआ है। अन्य देवों के साथ इन्द्र आये हैं एवं वर कन्या के कल्याण के निमित्त उन्होंने मंत्र पाठ किया। उनकी बहन 'अन्दरी' ने हमें दुल्हन की नयी साड़ी एवं माला से सजा दिया। मंत्रोच्चार के साथ हम दोनों की कलाई पर ऋषिगन ने रक्षासूत्र बांधा। सुन्दरियों ने मथुरा नरेश की आरती उतारकर जलपूर्ण घड़ों से स्वागत किया। चंदन लिपटे चरण से जब प्रभु आगे बढ़े तो पृथ्वी सहम कर कांप गयी। मोतियों से सजे मंडप में ढ़ोल एवं शंख बज रहे हैं। मधुसूदन ने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया। वेदमंत्र के साथ प्रज्वलित सुगंधित अग्नि के चारो ओर प्रभु ने हमें घुमाया। आनेवाले सात जन्मों के नाथ नारायण ने मेरा पैर उठाकर पत्थर पर रख दिया। मेरे भाइयों ने हमें अग्नि के सामने खड़ा कर मेरे हाथ प्रभु के हाथ पर रख दिये तथा अग्नि में अर्पित करने के लिये इसे धान के लावा से भरदिया। हमें चंदन एवं लाल चूर्ण से लपेटकर नारायण प्रभु के साथ हाथी पर बैठाकर नगर भ्रमण के लिये ले गये। तत्पश्चात् सुगंधित जल से मेरा स्नान कराया।

सातवां दशक : इसमें **10** पासुर हैं। प्रभु के साथ रहने के कारण पाञ्चजन्य शंख को जो महत्व मिला है उसी का चित्रण यहां प्रस्तुत है। नीच समुद्र में पाञ्चजन असुर से उत्पन्न होकर प्रभु के कंधे पर विराज मान रहने का सौभाग्य मिला है। प्रभु के अधरों के रस से अभिषिक्त होते रहते हैं। बताइये कि प्रभु के मुख से कैसा सुगंध आता है कर्पूर जैसा या कमल जैसा ? अपनी घोर आवाज से आप असुरों के हृदय को उद्वेलित करते रहते हैं। मथुरा नरेश वासुदेव एवं दामोदर के कान में आप सदा रहस्यमयी बातें बताते रहते हैं। आप जैसे सौभाग्य के लिये इन्द्र भी तरसते रहते हैं। अनेको शंख सागर में यों हीं पड़े हैं लेकिन आपको मधुसूदन के होठों का स्वाद मिल रहा है तथा उनके होठों के स्राव से आपका निरंतर स्नान होते रहता है। प्रभु के अधर से सदा अमृत पान करते रहने से आपको भोजन की आवश्यकता नहीं रहती। सोलह हजार सुन्दरियां तथा अन्य किशोरियां प्रभु के अधरामृत के लिये तरस रही हैं जबकि आप सब अमृत पी जाते हैं। यह आप में तथा उनमें झगड़ा का कारण नहीं बनेगा क्या ?

आठवां दशक : इसमें **10** पासुर हैं। इसमें मेघ को प्रभु के पास दूत बनाकर भेजा गया है। वेंकटम पर्वत के नालों के प्रवाह में प्रभु आते हैं क्या ? एक किशोरी के सौंदर्य नाश से उन्हें गौरव मिलेगा क्या ? मिलन की आशा की अग्नि से हम झुलस रहे हैं। वेंकटम के गोविंद प्रभु का लीला गान हम कब तक करेंगे ? हे मेघ ! वक्षस्थल पर 'श्री' वाले प्रभु को जाकर बताओ कि हमारे उरोज उनके दिव्य शरीर के स्पर्श के लिये लालायित रहते हैं। हमारे कंगन वे कब वापस करेंगे ? बलि से भूमि लेने वाले प्रभु से बताओ कि जैसे

मक्खियां ताड़ फल को सुखा देती हैं वैसे ही वे हमें सुखा रहे हैं। बताना कि यह आजीवन दासी तभी जीवित रहेगी जब प्रभु हमारे उरोजों पर कुमकुम लगाते हुए अपने वदन से स्पर्श करने का अवसर देंगे। दो जीभ वाले सर्प की संगति रखने वाले का क्या भरोसा। एक असहाय कुमारी को तड़पा कर मारने से संसार उन्हें कभी सम्मान नहीं देगा।

नौवां दशक ः इसमें **10** पासुर हैं। इस दशक में चंदन एवं सुगंधित वृक्षों को प्रक्षालित करती हुइ प्रवाहित होने वाली नुपूर गंगा वाले तिरूमालैरूञशोलै के प्रभु से प्रार्थना है तथा मक्खन एवं खीर अर्पित करने की प्रतिज्ञा है जो बाद में रामानुज स्वामी जी ने पूरा किया। यहां की पर्वत माला में उड़ते लाल कीड़ा से यह भान होता है कि मानो सर्वत्र लाल सिंदूर बिखरे पड़े हैं। सुन्दर भुजाओं वाले प्रभु ने सागर मंथन किया। उस घोर भंवर को मैं कैसे सहन कर सकती हूं ? फूलों का हास अब सहा नहीं जाता। प्रभु की सुन्दर भुजायें लक्ष्मी के साथ कीड़ा करती हैं। प्रभु की तुलसी की माला प्राप्त करने की कामना ने मेरी यह गति कर दी। क्या यह उचित है कि हमारे घर में घुसकर उन्होंने हमारा कंगन छीन लिया ? यहां के ताल के कमल का लाल रंग प्रभु के अरूणाभ राजीव नयन का स्मरण कराते हैं। इस दृश्य से बचने का कोई उपाय है क्या ? मैं बचन देती हूं कि आज ही प्रभु को एक सौ घड़ा मक्खन एवं एक सौ घड़ा मधुर खीर अर्पित करूंगी। अपरिमित संपन्नता वाले प्रभु यह छोटा सा उपहार स्वीकार करेंगे क्या ? (पासुर **592**) अगर मेरा यह उपहार स्वीकृत हो जाता है तो मैं इसे एक सौ गुना हजार बार अर्पित करूंगी (पासुर **593**)। बड़े बागों में बसने वाले प्रभु हमारे छोटे से हृदय में बसेंगे क्या ? आज प्रातः जागते ही पक्षीगन द्वारकाधीश तथा बटपत्र शायी प्रभु का गुणगान सुनाने लगे। उनकी मधुर वाणी प्रभु के आगमन का संकेत है क्या ? कब मैं सारंग धनुष की टंकार तथा पाञ्चजन्य का शंखनाद सुन सकूंगी ?

दसवां दशक ः इसमें **10** पासुर हैं तथा प्रभु से विछुड़न का शोक वर्णित है। विभिन्न जाति के फूलों एवं पक्षियों को आंडाल संबोधित करती हैं। तुलसी से निर्मित मुकुट के लिये हमारा बेलगाम हृदय भी प्रभु से मिल गया। सर्प की संगति के कारण प्रभु का व्यवहार दो जीभ वाले की तरह हो गया है यानी करनी एवं कथनी में भेद है। अगम्य प्रभु के चक की गर्मी से झुलसने से अच्छा नश्वर मनुष्यों की संगति है। कोयल को कहती हैं कि नृत्यरत गरूड़ध्वज वाले वेंकटम के प्रभु अगर हमारे पास आ गये तो हम दोनों साथ तुम्हारा मधुर गीत सुनेंगे। कृष्ण के रंग वाले मोर को कृष्ण की अनुपस्थिति में नृत्य बन्द करने के लिये कहती हैं। उछाले हुए घड़े की गति के साथ नृत्य करने वाले

गोविंद ने मेरा सर्वस्व लूटकर मुझे भिखारिन बना दिया है। मेघ से कहती हैं कि वेकटम की प्रतिछाया मेरे ऊपर वर्षा करके स्थापित कर दो। सागर को कहती हैं कि तुम्हारी गहराई से अमृत निकालने वाले ने हमारे गह्वर से हमारा जीवन हर लिया है। क्या उनके संगी नाग से मेरी वेदना बताओगे ? शेषशायी प्रभु शक्तिशाली हैं। हम नश्वर प्राणी उनका क्या बिगाड़ लेंगे ? हमारे पिता विष्णुचित्त स्वामी जब प्रभु का उपकार अर्पित करेंगे तो हम उनका दर्शन कर लेंगे।

<u>ग्यारहवां दशक</u> ः इस **10** पासुर वाले दशक में श्रीरंगम के प्रभु का व्यवहार आंडाल अपनी मां से बताती हैं। प्रभु को अपने हाथ का शंख प्यारा है तो हमें अपने हाथ का शंख का बना कंगन कम प्यारा है क्या ? श्रीरंगम के प्रभु ने हमारा मुंह देखने से मना कर दिया है। नाभि में अतीव सुन्दर कमल वाले प्रभु ने हमारे कंगन को अपने पैर में पहन रखा है। इतने श्रीसंपन्न प्रभु ने हमारा कंगन क्यों चुरा लिया ? एक बालक के रूप में याचना कर प्रभु अगर असंतुष्ट हैं और वे हमारा कंगन चाहते हैं तो उन्हें इस रास्ते से नहीं आना चाहिये क्या ? बली से संकल्प जल मिलते ही उन्होंने पृथ्वी को माप दिया। वे अब हम दीनजनों का सर्वस्व लेना चाहते हैं। सर्वस्व लेकर भी असंतुष्ट हैं और मेरा हृदय लेना चाहते हैं। उन्होंने अपनी पत्नी के लिये भूख एवं नींद त्यागकर सागर पर नियंत्रण किया। उस समय के पागलपन के भूत को वे भूल गये क्या ? पूर्व में इन्होंने सूकर रूप धारण कर कीचड़ से सुन्दरी धरा को निकाला। उस समय भूदेवी से इनकी क्या बात हुई कौन जानता है ? सारी तैयारी के बाद भी शिशुपाल के देखते रूक्मिणी से इन्होंने व्याह कर लिया। इसीलिये श्रीरंगम को 'प्रभु का नाटक गृह' कहते हैं। अंत में पासुर **616** में आंडाल कहती हैं कि 'जो स्नेह करता है उसे स्नेह मिलता है' <u>ऐसी विष्णुचित्त स्वामी की निश्चित धारणा है।</u>

<u>बारहवां दशक</u> ः इस **10** पासुर वाले दशक में आंडाल कृष्ण के पास ले चलने के लिये अपने परिजनों से निवेदन करती हैं। माधव के साथ अपना संबंध पर अपने लोगों की प्रतिकिया को 'एक बहरे को एक गूंगे द्वारा दी गयी राय' बताती हैं। हमारी भलाई इसी में है कि हमें आपलोग आयप्पादी यानी वृन्दावन पहुंचा दें। धरा को उठाने वाले सुन्दर अविवाहित किशोर को देखकर ही मैं जीवित रह सकूंगी। हमें नंद की डयोढ़ी में छोड़ दो जहां अन्य गोपियां कृष्ण के विरह में वेदनाग्रस्त हैं। हमारे उरोज शंखधारी को खोजते हैं। मुझे यमुना किनारे पहुंचा दो। यहां प्रभु कदंब पेड़ से कूदकर कालिय के फन को कुचल डाले थे। एक बार प्रभु के शिर की तुलसी की माला हमें मिली तो हमारे रोग के सारे लक्षण दूर हो जायेंगे। वे मक्खन चोर थे गाय की चरवाही करते थे इन बातों से

हमें क्या लेना, हमें तो गोवर्द्धन पहुंचा दो जहां तूफान के विरोध में प्रभु ने पर्वत को उठा लिया। गोविंद बोलने के लिये मुझे दंडित करते थे तो मैं जोर से बोलती हूं 'धरा मापने वाले प्रभु' और कहती हूँ मुझे द्वारका ले चलो।

तेरहवां दशक ः इस 10 पासुर वाले दशक में आंडाल कृष्ण के कपड़े तथा तुलसी आदि के प्रयोग से अपनी वेदना कम करने को कहती है। कृष्ण वियोग के विरूद्ध हमें शिक्षा देकर घाव पर इमली न रखें। कृष्ण के पीतांबर से हवा करके हमारी मूर्छा दूर करो। कुडन्दै प्रभु की तुलसी से हमारा जूड़ा बना दें। प्रभु की बनमाला हमारे वक्षस्थल को शान्ति प्रदान करेगी। आय्यापाडी यानी वृन्दावन से प्रभु के अधरों का स्राव लाकर हमें पिला दो। उनकी मुरली के छिद्रों से प्रवाहित उनके अधरों के स्राव को हमारी भौंहों पर लगाने से हमारा ज्वर शांत होगा। हमें तो नटखट गोविंद के पांव तले की मिट्टी का लेप चाहिये। उनकी भुजाओं से हमारे वक्षस्थल का आलिंगन ही हमें शांति प्रदान करेगा। हमारी दयनीय स्थिति की उन्हें लेश मात्र भी चिंता नहीं है। जहां कहीं भी वे दिखे तो मैं अपना उरोज उखाड़ कर उनके वक्षस्थल पर फेंक दूंगी। आज हम वेदनाग्रस्त हैं हमें भविष्य की चिन्ता नहीं है। प्रभु का आलिंगन ही हमारी एकमात्र औषधी है।

चौदहवां दशक ः इस 10 पासुर वाले दशक में वृन्दावन में गजेन्द रक्षक भगवान कृष्ण के दर्शन को चित्रित किया जाता है। प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से कृष्ण प्रभु को वृन्दावन में दर्शाया जाता है। बलदेव के सहायक गायों को चराते हुए श्यामल किशोर को किसी ने देखा है ? हां, दूध पीने का उपाय बताते हुए वे वृन्दावन में देखे गये हैं। मुझे अकेले छोड़कर मक्खन का सुगंध विखेरते श्यामल किशोर घूमते चल रहे हैं। किसी ने गोवर्द्धन किशोर को देखा है ? हां, विद्युत सी वनमाला पहने मित्रों के साथ खेलते वृन्दावन में देखे गये हैं। साक्षात प्रेम ने दूल्हा का रूप धारण कर रखा है। मिथ्या वादन में प्रवीण को किसी ने देखा है ? हां, गरूड़ की छत्रछाया में वृन्दावन में देखे गये हैं। प्रभु की कमल सी आंखे हमें जंजीर की तरह बांध रखी है। किसी ने उन्हें खेलते जाते देखा है ? हां, पसीना से नहाते हुए वृन्दावन में खेलते देखा है। विजयी वराह की तरह माधव को किसी ने देखा है ? हां, पीतांबर पहने वृन्दावन में दिखे हैं। सारंग धनुष के समान भौंहे वाले को किसी ने देखा है ? हा, श्यामवदन अरूणाभ मुखड़ा वृन्दावन में दिखे हैं। मेघ जैसे श्याम प्रभु को किसी ने देखा है ? हां, सुन्दर तारों से घिरे काले आकाश जैसे उन्हें मित्रों के साथ वृन्दावन में देखा है। शंख चक एवं पीतांबरधारी प्रभु को किसी ने देखा है ? हां, कंधे पर लट लटकाये वृन्दावन में देखा है। बह्मा को बनाकर पभु ने जगत की

सृष्टि की। उस शुद्ध प्रभु को किसी ने देखा है ? हां, आसुरी पक्षी एवं आसुरी पशुओं का नाश करते वृन्दावन में देखा है।

प्रबंध संख्या 4 ः पेरूमाल तिरूमोळी

यह कुलशेखर आळवार का प्रबंध है जो **10** दशकों में है एवं इसमें कुल **105** पासुर हैं। समेकित गिनती में इसके पासुर **647** से **751** तक वर्णित हैं। पेरूमाल तिरूमोली का सारांश नीचे दिया जा रहा है। आपका अवतार स्थल केरल स्थित स्थान कोडंगल्लूर है। आपका अवतार माघ मास में पुर्नवसु नक्षत्र में हुआ एवं आप श्री कौस्तुभ के अंश माने जाते हैं। जिन दिव्य देशों की महिमा आपने सुनायी है वे हैं ः (i) श्रीरंगम, (ii) वेंकटम, (iii) वित्तुवक्कोडु, (iv) तिरूकन्नपुरम, (v) तिल्लै चित्रकूट यानी चिदंबरम।

✐ प्रारंभ के तीन दशकों में भगवान रंगनाथ के दर्शन की उत्कट इच्छा को दर्शाया गया है तथा प्रभु के भक्तों की भक्ति को सर्वथा उत्तम बताया गया है।

✐ चौथे दशक में वेंकटम पर्वत पर भिन्न रूपों में रहने की कामना करते हुए स्थायी रूप से भगवान के कक्ष के प्रवेश द्वार की सीढ़ी बनकर रहने की मनसा को आळवार संत ने बड़ी सहृदयता से प्रकट किया है।

✐ पांचवे दशक में केरल के वित्तुवक्कोडु के प्रभु की प्रार्थना करते हुए 'जीवात्मा एवं परमात्मा' के नौ 'आश्रय आश्रित' संवंध का बखान किया गया है।

✐ छठे दशक में गोपी भाव के आवेश में भगवान पर लांछना की वौछार का बहुत ही सुन्दर चित्रण है।

✐ सातवें दशक में कृष्ण के लालन पालन से दूर रहकर उनकी बाललीला के आनंद से वंचित रह गयी देवकी का विषाद चित्रित है। जबकि आठवें दशक में कौशल्या का आनंद वर्णित है जब बालावस्था में वे राम को लोरी सुनाकर सुलाती है।

✐ नवें दशक में राम के वन जाने पर शोकग्रस्त दशरथ की मार्मिक कथा का वर्णन है।

✐ अंतिम दशक में संक्षेप में संपूर्ण रामायण की कथा दी गयी है।

पहला दशक ः इसमें पासुर **647** से **657** तक **11** पासुर हैं। रंगनाथ भगवान की बलवती इच्छा दिखाते हुए कुलशेखर आलवार बताते हैं कि प्रभु के चरण से चिह्नित हजार श्वेत वाले शेषनाग पर श्रीरंगम में शयन करने वाले प्रभु का कब दर्शन होगा ? अपने हजारों मुंह से शेषनाग तथा चारों मुख से ब्रह्मा प्रभु की गाथा में तल्लीन हैं। प्रभु के गर्भ गृह के समक्ष मणितूण युगल खंभे के सहारा से प्रभु का दर्शन एवं यशगान को लालायित हैं। श्रीरंगम को रत्नजड़ित सुन्दर ऊंची अटारियों वाला नगर बताते हैं। केशिन घोड़ा का नाश करने वाले तथा पर्वत उठाकर गायों की रक्षा करने वाले प्रभु की

कब हम अर्चना कर सकेंगे ? तुम्बुरू नारदादि वाद्ययंत्र पर प्रभु की गाथा गाते हैं। कब हम मुकुट के साथ अपने सिर को प्रभु के चरणों पर रखेंगे ? पोन्नि कावेरी एवं कोल्लिदम नदियों से घिरे श्रीरंगम में प्रभु शेषशायी हैं। भक्तगन प्रतिदिन पांच बार प्रभु की अर्चना करते हैं। गरूड़ तथा आपके पांच आयुध आपकी सेवा में तत्पर हैं। श्रीरंगम में प्रभु दक्षिण दिशा को देख रहे हैं। कब हम भक्तों की समूह में आंसू बहाते जमीन पर लेटेंगे ?

<u>दूसरा दशक</u> ः इसमें पासुर **658** से **667** तक **10** पासुर हैं। इस दशक में भी रंगनाथ भगवान के दर्शन की बलवती इच्छा प्रकट की गयी है तथा प्रभु के भक्तों की भक्ति को उत्तम बताया गया है। एक बाण से सात वृक्षों को वेधने वाले तथा गाय चराने वाले प्रभु को भक्तगण 'रंगा' कहकर पुकारते हैं। इनभक्तों के चरणरज को सिर पर रखने के बाद गंगा जल से पवित्र होने की आवश्यकता नहीं है। भक्तों के प्रेमाश्रु से श्रीरंगम कीचड़ मय रहता है। यही कीचड़ ललाट के चंदन के लिये सर्वथा उपयुक्त है। दही दूध एवं मक्खन चट करने वाले प्रभु का हाथ यशोदा ने दंडस्वरूप बांध दिया था। भक्त आपको नारायण कह हृदय में धारण कर रोमहर्षित होते हैं। हम भी इन भक्तों की संगति से रोमहर्षक आनन्द का लाभ लेते हैं। इस जन्म तथा आने वाले जन्मों में हमारा हृदय प्रभु के प्रेम से अभिषिक्त रहेगा। आपकी अलौकिक झांकी का आनंद लेने वाले भक्तों के पवित्र चरणों का मैं हृदय से दास हूं। सुगंधित तुलसी की माला से विभूषित प्रभु के आनंद में मैं नृत्य करने का आनंद लेना चाहता हूं।

<u>तीसरा दशक</u> ः इसमें पासुर **668** से **676** तक **9** पासुर हैं। इस दशक में भी रंगनाथ भगवान के लिये अपनी ललक को दर्शाते हुए कुलशेखर आळवार सांसारिक सुखभोग से दूर रहना चाहते हैं। पूतना का स्तन पान करने वाले ही 'अरंगा' यानी श्रीरंगम के प्रभु हैं। आप हमारे सात जन्मों के नाथ हैं।

<u>चौथा दशक</u> ः इसमें पासुर **677** से **687** तक **11** पासुर हैं। ऊपर के तीन दशक में रंगनाथ भगवान के प्रति लालायित होकर अब आळवार संत वेंकटम प्रभु के पर्वत पर शाश्वत स्थान पाने की इच्छा प्रकट करते हैं। आपकी पहली इच्छा पुष्करिणी का पक्षी होने का है। दूसरी इच्छा में मछली बनना चाहते हैं। शिव इन्द्र ब्रह्मा आदि प्रभु के पास प्रवेश पाने के लिये प्रतियोगी बने रहते हैं। मछली बनकर प्रभु के फेंके थूक को लेकर तुरत भाग जाउंगा। तीसरी इच्छा में फूल बनकर प्रभु के चरणों पर अर्पित होना चाहते हैं। चौथी इच्छा में वेंकटम प्रभु के मंदिर के एक खंभे के पास तपस्या रत रहना चाहते हैं। पांचवीं इच्छा में पर्वत का शिला शिखर बनना चाहते हैं। छठी इच्छा में वेंकटम पर्व

त के फूल के बगानों से बहता एक जल स्रोत बनना चाहते हैं। सातवीं इच्छा में पैदल भक्त यात्रियों के मार्ग बनना चाहते हैं। _आठवीं इच्छा में प्रभु के प्रवेश द्वार का सोपान बनना चाहते हैं जिससे कि प्रतीक्षारत भक्तों के चरणों का लाभ मिल सके। अंत में कहते हैं कि वेंकटम पर्वत पर कोई भी चीज बनने को मैं तैयार हूं परंतु अब राजसुख एवं सांसारिक सुख से बिलकुल ही दूर रहना चाहता हूँ। _विभिन्न इच्छाओं के माध्यम से एक के बाद दूसरे की नश्वरता को ध्यान में रखकर अंत में पैदल यात्रियों का मार्ग या प्रवेशद्वार का पत्थर बनना चाहते हैं। पैदल भक्त कई मार्ग का अवलंब ले सकते हैं इसलिये अंत में प्रवेश द्वार का पत्थर पर ही मन टिक गया जिस पर सदा सभी भक्तों के चरण का आनंद मिलेगा। अंततः सबचीज भगवान पर ही छोड़ देते हैं कि कुछ भी बना दीजिये परंतु वेंकटम पर ही रखिये तथा पुनः सांसारिकता के भंवर में मत डालिये। तिरूमला के श्रीनिवास प्रभु दर्शन के लिये प्रवेश करने में सहायक सीढ़ी को 'कुलशेखर पड़ी' कहते हैं।

पाचवां दशक ः इसमें पासुर **688** से **697** तक **10** पासुर हैं। इस दशक में केरल राज्य के वित्तुवक्कोडु दिव्य देश के प्रभु का यशोगान है।इस स्थान को सुन्दर बागों से घिरे, गगनचुंबी महलों वाला, तथा मछलियों से भरे जल के खेतों से घिरे बताते हैं।अपने मार्ग का अवरोध हटाने के लिये विनती करते हुए प्रभु को मां से तुलना करते हैं। अपने को अच्छे कुल की नारी की तरह बताकर पति को सर्वस्व मानते हुए प्रभु को पति से संबोधित करते हैं। इसी तरह से प्रभु के साथ पुनः राजा प्रजा का, वैद्य रोगी का, समुद्री जहाज एवं उस पर आश्रित पक्षी का, सूर्य एवं कमल का, मेघ एवं पौधा का, सागर एवं नदी का, स्वामी एवं सेवक का संबंध बताकर अपना आश्रय प्रभु पर ही सुनिश्चित करते हैं।

ஃஃ

दिव्य देश **19**। वित्तुवक्कोडु

1। स्थान ः यह केरल में स्थित है और स्थानीय लोग इसे 'अंजु मूर्त्ति कोइल' यानि पांच मूर्त्तियों वाला मंदिर भी कहते हैं। बोलचाल की भाषा के कारण इसके अन्य नाम हैं ः त्तिरूविचीकोड, त्तिरूविंजीकोड, त्तिरूमिथकोड। शोर्नूर कोझिकोड रलवे लाईन के पट्टंबि स्टेशन से यह **3** कि मी पर है। यहां गुरूवायुर से भी आया जा सकता है क्योंकि यह स्थान गुरूवायुर शोर्नूर रोड पर है तथा शोर्नूर से **15** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः भगवान खड़े मुद्रा में दक्षिण की ओर देख रहे हैं। पेरूमाल को उयैवंदा या अभयप्रदन कहते हैं। तायर को पद्मपानी नाच्चियार तथा तीर्थ को चक

तीर्थ कहते हैं। यहां का विमान तत्वकंचन विमान है।

3। महिमा ः कहा जाता है कि अंबरीष ऋषि की प्रार्थना पर प्रभु यहां प्रकट हुए थे। यह केरल की सबसे लंबी भरतपुड़ा नदी के तट के पास है। अंबरीष ने व्यूह रूप में दर्श न की ईच्छा की थी इसीलिये बीच में विष्णु एवं चारों दिशाओं में प्रद्युम्न, अनिरूद्ध, संकर्षण, एवं परवासुदेव हैं। महाभारत की विभीषिका के बाद पांचो पांडव मन की शांति हेतु यात्रा के कम में यहां आये थे। कुलशेखर आलवार ने दस पासुर, **688** से **697** में, इस दिव्य देश की प्रशस्ति गाते हुए जीवात्मा एवं परमात्मा के शाश्वत संबंध को दर्शया है। भिन्न भिन्न पदों में जीवात्मा को पुत्र, पत्नी , प्रजा, रोगी, पक्षी, फूल, पौधा आदि के रूप में चित्रित कर उसका पेरूमल पर ही आश्रित होने की स्थिति को दिखाया गया है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी, **688** से **697** तक।

ःःः

छठा दशक ः इसमें पासुर **698** से **707** तक **10** पासुर हैं। इस दशक में गोपी की प्रेमिका भाव का प्रदर्शन है तथा कृष्ण प्रभु पर विभिन्न लांछनाओं को चित्रित किया गया है।_मिथ्यावादिता का आरोप लगाते हुए गोपी कहती है कि सर्दी में झूठे आश्वासन से यमुना के ठंढ़े बालू पर देर रात प्रतीक्षा करती रही।_सच्चाई यह थी कि किसी दही मथती किशोरी के साथ आप टिक गये तथा कई किशोरियों को भ्रमित कर किसी की ओर तिरछी देखते रहे। मन किसी और को दे दिया और आलिंगन किसी अन्य का करते देखे गये। एक सखी से संदेश भेज कर मैं प्रतीक्षा कर रही थी परंतु आप तो उसी सखी के साथ आनंद मनाने लगे।अंधेरी रात में किसी किशोरी के कंधे पर हाथ रखे तथा दूसरी पर अपना पीतांबर डाले हुए थे।एक और किशोरी को देखकर उसे आपने आंख से संकेत किया।मध्यरात्रि में हमें छोड़कर आप कहीं और चले गये थे। अब क्यों हमारी कमर पकड़ने आये हैं। अच्छा हो बाहर जाने का रास्ता देखिये। आप देर रात हमारे पास नहीं आये। पूर्व में मैं ठगी जा चुकी हूं। फूल के बाग में आने को कहा परंतु कहीं और पाये गये तथा पीतांबर से मुंह छिपा निकल भागे। फूलों से सजी किशोरियों के बीच मुरली बजाते यहां आये हैं। एक बार हमारे पास भी मधुर मुरली बजाइये न।

सातवां दशक ः इसमें पासुर **708** से **718** तक **11** पासुर हैं। इस दशक में कृष्ण की बाललीला से वंचित मां देवकी के मन की कसक को चित्रित किया गया है। मां देवकी कहती हैं कि लोरी गा कर कृष्ण को सुलाने का अवसर हमें न मिला। पलने में पैर फेंकते छत की ओर देखती नजर का आनंद हम नहीं ले सके। पिता के बारे में पूछने पर नंद की

ओर दिखाने वाली तिरछी उंगली का आनंद वसुदेव को नहीं मिला। मन की आंखों से बहुत कुछ कल्पना करती रही परंतु साक्षात आनंद से वंचित रही।सब आनंद की बड़भागी यशोदा ही निकली। आपका जूठन खाने का अवसर ही नहीं मिला। स्तन पान कराने के सौभाग्य से भी दूर ही रही। रस्सी से दंडित होते समय आपकी छवि देखने का अवसर तो केवल यशोदा के भाग्य में था। कालिय नृत्य, गोवर्द्धन धारण, एवं घड़ों पर नृत्यादि हम यह सब चूक गये। पूतना का पिसना भी हम नहीं देख पाये।हाय ! हमारे ये स्तन हमारे भार ही प्रमाणित हुए।

आठवां दशक ः इसमें पासुर **719** से **729** तक **11** पासुर हैं। इस दशक में कौशल्या भगवान राम को लोरी गा कर सुलाती हैं। कन्नपुरम दिव्य देश के प्रभु को संबोधित करते हुए कौशल्या राम को रावण का शिर काट कर उसका नाश करने वाला बताती हैं। कमल फूल पर सृष्टि रचवाने वाले आप प्रभु ने कठोर ताडका को बाण से बेध दिया। आप दशरथ के पुत्र तथा जनक के सम्मानीय जामाता हैं।राज भरत को देकर लक्ष्मण के साथ वन में जाने वाले आप ही हैं। बटपत्रशायी प्रभु ने ही कपिराज बाली का बध कर सुग्रीव को राजा बनाया। समुद्रमंथन से अमृत बांटने वाले प्रभु ने ही समुद्र पर पत्थर का सेतु बनाकर लंका का नाश किया। आपने ही देवों दानवों एवं मानवों को रचा। कावेरी तट पर समुद्र के रत्नों से प्रक्षालित ऊंची दीवारों वाले कन्नपुरम के नाथ काकुत्स्थ राम प्रभु ही हैं।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **20**। कण्णपुरम या तिरूकण्णपुरम

1। स्थान ः कन्नपुरम तमिलनाडु में नागपट्टिनम एवं नन्नीलम के बीच कावेरी के दक्षिण तट पर स्थित है। नन्नीलम से **7** कि मी पर स्थित है। नागपट्टिनम रोड पर अवस्थित तिरूपुक्कुर से **2** कि मी है। कुछ बसें तिरूपुक्कुर से निकल जाती हैं तथा कुछेक तिरूकन्नपुरम तक भी जाती हैं।कुंभकोनम में ठहराव रखकर यहां की यात्रा करना श्रेयस्कर है।

2। विग्रह स्वरूप ः यहां के उत्सव पेरूमाल सोवरीराजा पेरूमाल के नाम से जाने जाते हैं जबकि मूलावर नीलमेघ कहे जाते हैं। सोवरी का तमिल में शाब्दिक अर्थ सुन्दर लंबे केश से सजना है।एक बार अर्चक ने राजा को भूलवश भगवान का लंबे झूलते केश के बारे में बता दिया। राजा जब इस सच्चाई को जांचने गये तो भगवान ने अर्चक की लाज रखते हुए लंबे केश से अपने को सज्जित दिखा दिया। तब से ये सोवरीराजा पेरूमाल के नाम से विख्यात हो गये। भगवान खड़े मुद्रा में पूरब की ओर देख रहे हैं। भगवान

चतुर्भुज स्वरूप में नीचे का दायां हाथ शरणागति वरद मुद्रा में है जो तिरूमलय बाला जी से मिलता जुलता है। नीचे का बायां हाथ गदा पर टिका है। ऊपर दायें हाथ में प्रयोग मुद्रा का चक्र है। गर्भगृह में भगवान के बायें गरूड़ हैं तथा दायें दण्डक मुनि हैं। तायर को कन्नपुर नायकी तथा पद्मिनी कहा जाता है। विमान को उत्प्लावतक विमान कहते हैं। पुष्करणी को नित्य पुष्करणी, अनन्त सरस तथा भूतावदम तीर्थ कहते हैं। उत्सवमूर्ति का वर्ष में एकबार ही तिरूमंजन होता है अन्य दिन चरणारविंद को प्रक्षालित किया जाता है। मूलावर का नित्य तिरूमंजन होता है।

3। महिमा ः इस दिव्य देश की सबसे ज्यादा प्रशस्ति तिरूमंगै आळवार यानी कि परकाल स्वामी का है जो **105** पासुरों में वर्णित है। नम्माळवार के **11**, पेरिया यानी विष्णुचित्त स्वामी के **1**, आंडाल के **1**, एवं कुलशेखर आळवार के **11** पासुर हैं।

यह भगवान कृष्ण के पांच स्थलों में से एक है। अन्य चार हैं ः तिरूक्ककन्नंगुदी, तिरूकन्नामनगै, तिरूकपिस्थलम, एवं तिरूकोविलूर। कहा जाता है अष्टाक्षर मंत्र की यहां सिद्धि मिलती है। भगवान ने परकाल स्वामी को अष्टाक्षर मंत्र 'ॐ नमो नारायणाय' की दीक्षा यहीं दी थी। श्रीरंगम, तिरूवेंकटम, श्रीमूषणम, वनमामलै (तोताद्रि), सालग्राम (मुक्तिनारायण), पुष्कर, बद्रिकाश्रम एवं नैमिषारण्य में इस मंत्र का एक ही अक्षर वर्तमान है जबकि कन्नपुरम में आठों अक्षर प्रगटित हैं। भगवान ने विभीषण को अपना चलने का अलौकिक मुद्रा यहीं दिखाया था इसीलिये प्रत्येक अमावस के दूसरे दिन सवारी पर झांकी निकलती है जिसमें प्रभु के नृत्य की मुद्रा का दर्शन होता है। अर्द्धयाम में शयन के पूर्व पेरूमाल को 'मुनयोरदनम पोंगल' का भोग लगता है। इसे चावल का दो तिहाई दाल तथा दाल का आधा घी मिलाकर बनाया जाता है। मनयो तरयर भगवान के अनन्य भक्त थे और बिना भगवान को अर्पित किये कुछ भी नहीं ग्रहण करते थे। एक बार अन्यत्र चले जाने के कारण देर से रात में लौटे एवं उपर्युक्त तरीका से पोंगल बनाकर मन ही मन भगवान का स्मरण किये। दूसरे दिन भगवान का पट खुलने पर गर्भगृह में पोंगल का सुगंध व्याप्त था। तब से नित्य देर रात शयन काल में प्रभु को पोंगल अर्पित किया जाता है जिसके लिये रोज ताजा मक्खन से घी बनाया जाता है। वैशाख में मनायेजाने वाले ब्रह्मोत्सव में सातवें दिन भगवान दिन में विष्णु के स्वरूप में रहते हैं तथा रात में ब्रह्मा के स्वरूप में एवं दूसरे दिन प्रातः काल शिव के स्वरूप में दर्शन देते हैं। माघ के महोत्सव में तीर्थवारी समुद्र में होता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **71**। आंडाल, नच्चियार तिरूमोळी **535**। कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी **719** से **728**

तक। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1648** से **1747** तक, **2067 2078**, एवं शिरय तिरूमडल **2673**, तथा पेरिय तिरूमडल **2674**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3880** से **3890** तक।

ºº

नौवां दशक ः इसमें पासुर **730** से **740** तक **11** पासुर हैं। इस दशक में राम प्रभु के वनगमन पर दशरथ का शोक चित्रित है। पिता ने राजतिलक करना चाहा था परंतु कैकेयी ने जंगल का रास्ता दिखा दिया। दुष्टा मां की वचनों को मानकर रथ को लौटाते हुए भार्या सीता एवं भाई लक्ष्मण को लेकर वन में चले गये। तुम कैसे पैदल चलते हो ? मैं कर भी क्या सकता हूं ? कैसे पत्थर पर वृक्षों के नीचे नींद आती होगी ? शिव धनुष तोड़कर सीता का विजय पूर्वक वरण किया था। आज हाथी के जंगलों में घूम रहे हो ! नुकीले पत्थर से पैर लहू लुहान हुआ होगा ! तेज धूप में भूख से ग्रस्त होगे। किसके मुंह से 'पिता' शब्द सुनकर उसका शिर सुघूंगा ? फूलों का जूड़ा के बदले जटा जूट बांध कटि वस्त्र में जंगल चले गये। हे वशिष्ठ जी ! बताइये क्या यह उचित हुआ ? हे कैकेयी ! वेदों के सार प्रभु को जंगल भेज कर अब हमें भी आकाश वाले घर में भेज रही हो। परशुरामको धनुषविहीन करने वाले, कौशल्या को विलखती छोड़, मेरी प्रतिज्ञा को आप सच मान गये। सात जन्मों तक आप को हम पुत्र के रूप में देखना चाहते हैं। आज मैं भी आपके द्वारा त्यागे नगर को त्याग कर सुरपुर वाले आवास को जा रहा हूँ।

दसवां दशक ः इसमें पासुर **741** से **751** तक **11** पासुर हैं। इस दशक में सार संक्षेप में रामायण वर्णित है। अयोध्या में प्रकाशित होने वाले जगत के दीपक तिल्लैनगर चित्रकूट यानी चिदंबरम दिव्यदेश के प्रभु हैं। यह सुन्दर मुस्कारते वृक्षों से घिरा है तथा तीन हजार वैदिक ऋषियों से आप नित्य प्रशंसित होते हैं। आपने ताड़का का बाण से प्राण लेकर अन्य असुरों का नाश किया तथा विश्वामित्र की यज्ञाग्नि की रक्षा की। सीता के लिये आपने शिव धनुष तोड़ा तथा राजाओं के शत्रु परशुराम को धनुषविहीन कर दिया। चिदंबरम में आपको पूजने वाले की चरण वंदना है। कैकेयी के कहने पर वन गये। गुहन की सहायता से गंगा पार किये। चित्रकूट में भरत को पादुका देकर वापस भेजा। विराध का वध कर तमिल मुनि अगस्त्य से वर में अजेय धनुष प्राप्त किया। सूर्पनखा की नाक काट दी तथा खर दूषण एवं सुवर्ण हिरण का अंत किया। वैदेही से अलग होकर आप मूर्छित हो गये।जटायु को स्वर्ग भेजा एवं वाली का अंत कर सुग्रीव से मैत्री की तथा हनुमान से लंका दहन कराया। एक बाण से सागर को दो

भाग में बांटा। सागर पर सेतु बना लंका का नाश किया तथा रावण का अंत किया। विभीषण को राजा बनाकर सीता को प्राप्त किया। अयोध्या आकर प्रभु सिंहासनारूढ़ हुए। अगस्त्य मुनि ने रावण की पूरी कथा सुनायी। सीता के युगल पुत्र लव एवं कुश ने प्रभु के समक्ष रामकथा का गायन प्रस्तुत किया। जंबुक की हत्या कर प्रभु ने वैदिक ऋषियों को जीवित किया एवं आप ने अगस्त्य की दी हुई माला धारण की। शत्रुघ्न को भेजकर लवणासुर का अंत कराया। दुर्वासा के शाप के कारण भाई लक्ष्मण से अलग हुए। प्रभु ने सारे स्थिर एवं जंगम जीवों को वैकुंठ भेज दिया। चतुर्भुज रूप में महान तुमुल ध्वनि एवं देवों के स्वागत के साथ अपने शाश्वत निवास को लौट गये तथा दिव्यसिंहासन पर विराजमान हो गये। आप ही मारूति से सेवित तिल्ले चित्रकूट के प्रभु हैं।

ºº

दिव्यदेश **21**। तिल्लैनगर चित्रकूट या चिदंबरम

1। स्थान ः यह चिदंबरम में अवस्थित है। चिदंबरम शहर तमिलनाडु में है तथा चेन्नै से करीब **240** कि मी दक्षिण में कडलोर के पास है तथा विल्लुपुरम शिरकाळी तिरची रेलमार्ग पर एक स्टेशन है।

2। विग्रह स्वरूप ः जैसे श्रीवैष्णव जन श्रीरंगम को कोइल से संबोधित करते हैं वैसे ही शैवमतावलंबी चिदंबरम के नटराज मंदिर को कोइल कहते हैं। प्रसिद्ध नटराज शिव के कारण ही चिदंबरम प्रसिद्ध है। नटराज के मंदिर परिसर में ही एक स्वतंत्र सन्निधि में गोविंदराज भगवान का भोग भुजंगशयन वृहत मूलावर विग्रह है जो पूर्वाभिमुख है तथा नटराज अपने स्वतंत्र गर्भगृह में दक्षिणाभिमुख हैं। पुण्डरीकावल्ली लक्ष्मी तायर की अलग सिन्निधि है तथा गरूड़ स्तंभ आदि सभी विधिवत स्थापित हैं। तीर्थ को पुण्डरीक पुष्करणी तथा विमान सात्विक विमान कहा जाता है। उत्सव मूर्ति पार्थसारथी या देवाधिदेवन कहे जाते हैं जो चतुर्भुज रूप में बैठे हुए मुद्रा में हैं। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित गोविन्दराज मंदिर के गर्भगृह के ऊपर पांच कलश पंच महाभूत हैं। चार गोपुर चारो वेद हैं। **36** प्रवेश द्वार छत्तीसो स्मृतियां हैं। भगवान के हजार नाम **1000** खंभे वाला मंडप हो गया। अष्टाक्षर मंत्र ही गर्भगृह के प्रवेश तक पहुंचने की आठ सीढ़ियां हैं।

3। महिमा ः एक बार भगवान विष्णु के सौंदर्य से मुग्ध होकर शिव जी आनंद तांडव नृत्य करने लगे। यह देखकर तिल्लै अम्मा यानी पार्वतीजी भी आनंद में नृत्य करने लगीं। देखते देखते शिव एवं शिवा में नृत्य प्रतियोगिता का विषय वस्तु हो गया। दोनों ब्रह्मा के पास आये परंतु वे निर्णय न ले सके और उन्होंने क्षीरसागरशायी के पास जाने

को कहा। विष्णु भगवान ने दोनों को चिदंबरम में नृत्य प्रस्तुत करने को कहा। प्रतियोगिता में एक की प्रस्तुति दूसरे को दुहरा कर दिखाना था। सात दिनों तक प्रतियोगिता चली और शिवा का नृत्य दिन प्रति दिन सुन्दर होते चला गया। शिव ने विष्णु से सहायता मांगी जिसमें एक संकेत प्राप्त कर शिव ने अपना दायां पैर उठाकर नृत्य प्रस्तुत किया। नारी मर्यादा के कारण शिवा उसको दुहरा न सकीं और शिव से प्रतियोगिता हार गयीं। इसके बाद शिवजी के आग्रह पर नृत्य प्रतियोगिता के स्थान पर ही विष्णु भगवान अपना आवास मानकर टिक गये जो आज गोविंदराज जी के नाम से जाने जाते हैं। कहते हैं आदिशेष के अवतार पतंजल मुनि तथा व्याघ्रपाद मुनि के अनुरोध पर तिल्लै मूवायिरावर यानी **3000** भक्तों के साथ शिव ने गोविंदराजन की आनंद तांडव नृत्य से अर्चना की। इसीकारण से इसे तिल्लैनगर कहा जाने लगा। इस नृत्य को देखने के लिये सभी देवगन यहां एकत्र हुए थे। नाथमुनि एवं आलवंदार यामुनाचार्य स्वामी का अवतार स्थल कट्टु मन्नार कोइल यहां से पास में है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः पेरियाळवार, पेरियाळवार तिरूमोळी **322 323**। कुलशेखर आळवार, पेरूमाल तिरूमोळी **741** से **751** तक। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1158** से **1177** तक, पेरिय तिरूमडल **2674**।

ºº

प्रबंध संख्या **5** ः तिरूच्चन्द विरूत्तम

नाळायिरा के समेकित संख्यावली में पासुर **752** से **871** तक का **120** पासुरों वाला यह प्रबंध तिरूमझिसै आळवार यानी भक्तिसार स्वामी की रचना है। आपका अवतार स्थल चेन्नै के पास तिरूमझिसै नामक स्थान है। आप तायी यानी पौष मास में मगम यानी मघा नक्षत्र में अवतरित हुए। आप चक्र के अंश माने जाते हैं। भक्तिसार स्वामी को राजा द्वारा नगर निष्कासन का दंड देने पर कांचीपुरम के यथोक्तारी भगवान स्वयं पीछे पीछे नगर छोड़कर आ गये थे।इस प्रबंध के पासुर एक तरह के विशेष लय पर आधारित हैं। आपने जिन **17** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी है वे हैं ः (i) गोकुल, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) तिरूकोट्टियूर, (v) चेन्नै मयिलै तिरूवल्लीकेणी, (vi) तिरूकुरूंगुडी, (vii) कुडन्दै, (viii) वेग्का कांची, (ix) तिरूवल्लूर , (x) तिरूप्पेर, (xi) अनबिल, (xii) क्षीरसागर, (xiii) द्वारका, (xiv) तिरूकपिस्थलम (xv) अरंगम उर यानी श्रीरंगम, (xvi) उरगम कांची, (xvii) पडकम कांची।

पसुरों को दशक के विभाजन से संबोधित करने की रीति इस प्रबंध में लागू नहीं है। संक्षेप में इसके सार निम्नवत हैं।

✐ प्रारंभ में तत्व की बातें हैं ः मिट्टी जल वायु अग्नि एवं आकाश के गुणों के निर्मा णकर्ता प्रभु स्वयं इन सबों से पृथक हैं।

✐ गोकुल, एवं क्षीरसागर के अतिरिक्त अरंगम उर यानी श्रीरंगम दिव्य देश की सबसे पहले प्रशंसा करते हैं पासुर **800** से **806** तक। टत्पश्चात् कुडन्दै का मंगलानुशासन करते हैं। बीच बीच में वेंकटम की गाथा है। कांची के पडकम यानी पाडवदूत, उरगम यानी त्रिविकम भगवान, एवं वेग्का यानी यथोक्तकारी भगवान की लीला का बखान है।

✐ अंतिम में आळवार संत विश्वासपूर्वक कहते हैं कि अनेको जन्मों के प्रयास से प्रभु पकड़ में आ गये हैं। हृदय में आकर बस गये हैं तथा कर्मके बंधन कट गये हैं। आनंदमय स्थान की प्राप्ति हो गयी है।

प्रकृति में सर्वथा उपलब्ध मिट्टी हवा जल वायु आकाश एवं अग्नि के सहज गुणों को प्रदान करने वाले प्रभु को इन सब मूल पदार्थों से पृथक रहने के रहस्य को कौन समझ सकता है। आपने चारमुंह वाले ब्रह्मा को बनाया। आप शेषशय्या पर रहते हैं, पृथ्वी हाथी पर टिकी है, तथा मेरू नाग पर टिका है। यह सब आपकी ही लीला है। आप एक से दो हुए। निद्रा एवं इन्द्रियां बन गये। भूत वर्तमान भविष्य हुए। गोकुल में जन्म लिया। तीन आंख वाले शिव भी आपकी प्रशस्ति गाने में सक्षम नहीं हैं। वेदमंत्रों के साथ यज्ञाहुति आपको मिलता है। जैसे सागर की लहरें सागर में ही गिर जाती हैं उसीतरह स्थावर जंगम सभी आपसे निकलकर आप में ही लीन हो जाते हैं। ब्रह्मा शायद ही आपकी लीला के एक या दो शब्द जानते होंगे। समस्त जगत को धारण करते हुए उससे पृथक हैं। कोई नहीं कह सकता 'आप यही हैं'। सामवेद ने आपको चकधारी कहा है। मंदिरों में दृष्टिगत होने वाले आपके एक स्वरूप या सभी अनगिनत स्वरूपों का मंगल हो। आप गहरे सागर में क्यों रहते हैं ? गरूड़ की सवारी एवं उसके शत्रु को शय्या बनाना कौन सी लीला है ? सागर में आपने कच्छप का रूप धारण किया। हंस बनकर चारो वेद का उपहार दिया। बालक रूप में समस्त जगत को निगल कर बट पत्र पर सो जाते हैं। आपको तुलसी की माला प्रिय है तथा लक्ष्मी को वक्षस्थल पर रखते हैं। श्वेत केशरी बनकर हिरण्य राक्षस का अंत किया। आपने तीन कदमों की भिक्षा मांगी परंतु छल करके दो ही कदमों में सबकुछ ले लिया। गाय चराने वाले आप सच एवं झूठ के अनोखा मिश्रण हैं। सागर बनाकर इसमें शयन किया तथा इसका मंथन किया एवं इस पर सेतु बांधा। नश्वर शरीर से प्रकट होकर जगत को प्रेम का मार्ग दिखाया। बाण चलाकर कुनी की रीढ़ को टेढ़ी कर दी। बाण से समुद्र सुखा दिया। बाण से लंका के

राक्षसों का अंत कर राज्य विभीषण को दे दिया। आनंद से आपकी गाथा गाने वाले को आप अपने पास बुलाते हैं। पहले मछली हुए फिर कछुआ हुए। शकट का नाश किया। हवा में उड़ने वाली पूतना का नाश किया। गोप नारियों का दूध पिया, मिट्टी खाये, एवं मक्खन खाये। दुष्ट हाथी, छद्म वेष वाले घोड़ा वृक्ष एवं बछड़े का नाश किया। पथरीले पर्वतों को लांघने वाले आपने पर्वत को उठा लिया। आपदाग्रस्त हाथी की रक्षा की एवं मदमत्त हाथी का नाश किया। वृषभों का नाश कर नप्पिनाय का वरण किया।

लाल मुखवाले भस्मधारी शिव के नरखोपड़ी भिक्षापात्र को कमल के रक्त से भर दिया। चारो युग के चार रंग हैं ः दूध सा श्वेत, तपते स्वर्ण का लाल रंग, चमकते काई का पीला रंग, एवं काया फूल का श्यामल रंग। यह नीचात्मा धन नहीं अर्जन किया तो क्या हुआ ? आपके श्रीचरणों तक कैसे पहुंचे एवं जीवन मरण के चक्कर से कैसे निवृत हों? आप समय तथा स्थान की सीमा से परे हैं। आप अलौकिक हैं। पर्वत पर खड़े हैं, आकाश में बैठे हैं, समुद्र में सोये हैं, तथा पृथ्वी पर चलते हैं। चंदन मिलने पर कुनी की रीढ़ सीधी कर दी। आप अरंगम यानी श्रीरंगम में रहते हैं। कुडन्दै (कुंभकोणम के सारंगपानी मन्दिर को कुडन्दै कहते हैं) में आप शयन करते हैं एवं वैदिक ऋषियों के वरदान हैं। कालनेमी बक्रदंत एवं मुर के नाश करने वाले हैं। वेंकटम के बांस भी आपकी प्रार्थना करना जानते हैं। कावेरी के मध्य शयन करने वाले कुडन्दै के समतल में शयन करते हैं। एक शब्द तो बोलिये। कांची के पडगम पांडव दूत बैठे हैं। कांची के उरगम उलगनंदा त्रिविक्रम खड़े हैं। कांची के वेग्का के यथोक्तकारी शयन कर रहे हैं। पुराकाल में मैं अपनी सृष्टि से पहले यानी आत्मा सृजन से पूर्व शून्य था परंतु सृष्टि के बाद से पडगम, उरगम, एवं वेग्का सब याद हैं एवं मेरे हृदय में हैं। इस धरा पर सब नश्वर हैं। कर्म के अथाह सागर से पार करने के लिये तुलसी माला वाले प्रभु का स्मरण करो। भाला फरसा त्रिशूल लाठी वाले देवगन बाणासुर के डर से आकाश में भाग गये। चक्रधारी प्रभु ने उसका नाश किया। ब्रह्मा के पुत्र भस्म लपेटे अर्द्धनारीश्वर शिवजी अपने बच्चों एवं पत्नी के साथ चक्र की कृपा से बच सके। ऐसे देवों को जन्म मरण से छुटकारा दिलाने का अधिकार नहीं है। प्रभु ने एक बाण से सात वृक्षों को वेधा तथा एक ही बाण से आपने बाली का नाश किया। सागरशायी प्रभु का यश गाने वाले पूर्व के कर्म से मुक्त हो जाते हैं। इन्द्रियों का दमन करो एवं हृदय का कपाट खोल दीपक जलाओ एवं प्रभु को प्राप्त करो। प्रभु चौवीस इक्कीश एवं बारह आदित्य हैं। अष्टाक्षर का स्मरण गगन का स्वामित्व दिलाता है। आपके दस अवतार हमारे प्रति

आपके प्रेम का प्रदर्शन है। आप पर सबकुछ न्योछावर करने वाले का आनंदमय जीवन प्रतीक्षा करता है। आप हमारे चेतन से परे हैं। आपने नाग के फनों पर नृत्य किया। आप पर सदा ध्यान लगाने वाले भी मुक्त नहीं होते। यह सब क्या लीला है ? वीर अर्जुन का सारथी बन आपने दुष्ट राजाओं से मुक्ति दिलायी। आप आश्वासन देते हुए कहिये 'डरो मत'।कुछ बताइये कि कैसे हमारे इस नश्वर शरीर से मुक्त होंगे। जिसने भी आपका नाम लिया या आपसे झगड़ा किया आपने सबों का कल्याण किया। रावण गलत काम कर राम प्रभु का कोप भाजन हुआ। यम देवता को भी सोचना चाहिये कि वे अगर हमारा जीवन लेना चाहेंगे तो उन पर क्या बीतेगा। जब हृदय प्रभु पर टिक जायेगा तो पृथ्वी पर लौट कर नहीं आना होगा। प्रभु एक कहानी सुन लीजिये। हमारी श्रद्धा के कीचड़ से भक्ति का एक लता निकला। शक्तिशाली श्रीचरणों पर वलय वनकर चढ़ गया।अब इसको फैलने का स्थान मिल गया है तथा आपके ऊपर छत्र की तरह छा गया है। अनगिनत जन्मों के प्रयास से प्रभु पकड़ में आये हैं। मेरे हृदय में अब बस गये हैं। अब हमारी आत्मा सच में आपकी कृपापात्र बन गयी है।कर्म के बंधन टूट गये एवं आत्मा को आनंदमय स्थान प्राप्त हो गया।

°°

दिव्यदेश **22**। पडकम या पांडवदूत कांचीपुरम

1।स्थानः सम्मान में तमिल में सब दिव्यदेशों के पूर्व 'तिरू' शब्द का प्रयोग होता है। तिरूपडकम कांचीपुरम नगर के मध्य में रेलवे स्टेशन से **1** कि मी पर एकाम्बरेश्वर मंदिर के पास अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर बैठे हुए मुद्रा में पूर्वाभिमुखी हैं।बायां पैर आसन से नीचे लटकता है जबकि दायां पैर मुड़कर आसन पर स्थित है। मूलावर का पाषाण विग्रह **28** फीट ऊंचा है तथा भगवान द्विभुजी स्वरूप में हैं। दायां हाथ अभय मुद्रा में (वरदराज भगवान की तरह) तथा बायां हाथ चरणाश्रय की ओर इंगित है (ट्रिप्लीकेन चेन्नै के पार्थ सारथी भगवान की तरह)। तायर सत्यभामा एवं रूक्मिणी की पृथक सन्निधि है।चक्रत आळवार यानी सुदर्शन चक्र की अलग सन्निधि है। तीर्थ को मत्स्य तीर्थ कहते हैं तथा विमान को बत्तरा या वेदकोटि विमान कहते हैं।

3।महिमा ः वैशम्पायन मुनि से भागवत कथा सुनकर जन्मेजय ने भगवान का पांडव दूत के रूप में दर्शन के लिये कांची में एक विशेष यज्ञ किया एवं तत्पश्चात भगवान ने विशाल पांडव दूत के रूप में दर्शन दिया। कथा है कि जब भगवान युद्ध टालने हेतु पांडवों की ओर से दूत बनकर हस्तिनापुर पहुंचे तो आपको अपमानित करने के

दृष्टिकोण से दुर्योधन ने एक गडढ़ा खुदवाकर छदमरूप से उसके ऊपर सभागार में आपका आसन स्थापित किया। उस गडढ़े में मल्लयोद्धा भी छिपाये गये थे जो भगवान की हत्या के लिये प्रेरित थे। अन्तर्यामी भगवान ने सभागार में अपने आसन पर इतना विशाल रूप बनाया कि गडढ़ा इतना छोटा प्रमाणित हुआ कि भगवान को कोई छति नहीं पहुंच सकी। यज्ञमूर्ति एक विद्वान अद्वैतवादी थे। रामानुज स्वामी से शास्त्रार्थ में पराजित होकर यज्ञमूर्ति रामानुज स्वामी के शिष्य बन गये और रामानुज स्वामी ने यज्ञमूर्ति को अरूलाल पेरूमाल कहकर सम्बोधित किया। कांचीपुरम में पडकम यानी पांडवदूत मंदिर में अरूलाल पेरूमाल ने लंबे समय तक निवास किया था।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **814 815**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1541**। भूत आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2275**। पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि **2311**।

ஃஃ

दिव्यदेश **23**। वेग्का या यथोक्तारी भगवान कांचीपुरम

1। स्थान ः अष्टभुज दिव्यदेश के पास यथोक्तारी भगवान का मंदिर अवस्थित है जो बरदराज पेरूमाल के मंदिर से लगभग **2** कि मी पश्चिम में है।

2। विग्रह स्वरूप ः भगवान द्विभुजी स्वरूप में पश्चिमाभिमुख होकर शयनावस्था में हैं। आपको 'सोन्नावन्नम सैदा पेरूमाल' भी कहते हैं। तीर्थ को पोय्गै पुष्करणी तथा विमान को वेदसार विमान कहते हैं। इसी पुष्करणी के कमल पुष्प में सरोयोगी यानी पोय्गै आळवार का अवतार हुआ था। तायर को कोमलवल्ली कहते हैं जो एक अलग सन्निधि में स्थित हैं। यहां आण्डाल की एक पृथक सन्निधि है तथा पोय्गै आळवार भी एक पृथक सन्निधि में पूजे जाते हैं। भगवान के गर्भ गृह में सरस्वती आपके चरण के पास विराजती हैं।

3। महिमा ः कहते हैं ब्रह्मा के यज्ञ में विघ्न डालने के लिये सरस्वती ने असुरों का आह्वान किया था। परिणाम स्वरूप वेगवती नदी में भीषण बाढ़ आयी जो ब्रह्मा के यज्ञस्थल को डूबाने के लिये पर्याप्त थी। भगवान ने शयनावस्था में बेगवती के प्रवाह को रोक दिया एवं ब्रह्मा का यज्ञ सफलतापूर्वक संपादित हुआ। आपको 'वेगवती अन्नै' भी कहते हैं जो अपभंश होकर 'वेग्का' या 'तिरूवेग्का' हो गया। आज के दिन वेगवती नदी दृश्यमान नहीं है।

पोय्गै आळवार के प्रिय शिष्य कण्णिकण्णन को जब राजा ने नगर छोड़ने का आदेश दिया तो पोय्गै आळवार ने भी अपने शिष्य के साथ नगर छोड़ दिया। पूरी कथा पोय्गै

आळवार के वैभव वाले भाग में द्रष्टव्य है। आळवार को नगर छोड़ते देख भगवान ने भी उनलोगों का अनुगमन किया। परिणामतः अपमानित होकर राजा ने कण्णि को नगर में लौटने का अनुरोध किया। उसके साथ आळवार एवं भगवान भी लौट आये। इसी कारण से भगवान को 'यथोक्तारी' कहते हैं। लौटने के उपरांत भगवान ने शयनमुद्रा दूसरी करवट कर ली एवं दक्षिण को शिर किये बायें करवट आप पश्चिम की ओर देखते हैं। जिस रात को भगवान पोय्गै आळवार तथा कण्णिकण्णन के साथ कांची से बाहर सोये थे वह स्थान आजे के दिन कांची के पास गांव है और 'ओरीयक्कै' के नाम से जाना जाता है। इसका शुद्ध नाम 'ओरीरावु यक्कै' है जिसका तात्पर्य है जहां एक रात सोये।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **814 815**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1854 2059 2064 2065** एवं शिरय तिरूमडल **2673,** तथा पेरिय तिरूमडल **2674**। पोय्गै आळवार, मुदल तिरूवन्दादि **2158**। पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि **2307 2315 2343 2345 2357**। नम्माळवार, तिरूविरूत्तम **2503**।

24 से **27**। उलगलंदा ः एक साथ चार दिव्य देश कांचीपुरम

'पेरागम एवं उरगम' 'नीरगम' 'कारगम' एवं 'कारवन्नम'

स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु में कांचीपुरम में कामाक्षी मंदिर के पास रेलवे स्टेशन से **2** कि मी पर अवस्थित है। एक ही परिसर में चार दिव्य देश हैं। त्रिविकम स्वरूप को 'उलगलंदा' कहते हैं जो 'पेरागम एवं उरगम' भी कहे जाते हैं। तीन पृथक पृथक सन्निधि के स्वरूप को 'नीरगम' 'कारगम' एवं 'कारवन्नम' कहते हैं और ये तीनों भी उलगलंदा की तरह पूज्य दिव्यदेश हैं।

24। विग्रह स्वरूप ः मंदिर प्रागंण में प्रवेश करते ही त्रिविकम भगवान की सन्निधि का सामने दर्शन होता है जहां उलगलंदा पेरूमाल खड़े हैं। **35** फीट ऊंचा विग्रह पश्चिमाभिमुख हैं तथा दोनों हाथों को पूर्णतया क्षैतिज रूप में फैलाये हुए बायें चरण को जमीन से ऊपर जमीन के समानांतर स्थित करके दर्शन देते हैं। बायें हाथ की दो निकली हुई उंगलियां यह संकेत देती हैं कि भूलोक एवं स्वर्गलोक दो पग में माप लिया।दायें हाथ की एक उंगली तीसरे पग के लिये 'कहां स्थान है' प्रश्न का संकेत करती है। मूलावर को उलगलंदा तथा उत्सव विग्रह को परगतन कहते हैं। परगतन एवं उरगतन दोनों एक ही दिव्यदेश के प्रतीक हैं जबकि सन्निधियां पृथक पृथक हैं। आपके विमान को श्रीकारा विमान कहते हैं। तायर को अमृतावल्ली कहते हैं।

महिमा ः महाबली भक्त प्रह्लाद के प्रपौत्र हैं और आपने अपने यज्ञ में वामन भगवान को तीन पग जमीन देने का संकल्प लिया था। बामन भगवान ही त्रिविक्रम रूप में फैल गये और दो ही पग में धरा तथा आकाश सबको माप दिया। त्रिविक्रम भगवान को उलगलंदा या पारगतन कहते हैं। तीसरे पग के बदले बली ने अपना शरीर समर्पित कर दिया। प्रभु ने बली को अपने चरण से दबाकर पाताल भेज दिये और वहां का राजा बना दिया। बली भगवान के विराट स्वरूप को नहीं देख सका था इसलिये उरगतम यानी आदिशेष बनकर भगवान ने बली को दर्शन दिया। उरगतन का तिरूमंजन कराके पायसम अर्पित करने से संतानलाभ अवश्य होता है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, तिरूचन्दविरूत्तम **814 815**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **991 2064 2069** एवं शिरय तिरूमडल **2673,** तथा पेरिय तिरूमडल **2674**।

25।मंदिर के दूसरे प्राकार में **16** खंभो वाले सुन्दर मंडप के पीछे नीरगतन प्रभु की सन्निधि हैं जो एक पृथक दिव्यदेश है। जगदीश्वर विमान के नीचे पेरूमाल को भी जगदीश्वरा पेरूमाल कहते हैं। आप दक्षिणाभिमुख खड़े अवस्था में हैं। यहां मात्र मूलावर विराजमान हैं उत्सव मूर्ति नहीं हैं और न तो विमान विराजमान है। तायर को नीलमंगै कहते हैं। मार्कण्डेय मुनि को प्रलय का दृश्य दिखलाने के लिये आप प्रत्यक्ष हुए थे ।

दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **2059**।

26।तीसरी सन्निधि में कारगम पेरूमाल का दिव्य देश है और आपको करूणाकर पेरूमाल कहते हैं। रम्य विमान के नीचे आप आदिशेष पर बैठे हुए उत्तराभिमुख हैं तथा बायें पैर मोड़े हुए हैं एवं दायां पैर नीचे लटक रहा है। पदमामणि तायर आपकी सहभागिनी हैं।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **2059**।

27। चौथी सन्निधि में कारवन्ना पेरूमल हैं जो नवनीत चोर भी कहे जाते हैं। पुष्पक विमान के नीचे आप उत्तराभिमुख वरदराज भगवान के स्वरूप में श्रीदेवी एवं भूदेवी के खड़े हैं। कोमलवल्ली तायर आपकी सहभागिनी हैं।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **2059**।

ःःः

<u>प्रबंध संख्या **6** ः तिरूमालै</u>

872 से **916** तक **45** पासुरों वाला यह प्रबंध तोंडराडिप्पोडि आळवार की कृति है। आप विप्रनारायण एवं भक्तांघ्रिरेणु स्वामी आदि नामों से भी जाने जाते हैं।आपका

अवतार मार्गळि यानी मार्गशीर्ष माह के 'केत्तै' यानी 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में है। आप भगवान के वनमाला के अंश से अवतरित हैं। श्रीरंगम में तुलसी फूल के उद्यान में ही निवास करते हुए आप रंगनाथ प्रभु की सेवा के लिये नित्य माला बनाकर मंदिर में अर्पित करते थे। एक सुंदरी के सौंदर्यजाल में आप ऐसा उलझ गये थे कि भगवान रंगनाथ के हस्तक्षेप से आपका उद्धार हुआ। इस प्रबंध के अतिरिक्त आपका दूसरा एक प्रबंध है जिसे 'तिरूप्पळिळयळुच्चि' कहते हैं और यह रंगनाथ भगवान का सुप्रभातम के रूप में प्रसिद्ध है।

तिरूमालै का सारांश निम्नवत ह।

✐ यह प्रबंध श्रीरंगम के प्रभु के नाम से प्रारंभ किया गया है तथा इसमें इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के उत्साह का प्रदर्शन है।

✐ मुंडा एवं शाक्य की नास्तिकता की चर्चा पासुर **879** में है।

✐ श्रीरंगम में प्रभु का मुकुट पूर्व की ओर, चरण पश्चिम की ओर, पीठ उत्तर दिशा में, तथा दृष्टि दक्षिण दिशा में है। पासुर **890**। वर्तमान में मुकुट पश्चिम की ओर है तथा चरण पूर्व तरफ है।

✐ आळवार संत ने अपने को तुलसी की माला बनाने वाला कहा है।

✐ आपकी रचना में मात्र श्रीरंगम दिव्य देश की प्रशस्ति गायी हुई है।

तीनों लोकों का सृजन करने वाले प्रभु इसे क्षण में निगल जाते हैं। आपके नाम के प्रभाव से इन्द्रियों पर हम विजय पाये तथा यमदूतों के सिर पर पैर रखकर विजयी हो गये हैं। हमें मात्र गोपवंश के नाथ की प्रशस्ति गाने की कामना है जिसके आगे इन्द्र का राज्य भी तुच्छ है। एक सौ वर्ष की अगर आयु मानी जाय तो आधी आयु नींद में गुजर जाती है तथा बचे का आधा वचपन रोग भूख एवं बुढ़ापे में व्यतीत हो जाती है। हमें अब और जन्म की इच्छा नहीं है। तीन अक्षरों के 'गोविन्द' नाम से घोर पापी खात्तिरबंदु कल्याण को प्राप्त हुए। श्री रंगम के प्रभु की सुलभता से उपलब्ध रहने पर पुनर्जन्म क्यों होगा ? नीच लोग भोजन एवं नारी की चिंता में लगे रहते हैं। भक्ति के आनंद में नाचिये तथा प्रभु की सेवा में रत रहिये। माया के कारण मन अस्थिपंजर शरीर में लगा रहता है। मुंडा एवं नास्तिक शाक्य लोग प्रभु के बारे में घृणित प्रचार करते हैं। धरा पर गाय चराने वाले प्रभु की पूजा करो। अथम लोगों के दुष्प्रचार में मत फंसो। सर्वव्याप्त प्रभु करूणावश श्रीरंगम में प्रकट हुए हैं। धनुष से सागर को चीरकर आपने राक्षसराज का अंत किया। आपके नाम का इतना माहात्म्य है कि यम एवं मुद्गल के संवाद से नरक स्वर्ग में बदल गया।

श्रीरंगम सुन्दर बागों से घिरा है जहां कोयल की कूक भक्ति की मिठास से भरी होती है। अभक्तों को खिलाकर मोटा बनाने से तो अच्छा है कि कुत्तों को पालो। सत्यवादियों के लिये आप सत्य हैं एवं मिथ्यावादियों के लिये मिथ्या हैं। हमारे जैसे नीच के लिये आप गरूड़ चिह्न धारण करने वाले सम्राट हैं। चेतन के माध्यम से जो उन्नति चाहते हैं उनकी शंकाओं को दूर कर आप प्रकट हो जाते हैं। चोर, दुष्ट, एवं मत्स्य नयना सुंदरी के जाल से प्रभु ने बाहर निकालते हुए कहा 'मेर पास आओ'। ध्यान, सेवा, नमन आदि से रहित मेरे कठोर हृदय को प्रभु ने द्रवित कर प्रेम से सरोबोर कर दिया। श्रीरंगम में आपका मुकुट पूर्व दिशा में है, आपके चरणारविंद पश्चिम की ओर फैले हैं, आपकी पीठ उत्तर की तरफ है, एवं आपकी आंखें दक्षिण दिशा में लंका की ओर देख रहीं हैं। सांसारिक वस्तु पर बात करते रहने से क्या लाभ ? प्रभु तो शुद्धात्माओं के हृदय में रहते हैं। मैं तो पुजारी भी नहीं तथा अग्नि में तीन बार होम भी नहीं देता। आपके दिव्य चरणों पर तीन बार पुष्प भी अर्पित नहीं करता। आपके लिये मेरे पास उपयुक्त शब्द भी नहीं हैं। हाय मेरा जन्म क्यों हुआ ? मैं तो उस गिलहरी जैसा भी नहीं जो बालू में लेटकर रोयें में फंसे बालूकणों को ढ़ोकर सेतुनिर्माण में सहायक बना। यहां कोइ नहीं जिसे अपना कहूँ। कौन मेरी रक्षा करेगा? सुहृदों के बीच समुद्रके जल की तरह अवांछनीय हूं। नारियों के लिये मैं अविश्सनीय हूँ। नारियों की जाल से आपने उबारा। आपके सामने कैसे निर्लज्ज होकर खड़ा हूँ। आपकी सेवा का केवल स्वांग भरता हूँ। संसार के ऊपर से छलांग लगाने वाले त्रिविकम के अतिक्ति मेरा कोई है भी नहीं। मृगनयनी के जाल में संघर्ष कर रहा था तो आपने उद्धार किया। आप उच्च कुल वाले वेद में पारंगत परंतु सेवाभाव से हीन को छोड़ निम्न कुल वाले भक्त से प्रसन्न रहते हैं। घोर हत्यारा एवं पापी भी आप पर चित्त लगा देता है तो आप उद्धार कर देते हैं। दुष्कर्मी भी अगर 'तुलसी की माले वाले प्रभु का' जयजयकार कर मुझे अपना जूठन भी दे तो मेरे लिये पवित्र भोजन होगा। अंतिम पासुर में आळवार संत ने अपने को तुलसी की माला बनाने वाला कहा है।

<u>प्रबंध संख्या **7**ः तिरूप्पळिळयळुच्चि</u>

यह प्रबंध भक्तांघ्रिरेणु स्वामी ने भगवान को प्रातः जगाने के लिये गाया है। इसमें **917** से **926** तक **10** पासुर हैं तथा सभी पासुरों का भावार्थ नीचे दिया गया है।

1। उषाकाल के आगमन से अंधकार दूर हो गया है एवं पूरब के शिखर पर सूर्य का उदय हो चुका है। सर्वत्र ढ़ेर सारे फूल खिल चुके हैं। अपने मार्ग पर तेजी से बढ़ते हुए राजा एवं देवगण आपके द्वार पर आचुके हैं। उनके हाथी एवं नगाड़ा से बिजली

कड़कने तथा समुद्र के लहरों सा गर्जन की आवाज सुनायी दे रही है। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **917**

2 । पूरब की हवा मंद गति से मुल्लै के सुगंध को सर्वत्र विखेर रही है। प्रस्फुटित कमल में वास करने वाली हंस की जोड़ी ओस से भींगे अपने पंखों को झाड़ते हुए जाग चुकी है। ग्राह के मृत्यु दायी जबड़े से गजेन्द्र की रक्षा वाले अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **918**

3 । प्रभात कालीन ज्योति क्षितिज पर फैल रही है। तारे छिप रहे हैं। शीतप्रदायी चंद्रमा फीका पड़ रहा है। ताड़ के सुनहले एवं कोमल कोपल हवा से उड़ रहे हैं। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **919**

4 । चरवाहे की बांसुरी एवं गायों के गले की घंटी की आवाज एक दूसरे से मिलकर सब जगह फैल रही है। खेतों में भौंरे गुंजायमान होने लगे। देवों के नाथ ! कुल समेत लंका का नाश करने वाले, ऋषियों के यज्ञ रक्षक, अयोध्या के राज्याभिषक्त नाथ ! अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! मेरे स्वामी ! प्रार्थना है, जागिये । **920**

5 । बागों में पक्षिगन चहचहा रहे हैं। रात बीत चुकी है। दिन निकलने वाला है। समुद्र की लहरें गरजने लगी हैं। भौंरे गुंजायमान होने लगे। देवगन कदंब की माला से सेवा करने के लिये आ चुके हैं। लंकानरेश विभीषण से पूजित अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **921**

6 । ग्यारह आदित्यों के स्वामी रत्नों से आभूषित रथ वाले यह सूर्य देव हैं। मोर की सवारी करने वाले यह छःमुख वाले सुब्रमन्यम हैं। प्रसन्नचित्त मरूत एवं वसुगन नाचते गाते आपके द्वार के समक्ष बड़े कक्ष में भीड़ किये हुए हैं। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **922**

7 । यह भारी जमाव देवों का है। यह मुनियों एवं मरूतों का समूह है। इन्द्र अपने हाथी पर चढ़कर आपके मन्दिर के समक्ष आ चुके हैं। यह सुन्दरजन की भीड़ है तथा यह विद्याधर का समूह है। यक्षगन आपके चरणों के ध्यान में खोये हैं। कहीं खड़े होने की भी जगह नहीं है। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **923**

8 । देवों के मधुर पाठ, सामने खड़ी महान गाय कपिला, आपके सुन्दर स्वरूप के दर्श न के लिये पैरों के अगूंठे पर खड़े तथा ऊंचे उठाये सुन्दर दर्पण के साथ मुनिगन। देवलोक के गायक तुम्बुरू एवं नारद प्रवेश कर चुके हैं। कक्ष के अंधकार को दूर करते प्रभापूर्ण सूर्य उपस्थित हो चुके हैं। (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **924**

9।एकतार वाले वाद्ययंत्र, ढ़ोल, मजीरा, बांसुरी, एवं झाल की ध्वनि सर्वत्र सुनायी दे रही है। सारी रात किन्नरगन, गरूड़ , एवं गंधर्वगन यशगान करते रहे हैं। महान ऋषिगन, देवजन, यक्षगन, चारण एवं सिद्ध समूह आपके चरण की पूजा के लिये लालायित हैं। इनलोगों पर कृपा करने के लिये,अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **925**

10।कमल बहुतायत में खिल चुके हैं। सूर्य समुद्र से उदय ले चुका है। कृश कटि एवं सुन्दर केश की लट वाली किशोरियां अपने बाल एवं कपड़े सुखाती नदी से बाहर आ चुकी हैं।कावेरी से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! फूल की टोकरी ढ़ोने वाले इस निम्न सेवक तोण्डर अडिप्पोडि पर आपने कृपा करके भक्तों की सेवा का अवसर दिया है। प्रार्थना है प्रभु, जागिये । **926**

प्रबंध संख्या **8**ः अमलनादिपरान

मुनिवाहन स्वामी या योगीवाहन स्वामी या तिरूप्पाण आळवार के नाम से प्रसिद्ध संत द्वारा विरचित यह प्रबंध रंगनाथ भगवान के पाद से केश पर्यन्त सौंदर्य का चित्रण करता है। मुनिवाहन स्वामी का अवतार स्थल उरैयूर है जो श्रीरंगम से **3** कि मी पर दक्षिण दिशा में अवस्थित है। आपका अवतार कार्तिक माह के रोहिणी नक्षत्र में श्रीवत्सम के अंश से हुआ है।

आप श्रीरंगम में पाण यंत्र पर भगवान के गीत गाते मंदिर परिसर के बाहर ही रहते थे। एक बार सौभाग्यवश आपके स्वभाव से द्रवित होकर मुख्य अर्चक ने अपने कंधे पर आपको उठाकर मंदिर में गर्भगृह तक लाया। दिव्य विग्रह की छटा देखते ही आप के मुख से ये पद फूट पड़े जो दिव्य प्रबंध का एक प्रमुख भाग है। प्रायः इसका पाठ भगवान के सम्मुख नित्यानुसंधान में किया जाता है।

इस प्रबंध के दस पासुर **927** से **936** तक हैं। आपने प्रारंभ के दो पासुरों में वेंकटम के प्रभु को श्रीरंगम का प्रभु बताया है तथा आपकी रचना में इसी दो दिव्य देशों का उल्लेख है।

✐ प्रथम प्रार्थना चरणारविन्द का है। दूसरी प्रार्थना त्रिविक्रमावतार के ऊंचे मुकुट की है। इसके बाद वदन पर सुशोभित लाल वस्त्र की प्रशंसा है। तत्पश्चात् सुन्दर नाभि कमल एवं उसपर आसीन ब्रह्मा के मनोहारी दृश्य का वर्णन है।

✐ आकर्षक कमर बन्द के बाद आळवार संत अपनी महान तपस्या के फलस्वरूप प्रभु के सुन्दर वनमाला के दर्शन के सौभाग्य की सराहना करते हैं।

✐ शिव जी के प्रति किये गये प्रभु के उपकार का स्मरण करते हुए आळवार संत प्रभु

की सुन्दर ग्रीवा का वर्णन करते हैं।
✐ इसके बाद सुन्दर होंठ, मुखमंडल एवं मदमत्त आंखों का वर्णन है।
✐ पुनः हार एवं माला का अवलोकन करते हुए संपूर्ण शरीर की अलौकिक छटा का वर्णन है।
✐ अंत में आंखें बंद कर समस्त छटा का मानसिक आनंद लेते हुए आळवार संत किसी अन्य वस्तु को देखने से बचने के लिये आंखे बन्द ही रखना चाहते हैं।
सभी पासुरों के भावार्थ निम्नांकित कंडिकाओं में प्रस्तुत हैं।

1। प्रथम पूर्ण प्रभु देवताओं के प्रकाशमय स्वामी सुगंधित बागों से घिरे वेंकटम में रहते हैं। आपके दिव्य नियम न्यायसंगत एवं दोषहीन हैं। आपने हमें अपने भक्तों का सेवक बना लिया। आप ऊंचे दीवारों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ हैं। आपके मंगलमय चरणारविन्द हमारी आंखों में बस गये हैं। **927**

2। जब आप उत्साहपूर्वक पृथ्वी को माप रहे थे तब आपका मुकुट ब्रह्मांड की छत को छू रहा था। बाणों की वर्षा करके राक्षस कुल का विनाश करने वाले आप काकुत्सथ प्रभु राम हैं। आप सुगंधित बागों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ हैं। आपके श्याम वदन के लाल वस्त्रों पर ही हमारी आंखें टिकी रहती हैं। **928**

3। उत्तरदिशा के बन्दरों वाले वेंकटम के पर्वतों में देवताओं से पूजित होकर आप खड़े हैं। अरंगम (श्रीरंगम) में आप शेषशायी अवस्था में हैं। संध्याकालीन आकाश के रंग जैसे वस्त्रों के बीच से निकले नाभि पर के कमल पर ब्रह्मा का बैठने का सुन्दर स्थान है। हमारा हृदय रूचि पूर्वक इस दृश्यमें अंटका रहता है। **929**

4। आपने बाण मारकर सुरक्षित लंका के रावण के दस मस्तकों को काट गिराया। आप सागर सा सलोने रंगवाले अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु हैं जहां मोर भौरों के धुन पर नृत्य करते हैं। अहा! आपके कमरबन्द पर ही हमारा हृदय एवं मन लगा रहता है। **930**

5। दुष्कर्मो से मुक्त कर हमें अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु ने अपना भक्त बना लिया। इतना ही नहीं आप हममें बस गये हैं। मुझे नहीं पता कि मैंने कितनी तपस्या की है। अहा! आपकी मंगलमय माला ने हमें आकृष्ट कर रखा है। **931**

6। मेरे प्रभु ने चंद्रभूषण शिव को पाप से मुक्त किया। आपने जगत, समस्त प्राणी, आकाश, पृथ्वी, सात पर्वतों एवं अन्य सबों को उदरस्थ कर लिया है। आप मधुमक्खी से भरे फूल के बागों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) में रहते हैं। अहा! आपकी सुन्दर ग्रीवा को देखकर हमारा मन आह्लादित हो उठता है। **932**

7। आप अपने हाथों में चक्र शंख धारण करते हैं। आपका वदन मानों काला पर्वत

है। ऊंचे मुकुट पर तुलसी का सुगंध विखेरते आप हमारे नाथ हैं। शेषशय्या पर शयन किये हुए आप अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु हैं। अहा ! आपके सुन्दर लाल होंठों ने हमारा मन हर लिया है। **933**

8 । प्रथम कारण रूप पूर्ण प्रभु जो देवताओं के लिए अगम हैं अरंगम (श्रीरंगम) में रहते हैं। आपने हिरण्यकशिपु का पेट फाड़ डाला । आपका मुखमंडल बड़ी बड़ी लाल आंखों से सुशोभित है। अहा ! आपकी सलोनी आंखों ने हमें बावरा बना रखा है। **934**

9 । आप सातों लोकों को निगलकर एक बालक के रूप में बट पत्र पर सो जाते हैं। आप अरंगम (श्रीरंगम) में शेषशायी हैं। आपने रत्नों से जड़ा हुआ माला धारण कर रखा है तथा आपके गले का मोती का हार आपके श्याम वदन पर निखर रहा है। अहा ! आपके अद्वितीय सौंदर्य ने हमारे हृदय को चुरा लिया है। **935**

10 । श्याम वदन वाले प्रभु एक किशोर चरवाहे के रूप में आये और आपने ही मक्खन चुराया। आप देवताओं के नाथ हैं तथा अरंगम (श्रीरंगम) के भी नाथ हैं। आपने हमारा हृदय चुरा लिया है। अमृतमयी आनन्दकन्द प्रभु को देखने के बाद हमारी आंखें अब अन्य कुछ नहीं देखेंगी। **936**

<u>प्रबंध संख्या **9** ः कण्णिनुण शिरूत्ताम्बु</u>

इस प्रबंध की रचना मधुरा कवि आळवार ने नम्माळवार की प्रशस्ति में की है। आपने नम्माळवार को ही सर्वस्व माना एवं आपकी एक मात्र दिव्य रचना है जो दिव्य प्रबंधम का हिस्सा है। कहते हैं श्रीनाथमुनि स्वामी ने इसी प्रबंध का **12000** बार गायन किया। फलतः नम्माळवार ने प्रसन्न होकर सारे आळवार संतों द्वारा विरचित सभी लुप्त प्रबंधों को उपलब्ध करा दिया।

यह प्रबंध पासुर **937** से **947** तक **11** पासुरों से बना है।

✐ मधुरा कवि आळवार ने नम्माळवार की रचनाओं का नाम बताये बिना यह संकेत किया है कि शठकोपन ने तमिल गीत के माध्यम से चारो वेद को हस्तगत करा दिया है। पासुर **943** एवं **945** ।

✐ नम्माळवार की रचना को हजार बताते हुए सहस्रगीती की संज्ञा दी। पासुर **944** ।

✐ आळवार संत ने नम्माळवार के चरण को ही श्रीवैकुंठ माना है।

पासुरों के भावार्थ निम्नवत प्रस्तुत हैं।

1 । चमत्कारिक बालक हमारे प्रभु गुंथी हुई रस्सी के सहारे स्थित थे। जब कुरूगुर (आळवार तिरू नगरी) नांबी का नाम उच्चारण करता हूं तो मुंह से अमृत प्रवाहित होने लगता है। **937**

2 | आपका नाम लेकर हमने आन्नद पाया तथा आपके चरण की सेवा कर सत्य को प्राप्त किया। किसी और देवता को हम जानते नहीं और केवल आपका ही नाम लेते हुए गलियों में घूमते हैं | **93**

3 | जहां कहीं भी जाता हूं अपने देवापिरन एवं उनके आकर्षक मुखमंडल को ही देखता हूं। कुरूगूर के स्वामी की सेवा से हम नीचात्मा भी उनके कृपापात्र हो गये | **939**

4 | सम्मानित विद्वत्जनों ने मुझे नाकाम पाया था | परन्तु हमारे माता एवं पिता दोनों ही शठकोपन हीं है और हमारा दैनिक कार्यकलाप अब इनके नियंत्रण में है | **940**

5 | पहले हमारे दिन संपत्ति एवं किशोरियों की कामना में बीतते थे। अब तो हम प्रसिद्ध कुरूगूर के स्वामी को पा गये हैं | **941**

6 | अटारियों वाले कुरूगूर के स्वामी का यश गान हमें कण्ठाग्र हो गया है। ध्यान दीजिये ! अब से सात जन्म तक वे हमें कभी असफल न होने देंगे | **942**

7 | हमारे पूर्व के कर्मों को कारी मारन ने पूरी तरह देख लिया है। तमिल के शठकोपन की कृपा का मैं चतुर्दिक प्रचार करूंगा | **943**

8 | जो केवल कृपा की पूजा करते हैं वे आपकी कृपा को आपके सहस्त्रगीतों में देखें। इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है कि आपने चारों बेदों को हस्तगत करा दिया। **944**

9 | वेद के सार को आपने अपने गीत में रख दिया तथा मेरे हृदय को ज्ञान प्रदान किया। प्रेममय स्वरूप का दर्शन ही शठकोपन की सेवा का लाभ है | **945**

10 | नाकाम एवं व्यर्थ जीवों को आपने एक साथ मिला दिया। हे कोयल की कूक वाले कुरूगूर के स्वामी ! मैं आपके ही चरणों से प्रेम चाहता हूं | **946**

11 | जो प्रभु में आश्रय की खोज करते हैं, उनलोगों को मधुर कवि के दसक पद कुरूगूर नांबी के चरणों को "यही वैकुण्ठ है" | **947**

नालायिरा **4000** पासुर वाले दिव्यप्रबंधम का प्रथम हजार का भाग पूरा हुआ।

दिव्य प्रबंधम (इरान्दाम आयिरम) ः एक विहंगम अवलोकन

इरान्दाम आयिरम यानी दिव्य प्रबंधम का यह दूसरा हजार है जिसमें **1134** पासुर हैं और यह परकाल स्वामी द्वारा विरचित तीन प्रबंधों के योगदान से बना है। तीन प्रबंध निम्नवत हैं।

✐ प्रबंध संख्या **10** ः पेरिया तिरूमोळी ।**948** से **2031**।

इसमें **948** से **2031** तक **1084** पासुर हैं। स्मरण हो कि पूर्व के एक हजार का अंत प्रबंध संख्या **9** पर हुआ तथा कुल **947** पासुर थे। अतः इस दूसरे हजार वाले सहस्र गीती का प्रारंभ पासुर **948** से एवं प्रबंध संख्या **10** से होता है। इसमें कुल **1084** पासुर है जो स्वतंत्र रूप से दिव्य प्रबंधम के सभी प्रबंधों में दूसरा सबसे बड़ा प्रबंध है। पासुरों की संख्या के विचार से पहला स्थान नम्माळवार के तिरूवायमोळी का है जिसमें **1102** पासुर हैं।

✐ प्रबंध संख्या **11** ः तिरूक्कुरून्दाण्डगम : इसके **20** पासुर **2032** से **2051** तक हैं तथा यह पेरिया तिरूमोळी की तरह परकाल स्वामी की रचना है।

✐ प्रबंध संख्या **12** ः तिरूनेडुन्दाण्डगम । इसके **30** पासुर **2052** से **2081** तक हैं तथा यह पेरिया तिरूमोळी की तरह परकाल स्वामी की रचना है।

सभी प्रबंधों का सार संक्षेप निम्नवर्णित कंडिकाओं में दिया गया है।

प्रबंध 10। पेरिया तिरूमोळी ः पासुर **(948 से 2031)**

षह तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी की कृति है। कार्तिक मास के कृत्तिका नक्षत्र में आप सारंग धनुष के अंश से तमिलनाडु के तिरूकुरयलूर नगर में अवतरित हुए। इसमें पासुरों यानी पदों की कुल संक्या **1084** है। स्पष्टतः यह ग्यारह शतकों में है। इसमें दशकों की कुल संख्या **108** है। कुछ अपवाद के अतिरिक्त प्रत्येक दशक प्रायः दस पासुरों से बने हैं। परकाल स्वामी जी ने जिन **85** दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी है उनका उल्लेख आळवार वैभव में किया जा चुका है।

✐ प्रारंभ से अवलोकन करने पर यह स्पषट होता है कि आळवार संत उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में आंध्र प्रदेश से जाते हुए तमिल नाडु एवं केरल की ओर का यात्रा वृतांत प्रस्तुत करते हैं। वेंकटम एवं श्रीरंगम आदि का स्वतंत्र रूप से प्रशस्ति गायी गयी है तथा इनका यशोगान अन्यत्र दूसरे दशकों में कुछेक पासुरों में भी है। स्वतंत्र दशक के दृष्टिकोण से दिव्यदेशों की स्थिति निम्नवत है जिनकी प्रशस्ति एक से ज्यादा स्वतंत्र दशकों में प्रस्तुत की गयी है। कोष्ठक का शुरू का अंक शतक बताता है तथा बाद का अंक उस शतक के कमशः दशक की संख्या बताता है। ः

✐तिरूबदरी **2** दशकों में **1 | 03** से **1 | 04** तक
✐तिरूवेंकटम **4** दशकों में **1 | 08** से **2 | 01** तक
✐तिरूकडमल्लै **2** दशकों में **2 | 05** से **2 | 06** तक
✐तिल्लै तिरूचित्रकूटम **2** दशकों में **3 | 02** से **3 | 03** तक
✐तिरूवाली **3** दशकों में **3 | 05** से **3 | 07** तक
✐तिरूवरंगम या श्रीरंगम **5** दशकों में **5 | 04** से **5 | 08** तक
✐तिरूविण्णगर या ओप्पिलिअप्पन **3** दशकों में **6 | 01** से **6 | 03** तक
✐तिरूनरैयूर **10** दशकों में **6 | 04** से **7 | 03** तक
✐तिरूवलुन्दूर **4** दशकों में **7 | 05** से **7 | 08** तक
✐तिरूकण्णपुरम **10** दशकों में **8 | 01** से **8 | 10** तक
✐तिरूपुल्लाणि **2** दशकों में **9 | 03** से **9 | 04** तक
✐मालैरूजशोलै **2** दशकों में **9 | 08** से **9 | 09** तक

✐परकाल स्वामी का 'पेरिया तिरूमोळी' हिमालय के दिव्य तीर्थों की यात्रा से प्रारंभ होता है। यद्यपि प्रथम दशक में अष्टाक्षर मंत्र एवं नारायण नाम की महिमा बताते हुए तमिलनाडु के कुंभकोणम के पास के कुडन्दै एवं तंजावूर के तंजै मामणि दिव्य देश के प्रभु का स्मरण किया गया है तथापि बाद के पांच दशकों में तिरूप्पिराति यानी जोशी मठ से प्रारंभ कर बदरी, शालग्राम, एवं नैमिषारण्य की प्रशस्ति है। इन सभी दिव्य देशों पर एक एक स्वतंत्र दशक है, परंतु बदरी नारायण पर दो दशक दिये गये हैं।

✐इस प्रबंध की विशेषता यह है कि आळवार संत की यात्रा हिमालय से प्रारंभ होकर आंध्र प्रदेश के अहोविलम, तथा तिरूमला यानी वेंकटम होते हुए तमिलनाडु में प्रवेश करती है। प्रबंध में 'शिंगवेल कुण्डरम' नाम का प्रयोग अहोविलम के लिये किया गया है। तिरूवेंकटम पर चार स्वतंत्र दशक दिये गये हैं तथा अंत के दशक में यह विश्वास प्रकट किया गया है कि वेंकटम प्रभु का प्रेवश आळवार संत के हृदय में हो चुका है।

✐ इसके बाद कमशः चेन्नै के आस पास के दिव्य देशों की गाथा है जिसमें तिरूवल्लूर, तिरूनीरमलै, तिरूइडवन्दै, तिरूकडमल्लै आदि हैं। मॉ मां

✐प्रारंभ के दशक में अष्टाक्षर मंत्र की महिमा बताते हुए आळवार संत ने अपनी बीती हुए आयु के कुकृत्यों पर पश्चात्ताप प्रकट किया है।

✐दूसरे शतक के छठे दशक में तिरूमंगै आळवार भविष्यवाणी करते हैं कि भगवान संसार की रक्षा घोड़े पर सवार होकर (पासुर **1090**) कल्कि रूप में करेंगे।

✐ दूसरे शतक के सातवें दशक में परकाल नायकी एवं उसकी माँ की मनोदशा का चित्रण है। पासुर **1108** से **1127** तक नायकी की माँ तिरूइडवन्दै के नित्यकल्याण पेरूमाल से अपनी बेटी के भविष्य के लिये पूछती हैं। नित्यकल्याण पेरूमाल अविवाहित कन्या के शीघ्र विवाह के लिये प्रसिद्ध हैं। प्रायः लोग यहां आकर विवाह सम्बंधी समस्या के लिये प्रभु से निवेदन करते हैं। नित्यकल्याण पेरूमाल ने नायकी की माँ का निवेदन सुन लिया। **1118** से **1127** तक के पासुरों में नायकी को कांचीपुरम के अष्टभुज भगवान के दर्शन का आनंद मिलने का संकेत दिया गया है।

✐ तीसरे शतक का छठा दशक पासुर **1198** से **1207** तक नायकी भाव का चित्रण करता है। तिरूवाली के प्रभु को न आते देख तिरूमेय्यम के प्रभु को आलिंगन के लिये आमंत्रित करती है। तीसरे शतक का सातवां दशक पासुर **1208** से **1217** तक नायकी की स्थिति से चिंतित उसकी माँ की मनोभावना का चित्रण करता है। दोनों दशकों में तिरूवाली के प्रभु से विशेष निवेदन किया जाता है परंतु आतुरता वश तिरूमेय्यम के प्रभु को भी आमंत्रित किया जाता है। माँ तो श्रीरंगम के प्रभु का भी स्मरण करती है और कहती है तिरूवाली वाले प्रभु तिरूअरंगम में रहते हैं।

✐ परकाल नायकी की माँ के रूप में पासुर **1318** से **1327** तक पार्त्तन पल्ली प्रभु का गुणगान किया गया है।

✐ पासुर **1388** से **1397** तक परकाल नायकी की माँ की मनोदशा का चित्रण है। श्रीरंगम के प्रभु के अतिरिक्त माँ वेंकटम तथा तिरूमेय्यम के प्रभु से अपनी बेटी के भविष्य के बारे में पूछती है। पासुर **1398** से **1407** तक नायकी श्रीरंगम के प्रभु का दर्शन प्राप्त कर प्रसन्नता प्रकट करती है। जैसे आन्डाल को श्रीरंगनाथ ने अपनाया था उसीतरह परकाल नायकी भी श्रीरंगम के प्रभु रंगनाथ भगवान के दर्शन से प्रसन्नता व्यक्त करती हैं। दर्शन वाधित होने की अवधि में दुःखी नायकी ने माँ के मन को भी आर्त बना दिया है। बाद में माँ के हस्तक्षेप से नायकी को सफलता मिल गयी और करूणानिधान प्रभु का चिरभिलषित दर्शन प्राप्त हो जाता है। नायकी एवं उसकी माँ के अर्न्तमन की स्थिति का सार संक्षेप तालिका **6** में एकत्रित किया गया है।

✐ बौद्धों एवं श्रमणों की दशा का वर्णन पासुर **1405** में है।

✐ शिव एवं लक्ष्मी को आप बराबर का स्थान देते हैं, पासुर **1235**। <u>क्या इसी संदर्भ में तेंगल वैष्णवजन लक्ष्मी को जीव की तरह मानते हैं ?</u>

✐ जैसे आपने कमल वाली लक्ष्मी को अपने वदन पर स्थान दिया है उसी तरह से कृतज्ञता पूर्वक फरसा धारी बैल की सवारी करने वाले शिव को भी अपने वदन पर रखा

है। पासुर **1841**। पासुर **2060** में आळवार संत बताते हैं कि शिव निरंतर प्रभु के पास खड़े रहते हैं।

✐शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप एवं इनको ब्रह्मा की खोपड़ी से शाप मुक्त करने तथा ब्रह्मा से शिव की उत्पत्ति कई स्थलों पर वर्णित है। देखें पासुर **985, 995, 1179, 1265, 1266, 1355, 1430, 1516, 1528, 1852**

✐ ब्रह्मा को वेद वापस उपलब्ध कराने वाले हयग्रीव स्वरूप का विवरण पासुर **1369** एवं **1619** में है।

✐ पासुर **1569** में पूर्व के प्रथम तीन आळवार संतों का प्रभु से हुए साक्षात्कार सम्बंधी जानकारी मिलती है। ज्ञात है कि सरो योगी (पोय्गै आळवार), भूत योगी (भूतद आळवार), एवं मह योगी (पेय आळवार) तिरूकोइल्लूर में घोर वर्षा से उत्पन्न अंधेरे में एक अतिसंकीर्ण स्थल में साथ खड़े थे। बिजली की चमक में अपने बीच आप लोगों ने नारायण हरि को भी खड़े देखा।

✐**1624** पासुर में सामयिक शैक्षणिक वातावरण का चित्रण है। अलुन्दूर में वैदिक ऋषिगण संस्कृत एवं तमिल के कुशल ज्ञाता हैं। पासुर **2055** में बताते हैं कि तमिल गीत एवं संस्कृत वेद के रूप में प्रभु ही प्रकट होते हैं।

✐ तिरूमंगै आळवार ने **7।10** के अंतिम पद **1647** में तिरूकण्णमंगै के भगवान को भी अपने पदों के ज्ञान से लाभान्वित होने का परामर्श दिया है। यह प्रभु में आळवर संत की प्रगाढ़ श्रद्धा का द्योत्तक है कि विश्वासपूर्व एक बालक की सरलता से भरपूर भक्त की तरह प्रभु के साथ बात चीत करते हैं।

✐ पासुर **1701** में सागर पर सेतु निर्माण की कला पर प्रकाश डाला गया है। जल में तैरने वाले लकड़ी के कुन्दों को स्थिर करने के लिये उनके ऊपर पत्थरों का प्रयोग किया जिससे तैरता सेतु स्थिर रहे और लहरों के उतार चढ़ाव से सेतु की स्थिरता दुष्प्रभावित न हो।

✐ पासुर **1858** से **1877** तक दशक **10।02** एवं **10।03** में रामायण कथा का अनोखा प्रसंग चित्रित है। लंका का विनाश होने पर था एवं रावण का वध हो चुका था। जीवित राक्षसगण अपनी प्राण रक्षा के लिये राम प्रभु, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, नल, नील, जाम्बवान से आर्तभाव से विनती करते हैं तथा इनलोगों की प्रसन्नता के लिये विशेष राक्षसी नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

✐ तिरूवाली नगरी आळवार संत के अवतार से जुड़ा हुआ है तथा श्रीरंगम आपका कर्मक्षेत्र रहा है। शायद इसी कारण से पेरिया तिरूमोळी का उपसंहार आपने तिरूवाली

एवं श्रीरंगम के प्रभु की विनती से की है तथा पुनर्जन्म के भंवर से मुक्ति की कामना प्रकट की है।

<u>तालिका 6 ः परकाल नायकी के प्रसंग</u>

पात्र	दिव्यदेश	शतक ।दशक । पासुर ।	अभियुक्ति
मॉ	तिरूविडवन्दै	**2 । 07 । 1108 से 1117**	बेटी के लिये चिंता
नायकी	अष्टभुज कांची	**2 । 08 । 1118 से 1127**	प्रभु से साक्षात्कार
नायकी	तिरूवाली	**3 । 06 । 1198 से 1207**	दूत से सूचना
मॉ	तिरूवाली	**3 । 07 । 1208 से1217**	प्रभु के साथ गयी बेटी को याद करना
मॉ	पार्त्तन पल्ली	**3 । 08 । 1318 से 1327**	प्रभु से जुड़ने के लिये बेटी से प्रसन्न
मॉ	श्रीरंगम	**5 । 05 । 1388 से1397**	बेटी की स्थिति से विस्मय
नायकी	श्रीरंगम	**5 । 06 । 1398 से 1407**	प्रभु से साक्षात्कार की प्रसन्नता
नायकी	तिरूवलुन्दूर	**7 । 05 । 1595, 1596**	प्रभु से साक्षात्कार की प्रसन्नता
मॉ	तिरूकण्णपुर	**8 । 01 । 1648 से 1657**	बेटी की स्थिति से असमंजस में
मॉ	तिरूकण्णपुर	**8 । 02 । 1658 से 1667**	प्रभु को अनुचित बताना
नायकी	तिरूकण्णपुर	**8 । 03 । 1668 से 1677**	प्रभु के पास अपनी कंगन गंवा बैठी।
नायकी	तिरूकण्णपु	**8 । 04 । 1678 से 1687**	भौंरा को भेजकर प्रभु की तुलसी माला का रज मंगाती है।
नायकी	तिरूकण्णपुर	**8 । 05 । 1688 से 1697**	विछोह की वेदना बताना
नायकी	तिरूनागै	**9 । 02 । 1758 से 1767**	प्रभु के स्वरूप की सुन्दरता से प्रसन्न
मॉ	तिरूमालैरूजशोलै	**9 । 09 । 1828 से 1837**	बेटी की उपलब्धि से अचंभित एवं प्रसन्न
मॉ	कृष्ण	**10 । 09 । 1932 से 1941**	बेटी के लिये कृष्ण से निवेदन
नायकी	वेंकटम एवं कुडन्दै	**10 । 10 । 1942 से 1951**	अन्य प्राणियों से कृष्ण का

स्वागत करने के लिये उत्साहित करना

नायकी वेंकटम, श्रीरंगम, तिरूवाली एवं कुडन्दै **11 । 01** से **11 । 03** तक । **1952** से **1981** तक । कंगन खोकर सखियों से प्रलाप करती हुई प्रभु की अर्चना एवं दर्शन के लिये उद्धत होना ।

मॉं तिरूनेडुन्दाण्डगम् **2062** से **2071** तक । बेटी का प्रभु से प्रेम पर चिंतित होते हुए अंततः अपना भाग्य सराहना ।

नायकी तिरूनेडुन्दाण्डगम **2072** से **2076** तक । सखियों से प्रभु के दर्शन का सुखद वृतांत सुनाना तथा पुनः वियोग की बात कहना ।

नायकी तिरूनेडुन्दाण्डगम **2077** से **2078** तक । भौंरा एवं सारस पक्षी को दूत बनाकर अपनी विरहाग्नि की स्थिति से प्रभु को अवगत कराना ।

नायकी तिरूनेडुन्दाण्डगम **2079** से **2080** तक । विश्वास पूर्वक प्रभु के आलिंगन की प्रतीक्षा करना ।

पहले शतक का पहला दशक **1 ः 1** या पासुर **948** से **957** तक : यह **10** पासुरों से बना है जो अष्टाक्षर मंत्र की प्रशस्ति में है । आळवार संत बताते हैं कि प्रारंभिक जीवन किशोरियों के साथ भोग विलास में बीता । अब यह समझा हूॅं कि नारायण के नाम के अतिरिक्त मेरा कोई आधार नहीं है । कुडन्दै दिव्य देश के प्रभु का नारायण नाम से अर्च ना की । गूंगे का स्वप्न की तरह समय गंवा दिया । वराह स्वरूप वाले प्रभु का भंडार दया से भरपूर है । राक्षसकुल का अंत करने वाले प्रभु की पूजा हमने दिव्य देश तंजै मामणि में की । मैं इन्द्रियों के अधिकार में था तथा सबों के साथ क्रूर मृत्यु की तरह व्यवहार करता था । कुडन्दै प्रभु की कृपा हुई । नारायण ही उपयुक्त नाम है जिससे सारी संपदा, सुखी परिवार, राज्य साम्राज्य मिलता है तथा सभी दुखों का नाश होता है ।

ःः

दिव्य देश **28** । तंजै मामणि

1 । स्थान ः तंजै मामणि दिव्य देश तमिल नाडु के तंजौर रेलवे स्टेशन से **4** कि मी पर है । तंजौर वृहदेश्वर शिव मंदिर के लिये विख्यात है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः श्रीवैष्णव दिव्य देश तंजै मामणि में तीन मंदिरों के संयोग से बना है । प्रथम मंदिर को तंजै मामणि कहते हैं जहां प्रभु पूर्वाभिमुख बैठे मुद्रा में हैं । आप पराशर मुनि की प्रार्थना से प्रकट हुए थे । मूलावर को नीलमेघ पेरूमाल, तायर को सेंगमलवल्ली तायर, तीर्थ को अमृत तीर्थ कनक पुष्करणी, एवं विमान को सौंदर्य विमानम कहते हैं ।

दूसरा मंदिर तंजै याली कोविल कहा जाता है। मूलावर पूर्वाभिमुख नरसिंह स्वामी स्वरूप में बैठे मुद्रा में हैं। तायर को तंजै नायकी, तीर्थ को श्रीराम तीर्थ सूर्य पुष्करणी, एवं विमान को वेद सुंदर विमानम कहते हैं।

तीसरा मंदिर मणिकुण्रा कोविल कहा जाता है। मूलावर पूर्वाभिमुख मणिकुण्रा पेरूमाल बैठे मुद्रा में हैं। तायर को अम्बुजवल्ली, तीर्थ को श्रीराम तीर्थ, एवं विमान को मणिकूड विमानम कहते हैं।

तीनो मंदिर के उत्सव विग्रह को श्रीमन्नारायण या नारायण मूर्ति कहा जाता है।

3। महिमा ः समुद्र मंथन काल में यह पराशर मुनि का आश्रम था। मुनि ने थोड़ा अमृत प्राप्त किया था जो स्वयं न पीकर अपने आश्रम के पुष्करणी में डाल दिये थे जिससे इस क्षेत्र के सारे प्राणी एवं पेड़ पौधों को लाभ हुआ। एक बार धरा पर बारह वर्षों का भीषण अकाल पड़ने पर भी यह क्षेत्र हरा भरा रहा। तीन असुर तंजकन, दंतकन, एवं तारकन ने यहीं आकर अपनी प्राण रक्षा की। बाद में वे मुनि एवं अन्य प्राणियों को सताने लगे। मुनि की प्रार्थना पर शिव जी ने चंडिका को भेजा और कहा कि विष्णु भगवान ही इनके निदान हैं। चंडिका इन असुरों का नाश नहीं कर पा रही थी क्योंकि एक का नाश करने पर दूसरा उस पर पुष्करणी से अमृत जल को डालकर पुनर्जीवित कर देता था। मुनि की प्रार्थना पर नारायण प्रकट हुए एवं पुष्करणी से अमृत को ऐसे पी गये जैसे हंस जल मिश्रित दूध से दूध को पी जाता है। इस तरह से प्रभु ने नरसिंह रूप में तंजकन का नाश किया। डंतकन भाग गया। चंडिका ने तारकन का अंत किया। तंजकन ने मरते समय प्रभु को इसी स्थान पर रहने के लिये निवेदन किया तथा स्थान का नाम अपने नाम से रखना चाहा। प्रभु ने वरदान देकर इस स्थान को तंजवन नगर कहा जो बाद में तंजावूर या तंजौर कहा जाने लगा।

वेदांत देशिक स्वामी के पुत्र नैनार आचार्य ने यहां यह घोषणा की थी कि अनाध्ययनम काल में जब दिव्य प्रबंधम का पारायण नहीं होता है वेदांत देशिक स्वामी के ग्रंथों का सारे दिव्य देशों में पारायण होना चाहिये।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **953 1090 1576**। भूत आळवार, इराण्डाम तिरूवन्दादि **2251**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3363**।

ஃஃ

पहले शतक का दूसरा दशक **1 ः 2** या पासुर **958** से **967** तक ः **10** पासुरों वाले द्वितीय दशक में तिरूप्पिरूती या जोशीमठ दिव्य देश की विशेषता बताते हैं। यहां हाथी बन्दर सिंह तथा मोर की बहुतायत है। यहां की प्राकृतिक छटा हिमवान शिखर की तरह

निराली है। यहां के ताल में ब्रह्मा आदि देवगन स्नान कर प्रभु के हजार नाम का जप करते हैं।

ஃஃ

दिव्यदेश **29**। एवं **30**। जोशीमठ तथा बदरी नारायण उत्तरांचल

दिव्य देश **29**। जोशीमठ या तिरूप्पिरूत्ती ः

1।स्थान ः जोशीमठ दिव्यदेश उतरा खंड राज्य के बदरी नारायण तीर्थ स्थान जाने के रास्ते में मिलता है। ऋषिकेश से बदरी नारायण **300** कि मी पर हैं जबकि जोशीमठ **250** कि मी पर है। बदरीनारायण की ऊंचाई **3133** मी पर है और जोशी मठ **1890** मी पर है। जाड़े के छः माह भगवान बदरी नाथ का पट बंद हो जाता है एवं उत्सव मूर्ति ऊद्धव जी बदरी नारायण से **20** कि मी नीचे पांडुकेशवर में लाये जाते हैं तथा आदि शंकर की गद्दी जोशीमठ लाई जाती है। जोशी मठ को ज्योर्तिमठ भी कहते हैं। तिरूमंगै आळवार के प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन के आलोक में आज का जोशीमठ तिरूप्पिरूत्ती होने में संदेह उत्पन्न करता है। वर्तमान में यहां गंगा प्रवाहित होती हैं जबकि आळवार संत ने मात्र ताल का उल्लेख किया है।

2।विग्रह स्वरूप ः यहां पुरा काल से शालग्राम पत्थर में नरसिंह भगवान का विग्रह है जो आराम से बैठे मुद्रा में है। मुड़ा हुआ दायां पैर इस तरह है कि घुटना जमीन पर उर्ध्व दिशा में है जिस पर दायां हाथ टिका है। बायां पैर घुटना से मुड़कर जमीन पर पालथी की मुद्रा में टिका है एवं सीधे फैले हुए बायां हाथ की तलहथी बायें पैर के घुटने पर टिकी है। बायें हाथ की कलाई पतली होती जा रही है और वर्तमान में यह मात्र एक अंगूठे के बराबर मोटी रह गयी है। कहते हैं जिस दिन यह कलाई पतली होकर टूट जायेगी उस दिन नर एवं नारायण पर्वत की बीच की दूरी समाप्त हो जायेगी तथा बदरी नारायण जाने का मार्ग बंद हो जायेगा। तब भगवान भविष्य बदरी में पूजे जायेंगे जो जोशीमठ के पास **20** कि मी पर तपोवन के पास हैं।

3।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **958** से **967** तक।

ஃஃ

दिव्य देश **30**। बदरी नारायण

ः**1**। स्थान ः सत्ययुग में इसे बदरीकाश्रम कहा गया है। त्रेता युग में इसे योगसिद्धी के नाम से जानते हैं। द्वापर में यह बदरी बदरीविशाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कलियुग में यह बदरीनाथ या बदरीनारायण कहा जाता है। हरद्वार से **330** कि मी पर अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः बदरीनारायण में भगवान पूर्वाभिमुखी अलकनंदा को देखते योगमुद्रा में बैठे हैं हैं। प्रभु के बायें कुबेर एवं गरूड़ हैं, तथा दायें ऊद्धव, नारद एवं नर नारायण हैं। इसे बदरी विशाल पंचायत कहते हैं। अलकनंदा नदी नर एवं नारायण पर्वत को अलग करती है। प्रभु नारायण पर्वत पर स्थित मंदिर के निवासी हैं तथा नगर की आवादी नर पर्वत पर बसी हुई है। जाड़े के छः माह की पूजा लक्ष्मी, नारद, एवं देवगन करते हैं। बाकी छः माह वैशाख अक्षय तृतीया से कार्तिक दीपावली तक भगवान मनुष्यों की पूजा स्वीकार करते हैं। ऊद्धव जी आपकी उत्सव मूर्ति हैं जो जाड़े में पांडुकेश्वर चले आते हैं। जब उद्धव जी के विग्रह को एक द्वार से बाहर ले जाया जाता है उसीसमय दूसरे द्वार से भगवान के गर्भगृह में तायर लक्ष्मी को प्रवेश कराया जाता है। परिसर में ही तायर की पृथक सन्निधि है तथा अरविन्दवल्ली कही जाती हैं। यहां का विमान तप्त कंचन विमान कहा जाता है तथा तीर्थ को ब्रह्मकपाली एवं तप्तकुंड तीर्थ कहते हैं। तप्तकुंड को अग्नि कुंड कहते हैं। पुरूषों एवं महिलाओं के अलग अलग कुंड हैं। पुरूष के कुंड में एक अधिक गर्म तथा दूसरा थोड़ा कम गर्म है। जो कम गर्म है वह खुले आकाश में है तथा जो ज्यादा गर्म है उसके छप्पर है। भगवान रात्रि में निर्माल्य रहते हैं। सारे शरीर पर चंदन का लेप रहता है तथा कमर में मात्र एक कोपीन रहता है। प्रातः काल इसी स्वरूप का दर्शन मिलता है तथा प्रभु के शरीर का चंदन प्रसाद के रूप में मिलता है।

3। महिमा ः बदरीनारायण के रास्ते में नदियों के कई प्रसिद्ध संगम मिलते हैं जिसे प्रयाग शब्द से सम्बोधित किया जाता है। जैसे ः देवप्रयाग, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, एवं विष्णुप्रयाग। बदरीनारायण के मंदिर के समीप तप्तकुंड से थोड़ी दूरी पर अलकनंदा में ब्रह्मकपाली एक तीर्थ है जहां शिवजी के हाथ से ब्रह्मा का कपाल छूटा था। यहां पितरों को पिंड देने की प्रधानता दी गयी है। वर्तमान श्रीमंदिर से **3** कि मी पर मान गांव है जो भारत चीन सीमा पर अवस्थित है। मान गांव के रास्ते में ही मातामूर्ति का मंदिर है जो भगवान की मॉ के रूप में पूजी जाती हैं और भादो मास में यहां मेला लगता है।इस अवसर पर भगवान के प्रतिनिधि तथा उत्सवविग्रह के रूप में उद्धव जी मातामूर्ति मंदिर में विराजते हैं। मातामूर्ति मंदिर के पास ही केशवप्रयाग है जहां अलकनंदा में सरस्वती नदी आकर मिलती हैं। केशव प्रयाग से आगे सरस्वती नदी के दूसरे किनारे पर मान गांव की तरफ प्रसिद्ध व्यास गुफा है जहां व्यास जी ने गणेश जी के माध्यम से महाभारत का लेखन कार्य संपन्न कराया था। सरस्वती पार करने के लिये भीम पुल प्रसिद्ध है जिसका निर्माण भीम ने एक पर्वतनुमा शिला से किया था।

जोशीमठ से बदरीनारायण के रास्ते में पांडुकेश्वर एक कस्बा है जहां भगवान जाड़े के मौसम में छः मास रहते हैं। यह स्थान पाण्डव का जन्मस्थल माना जाता है तथा इसी के पास हनुमान चट्टी में भीम एवं हनुमान जी का मिलन हुआ था।

सहस्रकवच नाम का एक राक्षस एक हजार भुजाओं से युक्त होकर ऋषियों को तंग करता था। नर नारायण को जब उसने तपस्या करते देखा तब इनसे युद्ध करने लगा। इस राक्षस का अंत करते हुए इसकी हजारों भुजाओं को तोड़कर नर नारायण ने दो पर्व त खड़ा कर दिये जो एक नर पर्वत है तथा दूसरा नारायण पर्वत है। विष्णुवती नामका एक भक्त भगवान का भजन गाता घूमता था। बदरीनारायण में उसे भगवान से भेंट हुई । भगवान को प्रसन्न देख उसने वर मांगेः ।क। मुझे नारद कहा जाय।ख। मैं ज्ञानी योगी रहूँ।ग। सर्वदा आपका भजन गाता हुआ तीनों लोक चौदहों भुवन में अबाध घूमूं ।घ। मेरा कभी अंत न हो। भगवान ने मांग के अनुसार वर दे दिया। एक अन्य कथा के अनुसार भगवान से अभिमानवश कहने पर भी गयासुर नामक दैत्य वर मांगने को तैयार न हुआ। भगवान ने चक्र से उसके शरीर के तीन खंड कर दिये। चरण गया में गिरा तथा बीच का भाग नैमिषारण्य में गिरा एवं सिर बदरीनारायण में गिरा। अपना अंत देख गयासुर ने वर मांगा कि मेरे शरीर के अंग जिन स्थानों पर गिरे हैं उसे पवित्र कर दिया जाय तथा वहां पिंड करने से पितरों का कल्याण हो। भगवान ने मांगे के अनुसार वर दे दिया। इसीलिये गया के विष्णुपद में तथा बदरीनारायण के कपाली स्थल में श्राद्ध पिंड किया जाता है। बदरीनारायण में स्वयं का श्राद्धपिंड करने की प्रथा है जिससे अगले जन्म का कल्याण हो।

यहां पंच बदरी है : (i) एक तो वर्तमान के बदरीनारायण जी हुए जो बदरीविशाल कहे जाते हैं। (ii) दूसरा, भविष्य बदरी है जो जोशीमठ से **12** कि मी पर अवस्थित तपोवन से **4** कि मी आगे जाने पर एक कठिन पगडंडी मार्ग से पहाडों पर हो कर जाना होता है। पगडंडी से लगभग **5** कि मी चलने पर भविष्य बदरी मिलता है। यहां भविष्य में प्रकट होने वाले बदरीनाथ जी के उभरते स्वरूप की प्रतीक्षा है। (Iii) तीसरा, वृद्ध बदरी है जो जोशीमठ से **5** कि मी पर अनिमठ नामक स्थान के पास है। आदिशंकर ने यहां साधना की थी। (iv) चौथा, आदि बदरी है जो कर्णप्रयाग से **16** कि मी पर है। (v) पांचवां, योगध्यान बदरी है जो बदरीविशाल से **24** कि मी तथा जोशी मठ से **20** कि मी पर है। यहां पांडवों के पिता राजा पांडु ने पांडुकेश्वर का ध्यान किया था।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ : परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **968** से **987** तक **1022** **1898** एवं शिरय तिरूमडल **2673**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3606**।

ဝဝ

पहले शतक का तीसरा एवं चौथा दशक **1 ः 3** एवं **1 ः 4** या पासुर **968** से **987** तक ः **20** पासुरों का तीसरा एवं चौथा दशक बदरी नारायण दिव्य देश के प्रभु की प्रशस्ति है। आळवार संत बताते हैं कि शरीर जीर्ण हो जाता है। लाठी के सहारे चलना भी दुष्कर होता है। परिवार भूत काल की बातें भूलकर तिरस्कार से देखते हैं। सहारा मात्र पूतना के विनाशक गोवर्द्धन को उठाने वाले की रहती है जो बदरी में विराजमान हैं। तुलसी की माला पहने समुद्र मथने वाले प्रभु बदरी में हैं जहां भक्तगण आपकी प्रदक्षिणा करते हैं। वराह स्वरूप वाले एवं रावण के विनाशक प्रभु की पूजा देवगन गंगा किनारे बदरी में कल्पवृक्ष के सुगंधित फूलों से करते हैं। माया मृग के विनाशक सागर पर सेतु बांधने वाले प्रभु निर्मल जल के किनारे बदरी में हैं।उदार प्रभु भक्तों को आकाश का राजा बनाते हैं। पूतना का नाश होते देख यशोदा कांप गयीं। आप दो दिव्य पर्वतों के बीच प्रवाहित गंगा के किनारे बदरी नाथ हैं। इन्द्र को जो संपदा, ऐरावत, अमृत, देवों का राज्य, आपने दिया है वह सब आप अपने भक्तों को भी देते हैं। आप वनवास भोगी राजा हैं। तीक्ष्ण पंजों से हिरण्य विनाशक हैं। खोपड़ी धारी शिव को शाप से मुक्त करने वाले हैं। बादल हवा पर्वत सागर धरा तथा सब कुछ को अपने उदर में रखने वाले आप बदरी नाथ हैं।

पहले शतक का पांचवा दशक **1 ः 5** या पासुर **988** से **997** तक ः इसमें दस पासुर हैं। यहां नेपाल के शालिग्राम प्रभु की प्रशस्ति है।वनैले पशुओं के जंगल में घूमने वाले तथा रावण के विनाशक प्रभु सुगंधित तालों वाले शालग्राम में रहते हैं। सूर्य चंद्र पर्वत सागर आकाश सभी आपके स्वरूप हैं। कांची के उरगम यानी त्रिविकम, कुडन्दै के सारंगपाणि, एवं तिरूप्पेर के प्रभु आप ही हैं। कामग्रस्त राक्षसी की नाक काटने वाले गोवर्द्धनधारी आप ही हैं।गोपियों के मक्खन चट करने वाले धरा को भिक्षा में स्वीकार करने वाले आप ही हैं। हिरण्य की छाती आपने चीर डाली। भस्मधारी शिव के नरकपाल को स्नेह की भिक्षा से भरने वाले आप शालग्राम हैं।

पहले शतक का छठा दशक **1 ः 6** या पासुर **998** से **1007** तक ः इसमें **10** पासुर हैं जो नैमिषारण्य दिव्य देश की प्रशस्ति हैं। कामवासना में लिप्त अपनी पूर्व की अवधि के लिये पश्चात्ताप प्रकट करते हुए आलवार संत कहते हैं कि अब प्रभु के पावन चरणों की शरण में आया हूँ। नैमिषारण्य में प्रभु घने वन के रूप में जाग्रत हैं। आप ही समुद्र मंथन करने वाले हैं।परनारी में लिप्त पापी को यम बुलाते हैं 'आओ और तांबे के इस तपती नारी का आलिंगन करो'। प्रभु ! भयाक्रांत मैं आपके चरणों में आया हूँ। भूखे के एक

कौर भोजन न देने वाला यह कूर पापी अब प्रभु के चरणों में आया है। कलि ने पांच कर्मेन्द्रियों को हम पर यातना देने के लिये लगा दिया। तिरूकुरूंगुडी के सलोने प्रभु नैमिषारण्य के प्रभु हैं। मांस के गारा, हड्डियों की सहतीर, नौ खिडकियों वाला केशादि से छाया हुआ यह घर जीव का बसेरा बना हुआ है। प्रभु आपही निराशा से मुक्त करने वाले हैं।

ºº

दिव्य देश **31**। नैमिषारण्य उत्तरप्रदेश

1।स्थान ः उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊसे **60** कि मी पर सीतापुर रोड पर नैमिषारण्य दिव्य देश अवस्थित है। सीतापुर से **25** कि मी पर सीतापुर खैराबाद रोड के चौराहे से तथा मिसरीख से **5** कि मी पर नैमिषारण्य है। रेल मार्ग के सीतापुर बालामउ अनुभाग के निमसार एक स्टेशन है तथा स्टेशन से नैमिषारण्य **2** कि मी पर है। दिल्ली लखनऊरेलमार्ग पर हरदोइ से नैमिषारण्य पास में है।

2। विग्रह स्वरूप एवं महिमा ः यहां का वनप्रदेश नारायण का दिव्य स्वरूप माना जाता है। यहां का तीर्थ चकतीर्थ है। पुराकाल में ब्रह्म विद्या के अति महत्वपूर्ण विवेचन का यह स्थल रहा है जहां रोमहर्षण एवं सूत आदि ऋषि सभापति के रूप में कार्यरत रहे हैं। नारायण ने यहां अपना चक फेंककर एक निमिष में असंरूय दानवों का नाश किया था। इसीलिये इसे नैमिषारण्य कहते हैं। भगवान राम ने भी यहां के तीर्थ में स्नान कर रावण की हत्या का दोष मिटाया है। बलराम जी तीर्थयात्रा में पहली बार यहां आये तो एक ऋषि से तिरस्कृत समझ उनका बध कर दिया। पाप के प्रायश्चित्त में एक वर्ष की और तीर्थयात्रा संपन्न की और दोबारे यहां आने पर ऋषियों से सम्मानित हुए तथा विल्वल नामक असुर का अंत किया।

3।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **998** से **1007** तक।

ºº

पहले शतक का सातवां दशक **1 ः 7** या पासुर **1008** से **1017** तक ः इसमें **10** पासुर हैं। यह अहोविलम के लक्ष्मी नरसिंह भगवान की प्रशस्ति है। भयग्रस्त जगत का प्रभु ने शिंगवेल कुन्डरम यानी अहोविलम में पधार कर उद्धार किया। यहां का वन आकामक वहेलियों से भरा हुआ है। िहरण्य की छाती फाड़ने के लिये श्वेत पैनी दांत लिये नरकेशरी के स्वरूप में प्रभु प्रकट हुए। तीक्ष्ण पंजो से असुर की छाती आपने चीर डाली। अहोविलम का मार्ग दुर्गम है तथा कुत्ते, गिद्ध, एवं चिलचिलाती धूप भक्तों का स्वागत करते हैं। आपके भयानक स्वरूप को देख देवगन भाग खड़े हुए। यहां का

मार्ग घने बांस में घूमने वाले हाथी के पदचिह्नों से भरा रहता है। आप यहां हजारों भुजाओं से लक्ष्मी का आलिंगन करने को आतुर दिखते हैं।

००

दिव्य देश **32**। अहोविलम ः

1। स्थान ः आंध्र प्रदेश के दो दिव्यदेशों में से अहोविलम एक है। इस राज्य का दूसरा दिव्य देश वेंकटम का प्रसिद्ध स्थान है जो तिरूमला कहा जाता है एवं सात पर्वतश्रेणियों के सर्वोच्च शिखर पर स्थित है। अहोविलम नरसिंहावतार का स्थल है और कडप्पा से करीब **100** कि मी पर स्थित है। इस स्थान को अहोबिलम के अतिरिक्त अहोबलम, सिंगवेल कुण्डरम, तथा नव नरसिंह क्षेत्र कहते हैं।

2। विग्रह स्वरूप एवं महिमा ः नरसिंह अवतार में उदभव के समय ही प्रभु ने सारी लीला की पूर्णाहुती की है। एक ही समय में प्रभु का ऐसा स्वरूप है जो भक्त प्रह्लाद को आह्लादित करता है परंतु हिरण्यकशिपु को मृत्यु के समान डरावना लगता है। आपके मंत्र के नौ स्वरूपों का यहां दर्शन होता है

उग्रम् वीरम् महाविष्णुम् ज्वलन्तम् सर्वतोमुखम्।
नरसिंहम् भीषणम भद्रम् मृर्त्योमृत्युम् नमाम्यहम्।

पहाड़ की तलहटी मे 'छिन्ना अहोविलम' का मंदिर है जिसे 'प्रह्लाद वरदा नरसिंह स्वामी' का मंदिर कहते हैं। यहां से **8** कि मी ऊपर पहाड़ पर अहोविलम का मुख्य मंदिर है। ऊपर के मंदिर में पर्वत गुफा के विग्रह स्वयंभू कहे जाते हैं। दो पर्वत शिखरों को वेदाद्रि एवं गरूड़ाद्रि कहते हैं। अहोविलम विशाल 'आदिशेष' पर्वत श्रेणी का एक हिस्सा है। इसकी पूंछ श्रीशैलम है, अहोविलम पीठ है, तथा तिरूमला चोटी यानी सिर है। पेरूमाल का विशेष स्वरूप देखकर हिरण्यकशिपु के विनाश के बाद देवों ने आपकी सराहना करते हुए प्रपत्ति मंत्र कहा।

अहो वीर्यम अहो शौर्यम अहो बाहु पराक्रम ।
नरसिंहम्परम देवम्अहो बलम्अहो बलम् ।।

नरसिंह स्वामी के नौ दिव्य विग्रह का वर्णन निम्नवत है।

i. पहाड़ की तलहटी में 'लक्ष्मी नरसिंह' का स्वरूप है और 'प्रह्लाद वरदा नरसिंह' कहे जाते हैं। दस हाथ वाले उत्सव विग्रह ज्वाला नरसिंह कहे जाते हैं। एक हाथ से प्रभु गोद में हिरण्यकशिपु को दबाये हैं। आपका दूसरा हाथ उसके पैर को रोक रखा है। आप तीसरे एवं चौथे हाथ से असुरराज का पेट चीर रहे हैं। पांचवा एवं छठा हाथ उसका खून पीने में लगे हैं। सातवां एवं आठवां हाथ चक्र एवं शंख से युक्त है। नौवें

एवं दसवें हाथ में दो अन्य दिव्य आयुध हैं।

ii.तलहटी से **2** कि मी पर 'भार्गव नरसिंह' तपस्या रत हैं।

iii. वरदा नरसिंह से दक्षिण पूर्व दिशा में **2.5** कि मी पर 'योगानन्द नरसिंह' हैं। यहां प्रह्लाद को आपने योग की गूढ़ क्रियायें बताई थीं।

iv.वरदा नरसिंह से **3** कि मी दूर झाड़ी में पीपल पेड़ के नीचे 'छत्रवत नरसिंह' हैं।पेड़ छाता की तरह है।

v.ऊपर के गुफा वाले स्वयंभू नरसिंह पेरूमाल जो वरदा नरसिंह से **8** कि मी पर **2800** फीट की ऊंचाई पर हैं। यहां सुदर्शन एवं चेंचुआ लक्ष्मी की पृथक पृथक सन्निधि है। अहोविलम के आप ही मुख्य पेरूमाल हैं।उत्सव मूर्ति नीचे के वरदा नरसिंह मंदिर में हैं। स्थानीय जनजाति की कन्या चेंचुआ थी जो लक्ष्मी का अवतार मानी जाती हैं। हिरण्यकशिपु के अंत के बाद नरसिंह भगवान यत्र तत्र घूम रहे थे कि चेंचुआ लक्ष्मी से साक्षात्कार हुआ एवं चेंचुआ लक्ष्मी के साथ आपका व्याह रचा गया। प्रतिवर्ष यह अवसर बड़े धूम धाम से माघ महीने में मनाया जाता है।

vi.ऊपर के मुख्य विग्रह से **1** कि मी पर 'कोधकरा नरसिंह स्वामी' हैं।आपका मुखड़े का स्वरूप वराह स्वामी का है।आप लक्ष्मी के साथ हैं। तीन दिन तक वराह कांड एवं षड़ाक्षर नारायण के जप से विशेष सिद्धि मिलती है।

vii.करंज पेड़ के नीचे 'करंज नरसिंह स्वामी' ऊपर के मंदिर से **1** कि मी पर हैं। आप बैठे मुद्रा में सारंग धनुष एवं चक धारण किये हैं।

viii. मालोल नरसिंह स्वामी ऊपर की सन्निधि से **2** कि मी पर सौम्य स्वरूप में लक्ष्मी के साथ हैं।

ix.ज्वाला नरसिंह स्वामी ऊपर वाली सन्निधि से **4** कि मी पर हैं। इसी स्थल पर असुर का अंत हुआ था।

ऊपर की सन्निधि से **8** कि मी पर पहाड़ दो भाग में फट गया है। कहते हैं प्रभु इसी खंभे रूपी पर्वत को फाड़कर प्रकट हुए थे। इसे उग्र स्तंभ कहते हैं। दोनों सतहों पर तिरूनामम शंख एवं चक अंकित हैं।

3।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1008** से **1017** तक ।पेय आळवार, मूनराम तिरूवन्दादि **2376**।

ºº

पहले शतक का आठवां, नौवां, दसवां दशक, तथा दूसरा शतक का पहला दशक **1**ः**8, 1**ः**9** एवं **1**ः**10** तथा **2**ः**01** या पासुर **1018** से **1057** तक ः वेंकटम की प्रशस्ति में

40 पासुर हैं जो चार दशकों में पूरा होता है। कुरून्दु वृक्ष को तोड़ने वाले, शंख से भरे सागर में शयन करने वाले, केसिन का जबड़ा फाड़ने वाले प्रभु मछलियों से भरे तालाव वाले वेंकटम में रहते हैं। क्षीरसागर एवं श्रीरंगम में शयन करने वाले प्रभु वेंकटम के प्रभु हैं। गोवर्द्धन धारण करने वाले अर्जुन के लिये युद्ध करने वाले प्रभु तिरूइडवन्दै में, भक्तों के हृदय में तथा वेंकटम के बागों एवं जल प्रपातों में रहते हैं। वामन स्वरूप में धरा लेने वाले एक बाण से सात वृक्ष वेधने वाले हिमालय एवं तिरूमालैरूञशोलै में रहने वाले, आठो दिशाओं को उदरस्थ करने वाले, हिरण्य का नाश करने वाले, क्षीण चंद्रमा का कल्याण करने वाले, वेंकटम में रहते हैं। अष्टाक्षर मंत्र का जाप करने वाले को जन्म की आवृति से आप मुक्त करते हैं।

आलवार संत कहते हैं कि परिवार एवं मित्रों के लिये द्रवित होते होते ऊब कर अब आपकी शरण में आया हूँ। कटु वचनों का प्रयोग कर पाप अर्जित करने वाले इस दास को सेवा का अवसर दीजिये। कितनी बार हमारा जन्म मरण हुआ। पूर्व के कर्मो का प्रायश्चित करने को तैयार घावों से भरा देह लिये कराहते आपके पास आया हूँ। सातो लोकों के आप आंख की तरह प्यारे हैं।

बाणों से आपने लंकेश को विदीर्ण कर दिया। गरूड़ की सवारी वाले हैं। तुलसी की माला धारण करते हैं। रस्सी से लटके घड़े से मक्खन खाने वाले नप्पिनाय के लिये सात वृषभों को शमन करने वाले आप वेंकटम के प्रभु दास पर कृपा कीजिये। दसवें दशक के अंत में आळवार संत विश्वास के साथ कहते हैं कि आप हमारे हृदय में आ गये हैं और अब आपको कभी जाने नहीं देंगे।

अंतिम दशक में आळवार संत अपने हृदय को प्रभु के प्रति प्रेरित करते हैं। आप साधनारत संतों के हृदय में रहते हैं तथा वेंकटम में रहते हैं। हे हृदय! देवों की चेतना की तरह आज तू भी प्रभु की सेवा में शांति से प्रवेश कर गये हो। पृथ्वी पर प्रभु का कोई मित्र एवं कुटुम्ब नहीं है। प्रेम से आप सेवा का अवसर देते हैं। फूलों की माला से पूजा करने वाले को स्वर्ग ले जाते हैं। हे हृदय! तूने ठीक काम किया है। बौद्धों के मंदिर में अशोक एवं न्यग्रोध यानी पीपल पेड़ की पूजा होती है। हमारे प्रभु ही उनके भगवान हैं। तीन पासुर **1052** से **1054** तक आळवार संत बौद्धों को अपने प्रभाव क्षेत्र में आते बताते हैं। वेंकटम के प्रभु दूर भी हैं पास भी हैं। आप बड़े भी हैं छोटे भी हैं। ब्रह्मा शिव इन्द्रादि आपके मंदिर में आपकी पूजा करते हैं। हंस रूप में आपने वेद को प्रकट किया।

°°°

दिव्य देश **33** । तिरूइडवन्दै ः

1 । स्थान ः इडवन्दै महाबलीपुरम रोड पर चेन्नै से **41** कि मी पर है तथा महावलीपुरम से चेन्नै की ओर **11** कि मी पर स्थित है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः यहां वराह भगवान खड़े मुद्रा में अपनी बाईं जांघ पर भूदेवी को स्थापित कर बायें चरण को घुटने की ऊंचाई तक उठाये हैं जो सपत्नी शेषनाग के सिरपर टिका हुआ है । आपका दांया चरण सीधा जमीन पर टिका हुआ है । तमिल में 'इड' का अर्थ बायां होता है यानी बाईं तरफ । अपभ्रंश होकर यह नाम 'तिरूविडवेन्दै' या 'तिरूवेडन्दै' हो गया है । मूलावर को लक्ष्मी वराह पेरूमाल तथा उत्सव मूर्त्ति को श्री नित्यकल्याण पेरूमाल कहते हैं । कोमलवल्ली तायर की स्वतंत्र सन्निधि है । तीर्थ को कल्याण तीर्थ तथा विमान को कल्याण विमान कहते हैं ।

3 । महिमा ः कथा है कि गावल मुनि ने अपनी **360** पुत्रियों को भगवान को समर्पित कर दिया था । वर्ष के प्रत्येक दिन में आपने एक एक किशोरी से व्याह रचा इसलिये आपको नित्य कल्याण पेरूमाल कहते हैं । सबों को मिलाकर भगवान ने एक किशोरी का स्वरूप कर दिया । समुद्र से भू देवी का उद्धार करके वराह स्वरूप वाले प्रभु शेषनाग के सिर पर पैर रखकर बाहर आये । रास्ते में भू देवी को मंत्रोपदेश कर रहे हैं एवं मूलावर इसी मुद्रा में दर्शनीय हैं । यहां चैत्र में ब्रह्मोत्सव होता है तथा ज्येष्ठ आषाढ़ पौष तथा माघ में गरूड़ सेवई का उत्सव मनाया जाता है । महाबलीपुरम में एक दूसरे स्थान पर भूदेवी वराह भगवान की दाईं जांघ पर बैठी हुई दर्शन देती हैं इसलिये इस मन्दिर को 'तिरूवलवेन्दै' कहते हैं ।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1021 1108** से **1117** तक, एवं शिरय तिरूमडल **2673**, तथा पेरिय तिरूमडल **2674** ।

ःःः

दूसरे शतक का दूसरा दशक **2** ः **02** या पासुर **1058** से **1067** तक ः इसमें **10** पासुर हैं तथा यहां तिरूवल्लूर के 'वीर राघव पेरूमाल' की प्रशस्ति की गयी है । गेरूआ वस्त्र में सन्यासी के छद्म वेष में रावण सीताजी से भिक्षा लेने आया और उन्हें हर ले गया । मक्खन चुराने पर गोपियों के हसी का पात्र बनने वाले प्रभु ने रावण पर तप्त बाणों की वर्षा से उसका अंत किया । आपने हनुमान को दूत बनाकर रावण को सावधान किया था । आप भी पांडव का दूत बनकर उपहास के पात्र बने । शिशु रूप में जगत को उदरस्थ कर शयन करने वाले तिरूवल्लूर में शयन कर रहे हैं । चतुर्मुख ब्रह्मा, त्रिनेत्र शिव, एवं इन्द्र आपकी पूजा करते हैं । लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर विराजती हैं ।

००

दिव्य देश **34** । तिरूवल्लूर

1 । स्थान ः तिरूवल्लूर चेन्नै से **42** कि मी पर अरक्कोनम की ओर है। अन्य रास्ता रामानुज स्वामी के अवतार स्थल श्रीप्रेमबुदुर से है जहां से तिरूवल्लूर **15** कि मी पर अवस्थित है। चेन्नई अरक्कोणम रेल मार्ग में अवस्थित होने से लोकल ट्रेन की सुविधा प्राप्त है।

2 । विग्रह स्वरूप ः दो भुजा के साथ मूलावर भुजंगशयनम अवस्था में हैं तथा आपको 'वीरराघव पेरूमाल' कहा जाता है। गर्भ गृह में आपका दायां हाथ शालिहोत्र मुनि के सिर पर स्थापित है तथा बायां हाथ नाभिकमल पर आसीन ब्रह्मा को प्रणव का उपदेश दे रहा है। तायर कनकवल्ली हैं जिनकी स्वतंत्र सन्निधि है। तीर्थ को हृदयतापनाशिनी कहते हैं तथा विमाान को विजयकोटि विमान कहते हैं।

3 । महिमा ः आप शालिहोत्र मुनि की तपस्या के फलस्वरूप यहां अपने ठहरने की जगह मांगते प्रकट हुए। 'एव्वुल' तमिल शब्द है एवं इसका अर्थ है 'मेरा घर कहां है'। प्रारंभ में स्थान को तिरूएव्वुल्लुर कहा जाता था जो बाद में अपभ्रंश होकर तिरूवल्लूर हो गया। आप 'भेषजम भिषक' वैद्य के रूप में प्रसिद्ध हैं तथा सभी रोगों का निदान करते हैं। सन्निधि से बाहर आपके चरण पादुका पर नमक अर्पित करने की परंपरा है जो रोगों के निदान की प्रार्थना के रूप में मानी जाती है। आंडाल, नम्माळवार, रामानुज एवं वेदांतदेशिक की पृथक सन्निधि है। यहां का कार्यक्रम अहोविलम मठ के प्रशासन से संचालित है।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, नान्मूगन तिरूवन्दादि **2417**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1058** से **1067** तक, तथा पेरिय तिरूमडल **2674**।

००

दूसरे शतक का तीसरा दशक **2 ः 03** या पासुर **1068** से **1077** तक ः इसमें **10** पासुर हैं जो तिरूवल्लीकेणी के पार्थसारथी प्रभु की प्रशस्ति में रचे गये हैं। तीन नगरों के नाश करने वाले शिव को आपने शाप से विमुक्त किया। कंस के साथ ही उसके योद्धाओं एवं मदमत्त हाथी का अंत किया। अर्जुन का सारथी बनकर आपने कौरव का नाश किया। कैकेयी के कहने से राजपाट छोड़ने वाले आप ही प्रभु हैं। लक्ष्मी के साथ आप तिरूवल्लीकेणी में दर्शन देते हैं। पूतना के विनाशक तथा इन्द्र का यज्ञ भाग छीनकर गोवर्द्धन उठाने वाले आप प्रभु हैं। आप ने पाडवों के दूत का काम किया। अंधे धृतराष्ट्र के पुत्रों दुर्योधन एवं दुःशासन की यातना से आपने द्रौपदी का उद्धार किया।

सीता के साथ आपके तीनो भाई आपकी नित्य वंदना करते हैं। आपके हजार नाम का गान करने वाले प्रह्लाद को आपने नरसिंह रूप में उसके दुष्ट पिता की यातनाओं से बचाया। गजेन्द्र के उद्धारक प्रभु तिरूवल्लिकेणी में रहते हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **35**। तिरूवल्लीकेणी ः

1। स्थान ः यह दिव्यदेश तमिलनाडु के चेन्नै शहर के बीच ट्रिप्लीकेन क्षेत्र में अवस्थित है तथा पार्थसारथी मंदिर के रूप में विख्यात है।

2। विग्रह स्वरूप ः खड़े मुद्रा में दो भुजा वाले मूलावर मुखमंडल पर मूंछ लिये पूर्वाभिमुख हैं और वेंकटकृष्ण कहे जाते हैं। आप दायें हाथ में शंख धारण कर बायें हाथ से अपने चरणारविंद की सुलभता को वरदहस्त मुद्रा से प्रदर्शित करते हैं। भगवान के उत्सवमूर्ति को पार्थसारथी कहते हैं। तायर वेदवल्ली हैं तथा अल्लिकेणी पुष्करणी तीर्थ है। गोपुर के सदृश शिखर वाला गर्भगृह के ऊपर के विमान को अनंत विमान कहते हैं। कांचीपुरम वरदाराज पेरूमाल के गर्भगृह के ऊपर का शिखर पुण्यकोटि विमान कहा जाता है तथा पार्धसारथी भगवान के समान गोपुर के शिखर जैसा दिखता है। आपके दाहिने रूक्मिणी खड़ी हैं तथा बायें भाग में बलराम, सात्यकि, प्रद्युम्न, अनिरूद्ध विराजमान हैं। मंदिर के परिसर में ही पार्थसारथी भगवान के पीठ की तरफ स्वतंत्र सन्निधि में चतुर्भुजी योग नरसिंह बैठे मुद्रा में पश्चिमाभिमुखी हैं। भगवान के सामने बायें तरफ पृथक पृथक सन्निधियों में रंगनाथ भगवान शयनावस्था में पूर्वाभिमुखी, तथा कोदंडराम प्रभु की सन्निधि दक्षिणाभिमुखी हैं। भगवान राम अपनी सन्निधि में तीनों भाई तथा मैथिली यानी सीता जी के साथ विराजते हैं। तिरूकाच्वी नांबी यानी कांचीपूर्ण स्वामी नम्मालवार भी कोदंडराम प्रभु के तरफ अलग अलग सन्निधि में दक्षिणाभिमुख हो विराजते हैं। भगवान के सामने दायें आळवार एवं आचार्य की अनोखी उत्तराभिमुखी गोष्ठी है। भगवान की सन्निधि के दायें स्वतंत्र सन्निधि में पूर्वाभिमुखी तायर बैठी मुद्रा में चतुर्भुज स्वरूप में विराजती हैं। बायें तरफ आन्डाल की सन्निधि पृथक है जहां दोभुजा में आन्डाल पूर्वाभिमुख खड़ी हैं। पूर्वाभिमुख खड़े गजेन्द्रवरदा की स्वतंत्र सन्निधि तायर की सन्निधि के दायें है। वरदा यहां गरूडारूढ़ दर्शन देते हैं। यहीं पास में तिरूमझिसै आळवार की स्वतंत्र सन्निधि पूर्वाभिमुख हो विराजती हैं।

3। महिमा ः भोग, योग, एवं वीर अवस्थाओं में प्रभु के दिव्य विग्रहों का यहां इस मन्दिर में अनोखा दर्शन मिलता है। साथ ही यहां भगवान भिन्न भिन्न विग्रहों में तीनो स्वरूप शयन रंगनाथ , बैठे योगनरसिंह तथा गरूडारूढ़ गजेन्द्रवरदा, तथा खड़े राम

तथा वेंकटकृष्ण में दर्शन देते हैं। उत्सवविग्रह पार्थसारथी कहे जाते हैं तथा मूलविग्रह को वेंकटकृष्ण कहते हैं। मूलावर यहां मूछ से सुसज्जित दर्शन देते हैं जो सारथी स्वरूप का प्रतीक है। युद्ध क्षेत्र में अर्जुन के रथ हांकने के क्रम में आपने शत्रुओं के बाणों का प्रहार सहा है जो आपके उत्सवविग्रह के मुखमंडल पर छोटे छोटे घाव के चिह्न के रूप में दिखते हैं। तिरूमंजन के समय उत्सवमूर्ति का रंग सोने सा सुनहला दिखता है और अन्यथा आप नीले वर्ण में अनोखी मुस्कान के साथ दिखते हैं। आपके वदन पर लटकती तलवार गीता के चौथे अध्याय के श्लोक **42** का द्योत्तक है जो अविद्या का नाश करने वाला है। चैत माह का व्रह्मोत्सव तथा धनुर्मास की वैकुंठ एकादशी में यहां विशेष उत्सव मनाया जाता है।

वेंकटाचल के श्रीनिवास प्रभु ने यहां अनोखे रूप में दर्शन दिया है। सुमति राजा ने श्रीनिवास भगवान से पार्थसारथी स्वरूप में दर्शन देने की विनती की। श्रीनिवास भगवान ने राजा को वृन्दारण्यक में भेज दिया जो आज का तिरूवल्लीकेनी या ट्रिप्लीकेन है। व्यासजी ने यहां अत्रि मुनि को इसी स्थान पर तपस्या के लिये भेजा था और मुनि को एक विग्रह दिया जिसमें भगवान दायें हाथ में शंख धारण किये हुए पार्थ सारथी के रूप में दिखते हैं। राजा जब वृन्दारण्यक आये तो तपस्यारत मुनि के पास पार्थसारथी विग्रह देखकर बहुत प्रसन्न हुए और इस विग्रह को यहां स्थापित किया गया। यहां के पुष्करणी में मुदगल ऋषि के शाप के कारण मछलियां नहीं दिखती हैं। ऋषि को मछलियां स्नान में तंग करती थीं और कुपित होकर एक दिन ऋषि ने मछलियों को पुष्करणी छोड़कर चले जाने को कहा। ऋषि की आज्ञा मानकर मछलियों ने पुष्करणी छोड़ दिया।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, नान्मूगन तिरूवन्दादि **2416**। परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1068** से **1077** तक। पेय आळवार, मून्राम तिरूवन्दादि **2297**।

ःः

दूसरे शतक का चौथा दशक **2 ः 04** या पासुर **1078** से **1087** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और यह तिरूनीरमलै की प्रशस्ति है। आळवार संत अन्य दिव्य देशों का उदाहरण प्रस्तुत कर कहते हैं कि नरैयूर के खड़े अवस्था वाले, तिरूवाली के बैठे अवस्था वाले, तथा कुडन्दै के शयनावस्था वाले, एवं तिरूकोइल्लूर के चलते स्वरूप वाले प्रभु यहां चारों अवस्था में एक ही स्थान पर विराजमान हैं। इन्द्र का कण्डावनम जंगली आग की चपेट में था। प्रभु ने सारी आग निगल ली। नरसिंह एवं वामन प्रभु का पावन निवास

तिरूनीरमलै है। आपने सौ कौरवों का नाश अपने पांच मित्रों के लिये किया। पत्थर से सागर पर सेतु बनाया। समस्त जगत को निगल कर आपने कहा हम भूखे हैं। तांत्रिकों की भर्त्सना करते हुए आळवार संत कहते हैं कि यह सर्वथा घृणित पथ है। प्रेम का मार्ग ही श्रेयस्कर होता है।

ºº

दिव्य देश **36**। तिरूनीरमलै ः

1। स्थान ः चेन्नै सेंट्रल रेलवे स्टेशन से दक्षिण की ओर जीएसटी रोड पर **20** कि मी पर पल्लावरम स्थित है। तिरूनीरमलै की दूरी पल्लावरम से **5** कि मी पश्चिम में है।

2। विग्रह स्वरूप ः यहां 'रंगनाथ' पेरूमाल पहाड़ी के ऊपर हैं। छोटी पहाड़ी पर प्रभु की चारो अवस्थाओं की सिन्निधियां हैं। दक्षिणाभिमुखी रंगनाथ भगवान भुजंग शयनम, शांत नरसिंह प्रभु बैठे हुए, नीरवन्नन प्रभु खडे, तथा त्रिविक्रम भगवान चलते हुए दर्श न देते हैं। नीरवन्न प्रभु पहाड़ी के नीचे हैं जबकि अन्य स्वरूप पहाड़ी के ऊपर हैं। भगवान का उत्सव विग्रह पहाड़ी के नीचे के मन्दिर में रहता है जो तीन अवसरों पर ऊपर जाता है ः आषाढ़ पूर्वाफाल्गुनी, बह्मोत्स्व के प्रारंभ, एवं अंतिम दिन। यहां की पुष्करणी को क्षीर पुष्करणी कहते हैं जो कारूण्य पुष्करणी सिद्ध पुष्करणी तथा स्वर्ण पुष्करणी का मिश्रण है। प्रह्लाद से प्रसन्न हो नरसिंह प्रभु के अश्रु से कारूण्य पुष्करणी बनी। शिव की जटाओं की गंगा सिद्ध बनीं तथा नित्य सूरी द्वारा नीरवन्न प्रभु के तिरूमंजन के लिये स्वर्ण कमंडल में लाया हुआ बिरजा का जल स्वर्ण पुष्करणी हुआ। तायर को अणिमामलारमंगै कहते हैं। विमान को तोयागिरी कहते हैं।

3। महिमा ः यहां की पहाड़ी जल से पूरा घिर रहता था। तिरूमंगै आळवार को पास के तिरूमंगैपुरम में **6** माह की प्रतीक्षा के बाद दर्शन मिला था। जल से घिरने के कारण इसे नीरमलै या तोयगिरि कहते हैं। पहाड़ी के नीचे, बीच में, तथा ऊपर, तीनों जगह भगवान के विभिन्न स्वरूपों का दर्शन होता है। बाणासुर ने जब अनिरूद्ध को कैद कर लिया था उस समय अनिरूद्ध को छुड़ाने के लिये घोर युद्ध हुआ था। बाण के पक्ष से शिव ने भगवान कृष्ण से युद्ध किया। भगवान ने बाणा की चार भुजायें छोड़कर सब काट डालीं। तब यहीं तिरून्निमलै में भगवान की आराधना कर बाणा मुक्त हुआ। एक बार वाल्मीकि मुनि ने यहां रंगनाथ भगवान की पूजा की तथा पहाड़ से नीचे आये। मुनि को भगवान राम के दर्शन की इच्छा होने से भगवान ने यहां चारो भाई, सीता जी, सुग्रीव एवं आंजनेय के साथ दर्शन दिया। रंगनाथ भगवान राम बन गये। आदिशेष लक्ष्मण बन गये। चक्र भरत जी, तथा शंख शत्रुघ्न बन गये। विष्वकसेन सुग्रीव बने तथा गरूड़

आंजनेय बन गये।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1078** से **1087, 1115 1365 1521 1554 1660 1765 1848**। भूत आळवार, इरान्दाम तिरूवन्दादि **2227**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दूसरे शतक का पांचवां एवं छठा दशक **(2 ः 05 या पासुर 1088 से 1107 तक)** ः दो दशकों में कुल **20** पासुर हैं जो महाबलीपुरम के तिरूकडमल्लै दिव्य देश की प्रशस्ति गाते हैं। तिरूकडमल्लै के प्रभु तलशयनम हैं यानी बिना कोई शय्या के धरा पर सोये हैं। आप ही जगत को निगलने वाले हाथी एवं वृक्ष का नाश करने वाले हैं। पाखंड मार्ग से सावधान रहते हुए आळवार संत प्रभु की भक्ति को ही चरम मार्ग बताते हैं। तिरूनिन्रवूर में खड़े अवस्था वाले प्रभु यहां सोये हैं। पूतना के विनाशक, गाय की चरवाही करने वाले प्रभु तंजै मामणि में पूजे जाते हैं तथा आप संसार की रक्षा घोड़े पर सवार होकर (पासुर **1090**) कल्कि रूप में करेंगे।आप मक्खन चुराने वाले, गोपी के साथ रास रचने वाले, गोवर्द्धन उठाने वाले, तथा दुष्ट गाड़ी का नाश करने वाले हैं। सागर में शेषशायी, वराह स्वरूप वाले, एवं त्रिविक्रम बनने वाले आप ही हैं। नारी के रूप में असुरों को अमृत से वंचित किया। वेद एवं आगम के सार हैं। चाहने वाले भक्तों के हृदय में बसते हैं। पार्श्वभाग में भू देवी वाले तथा वक्षस्थल पर लक्ष्मी वाले आप ही हैं। देवगन आपकी पूजा एवं परिक्रमा करते हैं। कुछ श्रमन अर्चारूप के बदले ज्ञान रूप का ध्यान करते हैं। हम तो कहेंगे कि कांचीपुरम के वेग्का वाले यथोक्तकारी प्रभु का ध्यान करो।कडमल्लै के पास सागर तट पर स्वर्ण एवं रत्नों से भरी नावें लगती हैं। पिंगल वर्ण श्मसान निवासी शिव के साथ आप प्रभु कडमल्लै में रहते हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **37**। तिरूकडमल्लै दिव्य देश ः

1।स्थान ः तमिल नाडु के चेन्नै शहर से **55** कि मी दूर महाबलीपुरम में धरा पर शयन करते मूलावर विराजमान हैं।आज का महाबली पुरम या ममलापुरम पहले कडलमल्लै कहा जाता था।

2। विग्रह स्वरूप ः पूर्वाभिमुखी प्रभु दो भुजा में थल पर शयन कर रहे हैं तथा दोनों भुजायें चरणारविंद की तरफ सीधी पड़ी हैं। यह इस बात का द्योत्तक है कि प्रभु के चरणारविंद ही एक मात्र आश्रय हैं। भगवान का सिर दक्षिण दिशा में तथा चरण उत्तर दिशा में है। तायर नीलमंगै कही जाती हैं। पुण्डरीक पुष्करणी तीर्थ है तथा गगनाकृति

अनन्त विमान है।

3।महिमा ः यह स्थान भूतद आळवार का अवतार स्थल है। मंदिर के पूर्व में रोड के पार करने पर एक परिसर है जिसके पुष्करणी में भूतद आळवार फूल की पंखुड़ियों के बीच प्रकट हुए थे। यहां के तालाबों में सुन्दर कमल फूलों को देखकर पुण्डरीक मुनि को क्षीरसागर के प्रभु की अर्चना इन सुन्दर पुष्पों से करने की प्रेरणा हुई। क्षीरसागर की खोज में मुनि समुद्र का जल उलीचने लगे। यह अंतहीन काम था। एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में प्रकट होकर भगवान ने मुनि से भोजन की याचना की। मुनि जब भोजन की व्यवस्था कर लौटे तो बूढ़े ब्राह्मण की जगह प्रभु की अर्चा मूर्ति जमीन पर कमल के फूल की माला पहने शयनावस्था में देखे। मुनि को सब ज्ञात हो गया कि क्षीरसागर वाले प्रभु ही थलशयनम होकर यहां विराज रहे हैं। माघ महीने में विशेष उत्सव होता है। स्थानीय भक्तों की ऐसी मान्यता है कि जमीन सम्बन्धी कोई भी विवाद थलशयन भगवान की अर्चना से सुलझ जाती है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1088** से **1097 1195 1551 2050 2060,** तथा शिरिय तिरूमडल **2673,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**। भूत आळवार, इरान्दाम तिरूवन्दादि **2251**।

ःः

दिव्य देश **38**। तिरूनिन्रवूर ः

1।स्थान ः चेन्नै से **25** कि मी पर भक्तवत्सल पेरूमाल का मंदिर है। पुन्नमल्लै रोड पर तिरूवल्लूर के तरफ **16** कि मी जाने पर एक रोड बायें जाती है। इस रोड पर **6** कि मी चलने पर तिरूनिन्रवूर मंदिर मिलता है। तिरूनिन्रवूर एक रेलवे स्टशन भी है और चेन्नै सेंट्रल से अरक्कोणम सबअरबन रेल मार्ग पर के इस स्टेशन के लिये नियमित रूप से ट्रेन मिलती हैं। तिरूनिन्रवूर रेलवे स्टेशन से मंदिर **2** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर चतुर्भुजी हैं तथा खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुखी हैं। तिरूमला श्रीनिवास भगवान की तरह आपका नीचे का दायां हाथ वरद शरणागति मुद्रा में है जो 'मामेकं शरणं ब्रज' का उद्घोष करता है। मूलावर को भक्तवत्सल कहते हैं तथा उत्सवमूर्ति को भक्तार्ति कहते हैं। तायर यहां 'एन्नै पेट्रा तायर' तथा सुधावल्ली कही जाती हैं। वरूण पुष्करणी यहां का तीर्थ है तथा विमान को श्रीनिवास विमान कहा जाता है।

3।महिमा ः कहते हैं समुद्रराजा से अनबन होने पर लक्ष्मी यहां आकर खड़ी हुई थीं। खड़े होने को तमिल में 'निन्रा' कहते हैं अतः इस स्थान का नाम तिरूनिन्रवूर हो गया।

जब समुद्रराजा की प्रार्थना से लक्ष्मी नहीं मानीं तब भगवान स्वयं यहां पधारकर लक्ष्मी को शांत किये। यह स्थान प्रार्थनास्थल माना जाता है। यहां की प्रार्थना से धर्मध्वज राजा को अपना खोया हुआ साम्राज्य वापस मिल गया था। अपना खोया हुआ शंख निधि एवं पद्म निधि कुबेर ने तायर से प्रार्थना कर वापस प्राप्त कर लिया था।

प्रथम दर्शन में परकाल स्वामी को भगवान का अनुभव नहीं होने से उन्होंने कोई मंगलानुशासन नहीं किया। जब आळवार संत महाबली पुरम पहुंचे तो वहां के विग्रह में मॉ लक्ष्मी के हस्तक्षेप से भक्तवत्सल पेरूमाल ने दर्शन दिया। आळवार संत ने प्रसन्न होकर पासुर **1089** में भक्तवत्सल प्रभु का उल्लेख किया। मॉ लक्ष्मी इससे संतुष्ट नही हुईं और भगवान से आग्रह की कि परकाल स्वामी बहुत बड़े कवि हैं। उनसे और पद की रचना कराइये। भगवान पुनः आळवार संत के पास गये परंतु तबतक वे तिरूकन्नपुरम पहुंच चुके थे। वहां के विग्रह में भक्तवत्सल भगवान की छवि का पुनः उन्होंने पासुर **1642** में यशोगान किया।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1089 1642** ।

ःःः

दूसरे शतक का सातवां दशक **2 ः 07** या पासुर **1108** से **1117** तक ः इसमें **10** पासुर हैं एवं यहां तिरूविडवन्दै या तिरूइडवन्दै के नित्यकल्याण प्रभु से नायकी की मॉ अपनी बेटी की स्थिति के बारे में पूछती है। आळवार संत ने नायकी एवं उसकी मॉ के रूप में पेरिया तिरूमोळी के आगे के भाग को प्रस्तुत किया है। मॉ कहती है कि सागर से उत्पन्न लक्ष्मी प्रभु के वक्षस्थल पर विराजमान हैं फिर भी हमारी बेटी आपकी चाह नहीं छोड़ेगी। उसने आपके ही चरणारविंद को अपना आश्रय बनाया है। मेरी बेटी ने साज श्रृंगार छोड़ दिया एवं वह केवल आपकी गाथा गुनगनाती है। चंदन आग की तरह दुखदायी हो गया है। सागर का गर्जन सुन कर रोती है। हाथ के कंगन ढ़ीले हो गये हैं। आंखों में नींद नहीं है। शीतल वायु गर्म लगती है। लंका के विनाशक की कथा में खो जाना चाहती है। इसे कांचीपुरम के पास के तिरूपुतकुळी एवं मदुरै के पास के तिरूमालैरूञशोलै के प्रभु की प्रशस्ति प्यारी लगती है। कहती है हम नीरमलै चलें। इडवन्दै के प्रभु बताइये कि मेरी बेटी का क्या होगा ?

ःः

दिव्य देश **39** । तिरूपुतकुळी ः

1 । स्थान ः यह दिव्य देश कांचीपुरम से **7** कि मी पर चेन्नै बंगलोर रोड से **500** मी हट कर अवस्थित है।

2 | विग्रह स्वरूप ः चतुर्भुज मूलावर बैठे मूद्रा में पूर्वाभिमुख हैं एवं 'विजय राघव पेरूमाल' कहे जाते हैं | यहां की पुष्करणी को जटायु पुष्करणी कहते हैं | यहां विमान को विजयकोटि कहते हैं | तायर मार्गतवल्ली कही जाती हैं |

3 | महिमा ः यहां से थोड़ा पूरब छोटी पहाड़ी पर जटायु की सन्निधि है | भगवान राम ने पक्षीराज जटायु का अंतिम संस्कार इसी स्थान पर किया था | भगवान राम को समरपुंगवन भी कहा जाता है | आपने अपने धनुष को दबाकर यहां सरोवर उत्पन्न किया था जिसमें आपने स्नान भी किया और यह जटायु पुष्करणी हुआ | मूलावर अपनी जांघ पर जटायु को रखे हैं | इसे देखकर भू देवी एवं श्रीदेवी कुछ अन्यमनस्क भाव में दिखती हैं | इसी अन्यमनस्कता में श्रीदेवी भगवान के दायें न होकर बायें हो गयी हैं | यहां की तायर 'मार्गतवल्ली' हैं और इनकी सन्निधि अन्य तीर्थो से विपरीत भगवान की बायीं ओर अवस्थित है | यहां की तायर संतान देती हैं और यहां अमावस्या को अर्चना करने वाली संतानहीन नारी संतानवती हो जाती हैं | श्री रामानुज स्वामी के गुरू यादवप्रकाश का यह जन्म स्थान है | यादव प्रकाश ने बाद में रामानुज स्वामी का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया था | ब्रह्मोत्सव में 'कील कुदरै' पर भगवान सवारी करते हैं | यह एक यांत्रिक घोड़ा है जो अपने अंगों को वास्तविक घोड़े जैसे हिलाता है | यह तीन खंड में है तथा बीच वाले खंड पर भगवान विराजते हैं | तीनों खंड उत्सव में जोड़ दिये जाते हैं | इसके शिल्पीकार ने अन्यत्र इस तरह का घोड़ा बनाने से मना कर दिया था | ब्रह्मोत्सव में एक दिन भगवान की सवारी शिल्पीकार के सम्मान में उसके आवास की वीथि में आती है |

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1115** तथा पेरिय तिरूमडल **2674** |

००

दूसरे शतक का आठवां दशक **2 ः 08** या पासुर **1118** से **1127** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और पूर्व के दशक में परकाल नायकी की मॉ की चिन्ता को देखकर भगवान प्रकट होने के संकेत देते हैं | आळवार संत कांचीपुरम के अष्टभुज पेरूमाल को 'अट्टावुयगारम' से संबोधित करते हैं | प्रकाल नायकी भगवान का स्वरूप देखकर प्रसन्न चित्त हो अपनी मॉ से पूछती है कि यह स्वरूप किनका है तथा स्वयं ही उत्तर भी देती है | जब शिव एवं ब्रह्मा ने प्रभु का आश्चर्यजनक स्वरूप देखकर पूछा तो प्रभु ने कहा कि मैं अट्टावुयगारम पेरूमाल हूँ | वैदिक ऋषियों ने वामन रूप पर आश्चर्य प्रकट किया तो आपने कहा कि मैं अट्टावुयगारम पेरूमाल हूँ | आप धनुष बाण गदा शंख

खड्ग चक्र एवं फूल से सुशोभित हैं। क्या आप मदमत्त हाथी का दांत निकाल कर नाश करने वाले गोप किशोर हैं। आपने देवों तथा मनुष्यों को वेद वेदांत इतिहास कल्पसूत्र व्याकरण मीमांसा तथा अन्य पवित्र साहित्य दिया। आप आये और किशोरियों के आभूषण के अतिरिक्त उनके हृदय की शांति चुराकर ले गये। आपके गले में तुलसी की माला एवं मुख पर चंदन का लेप ... यह सब मैं कैसे वर्णन करूं। आपकी आंखें एवं स्वरूप मेरे मन में गहरे गड़ गये हैं। हमारे हाथ के कंगन निकल कर आपके आश्रय में चले गये। आपने हमारी कमर पर दृष्टि डाली। आपका कटाक्ष भी मधुर विष है।

ஃஃ

दिव्य देश **40**। अष्टभुज कांचीपुरम ः

1। स्थान ः यह दिव्यदेश वरदराज पेरूमाल कोइल से **2** कि मी पश्चिम में है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर अष्टभुज रूप में पश्चिमाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। मूलावर को अष्टभुज के अतिरिक्त आदिकेशव कहते हैं। उत्सवमूर्ति को गजेन्द्रवर्द्धन कहा जाता है। तायर का मूलावर 'पुष्पवल्ली' तथा उत्सवविग्रह 'अलारमेल मंगै' कहे जाते हैं और विमान चक्रघोष विमान कहा जाता है। तीर्थ गजेन्द्र पुष्कारणी कहा जाता है। प्रभु की अर्चना के पूर्व यहां तायर की अर्चना की जाती है। प्रभु की दायीं तरफ के चार हाथ चक्र तलवार कमल एवं बाण धारण किये हैं। बायीं ओर के चार हाथ शंख धनुष ढ़ाल एवं गदा लिये हैं।

3। महिमा ः कांचीपुरम का 'का' शब्द का अर्थ है ब्रह्मा। 'अंजीरम' का अर्थ है पेरूमाल की पूजा करना यानी जहां ब्रह्मा ने भगवान की पूजा की वह 'कांचीअंजीरम' है और अपभ्रंश होते होते आज के दिन यह कांचीपुरम हो गया है। कांची में ब्रह्मा ने अकेले यज्ञ प्रारंभ किया। इससे नाराज होकर सरस्वती ने यज्ञ में विघ्न डालने के लिये असुरों का दल भेजा परंतु भगवान ने सबों का नाश कर दिया। पुनः सरस्वती ने काली को भेजा। भगवान ने काली को चैत महीने के रोहणी नक्षत्र के दिन नियंत्रण में कर लिया। इस तिथि को भगवान का ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। काली का एक मंदिर अष्टभुज भगवान के समीप स्थित है जहां काली को भगवान ने रोक रखा था। तदुपरांत सरस्वती ने एक विचित्र दुष्टजीव की उत्पत्ति की। वह अष्टभुज भगवान को देखकर डर गया एवं आत्मासमर्पण कर बैठा। सर्प के वेश में यहां शिव ने यज्ञ की रक्षा की। सरस्वती का प्रयास इस तरह से विफल हो गया। प्ये आळवार यानी मह योगी को यहां गजेन्द्रमोक्ष का दर्शन मिला था। कहते हैं अपने उद्धार के बाद गजेन्द्र ने वरदराज भगवान के समीप रहकर अपना बाकी जीवन व्यतीत किया। कांचीपुरम में यह अकेला

मंदिर है जहां उत्तरदिशा में 'परमपद द्वार' बना है जो मात्र वैकुंठ एकादशी के दिन ही भगवान के दर्शन हेतु प्रवेश के लिये खोला जाता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1118** से **1127** तक, **2050 2060**, तथा पेरिय तिरूमडल **2674**। पेय आळवार मुन्राम तिरूवन्दादि **2380**।

ºº

दूसरे शतक का नौवां दशक **2** ः **09** या पासुर **1128** से **1137** तक ः इसमें **10** पासुर हैं। 'परमेच्च्वर विण्णगरम' कांचीपुरम का श्री वैकुंठ दिव्य देश है। प्रभु ही वेद के सार हैं एवं नारायण, ब्रह्मा तथा शिव हैं। इस मंदिर की प्रतिमाओं में पराक्रमी पल्लव नरेश प्रभु की अर्चना करते दिखाये गये हैं। प्रत्येक पासुर में पल्लव नरेश की प्रभुता की भी महिमा बतायी गयी है। राज ध्वज सर्प चिह्न से अंकित है। प्रभु की नाभि कमल से जगत की सृष्टि हुई। सागरशायी भगवान ऊंची अटारियों के कांची में प्रकट हुए। आप संपूर्ण जगत को निगलने वाले हैं। गजेन्द्र की रक्षा एवं कालिय का दमन प्रभु ने किया। नरसिंह भगवान एवं माबली से उपहार लेने वाले वामन भगवान कांची के निवासी हैं। प्रभु ने बन्दरों की सहायता से सागर पर सेतु बांधा।

ºº

दिव्य देश **41**। श्रीवैकुंठ या परमेच्च्वर विण्णगरम कांचीपुरम

1। स्थान ः कांचीपुरम में यह रेलवे स्टेशन से **500** मी पर अवस्थित है तथा राजवीथि पर पूर्व की ओर मुड़ने से मन्दिर का दर्शन होता है।

2। विग्रह स्वरूप ः श्री वैंकुठ पेरूमल भू खंड में पश्चिम मुख बैठे अवस्था में हैं। आपको परमपदनाथ भी कहा जाता है। बीच की मंजिल पर प्रभु शयनावस्था में है तथा ऊपर के मंजिल में खड़े मुद्रा में है। ऊपर का दर्शन मात्र वैकुंठ एकादशी के दिन मिल पाता है। अन्य दिन भू खंड वाले प्रभु का ही दर्शन मिलता है। तायर वैकुंठवल्ली कही जाती हैं तथा विमान मुकुंद विमान कहा जाता है। पुष्करणी को 'इरम्मदा' कहते हैं।

3। महिमा ः वैकुंठ के द्वारपाल ने विरोचन के बंश में पल्लव एवं विल्व के रूप में जन्म लिया। उनलोगों ने यहां अश्वमेध यज्ञ करके परमेश्वरन वैकुंठनाथ के रूप में भगवान का दर्शन प्राप्त किया। कथा है कि भारद्वाज ऋषि को गंधर्व कन्या से एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका लालन पालन भगवान ने स्वयं किया। पल्लव एवं विल्व को कोई संतान नहीं थी इसलिये भगवान ने इस बालक को उन्हें पुत्र के रूप में दे दिया। पल्लव ने बालक का नाम परमेश्वरन रखा। भगवान ने स्वयं इस बालक को **18** कलाओं की शिक्षा दी। इसी कृतज्ञता वश पल्लव ने तीन मंजिल वाला मंदिर का निर्माण किया। बैठे

हुए भूखंड वाले वैकुंठनाथ भगवान शिष्यों का भरन पोषन करते हैं। सबसे ऊपर की मंजिल पर खड़े परवासुदेव भगवान पल्लव को ज्ञान की शिक्षा के लिये जाने जाते हैं तथा बीच वाले शयन करते हुए श्रीदेवी एवं भूदेवी से सेवित रंगनाथ भगवान दर्शन हेतु विराजमान हैं। भारत सरकार ने इस मंदिर को संरक्षित परंपरा वाली संरचनाओं में रखा है। कांचीपुरम में इस मंदिर के अतिरिक्त कैलाशनाथ मंदिर में पल्लव वंश की वास्तुसंरचना दर्शनीय है। यहां की दीवारों पर भगवान की कथा से सम्बन्धित तथा पल्लव को भगवान की अर्चना करते दिखाते हुए अनेकों आकर्षक मूर्तियां विराजमान हैं। सुनते हैं इस मंदिर से सुरंगनुमा रास्ता महाबलीपुरम तक जाता है। अन्य सुरंग कैलाशनाथ मंदिर तथा पल्लव के किला तक भी जाते हुए बताये जाते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1128** से **1137** तक, **2050 2060**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दूसरे शतक का दसवां दशक **2** ः **10** या पासुर **1138** से **1147** तक ः इसके **10** पासुरों में तिरूक्कोवलूर दिव्य देश की प्रशस्ति प्रस्तुत है। सात पर्वत एवं सात सागर तथा अन्य सब को पेट में रखकर बटपत्र पर सोने वाले प्रभु तिरूक्कोवलूर के प्रभु हैं। यह पेन्नै नदी के दक्षिणी तट पर अवस्थित है। वेद, अग्नि, सब आपकी प्रशस्ति गाते हैं। देवगन तुलसी एवं चंदन से आपकी अर्चना करते हैं। गजेन्द्र के रक्षक प्रभु गरूड़ की सवारी करते हैं। खर, दूषण, कबंध, वाली आदि का आपने बाण से वध किया। छीके से टंगे सुगंधित मक्खन खाकर आप यशोदा से ऊखल में बांधे गये। यहां लक्ष्मी, सरस्वती, तथा हिरन पर सवार आठ हाथ वाली पार्वती रहती हैं। हाथी का वध, घोड़े का जबड़ा चीरना, मल्लयोद्धाओं का नाश, तथा कंस का नाश सब आपके चमत्कार हैं। युद्ध में दूत बनकर जाना तथा सारथी बनना आपके ही कार्य रहे हैं। भू देवी, श्रीदेवी, शंख एवं चक से सुशोभित आपका स्वरूप कल्प वृक्ष है।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **42**। तिरूक्कोवलूर ः

1। स्थान ः त्रिविकम भगवान का प्रसिद्ध कोइल, प्रथम तीन आळवारों पोय्गै, भूत, तथा पेय के एकसाथ मिलन का यह अतिप्रसिद्ध परम पावन स्थान तमिल नाडु के विल्लीपुरम से **40** कि मी पश्चिम में एवं कड्डलोर से करीब **75** कि मी पश्चिम में अवस्थित है। तिरूवन्नामलै से यह स्थान **36** कि मी दक्षिण में अवस्थित है। तिरूक्कोवलूर एक रेलवे स्टेशन है और स्टेशन से मन्दिर **2.5** कि मी पर स्थित है।

2 | विग्रह स्वरूप ः मूलावर चतुर्भुजी त्रिविक्रम भगवान पूर्वाभिमुख हैं। आपका दायां पैर इतना ऊंचा है जैसे आपने सारे जगत को लांघ लिया हो। ब्रह्मा इस चरण को जल से धो रहे हैं। आपके दायें हाथ में शंख है तथा बायें में चक्र है। नीचे का दायां हाथ तर्जनी उंगली से बली से आगे मापने के लिये स्थान पूछ रहा है क्योंकि दो ही कदम में सारे ठौर को आपने माप दिया। उत्सव मूर्ति आयनार या गोपाल कहे जाते हैं। तायर को पुनगोवै कहा जाता है। विमान श्रीकारा विमान नाम से जाना जाता है। गर्भगृह में भगवान श्रीदेवी, भूदेवी, गरूड़, प्रह्लाद, बली, शुक्राचार्य एवं देवों से घिरे हैं।

3 | महिमा ः दिव्य प्रबंधम की रचना का प्रारंभ इसी पावन स्थान से हुआ है। तीनों प्रथम आळवार पोय्गै, भूत, तथा पेय के संयोग से मिलन में नारायण का अलौकिक स्वरूप का साक्षात्कार घोर वर्षा से उत्पन्न अंधेरे के बीच हुआ था। नारायण प्रभु की स्वतः स्फूर्त प्रशस्ति 'मुदल तिरूवन्दादि' 'इरान्दाम तिरूवन्दादि' तथा 'मुन्राम तिरूवन्दादि' के नाम से जाना गया है। ये तीनों प्रबंध दिव्य प्रबंधम् के तीसरे हजार में संकलित हैं जिसे इयर्पा कहा जाता है। यहां के मन्दिर में दुर्गा की सन्निधि हैं। कहते हैं विन्ध्याचल से चलकर प्रभु की सेवा में दुर्गा यहां आयीं। श्रीमूषणम जो आठ स्वयंव्यक्त स्थलों में से एक है यहां से **50** कि मी पर है और भूवराह भगवान के स्वरूप के लिये प्रसिद्ध है। कथा है कि भगवान के त्रिविक्रम स्वरूप का दर्शन मार्कण्डेय मुनि को नहीं हुआ था। इस स्थान पर मुनि ने तपस्या की और फलस्वरूप भगवान बूढ़े ब्राह्मण के रूप में अपनी पत्नी के साथ भोजन मांगते आये। मुनि की पत्नी के पास भोजन की सामग्री नहीं थी परंतु उन्होंने लक्ष्मी का स्मरण कर बूढ़े ब्राह्मण को भोजन करने का निमंत्रण दे दिया। लक्ष्मी की कृपा से भोजन सामग्री आ गयी और सपत्नी संतुष्ट होकर भगवान ने मुनि को अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराया। मुनि ने त्रिविक्रम एवं वामन रूप में दर्शन देने की प्रार्थना की। भगवान ने मुनि को संतुष्ट कर दिया। तब से यहां त्रिविक्रम भगवान का मंदिर है। इसके पूर्व कृष्ण भगवान की सन्निधि के लिये यह स्थान पांच कृष्णारण्य क्षेत्र में से एक माना जाता था। वेदांत देशिक स्वामी ने यहां दोहालिस स्तुति की रचना की।

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1078 1138** से **1147 1404 1542 1641 2068 2058,** तथा शिरिय तिरूमडल **2673,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674** | पेय्गै आळवार मुदल तिरूवन्दादि **2158 2167** | भूत आळवार, इरान्दाम तिरूवन्दादि **2251** |

ःः

तीसरे शतक का पहला दशक **3 ः 01** या पासुर **1148** से **1157** तक ः इसके **10** पासुरों

में तिरूवयिन्दपुरम दिव्य देश की प्रशस्ति प्रस्तुत है। पृथ्वी को वराह बनकर उद्धार करने वाले प्रभु ही यहां के प्रभु हैं। आप वेदों के सार हैं। सात लोकों को निगलने वाले प्रभु देवनायक स्वरूप में दर्शन देते हैं। हिरण्य का नाश एवं मावली का मान मर्दन करने वाले आप ही हैं। यहां कटहल के फल की बहुतायत है तथा फूलों के बाग से स्थल भरा पूरा है। कुब्जे की बात पर प्रभु राज छोड़ युवा पत्नी के साथ वन को चले गये। सीता के लिये आपने धनुष तोड़ा तथा लंका का नाश किया। अर्जुन का रथ हांकने वाले प्रभु यहां निवास करते हैं।

दिव्य देश **43** । तिरूवन्दी पुरम दिव्य देश

1।स्थान ः तिरूवयिन्दपुरम का अपभ्रंश तिरूवन्दीपुरम हो गया है। तिरूवंदीपुरम या तिरूवहिन्दपुरम तमिलनाडु के कड्डलोर नगर से **3** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः देवनायकन कहे जाने वाले मूलावर भगवान यहां चतुर्भुज स्वरूप में हैं।नीचे का बायां हाथ तिरूमला के वेंकट प्रभु की मुद्रा जैसी जंघा पर टिकी है। नीचे का दायां हाथ वरद यानी शरणगति मुद्रा में न होकर अभय मुद्रा में है जैसा कि कांची के वरदराज प्रभु के स्वरूप में है। आप पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। उत्सवमूर्ति को 'देवनाथन' या 'मुवारागियन ओरूवन' कहते हैं। उत्सव विग्रह को ब्रह्मा शिव एवं विष्णु का समेकित स्वरूप बताया जाता है।आपके ललाट पर शिव की तीसरी आंख है तथा शिव की तरह आप जटाधारी स्वरूप में हैं। आपके दायें हाथ में ब्रह्मा का प्रतीक कमल का फूल है। अन्य हाथों में विष्णु का स्वरूप चिह्न शंख एवं चक्र सुशोभित हैं।तायर हेमामभुजवल्ली या वैकुंठ नायकी कही जाती हैं। यहां का विमान चंद्र विमान या वैकुंठ की तरह का विमान है जो शुद्ध सत्व विमान कहा जाता है। तीर्थ गरूड़ नदी या बज्रतीर्थ एवं शेष तीर्थ है। आपने गरूड, आदिशेष, तथा शिव को दर्शन दिया था।

यहां एक सन्निधि में राम सीता लक्ष्मण एवं आंजनेय बड़े ही सुन्दर स्वरूप में हैं। इससे आकर्षित होकर वेदांत स्वामी ने 'रघुवीर गद्यम' की रचना की।

3।महिमा ः तिरूवहिन्दपुरम में 'अहि' का तात्पर्य आदिशेष से है। यह स्थान आदिशेष की स्थली है। असुरों से पराजित हो देवों ने यहां भगवान की शरण ली। भगवान ने चक्र से असुरें का नाश कर देवनायक तथा देवनाथन कहे गये।थके हुए भगवान ने गरूड़ जी से पीने को पानी मांगा। गरूड़ जी पानी लाने मधुवन में एक ऋषि के आश्रम पहुंचे जिनके कमंडल में विरजा का जल था। जल में देर देख आदिशेष ने जमीन पर फन मारकर जल निकाला तथा भगवान की प्यास बुझाई।आदिशेष का कुंआ आज भी

मंदिर परिसर में तीर्थ के रूप में वर्तमान है। गरूड़जी के लाये हुए जल से भगवान ने नदी बना दी जो गरूड़ नदी के रूप में स्थित है। त्रिपुरासुर का अंत करने के लिये शिवजी तपस्या रत थे। आकाशवाणी से उन्हें यहां आकर तप करने को कहा गया। भगवान ने उन्हें त्रिमूर्ति स्वरूप में दर्शन देकर यह बताया कि तीनों मैं ही हूँ। इसीलिये भगवान को 'मुवारागियन ओरूवन' कहते हैं। आपने शिवजी को मेरूपर्वत का धनुष तथा भूमि का रथ के साथ अन्य आयुधों से सुसज्जित कर दिया जो त्रिपुरासुर के नाश में उपयोगी हुआ। यहां तपस्या रत रहकर भृगु ऋषि ने पास के तालाब में कमल के फूल में एक बालिका को देखा। आपने उसी पुत्री की तरह पाला जो भार्गवी कही गयी। भार्गवी का भगवान के साथ पाणिग्रहण संपन्न हुआ।भृगुमुनि यहां भगवान के गर्भगृह में बैठे हुए दर्शन देते हैं। तायर यहां प्रत्येक शुक्रवार को सवारी पर निकलती हैं तथा सभी प्राकारों का निरीक्षण करती हैं। प्रत्येक एकादशी को भगवान की सवारी निकलती है। जब शुक्रवार एवं एकादशी एक ही दिन पड़ते हैं तो तायर एवं भगवान की सवारी साथ साथ निकलती है।

तीस वर्षों तक यह स्थान वेदांत देशिक स्वामी का यह साधना स्थल रहा है। गरूड़ जी की सिद्धि से आपको हयग्रीव भगवान की प्रतिमा मिली। पास के औषधगिरी पर श्रीलक्ष्मी हयग्रीव विराजमान हैं। वेदांत देशिक स्वामी का अवतार कांचीपुरम के तुपुल नामक क्षेत्र में हुआ है। आपके पिताजी का नाम अनंतसूरी था तथा माँ का नाम तोतार अम्बा है।आपके पिता आपको वेंकटनाथ कह कर पुकारते थे। आपके मामा ने आपका लालन पालन किया तथा आपको शिक्षा दी। मामा का नाम अत्रेय रामानुज था जो अप्पिल्लार नाम से जाने जाते थे। **20** वर्ष की आयु में ही आप सभी शास्त्रों में पारंगत हो गये तथा तिरूवहिन्दपुरम चले आये। विजय नगर के राजा के प्रधान मंत्री विद्यारण्य के आप समकालीन थे। उन्होंने आपको विजय नगर का प्रधान मंत्री बनाना चाहा था लेकिन आपने इसे अस्वीकार करते हुए 'वैराग्य पंचकम' की रचना की तथा उसकी एक प्रति विद्यारण्य को भेज दी। तन्का, द्रमिड़ , गुह्द देव, तथा बोधायन द्वारा समर्थित विशिष्टाद्वैत सिद्धांत को आलवंदार यामुनाचार्य तथा रामानुज ने संबर्धित किया। वेदांत देशिक ने इसकी जड़ को मजबूत करने का काम बहुत ही सफलता के साथ संपादित किया। द्योदांत देशिक स्वामी के अथक प्रयास से तमिल एवं संस्कृत प्रबंधों में सामंजस्य बढ़ा। संस्कृत एवं तमिल के बीच आपने एक सेतु का काम किया।इसलिये रंगनाथ भगवान ने आपको 'उभय वेदांत' की उपाधि से विभूषित किया। तिरूवन्दीपुरम में चैत में ब्रह्मोत्सवम मनाया जाता है। भाद्रपद मास में वेदांत

देशिक स्वामी का अवतार उत्सव मनाया जाता है। वेदांत देशिक स्वामी के उपास्य लक्ष्मीहयग्रीव एवं योगहयग्रीव स्वामी की सन्निधि पास के औषध गिरी पर है जहां जाने के लिये **74** सीढ़ियां बनी हैं और ये सीढ़ियां भाष्यकार स्वामी के **74** सिंहासनापति के प्रतीक हैं।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1148** से **1157** ।

ःःः

तीसरे शतक का दूसरा एवं तीसरा दशक **3 ः 02** एवं **3 ः 03** या पासुर **1158** से **1177** तक ः **20** पासुरों में तिल्लै चित्रकूट यानी चिदंबरम दिव्य देश की प्रशस्ति है। यहां प्राकृतिक छटा के साथ श्रीसंपन्न अटारियां हैं। वैदिक ऋषिगण गोविंदराज प्रभु की विधिवत अर्चना में तल्लीन रहते हैं। सुग्गे भी वेदपाठ करते हैं। पल्लव नरेश प्रभु को बहुमूल्य रत्नों आदि का उपहार समर्पित करते हैं। आळवार संत व्यर्थ के तरीकों से अलग रहने की आवश्यकता पर बल देते हैं। सांस रोक कर शरीर सुखाना, पंचाग्नि लेना, हवा पर रहना आदि क्रियाओं से लाभ नहीं है। तिल्लै चित्रकूट के गोविन्दराज प्रभु की पूजा करो। आप ने ही सूकर रूप में भू देवी का उद्धार किया। मावली के यज्ञ के उपहार में धरा को प्राप्त किया। आप चित्रकूट में शेषशायी हैं। धरा को अत्याचारी राजाओं से मुक्त करने के लिये आप परशुराम रूप में आये। अग्नि बाण से सागर को दो भाग में किया तथा उसपर सेतु का निर्माण किया। केशी घोड़ा का अंत करने वाले तथा पर्वत उठा कर वर्षा रोकने वाले आप ही हैं। नारी के नियंत्रण से पृथक रहकर गोविन्दराज प्रभु को भजो। आपने ही पूतना का नाश किया। मरूदु वृक्ष का नाश करने पर देवों ने हजार नाम से आपका अभिनंदन किया। विषैले नाग के फन पर नाचने वाले, नप्पिनाय का वरण करने वाले, लंका पर बाण वर्षाने वाले, हिरण्य की छाती चीरने वाले, सातो लोकों से पूजित, शंख चक्र धारण किये आप तिल्लै चित्रकूट में रहते हैं।

तीसरे शतक का चौथा दशक **3 ः 04** या पासुर **1178** से **1187** तक ः **10** पासुर वाले दशक में शिरामा विण्णगर दिव्य देश की प्रशस्ति है। दो पैर वाले भगवान ने तीन पग जमीन मांगी। समूची धरा माप ली। तीसरे पग के बदले बली को पाताल का राजा बना दिया। चारो वेद के मंत्रोच्चार, पांच यज्ञ, छः आगम एवं सात संगीत सुर के बीच आप शिरामा विण्णगर में रहते हैं। यहां आळवार संत ने **1** से **7** तक के अंकों का कमवार बड़ा अच्छा उपयोग किया है। **1** से **3** तक वामन भगवान की यशोगाथा में प्रयुक्त है। **4** का चारो वेद यानी ऋक, यर्जु, साम, एवं अथर्व के लिये प्रयोग किया गया है। **5** का

पांच यज्ञ यानी ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, पितृ यज्ञ, एवं मनुष्य यज्ञ के लिये उपयोग किया गया। **6** का छः आगम यानी शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरूक्त, ज्योतिष, एवं कल्प के लिये प्रयोग किया गया। इन्हीं आगमों की सहायता से वेद को पढ़ा एवं समझा जाता है। **7** सुर षड़म, रिषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, दैवतम, एवं निषादम हैं।

आयु के अभिमान में ब्रह्मा ने जप छोड़ दिया। रोमस के शाप से शिव ने ब्रह्मा का पांचवा सिर काट लिया और उस खोपड़ी को लेकर शिव भिक्षा मांगने लगे। प्रभु ने शिव की भिक्षा पात्र को रक्त से भर दिया तत्पश्चात् वे खोपड़ी के शाप से विमुक्त हुए। मछली, कमल फूल से भरे तालाव, एवं शंख उत्पन्न करने वाले समुद्री जीव वाले, तथा कटहल फल के बाग वाले शिरामा विण्णगर प्रभु का निवास है। भूदेवी को दांतों पर उठाने वाले, बाणासुर की भुजायें नष्ट करने वाले, वृषभों का शमन कर नप्पिनाय को वरण करने वाले, प्रह्लाद के लिये हिरण्य की छाती चीरने वाले, इक्कीस बार राजाओं का फरसा से नाश करने वाले, हरी आंख तथा लालमुख वाली का अंत करने वाले, केसिन घोड़ा, कबंध, एवं एक आंख के विराध का नाश करने वाले, दीमक खाये बस्तुओं की तरह लंका का नाश करने वाले, सत्यभामा को इन्द्र का अलौकिक वृक्ष लाकर देने वाले, लक्ष्मी से सुशोभित वक्षस्थल वाले, ब्रह्मा एवं शिव को अपने दायें स्थित करने वाले, प्रभु ही रत्नजटित अटारी तथा हरे भरे खेतों से भरपूर शिरामा विण्णगर में रहते हैं।

दिव्य देश **44**। काळी शिरामा विण्णगर दिव्य देश

1। स्थान ः यह स्थान शिरकाळि रेल स्टेशन से **1** कि मी पर है।

2। विग्रह स्वरूप ः प्रभु लोकनाथन के नाम से प्रसिद्ध हैं। मूलावर पूर्वाभिमुख हो खड़े अवस्था में त्रिविकम के स्वरूप में हैं एवं उत्सव मूर्त्ति को त्रिविकम नारायण कहते हैं। कांचीपुरम में उलगलंद प्रभु बड़े आकार में हैं लेकिन यहां लघु आकार में हैं। इसे तडलन कोइल भी कहते हैं क्योंकि 'ताडु' का अर्थ तीन, एवं 'अलंथन' का अर्थ मापना है। भगवान का दायां हाथ दान मुद्रा में है तथा बायां हाथ उठे हुए बायें चरण के साथ फैलकर त्रिविकम स्वरूप का साक्षात्कार कराता है। तायर लोकनायकी हैं। तायर के उत्सव विग्रह को 'मट्टाविळुमकुळड़ी नाच्चियार' कहते हैं तथा मूलावर एवं उत्सवार एक ही ऊंचाई की हैं। हर महीने के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जब तायर की उत्सवार सवारी पर बाहर आती हैं तो मूलाावर का दर्शन होता है। तीर्थ शंखचक पुष्करणी है। विमान

को पुष्कलवर्तक कहते हैं।

3। महिमा ः ब्रह्मा को अपनी चिरंजीवी आयु का अभिमान हो गया। लोमश ऋषि को यह सहा नहीं गया और ऋषि ने यहां तपस्या की। भगवान ने त्रिविक्रम रूप में दर्शन देकर बताया कि ऋषि के एक रोएं के गिरने से ब्रह्मा की एक वर्ष आयु कम होती जायेगी।

विश्वामित्र को बली राजा के यज्ञस्थल पर यज्ञ करने की ईच्छा हुई। इसी स्थान पर उनका यज्ञ हुआ एवं राम तथा लक्ष्मण ने मुनि के यज्ञ की रक्षा की। इसी लिये इस स्थान को शिरामा विण्णगरम कहते हैं।

एक बार जब तिरूमंगै आळवार यहां आये तो एक प्रसिद्ध शिव भक्त 'तिरूज्ञानसमुन्दर' यहां विराजमान थे।आळवार की परीक्षा के लिये उन्होंने कोई पद सुनाने को कहा।आळवार ने तुरत एक पद की रचना कर सुना दिया "काळि शिरामा विन्नागरम मूवादि मन वेंडी"। प्रथम दो शब्द यहां के मूल देवता श्रीराम के द्योतक हैं एवं अंतिम तीन शब्द तीन पगों में पृथ्वी मापने वाले प्रभु के बारे में है। इनकी रचना से प्रसन्न हो तिरूज्ञान समुन्दर ने आळवार को "नाडुकवि पेरूमाल" की उपाधि से विभूषित करते हुए अपना 'वेल' यानी भाला एवं 'गंडसारम' यानी गले का हार इन्हें उपहार स्वरूप दे दिया। नाडुकवि का तात्पर्य है कि जो आशुकवि हो, मधुर कवि हो, चित्रकवि हो, एवं विस्तार कवि हो। मानवला मामुनि यानी श्रीवरवरमुनि स्वामी ने सुन्दर पदों की रचना कर आळवारश्री की प्रशंसा में इसे बड़ी सुन्दरता से चित्रित किया है। यहां तिरूमंगैआळवार की प्रतिमा इसी तरह से 'भाले' एवं 'हार' से विभूषित भी है।मामला मामुनि कहते हैं ः 'भाले को वक्ष से सटाये, अंजली बद्ध हो, आप वैष्णव उर्ध वपुण्ड्र तिलक से विभूषित हैं।आपका श्रीमुख इस तरह से खुला है जैसे ॐ से प्रारंभ होने वाले अष्टाक्षर मंत्र की आवृति में उच्चारणरत हों।सीधा कंधा, चौड़ा वक्षस्थल लिये घुटने से इस तरह आप झुके हैं मानों प्रभु से अष्टाक्षर मंत्र सुनने में कानों को लगाये एकाग्रचित्त हों।'

विण्णगरम नाम से छः दिव्यदेश हैं ः तिरूविण्णगरम, नन्दीपुरा विण्णगरम, काळी शिरामा विण्णगरम, तिरूवैकुंठ विण्णगरम, अरिमेय विण्णगरम, एवं परमेशरा विण्णगरम। त्रिविकम के स्वरूप में चार दिव्य देश हैं ः काळी शिरामा विण्णगरम, उलगलंदा या ऊरगम कांची, तथा तिरूनिरमलै में भगवान का ऊपर उठे हुए मुद्रा में बायें चरण का दर्शन देता है। तिरूक्कोलूर में भगवान दायें चरण को उठाए हुए दर्शन देते हैं।

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1178** से **1187** |

ºº

तीसरे शतक का पाचवां छठा एवं सातवां दशक **3 ः 05 3ः06** एवं **3ः07** या पासुर **1188** से **1217** तक ः तीन दशकों तथा **30** पासुरों में तिरूवाली दिव्य देश की महिमा का बखान किया गया है | आळवार संत स्थान की प्राकृतिक संपदा के साथ साथ प्रभु की महिमा का गुणगान करते हैं | कहते हैं यह स्थान अशोक वृक्ष, गन्ने की प्रचुरता, धान के खेत, मधुमक्खी लिपटे फूल के वृक्ष, हंसों वाले जलाशय, मोर का नृत्य, शंखध्वनि, मंत्रोच्चार, एवं वाद्यध्वनि के लिये प्रसिद्ध है | प्रभु को आळवार संत बताते हैं कि आपने हमारा हृदय पसंद कर लिया है और हमारा हृदय आपकी पूजा करता है | गहरे सागर में आप शेषशय्या पर काले पर्वत पर प्रदीप्त मणि की तरह शयन करते हैं | हमने सुन्दरियों के तरफ से मन हटाकर आपके चरणारविंद पर केन्द्रित कर दिया है | आप सात वृक्षों को वेधने वाले हैं | सागर का शेषशय्या छोड़ आप हमारे हृदय में अब शयन करने लगे हैं | हम आपके हजार नामों से शरणागति लेते हैं |

छठा दशक पासुर **1198** से **1207** तक नायकी भाव का चित्रण करता है | नायकी भौंरा से कहती है कि धनुषधारी प्रभु से जाकर मेरी स्थिति बताओ कि उनके वियोग में हम कैसे पीले पड़ गये हैं | पांचो तत्त्व में तथा उससे पृथक रहने वाले प्रभु से रोते हुए हमने तुलसी की माला मांगी | आपने देने से मना कर दिया | हे बगुला पक्षी ! पता करो, मेरे लिये प्रभु क्या सोचते हैं ? धरा मापनेवाले चरण वाले तथा पर्वत उठाने वाले भुजाओं वाले ! आइये, हमारा साथी बनिये | अकेली कब तक आपके बारे में सोचती रहूँगी? क्या यह उचित है कि आप हमारे कंगनों को लेने की ईच्छा रखते हैं ? आपने हमारी नींद ले ली | क्या हमारी बांह का गहना भी ले लेंगे ? क्या हमारा चंदन लेप भी चुरा लेंगे ? तिरूवाली के प्रभु को न आते देख नायकी तिरूमेय्यम के प्रभु से आलिंगन के लिये निवेदन करती है |

सातवां दशक पासुर **1208** से **1217** तक नायकी की स्थिति से चिंतित उसकी मॉ की मनोभावना का चित्रण करता है | प्रभु को चोर बताते हुए मॉ कहती है कि आप आये एवं हमारी बेटी के कंगन से भरे हाथ पकड़ कर कहा 'चलो' | हमें छोड़कर वह चली गयी | आप तो अब तिरूवाली पहुंच गये होंगे | पास के महिलाओं से शिकायत करती है कि पूर्व के पशु चोर अब हमारी बेटी को चुरा ले गये | राक्षसकुल की बेटी ने तो प्रभु को पाने की कामना की और अपनी नाक गंवा बैठी | आपको शंख बजाते दूत का काम करते सुना है | बताइये अभी हमारी बेटी के साथ तिरूवाली पहुंच गये क्या ? मेरी बेटी

ने मुझपर न विश्वास कर एक अजनवी पर विश्वास कर बैठी। आपने वरदान रक्षित लंका का नाश किया। आप ही श्रीरंगम में रहते हैं। मेरी बेटी मुझे छोड़ एक अज्ञातकुल वाले के साथ चली गयी।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **45**। तिरूवाली तिरूनगरी

1। स्थान ः तिरूवाली शिरकाळि से **10** कि मी पर तिरूवेंगडु रोड पर अवस्थित है तथा तिरूनांगुर से **8** कि मी दूर है। तिरूवालि एवं तिरूनगरी दो नगर आपस में करीब **4** कि मी दूर हैं और दोनों एकसाथ 'तिरूवाली तिरूनगरी' के नाम से एक ही दिव्यदेश के रूप में जाने जाते हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः तिरूवाली में मूलावर श्री लक्ष्मी नरसिंह हैं एवं पांच नरसिंह क्षेत्रों मे से तिरूवाली तिरूनगरी भी एक नरसिंह क्षेत्र है। बैठे मुद्रा के मूलावर पूर्वाभिमुखी हैं। यही स्वरूप तिरूनगरी में भी है परंतु प्रभु पश्मिाभिमुख बैठे हैं। आपको व्यालाली मानवलन एवं वेदराजन भी कहते हैं। उत्सव विग्रह को कल्याणा रंगनाथन कहते हैं। अमृतावल्ली तायर हैं एवं विमान को अष्टाक्षर विमान तथा समासन विमान कहा जाता है। पुष्करणी को आह्लादनी कहते हैं। तायर की उत्सवमूर्ति को पूरनवल्ली कहते हैं।

3। महिमा ः हिरण्यकश्पिु के बध के बाद भी नरसिंह भगवान कोप की अग्नि में जल रहे थे। प्रभु को शांत करने के लिये ऋषियों की प्रार्थना पर लक्ष्मी आकर प्रभु के दायें तरफ गोद में बैठ गयीं और उनका आलिंगन किया। आलिंगन करने के कारण इस स्थान का नाम तिरूवाली हुआ।

ब्रह्मा के एक पुत्र ने मोक्ष के लिये नारायण प्रभु के पास आवेदन दिया था। इस आवेदन पर लक्ष्मी की स्वीकृति मिल गयी परंतु भगवान ने मोक्ष देने में विलम्ब कर दिया। फलस्वरूप लक्ष्मी नाराज होकर तिरूनगरी क्षेत्र के एक सरोवर के एक फूल में छिप गयीं। भगवान लक्ष्मी को खोजते आये और सभी कमल के फूल खिले हुए देखकर लक्ष्मी को नहीं खोज सके। भगवान ने एक आंख बंद कर दी जिसके कारण सूर्यास्त हो गया एवं रात्रि में सभी कमल बंद हो गये और चांद को देखकर कुमुद खिल उठे। परंतु एक कुमुद का फूल बंद ही रहा। भगवान ने लक्ष्मी को उसी कुमुद के फूल में छिपा देखकर उनका आलिंगन किया। तिरूनगरी का शाब्दिक अर्थ है 'लक्ष्मी का नगर' या 'श्रीनगरी'। चूँकि यहां लक्ष्मी बसती हैं इसलिये इसे तिरूनगरी कहा गया। ब्रह्मा के पुत्र ने उचित अवसर देखकर पेरूमाल तथा लक्ष्मी से मोक्ष के लिये निवेदन किया। पेरूमाल ने बताया कि आपको कलियुग में मोक्ष मिलेगा। ब्रह्मा के पुत्र ने कलियुग में

उपरिसरवस मुनि के रूप में जन्म लिया तथा तिरूनगरी में मोक्ष प्राप्त किया।
तिरूमंगैआळवार यानी परकाल स्वामी की परम वैष्णवी भार्या कुमुदवल्ली का जन्मस्थान तिरूवाली है तथा तिरूनगरी के पास कुरयालुर आळवार संत का जन्म स्थल है। पास के मंगैमदम में तिरूमंगै आळवार परिणय की शर्त को पूरा करने के लिये **1000** वैष्णवों को वर्षपर्यन्त भोजन कराते थे। तिरूमंगैआळवार को यहां प्रभु का दर्शन मिला था। नाथ मुनि, रामानुजस्वामी, मानवला मामुनि का भी यहां आगमन हो चुका है।
तिरूवाली से तिरूनगरी जाने के रास्ते में वेदराजपुरम स्थित है जहां परकाल स्वामी ने पेरूमाल एवं तायर को लूटा था। पेरूमाल के इस स्वरूप को कल्याण रंगनाथार कहा जाता है क्योंकि तायर के साथ आप कल्याण तिरूकोळम में यहां पधारे थे। पेरूमाल ने आळवार संत को इसी स्थान पर अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा दी थी। इसीलिये यहां कावेरी को अष्टाक्षर गंगा भी कहते हैं। फाल्गुन महीने में यहां ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है।
कुंभकोनम के पास नाच्चियार कोईल दिव्यदेश है जो तिरूनरैयूर कहा जाता है। यहां तिरूमंगै आळवार को पेरूमल ने अष्टाक्षर मंत्र की विधिवत दीक्षा दी थी और यहां भगवान चार भुजा के स्वरूप न होकर मात्र दो भुजा से चक एवं शंख धारण किये हुए पंचसंस्कार करने को उद्धत दर्शन देते हैं। यह स्वरूप परकाल स्वामी को तिरूमंत्र देने के कारण है। तिरूकन्नपुरम में आळवार को अष्टाक्षर मंत्र की पूरी व्याख्या भगवान सोवरीराजा ने सुनायी थी।
'शिन्दैक्किणियण' नाम से पुकारेजानेवाले नरसिंह भगवान के विग्रह की तिरूमंगैआळवार पूजा करते थे। रामानुज स्वामी ने इस विग्रह को कुरयालुर से लाकर तिरूनगरी में स्थापित कर दिया था।आळवार संत ने अपने जीवन काल में तिरूक्कुरूंगुडी में अपने स्वर्णविग्रह का आलिंगन कर उसमें अपनी शक्ति को समाविष्ट कर दिया था। इसके बाद आळवार संत का तिरूक्कुरूंगुडी में ही मोक्ष हो गया था। यह स्वर्णप्रतिमा तिरूनगरी में स्थापित है तथा इसकी यहां नित्य पूजा अर्चना की जाती है।
4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1078, 1188** से **1217** तक, **1329 1518 1733 1735 1850 1980 2014 2027 2063 2073,** तथा शिरिय तिरूमडल **2673,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **46**।तिरूमेय्यम
1।स्थान ः पुडुकोट्टा एवं कराइकुडी के बीच में रेल स्टेशन से **2** कि मी पर तिरूमेय्यम मंदिर स्थित है। सड़क के रास्ते पुडुकोट्टा से यह स्थान **32** कि मी की दूरी पर है।

तिरूप्पथूर से यह स्थान 7 कि मी पर स्थित है।

2।विग्रह स्वरूप एवं महिमा ः यहां मूलावर खड़े अवस्था में दक्षिणाभिमुख हैं और सत्यगिरीनाथन या सत्य मूर्त्ति के नाम से जाने जाते हैं। उत्सव मूर्ति को मयप्पन कहते हैं।'मई ' तमिल में सत्य को कहते हैं। 'अप्पन' प्रभु के लिये प्रयोग किया जाता है। तायर को व्यूहावंध नाच्चियार कहते हैं। विमान को सत्यगिरी विमान कहते हैं।

यहां एक गुफा मंदिर है जहां प्रभु शयनावस्था में हैं। आदिशेष ने अपने तमोगुण के नाश के लिये प्रभु से निवेदन किया। प्रभु ने तिरूमेय्यम आकर आदिशेष को अष्टाक्षर मंत्र जपने को कहा जो तमोगुण का नाश करता है। प्रभु ने तिरूमंत्र के आठों अक्षरों का रंग भी बताया है। ॐ नमो नारायणाय ः **1**।श्वेत।**2**।लाल।**3**।काला।**4**। लाल ।**5**।कुमकुम । **6**।स्वर्णिम ।**7**।काला ।**8**। श्वेत एवं लाल का मिश्रण।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1095 1206 1389 1524 1660 1760 1852 2016 2050,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**।

ºº

तीसरे शतक का आठवां दशक **3 ः 08** या पासुर **1218** से **1227** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में नांगुर मणिमाड कोईल की महिमा का चित्रण है।आळवार संत प्रकृति के विखरे छटा एवं सुलभता से उपलब्ध संपदाओं तथा जीवों का उपयोग करते हुए प्रभु की महिमा गाते हैं।आळवार संत की मान्यता है कि सारे प्राकृतिक जीव जंतु पेड़ पौधे एवं रत्न आदि प्रभु की सेवा में रत हैं। पोन्नी एवं कावेरी नदी जल प्रवाह में सुगंधित लकड़ी मोती आदि प्रभु की सेवा में अर्पित करती है। मधुमक्खी देवगांधारी राग में गाती है एवं भौंरे उनका अनुकरण करते हैं। देवगन 'नन्दा विलक्कु' प्रभु से कृपाकटाक्ष की याचना करते हैं। यहां लाल पैर वाले कबूतर शरणागत का संकेत करते हैं। प्रभु ने भारी पैर वाले हाथी की रक्षा की तथा आपही ने राक्षसों के लंका का नाश किया। पूतना, दुष्ट बछड़ा, तथा मरूद वृक्षों का आप ही ने नाश किया। कमल जैसे कोमल चरण से कालिय के फनों पर आप ने नृत्य किया। गोपियों के वस्त्र चुराने वाले तथा उनके बालू का घरौंदा तोड़ने वाले आप ही हैं। नप्पिनाय का आलिंगन आप ने किया।

ºº

दिव्य देश **47**। तिरूनांगुर मणिमाड कोईल

1।स्थान ः तिरूनांगुर के पास ही तिरूमंगै आळवार का अवतार स्थल तिरूक्कुरैयालुर है। शिरकाळि से तिरूनांगुर **8** कि मी पर पूर्व में स्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः भगवान 'नरनारायण' तथा 'नंदा विलक्कु' के नाम से जाने जाते हैं,

और पूर्वाभिमुख बैठे अवस्था में हैं। मूलावर प्लास्टर से बने हैं इसलिये आपका आषाढ़ अमावास को वर्ष में एकबार तैल सेवा की जाती है। भगवान के पार्श्व भाग मे श्रीदेवी एवं भूदेवी भी भगवान की तरह एक पैर मोड़कर तथा दूसरा लटकाकर बैठी हुई मुद्रा में हैं। लटका हुआ चरण कमल पर टिका हुआ है। उत्सवमूर्ति को नरनारायण या अळतारकरियन कहते हैं। भगवान प्रयोग मुद्रा के चक्र से सुसज्जित हैं। तायर पुण्डरीकवल्ली हैं तथा इन्द्र पुष्करणी तीर्थ है। प्रणव विमान है। तिरूगोष्ठीयूर नाम्बी की यहां सन्निधि है।

3। महिमा ः दिव्य देश मणिमाड कोईल के भगवान के दर्शन से नांगुर क्षेत्र के सभी **11** दिव्यदेश के दर्शन का फल मिलता है। तिरूमंगै आळवार ने पेरिया तिरूमोळी के **3**।**8**।**1** में भगवान को 'नंदा विलक्कु' कह कर पुकारा है जिसका अर्थ हुआ भगवान स्वयं प्रकाशित हैं। एक बार शिवजी पार्वती जी से कुपित होकर तांडव नृत्य करने लगे। नृत्य के क्रम में जितनी बार शिवजी की जटायें भूमि को स्पर्श करती थी उतनी बार एक नये शिव प्रकट होने लगे। देवता लोग इसे देखकर घबराये और भगवान नारायण से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया। जब भगवान शिवजी के पास पहुंचे तो शिवजी ने उन्हें ग्यारह स्वरूप में तिरूनांगुर क्षेत्र में विराजने के लिये अनुरोध किया। तदनुसार तिरूनांगुर क्षेत्र में भगवान के **11** दिव्यदेश हैं तथा शिवजी के भी **11** दिव्यदेश मंदिर हैं।

जैसे कांचीपुरम पल्लव वंश का मंदिर नगर है, तथा आळवार तिरूनगरी पांड्या वंश का मंदिर नगर है, और वैसे ही नांगुर चोला वंश का मंदिर नगर है। इस क्षेत्र में **11** विष्णु मंदिर एवं **11** शिव मंदिर हैं। वैष्णवों के बीच साधारण बोलचाल की भाषा में 'कोईल' का मतलब 'श्रीरंगम का मंदिर' होता है, तथा 'तिरूमलय' का मतलब 'तिरूपति' होता है, एवं 'पेरूमाल कोईल' का मतलब 'वरदराज मंदिर कांचीपुरम' होता है। तीनो प्रसिद्ध मंदिरों के भगवान नांगुर के तीन मंदिरों में क्रमशः इस तरह हैं ः **1** तिरूतेतिरियाअंबळम श्रीरंगनाथार, **2** तिरूमणिकूडम कोइल वरदराज पेरूमल, **3** तिरूवेल्लकुळम अन्नन यानी श्रीनिवास पेरूमल। वैष्णवों के तत्वत्रय नांगुर के तीन भिन्न मंदिरों से संबंध रखते हैं। तिरूमंगैआळवार को नारायण पेरूमाल से अष्टाक्षर मंत्र, श्वेतराजा को अन्नन पेरूमल से द्वय मंत्र, एवं अर्जुन को पार्थम पल्ली से चरम मंत्र मिला था। ऐसी मान्यता है कि नांगुर के **11** दिव्य देश जो पलास वन के नाम से जाने जाते हैं प्रलय काल में ज्यों के त्यों बिना कोई क्षति के स्थित रहते हैं। यह क्षेत्र उत्तर में मणियार, दक्षिण में श्रीरंगम, पूरब में पुम्पुहार समुद्रम, एवं पश्चिम में तरगमपदी के भीतर का है।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1218** से **1227** तक, **1329** **1850**, एवं पेरिय तिरूमडल **2674** ।

ººº

तीसरे शतक का नौवां दशक **(3 ः 09** या पासुर **1228** से **1237** तक**)** ः **10** पासुर वाले इस दशक में नांगुर वैकुंठ विण्णगरम की महिमा का चित्रण है । प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता का सटीक उदाहरण देते हुए आळवार संत दिव्य देश के प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं । वैदिक मंत्रोच्चार से पूजा अर्चना की जाती है इसका सर्वत्र उल्लेख किया गया है । प्राकृतिक छटा भी वर्णित है, जैसे, जल भरे तालाब के कमल, मछली, हंस आदि । हिरण्य की छाती चीरने वाले प्रभु ने समुद्र मंथन किया । आपने ही समस्त जगत समुद्रादि को क्षण भर में उदरस्थ कर लिया । सूर्पनखा का नाक कटने से वह रावण के पास दौड़ी जाकर अपनी वेदना प्रकट की । सीता के लिये आपने रावण के दस सिर एवं बीस भुजाओं को काट गिराया । आपने पूतना एवं मरूदु वृक्ष का नाश किया । गोपियों के दही मक्खन चट करने में आप चतुर हैं । नरकासुर का आपने बध किया । शिव एवं लक्ष्मी को आप बराबर का स्थान देते हैं, पासुर **1235** । क्या इसी संदर्भ में तेंगल वैष्णवजन लक्ष्मी को जीव की तरह मानते हैं ।

ººº

दिव्य देश **48** । वैकुंठ विण्णगरम

1 । स्थान ः तिरूनांगुर के **11** दिव्य देशों में से यह एक है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः यहां वैकुण्ठनाथन कहे जाने वाले भगवान पार्श्व में दोनों लक्ष्मी श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ पूर्वाभिमुख हो एक पैर मोड़कर तथा दूसरा लटकाकर बैठे हैं । भगवान शालग्राम की माला धारण किये हुए हैं । उत्सवमूर्ति को 'तामराकानुडै पिरान' तथा 'परमपदनाथ' कहते हैं । तायर वैकुठवल्ली हैं । यहां तायर की अलग सन्निधि नहीं है परंतु सुदर्शन चक की अलग सन्निधि है । लक्ष्मी पुष्करणी तीर्थ है, तथा अनंत सत्य वर्तक विमान है ।

3 । महिमा ः उत्तंग मुनि को तथा शिव को भगवान ने दर्शन दिया था । पौष माह का तिरूमंगै आळवार का उत्सव इस क्षेत्र के **11** दिव्यदेश में विख्यात है तथा प्रत्येक वर्ष बड़े उत्साह से मनाया जाता है । ।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1228** से **1237** तक ।

ººº

तीसरे शतक का दसवां दशक **3 ः 10** या पासुर **1238** से **1247** तक ः **10** पासुर वाले

इस दशक में नांगुर अरिमेय विण्णगरम की महिमा का चित्रण है। पुरा काल में श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ अपनी कृपावृष्टि करते,जगत को दुष्कर्म से मुक्त करते, एवं भक्तों की रक्षा करते पृथ्वी पर प्रभु ने भ्रमण किया। नरकासुर को अजेय चक्र से जीता। पर्व त की मथानी से सागर मंथन किया।सातो लोकों को निगलने वाले प्रभु ने कंस का केश पकड़ कर घसीटा। वरदान के अभिमान से चूर हिरण्य असुर का नाश किया। पुरा काल में देखनेवालों के हृदय को खुश करने वाले सुन्दर एवं सरल दिखने वाले वामन किशोर के रूप में प्रभु मावली के महान यज्ञ में आये। आपने तीन पग जमीन मांगकर अपन स्वरूप फैलाया और पूरी पृथ्वी, सातों समुद्र, सातों महाद्वीप, तथा सबकुछ ले लिया। दशरथ नंदन बनकर सीता के लिये रावण का नाश किया। आप कामदेव के पिता हैं तथा आपने गोवर्द्धन उठाकर गायों की रक्षा की।

ºº

दिव्य देश **49**। नांगुर अरिमेय विण्णगरम

1।स्थान ः तरूनांगुर के **11** दिव्य देशों में से यह एक है एवं इसे कोदामडुम कूदन कोइल भी कहते हैं।

2।विग्रह स्वरूप ः यहां मूलावर चतुर्भुज रूप में श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ पूर्वाभिमुख बैठे हैं एवं इन्हें कोदमाडु कूदार कहा जाता है। मूलावर प्लास्टर के बने हैं इसलिये मात्र तैल सेवा ही होती है। उत्सवमूर्ति चतुर्भुज गोपालन कहे जाते हैं तथा रूक्मिणी सत्यभामा तथा सनातन कृष्ण के साथ हैं। तायर को अमृतागतावल्ली कहते हैं। तीर्थ अमृत तीर्थ कहा जाता है तथा विमान उच्चश्रृंग विमान कहा जाता है।

3।महिमा ः अपनी माँ के उद्धार के लिये गरूड़ ने अमृत कलश लाकर कद्रू के सामने रख दिया। माँ के साथ गरूड़ वहां से चले गये। कद्रू एवं उसके बच्चे अमृत पान के पूर्व नदी में स्नान करने गये। इसी बीच एक राक्षस आया और अमृत कलश को उठा कर भागा। देवों की पुकार पर भगवान विष्णु ने राक्षस का पीछा करते उस पर बाण मारे जिससे उसका हाथ टूट गया एवं कलश गिर गया। भगवान ने कलश लेकर अमृत पी लिया एवं घड़ा ले खुशी में नृत्य किया। 'कुडम' घड़ा को कहते हैं एवं 'कूदम' नर्त्तक को कहते हैं। यहां एक पैर आज भी घड़े यानी 'कुडम' पर रखे भगवान बैठे दिखायी पड़ते हैं। एक और मान्यता के अनुसार भगवान के नाम 'कोदमाडुकूदार' का अर्थ है पर्वत को छाता की तरह धारण करने वाले भगवान। अगस्त मुनि ने कहा था कि भगवान की लीला देवों की समझ से भी परे है यानी अगम्य है।अतः 'अमेय देव नगरम' यानी ऐसा नगर जिसकी महानता देवों की समझ से भी अगम्य है और यही अमेय या अरिमेय

विण्णगरम्हुआ। यहां शिव ने ब्रह्मकपाल से मुक्ति हेतु तपस्या की थी और भगवान ने प्रकट होकर उनकी मंगलकामना की थी तथा शिव के अनुरोध पर **11** दिव्यक्षेत्रों में भगवान ने निवास बनाया। तिरूमंगै आळवार के ये **11** क्षेत्र रूद्र से पूजे गये हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1238** से **1247** तक।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

चौथे शतक का पहला दशक **4 ः 01** या पासुर **1248** से **1257** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूतेवनार तोगै की महिमा का चित्रण है। प्रत्येक पासुर में दिव्य देश की प्राकृतिक संपदा एवं दृश्यावली, स्थानीय आर्थिक संपन्नता एवं वैदिक रीती रिवाज का संदर्भ देते हुए प्रभु के गुणों का बखान किया गया है। कुछेक पासुरों में राजकीय व्यवस्था पर भी टिप्पणी करते हुए क्षेत्रीय राजा की प्रभुता की बात कही गयी है। सर्व व्याप्त प्रभु का निवास मण्णी नदी के दक्षिणी तट पर है। इन्द्र ब्रह्मा आदि देवगण खड़े होकर आपकी कृपाकटाक्ष के लिये अर्चना करते हैं। शिशु रूप में समस्त जगत को निगल कर बट पत्र पर शयन करने वाले प्रभु ने कंस एवं उसके योद्धाओं सहित मदमत्त हाथी का नाश किया। धनुष तोड़कर मैथिली का वरण किया। ऊपर आकाश की ओर फेंके हुए घड़े की गति पर नृत्य करने वाले आप तिरूत्तेवनार तोगै में रहते हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **50**। तिरूत्तेवनार तोगै

1। स्थान ः तिरूनांगुर के **11** दिव्य देशों में से यह एक है एवं शिरकाळी से दक्षिण पूर्व में **7** कि मी पर है तथा तिरूवाली से **1** कि मी और तिरूनांगुर से **4** कि मी पर स्थित है। इस स्थान को 'माधव पेरूमल कोइल' या 'कीळसलै' भी कहते हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः कांची के वरदराज भगवान की मुद्रा में दायें हाथ से अभय आशीष देते पश्चिमाभिमुख मूलावर खड़े अवस्था में पार्श्ववर्ती श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ देवनाथन या देवनायकन कहे जाते हैं। उत्सव विग्रह को माधव नारायण कहते हैं। पृथक सन्निधि में तायर के मूलावर को 'कडल मगल नाचियार' या 'देवनायकी' कहते हैं तथा उत्सव विग्रह को माधवनायकी कहते हैं। तायर पूर्वाभिमुखी हैं तथा पेरूमाल की तरह कल्याण तिरूक्कोळम में दर्शन देती हैं। महावलीपुरम के पास के तिरूविडविन्दै के लक्ष्मी वराह की तरह यहां के पेरूमाल कल्याण के लिये पूजे जाते हैं। वामन भगवान की पृथक सन्निधि है। विमान 'शोभना विमान' के नाम से जाना जाता हैं। शोभना नामकी पुष्करणी तीर्थ है। विमान दो मंजिला है तथा वेणुगोपाल एवं रूक्मिणी, लक्ष्मी नरसिंह, राम सीता लक्ष्मण, तथा वराह भगवान की प्रतिमायें विमान की शोभा बढ़ाती

हैं।

3 । महिमा ः पेरूमाल की सेवा कैसे की जाय इसे सुनश्चित करने के लिये यहां देवों की सभा हुई थी। प्रभु ने यहां वशिष्ठ मुनि को अपना दर्शन दिया था।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1248** से **1257** तक।

ஃஃ

चौथे शतक का दूसरा दशक **4 ः 02** या पासुर **1258** से **1267** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूवण पुरूषोत्तम की महिमा का चित्रण है। परकाल स्वामी की विशेषता है कि दिव्य देश की संपन्न प्राकृतिक विभिन्नताओं के साथ आर्थिक एवं वैदिक रीति रिवाज का वर्णन करते हुए प्रभु का गुण गान करते हैं। सेतु बनाकर लंका में प्रवेश करके रावण का विनाश कर प्रभु ने राज्य उसके छोटे भाई को दे दिया।गोप किशोर के रूप में आप कदंब के वृक्ष से कालिय के फन पर कूद गये। इन्द्र के निमित्त तैयार किये गये सारे भोज्य पदार्थ आप ने स्वयं सेवन किया। दुष्ट गाड़ी का नाश, कंस एवं उसके मल्लयोद्धाओं का नाश, तथा बाणासुर का नाश आपने किया। वामन रूप में धरा को मापते समय आपके चरण प्रक्षालन से गंगा निकलीं। नरसिंह रूप में असुर का नाश किया। अर्द्धनारीश्वर शिव को ब्रह्मा की खोपड़ी से विमुक्त किया। शिव ब्रह्मा से उत्पन्न हुए जबकि ब्रह्मा आपसे उत्पन्न हुए।

ஃஃ

दिव्य देश **51**। तिरूवण पुरूषोत्तम दिव्य देश

1 । स्थान ः तिरूनांगुर के **11** दिव्य देशों में से यह एक है एवं शिरकाळी से **8** कि मी पर अवस्थित होकर नांगुर मुख्य स्थान के नाम से जाना जाता है।

2 । विग्रह स्वरूप ः कांची के वरदराज भगवान की मुद्रा में दायें हाथ से अभय आशीष देते खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख मूलावर यहां पुरूषोत्तम कहे जाते हैं। आपका मुखमंडल अलौकिक छता से विभूषित है तथा भक्तगण छविधाम दर्शन से मुग्ध हो जाते हैं। पेरूमाल श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ दर्शन देते हैं। पेरूमाल को अयोध्यापति भगवान राम जैसा माना जाता है। तायर 'पुरूषोत्तम नायकी' कही जाती हैं। विमान संजीवी विग्रह विमान कहा जाता है। तीर्थ का नाम तिरूप्परकडल है। स्थल वृक्ष पलास का वृक्ष है। आंडाल, राम सीता लक्ष्मण, आंजनेय, सेनैमुदलवर यानी विष्वकसेन, नम्माळवार, रामानुज, तथा तिरूमंगै मन्नन की पृथक सन्निधियां हैं।

3 । महिमा ः एक बार व्याघ्रपाद मुनि अपने पुत्र उपमन्यु के साथ यहां पधारे। मुनि जब फूल एकत्र करने बाहर गये तो उपमन्यु भूख से तड़पने लगा। तायर के संकेत पर

भगवान ने क्षीरसमुद्र से उपमन्यु को दूध उपलब्ध कराकर उसकी क्षुधा शांत की। उत्तंग मुनि ने गीता के **15** वें अध्याय के पुरूषोत्तम योग के साक्षात्कार के लिये घोर तपस्या कर पुरूषोत्तम भगवान को प्राप्त किया। मानवला मामुनी के शिष्य प्रतिवादी भंयकराचार्य अन्ना के बंशज यहां के मंदिर का अनुरक्षण करते हैं। तमिल नाडु में पुरूषोत्तम नाम से यह अकेला स्थल है। पेरूमाल ने तिरूमंगै आळवार को भगवान राम के स्वरूप में दर्शन दिया था।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1258** से **1267** तक।

ººº

चौथे शतक का तीसरा दशक **4** ः **03** या पासुर **1268** से **1277** ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूनांगुर शेमपोनशेयी कोईल की महिमा का चित्रण है। प्रभु यहां पेर अरूलालन नाम से जाते हैं एवं आळवार संत बताते हैं कि प्रभु के दर्शन से हमारी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। प्रभु जन्म मरण एवं अवस्था दोष से मुक्त हैं। जगत के समस्त पदार्थ आप में स्थित हैं। आळवार संत प्रभु को नारी वेश वाला बताते हैं। यहां के ऋषिगण ब्रह्मा के समान योग्यता वाले हैं। आप दशरथ नंदन राम प्रभु जैसा कृपालु हैं। उफनते सागर पर सेतु बना लंका टापू के रावण का अंत किया। कंस अपने हाथी एवं योद्धाओं के साथ हमारे सौम्य प्रभु का कोपभाजन हुआ। आप ही वेंकटम के प्रभु हैं एवं चक्र से बाणासुर का अंत आपने किया। आप भक्तों के हृदय के अमृत हैं।

ººº

दिव्य देश **52**। तिरूनांगुर शेमपोनशेयी कोईल ः

1। स्थान ः यह स्थान नांगुर के **11** दिव्य देशों में से एक है तथा शिरकाळी से **8** कि मी पर अवस्थित है। यह स्थान नांगुर में ही स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः प्रभु विभिन्न नामों से जाने जाते हैं ः हेमा रंगार, शेमपोन अरंगार, पेर अरूलालन, एवं दामोदरन तथा मुकुंदन। मूलावर चतुर्भुज रूप में कांची के वरदराज भगवान के समरूप स्वरूप में पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं। भगवान को श्रीरंगम के पास के उरैयूर के समान माना जाता है तथा 'अळगिया मानवलन' कहे जाते हैं। प्रभु के उत्सव विग्रह शेंकनमल रंगनाथार या लक्ष्मी रंगन के नाम से प्रसिद्ध हैं। तायर यहां 'अल्ली मामालारल' कही जाती हैं। विमान को कनकवल्ली विमान एवं तीर्थ को हेमा तीर्थ, कनक तीर्थ, तथा नित्य तीर्थ कहते हैं।

3। महिमा ः रावण बध के पश्चात भगवान राम त्रिदंडनेत्र मुनि के आश्रम में चार दिन तक विराम किये थे। मुनि के परामर्श पर भगवान ने स्वर्ण की गाय एक ब्राह्मण को दान

किया था। ब्राह्मण ने स्वर्ण विगह को बेचकर यहां भगवान के मंदिर का निर्माण किया था। कहते हैं शिव को ब्रह्य हत्या के पाप से मुक्त होने के लिये प्रभु ने इन्हें **11** रूप में अश्वमेध यज्ञ करने को कहा था। शिव ने ऐसा ही किया इसीलिये यहां शिव के **11** मंदिर पाये जाते हैं। शिव की प्रार्थना पर प्रभु ने **11** स्थलों पर अपना अर्चा रूप दिखाया इसीलिये **11** दिव्य देश हैं। एक और कथा के अनुसार कांचीपुरम के एक गरीब ब्राह्मण को **32000** बार तिरूमंत्र का यहां जप करने से सोने का एक भंडार मिला था। स्थल का नाम इसलिये हेमा रंगार कहा जाता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी**,** पेरिय तिरूमोळी **1268** से **1277** तक।

ঃঃ

चौथे शतक का चौथा दशक **4** ः **04** या पासुर **1278** से **1287** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूनांगुर तिरूतेत्री अंबळम की महिमा का चित्रण है। आळवार संत ने प्रभु को 'शेंकनमाल' यानी लाल आंखों वाला कहकर प्रशस्ति की है। कृष्णावतार में प्रभु ने शत्रु राजाओं के मुकुट के साथ उनकी शक्ति एवं उनके गौरव का नाश किया। आपने अपने पिता को पैर की बेड़ी से मुक्त कराया। आपने शिशु रूप में पूतना का नाश किया। यहां किशोरियों के नुपूर की ध्वनि मधुमक्खी के गूंज के साथ मिश्रित हो रही है। गोपियों के घर मक्खन खाकर आप किशोरियों की साड़ी के पल्लुओं को खीचने में आनंद लेने वाले हैं। रावण की चुनौती पर उसकी बीस भुजाओं को आपने काट गिराया। वैदिक उपवीत एवं मृगचर्म धारण कर आपने वामन रूप में धरा का उपहार लिया। वराह रूप में जब आप धरा को दाढों पर उठाये थे तो मेरू आपके पैर पर पाजेब की एक घुघंरू की तरह छोटा दिख रहा था। वैदिक ऋषिगण आपको युगयुगान्तर से अपने होंठ पर धारण किये हुए हैं। सातो लोक को आप अपने होंठ के भीतर रखते हैं।

ঃঃ

दिव्य देश **53**। तिरूतेत्री अंबळम ः

1। स्थान ः यह स्थान नांगुर के **11** दिव्य देशों में से एक है एवं तिरूतेवनार तोगै से करीब **2** कि मी दक्षिण में है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर चतुर्भुज रूप में आदिशेष पर पूर्वाभिमुख शयनावस्था यानी भुजंग शयनम अवस्था में हैं तथा रंगनाथन या लक्ष्मी रंगन कहे जाते हैं। आपकी आंखे अतीव मुग्धकारी हैं तथा आप श्रीरंगम के भगवान जैसे माने जाते हैं। ািशर की तरफ श्रीदेवी तथा चरणारविंद के पास भूदेवी दर्शन देती हैं। सभी विग्रह प्लास्टर से बने हैं इसीलिये यहां मूलावर का तैलकप्पु यानी तैल सेवा की जाती है। प्रभु का उत्सव विग्रह

लक्ष्मी रंगार एवं सनातनगोपाल कृष्ण तथा रंगनाथन के नाम से प्रसिद्ध हैं। तायर सेंगमाल वल्ली हैं। तीर्थ सूर्य पुष्करणी है तथा विमान को वेद विमान कहते हैं।

3। महिमा ः भगवान ने अनेकों राजाओं की ईच्छा को पूरा किया है। शिव से **11** स्थलों पर यज्ञ कराकर आपने **11** स्वरूपों में दर्शन दिया।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1278** से **1287** तक।

ॢॢ

चौथे शतक का पाचवां दशक **4** ः **05** या पासुर **1288** से **1297** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूनांगुर तिरूमणिक्कूडम की महिमा का चित्रण है। आपदा ग्रस्त हाथी की रक्षा करने वाले एवं वर्षा से गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठाने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां कावेरी सुगंधित बागों से बहती हुई सोने के दानों को विखेरती है। पूतना के विनाशक एवं बाणों की भारी वर्षा कर संसार को लंका की यातना से मुक्त कराने वाले आप हैं। चतुर्दिक बागों में बन्दर पेड़ों से मीठे आम खाते हैं एवं केला के लिये छलांग लगाने में मधु छत्ता को क्षति पहंचाते हैं। हाथी घोड़ा पक्षी वृक्ष का शमन करने वाले आप गोप किशारे हैं।सूर्पनखा का नाक कान काटने वाले आप हैं। मछली, वामन, हंस, सूकर, नरसिंह, घुड़ सवार, ब्रह्माण्ड एवं उसकी आभा तथा अन्य सबकुछ के रूप में आनेवाले हमारे नाथ आप हैं। यहां वीर योद्धागन दक्षिणी पांड्या एवं पश्चिमी चेरा राजाओं से युद्ध कराते हैं। तीनों स्वरूपों में यानी ब्रह्मा शिव विष्णु में सबसे श्रेयवान आप हैं।

ॢॢ

दिव्य देश **54**। तिरूनांगुर तिरूमणिक्कूडम

1। स्थान ः यह स्थान नांगुर के **11** दिव्य देशों में से एक है एवं नांगुर से करीब **1** कि मी पर स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर 'वरदराज पेरूमल' या 'मणि कूड नायकन' तथा 'गजेन्द्र वरदन' भी कहे जाते हैं जो पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं। उत्सव विग्रह को 'वरदराज' कहते हैं। तायर तिरूमामगल नाच्चियार कही जाती हैं। यहां का तीर्थ चंद्र पुष्करणी है। विमान को कनक विमान कहते हैं।

3। महिमा ः चंद्रमा को दक्ष के शाप से राजयक्ष्मा से मुक्ति यहीं मिली थी। अश्विनी से लेकर रेवती तक सभी **27** बेटियों को दक्ष ने चंद्रमा से व्याह दिया था। अपनी सुन्दरता के समान रोहिणी को पाकर चंद्रमा रोहिणी से ही अत्यधिक प्रेम करते थे। बाकी सबों की शिकायत पर दक्ष ने चंद्रमा को राजयक्ष्मा की बीमारी का शाप दे दिया था। मणि

कूड नायकन की पुष्करिणी में चंद्रमा को त्राण मिला था। यहां भगवान को कांची के वरदराज भगवान के समतुल्य माना जाता है जो भक्तों की ईच्छा की पूर्ति में आगे रहते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1288** से **1297** तक।

ःः

चौथे शतक का छठा दशक **4** ः **06** या पासुर **1298** से **1307** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूनांगुर कावलम पाडी की महिमा का चित्रण है। ज्ञान के धनी वैदिक ऋषियों के साथ आप यहां निवास करते हैं। पृथ्वी को एक पग में मापा, एवं असुर से इसका उद्धार किया। वाली को बाण से बेधकर राजमुकुट उसके छोटे भाई को दिया। रावण का सिरोच्छेद कर राजा उसके छोटे भाई को बनाया। कालिय के फनों पर नृत्य करने वाले आप हैं। आपने पहलवानों को कुस्ती में मारा, अत्याचारी राजा कंस की हत्या की, और भारत के युद्ध में बहुत सारे राजाओं का नाश किया। आपने बड़े भाई के गद्दी के अधिकार का समर्थन किया एवं दूत के रूप में काम किया। सत्यभामा के लिये आपने इन्द्र का शमन कर उसके बाग की शोभा एवं मनचाहे वस्तु देनवाले कल्प वृक्ष को सत्यभामा के बाग में स्थानान्तरित किया। आप मंत्रोच्चार एवं उसके नियम हैं, पांच तत्व हैं, प्रारंभ एवं अंत हैं, तथा चारों वेद हैं।

ःः

दिव्य देश **55**। तिरूनांगुर कावळम पाडी ः

1। स्थान ः यह स्थान नांगुर के **11** दिव्य देशों में से एक है एवं शिरकाळी से **11** कि मी पर स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर 'गोपालकृष्णन' कहे जाते हैं जो पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में रूक्मिणी एवं सत्यभामा के साथ हैं। एक हाथ से ये समीप में गाय को पकड़े हैं तथा दाहिने हाथ में गाय चराने वाली छड़ी है। इसे कीळचथनथपुरम या कण्णन कोइल भी कहते हैं। तायर को शेंकनमल नाच्चियार या माधवरल मंगै कहते हैं। तीर्थ को तडमालरप्पोकै कहते हैं तथा विमान स्वयंभूव विमान कहा जाता है।

3। महिमा ः कावळम का अर्थ है उद्यान। सत्यभामा के लिये पारिजात खोजने के कम में भगवान यहां आये थे और इन्द्र के पारिजात वृक्ष देने से मना करने पर भगवान कृष्ण ने बलपूर्वक पारिजात को छीन लिया। रूक्मिणी एवं सत्यभामा की उपस्थिति के कारण इसे द्वारका भी कहते हैं। पौषमास के शुक्ल प्रथमा के बाद सभी **11** पार्श्ववर्ती दिव्यदेशों से गरूड़ सेवई यहां हंसवाहन पर आरूढ़ परकाल स्वामी को दर्शन देते हैं।

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1298** से **1307** तक |

ःः

चौथे शतक का सातवां दशक **4** ः **07** या पासुर **1308** से **1317** तक ः **10** पासुर वाले इस दशक में तिरूनांगुर तिरूवेळळु कुळम की महिमा का चित्रण है | आळवार संत आतुर होकर प्रभु से कर्म की यातना से मुक्ति के लिये प्रार्थना करते हैं | वैदिक ऋषियों से प्रशंसित ऊंची दीवारों वाले तिरूवेळळु कुळम में प्रभु का निवास है | आप हाथी का दांत उखाड़ने वाले वेंकटम के प्रकाश स्तंभ हैं | बालू एवं पत्थर से सागर को दो भाग में करने वाले छड़ी से गाय चराने वाले आप ही हैं | सूकर रूप में धरा को धारण करने वाले आपको 'नमो नारायण' है प्रभु |

ःःः

दिव्य देश **56** | तिरूवेळळु कुळम ः

1 | स्थान ः यह स्थान नांगुर के **11** दिव्य देशों में से एक है एवं शिरकाळी से **11** कि मी पर दक्षिण पूर्व में अवस्थित है |

2 | विग्रह स्वरूप ः मूलावर श्रीनिवास पेरूमाल या अन्नन या कन्नन पेरूमाल के नाम से विदित हैं | प्रभु यहां पूर्वाभिमुखी हो खड़े अवस्था में कांची के वरदराज भगवान के स्वरूप में हैं तथा श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ दर्शन देते हैं | उत्सव मूर्ति को श्रीनिवास कहते हैं | तायर यहां अलमेर मंगै कही जाती हैं तथा आपकी उत्सव मूर्ति को पद्मावती या 'पू तिरूमगल नाच्चियार' कहते हैं | इस स्थान को दक्षिण का तिरूपति 'तेन तिरूपति' भी कहते हैं |

3 | महिमा ः इसे अन्नन कोइल भी कहते हैं | 'अन्नन' का तमिल अर्थ 'बड़ा भाई' है | इसीलिये आपको तिरूपति वाले श्रीनिवास का बड़ा भाई भी माना जाता है | तिरूवेंकटम जाने में जो असमर्थ हैं वे अपनी अर्चना यहां करते हैं | तिरूमंगै आळवार एवं नम्माळवार ने तिरूवेंकटम एवं तिरूवेल्लकुलम दोनों की समान बंदना की है | यहां नम्माळवार तथा परकाल स्वामी की पत्नी कुमुदवल्ली एवं मानवलामामुनि की सन्निधि है |

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1308** से **1317** तक |

ःःः

चौथे शतक का आठवां दशक **4** ः **08** या पासुर **1318** से **1327** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और यहां पार्त्तन पल्ली के प्रभु का गुणगान परकाल नायकी की मॉके रूप में किया गया है | आकर्षण एवं गौरव खोकर हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि | ' मॉ अपनी

बेटी को कहते सुनती है ः भूखे हाथी के दांत उखाड़ने वाले! कण्णन, परमपूज्य प्रभु ! निष्ठुर कंस एवं हाथी का बध करने वाले प्रभु! चारों वेद का उच्चारण सुनने के लिये उन्मत्त सा दौड़ते प्रभु! कंगनवाली सखियों से निष्कासित होकर अपनी आभा खो बैठी। अजनवी प्रभु ! आपने समुद्र से घिरे लंका का सर्वनाश कर दिया। महान बंदरों की सेना के नायक! समस्त जगत को निगलकर समय से बाहर निकालने प्रभु ! आपने हमें खोजा एवं पा लिया। हमारा मन चुराकर दासी बना लिया। पवित्र ऋचाओं से वेद आपको प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन नहीं पा सके।

ःःः

दिव्य देश **57**। पार्त्तन पल्ली ः

1। स्थान ः नांगुर के दिव्य देशों में से एक दिव्य देश पार्त्तन पल्ली है जो शिरकाळी से **12** कि मी एवं नांगुर से **4** कि मी पर स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः भगवान पश्चिमामुखी खड़े हैं। मूलावर 'तामरयल केल्वन' हैं तथा उत्स्व मूर्त्ति 'पार्थसारथी' या 'कोलाविल्ली राम' कहे जाते हैं। मूलावर तथा उत्सव विग्रह श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीलादेवी के साथ दर्शन देते हैं। तायर को 'तामरै नायकी' या 'शेंगमल तायर' कहते हैं तथा उत्सव विग्रह रूक्मिणी सत्यभामा हैं। विमान को नारायण विमान तथा पुष्करणी को गंगा पुष्करणी, शंखसरस या कळग पुष्करणी कहते हैं।

3। महिमा ः सभी **108** दिव्य देशों में से केवल इसी स्थल पर अर्जुन की अलग सन्निधि है जो उत्तारिभिमुखी हो हाथ में तलवार लिये हैं। कहा जाता है युद्ध के पहले मोह होने पर भगवान ने उन्हें दर्शन दे युद्ध के लिये उत्प्रेरित करते हुए चरम मंत्र 'सर्वधर्मान परित्येज्य मामेकं शरणं व्रज ......माशुच" दिया था। चेन्ने शहर के ट्रिप्लीकेन या तिरूवल्लीक्केणी वाले पार्थसारथी मंदिर मे भगवान दो हाथ से हैं एवं शंखवादन मुद्रा मे जाने जाते हैं। दाहिना हाथ में शंख एवं बायां हाथ चरण की ओर फैला हुआ । परंतु इस मंदिर में भगवान चतुर्भज हैं। यहां के विग्रह को ट्रिप्लीकेन के पार्थसारथी भगवान के समतुल्य माना जाता है। अर्जुन को प्यास लगने पर अगस्त्य मुनि के कहने से उन्होंने अपने खड्ग से भूमि खोदकर जल प्राप्त किया था। यह अगस्त्य गौतम तथा भारद्वाज का तपस्थली है। राजा दशरथ ने यहां यज्ञ किया था। यहां की उत्सवमूर्ति भगवान राम के हैं जो कोलवल्ली राम कहे जाते हैं तथा शंख, चक, एवं धनुष बाण से सुसज्जित हैं। कोलवल्ली राम के मूलावर की सन्निधि पास के जंगल में पृथक रूप से अवस्थित है। वरूण के तपस्या के कारण भगवान ने पार्थसारथी के रूप में दर्शन दिया था।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1318** से **1327** तक।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

चौथे शतक का नौवां दशक **4** ः **09** या पासुर **412** से **422** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और यहां तिरूइंदुलूर के प्रभु का गुणगान किया गया है। आळवार संत आतुर होकर प्रभु से दर्शन का निवेदन करते हैं तथा भक्तों के आग्रह पर द्रवित होने की विनती करते हैं। इस कम में प्रभु के अन्य दिव्य देशों के स्वरूपों का स्मरण करते हैं ः तिरूवाली के पूज्य प्रभु! तिरूमालिरूमसोलै के भ्रमणशील हाथी! मणिमडकोइल के शाश्वत दीप! नरैयूर के खड़े प्रभु! पृथ्वी को दो कदमों में नाप कर आपने तुलसी की माला धारण की। आपके दर्शन की इच्छा के सागर में हम निराश गिरे हुए हैं। सुवर्ण से भी जाजवल्यमान आपका मुखमंडल हम अभी तक नहीं देख पाये हैं। क्या इस तरह से आप की प्रगति होगी ? आप इस संसार के बारे में सब कुछ जानते हैं। हमारे ऊपर कृपा कैसे होगी केवल यही आप नहीं जानते हैं। आपने अपना चरणारविन्द दिखाने से मना कर दिया है। प्रारंभ यानी सत्य युग में आप श्वेत हैं एवं अंत में यानी कलियुग में काले हैं। बीच में आप लाल एवं पीले हैं। हाय ! अभी आपका क्या रंग है हमें नहीं देखने दे रहे हैं। मेरे पिता एवं उनके पितामह सात पीढ़ियों से विश्वासपूर्वक केवल आपको नाथ मानकर सेवा करते रहे हैं। हाय ! आप हमारी खबर भी नहीं लेते और न तो आप हमारे मन में टिकते हैं और न ही अपने वदन के वर्ण की कोई झांकी मिलने दे रहे हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **58**। तिरूइंदुलूर ः

1। स्थान ः तिरूइंदुलूर मायावरम के पास नगर से बाहर **3** कि मी पर कावेरी के उत्तर तट पर स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर यहां चतुर्भुज स्वरूप में वीर शयनम की अवस्था में हैं जिन्हें 'परिमाल रंगनाथार' कहते हैं। सुगंधनाथार एवं वेदमोदन के नामों से भी आप जाने जाते हैं। भगवान के मुखमंडल के पास सूर्य हाथ जोड़े पूजा कर रहे हैं। चरण के पास चंद्र हाथ जोड़े पूजा कर रहे हैं। ब्रह्मा नाभि से निकलकर कमल पर बैठे हैं। गर्भगृह में शिर के पास कावेरी तथा दूसरी तरफ चरणारविंद के पास गंगा सेवा करते दर्शन देती हैं। श्रीदेवी, भूदेवी भी भगवान की सेवारत दर्शन देती हैं। महालक्ष्मी पदक्कम के अतिरिक्त, शालग्राम, तथा दशावतार के माला से विभूषित हो भगवान दर्शन देते हैं। यहां पृथक सन्निधि में तायर 'परिमल रंगनायकी' के नाम से दर्शन देती हैं। विमान वेदमोद या वेदचक है एवं तीर्थ इंदु पुष्करणी है।

3। महिमा ः इंदलूर का शाब्दिक तमिल अर्थ है 'सुगंधी जलाने का पात्र'। इस क्षेत्र को

सुगंधारण्यम क्षेत्र कहते हैं। कावेरी नदी के किनारे वाले रंगनाथ के पांच दिव्य देश हैंः **1**। तिरूवरंग पत्तिनम यानी श्रीरंग पत्तनम। **2**। तिरू अरंगम यानी श्रीरंगम। **3**। अप्पा अरंगम यानी कोइलाडी कल्लनै के नजदीक यानी पत्थर का बांध। **4**। मध्य अरंगम कुंभकोणम। **5**। इन्दलूर यानी परिमाल रंगम। लगता है कि तिरूमंगै आळवार को शुरू में पट बंद रहने से दर्शन नहीं मिला है। इन पदों में प्रभु के साथ उनकी नोंक झोंक का आभास मिलता है। पासुर **1331** में आळवार प्रभु को चुनौती एवं अभिशाप की तरह कहते हैं कि क्या दर्शन नहीं देने से आपकी प्रगति हो जायेगी एवं आप और महान हो जायेंगे! दक्ष ने अपनी सभी **27** बेटियों को चंद्रमा के साथ विवाह किया था। चंद्रमा का रोहिणी के साथ अधिक स्नेह रखने के कारण अन्य बेटियों ने अपने पिता दक्ष से शिकायत की। दक्ष ने चंद्रमा को 'तेज क्षय होने का शाप दे दिया'। चंद्रमा ने तलैचंग नानमडियम तथा इंदलूर में अपना तेज प्राप्ति हेतु लक्ष्मी जी से विनती की तथा तपस्या रत हो गये। फलस्वरूप लक्ष्मी की कृपा से आप शाप विमुक्त हुए। इसी कारण से इंदलूर में तायर को 'चंद्र शाप विमोचन वल्ली' कहते हैं। यहां का मंदिर वास्तुकला की सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1328** से **1337** तक, तथा पेरिय तिरूमडल **2674**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

चौथे शतक का दसवां दशक **4 ः 10** या पासुर **1338** से **1347** तकः इसमें **10** पासुर हैं और यहां तिरूवेळिळगुंडि के प्रभु का गुणगान किया गया है। प्राकृतिक सुषमा से भर पूर दिव्य देश में प्रभु की उपस्थिति को आळवार संत बहुत ही विश्वास से सुनिश्चित करते हैं। प्रभु ने गोप किशोरियों का मक्खन चुराया, बटपत्र पर पानी में सोया, पूतना का स्तन पिया, दोनों मरूदु को तोड़ा, समस्त पृथ्वी को ले लिया। गाय चराने वाले प्रभु ने समुद्र पर सेतु बनाकर राक्षस कुल का नाश किया। विष वमन करने वाले कालिय के मस्तकों पर उछलते हुए अपने पैरों से नृत्य किया एवं उससे मणि प्राप्त किया। आपने पृथ्वी को निगलकर उसे फिर बाहर कर दिया। महाभारत का युद्ध किया एवं रथों का पीछा करते हुए रथ हांके। राम के तप्त बाणों से टापू के राक्षसराज की सेना तितर वितर हो गयी और नष्ट होकर काल कवलित हो गयी। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जहां चारो ओर हरा भरा केला का बगान है। प्का केला जब नीचे गिरता है तो कयल मछलियां उसे लेकर खाती है एवं धान के खेतों में नृत्य करती है। आपने तीन पग भूमि मांगी एवं सभी आठों दिशाओं में अपने को फैला दिया। नरसिंह के रूप में

असुरों के राजा को अपने गोद में रखकर आपने उसकी छाती चीर दी। आपकी अर्चना में सदा देवसमूह उपस्थित होते हैं।

ººº

दिव्य देश **59**। तिरूवेळिळगुंडि ः

1।स्थान ः यह कुंभकोनम से **20** कि मी पर अनैकरै रोड पर स्थित है। सेंकानुर या शेंगानाथुर से यह **1** कि मी दूर है। इसे भार्गवपुरी या ब्रह्मापुरी भी कहते हैं।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर भुजंग शयनम के रूप में पूर्वाभिमुखी हैं और 'कोलविली राम' के नाम से जाने जाते हैं। उत्सव मूर्त्ति को 'श्रृंगार सुन्दरन' कहते हैं। गर्भगृह में श्रीदेवी एवं भूदेवी तथा ब्रह्मा दर्शन देते हैं। आदिशेष उग्र स्वरूप में हैं। तायर को मरकतवल्ली कहते हैं। विमान को पुष्कलसवर्तक विमान कहते हैं। तीर्थ को शुक, ब्रह्मा, इन्द्र, एवं पराशर तीर्थ कहते हैं। ळाल केला यहां का वृक्ष है तथा इसे शुक्रक्षेत्र कहते हैं। आन्डाल एवं कृष्ण के अतिरिक्त विष्वकसेन, गरूड, आंजनेय एवं आलवार की सन्निधियां दर्शनीय हैं। गरूड़ यहां चर्तुभुज स्वरूप में चक एवं शंख धारण किये हुए हैं।

3।महिमा ः भगवान को तिरूवेळिलयङ्गुडी में पूजा करने से **108** दिव्यदेश की पूजा का फल मिलता है। इसका महत्व इसीसे आंका जा सकता है कि तिरूमंगै आळवार ने इस मंदिर एवं तिरूमलैरून्सोलै को 'कोइल' से संबोधित किया है। हालांकि वैष्णवों के बीच 'कोइल' का मतलब केवल 'श्रीरंगम' होता है। पेरी वचन पिल्लै का जन्मस्थान शेंगानाथुर यहां से पास में ही है। पेरूमल के अलावे तंजोर क्षेत्र में नवग्रहों का मंदिर भी प्रसिद्ध है। यहां तिरूवेळिलयङ्गुडी में शुक्र का मंदिर है। शुक्र श्वेत चांदी के रंग के हैं और 'वेल्लि' का अर्थ तमिल में चांदी होता है। अतः वेल्लियन कुडी का अर्थ हुआ जहां शुक्र का निवास है। असुरों के गुरू शुक्राचार्य ने राजा बली को वामन भगवान को भूमि दान के संकल्प में शंख का छेद अवरूद्ध कर जल का प्रवाह रोककर विघ्न उत्पन्न करना चाहा। भगवान ने कुश से शंख के छिद्र को जब साफ किया तब शुक्राचार्य की आंख फूट गयी और वे अंधे होकर शंख के छेद से भाग निकले। इसी दिव्यदेश के भगवान से विनती करते हुए तपस्या करने पर शुक्राचार्य की दृष्टि वापस लौटी। आज भी शुक्राचार्य सतत जलते रहने वाला प्रकाशदीप के रूप में गर्भगृह में विराजमान रहते हैं। इसीकारण से दीप को 'नेत्र दीप' कहते हैं तथा भगवान को 'नेत्र मूर्ति' कहते हैं। षहां के भगवान नेत्र दृष्टि की रक्षा के लिये प्रसिद्ध हैं।

इन्द्र के पुत्र जयंत ने कौआ का रूप धारण कर सीता जी के स्तन पर चोंच मारकर

चित्रकूट में अपराध किया था। भगवान राम ने अंगुलियों से धनुष बनाकर एक घास के तिनके को जयंत पर छोड़ दिया। समस्त लोकों में भागते हुए जब जयंत को कहीं त्राण नहीं मिला तब वह सीता जी के चरणों पर आत्मसमर्पण कर डाला। फलस्वरूप उसकी जान बच गयी। चूंकि भगवान ने अंगुलियों को धनुष का रूप दिया था इसलिये यहां पेरूमाल को 'कोलविली राम' कहा गया।

एक बार मय दानव ने अपने को विश्वकर्मा से श्रेष्ठ वास्तुविद का दावा करते हुए ब्रह्मा जी से निर्णय देने की विनती की। ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को बहुत ही पुण्यवान बताते हुए मयदानव को भी पुण्य अर्जित करने को कहा। मयदानव तिरूवेळिळगुंडि में तपस्या करने लगा। भगवान प्रसन्न होकर गरूड़ पर पधारे। मयदानव ने भगवान को जयंत पर तिनके का वाण छोड़ते हुए अंगुलिओं को धनुष का स्वरूप धारण करते हुए दर्शन देने की प्रार्थना की। भगवान ने अपना शंख चक्र को गरूड़ को पकड़ने के लिये देकर चित्रकूट के स्वरूप से मयदानव को दर्शन दिया। इसीलिये यहां गरूड़ शंख चक्र धारण किये हुए दर्शन देते हैं।

ब्रह्मा को अपने पद का अभिमान हो जाने पर भगवान ने उन्हें सृष्टिकर्ता के पद से हटा दिया। जब ब्रह्मा ने तिरूवेळिळगुंडि में एक पुष्करणी बनाकर उसके तट पर तपस्या की तब भगवान ने उनका पद वापस कर दिया और इस स्थान को ब्रह्मापुरी कहा जाने लगा। इसीतरह से भगवान ने इन्द्र को दुर्वासा के शाप से इसी स्थान पर तपस्या करने पर मुक्त किया।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी**,** पेरिय तिरूमोळी **1338** से **1347** तक।

ºº

पांचवें शतक का पहला दशक **5 ः 01** या पासुर **1348** से **1357** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और यहां तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि के प्रभु का गुणगान किया गया है। बहुत विश्वास के साथ आळवार संत वंदना करते हैं कि यद्यपि समस्त संसार को धारन करने वाले आप समझने में दुष्कर हैं परंतु आपने हमें अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया है। जादूगर की तरह आप मावली यानी राक्षसराज बली के पास आये और सारा जगत ले लिया। आपदाग्रस्त हाथी की यातना का अंत किया। हठी रावण पर बाणों की बौछार कर उसके सारे मस्तक काट डाले। केसिन के अंत करने वाले ने मल्लयोद्धायों का नाश किया। यशोदा के छिपाये हुए दूध मक्खन को आप चट कर गये। षहां शुद्ध बुद्धिवाले वैदिक ऋषिगन सतत वेदों का सार समझने में तल्लीन रहते हैं। पुन्नै के पेड़ हल्दी के समान रज वरसाते हैं। भौंरे कमल का अमृत पीते हैं। पर्वत की छाता से प्रभु ने गायों

की रक्षा की। बाणासुर की भुजाओं को काटकर शिव को सेना के साथ पलायन करने में सहायता की। शिव के भिक्षापात्र को आपने ही भरा। जब पृथ्वी एवं आकाश बने नहीं थे एवं सर्वत्र घोर अंधेरा था प्रभु हंस के रूप में आकर वेदों के मणि से जगत को प्रदीप्त किया।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **60**। तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि ः

1। स्थान ः तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि सुब्रमणियम स्वामी के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान स्वामीमलै से **5** कि मी पर स्थित है। कुंभकोनम से स्वामीमलै रोड पर **18** कि मी दूर है तथा स्वामीमलै से पहले ही दायें हाथ मुड़ने पर यह दिव्यदेश पहुंचा जा सकता है।

2। विग्रह स्वरूप ः भुजंगशयनम अवस्था में मूलावर पूर्वाभिमुख हैं एवं 'वलविल राम' के नाम से जाने जाते हैं। गर्भगृह में भूदेवी, जटायु एवं आंजनेय दर्शन देते हैं। भगवान के नाभि कमल पर ब्रह्मा विराजमान हैं। योगनरसिंह की अलग सन्निधि है तथा उद्योगमुद्रा में रहने के कारण नरसिंह भगवान नौकरी तथा रोजगार का मार्ग पसस्त करने के लिये प्रसिद्ध हैं। तायर पोट्रामारियल या हेमांबभुजवल्ली कही जाती हैं। यहां का तीर्थ जटायु तीर्थ है एवं विमान शोभना विमान है।

3। महिमा ः यह भगवान राम का मंदिर है जहां राम ने तिरूमंगै अळवार को चर्तुभुज रूप में दर्शन दिया था। यह स्थान जटायु की अंत्येष्टि किया से संबंधित है और भगवान राम जब पक्षीराज को अंतिम श्रद्धांजली देनेवाले थे तो सीता की कमी महसूस हुई। भूदेवी प्रकट हुई एवं दंपति के साथ राम ने अंत्येष्टि का कार्यकलाप संपादित किया। तत्पश्चात थके राम लक्ष्मण के साथ पेड़ के नीचे सो गये थे। जब तिरूमंगै आळवार वहां से गुजरे तो उनकी नजर से राम लक्ष्मण बच गये परंतु कुछ ही दूर जाने पर आळवार की दृष्टि कमजोर होने लगी। आळवार लौट पड़े तो राम ने उन्हें चर्तुभुज रूप में दर्शन दिया। भगवान की प्राचीन प्रतिमा प्लास्टर की बनी थीं जो योगनरसिंह के पास भूमिगत हैं और इसीकारण से नरसिंह भगवान की शक्ति बहुत बढ़ गयी है। जटायु की अंत्येष्टि से संबंधित एक और दिव्य देश कांचीपुरम से **7** कि मी पर तिरूपुटकुळी के नाम से जाना जाता है। तिरूपुळम्बुदमगुडी से **2** कि मी पर मंडनगुडी स्थान है जो भक्तांघ्रिरेणु यानी तोंडराडिप्पोडि आळवार का अवतार स्थल है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1348** से **1357** तक।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

पांचवें शतक का दूसरा दशक **5** ः **02** या पासुर **1358** से **1367** तक ः इसमें **10** पासुर

हैं और यहां तिरू कूडलूर प्रभु का गुणगान किया गया है। अपने आप राजा होते हुए भी प्रभु अपनी प्रभुता को भुलाकर राजाओं के लिये दूत बनकर गये। सात बैलों पर विजय प्राप्त करने के लिये कृष्ण को नप्पिनाय का पुरस्कार मिला।आळवार संत सदा सरस बातें करने में विश्वास करते हैं। आप बताते हैं कि फूल का मधु पीकर मधुमक्खी यहां कुरूंजी पन्न धुन पर ध्वनि करती हैं। शिशु रूप में आपने दही चुराकर खाया और अब हमारा हृदय चुरा ले गये हैं। यहां के खेतों से बगुला कयल मछलियां चुराती हैं। सात बैलों पर विजय प्राप्त करने के लिये कृष्ण को नप्पिनाय का पुरस्कार मिला। सुन्दर किशोर के रूप में आकर आपने मावली पृथ्वी तथा सबकुछ ले लिया। दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले शिव को भी प्रभु की वरीयता मान्य है। आळवार संत प्राकृतिक घटनाओं का बहुत सूक्ष्म उदाहारण देते हैं जैसे कि कच्चा आम पेड़ से गिरकर नदी के बालू के ढ़ेर में पक जाते हैं। दूसरे दिव्यदेश का उदाहरण दे प्रभु की उपस्थिति को सुनिश्चित कर देते हैं। तिरूनिर्मलै में रहने वाले प्रभु जहां मृगा की जोड़ी साथ दिखती है कूडलूर में रहते हैं। हमारे हृदय में बढ़ते हुए प्रेम से प्रभु कूडलूर में रहने आये हैं।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **61**। तिरू कूडलूर या 'अदुतुरै पेरूमाल कोईल' ः

1।स्थान ः यह कुंभकोनम रोड पर तिरूवैयारू से **12** कि मी दूर कावेरी नदी के किनारे है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं तथा आपको 'वैयम कथा पेरूमल' या 'जगत रक्षकन' भी कहते हैं जो प्रयोग मुद्रा में चक्र धारण किये हुए हैं। उत्सव मूर्ति भी 'जगत रक्षकन' के अतिरिक्त 'अम्बरीष वरदा' कहे जाते हैं परंतु आपके हाथ में एक दंड है जिसे तमिल में 'सेंकल' कहते हैं तथा जो जगत के शासक का प्रतीक है। तायर पद्मासिनी या पुष्पवल्ली कही जाती हैं। तीर्थ को चक्र तीर्थ कहते हैं एवं विमान शुद्ध सत्व विमान के नाम से जाना जाता है।

3।महिमा ः अम्बरीष राजा यहां तपस्या रत थे। आपने वराह भगवान को इसी स्थान पर भूमि में प्रवेश करते देखा जो श्रीमूषणम में भूमि से बाहर प्रकट हुए। राजा को इस स्थान पर एक अलौकिक सुगंध का अनुभव हुआ। अन्वेषण करने पर पता लगा कि देवगन इस स्थान के एक टिल्हे पर पारिजात फूल अर्पित करते हैं। इस टिल्हे में भगवान की भूमिगत प्रतिमा मिली। अम्बरीष राजा ने उसी स्थान पर मंदिर का निर्माण किया। कालक्रम में कावेरी के प्रवाह में मंदिर ध्वस्त हो जाने से विग्रह प्रवाहित होकर एक मछुआरे के गांव में चले गये थे। मूल विग्रह को प्राप्तकर पुनः मंदिर का निर्माण

रानी मंगम्मा ने कराया। मूल मंदिर का स्थान वर्तमान मंदिर से **2** कि मी कावेरी के उपरी प्रवाह में माना जाता है जिसे आज के दिन 'पेरूमल पोट्टल' कहते हैं।

भृगु मुनि जब शिव ब्रह्मा तथा विष्णु के यहां जाकर उनकी श्रेष्ठता का निश्चय कर रहे थे तब मुनि ने भगवान को क्षीरसमुद्र में शयनावस्था में छाती पर लात मारी थी। लक्ष्मी इस बात से बहुत नाराज हो गयीं थी। मुनि ने भी अपनी गलती का अनुभव किया तथा भगवान से क्षमा प्रार्थना की। भगवान के प्रसन्न होकर वर मांगने पर मुनि ने लक्ष्मी को अपनी पुत्री के रूप में देखना चाहा। तत्पश्चात मुनि नंदकमामुनि के रूप में जन्म लिये और यहां तपस्या रत हुए। पास के पुष्करणी में फाल्गुन उत्तराफाल्गुनी के दिन एक कमल में एक बालिका प्रकट हुई। मुनि ने इसका पालन पोसन किया तथा समय आने पर इस कन्या का विवाह भगवान के साथ फाल्गुन माह के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में किया।

मनुष्यों के पाप का प्रक्षालन करने से कावेरी नदी तथा अन्य नदियां काली हो गयीं तथा ब्रह्मा के पास जाकर उनलोगों ने प्रार्थना की। कावेरी जब यहां आई तो उनके पाप धुल गये तथा वे कज्जल हो गयीं।

एक बार आंजनेय आकाश मार्ग से चले जा रहे थे। उन्होंने इस स्थान पर बहुत बड़ी भीड़ को भगवान राम को पूजते देखा। आंजनेय स्वामी नाचते हुए यहां जमीन पर प्रकट हुए। वर्तमान में भगवान के मंदिर के सामने 'नृत्यरत आंजनेय' की पृथक सन्निधि है।

यह अदुतुरै पेरूमल कोइल भी कहा जाता है। तिरूमंगै आळवार ने दो दिव्य देशों की गाथा गायी है जो कूडल कहे जाते हैं। एक है दक्षिण का 'तेनकूडळ' या 'कूडल आळगर' यानी मदुरै एवं दूसरा यह दिव्य देश है जो उत्तर का 'वडाकूडल' है और कावेरी के किनारे है। तमिल में एकत्रित होने को या साथ कोई काम करने को 'कूड' कहते हैं। देव एवं मानव यहां साथ एकत्रित होकर पेरूमाल की पूजा में रत हुए इसलिये इसे कुडलूर कहा गया।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1358** से **1367** तक।

ःःः

पांचवें शतक का तीसरा दशक **5 ः 03** या पासुर **1368** से **1377** तक ः इसमें **10** पासुर हैं और यहां तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु का गुणगान किया गया है। आळवार संत प्रभु से चरणारविंद की प्राप्ति का उपाय पूछते हैं। धरा से इक्कीस राजाओं का अंत करने वाले प्रभु ही तिरूवेळळरै में रहते हैं। एक असुर ने ब्रह्मा से वेद छीन लिया।

आपने हयग्रीव स्वरूप में उसे वापस कराया। आप ने हिरण्य का नाश किया। पांडवों को आपने राज्य दिलाया। वराह स्वरूप में प्रलय जल से दुःखी धरा का उद्धार किया। कच्छप स्वरूप से आपने देवों को अमृत दिया। राक्षस के दस मस्तक काटने वाले आप ही हैं। हंस रूप में सातों लोक के अविद्या का आपने नाश किया। मावली के यज्ञ से आपने पूरी धरा माप ली। प्रकृति की सुषमा का बखान करते हुए आळवर संत कहते हैं कि यहां आम तथा कटहल के फलों के सुगंधमय वातावरण में मधुमक्खी एवं भौरे संगीतमय ध्वनि उत्पन्न करते हैं। आप ही वेंकटम के प्रभु हैं।

पांचवें शतक का चौथा से आठवां दशक **5 ः 04** या पासुर **1378** से **1427** तक ः पांच दशकों के **50** पासुरों में श्रीरंगम या तिरूवरंगम दिव्य देश के प्रभु की प्रशस्ति दी गयी है। आळवार संत कहते हैं कि लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। कावेरी यहां प्रभु के चरणों में चंदन, हाथी दांत, अगिल लकड़ी, तथा रत्न समर्पित करती है। प्रभु अपनी नाभि पर जगत के स्रष्टा को धारण किये हुए हैं। आप ऊंचे मुकुट धारण कर फणधारी शेष पर शयन कर रहे हैं। चक्रधारी प्रभु ने मावली के यज्ञ से पृथ्वी का उपहार लिया। आपने राक्षसों के नगर का नाश किया। आपने पूतना, दुष्ट गाड़ी, तथा कंस के पहलवानों का नाश किया। आप ही ने वराह मत्स्य नरसिंह तथा वामन रूप धारण किया। आप दूरस्थ हैं, सर्वेसर्वा हैं, हर स्थान में रहते हैं, एवं ऐसे आश्चर्य हैं जो कोई कभी भी समझ नहीं पायेगा।

पासुर **1388** से **1397** तक परकाल नायकी की मॉ की मनोदशा का चित्रण है। श्रीरंगम के प्रभु के अतिरिक्त मॉ वेंकटम तथा तिरूमेय्यम के प्रभु से अपनी बेटी के भविष्य के बारे में पूछती है। बताती है हमारी गोद में नही रहती। उसकी आंखों की नींद चली गयी। कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? उसने अपना कंगन एवं कमरधनी खो दिया है, मैं क्या करूँ ? सारी रात वह शीतल अमृतमयी तुलसी की बात करती है। वनवासी ! गोपियों के बन्द घरों से दही एवं घी चुराने वाले नन्द के लाल ! उरोज पर चंदन लगाना तथा आंखों में काजल लगाना छोड़कर केवल यही पूछती है 'हमारे प्रभु का घर तिरूवरंगम कहां है ? हम लोग सब जानते हैं कि आपका गोकुल में लालन पालन कैसे हुआ। देखिये, मंजर के साथ आपकी तुलसी की माला की प्रतीक्षा में है। कुछ उससे बात कीजिये। अपने डंडे एवं गेंद से, गुड़ियों से, एवं सुन्दर सुग्गा से, अब कभी नहीं खेलती। 'छान्दोग्य, तैत्तरीय, कौषीतकि, अग्नि वेदी, साम वेद, हे वैदिक प्रभु ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ?

पासुर **1398** से **1427** तक परकाल नायकी को भगवान का दर्शन श्रीरंगम में हो जाता है। बताती है कि तूफान रोकने वाले प्रभु को हमने शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। तिरूप्पेर के प्रभु ! तिरूक्कुरूंगुडी के प्रभु ! तिरूत्तनकल के निवासी ! करंबनूर के निष्णात प्रभु ! वराह रूप में प्रभु ने पृथ्वी एवं आकाश को अपना बना लिया। चरवाहा प्रभु ! वामन रूप में आकाश तक फैलने वाले प्रभु ! अग्नि वमन करने वाले बाणों से लंका को जलाकर क्षार कर दिया। यज्ञाग्नि से प्राप्त होने वाले प्रभु ! गरूड़ की सवारी करने वाले जो भयानक कर्मों में रत एवं तेज भागने वाले शिव को भगाने वाले हैं। उत्तरदिशा के वेंकटम पर्वत के निवासी, हमारे हृदय के चोर, पृथ्वी मापने वाले वैदिक बटु, मधुमक्खी मंडराते सुगंधित बाग वाले तिरूकोव्लूर के प्रभु ! काषाय बस्त्र वाले बौद्ध एवं दुर्गंध से भरे श्रमणों को कोई गौरव नहीं देते। मिथ्या धारणाओं से मुक्त करने वाले, इन्द्रियों को नियंत्रित कर हमारे हृदय में राजकुमार की तरह स्थापित । आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं।

शाश्वत वेद, यज्ञ, व्याकरण, एवं उनके अर्थ, इन सबों के कारण। पवित्र अग्नि वेदी, नदियों के पवित्र जल, पृथ्वी, मेघ, वायु, सात समुद्र, सात पर्वत श्रेणी, आकाश एवं ब्रह्मांड, प्रभु इन सब रूपों में हैं, और आप अरंगम नगर के निवासी हैं। इन्द्र ब्रह्मा एवं शिव आदि अन्य देवों से पूजित हैं। आप साध्य, साधन, एवं जीवन हैं। जब पृथ्वी, पर्वत, समुद्र, एवं आकाश असुरों के शासन में चले गये तथा चारों वेद अंधकार में पड़ गये तब आपने हंस रूप से संसार को प्रकाशित किया, और देवों एवं ऋषियों को फिर से एक बार वेद प्रदान किया। महान वासुकी नाग को महान मंदर पर्वत के चारों ओर लपेट कर हजारों हाथों से आपने समुद्र मंथन किया। समुद्र ने अपना मुंह खोलकर भारी गर्जन किया तथा उसकी लहरें आकाश तक ऊंची चली गयी। इस आश्चर्य को स्वर्ग, सूर्य, चांद, देवगन तथा अन्य जीवों ने देखा। रक्तिम आंखों वाले नरसिंह ने चांदी के पर्वत की तरह चलकर असुर का बध किया। वीर योद्धा राजा कृतवीर्य अर्जुन परशुराम के फरशे का शिकार होकर अपनी हजारों भुजायें गंवा बैठा। दुष्ट आततायी राक्षस ने सीता को प्रभु से अलग कर दिया। पत्थरों का सेतु बना अपने महान धनुष से समुद्र का शमन किया। बन्दरों की सेना के साथ नगर में प्रवेश कर शक्तिशाली रावण के मुकुट वाले दसों मस्तकों को काट डाला। चक्रधारी प्रभु एक चक्के वाले सूर्य देव के रथ के अंतः वासी हैं एवं अग्नि वेदी पर अर्पित सामग्रियों को प्राप्त करने वाले हैं। भारत के युद्ध में आपने सूर्य को चक्र से ढककर दिन को रात बना दिया और सदाचारी अर्जुन का पक्ष लिया। आप वह शिशु हैं जिसने राक्षसी का स्तन पान किया तथा आप वह शिशु हैं

जो सारे ब्रह्माण्ड को निगलकर प्रलय जल में बट पत्र पर सो गया और पुनः सारे ब्रह्माण्डको बाहर निकाल दिया। हमारे नीच मन में प्रवेश कर हमें दुष्कर्मो से आपने मुक्त कर दिया।

प्रभु की विनम्रता सखाभाव एवं दयालुता का चित्रण करते हुए आळवार संत कहते हैं कि गुहन एवं हनुमान इसके ज्वलंत उहारण हैं। 'दुःखी दीन अति नीच सेवक' गुह को ऐसा नहीं कहा। अपने परम समर्पित भाई को भी उसका बना दिया एवं कहा 'हमेशा हमारे सखा, मेरे प्यारे भाई, आओ'।

वायु के पुत्र एक बन्दर पशु' हनुमान को ऐसा न कहकर यह कहते हुए कि आपने स्नेह का सागर उड़ेल दिया 'तुम्हारी सेवा को किसी भी वस्तु से नहीं तौला जा सकता'। आर्त गजेन्द्र का उद्धार सर्वविदित है। दयाहीन गरूड़ की डर से विषैला सुमुख सांप आपके पास सुरक्षा की गुहार लगाते आया। तब आपने उसे गरूड़ को सुरक्षित रखने के लिये दे दिया।

आपने एक गोविन्द स्वामी पर दया की और कहा 'मोर समान मधुर नारियों से आनन्द मिलता है, इस बात का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है, संसार में जाओ, एक बार फिर से वहां रहो, और मेरे पास लौटकर तब आओ जब बहां से संतुष्ट हो जाओ'।

एक विद्वान ऋषि ने मार्कण्डेय को जन्म दिया था जिस पर यम का अधिकार था। इस भय से शिशु ने आपके चरणाविन्द की प्रार्थना की। उसे अभय देकर आपने उसकी रक्षा की। अपनी शिक्षा एवं विद्या हेतु आप वैदिक ऋषि के पास गये। तब ऋषि ने सागर में डूबे अपने पुत्र को जीवित करने की कामना प्रकट की।आप पश्चिम के समुद्र में गये और उनका पुत्र यथावत लाकर वापस सुपुर्त कर दिया।

अपनी पत्नी के साथ आपके पास आकर एक बार चारों वेदों के ज्ञाता ने अपनी दुखड़ा सुनाया 'एक के बाद एक बच्चा होता है परंतु उसे कोई राक्षसी गायब कर देती है।' तब आप उसे बहुत दूर ले गये और उसके सारे बच्चों को यथावत उसे उपलब्ध करा दिया।

दक्षिण के पट्टाभिषिक्त राजाओं के एक शक्तिशाली राजा तोण्डै मन्नवन आपकी असीम दया के पात्र हुए जब आपने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र का रहस्य बतलाया। अपने राज काज के ज्यादा अच्छे कामों में वे अपने जीवन का समय देने लगे।

ºº।

दिव्य देश **62**। तिरूतगंल या तिरूतन्कल ः

1।स्थान ः यह तमिलनाडु में विरूदनगर एवं शिवकाशी के बीच अवस्थित है। मदुरै श्रीविल्लीपुत्तुर रेल मार्ग का एक रेलवे स्टेशन है जो तिरूतन्कल कहा जाता है। मंदिर

एक छोटी पहाड़ी पर है जिसे तोंगा मलय कहते हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः यहां के मूलावर को आळवार ने 'तिरूतंगल अप्पन' कहके संबोधित किया था। मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं तथा साथ में श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीला देवी विराजमान हैं। भगवान को 'निन्दरा नारायण' या 'स्थित नारायण' भी कहते हैं। तायर 'शेंकमाल नाच्चियार' या 'अन्ना नायकी' कही जाती हैं। आप अपनी पृथक सन्निधि में खड़ी हैं जो कि एक अपवाद के रूप में है। तायर अपनी सन्निधि में प्रायः बैठी हुई देखी जाती हैं। आप पूर्वाभिमुख हैं एवं एक हाथ सीधा है तथा दूसरा अभय मुद्रा में है। आंडाल की पृथक सन्निधि है। विमान को सोम संध विमान कहते हैं। तीर्थ पापविनाश पुष्करणी तथा भास्कर, शंख, एवं अर्जुन तीर्थ कहा जाता है। यहां भगवान के समक्ष गरूड़ यानी पेरिया तिरूवाडी चतुर्भुज स्वरूप में हैं। एक हाथ में अमृत कलश है दूसरे में नाग पकड़े हैं तथा अन्य दो अंजलिबद्ध मुद्रा में हैं। गर्भगृह में **11** अन्य विग्रह हैं जिसमें एक नारायण स्वरूप का है। आपकी दायीं ओर विश्वकर्मा, श्रीदेवी, नीला देवी, एवं अरूण के अतिरिक्त हाथ जोड़े मार्कण्डेय मुनि एवं गरूड़ खड़े हैं। आपकी बायीं ओर भूदेवी, जाम्बवती, ऊषा, अनिरूद्ध, एवं भृगु ऋषि खड़े हैं। मूलावर के प्रभु तिरूमला के भगवान के समतुल्य मुद्रा में हैं, दायां हाथ श्रीचरण की ओर इंगित, तथा बायां हाथ कमर पर टिका हुआ। इसे श्रीक्षेत्र भी कहते हैं।

3। महिमा ः एक बार श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीला देवी के प्रशंसको में विवाद छिड़ गया कि कौन सबसे श्रेष्ठ हैं। श्रीदेवी के प्रशंसकों ने कहा कि जगत को संपन्नता प्रदान श्रीदेवी करती हैं तथा जगन्माता के रूप में जानी जाती हैं। भूदेवी के प्रशंसको ने आपको धरणी से संबोधित कर अन्न फल आदि देने वाली बताया तथा जीवन का आधार कहा। नीला देवी को प्रशंसको ने जल यानी रस का अधिष्ठात्री देवी कहा 'रसो वैसः'। नार यानी जल से जीवन है एवं प्रभु भी नारायण कहे जाते हैं। जीवन में आनंद रस का संचरण नीला देवी के कारण है। श्रीदेवी नाराज होकर तिरूतंगल आ गयीं एवं अष्टाक्षर मंत्र का अनुष्ठान करने लगीं। भक्तों के अनुरोध पर यहां स्थित हो गयीं। तत्पश्चात आपकी तपस्या से प्रसन्न हो नारायण भी प्रकट हुए और आपकी प्रशंसा करने लगे। इसके बाद भूदेवी एवं नीला देवी भी आयीं एवं आपकी महानता की प्रशंसा करने लगीं। रंगनाथ भगवान से परिणय के लिये श्रीविल्लीपुत्तुर से श्रीरंगम जाने के रास्ते में आंडाल ने यहां विश्राम किया था इसलिये इस स्थान को 'तिरूतन्गल' कहते हैं यानी 'लक्ष्मी के ठहरने का स्थान'। 'तिरू' यानी लक्ष्मी एवं 'तन्गल' यानी ठहरने का स्थान। चूंकि श्रीदेवी ने यहां तपस्या की थी इसलिये भी इसे 'श्री का स्थल' यानी

'तिरूतन्गल' कहते हैं। भगवान प्लास्टर के बने हैं अतः आपका तिरूमंजन नहीं होता परंतु तायर का नित्य तिरूमंजन होता है। यह स्थान अर्जुन नदी के तट पर बसा था और प्राचीन मंदिर का बाढ़ के प्रवाह से ध्वस्त हो जाने के कारण मंदिर का पुनर्निमाण वर्तमान पहाड़ी पर हुआ जहां एक तरफ पार्श्वभाग में एक शिवमंदिर भी स्थित है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1399 2068,** तथा शिरिय तिरूमडल **2673,** एवं पेरिय तिरूमडल **2674**।भूत आळवार इरान्दाम तिरूवन्दादि **2251**।

००

दिव्य देश **63**। करंबनूर या उत्तमार ः

1।स्थान ः यह तमिलनाडु में तिरूची से **7** कि मी पर अवस्थित है एवं 'उत्तमार कोईल' के नाम से भी जाना जाता है। रेलवे स्टेशन को उत्तमार कहते हैं जो श्रीरंगम स्टेशन से दूसरा स्टेशन है। इसके अन्य नाम हैं 'भिक्षुणदार कोइल' 'नीपा क्षेत्रम' 'कदंब वन क्षेत्रम' 'त्रिमूर्ति क्षेत्रम' 'आदि महापूरम' ।

2।विग्रह स्वरूप ः यहां पूर्वाभिमुख मूलावर भुजंगशयनम अवस्था में 'पुरूषोत्तम' कहे जाते हैं। तमिल में पुरूषोत्तम को उत्तमार कहते हैं इसीलिये इसे 'उत्तमार कोइल' भी कहते हैं। तायर को पूर्वादेवी या पूर्णावल्ली कहते हैं तथा आप खड़ी अवस्था में हैं। तीर्थ को कदंब तीर्थ तथा विमान को उद्योग विमान कहते हैं। यहां का वृक्ष कदली वृक्ष है।

3।महिमा ः यहां शिव एवं ब्रह्मा की अलग अलग सिन्निधि हैं। सबकी पत्नियों की भी अलग अलग सन्निधि है। सरस्वती देवी की अलग सन्निधि वाला यह एक अपवाद स्वरूप दिव्य देश है। यहां एक ही शोभायात्रा में शिव एवं नारायण की सवारी साथ साथ निकलती है। कहते हैं शिव का ब्रह्मा वाले कपाल का भिक्षापात्र जो अन्यत्र किसी भी भिक्षा से नहीं भर पाया था यहां तायर की भिक्षा से भरा था। इसीलिये लक्ष्मी को पूर्ण वल्ली कहते हैं। इस स्थान में दिगंबर शिव भिक्षाटन विग्रह के रूप में ब्रह्मा का कपाल पकड़े हैं। इसीलिये इसे भिक्षणदार कोइल या पिचीयार कोइल कहते हैं।

प्रलयकाल में वेद एवं धर्मशास्त्र शिव के पास जाकर प्रलय की विभीषिका से बच कर रहने का स्थान खोजने लगे। उन्होंने वेद को कदंब का वृक्ष बन जाने को कहा।आगम कदंब वृक्ष के फूल हो गये। ईतहास उसके फल हो गये एवं पुराण उस वृक्ष के पक्षी हो गये। सबों को कदंब क्षेत्र में चले आने को कहा। इस क्षेत्र के कदंब के वृक्ष सभी धर्म शास्त्र हैं। श्रीरंगम के निर्माण के समय तिरूमंगै आळवार तिरूकरंबूर में तत्कालीन

आवास बनाकर रहते थे। यह स्थान विवाह के लिये पवित्र माना जाता है। यहां की सन्निधियों में किवाड़ नहीं है अतः **24** घंटे पूजा करने की सुविधा है।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी**,** पेरिय तिरूमोळी **1399** ।

ःः

पांचवें शतक का नौंवा दशक **5** ः **09** या पासुर **1428** से **1437** तक ः **10** पासुरों में तिरूप्पेर दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है तथा यह बताया है कि प्रभु की उपलब्धता नाम जप से सुगम हो जाती है। जो आपका आश्रय लेते हैं उन्हें आप अपना भक्त बना लेते हैं। कमल से भरे सरोवरों से घिरे तेन या दक्षिणी तिरूप्पेर में आप फनधारी नाग पर सोये हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! प्रभु ने ब्रह्मा को अपने नाभि कमल पर बनाया एवं शिव के खाली कपाल पात्र को अपने हृदय के रस से भरकर उनकों शाप से मुक्त करते हुए देवों का प्रभु बना दिया। देवों ने प्रार्थना की 'वक्रदंत का मुंह फाड़ने वाले प्रभु हमारी रक्षा कीजिये।' तब आपने नरसिंह के रूप में मुंह खोले अपने पंजों से हिरण्य की छाती चीर डाली। समुद्र के ऊपर पत्थरों से सेतु का निर्माण कर आप लंका में प्रवेश किये और राक्षसराज के दसों सिर एवं बीसों भुजायें काट डाले। वैदिक ऋषियों से वैदिक ऋचाओं के निपुण पाठ वाले जगह तिरूप्पेर में आप रहते हैं। कृष्ण के रूप में मक्खन खा आप माँ के कोपभाजन हुए एवं मथानी वाली रस्सी से माँ ने आपको ऊखल में बांध दिया। चारों वेद**,** पांचो यज्ञ**,** एवं छः आगमों में निष्णात आपकी सदा प्रशस्ति गाते हैं।

पांचवें शतक का दशवां दशक **5** ः **10** या पासुर **1438** से **1447** तक ः **10** पासुरों में तिरूनन्दीपुर विण्णगरम दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। आळवार संत ने प्रभु को अपना आराध्य देव बताया हैं एवं सिर नवाकर प्रार्थना करने को कहते हैं। प्रभु माँ के कोप से डरते थे परंतु उनके द्वारा श्रमपूर्वक तैयार किया हुआ दही एवं मक्खन घड़े के साथ चुरा ले गये। आपने उदर में सातों लोक**,** एवं अन्य सब कुछ रख लिया। युग युग के प्रलय के बाद इन सबों से पुनः आपने जगत की सृष्टि की। हजारों सूर्य से प्रतिभावान चक्र एवं शंख धारण कर गदा धनुष बाण एवं खड्ग से राक्षसों का आपने टुकड़े टुकड़े कर दिया। अपनी पत्नी एवं भाई के साथ आप घनघोर जंगल में भ्रमण करते रहे। यहां देवगन आपकी पूजा करते हैं। पिता की यातना का अंत करने के लिये प्रभु ने बन्द कारागार में जन्म लिया और नंदगोप के पुत्र के रूप में पाले पोसे गये। राजा नन्दी वर्मन आपकी पूजा करने आया करते थे। वंदीजन गाते हैं 'आपसे अच्छा देवता नहीं एवं इस नगर से अच्छा नगर नहीं'। जब प्रलय की बाढ़ आकाश को छूती है उस

समय प्रभु की ईच्छा को सिर पर धारण करने वाले को कोई क्षति नहीं पहुंचती ।

००

दिव्य देश **64** । तिरूनन्दीपुर विण्णगरम

1 । स्थान ः यह कुंभकोनम रेलवे स्टेशन से **5** कि मी दूर दक्षिण पूर्व दिशा में है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर बैठे अवस्था में अभयहस्त के साथ पश्चिमाभिमुख हैं और साथ में श्रीदेवी एवं भूदेवी विराजमान हैं । 'नन्दी नाथन' तथा 'विण्णगर पेरूमल' आदि नामों से जाने जाते हैं । उत्सव विग्रह को 'जग्गननाथन' कहते हैं । इस स्थान को नाथन कोइल तथा दक्षिण जगन्नाथन भी कहते हैं । तायर शेंबकावल्ली कही जाती हैं । तीर्थ को नन्दी तीर्थ कहते हैं । विमान मंदार विमान के नाम से जाना जाता है ।

3 । महिमा ः कहते हैं कि भगवान पहले पूर्वाभिमुख थे परंतु शिवी चकवर्ती को कबूतर तौलने में तराजू के पलड़े पर अपना शरीर का मांस काटकर चढ़ाते देखने के लिये पश्चिमाभिमुख हो गये । एक अन्य कथा के अनुसार श्रीदेवी ने अपने को भगवान के वक्षस्थल पर स्थापित करने के लिये यहां तपस्या की थी । चूँकि श्रीदेवी पूर्वाभिमुख होकर तपस्या कर रही थीं और भगवान जब प्रसन्न होकर यहां पधारे तो पश्चिमाभिमुख हो श्रीदेवी के मन की ईच्छा की पूर्ति की । इसी के उपलक्ष में आश्विन मास के शुक्ल पक्ष के शुकवार को तायर के तिरूमंजन को बहुत महत्व दिया जाता है ।

एक बार शिव जी की सवारी नंदी वैकुंठ के द्वारपाल की उपेक्षा कर वैकुंठ में प्रवेश कर गया । द्वारपाल के शाप से नंदी के सारे शरीर में असहनीय जलन होने लगी । शिव जी के परामर्श पर नंदी ने यहां आकर तपस्या की और भगवान ने उसे द्वारपाल के शाप से मुक्त कर दिया और अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया । भगवान के गर्भगृह में वायीं दीवार पर आदिकार नंदी का चित्र बना है । इसी कारण नगर का नाम भी नन्दीपुर हो गया ।जबकि उड़ीसा राज्य के पूरी में भगवान जगन्नाथ प्रसिद्ध हैं यहां के भगवान दक्षिण के जगन्नाथ माने जाते हैं ।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी**,** पेरिय तिरूमोळी **1438** से **1447** ।

००

छठे शतक का पहला दूसरा एवं तीसरा दशक **6 ः 01, 6ः02,** एवं **6ः03** या पासुर **1448** से **1477** तक ः तीन दशक के **30** पासुरों में तिरूवण्णगर ओप्पिलिअप्पन दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है । आळवार संत प्रभु से जन्म के चक्कर से मुक्ति मांगते हैं । समुद्र मंथन में आपने पधारने की कृपा की । नीला विषपान शिव को दिया**,** अमृत देवों को दिया**,** तथा स्वयं लक्ष्मी रूपी अमृत को स्वीकार किया । तीन पुरियों को

जलाने वाले शिव के ऊपर तप्त बाणों से आपने काले केश जैसा चिह्न छोड़ दिया। पृथ्वी, सूर्य, चांद, जड, चेतन को क्षण भर में निगलकर एक सरल शिशु के रूप में बट पत्र पर समुद्र में सो गये। आप पुनः समुद्र एवं पर्वत हो गये तथा लोकों के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा हो गये एवं चारों वेद की ऋचायें हो गये। यहां वैदिक ऋषि प्रातः एवं सायं अग्नि कुंड में घी की आहुती देते हैं। अपने पूर्व के जीवन के कटु अनुभवों का स्मरण कर आळवार संत कहते हैं कामी नारियों के आकर्षण सुख में बहुत यातना है एवं मृत्यु का भय रहता है। तुलसी की माला एवं मुकुट धारण करने वाले प्रभु ! हम आपके चरणारविंद का आश्रय लेने आये हैं।

आळवार संत पुरानी घटनाओं को याद करते हुए प्रभु के चरणों के आश्रय की दुहाई देते हैं। इन्द्रियों को भौतिक सुख से खुश रखने के चक्कर में बहुत अपमानित होना पड़ा है। तब मैं आपको भूल गया था। बुद्धिहीन अवस्था में जन्म मरण की आवृति में पड़कर दुख एवं यातना झेलता रहा। मृगनयनी कामी नारियों के सुख की निस्सारता को समझ अब आपके चरणों में आया हूँ। यह समझ कर कि बच्चें एवं पत्नियां उहलोक में कोई काम नहीं आयेंगे उनसबों से मन को हटा लिया हूँ। आपने जो अपनी कृपा की कटार हमें दी है उससे इन्द्रियों के अनाचार को काट कर आपके चरणों में आ पड़ा हूँ। हाय ! अब हमें संपन्न सांसारिक जीवन और पृथ्वी पर शासन करने वाला राजा का गौरव गान नहीं चाहिये। लंका के नाश करने वाले प्रभु आप ही हैं। आपकी दी हुई हमारे भीतर जो इन्द्रियां हैं वे हमें नरकगामी बनाने के लिये आतुर हैं। हमारे धूर्त्त कर्म मित्र बनने का स्वांग भर कर हमें घोर नरक भेजने की प्रतीक्षा में हैं। प्रभु आपने चांद को उसकी यातना से मुक्त किया। छत्रधारी राजाओं के बीच दूत का काम करने वाले आप भक्तों के हृदय के अमृत हैं। आप हमारे हृदय के ज्ञान दीप हैं। आपके चरणों में आया हूँ। आळवार संत विश्वास पूर्वक प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि अब हम आपके चरण तक आ गये हैं और मेरा उद्धार निश्चित है। आपके सुन्दर सौंदर्य का स्मरण कर सभी सुखों का हमने त्याग कर दिया है। जन्म से मुक्त होकर आपकी कृपा से आपके पास आया हूँ। तिरूकुरूगुंडी एवं तिरूनरैयूर के प्रभु की दुहाई देते हुए बीती अवस्था का स्मरण कर बताते हैं कि चंद्रमुखी के नयन कटाक्ष से घायल हो हम दौड़ते आपके चरणों तक आये हैं। आपकी खोज में हमने अपना दुख गंवा दिया और आपके चरण तक आ गये। समुद्र से घिरे लंका नगर के राजा रावण का अंत करने वाले प्रभु, मेरे नाथ, हम दूसरे देवता को नहीं जानते। सच्चाई के रास्ते से अपनी आत्मा की उन्नति का मार्ग पा सका हूं। आर्तभाव से निवेदन करते हैं कि मुझे व्याख्या के लिये न कहें बल्कि सीधे अपने

हृदय में रखें। शक्तिशाली हाथी घोर जंगल में भारी लकड़ी ठेलता है। सारी लकड़ी में आग लगने से वह भार मुक्त हो जाता है। मेरी वही स्थिति हो गयी है। मधुसूदन प्रभु! विनती है, इस दास की रक्षा एवं कुशल क्षेम की कृपा करें।

ஃஃஃ

दिव्य देश **65**। तिरूवण्णगर ओप्पिलिअप्पन ः

1। स्थान ः यह कुंभकोणम से **6** कि मी पर है तथा तिरूनागेश्वरम रेलवे स्टशन से **2** कि मी पर है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं और ओप्पिलिअप्पन श्रीनिवास के नाम से जाने जाते हैं। तायर लक्ष्मी भू देवी हैं और वसुंधरा, धरनी देवी, तथा भूमि नाच्चियार आदि नामों से जानी जाती हैं और उत्तराभिमुखी हैं तथा आधे बैठने की मुद्रा में हैं। तायर के सामने मार्कण्डेय मुनि हैं जिन्होंने तुलसी कानन में मिले कन्या का पालन पोषण किया था और दक्षिण की ओर मुंह कर कन्या दान की मुद्रा में ससुर की भांति बैठे हुए हैं। यहां का विमान विष्णु विमान या सुधानंद विमान कहा जाता है। तीर्थ अहोरात्र पुष्करणी एवं आरती पुष्करणी है।

3। महिमा ः मूलावर वेंकटाचलपति प्रभु के भाई जाने जाते हैं इसीलिये इस स्थान को 'तेन तिरूपति' भी कहते हैं। नम्माळवार को प्रभु ने पांच रूपों में दर्शन दिया था जो तिरूवायमोळी **6**।**3**।**9** में चित्रित हैं। यहां प्रभु के पांच नाम हैं ः मूलावर तिरूविण्णागरमप्पन, उत्सावर पोन्नाप्पन, भोग मूर्त्ति को मूथाप्पन कहते हैं, तथा दो अन्य को एन्नाप्पन एवं मणिअप्पन कहते हैं जिनकी मुख्य मंदिर परिसर में पृथक सन्निधि है। भगवान ने बूढ़े ब्राह्मण के वेष में मार्कण्डेय से उनकी कन्या मांगाी थी। मुनि नहीं चाहते थे सुन्दरी कन्या को देना अतः उन्होंने ब्राह्मण को कह दिया कि यह कन्या छोटी है और भोजन में नमक देना भूल जाती है जिससे भोजन का स्वाद जाता रहता है। ब्राह्मण इस बात से नहीं हिला और अपना प्राण देने का ठान लिया। मुनि बड़े असमंजस में पड़े और ध्यान लगाकर प्रभु की प्रार्थना की। भगवान शंख चक्र लिये प्रकट हुए और ब्राह्मण गायब हो गया। मुनि ने प्रसन्न होकर भू देवी स्वरूपिनी कन्या प्रभु को दे दी। भगवान ने कहा कि उनका भोजन अब से बिना नमक का रहेगा और आज भी यहां भोग बिना नमक का ही लगता है। भक्तगण गरूड़ स्तम्भ के पास वलीपीठ पर नमक चढ़ाते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमोळी **1448** से **1477** तक, **1649** **1855** **2080**, तथा शिरिय तिरूमडल **2673**, एवं पेरिय तिरूमडल

2674 । पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि **2342 2343** । नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3473** से **3483** तक ।

ººº

छठे शतक का चौथा से दशवां दशक तक तथा सातवें शतक का पहला से तीसरा दशक तक **6 ः 04** से **6ः10** तक एवं **7ः01** से **7ः03** तक यानी पासुर **1478** से **1577** तक ः दस दशकों के **100** पासुरों में तिरूनरैयूर दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। आळवार संत मानव जीवन के लाचार बेवस वृद्धावस्था का चित्रण बहुत मार्मिक शब्दों में करते हैं तथा मन को सावधान करते हैं कि इस अवस्था के पहुंचने के पूर्व प्रभु की शरणागति सुनिश्चित करलो। हे मन ! इसके पहले कि आंखें कमजोरी से नाचें, कफ भर जाये, एवं सुन्दर नारियां कहें 'पिता जी सावधानी से चलो', हमलोग प्रभु के पास चलें जो सूर्य, चांद, वायु एवं अग्नि हुए। आप नरैयूर में रहते हैं, आपकी पूजा अर्पित करें। सुगंधित जूड़े वाली नारियां एकत्र होकर व्यंग भरी हंसी के साथ पूछें 'कफ वाला आदमी, तुम यहां क्या करने आये हो ? ', हमलोग प्रभु के पास चलें। नारियां एकत्र होकर व्यंग भरी हंसी के साथ पूछें 'भवान ! अब आप क्यों हमलोगों को तथा हमारे वस्त्र को देखते हैं ? सुन्दर नारियां अपना स्नेह हटाते हुए पूछें 'इतनी दूर खांसते क्यों आ गये ? नारियां अपना प्रेम बदल दें तथा हंसते हुए बोलें 'यह आदमी दुष्ट है तथा टूट चुका है' । इसके पहले कि सुन्दर नारियां अपना स्नेह खींच लें, शरीर क्षीण हो जाये, कमर झुक कर डंडे पर टिक जाये, हमलोग प्रभु के पास चलें।

प्रभु ने पुरा काल में समुद मंथन कर देवों को उनकी रक्षा के लिये अमृत दे दिया। नरसिंह के रूप में आकर प्रभु ने नखपंजों से असुर की छाती चीर दी। योद्धाओं से युद्ध कर प्रभु ने लंका को नष्ट कर दिया। प्रभु ने मक्खन चुराया एवं ऊखल में बांधे गये। नप्पिनाय से पाणिग्रहण के लिये आप ने सात वृषभों से युद्ध किया। पूतना राक्षसी का प्रभु ने स्तन पान किया तथा हाथी पर जोरों से प्रहार उसका बध कर दिया। प्रभु ने समुद्र यात्रा कर गुरू को उनका पुत्र लाकर दे दिया। प्रभु ने अर्जुन के श्वेत घोड़े वाला रथ हॉका एवं जयद्रथ का उसकी शक्तिशाली सेना के साथ विनाश कर दिया। नरैयूर की प्राकृतिक संपदा कमल भरा तालाब, मधुमख्खी लिपटे फूल फल, तथा वैदिक रीति की पूजा का भी यथावत चित्रण प्रस्तुत है।

पृथ्वी,आकाश, दिशायें, समुद, पर्वत तथा अन्य सभी को निगलकर तैरते बटपत्र पर शिशु के रूप में सोने वाले प्रभु का दर्शन अगर चाहते हो तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ। विशाल मत्स्य के रूप में प्रलय जल पर प्रकट होकर पर्वतों आदि के ऊपर

आनंद से तैरने वाले प्रभु के चरणों का यहां आश्रय मिलता है। ऐसे प्रभु का यहां निवास है जिनका वस्त्र समुद्र है, पृथ्वी पैर है, वायु धड़ है, आठों दिशायें बाहें हैं, एवं ब्रह्माण्ड किरीटधारी मस्तक है। हिरण्य असुर को पकड़ कर अपनी गोद में रख उसकी छाती चीर कर सर्वत्र गर्म खून विखेरने वाले प्रभु का यह निवास है। चरवाहा प्रभु ने बांसुरी बजायी, गोपियों का कंगन चुराया तथा प्राचीन द्वारका नगर पर राज्य किया। आपने अजेय योद्धा के रूप में **21** राजाओं का पुराकाल में फरसा से अंत किया। आप तुलसी की माला धारण करते हैं, तथा अरंगम में रहते हैं। ऊंचे कुल के चोल नरेश आपकी पूजा अर्पित करने आते हैं जिन्होनें आठ हाथ वाले ईश्वर का सत्तर बड़े मंदिरों का निर्मा ण कराया।

आळवार संत अपने भीतर प्रभु के प्रति सुदृढ़ विश्वास का बखान करते हैं। चतुर्दिक फैली प्राकृतिक सुषमा में आप प्रभु के मुखमंडल के मुस्कान का दर्शन करते हैं। नरैयूर के प्रभु ने हमें अपना कर अपनी सेवा में ले लिया। आप मस्तक पर तुलसी का किरीट पहनते हैं। सुगंधित मुल्लै विहंसते हैं, पानल फूल उनके साथ मिलकर आमंत्रण देते हैं। आपने सुवर्ण मृग का बध किया। आपने भूमि के उपहार की याचना की। शिशुरूप में श्वेत मक्खन की चोरी की और जब मॉ ने गुस्से में ऊखल से बांध दिया तो रोते खड़े रहे। मुल्लै के हंसते फूल यह सुनकर अपनी मुस्कान विखेरते हैं। धनुष यज्ञ में आप मथुरा गये तथा मल्लयोद्धाओं के साथ कंस का अंत किया। आप कालिय नाग के फन पर नाचे। बानासुर के हजारों हाथों को काट डाला जबकि त्रिनेत्रधारी शिव एवं उनके पुत्र सेना के साथ भाग खड़े हुए। आपने रथ हांककर सेनावाले महान राजाओं का अंत किया। आप ने पर्वत को उठाकर गोपवंश का रक्षक के रूप में काम किया। युद्धक्षेत्र में शंख फूंककर पांचाली के जूड़ा बंधवाने वाले आप प्रभु नरैयूर में रहते हैं। भस्म लगाये बैल पर सवार जटाधारी शिव गंगा एवं चंद्रमा को अपने बालों पर रखे हुए ब्रह्मा की खोपड़ी का भिक्षा पात्र लिये जब भिक्षा के लिये पहुंचे तो प्रभु ने अपने हृदय के रस से इनके भिक्षापात्र को भरकर इनको शाप से विमुक्त किया।

अन्य दिव्यक्षेत्रों के प्रभु का स्मरण करते हुए आळवार संत नरैयूर के प्रभु की महिमा गाते हैं। मृगछाला लपेटे वामन के रूप में मावली के पास जाकर प्रभु ने जमीन की याचना की। आप अमृतमय बागों वाले तिरूवेंकटम के निवासी हैं। सब जगह खोजने पर मैंने आपको नरैयूर में पाया। समुद्र का मंथन किया और मछली के रूप में आकर प्रलय काल में इसे पी गये। आप तिरूमल एवं तेन वयल आली के प्रभु हैं। गजेन्द्र के रक्षक हिरण्य के विनाशक हैं। आप सदा सुगंधित तुलसी की माला पहनते है। धर्नुधारी के रूप में प्रभु

ने समुद्र से घिरे लंका के रावण का बध कर दिया तथा विभीषण पर उदारता दिखायी। यशोदा किशोर आप नाभि कमल पर ब्रह्माण्ड के देवों तथा मनुष्यों की रचना करने वाले हैं। खांडव वन में आग लगाने वाले प्रभु मेय्यम में रहते हैं और अमृत टपकाते कल्पवृक्ष हैं। सत्यभामा के लिये आपने सुन्दर द्वारका बनाया। सुगंधित कुडन्दै के शयनावस्था वाले प्रभु सुन्दर श्वेत शंख एवं तेजोमय चक्र धारण करते हैं। आप हमारे राजा हैं। आपको नरैयूर में देखा है।

कपाल भिक्षापात्र लिये तीनों लोक घूमने वाले शिव को श्रीपति प्रभु ने शाप से मुक्त कराया। हे मन ! आपके चरणों का आश्रय लो। धर्नुधारी प्रभु के तप्त बाणों से दोषी राक्षसों के भारी सिर धराशायी हो गये। शंख के वर्ण के बलराम के छोटे भाई के रूप में प्रभु ने दूध की सामगियों एवं जगत को एक घूँट में निगल लिया। हवा में नाचते घड़े के साथ नाचने वाले प्रभु ने वर्षा रोकने के लिये शक्तिशाली भुजाओं से पर्वत उठा लिया। भारत के युद्ध में प्रभु ने चक्र से सूर्य को छिपा दिया जो स्वयं अपने उदर में ब्रह्माण्ड छिपाते हैं। श्री लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर रख प्रभु प्रसन्न रहते हैं। प्राकृतिक संपदा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि तिरूनरैयूर में सुनहले पके बाल के धान, लाल कमल, एवं ऊंचे गन्ना के पौधे एक दूसरे के बीच उपजते हैं। यहां पके हुए एवं पकने वाले फल, अरेका के फूलों के मोती से गुच्छे बागों में भरे हुए हैं। तिरूनरैयूर में वैदिक ऋषियों के अग्नि कुंड से उठने वाला धुंआ संपन्नता प्रदान करने वाला बादल बनाता है।

छठे शतक के दसवें दशक में आळवार संत नरैयूर के प्रभु से वैष्णवता में समाश्रयम मिल जाने का है पूरा संकेत देते हैं। विभिन्न दिव्य देशों की महिमा के साथ आप यह घोषणा करते हैं कि आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। कुडन्दै में शयन करने वाले प्रभु ने वराह के रूप में पृथ्वी का ऊद्धार किया, संरक्षित लंका को जलाकर धूल में मिला दिया एवं पृथ्वी को दो पगों में माप दिया। कमल सरोवर में प्रवेश कर विष वमन करने वाले कालिय के फन पर नृत्य किया। आपने वराह रूप में पृथ्वी को दाढ़ों पर उठा लिया। आपने गुस्सैल हाथी का दांत उखाड़ा, अमृत के लिये समुद्र मंथन किया, गोपियों का मक्खन चुराया। आप अपने वक्षस्थल पर श्रीलक्ष्मी को धारण करते हैं। संरक्षित कांची नगर में रहते हैं एवं सारे संसार से पडकम यानी पांडव दूत दिव्यदेश कांचीपुरम में पूजित हैं। ळांका पार बाण वरसा कर राज विभीषण को दे दिया। पर्वत उठाकर तूफान से गायों की रक्षा की। आपने सात वृषभों का शमन किया। आप कोवलूर में खड़े हैं। आप ने यम को रण क्षेत्र में दौड़ाकर राक्षस कुल का अंत कर दिया। बंदरों एवं

भालुओं की सेना से बलशाली राक्षसों का मान मर्दन कर दिया। आप दूध मधु एवं अमृत के तरह हमारे हृदय के लिये मधुर हैं। आप श्रीपति हैं। मैं भक्तों से कहूँगा कि वे हमारे साथ 'नमो नारायणमे' दुहरायें। आप हमारे तथा देवों के प्रभु हैं। आपका मंत्र 'नमो नारायणमे' जपकर भक्तगण कर्म के लेखा से मुक्त हो जाओ।
आळवार संत भविष्य की सुधि लेते हुए प्रभु से पुनर्जन्म के चक्कर से विमुक्त होने की प्रार्थना करते हैं। जैसे बछड़ा गाय को दूध के लिये पुकारता है वैसे ही हम आपको पुकारते हैं। विनती है कि मेरा पुनर्जन्म न होने की व्यवस्था करें। सात समुद्र, पर्वत एवं अन्य सभी आपने एक ही बार में निगल लिया। हमारे प्रेम से आप क्षीरसागर में, वेंकटम के पर्वतों एवं तिरूकोट्टयूर में रहते हैं। कडलमल्लै के अमृत मय प्रभु ! जब मैं आपको पुकारता हूँ'केशी घोड़ा के जबड़ा फाड़ने वाले शुद्ध परात्पर प्रभु 'हमारा हृदय चुराते हुए उसमें आनंद भर कर आप निवास कर जाते हैं। आपकी उदारता को मैं कैसे भूल सकता हूँ! प्रियतमा के साथ पत्थरीले वन में भ्रमण किया। हिमालय की बर्फीली चोटियों पर रहने वाले प्रभु ! तिरूमूळिकळम के प्रकाश ! आपके दर्शन से हमारी जीवात्मा बंधन से मुक्त हो गयी है। जब मैं आपको 'प्रभु एवं नाथ' कहता हूँतो दूसरे हमें 'पागल पागल' कहते हैं। कैसे कभी भी मैं आपको भूल सकता हूँ।
आप वराह एवं पक्षी के रूप में आये और मेरे नीच हृदय को अपने जैसा पावन बना दिया। हाय ! जब मैं आपको 'चोर' कहता हूँतो मेरी आंखें अश्रु बहाती है। मेरे प्रति प्रेम के कारण आपने मुझे सेवक बना लिया। हमारे माता पिता ने जन्म दिया और बाद में वे संसार छोड़ कर चले गये। तदुपरांत सब स्नेह एवं प्यार देने वाले आप ही हमारे माता पिता हैं। शिशु रूप में आकर सबों को निगल गये। सोते हुए एक तैरते बट पत्र पर स्थित रहे। शाश्वत प्रभु हमारे हृदय में विराजमान रहे परन्तु तब मैं जानता नहीं था। आप मेरे हृदय में नीचे उतर कर बैठ गये हैं। कैसे आपको अब जाने दूंगा ? मेरे पिता के पिता के पिता के पिता ... एक बार हमारे भीतर बस गये हैं तो कैसे आपको अब जाने दूंगा ? अगर मुझे छोड़कर आप किसी दूसरे के हृदय में जा बसते हैं तो मेरी हिस्सेदारी रहेगी नहीं। बात मानो और मेरे हृदय में हंसगामिनी देवी के साथ बसे रहो। आळवार संत बताते हैं कि मेरा शरीर अभी जीर्ण शीर्ण नहीं हुआ है। यह आपको धारण करने में सक्षम है। शरीर की मांसपेसियों को आपको धारण करने लायक रखे हुए हूँ। आपका ध्यान करते हुए आपको अपने हृदय में दृढ़ता से आसीन करा चुका हूँ।
इस नीचात्मा ने आपको स्वप्न में देखा और देखते हीं मेरी आंखें तथा हृदय उमंग में उछल पड़े। आप मकराकृत कुण्डल पहनते हैं। <u>तीन आळवारों के बीच एक तंग जगह</u>

में आप चौथे भी प्रवेश कर गये। जिस दिन से आप आये किसी और के पास न जाकर आप हमारे मन में बस गये। यम से हमारी रक्षा करते हुए आप हमारे स्थिर चैतन्य हो गये। महान राजाओं का भारत युद्ध पांडव हमारे कृष्ण के कारण जीत गये। आपने लंका के राजा पर बाणों की वर्षा कर दी। केवल आप ही हमारी पूजा लेते हैं। हाथ उठाकर उत्साहित करते हुए मुझे ढ़ाढस बंधाते हैं 'डरो नहीं, हम तुम्हारे साथ हैं'। वैदिक ऋषियों के हृदय वाले प्रभु हमारे हृदय, आंख, एवं नीच जिह्वा पर आ गये हैं। इस संसार एवं जीवन में आपने जो कृपा की है उससे अब कोई कर्म संग्रहित होकर मुझे नीच नहीं बना सकते। मोती की आभा वाले प्रभु आपको आज यहां देखा है। आप को छोड़कर मेरा हृदय किसी और की प्रशंसा करना नहीं जानता। नरैयूर के प्रभु आप ही कुडन्दै, अरंगम, वेंकटम, मालैरूञशोलै, एवं तंजैमामणि के प्रभु हैं।

ºº

दिव्य देश **66**। तिरूनरैयूर या नाच्चियार कोइल ः

1। स्थान ः यह स्थान कुंभकोनम से **8** कि मी पर अवस्थित है। इसे नाच्चियार कोइल, सुगंध गिरी, नांबीयूर, श्रीनिवास क्षेत्रम, मणिमाड कोइल, सिद्धि क्षेत्रम, पंचव्यूह स्थलम, द्वादशाक्षर क्षेत्रम के नाम से भी जाना जाता है। पेरूमाल यहां नांबी कहे जाते हैं इसीलिये इस स्थान को नांबियूर भी कहते हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः गर्भगृह में पांच स्वरूप में पेरूमाल विराजमान हैं इसलिये पंचव्यूह कहते हैं। भगवान के साथ प्रद्युम्न अनिरूद्ध पुरूषोत्तम बलराम विराजमान हैं। भगवान के वक्षस्थल पर लक्ष्मी का प्रतीक विराजमान है। भगवान के परिणय के पुरोहित के रूप में चतुर्मुख ब्रह्मा गर्भगृह में विराजमान हैं। दो भुजाओं वाले पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में मूलावर तिरूनरैयूर नांबी या श्रीनिवास या परवासुदेव कहे जाते हैं। तायर वंजुलावल्ली, पेरूमाल के साथ गर्भगृह में ही उनके दायें खड़ी हैं। तायर को नांबीकै नाच्चियार भी कहते हैं। दोनों दिव्यदंपति तिरूकल्याण कोळम में दर्शनीय हैं। यहां तायर की अलग सन्निधि नहीं है। यहां पांच तीर्थ हैं जिसमें सबसे प्रसिद्ध मणि मुक्ता नदी है। विमान को श्रीनिवास विमान कहते हैं जो गोपुर की आकृति में बना है। इस तरह का विमान पार्थसारथी मंदिर ट्रिप्लीकेन चेन्नै एवं वरदराज पेरूमाल कोइल कांचीपुरम में है। यहां कुल **16** गोपुर हैं तथा पांच मंजिला राजगोपुर **76** फीट ऊंचा है।

यहां पक्षिराज गरूड़ जी की अपनी विशेष महत्ता है। आप वाहन के अतिरिक्त एक विशेष देवता के रूप में नित्य **6** बार पूजे जाते हैं। आपकी एक पृथक सन्निधि है।

विग्रह एक ही शालग्राम प्रस्तरखंड, **5** फीट के वर्गाकार आसन पर **8** फीट की ऊंचाई में निर्मित है। गरूड़ जी नौ सर्प से विभूषित हैं। 'अमुदा कलशम' नाम से एक विशेष मोदक का मधुर नैवेद्य आपको अर्पित होता है। इसीलिये आपको 'मोदक मोदार' कहा जाता है। प्रणय कलह के कारण महालक्ष्मी रूठ कर अज्ञात स्थान पर चली गयीं थीं। आपके अथक परिश्रम से पेरूमाल लक्ष्मी तक पहुंच पाये। इसी के उपहार स्वरूप आपको यहां विशेष महत्व के साथ पेरूमाल ने स्थापित किया है। **16** हाथवाले सुदर्शन जी के साथ पीछे नरसिंह भगवान, योग नरसिंह, राम सीता लक्ष्मण, रंगनाथ, सनातन कृष्ण, वेणुगोपाल, वरदराज, सोवरीराजा, लक्ष्मीनरसिंह, नम्माळवार, तिरूमंगै आळवार, उडैयावर, देशिकान, एवं मानवलामामुनि की पृथक सन्निधियां हैं।

3। महिमा ः शोभायात्रा में सामान्यतया अन्य तीर्थो में श्रीदेवी एवं भूदेवी पेरूमाल के साथ रहती हैं परंतु यहां श्रीनिवास पेरूमाल एकमात्र वंजुलावल्ली तायर के साथ रहते हैं। तायर का इतना महत्व है कि तायर को पेरूमाल से तीन इंच आगे स्थापित किया जाता है। गरूड़ सेवा के दिन हंस पर सवार तायर की सवारी पेरूमाल के सवारी के आगे आगे चलती हैं। तायर के पिता मेधावी ऋषि ने पेरूमाल के साथ जो शर्त रखी थी कि नाच्चियार को विशेषता दी जायेगी पेरूमाल उसी का पालन कर रहे हैं। सुदर्शन जी की साधना से मेधावी ऋषि को पुत्री के रूप में वंजुला वृक्ष के नीचे लक्ष्मी प्राप्त हुई थीं। ऋषि ने जिसका नाम वंजुलालक्ष्मी रखा। भगवान लक्ष्मी को खोजते पांच स्वरूप में आये थे। दो शर्त पर भगवान का विवाह लक्ष्मी से हुआ ः सबों को यहां मोक्ष मिले तथा सभी उत्सवों में लक्ष्मी को प्राधमिकता दी जाय। इसीकारण से मंदिर भी 'नाच्चियार कोइल' के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान सुगंध से भरपूर है इसलिये इसे नरैयूर कहते हैं।

यहां 'काल गरूड़ सेवै' यानी गरूड़ की उत्सव मूर्त्ति पत्थर की रहती है जबकि साधारणतया उत्सव मूर्त्ति धातु के आवरण वाली लकड़ी की रहती है। वर्ष में दो बार पेरूमाल इसी प्रस्तर गरूड़ विग्रह पर सवार हो शोभायात्रा में निकलते हैं। एक तो मार्गळी यानी मार्गशीर्ष माह में तथा दूसरा फागुन माह में चौथे दिन गरूड़ की सवारी निकलती है। जब सन्निधि से गरूड़ जी का विग्रह सवारी के लिये निकाला जाता है तो चार आदमी इस काम को आसानी से कर लेते हैं। जब 'उत्सव पेरूमाल' सवार हो जाते हैं तो चार के बदले शनैः शनैः ज्यादा लोगों की आवश्यकता होती है। क्रमशः आठ सोलह एवं अंततः चौसठ जनों को मिलकर ढोने की आवश्यता हो जाती है।

एकबार एक बह्मचारी ने 'नरैयूर श्रीनिवास' से **108** दिव्यदेश के दर्शन की ईच्छा

प्रकट की। फलस्वरूप सभी दिव्यदेश के भगवान की प्रतिमायें प्रकट हुई और ब्रह्मचारी की ईच्छा की पूर्ति हुई। सभी **108** प्रतिमायें छोटे स्वरूप में यहां सुन्दर तरह से संजोग कर रखी गयीं हैं तथा भक्तगण उनके दर्शन से लाभ उठाते हैं।

आळवार संत तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी का इसी स्थान पर वैष्णव के रूप में समाश्रयम हुआ था। पेरूमाल ने इस अवसर पर स्वयं तिरूमंगै मन्नन का मुद्रा आभरण का काम किया था। तिरूमंगै मन्नन कुमदुवल्ली से व्याह करना चाहते थे। कुमुदवल्ली ने तिरूमंगै मन्नन से एक वर्ष तक एक हजार वैष्णव को भोजन कराने की शर्त रखी। जैसे भी हुआ आपने यह शर्त पूरी की। इसके लिये आवश्यक राशि एकत्र करने के प्रयास मे आपने संपन्न राहगीरों को लूटा। आप राजा के तरफ से एक ऊंचे पद पर आसीन थे। इस कार्य में राजकोष की एकत्र राशि भी आपने लगा दी। राजा को जब ज्ञात हुआ तो उसने आपको कारागार में बंद कर दिया। भगवान ने आपको एक दिन स्वप्न देकर बताया कि कांचीपुरम में वेगवती नदी की वालुकाराशि में अमुक स्थल पर पर्याप्त धन उपलब्ध है। आपने उसे लाकर राजा की राशि लौटा दी। विवाह के पूर्व आपको वैष्णव बनना था। पेरूमाल से ही आपने समाश्रयम करने का निवेदन किया। पेरूमाल ने वैसा ही किया। इसीलिये पेरूमाल का स्वरूप यहां दो भुजा वाला है तथा दोनों में शंख चक्र धारण कर तिरूमंगै मन्नन को शंख चक्र से चिह्नित कर समाश्रयम करने को तैयार की मुद्रा में खड़े हैं।

यह स्थान चारों तरफ अन्य दिव्यों देशों से घिरा हैः उत्तर में **5** कि मी पर तिरूविण्णगरम 'ओप्पिलीाप्पन कोईल', पश्चिम में **10** कि मी पर नन्दीपुरा विण्णगर 'नाथन कोईल', दक्षिण में तिरूच्चेरै 'शरणदा पेरूमल कोईल', दक्षिणपश्चिम में **8** कि मी पर तिरूकुडन्दै 'सारंगपानी कोईल'।

यहां का बना पीतल का विग्रह अपनी कलाकृति के लिये अन्तर्राष्टीय ख्याति प्राप्त किये हुए है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1078 1329 1470 1478** से **1577** तक, **1611 1659 1660 1852 2067 2068**, तथा शिरिय तिरूमडल **2673**, एवं पेरिय तिरूमडल **2674**।

००

दिव्य देश **67**। तिरूकाच्ची या हस्तिगिरी या वरदराज पेरूमाल कोइल कांचीपुरम

1। स्थान ः यह दिव्यदेश विष्णुकांची में अवस्थित है जिसे छिन्ना कांचीपुरम या छोटा कांचीपुरम भी कहते हैं। कांचीपुरम मंदिरों का नगर है जो पहले से विष्णुकांची तथा

शिवकांची नाम से दो भाग में बंटा हुआ था। सारा नगर एक धनुष की आकार में बसा हुआ है तथा शिव कांची एवं विष्णुकांची मिलकर एक नगर हो गया है। पश्चिम का भाग शिव कांची है तथा पूरब का भाग विष्णु कांची है। कांचीपुरम में कुल **14** श्रीवैष्णव दिव्यदेश अवस्थित हैं। पांच दिव्यदेश विष्णुकांची में तथा नौ शिवकांची में हैं। ये दिव्यदेश निम्नांकित हैं।

✐ विष्णुकांची

1। पेरूमाल कोईल यानी वरदराज या अत्तियूर

2। अष्टभुज

3। यथोक्तकारी या तिरूवेग्का

4। तिरूतनका या दीप प्रकाशार

5। तिरूवेल्लुक्कै या नरसिंहार

✐ शिवकांची

6। पांडवदूत या तिरूपडकम

7। तिरू उरगम

8। तिरू नीरकम

9। तिरू कारगम

10। तिरू कारवण्णम

11। नीलातिंगल तुंडम

12। तिरूकल्वानूर

13। तिरूप्पावलवण्णम

14। तिरू परमेच्चरा विण्णगरम या वैकुंठ

2। विग्रह स्वरूप ः वरदराज पेरूमाल को देवराज भी कहते हैं। वरदराज स्वामी के मंदिर को पेरूमाल कोईल कहते हैं। चतुर्भुज रूप में मूलावर पश्चिाभिमुख हो खड़े अवस्था में हस्तिगिरी पर अवस्थित हैं। ऊपर के दायां हाथ में चक्र तथा बायें में शंख धारण किये हैं। नीचे का दाया हाथ अभय मुद्रा में है तथा बायां हाथ गदा पर टिका है। तायर पेरूनदेवी की सन्निधि पृथक रूप से भूखंड पर स्थित हैं तथा तायर चतुर्भुज रूप में पूर्वाभिमुख बैठी हुई हैं। आन्डाल की खड़े अवस्था वाली द्विभुजी विग्रह पृथक सन्निधि में है। यहां का विमान पुण्यकोटि कहा जाता है जो गोपुर के शिखर के आकार का है

तथा इसपर सात कलश स्थापित हैं। तीर्थ को आनन्दसरस, ब्रह्मा, वराह, शेष, पद्म, एवं अग्निकुशल पुष्करणी कहते हैं।

पूरा मंदिर परिसर **212** मी उत्तर से दक्षिण एवं **378** मी पूरब से पश्चिम क्षेत्र में फैला हुआ है। परिसर तीन घेरा यानी तीन प्राकार में बंटा हुआ है। सबसे भीतर के प्राकार में हस्तिगिरि के ऊपर वरदराज पेरूमाल हैं। आन्डाल, योग नरसिंह, मलयतायर, विष्वकसेन, धनवन्तरी, तथा गणपति की सिन्निधि भूखंड में इसी प्राकार में है। दूसरा प्राकार में पेरूनदेवी तायार, कोदण्डाराम, आदिशेष, तथा करमाणिक वरदा की पृथक पृथक सन्निधि हैं। तीसरा प्राकार में आळवारों की सन्निधि है जिसमें नम्माळवार तथा मधुरा कवि आळवार नाथमुनि के साथ एक सन्निधि में हैं। तिरूमंगै आळवार की पृथक सन्निधि जीर्णोद्धार के लिये बंद है। मानवलामामुनि यानी बरवरमुनि की पृथक सन्निधि है। अन्य आळवार तथा रामानुज स्वामी एवं यामुनाचार्य स्वामी एक सन्निधि में विराजते हैं। वेदांत देशिक स्वामी की एक स्वतंत्र सन्निधि है। तिरूकांच्वी नांबी जो अलवत्तार या कांचीपूर्ण स्वामी के नाम से जाने जाते हैं गरूड़ स्तंभ के पास एक मंडप में रूचिकर खंभों पर विराजते हैं। गरूड़ स्तंभ के पास बली पीठ के अतिरिक्त एक पाषाण का भी ऊंचा स्तंभ है जिसके जड़ में आंजनेय स्वामी का चित्र खुदा हुआ है।

6 फीट के व्यास वाला पाषाण वृत्त के बीच दो त्रिभुजों के बीच **16** हाथ वाले चक्रत आलवार एवं इनके पीठ पर स्थित चारों हाथ में चक्र धारण किये आदिशेष पर बैठे योगासन में नरसिंह भगवान की सन्निधि पुष्करणी के पास पूरब तरफ है। पुष्करणी के पश्चिम वराह लक्ष्मी की सन्निधि एवं उत्तर में रंगनाथ भगवान की शयनावस्था की सन्निधि है। मंदिर परिसर के सबसे बाहरी प्राकार में पूरब एवं पश्चिम दिशा में दो गोपुर हैं। पश्चिम के गोपुर पर नौ कलश तथा पूरब के गोपुर पर ग्यारह कलश स्थापित हैं। मंदिर से बाहर पश्चिम तरफ सन्निधि वीथी के अंत में आंजनेय स्वामी की सन्निधि है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। जब कभी भी वरदराज भगवान की शोभायात्रा मंदिर परिसर से बाहर जाती है तो आप आंजनेय स्वामी को अवश्य दर्शन देते हैं। बाहर के प्रकार में **100** खंभों वाला कल्याण कक्ष है जो पुष्करणी के दक्षिण में स्थित है। पुष्करणी में अत्तिराज भगवान की काष्ठमूर्ति एक संदूक में बंद जल के भीतर है जो **40** वर्षो की आवृति में ब्रह्मोत्सव के समय **10** दिनों के लिये बाहर आकर दर्शन देते हैं। पूर्व का दर्श न **1979** में मिला था और **2019** में अगला दर्शन उपलब्ध होगा।

3। महिमा ः गजेन्द्र यहां निवास करते हुए पेरूमाल की पूजा करता था। इसी के स्मृति में इस स्थान को हस्तिगिरी या अत्तीगिरी कहा जाता है। अष्टभुज भगवान ने गजेन्द्र को

मोक्ष प्रदान किया था जिनका मंदिर वरदराज स्वामी के मंदिर से लगभग **2** कि मी पश्चिम में अवस्थित है।

'का' का अर्थ है 'ब्रह्मा' एवं 'अंजीरम' का अर्थ पूजा यानी जहां पेरूमाल ब्रह्मा से पूजे गये वह स्थल कांजीरम है। इसका अपभ्रंश रूप कांचीपुरम हो गया है। भगवान के दर्श न की ईच्छा से ब्रह्मा ने तपस्या की। भगवान ने जल के स्वरूप में पुष्कर तीर्थ बन कर दर्शन दिया। ब्रह्मा असंतुष्ट रहकर पुनः तपस्या करने लगे। इसबार भगवान वन के रूप में नैमिषारण्य क्षेत्र बनकर प्रकट हुए। असंतुष्ट ब्रह्मा ने यज्ञ का सहारा लिया और कांचीपुरम में भगवान अग्नि से प्रकट हुए। अग्नि से प्रकट होने के कारण वरदराज भगवान के मुखमंडल में जले के चिह्न दृष्टिगत होते हैं। कांची में ब्रह्मा ने सरस्वती को छोड़कर यज्ञ किया था जिससे सरस्वती कुपित हो गयीं थीं तथा ब्रह्मा के यज्ञ में अनेको विघ्न डालने का प्रयास कीं। यज्ञ से सम्बन्धित कांची के मंदिर हैं : हस्तिगिरी, अष्टभुज, तिरूतन्का, तिरूवेलुकै, तिरूवेक्का, एवं पावलवण्णारा।

तमिलनाडु में सूर्य की गति से मास की गणना होती है। इस तरह से पंगुनी मास यानी फागुन महीना **15** मार्च से **15** अप्रैल तक रहता है। इस अवधि के बीच पड़ने वाले श्रवण नक्षत्र के सात दिन पहले से 'पल्ला उत्सव' मनाया जाता है जो श्रवण नक्षत्र के दिन पूरा होता है। भगवान फूल से सजकर सात दिन तक पुष्करणी के पास विराजते हैं। वैकुंठ के सात द्वार की तरह सात परदा के भीतर पेरूमाल स्थित रहते हैं तथा संगीत से वातावरण गुंजायमान रहता है।

सूर्य की गति के अनुसार तमिल वैकासी मास यानी वैशाख महीना **15** मई से **15** जून के बीच पड़ता है। इस अवधि में पड़ने वाले श्रवण नक्षत्र के नौ दिन पहले से ब्रह्मोत्सवम प्रारंभ होता है और श्रवण नक्षत्र के दिन तीर्थवारी से यह उत्सव पूरा होता है। यह बहुत ही चिरप्रतीक्षित वार्षिकोत्सव है जिसमें भगवान की गरूड़ सेवई बहुत ही सम्मानित एवं दर्शनीय है। पूरे वर्ष में भगवान तीनबार गरूड़ वाहन पर शोभायात्रा में दर्शन देते हैं। एक है वैशाख मास के ब्रह्मोत्सवम में, दूसरा है अणि मास यानी ज्येष्ठ मास का स्वाती नक्षत्र में जब पेरियाळवार का अवतार उत्सव मनाया जाता है जो **15** जून से **15** जुलाई के बीच पड़ता है। तीसरा अवसर अवनि मास यानी **15** अगस्त से **15** सितंबर के बीच पड़ने वाले श्रावण पूर्णिमा को गजेन्द्र ऊद्धार का है। तमिल चित्रै मास यानी **15** अप्रैल से **15** मई के बीच पड़ने वाले चैत्र शुक्ल चतुर्दशी रविवार हस्ता नक्षत्र में वरदाराज भगवान का अवतार हुआ है। अतः चैत्र का हस्ता नक्षत्र एक विशेष उत्सव की तरह मनाया जाता है।

अयोध्या के राजा असमंज भार्या समेत शाप वश छिपकिली हो गये थे। वरदराज स्वामी की सन्निधि के पास इनको शाप से मुक्ति मिली। एक अन्य कथा के अनुसार श्रृंगी ऋषि के शिष्य हेमन एवं शुक्लन शाप वश छिपकिली हो गये। इनका उद्धार वरदराज स्वामी की सन्निधि के पास हुआ। आज भी भक्तगण सन्निधि के पास छत में चिपके स्वर्ण एवं रजत के छिपकिली का स्पर्श करना अपने भौतिक दुःख को दूर करने का एक श्रेयस्कर उपाय मानते हैं।

कांचीपुरम के एक भाग को टुप्पुल कहते हैं जो वेदांतदेशिक स्वामी यानी देशिकान का अवतार स्थल है। एक बार एक गरीब ब्राह्मण की आवश्यकता से द्रवित होकर देशिकान ने 'श्रीस्तुति' की रचना कर पेरूनदेवी तायर को सुनाया। तायर ने सुवर्ण मुद्रा की वर्षा से गरीब ब्राह्मण की समुचित सहायता की।

यहां पहले अत्ति के वृक्ष यानी उदुम्बर की बहुतायत थी इसीलिये इसे अत्तियुर कहते हैं। पुष्करणी में एक संदूक में बंद 'आदि अत्तिवरदा' इसी अत्ति काष्ठ के बने हैं जो प्रत्येक **40** वर्ष की आवृति में ब्रह्मोत्सव के अवसर पर दर्शन देते हैं। सन्दूक को निकालने के लिये पुष्करणी का जल उलीचकर इसे सुखा दिया जाता है। जब आदि अत्तिवरदा को पुनः स्थापित करने का समय होता है तो स्वयंमेव आकाश से घोर वृष्टि होती है एवं पुष्करणी जल से भर जाता है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1541 2050 2060 2066** ।भूतआळवार इराण्डाम तिरूवन्दादि **2276 2277**। पेय आळवार मुन्राम तिरूवन्दादि **2307**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **68**। तिरूमूळिक्कळम

1।स्थान ः यह स्थान केरल में आलुवे के पास अंगमाली स्टेशन से **5** कि मी पर अवस्थित है। यहां कालडी रोड से तथा आलुवे के तरफ से भी पहुंचा सकता है। विदित हो कि कालडी आदिशंकर का अवतार स्थल है। इरनाकुलम से त्रिशूर रोड पर अटनी एयरपोर्ट के बाद बाईं ओर एक रास्ता फूटकर मंदिर को जाता है। यह इरनाकुलम से **27** कि मी पर अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं।आप तिरूमूळिकलदान या श्रीसूक्तिनाथन पेरूमाल के नाम से जाने जाते हैं। तायर मधुराबेनी, तीर्थ पेरिकुळम, तथा विमान सौंदर्य कहे जाते हैं।

3।महिमा ः यह स्थान लक्ष्मण की तपस्या से संबंध रखता है। जब भरत भगवान राम

से मिलने सेना के साथ चित्रकूट आ रहे थे तब लक्ष्मण ने भरत के विरोध में भगवान को कटु वचन सुनाया था। हारीत मुनि के कहने से इस अपराध के लिये लक्ष्मण ने पश्चाताप स्वरूप यहां तपस्या की एवं बाद में भरत भी यहां पधारकर लक्ष्मण को गले लगाये हैं। यह घटना तब की है जब राम राज्य स्थापित हो चुका था एवं भगवान राम के कहने पर दोनो भाई प्रजा की स्थिति को समझने इस क्षेत्र में आये थे। मूलावर को भी लक्ष्मण मानते हैं, जैसे तिरपिरियार को भगवान राम का मंदिर मानते हैं, एवं इरंजालकुडा में कुडल माणिक्यम को भरत जी का, तथा पयाम्माल को शत्रुघ्न का मंदिर मानते हैं। केरल में रामावतार को भी चतुर्भुजी स्वरूप में ही दिखाया गया है। विश्वामित्र के पुत्र हारीत मुनि को पेरूमाल ने दर्शन देकर तिरूमोळी यानी श्रीमुख से अनुष्ठान प्रकरण तथा संहिता सुनाया था इसीलिये इस स्थान को तिरूमुळीक्कळम कहते हैं।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1553 2061** तथा पेरिया तिरूमडल **2674**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3847** से **3857**, शतक **9**।**07**।

ºº

सातवें शतक का चौथा दशक **7ः04** यानी पासुर **1578** से **1587** तक ः **10** पासुरों में तिरूच्चेरै या तेनचेरै दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। आस पास की प्राकृतिक सुषमा के रूप में बागों तडागों एवं आर्थिक संपन्नता के प्रतीक ऊंची अटारियों की उपस्थिति के साथ पेरूमाल की बंदना प्रस्तुत है। पूतना राक्षसी का स्तन पान कर प्रभु ने प्राण हर लिया। असुर बछड़े को ताड़ के पेड़ पर पटक कर दोनों का नाश कर दिया। सूर्पनखा राक्षसी के नाक कान काटने वाले प्रभु ने रथ पर सवार रावण एवं उसके भव्य नगर लंका का नाश अग्नि बाणों से किया। आळवार संत कहते हैं कि मैं उनको सम्मान नहीं देता जो नरसिंह रूप में आकर बलशाली हिरण्य का नाश करने वाले प्रभु की पूजा नहीं करते। वराह के रूप में प्रभु ने पृथ्वी को पुरा काल में ऊपर उठाया। मैं घोषणा करता हूँ कि आपके चरणारविंद के आश्रय के सिवा मेरा कोई आश्रय नहीं है।आळवार संत पेरूमाल के भक्तों की सेवा भाव से ओत प्रोत हो जाते हैं। जो आपका ध्यान एवं सेवा करते हैं वे हमारे प्रभु हैं और उनके लिये मेरा हृदय प्रेम से ओत प्रोत रहता है। ऐसे भक्तों पर मन जाने से ही यम पास नहीं फटकेंगे तथा कर्म चिपके नहीं रहेंगे। मैं झूठा, धूर्त, एवं सदा दुख के शैलाव में रहता हूँ फिर भी आपकी कृपा मुझे मिली, क्या चमत्कार है! देखो, मेरा हृदय तिरूच्चेरै के भक्तों के लिये द्रवित होता है।

००

दिव्य देश **69**। तिरूच्चेरै या तेनचेरै ः

1। स्थान ः यह कुंभकोनम से **21** कि मी पर तथा नाच्चियार कोइल से **10** कि मी पर तिरूवरूर रोड पर अवस्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं तथा सारनाथन कहे जाते हैं। उत्सव मूर्ति को मामाधलै पिरान कहते हैं। यहां साथ में कावेरी, मार्कण्डेय ऋषि, भूदेवी, श्रीदेवी तथा नीला देवी हैं। यह अकेला स्थान है जहां प्रभु पांचो लक्ष्मी के साथ दर्शन देते हैं जो पांच महाभूतों के प्रतिनिधि हैंः श्री देवी वायु, भूदेवी पृथ्वी, नीला देवी आकाश, सरनायकी जल, वक्षस्थल पर की महालक्ष्मी अग्नि। भगवान एक हाथ में पद्म धारण किये हुए हैं जो कावेरी से प्रसन्न होकर पांचों लक्ष्मी के साथ विराजमान होकर अलौकिक शांत स्वरूप का प्रतीक है। तायर यहां सरनायकी कही जाती हैं। विमान को सरविमान कहते हैं तथा तीर्थ सरतीर्थ है। पुष्करणी के पश्चिम तट पर वरप्रसादी आंजनेय स्वामी की सन्निधि है।

3। महिमा ः ब्रह्मा ने पुष्करणी की मिट्टी से घड़ा बनाकर उसमें वेद को रखकर प्रलयजल से वेद की रक्षा की। तमिल में 'चेरू' का अर्थ है 'पंकिल मिट्टी'। प्रत्येक बारह वर्ष पर जब वृहस्पति पुष्य नक्षत्र पर होते हैं तो कुंभकोनम की तरह यहां महामाघम का आयोजन होता है। प्रत्येक वर्ष **15** जनवरी से **15** फरवरी तक पड़ने वाले तमिल ताई मास यानी पौष महीना के पुष्य नक्षत्र का दिन यहां विशेष उत्सव का दिन रहता है।

कावेरी ने **3000** वर्ष तक तपस्या की और पेरूमाल को प्रसन्न कर लिया। प्रसन्न होकर पेरूमाल एक छोटा बच्चा के स्वरूप में सरकते हुए कावेरी की गोद में जा बैठे। साथ ही भगवान ने कावेरी को गंगा से श्रेष्ठ होने का वरदान भी दिया। पुष्करणी के पास कावेरी की पृथक सन्निधि में इसी स्वरूप का दर्शन होता है तथा कावेरी के गर्भगृह में ब्रह्मा एवं विष्णु भी विराजमान हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1578** से **1587** तक, **1853** , एवं शिरिय तिरूमडल **2673**, तथा पेरिया तिरूमडल **2674**।

००

सातवें शतक का पाचवां से आठवां दशक **7ः04** से **7ः08** यानी पासुर **1588** से **1627** तक ः चार दशकों के **40** पासुरों में तिरूवलुन्दूर दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। आस पास की प्राकृतिक सुषमा के प्रतीक बाग तड़ाग के साथ आर्थिक

संपन्नता के प्रतीक अटारियों आदि का वर्णन विभिन्न पासुरों में सटीक रूप से प्रस्तुत है। यह दिव्य देश वैदिक संस्कृति का भी धनी है। पिता को बेड़ी से मुक्त करते हुए प्रभु ने अर्द्धरात्रि में अवतार लिया। भारत के युद्ध में छली एवं सैन्य समृद्ध राजागन प्रभु के विरोध में आये परन्तु आपने रथ हांक कर सबों पर विजय प्राप्त की। सोने की दीवार वाला लंका नगर के राजा रावण के दसो मस्तक धर्नुधर प्रभु के तप्त ब्रह्मास्त्र से धराशायी कर दिये गये। यह प्रलय जल में बटपत्र पर रहने वाले प्रभु का निवास है जो हमारी आंखों एवं हृदय में निवास करने के लिये उड़कर आते हैं। आप आभा के प्रकाश एवं अंधकार अपने में धारण करते हैं। गोधूली वेला में अवतार लेने वाले प्रभु का निवास है जो फूल की शय्या पर सोकर हमारे हृदय में प्रवेश कर गये।

दो पासुरों, **1595** एवं **1596** में आळवार संत परकाल नायकी भाव से विभोर दिखते हैं। स्वप्न में हमें प्रभु ने आत्मसात कर लिया और हमारी लता सी पतली कमर दर्द से भर गयी। पूर्णतया संतुष्ट हम करबद्ध खड़े रहे। कल यहां आकर हमारे होश एवं कुशलता को समाप्त करके मुझे इतना पतला बना दिया कि हमारे वस्त्र वदन पर नहीं टिकते।

चक्र एवं शंख धारण करने वाले प्रभु ने नरसिहं रूप में आकर हिरण्य की छाती चीर दी। ब्रह्मा के समतुल्य ऋषियों से घिरे कमल समान सुन्दर आंखों वाले भगवान दिव्य अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। फरसा धारण करने वाले प्रभु ने इक्कीस महान राजाओं का अंत किया। सदा युवा रहने वाले सागर से श्याम प्रभु आकाश जगत के 'देवादि देव' हैं। आपने वृषभारोही शिव को भगा दिया तथा आपने लंका का नाश किया। मक्खन चुरा कर खाने वाले, पर्वत उठाने वाले, आपदाग्रस्त हाथी को त्राण देनेवाले, कंस का नाश करने वाले, कण्णमंगै में रहने वाले, पूतना का स्तन पीकर उसके प्राण हर लेने वाले, प्रभु ने हमें अपना चिरंतन दास के रूप में स्वीकार कर लिया है। तिरूप्पेर, कुडन्दै, के प्रभु आप सुन्दर अलन्दूर में रहते हैं। आळवार संत अपनी वेदना प्रभु के समक्ष रखते हैं। एक इन्द्रिय को संतुष्ट करना कठिन है परंतु यहां तो पांच इन्द्रियां एक ही साथ घर कर बैठी हैं। उनके आनंद को न सहने के कारण पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु के पास आया हूँ। छाण्दोग्य, आरण्यक, तैत्तरीय, साम वेद के सार, कालातीत प्रभु ! मैं दुख हूँ, अन्य आश्रय जानता नहीं हूँ। तत्कालीन प्रशासनिक स्थिति का चित्रण करते हुए आळवार संत कहते हैं कि पृथ्वी के राजाओं के राजा चोला नरेश पंचवन पौलियन एवं चोलन आपकी यहां पूजा करते हैं। पहले के नर नारायण यानी बदरीनाथ, तिरूनरैयूर के

निवासी प्रभु, आदिवाराह प्रभु, पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु हैं। आप कली का चेहरा पूरी तरह जानते हैं तथा मेरे लिये क्या उपयुक्त है यह भी जानते हैं। छींका से दही एवं मक्खन खाने वाले गोप किशोर ने बड़ी असमंजस की स्थिति बना दी। जब राजा एवं देवगन आप को नहीं पा सकते आपकी माँ ने आपको ऊखल में बाध दिया। आप ही सात लोक बन गये। पांचो इन्द्रियों ने हम पर जो असहनीय कहर ढायी है हम उससे डरे हुए हैं। आप का निरंतर ध्यान करते हुए हम पांच इन्द्रियों से रक्षित कैद से भाग निकले हैं एवं आपके चरणों में आश्रय पाने के लिये आ गये हैं। पांच राजाओं ने आक्रमण कर भोजन एवं वस्त्र का हमपर दायित्व दे रखा है। उनके दमनकारी शासन को न तो सहन कर सकता और न यह जानता कि मैं क्या करूं।

कमल सी लक्ष्मी तथा भू देवी क्षीर सागर में फनधारी शेष शय्या पर शयन किये हुए प्रभु के दिव्य चरण की सेवा कर रहीं हैं जबकि मुनिगन गाथा गान कर रहे हैं। हयग्रीव भगवान की बंदना करते हुए आप कहते हैं कि पुरातन चारों वेद एवं शास्त्र आपके श्वेत अश्व के स्वरूप वाले श्रीमुख से उत्पन्न हुए।आपने हाथी के दुःख का अंत किया। पर्वत की तरह लाल युवा वराह के रूप में पाजेब एवं अन्य आभूषणों से सजे आये और धरा देवी को प्रलय जल से अपने दाढ़ों पर ऊपर उठा लिया। यशोदा के दही एवं मक्खन आनंद से चट कर गये। आपने कंस के मलयोद्धाओं, धनुष, हाथी, एवं शकटासुर का अंत किया।

तत्कालीन शैक्षणिक वातावारण का उदाहरण देकर आळवार संत कहते हैं कि वामन एवं राम प्रभु का अणि अलून्दूर में निवास स्थान है जहां ब्रह्मा के समान मेधावी तमिल एवं संस्कृत में निष्णात वैदिक ऋषि अग्नि यज्ञ करते हैं जिसके धुंआ से आकाश में बादल बन जाता है।

ºº

दिव्य देश **70**। तिरूवलुन्दूर ः

1।स्थान ः यह मायावरम से **12** कि मी पर स्थित है। मायावरम कुंभकोनम रोड पर क्षेत्रपालपुरम से **5** कि मी पर यह स्थान अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं तथा देवाधिराजन कहे जाते हैं। उत्सवमूर्ति को अमरूवियप्पन कहते हैं। आपके बायें गरूड़ एवं कावेरी हैं तथा दायें तरफ प्रह्लाद हैं। उत्स्व मूर्ति को यहां अमरूविअप्पन कहते हैं। मात्र एक यही स्थान है जहां उत्सव मूर्ति रूक्मिणी, सत्यभामा, गाय एवं बछड़ा के साथ हैं। इस स्थान को रथमंगा पुरम भी कहते हैं। तायर को शेंकमालवल्ली कहते हैं। यहां का विमान

गरूड़ विमान है तथा पुष्करणी को दर्शन पुकरणी कहते हैं। पेरूमाल चतुर्भुज रूप में कृष्ण हैं। तायर, आंजनेय, विष्वकसेन योग नरसिंह, श्रीराम, आळवार गोष्ठी, निगमांत देशिकान, तथा कंबर की पृथक सन्निधियां हैं। तिरूमंगै आळवार की सन्निधि मंदिर से बाहर **200** मी की दूरी पर अवस्थित है।

3। महिमा ः इसे तेरअळुन्दूर या रथमंगापुरम भी कहते हैं। ऋषि एवं देवों के बीच के द्वंद में राजा उपरिश्रवा में निष्पक्ष भाव का अभाव हो गया था। फलस्वरूप राजा का उड़ता हुआ रथ यहां पांके में गिर कर धंस गया था। 'तेर' यानी रथ तथा 'अळुन्द' यानी धंसा हुआ। राजा के रथ एवं उसकी छाया को कोई पकड़ नहीं सकता था ऐसा राजा को वरदान था। परंतु यहां वास्तव में भगवान ने अपने दायें पैर के अंगूठे से राजा के रथ की छाया को दबा दिया था जिससे रथ सरोवर में गिर पड़ा था। अपने रथ निकालने में सहायता के लिये पास खड़े एक बालक को राजा ने मक्खन से भरा **1000** घड़ा देने का वचन दिया। जब रथ निकला तो राजा **999** घड़ा मक्खन से भर पाये एवं एक घड़ा जल से भर कर बालक को दे दिया। जब बालक ने घड़ों को खोला तो **999** घड़े जल से भरे थे और एक ही घड़ा मक्खन से भरा था। राजा को यह बात समझ में आ गयी कि यह बालक स्वयं भगवान ही हैं।

यह तमिलनाडु के पंच कृष्ण क्षेत्र से में एक है तथा अन्य दिव्य देश हैं ः तिरूकन्नपुरम, तिरूकण्णमंगै, तिरूकण्णगुडी, एवं कपिस्थलम। एक बार ब्रह्मा ने कृष्ण के साथ गाय चराते सभी गोप बालकों तथा गाय बछड़ों को चुराकर छिपा दिया। भगवान कृष्ण ने तब सभी बालकों गउयें एवं बछड़ों की सृष्टि कर ब्रह्मा के अभिमान को चूर कर दिया। इसी कारण से उत्सव मूर्ति अमरूविअप्पन के साथ गाय बछड़े दर्शन देते हैं।

कवि चक्रवर्ती कम्बन का यह जन्म स्थान है। ध्वज स्तंभ के पास में एक सन्निधि है जिसे कम्बन की सन्निधि कहते हैं। प्रत्येक वर्ष फाल्गुन के हस्ता नक्षत्र में तीन दिन का कम्बन का जन्मोत्स्व मनाया जाता है। थोड़ी दूर पर एक ऊंचा स्थान है जिसे 'कम्बन मेदू' कहते हैं। तिरूमंगैआळवार की एक रोचक कथा इस स्थान से जुड़ी है। जब वे पहली बार यहां से गुजर रहे थे तो लोगों से मंदिर के देवता का नाम पूछा। देवाधिराजन नाम सुनकर उन्होने इन्द्र के मन्दिर का अनुमान किया और मन्दिर न जाकर नगर से गुजरने लगे। प्रभु चाहते थे कि आळवार प्रशस्ति गीत रचें, अतः प्रभु ने आळवार के पैरों को बहुत भारी कर दिया और आळवार संत के लिये चलना दूभर हो गया। वे अपनी गलती महसूस कर मन्दिर गये और दर्शन पश्चात् **45** पासुरों की

रचना की।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1588** से **1627** तक, **1854 2066 2077**, एवं शिरिय तिरूमडल **2673**, तथा पेरिया तिरूमडल **2674**।

ःःः

दिव्य देश **71**। कण्णमंगै ः

1।स्थान ः कण्णमंगै तिरूचैरै से **24** कि मी पर तथा तिरूवरूर से **8** कि मी पर है। कुंभकोनम से कण्णमंगै **40** कि मी की दूरी है तथा तंजोर से तिरूवरूर की दूरी **50** कि मी है।

2।विग्रह स्वरूप ः भगवान यहां भक्तवत्सल कहे जाते हैं। मूलावर **14** फीट ऊंची पूर्वाभिमुख खड़े हैं तथा पेरूमपूरक कडल के नाम से जाने जाते हैं। आपको 'अवि' यानी भक्तों का हृदय भी कहा जाता है। मूलावर तायर को कण्णमंगै नायकी तथा उत्सव विग्रह को अभिषेकवल्ली तायर कहते हैं। गरूड़ की यहां विशेष आराधना होती है जो पक्षिराज के रूप में जाने जाते हैं। प्रत्येक रविवार को पक्षिराज का तिरूमंजन होता है तथा इनके जन्म नक्षत्र स्वाती में विशेष तिरूमंजन होता है। गरूड़ पर सवार वैकुंठनाथ एवं विष्णु दर्शनीय हैं। आंजनेय स्वामी की सन्निधि पुष्करणी के तट पर है। आंडाल, हयग्रीव, लक्ष्मीनरसिंह की सन्निधि के अतिरिक्त विष्वकसेन, आळवार गोष्ठी, तथा देशिकान की सन्निधि दर्शनीय है। विष्वकसेन यहां दो भुजा में हैं जबकि प्रायः आप अन्यत्र चार भुजा से विराजमान रहते हैं। विमान को उत्पल विमान तथा तीर्थ को दर्शन पुष्करणी तथा विष्णुपाद गंगा कहते हैं।

3।महिमा ः यह पंचकृष्ण क्षेत्र में से एक है। इसका उल्लेख पद्य्म पुराण में है। वकुला यहां का वृक्ष है। उत्तर तथा दक्षिण में **2** कि मी पर यह स्थान दो नदियों से घिरा है। इस दिव्यदेश में पेरूमाल का लक्ष्मी के साथ ब्याह हुआ था। समुद्र मंथन से लक्ष्मी प्रकट हुई तथा पेरूमाल से विवाह करना चाहीं परंतु लज्जावश कुछ बोल नहीं सकीं अतः यहां आकर तपस्या करने लगीं। पेरूमाल प्रसन्न होकर यहां आये और परिणय धूमधाम से संपन्न हुआ। वेद खोने के बाद वैकुंठ जाकर ब्रह्मा ने पेरूमाल से वेद प्राप्त करने के लिये प्रार्थना की। पेरूमाल के आदेश पर यहां ब्रह्मा को वेद पुनः प्राप्त हो गया।

चंद्रमा ने वृहस्पति की पत्नी से अनैतिक सम्बंध के कारण बुध को उत्पन्न किया। फलस्वरूप देवगण तथा वृहस्पति के शाप से चंद्रमा के तेज का नाश हो गया। चंद्रमा ने

ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा ने चंद्रमा को कण्णमंगै की पुष्करणी में स्नान का परामर्श दिया। यहां आने पर पुष्करणी के दर्शन मात्र से चंद्रमा के शाप का नाश हो गया।
इसी दिव्यदेश में पेरूमाल सन्निधि के पास एक मंडप है जो पेरूमाल का कल्याण मंडप कहा जाता है। यहां पास में युगों से मधुमक्खी का विशाल छत्ता लटका है जो दर्शनार्थियों को कभी दंशत्रास नहीं देता। कहते हैं प्रभु के ब्याह के समय पधारे देव एवं ऋषिजन यहां से जाना नहीं चाहते थे। प्रभु ने उन्हें मधुमक्खी बनकर रहने की अनुमति दे दी। तमिल आदि मास यानी आषाढ़ महीने के ज्येष्ठा नक्षत्र मे पूरे वर्ष में पेरूमाल का एक ही बार तिरूमंजन होता है।
एक बड़ी रोचक कथा इस स्थान से जुड़ी है। श्रीनाथमुनि के एक शिष्य कण्णमंगै अण्डन यहां परिसर की सफाई का कैंकर्य करते थे। एक दिन दो लोग अपने अपने कुत्ते के साथ यहां दर्शन में आये। कुत्ते आपस में लड़ाई करने लगे। फलस्वरूप उनके मालिक भी आपस में लड़ पड़े। कहते हैं कुत्ते तो आपस में लड़कर मर ही गये उनके स्वामी की भी वही गति हुई। इसे देखकर अण्डन बड़े आश्चर्य में पड़ गये। एक छोटा जीव कुत्ता के लिये उसका स्वामी जीवन दे सकता है तो हमारे बनाने वाले भगवान तो हमपर अवश्य कृपालु रहेंगे। तदुपरान्त सारा जीवन उन्होंने कण्णमंगै में ही बिता दिया और वे कण्णमंगै अन्दन के नाम से जाने गये। एक बार गोष्ठी के समय एक कुत्ता की आकृकि का जीव बड़ी तेजी से गर्भगृह के तरफ जाते दिखा। लोगों ने पीछा किया परंतु वह गर्भगृह में प्रवेश कर एक ज्योति में बदल गया। कहते हैं यह कण्णमंगै अण्डन का परमपद था। इसी भक्त के नाम पर दिव्यदेश को कण्णमंगै कहते हैं।
किसी भी दिव्यदेश के लिये सात आवश्यकतायें हैं ः मंदिर, तीर्थ, मंडप, विमान, नदी, नगर एवं वन। सातों की उपलब्धता के कारण कण्णमंगै को सप्तमुदा क्षेत्र कहते हैं। चार स्वरूप से शिव इस नगर की रक्षा करते हैं।
तिरूकण्णमंगै से सम्बंधित 'पेरिया तिरूमोळी' का अनुवर्ती **7ः10ः10** का पासुर **1647** बहुत ही महत्वपूर्ण है। आळवार संत भगवान को भी कहते हैं कि तिरूकण्णमंगै दिव्यदेश के पासुरों को याद करने से आपके ज्ञान में अभिवृद्धि हो जायेगी। कहते हैं कि आळवार संत के परामर्श को मानते हुए भगवान 'पेरिय वचन पिल्लै' के स्वरूप में तमिल अवनि यानी श्रावण महीने में रोहिणी नक्षत्र में अवतार लिये और आळवार संत तिरूमंगै आळवार 'नाम पिल्लै' के स्वरूप से तमिल मास कत्तिकै के कृत्तिका नक्षत्र में अवतरित हुए। ध्यातव्य है कि नाम पिल्लै तिरूमंगै आळवार के नक्षत्र कार्तिक के कृत्तिका में अवतरित हुए तथा उनके शिष्य के रूप में पेरियवचन पिल्लै भगवान कृष्ण

के अवतार नक्षत्र रोहिणी में पधारे।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1602, 1638** से **1647** तक, **1848 2008,** एवं शिरिय तिरूमडल **2673,** तथा पेरिया तिरूमडल **2674**।

ःः

सातवें शतक का नौवां दशक **7ः09** यानी पासुर **1628** से **1637** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में तिरूच्चिरूपुलियूर् या शिरूपुलियूर दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। इसे सलशयनम या जल शयनम भी कहते हैं। अळवार संत ने यहां समुद्र को मंदिर के पास देखा होगा तब तो यहां के पासुरों में समुद्र के तरंगो से लाये गये रत्नों की ढ़ेर की चर्चा की गयी है। प्रभु के चरणों की सेवा करने वाले अपना हृदय परिवर्तन चाहते हैं। महान समुद्र की तरंगे शिरूपुलियूर में रत्न प्रदान करते हैं जहां शलशयन प्रभु रहते हैं। आप हमारे हृदय के प्रभु हैं। आपकी पूजा करो। तत्कालीन अन्य पाखंडी पंथों से आळवार संत सावधान करते हैं। गली में घूमने वाले साधारण जीवन शैली के मांड़ पीने वाले फकीरों की बातों को भूल जाओ। हमारे साथ आओ। वैदिक ऋषियों से प्रशंसित श्रीसंपन्न प्रभु शिरूपुलियूर शलशयन में रहते हैं। अगर कर सकते हो तो प्रभु के छोटे एवं भूमंडल मापने वाले बड़े चरणों का ध्यान करो। जहां एक तरफ चंद्रभूषण शिव हैं तथा दूसरी तरफ स्वयं उद्यमी इन्द्र हैं। आप गोप किशोर कृष्ण हैं। आपके चरणारविंद के अलावे हम कोई और सहारा नहीं जानते। कृपया यह बताइये कि आप चार वेदों की ऋचाओं में हैं या शिरूपुलियूर शलशयन में हैं जहां वैदिक ऋषि अग्नि यज्ञ करते हैं या अपने भक्तों के हृदय में हैं। कहां हैं मैं नहीं जानता। आप शिरूपुलियूर शलशयन के पांच फन वाले शेष पर शयन करने वाले प्रभु हैं।

ःः

दिव्य देश **72**। तिरूच्चिरूपुलियूर्

1।स्थान ः यह मायावरम से **11** कि मी पर स्थित है। अन्य मार्ग ः मायावरम तिरूवरूर रेल लाईन पर कोल्लुमंगुडी स्टेशन से **2** कि मी पर मन्दिर अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर श्रीरंगम की तरह दक्षिणाभिमुख भुजंग शयनम हैं तथा बालस्वरूप में सभी दिव्यदेश के विग्रहों से छोटे हैं। आपको 'अरूमा कदल अमुदम' कहते हैं यानी अमृत के समान मीठा और आप समुद्रमंथन काल में प्रकट हुए थे। आपको 'सलशयन पेरूमल' भी कहते हैं। उत्शव मूर्ति 'कृपा समुद्र पेरूमाल' कहे जाते हैं। तायर का मूल विग्रह तिरूमा मगल के नाम से जानी जाती हैं तथा आप पूर्वा भिमुखी हैं। तायर की उत्सव मूर्ति को दया नायकी कहते हैं। विमान को नन्दवर्तन

विमान कहते हैं। तीर्थ में अनंत पुष्करणी तथा मानस पुष्करणी है। ब्रह्मांड पुराण एवं गरूड़ पुराण यहां का पुराण है।

3।महिमा ः आदिशेष एवं गरूड़ के बीच वरीयता का द्वंद उठ खड़ा हुआ। जब आदिशेष अनंत पुष्करणी में तैर रहे थे तब गरूड़ ने उन पर आक्रमण करना चाहा। आदिशेष ने भगवान का स्मरण किया। भगवान आदिशेष के गोद में विराजमान हो गये तथा दोनों को अपने दायित्वों का ज्ञान कराया। तमिल मासि मास यानी **15** फरवरी से **15** मार्च के बीच की अवधि के माघ महीने की शुक्ल एकादशी को गरूड़ से आदिशेष को बचाने का उत्सव मनाया जाता है। आादिशेष का मन्दिर मुख्य मंदिर से आधा कि मी दूर है। गरूड़ की सन्निधि थोड़ा नीचे है तथा आदिशेष का मंदिर ऊपर है।

समुद्र यहां से **12** कि मी पूरब में है। शयनम अवस्था में दो तरह की मूर्ति हैं ः थल शयनम एवं बट शयनम तथा सल शयनम। सीधे जमीन पर सोये प्रभु को थल शयनम कहते हैं, जैसे महाबलीपुरम में। बट पत्र पर सोये विग्रह को बट शयनम कहते हैं जो सीधे जल में तैरते रहते हैं। जल शयनम में प्रभु क्षीरसागर शायी माने जाते हैं। तिरूच्चिरूपुलियूर दिव्य देश में प्रभु भुजंगशयनम होकर जल में विश्राम कर रहे हैं। यहां बाल शयन मूर्ति के स्वरूप में पेरूमाल ने भुजंगशायी होकर व्याघ्रपाद मुनि या बालमुनि को दर्शन दिया था। मूलावर के श्रीचरणपाद के पास बालमुनि तथा कण्व मुनि की प्रतिमा है। यहां का विग्रह छोटे स्वरूप में हैं। जैसे मुनि बाल अवस्था वाले थे इसलिये भगवान भी बालशयन भुजंगशायी होकर प्रकट हुए। बाल मुनि शिव के अन्यतम भक्तों में से थे। शिव के वरदान से मुनि को बाघ का पैर एवं हाथ मिला था जिससे कि वे किसी तरह के पेड़ से फूल लाकर शिव को समर्पित कर सकें। शिव की प्रेरणा से आप को यहां पेरूमाल की सेवा में आना पड़ा। बाघ के अंगों से संपन्न होने के कारण मुनि का एक नाम पुलिक्कल मुनिवर भी था। इसलिये इस दिव्य देश का नाम पुलि से मिलकर शिरूपुलियूर हो गया।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1628** से **1637** तक।

ःः

सातवें शतक का दसवां दशक **7ः10** यानी पासुर **1638** से **1647** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में तिरूकण्णमंगै दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। तप, सच का स्वर्ग, झूठ, शंखधारी, गहरे सागर की गहराई, सागर का वर्ण, पूज्य बट पत्र के आश्चर्य मय देव, बीता कल, आज,

आनेवाला कल, आनेवाला मास, वर्ष, र्शकरा, गन्ना का मधुर रस ! सुगंधित जूड़े वाली पार्वती के दूल्हा को धारण करने वाले, आकाश के प्रभु, सूर्य एवं चंद्र की आभा को धारण करने वाले, उत्तरी वेंकटम पर्वत की चोटी, राक्षसी के विषैले स्तन पान करने वाले शिशु, तिरूकोईलूर के तंग जगह में प्रकट होने वाले राजकुमार, वैदिक ऋषियों के हृदयवासी, इह लोक से परलोक यात्रा के साथी, भयानक चक्र के धारक, रत्न के तेजोमय पर्वत, तिरूनिन्रावुर के नाथ, पूर्ण संतुष्ट ब्रह्मा के पिता, देवों के नाथ, त्रिमूर्ति में प्रथम, आभामय, धरा, आकाश, शिव को धारण करने वाले, नरसिंह, घोड़ा के बध करने वाले, जल की घुलनशीलता, दुष्ट रावण पर विष की तरह काम करने वाले मधुर अमृत, चाहने वालों के सिर पर वास करने वाले, मधुर धुन पन्न, पन्न धुन का माधुर्य, दूध का घी, वैकुंठ के पूज्य स्वरूप, आभामय स्वरूप, यज्ञ, दीपक के प्रकाश, धरा, पर्वत, गहरा जल, उदयवान चंद, वैदिक ऋषियों की प्यारी आंखें ! अपने संतुष्टी भर हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। विश्वास के साथ आळवार संत प्रभु को कहते हैं कि हाथ में शंख धारण करने वाले, हे कृष्ण ! आप भी इन गीतों के ज्ञान से लाभान्वित हो सकते हैं। पासुर **1647**।

आठवें शतक का पहला से दसवां दशक **8ः01** से **8ः10** तक यानी पासुर **1648** से **1747** तक ः **10** दशकों के **100** पासुरों के इस संपूर्ण शतक में तिरूकण्णपुरम दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। परकाल नायकी की माँ अपनी बेटी पर असमंजस में है कि यह कण्णपुरम के प्रभु को देख सकी है या नहीं ? निरंतर प्रभु का नाम लेते रहती है। कण्णपुर के प्रभु से निवेदन करते हुए अपनी बेटी की स्थिति बताती है। उसके कोमल उभरे उरोज पील पड़ गये हैं एवं वह अपने नष्ट सौंदर्य के लिये चिन्तित है।वह कहती है 'हाय ! पर्वत के समान चार भुजाओं वाले कौन होगा ऐसा ? , आइए'। 'क्या धर्नुधर प्रभु ने युद्ध में महान राजाओं का नाश नहीं किया ? ' 'ओप्पिला अप्पा प्रभु ! आपके समतुल्य कोई नहीं है।' 'अपने ऊंचे रत्न मुकुट के ऊपर आप तुलसी माला पहनते हैं।' 'देखो आपके मूंगावत होंठ पूर्णतया अद्वितीय है।' 'आपके चरण सुवर्ण कमल के हैं एवं हाथ कमल जैसे सुनहले हैं।' 'हाय ! आपके विस्तृत वक्षस्थल पर कमल लक्ष्मी नहीं रहती है क्या ?' 'आपके हजार नाम हैं एवं हजार विशेषतायें हैं।

पूर्व के कांचीपुरम के अष्टभुज प्रभु के दर्शन का स्मरण कर कहती है 'आप सुवर्ण के मकराकृत कुण्डल पहनते हैं और आपकी आठ शक्तिशाली भुजायें हैं।' 'अगर हम आपके आलिंगन को प्राप्त कर सके तो हमें नारी जन्म प्राप्त करने का सुफल मिल

गया।' पूछती है 'याद है आपको पहले देखा है कौन सी जगह ?' कन्नपुरम में जो आपके देखते हैं आपके ही हो जाते हैं। दूसरे दशक में माँ बेटी की स्थिति पर प्रभु से प्रभु के अनुचित कार्यकलापों की शिकायत करती है। मेरी बेटी कन्नपुरम की ओर देखकर नृत्य करते जल के पास करबद्ध मुद्रा में थी। क्या यह अपराध है ? क्या उसके कंगन ले लेना उचित है ? चांदनी भरी छत पर खड़ा होकर क्षितिज का सर्वे क्षण कर खिले हुये मन से उधर दिखाते हुए बोली 'देखो कन्नपुरम।' क्या अपने आत्मघाती कदम से वह पीछे मुड़ेगी ? अच्छा, अच्छा, नरैयूर प्रभु ने उसे रास्ता दिखाया है। प्रवाहित जल वाले वेंकटम एवं स्थगित जलवाले निर्मलै के बारें में बड़बड़ा रही थी।मेय्यम के बारे में पूछी तथा संपन्न कन्नपुरम के बारे में बताने लगी। कोई भी दिन ऐसा नहीं है जो उपवास का न हो एवं कोई रात ऐसी नहीं है जो जागरण का न हो। प्रभु के निवास कन्नपुरम को नमस्कार करते रहती है। उसका सुनहला रंग उसके गाल एवं उरोज से उड़ जाते हैं जब वह सुनती है कि कैसे कृष्ण ने मक्खन चुराया एवं दंडित हुए। 'उत्तर के पर्वतीय आवास को छोड़कर प्रभु के साथ खेलने हम आज कन्नपुरम में आ गये हैं। इसमें वेंकटम का संकेत है। श्रीरंगम उसका चहेता गंतव्य स्थल है जो उसके कृष्ण का मूल स्थान है जिन्होंने केशिन घोड़ा का जबड़ा चीर अपने आप में प्रसन्न हुए थे। आपके चरणों की पूजा कर स्वयं का उत्थान करते भक्तों को देख वह भी कन्नपुरम पूजा अर्पित करने गयी। क्या यह आपके लिये उचित है कि आपने हमारे बेटी का मनमाने ढंग से सौंदर्य प्रसाधन चुरा लिया ? कंघा शायद ही उसके बाल को एकत्र कर पाते हैं तथा उसकी लटों में शायद ही गांठ लग पाती है। उसके कोई भी गुण स्थिर चित्त के द्योत्तक नहीं है। हाय ! मैं क्या करूं ? उसने अमृतमय बागों से घिरे कन्नपुरम में तथा अन्य जगहों में पूजा अर्पित की। हाय ! अपनी संतान को अब अपनी नहीं कह सकती।

तीसरे दशक में नायकी विछोह की वेदना से ग्रस्त दिखती है और तिरूकण्णपुरम की श्रीसंपन्नता तथा प्राकृतिक सुषमा एवं ऊच्च वैदिक परंपरा का उदाहरण देते हुए प्रभु के पास अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन खो जाने की बात दुहराती है। तिरूकन्नपुरम के प्रभु तुलसी की माला पहनते हैं एवं शक्तिशाली भुजाओं से पर्वत उठाने वाले हैं। आपने सात वृषभों का शमन किया तथा प्रसन्नता पूर्वक चॉद को शाप से विमुक्त किया। प्रभु धारीदार शेष पर शयन करते हैं तथा मदमत्त हाथी को शांत कर उसके दांत उखाड़ने वाले हैं। जब यशोदा ने आपको ऊखल से बांध दिया आप सरकते हुए मरूदु वृक्षों तक जाकर उन्हें नष्ट कर दिया। मॉ के हाथ में डंडे को देख आप भय से सिकुड़ गये

तथा मुंह के दही को पोंछते हुए समूचे मुखमंडल पर फैला लिये। आप ही तीक्ष्ण पंजों से महान हिरण्य की छाती चीरने वाले एवं आठों दिशायें, दोनों ज्याति पुंज, विस्तृत आकाश तथा अन्य सभी को निगल कर फिर उन्हें बाहर करने वाले हैं। आप हजार नाम वाले हैं तथा हजार फन वाले शेष पर नाभि में लाल कमल लिये शयन करते हैं। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन आपके पास खो दिये।

चौथे दशक में नायकी भौंरा को प्रभु के पास भेजकर उसे प्रभु की तुलसी की माला का रज लाकर देने को कहती है। हे भौंरा ! अब हमारे तिरूकण्णपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप देवों के देव हैं, वक्षस्थल पर श्री धारण किये हैं, समस्त लोकों से पूजित हैं। वैदिक उपवीत धारण करते हैं, प्रलय में प्रकट होने वाले सुन्दर मछली हैं, समुद्र के कच्छप हैं, तथा पुराकाल के नरसिंह हैं। आप धरा को परिवृत्त किये हुए गहरे समुद्र में विशाल कच्छप के रूप में प्रकट होने वाले प्रभु हैं। दायें हाथ में तेजोमय चक्र पकड़े हैं। आपने धरा को ऊपर उठाया। वामन, कल्कि, मधुसूदन, माधव एवं राजतिलक वाले दशरथनन्दन राम हैं। नंदगोप के पुत्र एवं मधुर नप्पिनाय के साथी हैं। हे भौंरा ! नीले कुमुद एवं जलाशयों के फूलों पर मत मंड़राओ ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो।

पंचवे दशक में विछोह की वेदना से नायकी पूर्णतया ग्रस्त दिखती है। दिन बीता और सायंकाल का भी अंत हो गया तथा रात्रि प्रवेश कर चुकी है। अपना कंगन लौटने की प्रतीक्षा में है। चांदनी की शीतलता एवं शीतल मंद वायु सुखकर न होकर कष्टदायक हैं। रात्रि अंतहीन अवधि की हो गयी है। हमारा खोया खोया सा मन भी प्रभु के साथ चला गया है। वक्षस्थल की तुलसी की चाह में शंख सा वर्ण वाले बलराम के छोटे भाई के पास मेरा मन चला गया एवं कभी नहीं लौटा। कोई संगी नहीं है। सारा नगर एवं साथ में संसार सोता है। हाय ! सूर्य भी अपने को आकाश में भुला चुका है उसका रथ खो गया है। दिशायें लुप्त हो गयी हैं। हाय ! समझ में नहीं आता मैं क्या करूं ? कृष्ण की निष्ठुरता के सिवा हमारे हाथ पर कुछ टिकता नहीं, मेरे कंगन भी नहीं। क्या राक्षसी का प्राण पीने वाले को हम किशोरियों के जीवन के लिये कोई दया है क्या ? आपने सात वृक्षों को बेध दिया एवं लंका को जला दिया। सखियों को संबोधित करते हुये कहती है ः बहनों ! यही उनकी हमलोगों पर कृपा है ! सूर्य सागर में डूब रहा है। हाय ! सुन्दर धनुष से अग्नि बाण छोड़ने वाले राजकुमार नहीं आये। मैं नहीं जानती युग समान लंबी रात कैसे कटेगी ! सागर का मंथन करने वाले ने सागर पर सेतु बनाकर राक्षसराज के पीड़ित हृदय पर अग्नि बाणों की वर्षा कर दी। हाय ! आप

नहीं आये। पता नहीं आगे क्या होगा ? जब सारा संसार धर्म विहीन हो गया एवं संन्यासी पिता गुस्सा हो गये तब हमारे राजकुमार ने फरसा से महान राजाओं का अंत कर दिया। तिरूकन्नपुरम के प्रभु ने स्वप्न में जो हमारे हृदय को आह्लादित किया वह सदा कौंधते रहता है।

छठे दशक में नायकी आशान्वित हो गयी है और उसे प्रभु का पता चल गया है। विश्वास पूर्वक कण्णपुरम के प्रभु की अर्चना अर्पित करने को उद्धत हो गयी है। मुझे प्रगति का मार्ग पता है। अपने धनुष से अग्नि वर्षाते बाणों की बौछार कर युद्धक्षेत्र में साहसी राक्षसों को अंत करने वाले मंगलमय प्रभु की एक सुन्दर योजना है। श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ हर्ष पूर्वक सदा के लिये कन्नपुरम में बसने के लिये आ गये हैं। चलें आपकी पूजा करें। शक्तिशाली माली एवं अनेक भयानक राक्षसों के सिर धराशायी कर दिये। आपने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की तथा ताटका राक्षसी का नाश किया। अपने बाणों से भीषण आग वर्षाकर सागर को दो भाग में बांट दिया। लंका में सीधे प्रवेश करने के लिये बन्दरों से समुद्र के ऊपर सेतु निर्माण कराया। लकड़ी के कुन्दे फेंकने से पानी छलक कर ऊंचा चला गया तब उसके ऊपर पत्थर डालकर सेतु बनाया। समुद्र से घिरे सुन्दर शहर लंका में महान धनुष के साथ प्रवेश कर बलशाली रावण का बध किया। आपने लंका का राज्य छोटे भाई विभीषण को दे दिया। आपने बाणासुर पर कृपा की, नप्पिनाय के साथ व्याह किया, महज घूंसे की मार से हाथी को चकनाचूर कर दिया। ग्राह के विरूद्ध गजेन्द्र की रक्षा की। देवों के देव, पर्वत उठाकर वर्षा बन्द करने वाले आश्चर्य मय देव हैं। हे मन ! पुरा काल के कच्छप नरसिंह हंस स्वरूप वाले प्रभु वैदिक अग्नि यज्ञ एवं चारों युग के प्रभु हैं। दलित मन ! चिंता न करो। कर्म हमें कोई भी क्षति नहीं पहुंचा सकेंगे।

सातवें एवं आठवें दशक में कण्णपुरम में प्रचलित पूजा पद्धति एवं प्रभु के चर्तुदिक प्राकृतिक तथा आर्थिक संपन्नता का चित्र प्रस्तुत है। सात वृषभों का नाश कर पर्वत की तरह उरोज वाली गोप किशोरी नप्पिनाय का आलिंगन करने वाले प्रभु कण्णपुरम में रहते हैं जहां सरोवरों के हंस युवतियों की आकर्षक चाल सीखते हैं। तूफान से अचेत होती गायों की रक्षा हेतु पर्वत उठाने वाले प्रभु पहाड़ों से घिरे कन्नपुरम में रहते हैं जहां कृषक के हिसुआ से उकसाये हुए खरगोश अपना मांद से बाहर एवं खेतों की कयल मछलियां आनंद में नाचते हैं। मक्खन चुराने के लिये कोसे एवं हँसे जाने वाले संपूर्ण सत्व संपन्न युद्ध कर लंका को धूल धूसरित करने वाले एवं धरा तथा आकाश को दो कदमों में मापने वाले श्री को धारण किये मेघ के वर्ण वाले प्रभु स्थायी रूप से

कन्नपुरम में रहते हैं जहां सर्वत्र प्रस्फुटित कमल में मधुमक्खी पन्न धुन का गीत गाते हैं। सूर्य चंद्र पर्वत दिशा धरा एवं अग्नि को बनाने एवं संचालित करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां भक्तगण वेदों एवं उपनिषदों के पाठ करने हेतु जमा होते हैं। पैर से पृथ्वी को मापने वाले अपने पर्वतनुमा वक्षस्थल पर कमल समान लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां पौधों के प्रत्यारोपण हेतु जोते हुए खेत से कमल का सुगंध आता है। मणि के वर्ण वाले प्रयोग मुद्रा में चक्र धारण किये हुए पार्श्व में श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ खड़े प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां धन संपत्ति ढ़ोने वाले नाव किनारों पर भीड़ किये रहते हैं। आकाश तक ऊंचा जाकर प्रलय जल ने धरा को जल मग्न कर दिया। मत्स्य के रूप में प्रभु ने जगत की रक्षा की। आप कन्नपुरम में हैं जो उपजाऊ खेतों एवं घने जंगलों से घिरा है। अमृत मंथन के लिये मंदराचल को धंसने से बचाने के लिये कच्छप बनकर इसे आपने अपनी पीठ पर संभाला। मैं जानता हूँआप कन्नपुरम में हैं जो आक्रामक सागर के किनारे है। एक बार जब पानी ऊपर उठकर धरा को डूबो दिया तब प्रभु ने धरा को उठाने भर मजबूत एवं घुमावदार दांतों के साथ वराह के रूप में अवतार लिया। भयानक स्वरूप में साथ मिले हुए सिंह एवं आदमी बनकर आप आये एवं आपके क्रोध को देखकर देवगन भी डर गये। सम्मानीय वैदिक बटु के स्वरूप में शाश्वत प्रभु वामन बन कर मावली के पास गये एवं उससे धरा तथा सागर ले लिया। सर्वशक्तिमान प्रभु तीक्ष्ण फरसा फहराते हुए धरा के इक्कीस राजाओं का अंत कर दिया। नम्र गुणों के नहीं झुकने वाले राजा के स्वरूप वाले प्रभु ने संरक्षित लंका पर क्रोधपूर्वक चढ़ाई कर घमासान युद्ध में राक्षसों को भगा दिया। एक कान में कुंडल तथा दूसरे में हल धारण किये हुए प्रभु ने धराधाम से महान राजाओं को स्वर्ग भेज दिया। भू देवी को भार से मुक्त करने के लिये प्रभु ने अंधेरी कृष्णाष्टमी की रात को जन्म लिया तथा भारत युद्ध करा के आततायी राजाओं का अंत किया। मैं जानता हूँआप कन्नपुरम में हैं जहां हर घर में वैदिक ऋषिगन तीन अग्नि प्रज्वलित करते हैं। यहां एक तरफ सागर मोती जमा करता है तो दूसरी ओर आपकी सेवा में हवा धान की बालियों के चॅवर डुलाते हैं।आप मत्स्य कछुआ वराह नरसिंह वामन परशुराम बलराम कोदंडराम एवं कृष्ण बनकर आये तथा कल्कि रूप में भी आयेंगे।

नौवें दशक में भक्त की उपलब्धि एवं आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है। आप हमारे प्रभु, नाथ, एवं ब्रह्माण्ड के नाथ हैं। आप हमारे हृदय में भी रहते हैं। आपको पाकर हमारी आत्मा का उत्कर्ष हुआ है। हमारे नाथ, अमृत, एवं सागर में सोने वाले प्रभु हैं।

बन्दरों की सेना एकत्र कर आपने समुद्र की खाड़ी पर सेतु का निर्माण किया। आपके भक्त बनने के बाद क्या दूसरे के सामने हम झुक सकेंगे ? ज्योर्तिमय पारलौकिक प्रभु वेद के रूप में हैं। विश्वास के साथ आळवार संत अन्य दिव्यदेश का स्मरण करते हैं। आप मधुर फल हैं जो तक्कान कडिगै पर्वत पर यानी शोलंगुर में योगनरसिंह रूप में रहते हैं। प्रभु आये और हमारे हृदय में बस गये। अब आप बाहर निकलना जानते नहीं। यह क्या हमारा सौभाग्य नहीं है ? उप्जाऊ बागों से घिरे तिरूकुडन्दै में आप आनंद से सोये हैं। आपको कभी न भूलने वाली कृपा हमें प्राप्त है। मैं कठोर घोर नरक में था। आप आये और बोले 'डरो नहीं' और हमें अपनी सेवा में ले लिया। हे मन ! एक क्षण भी कभी बादल छूते महलों से घिरे वयलालि के प्रभु को मत भूलो। विद्वानों के प्रति बिना कोई अनुराग के अज्ञान के महान समुद्र में मेरा जन्म हुआ। पुनः दुबारे जन्म होने पर वयलाली के प्रभु की कृपा से मैं पुनर्जन्म से मुक्त हो गया हूँ। शीतल सुगंधित कमल वाले पश्चिमी तलैच्चंग नाण्मदियम में रहते हैं जहां देवगन आपकी प्रशस्ति उगते सूर्य एवं चांद की तरह करते हैं। सबों को मैं यहां कैसे एकसाथ अपने हृदय की संतुष्टि भर देखूंगा ?

दसवें दशक में आळवार संत अपनी आंतरिक प्रसन्नता को प्रकट करते हैं तथा यह प्रमाणित करते हैं कि हृदय में प्रभु की उपस्थिति के कारण ही हम यह गीत गाने में सक्षम हुये हैं। आपमें स्थित रह कर बहुत तरह से विजयी होने का अनुभव करते हुए हमारा हृदय आपकी सेवा अकेले करना चाहता है। विनती है, बतायें हमारे लिये क्या सोंचा है आपने ? दूसरे देव जो हमारे सामने प्रकट होते हैं मेरा हृदय थोड़ा सा भी उनपर नहीं टिकता। मैं केवल आपको चाहता हूँ। जो दूसरे देवों के पास जाते हैं हमें उनसे कोई सम्बंध नहीं है। अष्टाक्षर मंत्र के सभी व्याखानों को सुनने से हमने आपके भक्तों की सेवा सीखी है। राक्षसी के स्तन के भयानक विष पीने में आनंदित होने वाले प्रभु ! हमारा हृदय आप से प्रफुल्लित हो उठा है। हमें माता पिता तथा संबंधियों से कोई आकर्षण नहीं है। न तो हमारे कोई मित्र हैं। आपके पास अकेला आया हूँ। अतः अवश्य आप हमें अपनाने की कृपा करें। भक्तगन सदा आपके चरणाविन्द की प्रशस्ति गाते हैं तथा ध्यान करते हैं। जब यमदूत उनको ले जाने के लिये पास आते हैं तो डर से नमस्कार कर लौट जाते हैं। क्या आप उनके चैतन्य के अभिभावक नहीं हैं ? मैं सोंच रहा था कि कैसे आपने वामन बनकर धरा को माप दिया तथा हथियार वाले हिरण्य के आभूषित छाती को चीर दिया। ओह ! इस गुणहीन पापी का पाप तो कहीं दिखता भी नहीं। पहले आपने मुझे अपना सेवक बनाया एवं फलस्वरूप हमें सभी कर्मो से विमुक्त कर दिया। तब गीत द्वारा आपने अपनी उपस्थिति हमारे हृदय में दिखायी।

ºº

दिव्य देश **73** । शोलंगुर या तक्कान कडिगै

1 । स्थान ः यह स्थान आरक्कोणम स्टेशन से **30** कि मी पर अवस्थित है। शोलंगुर रेलवे स्टेशन से मंदिर **14** कि मी की दूरी पर है। यह चित्तूर से **30** कि मी पर अच्छी सड़क से जुड़ा हुआ है। चेन्नै से लोकल ट्रेन अरक्कोणम तक सुविधापूर्वक उपलब्ध है तथा अरक्कोणम से सड़क मार्ग से यात्रा की जा सकती है।

2 । विग्रह स्वरूप ः यहां दो पर्वत हैं एक को पेरिया मलै तथा दूसरे को चिन्ना मलै कहते हैं। पेरिया मलै **1305** वाली सीढ़ियों से पहुंचा जाता है तथा यहां योगनरसिंह पूर्वाभिमुख बैठे अति शांतमुद्रा में हैं। तायर अमृतावल्ली की अलग सन्निधि है जिनके उत्सव विग्रह को सुधावल्ली कहा जाता है। आपकी उत्सवमूर्ति शोलंगुर शहर के आदिकेशव मंदिर में विराजमान रहती हैं तथा भक्तवत्सल पेरूमाल कही जाती है। आदिकेशव मंदिर में आंडाल, आलवार गोष्ठी, तथा आचार्य की सन्निधियां हैं। आपके पास छोटी पहाड़ी पर आंजनेय स्वामी चतुर्भुज स्वरूप में शंख चक्र धारण किये योग मुद्रा में ध्यानस्थ हैं तथा पश्चिमाभिमुख हैं। विमान को सिंहकोष्टाकृति तथा हेमकोटि विमान कहते हैं। तीर्थ को अमृत पुष्करणी तथा तकनकूळम एवं पांडव तीर्थ कहते हैं। यहां का पुराण विष्णु पुराण एवं पद्म पुराण है।

3 । महिमा ः तिरूमंगै आळवार ने आपको 'अक्कारकणि' यानी अमृत फल की तरह शांत एवं मधुर कहा है। इस दिव्यदेश को घटिकाचलम भी कहते हैं। यहां एक कडिगै यानी **24** मिनट तक की आराधना से मुक्ति मिलती है। विश्वामित्र को यहां एक कडिगै की अर्चना से सिद्धि मिली थी। यहां कातिक माह में उत्सव मनाया जाता है। इन्द्रद्युम्न राजा देवों के पक्ष से असुरों से युद्ध रत थे। नरसिंह भगवान ने आंजनेय स्वामी को अपना आयुध देकर युद्ध के लिये भेजा था। तब से आंजनेय स्वामी शंखचक्र के साथ यहां विराजमान हैं। प्रत्येक शुक्रवार एवं नरसिंह जयंती को मूलावर पेरूमाल का तिरूमंजन होता है। तायर वरप्रसादी हैं तथा कुबेर का खोया हुआ वैभव तायर की कृपा से वापस मिला था।

एरूंबी गांव के एक अनन्य भक्त को एरूंबी अप्पा कहा गया तथा उन्होंने आपकी प्रशस्ति में अमृतपलवल्ली शतकम लिखा। कांचीपुरम वरदराज पेरूमाल के अनन्य शिष्य दोदाचारियर इसी स्थान के निवासी रहे हैं। आपकी अनन्य भक्तिपरवशताबस ब्रह्मोत्सवं में गरूड़ सवारी के दिन गोपुर से पार करते समय वरदराज पेरूमाल का छत्र शोलंगुर की तरफ झुका दिया जाता है। आपने देवराज पंचकम की रचना की।

ब्रह्मतीर्थ के पास गरूड़ पर सवार वरदराज की मूर्ति दर्शनीय है।
4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1731 1736**, एवं शिरिय तिरूमडल **2673**।पेयआळवार मुन्राम तिरूवन्दादि **2342**।

०००

दिव्य देश **74**। तलैच्च्वंग नाण्मदियम या तलैशंगुकाडु
1।स्थान ः तमिलनाडु में मायावरम से **28** कि मी पर स्थित है। शिरकाळी से **25** कि मी पर यह स्थान अवस्थित है। चोल राज की राजधानी प्राचीन पुंपहार से **7** कि मी पर स्थित है।
2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं तथा नान मदिया पेरूमाल या वन सुदार पेरूमाल कहे जाते हैं। पेरूमाल का बायां हाथ तिरूमला के वेंकटेश्वर भगवान जैसा कटिप्रदेश पर टिका है। उत्सव मूर्ति व्योम ज्योति पिरान या व्योम सुदार पिरान कहते हैं। आप लोकनाथन भी कहे जाते हैं। तायर तलैच्च्वंग नाच्चियार तथा उत्सवमूर्ति सेंकनमल बल्ली कही जाती हैं। तायर एवं पेरूमाल एक ही गर्भगृह में विराजमान हैं। आंडाल का विग्रह अलौकिक है एवं अवश्य दर्शनीय है। पुष्करणी को चंद्र पुष्करणी तथा विमान को चंद्र विमान कहते हैं। स्थल पुराण ब्रह्माण्ड पुराण है।
3। महिमा ः एक समय में यह घना जंगल था जिसे तमिल में 'काडु' कहते हैं। कावेरीपूमपत्तिनम से **7** कि मी पर एक समुद्र तटीय नगर है जहां का शंख पहले बहुत प्रसिद्ध था। इसीलिये इस दिव्यदेश को शंगुकाडु भी कहते हैं। तमिल में चॉद को मादि कहते हैं। दक्षप्रजापति के क्षय के शाप से चॉद दुखी होकर झुके हुए खड़े थे। झुकना को तमिल में नानी कहते हैं। भगवान उदास एवं झुके हुए चॉद को शाप से मुक्त करने के लिये प्रकट हुए इसीलिये नान मदियम कहे गये। एक देवता देवा वृन्दांगार के समक्ष प्रभु ने शंख को तकिया के रूप में रखे हुए दर्शन दिया था इसीलिये आप तलैचंगु भी कहे जाते हैं। पेरूमाल के हाथ का शंख अलौकिक सौंदर्य से भरपूर है। इस स्थल का उल्लेख शिल्पादिकारम में भी मिलता है। श्री सुन्दर रामानुजन ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया तथा तायर की पृथक सन्निधि का भी निर्माण किया।
4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1736**, तथा पेरिया तिरूमडल **2674**।

०००

नौंवे शतक का पहला दशक **9ः0 1** यानी पासुर **1748** से **1757** तक ः **10** पासुरों के

इस दशक में तिरूकण्णंगुडी दिव्य देश के प्रभु की महिमा गायी हुई है। गहरे विस्तृत सागर में प्रभु कुंडली मारे श्वेत शेष पर सोये हैं। शुद्ध हृदय वाले वैदिक ऋषिगन प्रभु के खड़े स्वरूप की पूजा पावन शास्त्रों छः आगम, पांच प्रसन, चार वेद के मंत्रोच्चार से करते हैं तथा वे तिरूक्कणंगुडी में अग्नि कुंड में तीन होम देते हैं। आप गजेन्द्र उद्धारक हैं। महाप्रलय में धरा आकाश पर्वत सभी डूब गये। मत्स्य के रूप में प्रकट होकर प्रभु ने सबों को अपने पीठ पर संभाल लिया तथा आनंद से सागर को अपने पेट पर रख लिया। पांडव के रथवाहक मेरे प्रभु पुराकाल में अंगारे सी आंखें, चमकते श्वेत दांत, विजयी, शक्तिवान, पर्वत समान सुन्दर विशाल वराह के रूप में भू देवी का कष्ट दूर करने के लिये प्रकट हुए। माबली के महान यज्ञ में वामन रूप में पधारकर तीन पग जमीन स्वीकारते हुए हमारे प्रभु ने अपने स्वरूप का विस्तार कर दो ही पगो में सातों लोक तथा आठों दिशाओं को माप लिया। धरा पर कुद्ध फरसा चलाते हुए प्रभु ने इक्कीस राजाओं के मुकुट वाले सिर काट कर जमीन पर लुघड़ा दिया और तब उनके खून की नदी में नहाया। धनुष से सूर्य की किरणों जैसा बाणों से देवताओं पर कहर ढ़ाने वाला सागर से घिरे लंका के राजा रावण के भारी मस्तकों को हिलते वृक्षों से नारियल के फल की तरह गिरा दिया। सांप चिह्न के ध्वज वाले दुर्योधन ने अपनी सभा में श्रीकृष्ण प्रभु को बंधन में डालना चाहा तो आपने आकाश छेदते हुए आठों दिशाओं में अपने स्वरूप का विस्तार कर दिया।

ºº

दिव्य देश **75**। तिरूकण्णंगुडी ः

1। स्थान ः यह स्थान नागपट्टिनम के पास **9** कि मी पर स्थित है। तिरूवरूर नागपट्टिनम रेल मार्ग पर कीळ वेलूर स्टेशन से **2** कि मी पर है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर सुन्दर आकर्षक स्वरूप में खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। साथ में भूदेवी एवं श्रीदेवी भी हैं। आपको लोकनाथन नाम से जाना जाता है। दायें तरफ गौतम एवं उपरिशर्वसु मुनि की मूर्ति है तथा बायी ओर भृगु एवं ब्रह्मा की मूर्ति है। उत्सव मूर्ति को दामोदर नारायणन कहते हैं तथा 'संतोतीथम' भी कहते हैं। दायां हाथ अभय मुद्रा में है एवं बायां हाथ कमर पर है। उत्सव मूर्ति राजा की तरह 'सेंगोल' यानी राजदंड धारण करते हैं। तायर को लोकनायकी कहते हैं तथा आपकी उत्सव मूर्ति अरविंद नायकी कही जाती हैं। यहां का विमान उत्पलवडक विमान कहा जाता है। तीर्थ श्रावण पुष्करणी तथा नित्य पुष्करणी है। स्थल वृक्ष मगिळम या वकुला है। स्थल पुराण गरूड़ पुराण एवं नारद पुराण है।

3।महिमा ः पांच कृष्ण क्षेत्र में से यह एक है तथा अन्य चार हैं ः तिरूकन्नमंगै, तिरूकोविलूर, तिरूकन्नपुरम, तिरूकपिस्थलम। यह कृष्णारण्य क्षेत्र है और इसे पंचारण्य क्षेत्र भी कहा जाता है ः अभरनदरै यानी शयन आनंदनारायण, अलत्तूर यानी वरद नारायण, तेवूर यानी देवनारायण, किवाळूर यानी यादव नारायण।
तिरूमंगै आळवार से संबधित यहां तीन बातें प्रसिद्ध हैं। **1**। 'काय मकिळम' यानी छोटा फूल का पेंड़ जो कभी नहीं सूखता, या 'उरगथा पुळी' यानी कभी नहीं मुरझाने वाली पत्तियों का इमली वृक्ष। **2** 'ओरा किनारू' यानी पानी के बिना कुंआ। **3** 'थोरा वजक्कु' यानी झगड़ा जिसका कभी अंत नहीं होता। तिरूमंगै आळवार के अन्य नाम हैं तिरूमंगै मन्नन, कलियन, कलकन्रि आदि। आप आळवारों की सूची में सबसे अंत में आते हैं और भगवान के धनुष के अवतार माने जाते हैं। अवतार स्थल शिरकाळी के पास तिरूकुरैयालूर है। एक बार आप श्रीरंगम के मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये कहीं से एक सोने की मूर्ति लूटकर लिये जा रहे थे। रास्ते में आप तिरूकंगुडि पहंचे और पास के खेत में मूर्ति छिपाकर इमली के पेड़ के नीचे सो गये तथा पेड़ को रखवाली की जिम्मेदारी दे दी। जब किसान खेत जोतने आया तब इमली के पेड़ ने पत्तियां गिराकर आळवार संत को जगा दिया। आपने रहस्य खुलने के डर से तथा सोने की मूर्ति हाथ से निकल जाने की आशंका से किसान से झगड़ा कर बैठे कि वह खेत आपका है। गांव वालों के जमा होने पर आपने प्रमाण में कागजात प्रस्तुत करने के लिये एक दिन का समय मांग लिया और फिर छोटे फूल के पेड़ के नीचे सो गये। आपको प्यास लगी । पास के कुंअें पर से पानी मांगने पर महिला ने मना कर दिया कि आप खेत की तरह कुंआ पर भी अपना अधिकार दिखाओगे। आपने गुस्से में शाप दे दिया और कुंआ सूख गया। भूखे एवं प्यासे आप इमली वृक्ष के नीचे सो गये। बूढ़े ब्राह्ण के रूप में भगवान आये तथा आपको भोजन कराया। रात में मूर्ति ले आप वहां से चले गये और वापस नहीं लौटे। जाते समय आपने इमली वृक्ष को सदा हरा भरा तथा जागते रहने का वरदान दिया। इसके फलस्वरूप इस वृक्ष की पत्तियां कभी मुरझाती नहीं हैं। ऊपर की तीन बातों की यही कथा है।
एक और रोचक कथा है कि वशिष्ठ जी यहां अपने तपस्या बल से मक्खन का कृष्ण बनाकर पूजते थे जो कभी पिघलता नहीं था। भगवान कृष्ण बालक रूप में आये और उस मूर्ति को उठाकर खा गये तथा भाग चले। पीछा किये जाने पर अन्य ऋषियों से छोटा फूल के पेड़ के नीचे पकड़े गये। वहां आपको बांधकर रखा गया इसी लिये इस दिव्य देश को तिरूकन्नंगुडी कहते हैं यानी जहां कृष्ण रोके गये। इस पेड़ की विशेषता

है कि यह न सूखता है और न नष्ट होता है।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1748** से **1757** ।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

नौंवे शतक का दूसरा दशक **9ः0 2** यानी पासुर **1758** से **1767** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में तिरूनागै या नागपट्टिनम दिव्य देश के प्रभु की महिमा परकाल नायकी की प्रसन्नता की मुद्रा में गायी हुई है जो प्रभु के सुन्दर स्वरूप के दर्शन के पश्चात वह अपनी सखियों से वर्णन कर सुनाती है। बहन ! प्रभु का सुनहला मुखमंडल है। पन्ने के रंग का वक्षस्थल का आभूषण विजली चमकने का दृश्य उपस्थित करता है। क्या वे साम का गान करने वाले कोई वैदिक ऋषि हैं ? या वे धरा के देव हैं ? आपने हमारे ऊपर दृष्टि दौड़ायी तथा हमारी पतली कमर को देखते हुए हमारे उभरे उरोजों को देखा। इस तरह से मुझे देखने से मैंने अपनी माँ के डरे हुए चेहरे को देखा। अहा ! क्या सुन्दर थे वे ! क्या वे युवकों में से एक थे जो नीले जल कुमुद का सुगंध विखेरते जलाशयों से घिरे कुडन्दै में विश्राम करते हैं ? बहन ! क्या वे बांस के झुरमुट वाले पहाड़ों से घिरे मेय्यम के प्रभु हमारे दुलहा थे जिन्होंने धरा मापा और अन्य अलौकिक काम किये ? मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला पहने एवं हाथों में चक्र शंख धारण किये विश्वासी प्रभु हमारे घर आये। क्या गोपकिशोर प्रभु उरैयूर एवं मदुरै के मंदिरों में रहते हैं ? क्या कमल खिलाने के लिये उगने वाले आप उदार सूर्य थे ? कितना आश्चर्य है पहले कभी नहीं देखा। हमारे हृदय ने शीघ्र पूजा की। आंखें कमल की कली जैसी, हाथ भी कमल के समान। आपका वदन वर्षा के घने मेघ की तरह। चांद से दुलारे गये, मलीरूमसलै पर्वत के दुलहा, आये और हमारे हृदय एवं आंखों में बस गये, कभी नहीं जायेंगे। क्या आप निर्मलै के प्रभु थे ? मुझे नहीं याद। आप सुन्दर पंखों वाले पक्षी पर चढ़ कर आये। आओ, देखो। आप आकाश को छूने वाले सुनहले ऊंचे पर्वत पर घने मेघ के समान हैं। क्या आप गोप शिशु थे जो एक छण में आठों दिशायें, समुद्र, सातों लोक को निगल कर बट पत्र पर चैन से सो गये ? इस रहस्य को मैं नहीं समझ सकती।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **76** । तिरूनागै या नागपट्टिनम

1 । स्थान ः एक समय नागपट्टिनम एक महत्वपूर्ण पोर्ट हुआ करता था। मंदिर स्टेशन से **2** कि मी पर है।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूळावर पूर्वाभिमुख वरद हस्त तथा गदा लिये खड़े हैं तथा नीलमेघ पेरूमल के नाम से जाने जाते हैं। उत्सवार सौंदर्यराजा के नाम से प्रसिद्ध हैं। तायर

सौंदर्यवल्ली कही जाती हैं। गरूड़ यहां बैठे मुद्रा में हैं। यहां अष्टभुजी नरसिंह हैं जो शिष्ट परिपालन एवं दुष्ट निग्रहम दोनों काम करते हैं। यहां का विमान सौंदर्य विमान कहा जाता है तथा पांच कलश के साथ है। तीर्थ को शर तीर्थ कहते हैं। स्थल वृक्ष आम्र यानी 'मळम' है। स्थल पुराण ब्रह्माण्ड पुराण है।

3। महिमा ः यहां भगवान का दर्शन तीन अवस्थाओं में होता है ः **1**। सोये में रंगनाथ की तरह, **2**। बैठे में गोविन्दराज की तरह, **3**। खड़े में सौंदर्यराजा की तरह। यह ध्रुव की तपस्थली भी है। आदिशेष नागों के राजा को कोई संतान नहीं थी। यहीं प्रार्थ ना करने से पुत्री की प्राप्ति हुई थी। नाग राजा के नाम पर स्थल का नाम नागपट्टिनम हुआ। पार्वती शापवश सौंदर्य खोकर यहीं तपस्या कर पुनः सौंदर्य प्राप्त की थी।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1758** से **1767** तक।

ःःः

दिव्य देश **77**। उरैयूर या निचलापुरी उरैयूर या तिरूकोळी ः

1।स्थान ः यह तिरूची शहर या श्रीरंगम का एक पार्श्ववर्ती हिस्सा जैसा है। इसे नाच्चियार कोईल या उरैयूर या तिरूकोळी भी कहते हैं। स्मरण रहे कि नाच्चियर कोई ल के रूप में विशेष प्रसिद्धि कुंभकोनम के पास के नरैयूर दिव्यदेश की है। श्रीरंगम के टाउन बस से सुगमता से यहां दर्शन को आया जा सकता है।

2।विग्रह स्वरूप ः अभयहस्त प्रभु को 'अळगिया मानवलन' पेरूमाल कहते हैं जो प्रयोग मुद्रा में चक्र धारण कर खड़े हैं तथा उत्तरदिशा को देख रहे हैं। तायर भी उत्ताराभिमुखी होकर पेरूमाल के पार्श्व में बैठी हैं तथा आपकी कोई स्वतंत्र सन्निधि नहीं हैं। तायर को कमलवल्ली नाच्चियार या उरैयार वल्ली या वास लक्ष्मी कहते हैं। पेरूमाल एवं तायर कल्याण यानी विवाह के परिधान धारण किये विराजमान हैं। विमान को कल्याण विमान एवं तीर्थ को कल्याण तीर्थ तथा सूर्य पुष्करणी कहते हैं। स्थल वृक्ष को पुन्नै मळम कहते हैं।

3। महिमा ः भृगु मुनि ने एक बार विष्णु भगवान से अकेले मिलने के लिये निवेदन किया। लक्ष्मी ने मुनि को बताया कि वह अकेली भगवान के पास रहना चाहती है। मुनि ने गुस्सा में लक्ष्मी को सामान्य जीव बनने का शाप दे दिया। शापवश लक्ष्मी कमल के फूल में यहां के तालाब में पधारीं तथा धर्मवर्मा ने लालन पालन किया। बाद में श्रीरंगम से रंगनाथ प्रभु धर्मवर्मा की बेटी से विवाह करने यहां आये तथा धर्मवर्मा की प्रार्थना पर यहां टिक गये। प्रत्येक वर्ष फाल्गुन माह में श्रीरंगम से रंगनाथ पेरूमाल कल्याण उत्सव मनाने के लिये यहां आते हैं। राजा कुलशेखर ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया था।

यह तिरूप्पण आळवार का अवतार स्थल है। कहानी है कि एक 'कोळी' यानी एक मुर्गी ने चोल नरेश के हाथी को परास्त कर भगा दिया था। इसलिये इस स्थान को कोळी तथा राजा को कोळी वेन्डार कहते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः कुलशेखर आळवार पेरूमाल तिरूमोळी **667**। परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1762**।

ඃඃ

नौंवे शतक का तीसरा एवं चौथा दशक **9ः0 3** एवं **9ः04** यानी पासुर **1768** से **1787** तक ः **20** पासुरों के इन दो दशकों में तिरूपुल्लानी दिव्य देश के प्रभु की महिमा परकाल नायकी के वियोग वेदना के माध्यम से चित्रित है। साथ में समुद्र से प्रदत्त रत्न तथा प्रकृति से प्रदत्त बागों एवं तड़ागों आदि का सटीक उल्लेख दिया गया है जो तिरूपुल्लाणि में वर्तमान हैं एवं प्रभु की सेवा के काम आरहे हैं। नायकी कहती है ः हे मन ! उस रास्ते झुको एवं उठो। पापिनी मैं ! अपने आप का नाश नहीं कर सकती। सोने के रंग से भी अच्छे रंग के पत्ते वाले सुगंधित सेरूण्डी की शीतल छाया में प्रभु मेरे साथ आत्मसात हो गये थे और हमारे सौंदर्य प्रसाधन चुराकर हमें छोड़ गये। एक दिन मधुमत्त मधुमक्खी वाले खजूर पेड़ की छाया में आपने हमारे ह्दय को प्रेम से भर दिया एवं चले गये। एक दिन आप हमारा तालाबों के बागों में पीछा करते हुए आये जहां फूलों के रज विखरे थे और कहा 'कृश काय ! हम तुम्हें कभी नहीं छोड़ेंगे' तब छोड़ कर चले गये। हमारे प्रभु ने जो प्रतिज्ञा की वो पूरा नहीं कर सके। आपने सुगंधित लाल मलल फूल के गुच्छों को लेकर हमलोगों के जूड़ों को यह कहते हुए सजाया 'विछुड़ने पर मैं मर जाऊंगा'। भगोड़े को सोचते रात दिन नींद गंवाने से क्या लाभ ? आप समुद्र किनारे पुल्लानी में रहते हैं जहां की तरंगे श्वेत घोड़ों की तरह छलांगे लगाती आती हैं एवं आपके चरणों पर बेशकीमती पत्थर एवं मोती चढ़ाये जाते हैं। प्रशस्ति गाओ। उस रास्ते झुको एवं उठो। चक्र एवं हल धारण करने वाले प्रभु मित्र की तरह आये एवं धोखेवाज की तरह चले गये। आप के पास कोई दया नहीं है। पावन डुवकी लगाकर प्रभु के नाम का यशगान करते हुए प्रतिदिन मस्तक आपके चरणाविंद में नवाओ, भले ही आप कुछ नहीं देते हैं तब भी हमारे लिये यह अच्छा है। इससे हम भक्त हो जायेंगे।

चौथे दशक में नायकी अपने अन्तर्मन की वेदना प्रकट करती है तथा पक्षियों को कहती है कि हमारी स्थिति की सूचना प्रभु को दो जो पुल्लानी में रहते हैं। सुगंधित बागों से घिरे पुल्लानी के प्रभु की हमने करबद्ध होकर पूजा की। अब यह एक आदत हो गयी है। हाय! सागर किनारे ताड़ वृक्षों पर बैठे अनरिल पक्षियों के मैथुनकाल की चीख घाव में तलवार

चुभने से ज्यादा कष्टकर है। धरा को तीन पगों में मापने आये पुराकाल के अविबाहित राजा से मुग्ध होकर हमने अपने सौंदर्य प्रसाधन उनके पास खो दिया। आपकी तुलसी माला से मुग्ध होकर हमारा मन हमें छोड़कर आपके पीछे लग गया और हमारी दुर्दशा को भूलकर आपके पास रह गया। हमारी सुन्दर फूल सी आंखें अश्रुवर्षा बंद नहीं करती एवं वस्त्र वदन पर नहीं टिकते। मेरा मन पुल्लानी के प्रभु के पास है जिन्होंने निपुण धर्नुधारी के रूप में लंका को जलाकर धूल में मिला दिया। जबकि हमारे लोग हमें दोषी बताते हुए अपशब्द कहते हैं मैं प्रभु के झूठे वादों में विश्वास कर अपने मन को लौट कर आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।

सायंकाल का आगमन होने को है परंतु प्रभु द्रवित नहीं होते। परिक्रमा करते ज्योतिर्मय सूर्य अपना रथ छोड़कर गायब हो गया है। सुन्दर चांद निष्ठुर किरणों को भेजकर हमारे हृदय को दग्ध करता है। काले वृषभ के गले की घंटी के घुंघरू की कभी बंद नहीं होती ध्वनि हमारे हृदय को आग से ज्यादा जलाने वाली है। हाय ! सागर की तरंगें भी मुझ पापिनी पर आग उगल रही है।

नायकी प्रभु की निर्हेतुकी कृपा का उदाहरण देती है और वैसी ही कृपा की आशा करती है। देखो कैसे वे कृपा करते हैं। शेषशायी प्रभु ने मदमत्त हाथी के दांत उखाड़ लिये। नरसिंह रूप में आकर आपने सुन्दर नखों से हिरण्य की छाती को चीर दी। निपुण धर्नुधारी के रूप में लंका को जलाकर धूल में मिला दिया। प्रभु वेद हैं, वैदिक यज्ञ हैं, एवं यज्ञ के दैविक फल हैं। आप प्रथम कारण प्रभु हैं, युगल ज्योतिपुंज हैं तथा अन्य सबकुछ हैं। कंगन एवं सौंदर्य प्रसाधन सदा के लिये हमने खो दिये।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **78**। तिरूपुल्लानी

1।स्थान ः यहां रामनाथपुरम से पहुंचा जा सकता है जो कि **10** कि मी दूर है। यह रामेश्वरम के तटीय क्षेत्र के पास अवस्थित है। यह स्थान देश के दक्षिणी छोर पर सेतुकरै के पास **4** कि मी पर अवस्थित है। सेतुकरै में भगवान राम का बनाया हुआ समुद्र के ऊपर सेतु के अवशेष दर्शनीय हैं। धनुषकोटि, रामेश्वरम, मंडपम आदि पास में अवस्थित हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर आदि जगन्नाथ खड़े अवस्था में हैं और 'तिरूपुल्लानी आळवार' एवं 'दैवासेलै पेरूमाल नायनार' तथा 'दर्बाशयन राम' के नाम से भी जाने जाते हैं। उत्सव मूर्ति को कल्याण जगन्नाथ कहते हैं। षहां दो तायर हैं। एक को कल्याणवल्ली तथा दूसरे को पद्मासिनी कहते हैं। विमान को कल्याण विमान कहते हैं एवं स्थल वृक्ष अश्वत्थ वृक्ष है।यहां कई तीर्थ हैं जैसे हेमा तीर्थ, चक्रतीर्थ, अगस्त्य तीर्थ, राम तीर्थ,

रत्नाकर समुद्रतीर्थ, वरूणतीर्थ, कण्वनदी, हिरण्यनदी, क्षीरनदी। अग्नि पुराण यहां का स्थल पुराण है।

3। महिमा ः तमिल में 'पुळ' का अर्थ घास है तथा 'अनै' का अर्थ शयन करना है। यहां सेतु बनाने के पूर्व भगवान राम ने समुद्रदेव की प्रतीक्षा में घास पर सात दिन शयन किया था। आदिजगन्नाथ ने भगवान राम को सारंगधनुष दिया था जिसकी सहायता से रावण का बध हुआ था। विभीषण को शरणागति इस स्थान पर मिली थी। इस स्थल को शरणागति स्थल कहते हैं। आस पास में दो प्रसिद्ध दिव्य देश हैं जो दर्बाशयन राम एवं पट्टाभिषेक राम कहे जाते हैं। योद्धाओं से घिरे दर्बाशयन राम बीर शयनावस्था में हैं। नाभि से तीन कमल निकले हैं। बीच वाले कमल पर ब्रह्मा हैं तथा अन्य दो पर सूर्य एवं चंद्र विराजमान हैं। मार्कण्डेय मुनि शिर के पास हैं तथा चरण के पास हनुमान जी हैं। कोदंडराम उत्सव मूर्ति हैं। पट्टाभिराम बहुत ही भव्य स्वरूप में दर्शन देते हैं। यहां नदी, तालाब, तथा समुद्र तीनों तीर्थ विराजमान हैं। एक कथा के अनुसार राजा दशरथ द्वारा किये गये पुत्रकामेष्टि यज्ञ का यह स्थल बताया जाता है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1668** से **1687** तक, तथा पेरिया तिरूमडल **2674**।

ःःः

नौंवे शतक का पांचवा एवं छठा दशक **9ः0 5** एवं **9ः06** यानी पासुर **1788** से **1807** तक ः **20** पासुरों के इन दो दशकों में तिरूकुरूंगुडी दिव्य देश के प्रभु की महिमा परकाल नायकी के वियोग वेदना के माध्यम से चित्रित किया गया है। निष्कलंक अर्द्धचंद्र, तरंगायित सागर, पुष्प सुगंधित मंद वायु, अन्रिल की आर्त्त पुकार, सब मिलकर हमारे हृदय को तोड़ एवं मरोड़ रहे हैं। नमीपूर्ण दिनों में हम निद्राविहीन हैं। बहुत पहले कमल वर्ण प्रभु ने हमारी चेतना तथा कुशलता चुरा ली। हाय ! हम पर आप तरस भी नहीं खाते। सोचते हैं 'है तो यह क्षीण काय नारी ही न।' हमें अब ढो कर आपके निवास कुरूंगुडी ले चलो। कंगन पहन संवेदनहीन होकर शयन करने वाले जरा बतायें कि हमारा क्या सोचते हैं। सबेरा घसीटते हुए शाम में बदल जाता है। रात का हर घड़ी विनाशकारी एवं अनन्तकालीन है। निरंतर आपका चिंतन एवं आप ही के बारे में बोलते रहने की आदत हमें एक रात भी सोने नहीं देती।

सखियों की आलोचना को भूलकर नायकी अपने प्रेम में विभोर हो प्रभु की विरह वेदना से ग्रस्त है। आभूषित सुन्दर किशोरियों को बैठकर, रात दिन आलोचना करने दो। हम न तो उनकी बराबरी कर सकते और न सामना ही कर सकते। हमें कोई लाज नहीं है, न डर है,

और न ही पूर्वाग्रह है। अगर वे चालाकी की बात करें या हम पर हंसे तो भी हम अपने मणिवर्ण वाले प्रभु को भूल नहीं सकते। श्यामल अरूणाभ नयन प्रभु यहां प्रवेश किये। हमारे अंग शिथिल हो गये एवं कंगन गिर गये। आपने कहा 'क्या यही नहीं है ?' और चले गये। गोपकिशोर की बंशी का रागानंद हमारे हृदय को अवरूद्ध करता है। और यह निपुण धनुर्धारी प्रेम का देवता मदन हम पर अपने फूल के बाणों से निशाना साधे है। इसके पहले कि वह आकर हम पर प्रहार करे गोपकिशोर नर्तक की नीयत का पता करो एवं अब ढो कर मुझे प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो। मैंने उनके पैर पकड़े भीख मांगी पर वे नहीं डिगे। मेरी सारी कुशलता का हरण करते हुए मुझे मुर्झाया हुआ छोड़ कर चले गये। आज तक यह पता नहीं वे गये कहां।

कुरूंगुडी उदार प्रभु का घर है जो कपाल एवं व्याघ्रछाल धारण किये शिव को अपने पास रख खड़े हैं। मंदिर परिसर में हीं कपाल भैरव की सन्निधि है। भक्तों ! आओ और देखो, हमने जीवन जीने का रास्ता ढूंढ़ा है। यह श्यामल मेघ के वर्ण वाले कमलनयन प्रभु का निवास है जो वराह रूप में आये। आपने लंका में जाकर राक्षसराज की छाती एवं भुजाओं को काट डाला। पांच के लिये रथ चलाकर युद्ध में अनेकों हाथी सवार शक्तिशाली राजाओं का बध कर दिया। भक्तों ! अपने पूर्व कर्मों एवं कष्टों का क्षय कर दो। पर्वतों से ताजा फूल चुनकर पूजा तथा सेवा करो एवं उन्नत हो जाओ।

नौंवे शतक का सातवां दशक **9ः07** यानी पासुर **1808** से **1817** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में तिरूवल्लवाळ दिव्य देश के प्रभु की महिमा चित्रित है। हे मन ! अगर पिता माता बच्चों कुटुंब एवं मित्रों तक सीमित जीवन के भार से मुक्त होना चाहते हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां गोपकिशोर राजकुमार का निवास है और जो अंत प्रारंभ एवं प्रारंभों के प्रारंभ हैं। आप पांच मुकुट वाले पांडव राजाओं के दूत बनकर गये। आपने मावली के यज्ञ में जाकर तीन पग जमीन की भिक्षा मांगी। आप वेंकटम में वही आनन्द देते हैं जो देवों को वैकुंठ में मिलता है। आकाश को छूते छतरी तथा छत्रों वाले हाथी से घिरे पृथ्वी के राजागण भी एक दिन मृत्यु को प्राप्त होते हैं। पांच इन्द्रियां जो जन्म के समय मांस के इस पिंजड़ानुमा शरीर में घर कर लेते हैं जीवन के दुख एवं यातना के कठोर स्रोत हैं। अगर इनसे डर लगता है तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां चारों वेद पांचो यज्ञ एवं छः आगम पूर्णतया प्रयोग में लाये जाते हैं। मित्र लोग इस व्याधिग्रस्त शरीर को सच मान लेते हैं। अगर इस तर्क में दोष है एवं उनका जीवन मिथ्या है तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो उज्जवल सूर्य चांद आकाश तथा सबकुछ हैं। यह शरीर पांच तत्वों मिट्टी अग्नि जल हवा एवं अकाश का एक मिश्रण है।

अगर तुम यह मानते हो कि यह किला नहीं है और निकलने का मार्ग खोज रहे हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो चंदन लिपटे कमल सी लक्ष्मी के साथ रहते हैं। रौद्र बौद्ध एवं अर्हत लोग गैर शास्त्रीय उदाहरण देते हैं। अगर तुम उन्हें अनावश्यक एवं अनुपयुक्त पाते हो और अपनी उन्नति का मार्ग खोज रहे हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां देवताओं से पूजित प्रभु का निवास है और जिन्होंने समुद्र मंथन कर देवों को अमृत दिया।

ஃஃ

दिव्य देश **79**। तिरूवल्लवाळ

1। स्थान ः यह स्थान केरल का तिरूवल्ला है जो कोट्टायम शहर का एक भाग है। इसे श्री वल्लभ क्षेत्र कहते हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर तिरूवल्ला खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। ऊपर के दो हाथों में शंख चक्र है तथा नीचे का दायां हाथ कमल धारण किये है और बायां कमर पर है। मूलावर बहुत ही आकर्षक हैं। पेरूमाल को कोलाप्पिरान या वल्लभन कहते हैं। तायर को सेल्वातिरूकोळन्दु तथा उत्सव विग्रह को वात्सल्य देवी कहते हैं। तीर्थ को घण्टाकर्ण, एवं विमान को चतुरंगकोल कहते हैं। सुदर्शन चक्र की यहां अलग सन्निधि है जो भगवान की सन्निधि के ठीक पीठ पीछे स्थित हैं जहां भभूत का प्रसाद मिलता है जबकि मुख्य मंदिर में चंदन का प्रसाद मिलता है। **50** फीट जमीन से ऊपर **2** फीट व्यास का एक ही पत्थर का गरूड़ स्तंभ बना है जो बराबर लंबाई में जमीन के भीतर गड़ा है। यहां का स्थल पुराण मत्स्य पुराण है।

3। महिमा ः वक्षस्थल पर लक्ष्मी को धारण करने के कारण आप 'तिरू वळ मार्बन' या 'तिरूवळवळ्ळ' हुए जो संक्षेप में तिरूवल्ळा कहे जाने लगा। पेरूमाल के सौंदर्य से मुग्ध होकर पूर्व में एक महिला अपने को रोक नहीं सकी एवं गर्भगृह में प्रवेश कर मूलावर का आलिंगन कर ली। तब से महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित था परन्तु **1967** से पुनः दर्शन की छूट मिल गयी है।

यहां भगवान को कत्थकली बहुत प्रिय है और भक्तगन प्रायः रात्रि में इसका आयोजन करते रहते हैं जिसमें महाभारत की प्रसिद्ध कथाओं का अभिनय तथा संगीत नृत्य के साथ प्रस्तुति की जाती है। पेरूमाल इससे प्रसन्न होकर भक्त की मनोकामना की पूर्ति करते हैं। कहते हैं रात्रि के कत्थकली आयोजन में भगवान किसी न किसी रूप में अवश्य आते हैं तथा कत्थकली का आनंद लेते हैं।

कथा है कि एक नारी भक्ता 'मंगलात अम्मै' ने एकादशी के बाद द्वादशी के दिन एक ब्राह्मण

को नियमित रूप से भोजन कराने का व्रत रखा था। एक असुर इस कार्य में बाधा उत्पन्न करता था। पेरूमाल ने उस असुर का बध किया। भक्ता के अनुरोध पर आपने लक्ष्मी को वक्षस्थल पर बिठाकर उसे दर्शन दिया तथा उसके द्वारा दिये गये भात तथा आम के अँचार को प्रेम से खाया। आज भी मंदिर में भात के साथ आम के अँचार का भोग लगता है। गोल आकार के गर्भगृह के नीचे एक तहखाना है जहां भगवान विष्णु की दुर्लभ प्रतिमायें संग्रहित हैं। इस स्थान की चर्चा सातवीं शताब्दी के संस्कृत के उद्भट विद्वान दंडिन ने अपनी रचनाओं में की हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1808** से **1817** तक, तथा पेरिया तिरूमडल **2674**। नम्माळवार तिरूवायमोळी **3429** से **3439** शतक **5**। **09**।

ःःः

नौंवे शतक का आठवां एवं नौवां दशक **9ः08** एवं **9ः09** यानी पासुर **1818** से **1837** तक ः **20** पासुरों के इन दो दशको में तिरूमालैरूञशोलै दिव्य देश के प्रभु की महिमा चित्रित है। दशक आठ के प्रथम दस पासुर सुन्दरबाहु प्रभु के प्रति आळवार संत का उद्गार प्रकट करता है। नौवें दशक के **10** पासुर परकाल नायकी की मॉ के मन में उत्पन्न उस आश्चर्य का वर्णन करते हैं जो उसकी बेटी ने सुन्दरबाहु भगवान से साक्षात्कार करके दिखाया।

हे निर्बल मन ! मैं तुझे सावधान करता हूँ। सुगंधित जूड़े वाली नारी के साथ समागम की चाह छोड़ दे, यह एक अवरोध है। प्रभु जो स्वयं सात द्वीप एवं सात समुद्र हैं मालिरूञ्जोलै के मंदिर में रहते हैं जहां पहाड़ी नाले चंदन, रत्न, एवं मोर पंख सुगंधित बागों में सर्वत्र प्रवाह में लाकर ढेर लगाते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। देवगन सदा ताजा माला एवं शुद्ध जल लेकर शेषशायी ऊंचे मुकुट वाले प्रभु की पूजा के लिये खड़े रहते हैं। आपने वामन के रूप में पृथ्वी को मापा। दैहिक यातना से त्राण के लिये आपने पृथ्वी पर अनेकों पवित्र स्थल बनाये जहां आप पूजा स्वीकार करते हैं। आप मालिरूञ्जोलै में रहते हैं। भयानक राक्षसी पूतना का जहरीला स्तन पीने के लिये निर्णय करने वाले एवं स्वछंद राक्षसी ताड़का का अग्नि बाण से नाश करने वाले प्रभु ने मनमौजी राक्षस का सामना करते हुए उसके दस मुकुटधारी सिर काट गिराये जबकि उसका धड़ किसी दुष्टात्मा प्रेत से ग्रस्त की भांति तड़पता रहा। विष वमन करते नाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु गोपकिशोर के रूप में आये एवं राक्षसी बछड़े को ताड़ के पेड़ पर पटक मारे तथा पात्र पर नृत्य कर गोपियों के साथ उनके कुरूवै नृत्य में सम्मिलित हुए। आप कृष्ण के रूप में आये एवं आपने आक्रामक श्वेत केशिन घोड़ा का जबड़ा चीर डाला। देवों के प्रभु बौद्धों एवं श्रमणों की

बेतुकी बातों से भी प्रसन्न रहते हैं।

नौवें दशक में नायकी की माँ नायकी की अनुमानित उपलब्धि से आश्चर्यचकित है। त्रिमूर्ति के आदिकारण, सागर में शयन करनेवाले, अपने नाभिकमल पर ब्रह्माण्ड को बनाकर निगलकर पुनः बना देनेवाले, देवों के देव, गोपकुमार गोवंदा तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या लता सी पतली कमर वाली हमारी बेटी आज उनसे घुल मिल जायेगी ? आश्चर्य ! क्या मीन नयना हमारी बेटी आज उनके नुपूर ध्वनि करते चरणों को देखेगाी ? आश्चर्य ! सातों लोक को निगल कर बटपत्र पर शिशु की तरह सोने वाले देवों के प्रभु हैं। क्या पसंदीदा गहनों से आभूषित हमारी बेटी आज उनके पास पहुंच जायेगी ? आश्चर्य ! क्या उज्जवल ललाट वाली हमारी बेटी आज उनको प्राप्त कर लेगी ? मावली असुर के यज्ञ में प्रभु वामन बन के आये एवं त्रिविकम का रूप धारण कर धरा एवं आकाश को माप दिया। सुन्दर राजीव नयन हमारे प्रभु ने पुरा काल में केशरी रूप में शक्तिशाली हिरण्य की छाती आनंद से चीर डाली। क्या हमारी बेटी आज उनकी पूजा झुककर कर लेगी ? न तो प्रेम करते और न ध्यान धरते, ऐसे लोगों से अगम्य प्रभु ने सुगंधित बागों वाले उत्तर मथुरा में जन्म लिया। कृष्ण प्रभु ने असुर पक्षी बक का चोंच चीर दिया तथा मदमत्त हाथी कुवडयापीठ के दांत उखाड़ लिये। आप ने दुष्ट गाड़ी को पैरों से चकनाचूर कर दिया। क्या मीन नयना हमारी बेटी आज उनका दर्शन कर लेगी ? पर्वत की तरह शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु दक्षिणावर्ती शंख एवं कंधों पर पवित्र आकर्षक यज्ञोपवीत धारण किये हुए वेंकटम के वैदिक प्रभु हैं। आप सौम्य नारायण शिलम्बरू तथा नुपूर गंगा से प्रवाहित तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या उज्जवल ललाट वाली हमारी बेटी आज कम से कम उनके नजदीक तो हो लेगी ?

नौंवे शतक का दसवां दशक **9ः10** यानी पासुर **1838** से **1847** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में तिरूकोट्टियूर दिव्य देश के प्रभु की महिमा चित्रित है। हमारे प्रिय प्रभु देवों के प्रभु हैं। जो आपकी पूजा करते हैं उनके हृदय में आप निरंतर बसते हैं। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां बादल की वर्षा से सोना के नाले निकलते हैं जिनसे प्रकाशित स्थलों में कमल खिल पड़ते हैं। हमारे प्रभु व्याधि के दुख से त्राण दिलाते हैं। आप भूदेवी की मुस्कान से आनंद लेते हैं तथा कमल वाली लक्ष्मी श्री के प्रति सदा मधुर व्यवहार रखते हैं। आपने सातों लोकों को निगलकर बाहर निकाल दिया। जैसे आपने कमल वाली लक्ष्मी को अपने वदन पर स्थान दिया है उसी तरह से कृतज्ञता पूर्वक फरसा धारी बैल की सवारी करने वाले शिव को भी अपने वदन पर रखा है। तुलसी की माला पहने पुराकाल के धरा मापने वाले प्रभु ने बाणों से लंकापति रावण के अत्याचार का अंत किया। जंबु द्वीप के सारे राजा

तिरूक्कोट्टियूर में जमा होकर कहते हैं 'यहां प्रभु का निवास है'। कृष्ण बन कर आये, आसुरी बछड़े को ताड़ पेड़ पर घुमाकर पटका, तथा वर्षा से गायों की रक्षा के लिये पर्वत को ऊपर उठाया। स्वर्गिकों के देव मुझे सेवक स्वीकार कर मुझमें बस गये। आप देवदेवपिरान हैं, देवों के प्रभु हैं, एवं चारों वेद पांचों यज्ञ एवं छः आगमों में निष्णात ऋषियों द्वारा तिरूक्कोट्टियूर में पूजित हैं।

दसवें शतक का पहला दशक **10ः01** यानी पासुर **1848** से **1857** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में विभिन्न दिव्य देशों के प्रभु की महिमा चित्रित है। मेरे प्रभु, राजकुमार, मेरे सर्वोत्तम मित्र, मेरे एकमात्र जीवन एवं लक्ष्य, आनेवाले शाश्वत निवास, कल हमलोगों ने आपके श्रीचरणों का दर्शन निर्मलै में किया था। आज हमलोग धान के खेतों से घिरे आपके दर्शन के लिये कन्नामंगै जायेंगे। हमलोगों ने आपके श्रीचरणों का दर्शन वेंकटम में किया था। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूत्तनका यानी दीपप्रकाश कांचीपुरम में करेंगे।

शिशु के रूप में सागर पर तैरते बट पत्र पर सोने वाले प्रभु, मेरे बहुमूल्य अमृत, शीतल तुलसी माला वाले प्रभु, आपके दर्शन का आनन्द तिरूवलै में मिला। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन जगप्रसिद्ध तिरूनांगुर में करेंगे। राजकुमार जिन्होंने हिरण्य की छाती चीर डाली, मेरे अमृत, स्वर्गिकों की ज्योति, अप्रतिम कृपा तिरूप्पेर में हमने आपकी पूजा कर ली। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूवल्लरै में करेंगे। श्मसान से भभूत लगाने वाले शिव के दुख का अंत करने वाले प्रभु ने तिरूनरैयूर में दर्शन दिया। निपुणता से मुझमें प्रवेश कर आप हमारे हृदय को द्रवित करते हैं एवं उसे पीते हैं। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूमेय्यम में करेंगे। देवों को अमृत देनेवाले उदार प्रभु, भक्तों के अमृत ने उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूच्चेरै में दर्शन दिया। आप देवों के प्रभु हैं, हाथी को आसानी से मारने वाले हैं। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूकुडन्दै में करेंगे। गोपाल के रूप में आपने नयनाभिराम जूड़े वाली गोपियों के मक्खन खाये। आपने तिरूवलून्दूर में दर्शन दिया। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूवेक्का यथोक्तारी भगवान कांचीपुरम में करेंगे जहां आप शेषशायी हैं। हमलोगों ने प्रभु की पूजा तिरूमालिरूञ्जोलै में की। आज हमलोग जाकर मोती रत्न एवं पन्ना की तरह बहुमूल्य प्रभु का दर्शन तिरूविण्णगर में करेंगे। नुपूर बजते नृत्य करते चरणों से प्रभु ने हाथी के दांत उखाड़कर उसका बध कर दिया। फूलों के बाग से घिरे तिरूकोट्टियूर में आपने दर्शन दिया। आज हमलोग जाकर अपने प्रभु का दर्शन तिरूनवै, यानी केरल में स्थित दिव्य देश में करेंगे। गीतों की यह माला गाय चराने वाले तिरूप्पेर के दूलहा प्रभु की प्रशस्ति में महान विद्वान कलकन्रि ने रचे हैं।

जो इसे याद कर लेंगे वे कभी निराश नहीं होंगे तथा आकाश पर राज्य करेंगे ।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **80** । तिरूतन्का या दीप प्रकाश या विलक्कुओली

1 । स्थान ः यह कांचीपुरम के तुपुल क्षेत्र में है जहां पास ही में वेदांत देशिक स्वामी एवं हयग्रीव लक्ष्मी भगवान के अलग अलग मंदिर परिसर दर्शनीय हैं। यह स्थान वरदराज स्वामी से **3** कि मी पर तथा यथोक्तारी या अष्टभुज भगवान से **1** कि मी पर है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः प्रभु का मूलावर पश्चिमामुखी चतुर्भुज मुद्रा में खड़े अवस्था में है तथा दोनों पार्श्व में श्री एवं भू देवी खड़ी हैं। मार्गतवल्ली तायर हैं। सरस्वती तीर्थ है। श्रीकारा विमान है ।

3 । महिमा ः तिरूतन्का यानी दीपप्रकाश प्रभु का भी अपना स्वतंत्र परिसर है और आप 'विलुक्कु ओली' कहे जाते हैं । सरस्वती ने इन्द्र से पूछा कि लक्ष्मी एवं सरस्वती में कौन श्रेष्ठ हैं। इन्द्र ने लक्ष्मी को श्रेष्ठ बताया। नाराज सरस्वती ने ब्रह्मा से निर्णय करने को कहा। ब्रह्मा ने भी लक्ष्मी को श्रेष्ठ बताया। ब्रह्मा से नाराज सरस्वती ने उनके यज्ञ से अनुपस्थित रहते हुए उसमें व्यवधान डालने के लिये चारो तरफ आग फैला दी। प्रभु ने सारे अग्नि समूह को आत्मसात कर एक दीपक में बदल दिया। दूसरी कथा है कि सरस्वती ने सर्वत्र अंधकार कर दिया। प्रभु ने एक वृहत ज्योति का रूप बना लिया एवं ब्रह्मा के यज्ञ को सफल किया। तमिल पुरट्टासि मास यानी **15** सितंबर से **15** अक्टूवर के बीच ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है ।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1849 2065 2068** । नम्माळवार तिरूविरूत्तम **2503** ।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **81** । तिरूनावाय

1 । स्थान ः यह स्थान केरल में चेन्नै कोझीकोड रेल मार्ग के तिरूनवा रेलवे स्टेशन के पास है। रोड मार्ग से शोर्णुर की ओर से भी आया जा सकता है। गुरूवायूर के वाद कुट्टीपुरम के पास कोच्ची मंगलोर राष्ट्रीय राजमार्ग के नजदीक ही तिरूनावाय अवस्थित है। मंदिर केरल की सबसे बड़ी नदी भरतपुळा नदी के किनारे स्थित है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। मूलावर नावाय मुकुन्दन एवं नारायणन कहे जाते हैं। आपका दर्शन घुटने से ऊपर ही होता है बाकी भाग भूमिगत है। तायर मालारमंगै नाच्चियार कही जाती हैं। तीर्थ को सेंगमाल सरस कहते हैं तथा विमान को वेद विमान के नाम से जाना जाता है ।

3। महिमा ः केरल में यह एकमात्र मंदिर हैं जहां लक्ष्मी की अलग सन्निधि है। परांकुशनायकी का प्रत्यक्ष रूप तिरूवायमोळी के तीन स्थलों में पाया जाता है और यह उनमे से एक है। परकाल स्वामी ने भी दो पासुर में तिरूनावाय की प्रशस्ति गाई है। कथा है कि लक्ष्मी एवं गजेन्द्र में प्रभु पर पास के तालाब से कमल लाकर अर्पित करने की प्रतियोगिता हो गयी थी। प्रभु के हस्तक्षेप से लक्ष्मी को प्रभु के साथ रहने की आज्ञा हुई जिससे कि भक्त गजेन्द्र दोनों को कमल का फूल अपिर्त कर सके।

नौ मुनिगण का यहां स्थायी निवास था जो मुक्ति प्राप्त करने में सफल हुए। मुक्ति के बाद भी पेरूमाल के आदेश पर वे लोग यहां विराजमान रहकर पेरूमाल की पूजा करते हैं। काशी की गंगा की तरह तिरूनवा का भरतपुळा नदी पवित्र है एवं कल्याण हेतु मरणोपरांत अंतिम पार्थिव किया यहां काशी की तरह ही की जाती है। महात्मा गांधी एवं जवाहरलाल नेहरू का अस्थि भस्म तिरूनवा में भरतपुळा में प्रवाहित किया गया था।

जब यहां प्रभु के मूलावर की स्थापना हो रही थी तो पहली बार विग्रह को आठ दिनों के लिये बन्द कपाट में वैदिक रीति के अनुसार रखा गया। माना जाता है कि स्थापना के सात दिन देवगन विग्रह की पूजा करते हैं। आठवें दिन जब द्वार खोला गया तो विग्रह लुप्त पाये गये। ऐसा आठ बार हुआ। नौवीं बार द्वार आठ दिन के पहले ही तीसरे दिन खोल दिया गया एवं देखा गया कि प्रभु घुटने तक भूमिगत हो चुके हैं। मंत्रोपचार से विग्रह को इसी अवस्था में रखा गया जो आज दर्शन देते हैं। विग्रह के पीछे एक पातालफोड़ कुंआ है जिसकी गहराई नहीं मापी जा सकती। कहते हैं पूर्व के आठ विग्रह इसी कुंए में चले जाते थे।

नदी के दूसरे किनारे पर ब्रह्मा एवं शिव के पृथक मंदिर हैं। इसलिये इसे त्रिमूर्ति क्षेत्र भी कहा जाता है। मार्कण्डेय मुनि पेरूमाल की पूजा कर रहे थे उसीबीच यम उन्हें लेने के लिये आ गया। पेरूमाल ने मार्कण्डेय मुनि को पीछे के दरवाजा से निकाल दिया जो भागकर शिव जी के मन्दिर में छिपगये तथा चिरंतन आयु प्राप्त कर लिये। मेल्लाथुर एल्लम नामक स्थान यहां से **3** कि मी पर है जो नारायणीयम की रचना करके गुरूवायुरप्पन को समर्पित करने वाले वाले प्रसिद्ध कवि मेल्लाथुर नारायण भट्टातीरी का जन्म स्थान है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिया तिरूमोळी **1520** **1856**। नम्माळवार तिरूवायमोळी **3858** से **3868** तक, शतक **9**। **08**।

ःः

दसवें शतक का दूसरा एवं तीसरा दशक **10ः02** एवं **10ः03** यानी पासुर **1858** से **1877** तक ः **20** पासुरों के इन दो दशकों में राम कथा प्रस्तुत है। दूसरे दशक में लंका का

विनाश देखकर जीवित बचे हुए वहां के राक्षस अपने अर्न्तमन की बात प्रकट करते हैं तथा रावण के गलत निर्णय की भर्त्सना करते हैं। हमारे हृदयहीन राजा ने अनेकों भूलें की और वे सब अब हम लोगों पर बरस रहे हैं। रावण मारा गया किसको बतायें ? इन बातों को खोदने से क्या लाभ ? महान बन्दर जातियों के राजाओं, राजकुमार लक्ष्मण, धर्नुधारी राम। हाय ! हमलोगों पर दया के लिये विनती करने वाला यहां कोई नहीं है मित्रों। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। किरीटधारी दस सिर एवं उसके दोगुने शक्तिशाली भुजाओं वाले हमारे राजा ने अपना मन नारियों पर लगा कर सर्वस्व गंवा दिया। क्या करना चाहिये, इससे अनभिज्ञ, हम सेवक जन, दो भुजा वाले एवं एक सिर के राम प्रभु की बिना भक्ति के पाले पोसे गये। विनती है, राम प्रभु हमें जीवित रहने दें।
वे राजा दशरथ का नाम ले उनसे निवेदन करते हैं। अभिभावक राजा दशरथ ! जिस दिन हमारा निर्दयी राजा रावण दंडक में प्रवेश किया एवं सीता को उठा लाया उसी दिन उसने अपना सर्वनाश कर लिया। हमलोगों का इसमें कोई हाथ नहीं है। विनती है, हमें नहीं मारे। हाय ! यह कुल नारी लोभ में नष्ट हुआ, क्या कहें ? अब राम प्रभु से निवेदन करते हैं। राम प्रभु ! लंका के हमारे मनमौजी राजा का एक छोटा भाई था जो हमलोगों की आंखो के सामने जमीन पर साष्टांग कर परामर्श दिया 'यह नारी हमारे राक्षस कुल के लिये विष है'। अब आप अपनी नारी को लेकर लौट जाइये।
सुवर्ण के ऊंचे किरीटधारी राजा रावण ने सीता नाम की देवी को लाकर सुगंधित बागों वाले अशोक वन में कैद में रख दिया। हाय ! हमारे कर्तव्यहीनता को देखो। कुंभ एवं निकुंभ मारे गये। स्वयं मृत्यु का देवता ही धनुष बाण चलाते साक्षात आदमी का रूप धारण कर हम लोगों को ले जाने के लिये आया है। बन्दर दूत हनुमान समुद्र पर छलांग लगा कर हमलोगों के नगर में घुसा। फल के ऊंचे बागों को नष्ट भ्रष्ट करते हुए राक्षसों के बेटों एवं संबंधियों का बध कर उसने नगर में आग लगा दी। तब हमलोगों को स्वयं प्रभु को नारी लौटा देना चाहिये था। यह देखकर कि आपने सेतु बना दिया है एवं सागर को पार कर रहे हैं बुद्धिहीन मनमौजी रावण ने लता सी कटि वाली मृगनयनी सीता को नहीं छोड़ा। विनती है, हम लोगों की जान छोड़ दीजिये, दूसरों को पकड़ने का हमलोग उपाय बतायेंगे। मंदोदरी एवं अन्य सुन्दर रानियों के कोमल उरोजों से आनंद न लेकर हमारे नीच राजा ने जंगल से मोरनी सीता का अपहरण कर लिया। प्रेम के देवता मदन के समान सुन्दर भुजाओं वाले राम प्रभु ने उसकी छाती में बाणों का प्रहार किया। राम बाण से हम भय खाते हैं जो शिव के उन बाणों से ज्यादा तप्त है जिसने पलक झपकते तीन नगरों को भस्म कर दिया था। जाम्बवान के साथ हे सूर्यपुत्र सुग्रीव के पुत्र, बन्दरों के राजा, हमारे नाथ ! विनती है,

दया करें एवं हम लोगों का बध न करें।
तीसरे दशक में राक्षसगण सुग्रीव हनुमान एवं अन्य बंदरों से अपने प्राण की भीख मांगते हैं और आश्वासन देते हैं कि उनलोगों के मनोरंजन में वे ऊच्चकोटि का मनोरंजक नृत्य प्रस्तुत करेंगे। सुग्रीव प्रभु ! हम नमस्कार करते हैं। जय हो ! राम का नाम हम तब तक गायेंगे जबतक हमारे जीभ थक कर सूज नहीं जाते। विनती है, आप अपने बन्दरों को हमारी जान लेने से मना करें। हाय ! इन्द्रजीत ने नहीं कहा 'हे प्रभु ! हे नाथ!' और अभेद्य बाण से मारा गया। हे प्रभु हनुमान सुग्रीव अंगद एवं नल ! कुंभकर्ण भी मारा गया। हम आपके मनोरंजन के लिये 'कुलमणि दूरम' नृत्य करते हैं। आपके जगत के राजा हमारे राजा रावण के लिये मृत्यु के देवता हो गये। नील दीर्घायु हों। सुषेण दीर्घायु हों। अंगद दीर्घायु हों। हम उनसे भयातुर हैं। हम छोटे भाई लक्ष्मण की प्रशंसा करते हैं। राम के भक्तों ! हम आपकी विजय स्वीकार करते हैं। हमें कोई सम्मान नहीं चाहिए। हमें नयी जिन्दगी दें। विनती है, हमारा बध न करें। आप अपने मन की पूरी संतुष्टि तक यहां रहें। राक्षस कुल के लोगों यहां जमा हो। अगर उनके गुस्से को शांत करना चाहते हो तो घमंड की बात न कर तुम कहो 'जय हो हनुमान की' जो जन्म से ही शक्तिवान हैं। मृत्यु देनवालों को बैठने दो एवं देखने दो और तुम नाचो कुलमणि दूरम। बीती बात का स्मरण कर बताते हैं कि लंबे भाला एवं चौड़े खड्ग लिये हमारा राजा रावण भाग निकला जबकि हम थक चुके थे। विनती है, अब हमारा पीछा न करें। हम आपके राजा के सामने आत्म समर्पण करते हैं।
दसवें शतक का चौथे से नौवें दशक तक **10ः04** से **10ः09** यानी पासुर **1878** से **1941** तक ः **64** पासुरों के इन सात दशकों में कृष्णावतार की कथा प्रस्तुत है। दशक सात में **14** पासुर हैं एवं अन्य दशक **10** पासुर वाले हैं। चौथे दशक में माँ यशोदा अपने लाड़ले को दूध पीने के लिये बुलाती है जो अपने मित्रों के साथ खेल रहे हैं। यहां आओ और मेरे दूध से फूले हुए स्तनों को देखो। अपने पावन होंठ रखकर चूसो, चूसो। मैं बुलाती जा रही हूँ लेकिन तुम नहीं आते। पता नहीं गोप बालकों के साथ कौन सी घटना की योजना बन रही है। मैं आकाश से चांद लाकर तुम्हारे हाथों में दे दूंगी। सदा मक्खन खाने वाले नटखट बालक। हमारे स्तन इतनी देर तक वजन नहीं सह सकेंगे। जब भयानक राक्षसी ने माँ के रूप में आकर स्तन दिया तो आपने विषैला स्तन चूसा एवं उसके प्राण भी चूस लिये। कृष्ण सोने का स्वांग भरते हैं और माँ से दूर रहते हैं। आपके पिता क्रोध करेंगे। हाय ! हमारा मन नहीं करता कि अपनी छड़ी से आपको पीटूं। जब आपकी गायें शाम में लौटेगीं तो देवगन आकाश से आपको देखेंगे।
पांचवें दशक में अन्य गोपनारियां प्रभु को ताली बजाने के लिये उत्साहित करती हैं। जब

फूल जूड़े वाली यशोदा बैठी दही मथ रही थी आप आये और मक्खन खा गये। आपको वह बांधी पीटी रूलायी एवं फिर सांत्वना दी। अब आप खेल रहे हैं। शप्पाणि ताली बजाओ। गोपियों के हृदय को कंपाते हुए आप हमेशा सबके दही एवं घी खा जाते हैं। आपने मक्खन का घड़ा उलट दिया, दही एवं घी खा गये और गोप नारियों के कोपभाजन हुए। उनलोगों ने कहा 'यह सरकने वाला' एवं आपको हाथ बांधकर पिटाई की। गाय चराने वाले प्रभु अपने जन्म से आप ने अपने माता पिता को बेड़ी से मुक्त कराया। वहां कोई सम्बंधी नहीं रहने से आप मित्रों के बीच चले आये। कहानी सुनाने से कृष्ण ताली बजाने को तैयार नहीं दिखे तो उनको माँ यशोदा अच्छे भोजन का प्रलोभन दे रही हैं। गोप नारियां बड़ी अप्पम तथा मीठे चावल की रोटी देंगी। कम से कम उनके लिये हजार शप्पाणि ताली बजाओ। आपका उदर साधारण नहीं है। भूख के लिये मैं आपको चूड़ा एवं अप्पम दूंगी। आप घोड़ा का जबड़ा फाड़ते हैं, मरून्दु वृक्षों का नाश करते हैं, भाग कर खेलते हैं, रस्सी के छींके पर पहुंच कर मक्खन निगल जाते हैं तब उन्हीं हाथों से हमारे स्तनों से खेलते हैं। गोपियां पुनः कहती हैं अर्द्धरात्रि में न तो आपकी माँ और न मित्र गण देख रहे थे एक सुन्दर अजनवी आयी और अपना स्तन आपको दिया। आप समझ गये कि वो राक्षसी थी एवं आप ने अपने मुंह से उसके प्राण हर लिये। चमत्कारिक शिशु ! आपने दुष्ट गाड़ी को अपने पैरों से तोड़ डाला।

छठे दशक में प्रभु की बालकाल की आनन्ददायी घटनाओं का मनोरंजक तरीके से स्मरण किया जा रहा है। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे एक शिशु हैं। क्या कहीं भी इससे बड़ा आश्चर्य हो सकता है ? बासुकी सांप की रस्सी से मंदराचल पर्वत की मथानी चलाकर प्रभु ने सागर में अमृत मथा। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। वामन बनकर जमीन का उपहार मांगा एवं बढ़कर सागर से घिरे धरा को ले लिया। आप ने कर्म के नियम को शिथिल करते हुए बताया 'यम दूत हमारे भक्तों को छू नहीं सकते' और सात लोकों में साम्राज्य बनाया। आप परशुराम बनकर आये और कीर्तिवीर्य अर्जुन के हजार हाथों को अपने फरसा से काट दिया। राक्षसलोग इस बात को नहीं समझ सके कि प्रभु समस्त जगत की यातना को दूर कर अपने में ले लेते हैं। प्रभु ने बन्दरों की सेना एकत्र कर सागर पर पत्थरों से सेतु बनाकर राक्षसों का नाश किया। हिरण्यक एवं मधु कैटभ का नाश करने वाले अब ऊखल में बंधे हैं। धनुष को तोड़कर प्रभु ने सीता का मधुर समागम पाया तथा राजतिलक के राजकुमार बने। सागर पार कर लंका का नाश करते हुए आपने राक्षसराज रावण के सिर एवं बाहें काट डाली। आपने बाण से सात वृक्षों को बेधा तथा पर्वत के समान सूर्पनखा का नाक काट

लिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं।
शातवें दशक में **14** पासुर हैं जो कृष्ण की शरारत को लेकर यशोदा एवं पड़ोस की गोपनारियों के बीच के संवाद का चित्रण है। यशोदा शिकायत सुनकर कहती हैंः संभ्रान्त नारियों ! मैंने समझा कर उससे कहा है 'तुम्हारे सब गोपजन सम्मानीय व्यक्ति हैं कृपा करके पड़ोस की बेटियों को क्षति नहीं पहुचाओ'। मैं उसे डांट नहीं सकी और न नंदगोप ही कुछ कर सके। एक पड़ोसिन तुरत की घटना बताती है। नंद के पुत्र कृष्ण के सिवा दूसरा यहां कोई नहीं आया। आज प्रातः के मथे हुए छांछ को बेचने के लिये जब मैं बाहर आई तो उनको देखा। आओ देखो केवल मक्खन ही नहीं दस घड़े दूध भी जो मैंने जमा किये थे वे भी खाली हैं। ओह ! मैं क्या करूं ? यशोदा अपनी लाचारी बताती हैं। संभ्रान्त नारियों ! गोपवंश का मनमौजी बालक छत से लटकते रस्सी के छींके पर सजे घड़ा पर घड़ा मक्खन को श्वेत पहाड़ की तरह ढेर कर चट कर जाता है एवं एक निर्दोष की तरह सो जाता है। इसके हाथ मक्खन से लिपटे रहते हैं। इसका पेट साधारण बालक का नहीं है इसमे सातों समुद्र आराम से आ जायेगा। प्यारी मैं ! मैं क्या करूं ? एक अन्य गोपनारी कृष्ण के तरफ दिखाती है तथा बोलती है। भ्रांत देवकी का श्वेत शंख जैसा दूसरा पुत्र भी है जो यहीं पला लेकिन उसने कभी ऐसा कुछ नहीं किया। देखो, शरारत का खजाना यह बदमाश, कैसे एक दूसरे लड़के के नीचे से सरक रहा है। फूल के जूड़ेवाली मेरी बेटी स्वयं खेल रही थी। उसके पिता लौटे नहीं थे, मै भी नहीं थी। उसका कोई साथी भी नहीं था। नंद का यह नटखट लड़का वहां गया उसके गेंद छीन लिये तथा कपड़े फाड़ दिये। रात को बांस की मुरली बजाते हमलोगों के घर में चला आया। इसके बाद हमारी बेटी की फूल जैसी आंख नीची हो गयी, उसके उरोज कड़े हो गये, कमल जैसी होंठ पीली हो गयी, गाल के रंग उड़ गये। पुराकाल से गोप जन गाड़ी भरे भोज्य पदार्थ से हजार आंख वाले इन्द्र का पर्वत के पास उत्सव मनाया करते थे। लगता है आपका यह चमत्कारिक पुत्र आज वहां गया एवं एक विकराल रूप धारण कर सब भोजन एक ही बार में चट कर गया। एक अन्य पड़ोसिन कहती है ः सभी गोप नारियों ने मुझे सावधान किया था कि यह आदमी दूध दही मक्खन एवं घी का प्रत्येक वर्तन खाली कर देगा। मैं इसको बुलायी और डांटा नहीं, निवेदन किया 'प्रभु, भीख मांगती हूँ, ऐसा न करना' । जब से इसने राक्षसी के स्तन पिये हैं इससे बात करने में भी घबराती हूँ।
यशोदा अपनी आपबीती सुनाती है। जन्म के सातवें महीने में इसे सुलाकर स्नान के लिये मैं यमुना नदी में गयी। श्रीवक्ष वाले यह प्रभु वैसे ही सोये रहे एवं अपने कोमल चरणों से एक तेज रफ्तार से अपनी तरफ आती गाड़ी को चकनाचूर कर दिया। इसके बाद से इन्हें डांटने

में मैं भी घबराती हूँ। यह कहने में भी डरती हूँ। अब यशोदा कृष्ण से बात करती हैं। हे प्रभु ! आपके कोमल चरण वाले मित्रगण हमारे हजार घड़े एकत्रित घी में से आधा भी नहीं छोड़े हैं। हाय ! कंस क्रूर है एवं हमें एक सप्ताह में उसे कर का भुगतान करना है। हमारे पास कोई बचत है नहीं। सरल गोप बालाओं के साथ कैसे यह सब आप करते हैं ? कमल सरोवर तक आपने उनलोगों का पीछा किया। जब वे नहा रही थीं आपने छिप करउनके कपड़े ले लिये। जब वे अपने कपड़े मांग रही थीं तो आप पेड़ पर चढ़ कर बोले 'आओ अपने कपड़े ले लो'। पुनः यशोदा गोपनारियों को संबोधित कर बोलती है। इस लड़के में लेश मात्र भी डर नहीं है, केवल शैतान साहसी है। बड़े स्नेह से इसके माथे सूंघकर हमने इसको पाला। कभी नहीं यह बताता है कि यह है कौन। लगता है आज कदंब पेड़ पर चढ़कर ताल में कूद गया एवं हजारों फन वाले विष वमन करते सांप से युद्ध किया। पुनः कृष्ण से बात करती है। लाड़ले प्रभु ! अगर कोई चीज किसी की शक्ति से परे हो तो दूसरे की सहायता लेनी चाहिये।आपने यह अकेले क्यों किया ? ओह ! मैंने आपको गर्भ में रखा, मैं क्या करूं ? लाल आंखें एवं तप्त हूँकार वाले काले वृषभ के दहाड़ से सातों लोक कांपता है। लगता है आप सुगंधित बागों में जाकर उनसे विजयपूर्वक युद्ध किया।

आठवें दशक में गोपियां कृष्ण से नोंक झोंक करती हैं। सुन्दर कुंडल, काला कमीज एवं मुकुट के उपर शीतल सुगंधित तुलसी माला पहने देर रात पीछे के दरवाजे से आते हो। यह क्या है ? हाथ में कभी कभी गेंद उछलाते, ढ़ीला जूड़ा, धारीदार पगड़ी बांधे आप आधे खुले दरवाजे के पास खड़ा होते हो। आप कौन हो ? यह क्या है ? तुलसी की मंजर से सुगंधित, प्रेम का देवता, मदन का गीत गाते आप घर में प्रवेश करते हो। अर्द्धरात्रि में प्रेम गीत गाते आपने इस घर में प्रवेश किया। आंगन में प्रवेश किया एवं मुस्कराते खड़े रहे। गोपमित्रों को उनकी गायों के साथ काफी पीछे छोड़ते हुए हाथ में धनुष लिये राहगीरों को देखते रहे और तब धीरे से देवताओं के सामने प्रवेश किये। कल ही रात हम आपकी मंशा समझ गये। बिना बताये आप छोड़ गये और वचन के अनुसार कभी लौटे नहीं। ताल में प्रवेश कर नाचते नाग को दहला दिया। यह सब आपके लिये कुछ नहीं है। आपके प्रभाव में अनेकों सुन्दिरियां हैं। जबकि कमल वाली लक्ष्मी तथा भू देवी प्रतीक्षा में थीं आप गोप किशोरियों के साथ झूमते कुरूवै नृत्य कर रहे थे। मृदु एवं प्यारे ! यह क्या है ?

नवें दशक में परकाल नायकी की माँ कृष्ण के करतूतों से ऊब कर बोलती हैं तथा हर बात में एक सटीक मुहावरा सुनाती है। प्रभु ! आप हमलोगों की जूड़े वाली बेटियों का आपके प्रति प्रेम एवं नारियों के अपशब्द को बहुत ही हल्के तरीके से लेते हैं। लगता है उसके टूटे हृदय को ठीक करना उतना ही आसान है जितना मुहावरे वाले बच्चे के हाथ का प्याला।

क्या यह इसलिये कि आपने आसानी से पूतना राक्षसी का अंत किया तथा लंका नगर को जला दिया ? क्या यह पुरूषार्थ है ? आपने इस किशोरी के कंगन चुरा लिया उतनी ही आसानी से जितना मुहावरे वाला मुरूँगै पेड़ का मधु। गहने से आभूषित एवं मोती की माला पहने यह किशोरी अमृत की तरह प्यारी है। आपने महान कंस का आसानी से अंत किया। अपने उसी शक्ति से इसे आप इतना आसान लेते हैं जैसे कि मुहावरे वाला उसके हाथ की मिश्री। मृगछाला पहने शिव को अपने वदन पर रखने में तथा खाली हाथों से नरकासुर का अंत करने में विजयी महसूस करते हैं। इस जूड़ेवाले किशोरी को आकर देखना आप आवश्यक नहीं समझते जिसका सौंदर्य प्रसाधन आपने तब छीन लिया था। ऐसा नहीं सोचिये कि इसको पुनः प्राप्त करना उतना आसान है जितना मुहावरे वाला नौकर के हाथ का धनुष। हाय ! कहने से क्या लाभ ? महान युद्ध में रथ चलाते हुए अनेकों प्रतापी राजाओं को मृत्यु के रास्ते आकाश गामी बना दिया। यह क्या आपका पौरूषेय अभिमान है कि हमारी मृदु भाषिणी बेटी के गुणों को नहीं सोंचते ? मुझे नहीं पता। आप उसे मुहावरे वाला रास्ते के किनारे गिरे जामुन का फल समझते हैं।
संरक्षित लंका में प्रवेश कर आपने बलशाली राक्षसराज का अंत कर उसकी पत्नियों का सुहाग उजाड़ दिया। देवगनों ने आकाश में आकर आपकी तब पूजा की थी। क्या इसी तरह आप अपना शौर्य अब दिखा रहे हो ? आपने लाल बैर जैसी होंठ वाली हमारी बेटी के हाथीदांत के कंगन उसके कलाई से ले लिया और उसके बाद अपने आप को उसे कभी दिखाया तक नहीं। 'अकवन की पत्ती पर कुल्हाड़ी' का मुहावरे की तरह। राजा कीर्तिवीर्य अर्जुन ने धरा पर रथों वाले अनेकों राजाओं से पूजित हो शासन किया। आपने अपना युद्ध का फरसा चलाकर उसके हजारों हाथों को काट डाला। क्या यह आपकी शक्ति का परिचय है कि हमारी मृगनयनी बेटी के सौंदर्य प्रसाधन चुराकर उसके सामने कभी प्रकट भी नहीं हुए ? 'मुर्गी के अंडे फोड़ने के लिये छड़ी' का मुहावरे की तरह। छिपे हुए आप प्रकट हुए एवं हिरण्य की बलशाली छाती को अपने नखों से नष्ट कर दिया। छिपे हुए आप अपने तीक्ष्ण बाणों से वाली की छाती बेध डाली। क्या यह आपकी ऊंची कीर्ति का द्योतक है कि आप हमारी मधुमक्खी लिपटे फूल के जूड़े एवं बड़ी बड़ी आंखों वाली प्यारी बेटी के सामने नहीं आते ? आप उसे इतना आसान समझते हैं जैसे मुहावरे का 'मुंह का पानी चाहें उसे निगलें या उगल दें'। आपका व्यवहार उसके साथ मुहावरे के वैदिक ऋषियों वाला है जो वे अग्नि की तुलना में बागों का करते हैं। क्या यह इसलिये है कि आप जल अग्नि आकाश पृथ्वी एवं वायु के रूप में प्रकट हो सकते हैं ? या क्या संतोषप्रद इस कारण से तो नहीं है कि इस पावन किशोरी का आपके अलावे कोई आश्रय नहीं है ?

दसवें शतक का दसवां दशक **10ः10** यानी पासुर **1942** से **1951** तक ः **10** पासुरों के इन एक दशक में परकाल नायकी अन्य प्राणियों को कृष्ण के स्वागत के लिये उत्साहित करती है। साथ में वेंकटम तथा कुडन्दै के प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करती है। पुकारो हे लाल......! श्रीपति प्रभु प्रसिद्ध हैं।सुगंधित तुलसी धारण किये हुए माधवन। उनका आगमन ......। कांव कांव अच्छे काग ! घने मेघ के समान। आपने कहा जैसे पूर्णता ने स्वरूप धारण कर लिया हो।उनका आगमन ...कांव...। कुहू कुहू अच्छे कोयल ! तूफान को बन्द करते हुए आपने बलशाली घोड़े का जबड़ा फाडा। रत्न प्रभु ! उनका आगमन ... कुहू ...। तुत तुत छोटी छिपकिली ! पात्र पर नाचते हुए आपने ब्रह्माण्ड मापा। फूल जूड़ा धारण करते माधवन ! उनका आगमन ... तुत ...। हरा सुग्गा बोलो ! तेजोमय चक्र धारण किये हुए शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु उत्तर वेंकटम में रहते हैं। उनका आगमन ... बोलो...। मुर्गा बोल रहा है। हे बहन ! मैं क्या कर सकती हूँ ? श्यामा का अब हमारे पास आने का समय हो गया है। काम को मैं क्या दे सकती हूँ? गन्ने का धनुष चलानेवाला काम के जनक श्याम प्रभु की सेवा छोड़कर काम को मैं क्या दे सकती हूँ? क्या आप इस रास्ते आयेंगे ? हमारी वेल मछली जैसी गहरे रंग की आंखों को प्रसन्न करते हुए अमृतमय बागों से घिरे कुडन्दै के प्रभु ! क्या आप इस रास्ते आयेंगे ? मैंने आपकी चितवन को नहीं देखी । वृहत बाहों में शंख चक्र शारंग धनुष धारण करने वाले प्रभु ! मैंने आपकी चितवन को नहीं देखी।

ग्यारहवें शतक का पहला से तीसरा दशक **11ः01** से **11ः03** यानी पासुर **1952** से **1981** तक ः **30** पासुरों के इन तीन दशकों में परकाल नायकी कंगन खोने से अचंभित हो प्रभु की पूजा के लिये उद्धत होती है। पहले दशक के प्रारंभ के पासुरों में प्रभु से कंगन खोने की शिकायत निवेदन करती है तथा शीतल वायु पक्षी सागर एवं चांद को शत्रुवत समझती है। अंत में निदान के रूप में प्रभु की तुलसी माला की सुगंध को अपनी वेदना की औषधि बताती है। प्रभु ने पर्वत उठाकर वर्षा बन्द करा दी। आप राक्षसों का नाश करने वाले धनुर्धारी हैं। मंद वायु हमारी प्रेमाग्नि को हवा दे रही है। यह क्या आपके शौर्य का द्योतक है ? मैंने तुलसी से सुशोभित आपके वक्षस्थल की चाह की थी। उसी की सजा है क्या ? वर्षा के मेघ की तरफ से आनेवाली जलकणों से अभिसिक्त हवा मेरे हृदय को छेद रही है। हमारे कंगन खिसक गये एवं हमारा रंग बह गया है। चंद्रकिरणें क्रोध में हमें दग्ध कर रही हैं। सागर से सलोने प्रभु सुगंधित तुलसी की माला पहनते हैं जो हमें बुलाती रहती है। आप वही हैं जो दूसरे के घर में जाकर पाले पोसे गये। आपने राक्षसी का विषैला स्तन पिया जो माँ बनकर आयी थी। ओह विसंगति ! चंद्रकिरणें हमें दग्ध कर रही हैं। चंद्रमा के आकाश

में चले जाने के कारण सागर गर्जता है क्या ? धनुष का प्रयोग कर प्रभु लंका नगर पर विजय प्राप्त किये। क्या आपके शौर्य का बखान करने के लिये अन्रिल पक्षी कमल का घोसला छोड़कर सामने के आंगन वाले ताड़ के पेड़ की चोटी से निरंतर ध्वनि करती हुई हमें दुखी कर रही है ? उत्साह से खड़ी होकर कया फूल के रंग वाले प्रभु को गरूड़ पर आते देखी। यह क्या मेरे लिय दंड है कि प्रेम का देवता मदन अपने पुष्प के बाणों से हमारे हृदय को बेधते रहते हैं ? जब आपकी तुलसी की माला सुगंधित हवा के साथ आकर मुझमें घर कर गयी तो मेरा मन चारों तरफ आपको खोजने लगा। उसका एक छोटा टुकड़ा हमारे हृदय में कांटे की तरह घुस गया है। हाय ! अब अपने आप की रक्षा असंभव है। माननीय भक्तों द्वारा बनाये गये तुलसी की माला का सुगंध अगर भौंरा लाकर मुझपर वर्षायेगा तब शायद हमारी मीनवत नयनों में नींद आये एवं हमारा मूल रंग वापस आ जाये।

दूसरे दशक में विरह वेदना गहरी हो जाती है परंतु अंत में नायकी तिरूमालैख्ञ्शोलै के सुन्दरबाहु प्रभु की पूजा के लिये जाने को उद्धत होती है। पर्वत उठाकर वर्षा बंद कराने वाले एवं गोप किशोरियों के साथ गलियों में रास नृत्य करने वाले प्रभु ने हमें मोह लिया है। गोप किशोर की वंशी की तान हमारे हृदय को तड़पा रही है। मेरा मन आपकी शीतल तुलसी माला पर लगी रहती है। संध्या की हवा हमारा बध करने आती है। परात्पर प्रभु ने सात वृक्षों को बाण से बेधा। जबकभी भी हमारा हृदय आपके चरणों का ध्यान करता है तो शीतल सागर सारी रात गर्जते रहता है एवं जलकणों से अभिषिक्त हवा हमें उदास करती है। माँ की गुस्सा भरी बातें, अन्रिल के हृदय बेधी पुकार, समुद्र का गर्जन, कंगनों का खिसकना, यह सब तब शुरू हुआ जब हमलोग प्रभु की कीड़ा में अभिरूचि लेने लगे। आपने हमें एक अंतहीन स्वप्न में निमंत्रित किया। हम एवं हमारी सखी को छोड़कर सारा जगत गहरी नींद सो रहा है। हाय ! काग की भी आवाज नहीं एवं घोर अंधेरा है। प्रेम का देवता मदन हमारा कोई सम्बंधी नहीं है। सागर सा सलोने प्रभु का हमारा दूलहा होने के कारण वह मेरा पुत्र है। लेकिन हाय ! दिन के हर घंटे में इस तरह से कामाग्नि को प्रदीप्त करता है ! मणिवर्ण वाले प्रभु के कारण हमारे कोमल उरोज दर्द के साथ रहने के आदि हो गये हैं। बिना कोई विचार किये रहस्यमयी मालिरूञ्जोलै के दूलहा प्रभु ने हमारे चित्त का चैन लूट लिया। उदय न लेकर निष्ठुर सूर्य कहां जाकर छिप गया ? बहनों ! अपना फूल समान सौंदर्य एवं नारीपन का ध्यान छोडकर ः जो मदन का लक्ष्य बेध है। हम चलें, मेघ समान श्याम प्रभु का शुद्ध जल एवं नूतन पुष्प से पूजा करें। तब कम से कम हम अपनी आंखों से प्रभु को देखेंगे तो सही।

तीसरे दशक में नायकी अपनी सखियों को भी विश्वास में लेकर कुडन्दै, वेंकटम, श्रीरंगम,

तथा तिरूवाली के प्रभु की पूजा अर्चना को विरह के अंत का निदान बताती है। युद्ध में अर्जुन का रथ चलाने वाले मावली का शमन करने वाले तथा लंका का नाश करने वाले के पास हमने कंगना एवं सौंदर्य प्रसाधन गंवा दिये। गजेन्द्र उद्धारक की प्रशस्ति गाने एवं नाचने से हमारे उरोज अब मुर्झाये हुए नहीं हैं बल्कि अपने पहले के रंग में आने लगे हैं। प्रभु की मंशा पर लांछना लगाते हुए सखियों से कहती है। ऋषि के रूप में आकर चारों वेद पर आपने व्याख्यान दिया। आज आप हमलोगों के कंगन चुरान आते हैं। हमारे हृदय में घर कर जाते हैं तथा जाते नहीं हैं। हाय ! हमलोग जानते नहीं हैं कि आपके मन में क्या है ? आप सुगंधित बागों से घिरे कुडन्दै में रहते हैं। छोटे शिशु के रूप में रस्सी वाले छींके तक जाकर जल्दी से मक्खन लेकर बड़े आनंद से खाया। हम कैसे कहते हैं कि आपको नहीं जानते ? जो केवल आपकी पूजा करते हैं उनको आप अपने स्वयं के गुणों से विभूषित करते हैं। अतः हमलोग हमेशा केवल आपकी प्रशस्ति गायेंगी तथा अपने हृदय को आप तक जाने के लिये प्रशिक्षित करूंगी। जब प्रभु ने उज्जवल आकाश में अपना पहला कदम रखा तो देवगन एकत्रित होकर कहने लगे 'दूसरे कदम के लिये धरा पर्याप्त नहीं है।' उनलोगों ने आंखों से प्यारे कृष्ण के सामने हाथ जोड़ लिये। भक्तगण हमेशा आपको हृदय में रखकर विजयी महसूस करते हैं। हम कृष्ण को अपने हृदय में रख लिये हैं फिर भी हमारे कंगन हाथ पर नहीं टिकते। क्या रहस्य है इसमें ? अच्छा, क्या हम सभी किशोरियों ने अपने नारीत्व का ख्याल रखा है ? तब भी हम आपके निवास वेंकटम एवं अरंगम की प्रशस्ति गाने से चूकेंगे नहीं। क्या हम प्रभु की प्रशस्ति नहीं गाते ? क्या हम आपके हजार नाम बोलकर नहीं नाचते ? क्या आपका नाम लेकर आपके धारण किये हुए तुलसी को हम धारण नहीं करते ? इसे पहन कर, अगर आप चाहेंगे तो, क्या हम आप में मिल नहीं जायेंगे ? प्रभु स्थायी रूप से हंसो के सरोवर एवं उपजाऊखेतों से घिरे तिरूवाली में रहते हैं। मेघ के समान रंग वाले प्रभु के सुनहले चरणों पर फूल अर्पित कर हम अपने युग युगांतर के पूर्व कर्मो से मुक्त हो गये हैं।

ग्यारहवें शतक का चौथा दशक **11 ः 04** यानी पासुर **1982** से **1991** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में मछली, कछुआ, सूकर, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, हंस तथा कृष्ण के अवतार की लीला गाथा प्रस्तुत है। जब संसार प्रलय जल में डूबा था तो देवगन भी डर गये थे। उनलोगों ने सुरक्षित स्थान के लिये विनती की। प्रभु गहरे सागर में मछली के रूप में आनंद से तैरते एवं अपने उदर पर सरकते पर्वत के समान पत्थर खींचते आये। हे मन ! अवतार की प्रशस्ति गाओ, रूको नहीं। वृहत मंदर पर्वत पर श्वेत फन वाले मजबूत वासुकी को लपेट कर देव एवं असुर ने श्वेत क्षीर सागर का मंथन किया जिससे धरा एवं

आकाश को डराने वाले चारों तरफ ऊंचे तरंग उत्पन्न हुए। तब प्रभु तिरूमल शक्तिशाली कच्छप के रूप में आये और अपने पीठ पर पर्वत को धारण कर लिये। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। प्रारंभ में प्रभु वराह बन कर आये और वृहत होते गये। सातों लोक, आठ दिशा, मेरू पर्वत एवं अन्य छ पर्वत, सात सागर सभी आपके पैर के खूर के अन्दर आ गये। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। प्रभु शक्तिवान नरसिंह बनकर आये। फूल एवं रत्न के माला आपके दोनों ओर झूल रहे थे। आपकी अंगारों की तरह लाल आंखें बाहर उभरी हुई थी। घमंडी राजा हिरण्य के आतंक राज का अंत हुआ। घुमावदार तीक्ष्ण पंजों को आपने बलशाली असुर की छाती में घुसा दिया। इससे खून का फब्बारा प्रलय जल से तीन गुना ऊंचा निकला। एक बार प्रभु ज्ञान एवं वेद मंत्रों से परिपूर्ण वामन बन कर आये एवं तीन पग जमीन मांगी। मिलते ही आपने अपना विस्तार कर चरण को सातों लोक के ऊपर आकाश में रख दिया यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। एक बार फरसा लेकर आये एवं इक्कीस किरीटधारी राजाओं का अंत कर दिया। दुष्ट रावण जंगल के आश्रम में आया जब सीता अकेली थीं एवं उनका अपहरण कर लिया। तिरूमल प्रभु ने जानवरों के समूह में से जादुई मृग को अलग करते हुए उसका अंत कर दिया। तब आपने राक्षसों के लंका पर अग्नि वमन करते बाणों की वर्षा कर नगर को तहस नहस कर दिया। जब सभी लोकों में घोर अंधकार छा गया तब स्वर्गिकों को इसका आदि एवं अंत समझ में न आया। निराश हो वे बोले 'हमलोगों को क्या हो गया ? वेद भी लुप्त हो गये। देवों एवं ऋषियों की प्रार्थना पर प्रभु ने हंस रूप में पवित्र शास्त्रों को प्रकट किया तथा संसार से अंधकार दूर करते हुए सब को प्रसन्न कर दिया। भक्तलोग प्रभु की पूजा एकमात्र आश्रय के रूप में करते हैं। जब एक राक्षसी कृष्ण की हत्या करने आई तो आप विषैले स्तन को पीते हुए उसके प्राण भी पी गये। आपने मक्खन चुराया एवं सजनी यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी। सरकते हुए ऊखल को पीछे से खींचते दो सटे हुए मरूदु पेड़ों के बीच जाकर आपने उन दोनों पेड़ों को तोड़ दिया। अनेकों तरह से प्रभु हमें हमारे कर्मो से मुक्त करते हैं।

ग्यारहवें शतक का पाचवां दशक **11 ः 05** यानी पासुर **1992** से **2001** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में दो सखी के आपस में संवाद के माध्यम से प्रभु का गुणगान किया गया है।

बहन ! आपके नेता मृगनयनी सीता के साथ पत्थरीले जंगली रास्तों से चलते हुए सुनसान जगहों में रहे। देखो !

हां, लेकिन पत्थरीले रास्तों पर चलने वाले वे दिव्य चरण स्वर्गिकों के सिर के पुष्प हो गये। यह भी देखो !

बहन ! जिसने अपने पिता के पैर की बेड़ियों को हटाने के लिये जन्म लिया वह नंदगोप के

दत्तक पुत्र के रूप में आयप्पादी यानी वृन्दावन में पाला गया। देखो !
हॉं, लेकिन जो नंदगोप के दत्तक पुत्र के रूप में पाले गये वे ब्रह्मा के जनक हैं तथा मेरे अपने प्रभु हैं। यह भी देखो !
बहन ! सारे संसार के अपशब्दों के साथ आयप्पादी के कुमार ने चोटी वाली नारियों के संजोगे दही खा गये। देखो !
हॉं, लेकिन चोटी वाली नारियों के दही से दिव्य उदर को भरने वाले सातों लोकों को निगल गये फिर भी उदर में जगह खाली है। यह भी देखो !
बहन ! आयप्पादी में आकर लोगों के बीच गाय चराये तथा रस्सी के छीकें से चोरी करके मक्खन खाने में खुश रहे। देखो !
हॉं, लेकिन सात लोक एवं सात समुद्र भी उस दिव्य उदर को नहीं भर सके जो रस्सी के छीकें से मक्खन खाये। यह भी देखो !
बहन ! काली जूड़े वाली गोप नारी ने छोटी गांठ वाली रस्सी से बांध कर मक्खन चुरानेके लिये पीटाई की। देखो !
हॉं, लेकिन छोटी गांठदार रस्सी से बांधे जाने वाले स्वर्गिकों के लिये भी ध्यान से अगम्य हैं। यह भी देखो !
बहन ! जंगली की तरह ऊंची रस्सी पर नगाड़ों की आवाज पर वे चौराहों पर पथिकों के आनंद के लिये नृत्य किये। देखो !
हॉं, लेकिन ऊंची रस्सी पर चौराहों पर नृत्य करने वाले देवों के लिये भी अगम्य हैं। यह भी देखो !
बहन ! पांच पांडवों के लिये दूत बनकर जमीन का टुकड़ा मांगने गये और दुर्योधन के दुर्वचनों को पी गये। देखो !
यद्यपि वे राजा के दुर्वचनों को पी गये उन्होंने ही सागर से घिरे संसार को प्रलय में पी लिया तथा उसे फिर निकाल दिया। यह भी देखो !
बहन ! जब रथ पर सवार शस्त्रवाले राजा गन युद्ध कर रहे थे उन्होनें घमंडी राजाओं का घोर युद्ध में बध रथ हंकाने वाला का काम करके किया। देखो ! यद्यपि वे रथी राजाओं के रथवान बने परंतु विजयी लोगों ने उनके चरण अपने सिर पर रख कर पूजा की। यह भी देखो !
बहन ! कितना दयनीय दृश्य था जब वे छोटे वामन बनके उदार मावली के यज्ञ में जमीन के एक टुकड़ा के लिये भिक्षा मांगे। देखो !
यद्यपि वे उदार मावली के यज्ञ में जमीन के एक टुकड़ा के लिये भिक्षा मांगे तब भी वे सातों

लोकों से संभाले नहीं जा सके। यह भी देखो!
बहन! तीन पग जमीन मापने में उन्होंने छल का प्रयोग किया। लोग कहते हैं वे क्षीर समुद्र में तथा वेंकटम में रहते हैं। देखो!
षद्यपि वे क्षीर समुद्र तथा वेंकटम में रहते हैं वे स्थायी रूप से कलकन्रि के हृदय में भी रहते हैं। यह भी देखो! इसतरह से परकाल स्वामी यानी तिरूमंगै आळवार संत ने प्रभु में असीम विश्वास को दर्शाया है।
ग्यारहवें शतक का छठा दशक **11 ः 06** यानी पासुर **2002** से **2011** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में आळवार संत प्रभु पर बिना शर्त के विश्वास रखने को कहते हैं। समस्त जगत को उदरस्थ करके प्रभु सागर में ही लंबी अवधि तक रहते हैं। ऐसे प्रभु को छोड़कर छोटे देवताओं के चक्कर में मत रहो। प्रलय के दिन का कोई नहीं स्मरण करता? क्या ऐसा कोई एक भी देवता है जिसे प्रभु ने निगलकर फिर बाहर मुंह में न लाया हो? क्या नहीं देखते कि समस्त जगत प्रभु की कृपाकांक्षी है? ललाट के नेत्रवाले शिव, मंत्रोच्चार करते जीभ वाले ब्रह्मा, एवं श्वेत हाथी चढ़ने वाले इंद्र, तथा अन्य सभी देवों को प्रलय के विनाशकारी मुंह से रक्षाकर प्रभु निगल जाते हैं। तब भी वे हमारे उदार चक्रधारी प्रभु की प्रशस्ति नहीं गाते। ओह, छोटे देवों की धूर्त्तता! मूर्खो! यह क्यों नहीं समझते कि जब भूमंडल का कोई भी अंश नहीं दिख रहा था और समस्त जगत एक वृहत सागर बन गया था सबकोई बहुत ही लंबे समय तक प्रभु के दिव्य उदर में थे? समझो एवं धरा मापने वाले तथा सभी देवों के नाथ के हजार नामों को बोलो। प्रभु ने तुमको अपने उदर में उसी तरह रक्षा की जैसे तुम्हारी माँ ने तुम्हें अपने गर्भ में रखा था। प्रभु को छोड़कर तुम नये देवता के उत्सव मे जाते हो जैसे गाय को छोड़कर नवजात बछड़े को नहाते हो। कितना हृदय हीन हो तुम! आप कन्नामंगै नगर के हमारे उदार प्रभु हैं। जो आपके चरणों की पूजा नहीं करता एवं अपने हृदय में आपको नहीं रखता वे आदमी नहीं। जिस क्षण में ऐसे लोगों का तिरस्कार किया जाय वह क्षण मधुर है। जब भयंकर अंधकार वाला प्रलय तेजी से बढ़ता आया एवं विनाश करते हुए धरा के ऊपर छा गया प्रभु ने दिव्य लोकों को अपने उदर में धारण कर लिया। जो श्यामल तेजोमय रक्षक प्रभु का ध्यान नहीं करता वह सच में नीच है। जब प्रलय जल में ब्रह्माण्ड का आधार लुप्त हो गया तब दया से भरे प्रभु ने अपने भक्तों, देवगनों तथा स्वर्गिकों को उदर में रखते हुए सबों की रक्षा की। मणिवर्ण वाले उदार प्रभु कुडन्दै नगर में रहते हैं। आपका नाम गाओ एवं नाचो।
ग्यारहवें शतक का सातवां दशक **11 ः 07** यानी पासुर **2012** से **2021** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में आळवार संत ने शरीर के सब अंगों को प्रभु की सेवा में लगाने का परामर्श

देते हैं। आप सागर मथने वाले, मावली से धरा को माप कर लेने वाले एवं गरूड़ की सवारी करने वाले हैं। इतना निश्चित है कि जो आपका दर्शन नहीं करते वे बिना आंख के हैं। ऐसा हमने सुना है कि जो आपके बारे में श्रवण नहीं करते वे बिना कान के हैं यानी बहरे हैं। शुद्ध एवं वेदों के प्रभु सुन्दर तिरूवाली में रहने वाले हैं।जो आपकी पूजा नहीं करते एवं आपके बारे में बखान नहीं करते वे कुछ नहीं बोलते यानी गूंगे हैं। हिरण्य के नाश करने वाले शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। जो गीत आपकी प्रेम पूर्ण प्रशस्ति नहीं गाती वह गीत है ही नहीं। आप अपने हाथ में शंख धारण करते हैं तथा तिरूमेय्यम में रहते हैं। हम जानते हैं कि जो पूजा में हाथ नहीं जोड़ते वे हाथ वाले नहीं हैं। प्रभु हंस की तरह आये एवं सूकर रूप में धरा को ऊपर उठाया। जब कभी भी तुलसी पत्ता, बेल पत्र, अलारी पुष्प, गुलाब, एवं कमल देखकर अगर हृदय यह नहीं कहता 'अहा ! ये सब प्रभु के दिव्य चरणों के लिये हैं' तो हम कहते हैं कि वे हृदय नहीं हैं। जो सरोवरों से नवीन पुष्प चुनकर प्रभु की पूजा प्रेम एवं उमंग से नहीं करते या ऐसा करने का सोंचते भी नहीं, हम जानते हैं कि वे संवेदनहीन हैं। आप रस्सी के छींके पर संजोगे सुगंधित मक्खन आनंद से खा गये। हम जानते हैं कि जो आपका सोंचते नहीं एवं अनुभव नहीं करते वे सदा के लिये अनभिज्ञ रहते हैं। प्रभु मधुमत्त मधुमक्खियों से मंड़राते तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। जो आपके भक्त नहीं बनते वे आदमी नहीं हैं ऐसा हमने अपने मन में मान रखा है।

ग्यारहवें शतक का आठवां दशक **11 ः 08** यानी पासुर **2022** से **2031** तक ः **10** पासुरों के इस दशक में आळवार संत ने शरीर को नश्वर बताते हुए इसके मोह से दूर रहने का परामर्श देते हैं। शरीर को नदी के किनारे का वृक्ष मानते हैं जो कभी भी बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो जा सकता है। समुद्र का नाव या जहाज से सैर करने वाले की तरह हमारा हृदय कांपता है। हम इस बात से निरंतर भयभीत हैं कि आप हमें जन्म एवं सांसारिक जीवन के कठिन कारागार में पुनः डाल दे सकते हैं। अचानक बाढ़ में फंसे लोमड़ी गिरोह की तरह हमारा हृदय दहलते रहता है। सांप वाले मड़ई में सशंकित शयन करने की तरह हमारा हृदय कांपते रहता है। एक भयावनी कल्पना कि आप हमें अनेकों अन्य जन्मों में भ्रमण करा सकते हैं। दीमक की तरह जो दोनों ओर से जलती लकड़ी में फंस जाती है हमारा हृदय कांपता एवं दहलता रहता है। चरते पशुओं के हेतु छांटे गये वृक्ष की तरह हम नहीं होना चाहते। उपजाऊ सरोवरों से घिरे तिरूवाली के दूलहा प्रभु जहां लाल कमल एवं नीले कुमुद बहुतायत में उत्पन्न होते हैं।केवल आपकी कृपाकांक्षी हैं हम। नीम वृक्ष पर पलने वाला कीड़ा केवल नीम हीं खाता है।हम आपके चरण का आश्रय के अलावे कुछ नहीं मांगते। श्रीरंगम के प्रभु से विनती करते हैं। आपकी दया के अलावे हमारी कोई मांग

नहीं है। विनती है, हमें रास्ता दिखाइये। विनती है, नरक की शाश्वत यातना से निकलने का हमें रास्ता दिखाइये ।

प्रबंध 11 । तिरूक्कुरून्दाण्डगम् **2032 से 2051**

इस प्रबंध की रचना तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी ने की है। यह प्रभु की प्रशस्ति है जिसमें आळवार संत का विश्वास झलकता है कि प्रभु रूपी रत्न कोष आपको प्राप्त हो गये हैं।

यह प्रबंध पासुर **2032** से **2051** तक **20** पासुरों से बना है।

मुझे मेरा कोष मिल गया है। आप हमारे हृदय में प्रवेश करने वाले ईश्वरीय शक्ति हैं। हम आपकी पूजा करते हैं। अब कभी आपको मैं छोड़ूंगा नहीं। प्रभु जो वायु जल एवं अग्नि हैं। शक्तिवान, जिन्होंने संरक्षित लंका का नाश किया। प्रभु की पूजा करें जिन्होंने गहरे सागर में पर्वत को स्थापित कर उसे मथा एवं देवों को अमृत दिया। आप बांस के झुरमुटों से घिरे मालिरूञ्जोलै के हमारे प्रभु हैं। वराह बन कर आये और धरा को ऊपर उठाया। आपसे कुछ पूछने की हमारी ईच्छा थी 'विचार, शब्द, कर्म, एवं विश्वास से हमने आपको प्रेमपूर्वक निगला है। आप कितने प्यारे हैं मुझे।' गरम लोहा जैसे पानी पीता है उसी तरह प्रेम से मैं फूल गया। इसे प्रभु को समर्पित कर मैं भक्त बन गया और मुझे आश्रय मिल गया। त्रिमूर्ति में प्रथम प्रभु ने पृथ्वी को अपना लिया। कुडन्दै में रहने वाले आप हमारे राजा हैं। अरंगम के प्रभु इस लोक एवं दूसरे लोक के लिये मुक्ति हैं। उप्जाऊ बागों वाले अरंगम के आप श्याम हैं। आप वेंकटम के श्याम पर्वत हैं। जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे नाथ हैं। जो आपके मंगलमय गुणों की गिनती नहीं करते, समझ लो, वे कीमती जीवन को नष्ट कर रहे हैं। वे अपने शारीरिक जीवन के दुःख को बढ़ा रहे हैं। हाय ! मेरा मन एक जगह नहीं रहता। दोनों ओर से जलती लकड़ी की चींटी की तरह मैं डरता हूँ। हाय ! मेरा मन स्थिरपूर्वक आप पर नहीं टिकता।मैं दुष्ट क्या करूं ? भक्तिपूर्वक अपने चरणों में प्रेम दीजिये। केवल इसीलिये मैं आपकी प्रशस्ति गाता हूँकि आप मुझे दास बना लीजिये और मुझे चिन्ताओं से मुक्त कर दीजिये। पूज्य अरंगम के प्रभु प्राण वायु हैं। एक गंदा भक्त गंदगी भरे शरीर एवं थूक से दूषित मुंह से मैंने पावन मंत्र नारायण का उच्चारण किया। मैं सदा भीतर से कांप रहा था लेकिन आप एक कमल पुष्प की तरह आये और कहा 'डरो मत' एवं हमारी आंखों में टिक गये। ऐसा समझो कि गरम लोहा से खींचा हुआ पानी भी काम का होता है। मेरे सभी भयानक कर्म मुझे छोड़ चुके हैं। हाय ! मैं कितना पापी हूँ। दिन प्रति दिन कमलनयनी नारी के आलिंगन में लगा रह कर हमने अपने जीवन शक्ति का नाश किया। हाय ! शुद्ध जल एवं हंस की जोड़ियों से घिरे कुडन्दै के प्रभु का बिना कोई

विचार किये मैं भारी दुख में पड़ कर एक पापी हो गया। हनुमान ने संपन्न एवं दीवारों से संरक्षित लंका में जाकर उसे जलाकर राख कर दिया एवं तब राम के चरणों की सेवा के लिये लौट आये। यह भक्त मैं, अपने को हड्डियों तक गला दूंगा, तब स्नान कर, प्रभु को अपने प्रेमासिक्त हृदय से निकले ज्ञान जल से तिरूमंजन कराऊंगा। अपने शुद्ध तमिल गीतों की माला से प्रभु की पूजा अर्पित करूंगा जिन्होंने जादुई मृग का अंत किया, मरूदु के पेड़ों के बीच से पार किया, धरा को मापा, सागर को पर्वत से मथकर अमृत देवों को दिया। जिनलोगों ने तिरूप्पेर के प्रभु की प्रशस्ति गायी वे मुक्त हो गये। जैसा इतिहास बताता है कि अपशब्द कहने वाले भी मुक्त हो गये। मैं भी एक मूर्ख हूं और अपशब्द का प्रयोग तो नहीं करूंगा बल्कि सागर सा सलोने प्रभु की प्रशस्ति ही गाउंगा।

बिना थकावट एवं घवराहट के स्थिर पूर्वक बैठकर आंख के ऊपर के पलक को नीचे के पलक के पास लाओ। पांचो इन्द्रियों का शमन करते हुए हृदय को मात्र प्रभु के प्रेम से भर दो। प्रभु से संबंधित सारे विचारों का स्वछंद प्रवाह होने दो। तब प्रकाशमय प्रभु के ज्योर्ति स्वरूप का दर्शन करोगे। जो ऐसा देखते हैं वे निश्चित रूप से सत्य का साक्षात्कार करते हैं। ब्रह्मा का कपाल लिये सर्वत्र भिक्षा मांगते शिव को आपने शाप से विमुक्त किया। आप जगविख्यात कंडियूर, अरंगम, मेय्यम, कांची, तिरूप्पेर, मल्लै एवं अन्य स्थलों में रहते हैं। आपकी पूजा छोड़कर कोई मुक्ति का ऊपाय है क्या ?

ºº

दिव्य देश **82**। तिरूकंडियूर दिव्य देश

1।स्थानः यह स्थान तमिलनाडु में कावेरी के तट पर तंजावूर से **12** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः अभयहस्त मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं तथा साथ में श्रीदेवी एवं भूदेवी का दर्शन मिलता है। आप ' हरशाप हरण' कहे जाते हैं। तायर कमलवल्ली तायर कही जाती हैं। सुदर्शन जी के मूलावर **16** हाथ के साथ एक पैर उठाकर चलने की मुद्रा में दर्शन देते हैं। विमान को कमलाकृति विमान कहते हैं। मंदिर के सामने तथा पीछे यहां कई तीर्थ हैं कण्ड तीर्थ, कमल तीर्थ, पाल तीर्थ, एवं गदा तीर्थ। स्थल वृक्ष अश्वत्थ एवं विल्व है। ब्रह्माण्ड पुराण यहां का स्थल पुराण है।

3।महिमा ः ब्रह्मा एवं शिव की यहां अलग सन्निधि है और शिव बड़े प्रसन्न मुद्रा में हैं।ब्रह्मा के कपाल के शाप से शिव का यहीं उद्धार हुआ था इसीलिये यहां भगवान हरशाप हरण कहे जाते हैं।नाराज होकर शिव ने बह्मा के पांचवा शिर काट लिया। बह्मा का शिर शिवजी के हाथ से चिपक गया। उसके बाद अन्विल तथा उत्तमार होते हुए शिव जी कंडियूर पहुंचे तथा भगवान से पुष्करणी के पास दर्शन हुआ। गदा से भगवान ने भूमि को

ठोककर एक नयी पुष्करणी बना दिया तथा शिव जी ने इस पुष्करणी में जब स्नान किया तब ब्रह्मा का कपाल छूट कर गिया। भगवान ने यहां ब्रह्मा शिव भृगु एवं अगस्त्य को दर्श न दिया था। इस दिव्य देश को 'मूमूर्ति मुक्ति स्थलम' भी कहते हैं क्योंकि तीनो देव की यहां पूजा एवं अर्चना की जा सकती है। यहां कन्नड़ी पलक्कु तथा अगल विलक्कु दीप का बहुत महत्व है। **48** दिन तक लगातार दीप जलाने से पूर्व के संचित पाप कट जाते हैं। पांच कमला होने से इसे पंचकमला क्षेत्र कहते हैं ःकमल क्षेत्र, कमल विमान, कमल पुष्करणी, कमलनाथन, एवं कमलवल्ली।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, तिरूक्कुरून्दाण्डगम् **2050**।

ःःः

प्रबंध **12**। तिरूनेडुन्दाण्डगम् **2052** से **2081**

इस प्रबंध की रचना तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी ने की है। यह प्रभु की प्रशस्ति है जिसमें आळवार संत का विश्वास झलकता है तथा परकाल नायकी के रूप में प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण का चित्रण करते हैं। यह प्रवंध पासुर **2052** से **2081** तक **30** पासुरों से बना है। **2052** से **2071** तक नायकी की माॅ अपनी बेटी के लिये चिन्तित है। **2072** से **2080** तक नायकी स्वयं अपनी गाथा प्रस्तुत करती है।

प्रभु के कोमल चरण हमारे सिर पर हैं। आप चारों वेद के सूक्ष्म सार हैं। ध्यान करने पर प्रभु इस ब्रह्माण्ड के त्रिमूर्ति, देवगन, सूर्य, चंद्र, महान सागर, स्वरूपहीन तत्व धरा अग्नि जल वायु एवं आकाश, एवं अन्य सिद्धांतों की विचारधारा की तरह दर्शन देते हैं। हर युग में उस युग के योग्य आप विभिन्न स्वरूपों में आते हैं। त्रेता में आपने सागर से अमृत मंथन के लिये वृहत कच्छप का रूप धारण किया। श्याम वदन एवं राजीव नयन कह करके प्रशस्ति करने के अलावे क्या कोई आपका संपूर्ण व्याख्यान करते हुए गाथा गा सकता है ? तमिल गीत एवं संस्कृत वेद के रूप में आप ही प्रकट होते हैं। हे मन! अगर आपको मंत्र से याद रख सकते हो तो हमलोग शाश्वत हो जायेंगे। एक चरण सागर की लहरों से पूजित एवं दूसरा चरण धरा के ऊपर विस्तृत आकाश में उठा हुआ सूर्य एवं चांद को पीछे छोड़ते हुए नक्षत्रों के समूह की पहुंच से आगे सौम्य सुर की कल्पना से परे। प्रभु ने पग से ब्रह्माण्ड को पार कर लिया। आपके चरणारविंद की हम पूजा करते हैं। प्रभु ने युद्ध में शक्तिशाली असुर राजाओं पर फरसा चलाकर धरा पर राज्य किया एवं भालाधारी सुब्रह्मणियम आदि को जीतकर आप पूंकोवलूर में विंध्य पर्वत की निवासिनी पार्वती से संरिक्षत एवं पर्वतों के राजा मलै अरियन से पूजित रहते हैं। नीलातिंगल तुंडतान, ऊरगतान, कारागतान, पेरागतान, तिरूवेग्का, कारवण्णन, कल्वा, एवं तिरूप्पेर के प्रभु के चरणों की पूजा करता

हूं।

ºº

दिव्य देश **83**। नीलातिंगल तुंडतान ः

1।स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु में कांचीपुरम में अवस्थित है। प्रसिद्ध एकम्बरेश्वर शिव मंदिर परिसर के भीतर नीलातिंगल प्रभु की सन्निधि है।

2। विग्रह स्वरूप ः चतुर्भुज मूलावर शेषनाग के छत्र के नीचे खड़े अवस्था में पश्चिमाभिमुख है। आपकी अर्चना आराधना शिव मंदिर के अर्चक ही करते हैं। आप पुरूष सूक्त विमान के नीचे हैं। आपकी कोई उत्सव मूर्ति नहीं है।

3।महिमा ः सागर मंथन के समय हलाहल की गर्मी से आपके तप्त कच्छप शरीर को शिव जी के माथे पर विराजते चांद की शीतल चांदनी से आराम मिला था। 'नीला' चांद को कहते हैं इसीलिये आपका यह नाम हुआ।

पर्वती जी ने एक बार कुतुहल बस शिवजी की दोनों आंखों को अपनी अंगुलियों से बंद कर दी। शिवजी की दोनों आंखें सूर्य एवं चंद्र के प्रतीक हैं। समस्त जगत में अंधकार छा गया। शिव ने अपनी तीसरी आंख खोलकर जगत को प्रकाश दिया तथा पार्वती पर नाराज हो गये। पार्वती को पृथ्वी पर तपस्या के लिये भेज दिया। कांचीपुरम में पार्वती तपस्यारत थी तो इनकी जांच हेतु शिव ने गंगा को प्रवाहित कर दिया। गंगा जल को काली ने अपने खप्पड़ कपाल में संभाल कर पार्वती की सहायता की परंतु जल फिर भी कपाल से बाहर प्रवाहित होकर तपस्थली को डूबो रहा था। पार्वती ने अपने भाई के रूप में विष्णु भगवान का आह्वान किया। नीलातिंगल रूप में प्रकट होकर आपने पार्वती को बताया कि अर्चा लिंग को अपनी बाहों में जकड़ कर रखो। शिव प्रसन्न हो गये एवं पार्वती की तपस्या पूरी हुई।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, तिरूनेडुन्दाण्डगम् **2059**।

ºº

दिव्य देश **84**। कल्वानूर दिव्य देश कांची

1।स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु में कांचीपुरम में कामाक्षी मंदिर परिसर में कामाक्षी देवी के गर्भगृह के पास है।

2।विग्रह स्वरूप ः आदिवाराह अभयहस्त भगवान यहां चतुर्भुज रूप में पश्चिमाभिमुख खड़े हैं।आपको कल्वार भी कहते हैं। तायर को अंजलिवल्ली नाच्चियार कहते हैं। नित्य पुष्करणी तीर्थ है तथा वामन विमान है जो अब दृश्यमान नहीं हैं।

3।महिमा ः सागर मंथन के समय प्रभु श्वेत कच्छप बनकर मंदराचल को धारण किये हुए

थे। सागर से निकले हलाहल से भींगने के कारण आपका रंग काला हो गया। लक्ष्मी आपके काले स्वरूप से नापसंद रहने लगीं। आपने लक्ष्मी को शाप देकर उनके सौंदर्य का नाश कर दिया। लक्ष्मी कांची में कामाक्षी के पास आयीं तो कामाक्षी ने लक्ष्मी को अपनी सन्निधि के पास गायत्री मंडप में विराजने को कहा एवं सब भक्तों को प्रेरित की कि हमारे पास से कुमकुम लेकर लक्ष्मी को अर्पित करो जो सबको श्रीसंपदा प्रदान करेंगी। इस तरह से कालक्रम में लक्ष्मी को अपना सौंदर्य वापस मिल गया। भगवान भी लक्ष्मी को खोजते कांची आये और लक्ष्मी को सुंदरता से पूर्ण देखकर प्रसन्न हुए। लक्ष्मी आपको चुपके चुपके अपने पास आते देखकर पहचान गयीं एवं आपको 'कल्वा' कहकर संबोधित की जिसका शाब्दिक अर्थ है 'प्रियतम चोर' जो चुपके से उनकी ओर चले आ रहे थे। आदिवराह की अर्चना से पार्वती जी को शिव के शाप से मुक्ति मिली थी। पार्वती जी यहां कामाक्षी बनकर रह गयीं एवं वरप्रसादी होकर प्रसिद्ध हो गयीं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, तिरूनेडुन्दाण्डगम् 2059।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्य देश **85**। तिरूपावल वण्णा कांचीपुरम

1। स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु में कांचीपुरम में रेलवे स्टेशन से 1 कि मी पर अवस्थित है। पच्चै वण्णा पेरूमाल एवं पावल वण्णा पेरूमाल के दो अलग अलग मंदिरों को एक दिव्य देश कहते हैं। दोनों मंदिर दो स्वतंत्र परिसर में हैं। दोनों मंदिर कांची नगर के मुख्य मार्ग के दो तरफ अवस्थित हैं। पावल वण्णा सड़क के पश्चिम तरफ है एवं पच्चै वण्णा सड़क के पूर्व ओर है।

2। विग्रह स्वरूप ः पावल वण्णा पेरूमाल खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा आप श्रीनिवास भी कहे जाते हैं। आपका स्वरूप तिरूमला श्रीनिवास के समरूप है। पच्चै वण्णा आदिशेष पर बैठे हुए पश्चिमाभिमुख हैं तथा आप परमपद नाथन कहे जाते हैं। तायर पावलवल्ली हैं तथा विमान प्रवाल विमान है। तीर्थ को चक्र तीर्थ कहते हैं।

पच्चैवण्णन मंदिर में पेरूमाल को पच्चैवण्णार तथा तायर को मार्गतवल्ली कहते हैं। नीम यहां का स्थल वृक्ष है। तायर यहां यंत्र के रूप में दर्शन देती हैं तथा आदिशेष दीपक बनकर तायर की रक्षा करते हैं। यहां प्रसन्न वरदराज एवं आन्डाल की अलग सन्निधियां हैं।

3। महिमा ः कांचीपुरम का 'का' ब्रह्मा का प्रतीक है तथा 'अंजीरम' अर्चित का सूचक है यानी जहां पेरूमाल ब्रह्मा से पूजित हों वह स्थान कांचीपुरम है। ब्रह्मा से सरस्वती नाराज थीं इसलिये कांची के यज्ञ में विघ्न डाल रही थीं। सरस्वती द्वारा भेजे गये असुरों को पेरूमाल ने नष्ट कर दिया तथा असुरों के खून से पेरूमाल प्रवाल यानी मूंगा की तरह लाल

दिखने लगे। इसलिये आपका नाम पवलवण्णा हुआ।
यह भृगु ऋषि का तपस्थली माना जाता है। भगवान के वक्षस्थल पर लात मारने से दुखी होकर भृगु मुनि ने अपने को अपराधी माना तथा इस स्थल पर तपस्या की। वैकुंठ के स्वरूप में आदिशेष पर बैठे हुए मुद्रा में भगवान ने मुनि को प्रसन्न होकर दर्शन दिया। तिरूमंगै आळवार को भगवान के रंग से विस्मय हुआ और संत ने पूछा कि आपका कौन सा रंग है ः कडलमल्लै का, या तिरूप्पेर का, या तिरूपरकडल का। सत्ययुग में पेरूमाल श्वेत रंग के दिखते हैं। त्रेता में लाल रंग के दिखते हैं तथा द्वापर में हरे रंग यानी पच्चैवण्णन, और कलियुग में नीले रंग में दर्शन देते हैं। ध्यान से देखने पर पवलवण्णन मंदिर तथा पच्चैवण्णन मंदिर के पेरूमाल के रंग में अंतर दिखता है।

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, तिरूनेडुन्दाण्डगम् **2060** |

ःः

अन्य दिव्य देशों कडलमल्लै तथा कांची का उदाहरण देकर आळवार संत प्रभु को खोज रहे हैं तथा बताते हैं कि पर्वतराज मलय की बेटी पार्वती के पति शिव आपके पास खड़े रहते हैं। पवल वण्णा कांची के प्रभु, क्षीरसागर में सोने वाले प्रभु, धरा के प्रभु, ऊंची बर्फ शिखरों पर खड़ा होने वाले प्रभु। आप कहां हैं ? आर्तभाव से घूमते आपको खोज रहे हैं। तिरूमुड़ीकड़म के प्रभु, जहां भावी पीढ़ी सदा आपकी पूजा करेगी।
परकाल नायकी की मॉ बेटी के लिये आर्तभाव से निवेदन करती है। रेशमी वस्त्र से सजकर हमारी बेटी अचेत हो जाती है। अपनी गुड़ियों को तो चाहती ही नहीं। अश्रुपूरित सूजी आंखों से शायद ही कभी सोती है। हमारे गोद में खाने के लिये एक क्षण भी नहीं बैठती। पूछती है 'हमारे तिरूवरंगम के प्रभु कहां हैं ?' मैंने ज्योतिषी से पूछा 'उसके साथ किसने ऐसा किया है ? ' वह स्वयं बोली 'सागर सा सलोने प्रभु ने'। अब कौन हमारी बेटी को बचा सकता है ? 'शेषशायी प्रभु सुगंधित बागो से घिरे तिरूवाली के राजकुमार' बोलकर हमारी बेटी गाती एवं नाचती है। गरूड़ के पंखों की तरह उसकी भावना उमड़ती है। कहती है 'सखियों ! क्या हम तिरूवरंगम जाकर नाचेंगे ?' मॉ अपने को कोशती है। हाय ! मुझे जगत से अपयश मिला। बोलेगी 'पर्वत उठाये तूफान रोकने वाले प्रभु' तब 'सुगंधित बागों से घिरे कांची के उरकम प्रभु' तब फिर 'धनुषभंग के बाद पतली सीता को आलिंगन करने वाले प्रभु, वेक्का के मंदिर में सोने वाले हमारे राजा। सुग्गे को शब्दशः बोलने के लिये सिखायेगी, तब अपने कड़े उरोजों पर रोयेगी। अपने सुग्गे को बोलते सुनी अरंगम के नाथ, वेदांतियों के मन में सदा बसने वाले, तिरूतन्का के प्रकाश पुंज, वेग्का के पन्ना, तिरूमल प्रभु'। अपने सुन्दर वीणा को वक्षस्थल पर रखकर मुस्कराती है। तारों पर

अंगुलियों को लाल होने तक गायेगी 'ऊंची दीवारों से घिरे कांची के हाथी' 'सागर में शयन करने वाले मीठे फल' 'कुमुद खिले सरोवरों से घिरे अलंदूर के खड़े प्रभु', सुगंधित बागों से घिरे कन्नपुरम के मीठे फल, उत्तर वेंकटम के प्रभु, विशाल बागों से घिरे तिरूनरैयूर के प्रभु, घने घुंघराले काले वाले मधुर सखा' कड़े उरोजों पर अश्रु बहाते गाती हुई अचेत हो जायेगी। नर कबूतर को अपने लाल चंगुल वाली मादा साथी से धीरे से बोलते सुनकर गहरी सोंच में पड़ जाती है। तिरूतन्का, तिरूकुडन्दै, एवं तिरूकोवलूर के प्रभु को याद कर गायी एवं नाची। हमने पूछा 'प्यारी बेटी क्या यह अपने कुल को शोभा देती है ?' बोली 'तव मैं तिरूनरैयूर पर गाउंगी। वह गाती है आप श्रीरंगम में रहते हैं'। स्वयं पूछती है 'यह कहां है ?' तब स्वयं बोलती है 'मैं आपके निवास तिरूमलै जा रही हूँ।' क्या यह इसका प्रमाण नहीं है कि वह अपनी संतुलन गंवा चुकी है ? तिरूप्पेर एवं तिरूकुडन्दै प्रभु के बारे में गाती हुई सुन्दर कमल सरोवर में डुबकी लेने गयी। पासुर **2071** में प्रभु पर बेटी की निश्छल श्रद्धा देख माँ अपने भाग्य को सराहती है। शस्त्र से सुसज्जित लंका के राक्षस राज के साथ प्रभु ने घोर युद्ध छेड़ा। समुद्र पार करके किला की दीवारों पर चढ़ते हुए आपने उसके धन एवं वैभव को नष्ट किया तथा नगर को जलाकर धूल में मिला दिया। हजार हाथों वाले बानासुर को नाश करने वाले आप सार्वभौम प्रभु हैं। आपने धरा को प्रलय जल से निकाला, धरा को निगल गये एवं पुनः उगल कर बाहर निकाला, धरा को दो कदमों में माप दिया, एवं धरा पर शासन भी किया। मेरी बेटी को आपका हजार नाम बोलते सुन संसारवाले हमारे सौभाग्य की सराहना करेंगे।

पासुर **2072** से परकाल नायकी स्वयं प्रभु के आगमन का वृतांत अपनी सखियों से सुनाती है। हे बहन ! सम्मानीय युगल की तरह धनुष को अपना साथी बनाये हमारे सामने प्रभु खड़े हो गये। आपकी सुगंधित काली लटें दोनों तरफ कंधों तक लटक रही थी। दोनों कान में मकराकृत कुण्डल चमक रहे थे। आपके हाथ लाल कमल के समान थे एवं होंठ, आंखें, तथा चरण भी उसी तरह अरूणाभ थे। आपको देखकर हमलोग डर गये कि धरा पर कोई देवता पधारे हैं। हमलोगों पर चुपके से देखते हुए आप मृदु पन्न नैवलम तथा राग मध्यमावती प्रस्तुत कर रहे थे। तब लज्जा दिखाते हुए गीत गाते रहे। एक क्षण में हमारी आंख एवं मन दोनों आपके चरण पर जा टिके। मेरे कंगन ढ़ीले पड़ गये एवं कमरबन्द गिर गया। आपके कान के कुण्डल एवं चारों कंधे मेरे सामने विशाल दिख रहे थे। मैं पूछी 'हमारे प्रभु का घर कितनी दूर है ?' आपने उत्तर में कहा 'यह क्या मेरा सुन्दर तिरूवाली नहीं है ?' अमृत बहाते तुलसी की माला पहने प्रभु के साथ का साक्षात्कार स्वप्न की तरह लुप्त हो गया। आप हमारे कंगन एवं सौंदर्य प्रसाधन लेकर चले गये और छोड़ गये वेदना

ग्रस्त हृदय तथा कहते गये 'तिरूवरंगम यानी श्रीरंगम हमलोगों का नगर है'। देखते देखते मैं बोली 'पक्षी की सवारी करने वाले चोर, मत जाइये'। तब भी आप चले गये, यही तो हमलोगों की वेदना है। घने बादल पर आपका मुखमंडल बिजली की तरह चमक रहा था। पासुर **2077** एवं **2078** में नायकी प्रभु के पास दूत भेजती है। सुगंधित बागों में अपने प्रेयसी के साथ प्रस्फुटित फूलों में बैठ कर साथ अमृत पीने वाले छः पैरों वाला भौंरा ! सुन्दर अलन्दूर में रहने वाले चरवाहे प्रभु के पास बिना किसी भय के जाकर बताओ कि एक लड़की आपसे प्रेम करती है। कुछ छण रूक कर आपके हावभाव को देख लेना। हे लाल चंगुल वाले प्यारे सारस ! कन्नपुरम के साथी राजीव नयन प्रभु के पास जाकर मेरे प्रेम के बारे में बताओ। अगर तुम ऐसा करते हो तो यह सारा संपन्न क्षेत्र सदा के लिये तुम्हारा होगा। पासुर **2079** में पूर्व के साक्षात्कार का स्मरण करती है। हे बहन ! उस दिन के आगमन के बारे में उत्सुकता पूर्वक सोंचते हुए मैं प्रभु के लिये हमेशा के लिये प्रतीक्षा करूंगी कि मैं उनको अपने मुर्झाये हुये उरोजों से बांध कर अपने दुखी अंगों को आनंद मनाने दे रही हूँ। पासुर **2080** में प्रभु का आश्रय प्राप्त करने की कामना एवं विश्वास से नायकी अपना पूर्ण समर्पण प्रकट करती है। घोपकिशोरी नप्पिनाय के प्रभु जिन्होंने सागर को मथा एवं सागर पर सेतु का निर्माण किया आप मेरे प्रभु हैं। राक्षसराज एवं उसके सभी जनों को आपने महान धनुष से छोड़े गये बाणों से नष्ट किया। आपने गोवर्द्धन पर्वत उठाया। आप ताजा जल वाले तिरूविण्णगरम में रहते हैं। आप शीतल तिरूकुडन्दै के प्रभु हैं। आप शाश्वत हैं। मैं नीच पशु के समान सा जीव सदा केवल आपके लिये हीं सोचती रहूंगी।

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

नालायिरा **4000** पासुर वाले दिव्यप्रबंधम का द्वितीय हजार का भाग पूरा हुआ।

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

दिव्य प्रबंधम (इयर्पा) ः एक विहंगम अवलोकन

इयर्पा दिव्य प्रबंधम का तीसरा हजार है। रामानुज नुट्रन्दादि का **108** पाशुर लेकर इयर्पा में कुल **817** पाशुर हैं जो कुल **11** प्रबंधों में संकलित हैं। स्मरण हो कि पहले एक हजार वाले भाग में **9** प्रबंध थे तथा दूसरे हजार वाले भाग में **3** प्रबंध थे। इसतरह से इस तीसरे हजार वाले भाग में जिसे इयर्पा कहते हैं **11** प्रबंध समेकित प्रबंध संख्या **13** से चलकर प्रबंध संख्या **23** पर अंत होते हैं।जितने तिरूवन्दादि प्रबंध हैं सबों की विशेषता यह है कि एक पाशुर का अंतिम शब्द अगले पाशुर का प्रारंभ का शब्द बनता है।

इयर्पा के प्रवधों एवं संबंधित आळवार संत निम्नवत हैं।

तालिका 1 का अंश ः तीसरे हजार यानी इयर्पा के प्रबंधों की नामावली

आळवार संत प्रबंध	रीति 1 पाशुर कमांक	रीति 2 पाशुर कमांक
पोय्गैयाळवार सरोयोगी		
13 मुदल्तिरूवन्दादि	**2082 से 2181**	**2082 से 2181**
भूदत्ताळवार भूत योगी		
14इराण्डाम् तिरूवन्दादि	**2182 से 2281**	**2182 से 2281**
पेयाळवार महयोगी		
15 मून्राम तिरूवन्दादि	**2282 से 2381**	**2282 से 2381**
तिरूमळिशैयाळवार भक्तिसार स्वामी		
16नान्मूगन तिरूवन्दादि	**2382 से 2477**	**2382 से 2477**
नम्माळवार शठकोप स्वामी		
17 तिरूविरूत्तम	**2478 से 2577**	**2478 से 2577**
18 तिरूवाशिरियम	**2578 से 2584**	**2578 से 2584**
19 पेरिया तिरूवन्दादि	**2585 से 2671**	**2585 से 2671**
तिरूमङ्गैयाळवार परकाल स्वामी		
20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	**2672**	**2672**
21 शिरिय तिरूमडल	**2673 से 2710**	**2673**
22 पेरिय तिरूमडल	**2711 से 2790**	**2674**
तिरूवरङ्गत्तमुदनार		
23 इरामानुश नुट्रन्दादि	**2791 से 2898**	

प्रबंध **13**। मुदल्तिरूवन्दादि ः **2082 से 2181**

इसमें **2082** से **2181** तक **100** पाशुर हैं। स्मरण हो कि पूर्व के दूसरे हजार का अंत प्रबंध

संख्या **12** पर हुआ था तथा पाशुर का अंत **2081** पर हुआ था। अतः इस तीसरे हजार वाले सहस्र गीती का प्रारंभ पाशुर **2082** से एवं प्रबंध संख्या **13** से होता है। इसमें कुल **100** पाशुर हैं। यह पोय्गैया आळवार यानी सरोयोगी स्वामी की कृति है। आश्विन मास (जिसे तमिल में आयप्पासी कहते हैं) के श्रवण नक्षत्र (यानी तमिल नाम तिरूवोनम) में पाञ्चजन्य शंख के अंश से तमिलनाडु के कांचीनगर में यथोक्तारी भगवान के पास के एक सरोवर में आप अवतरित हुए इसीलिये आपको सरोयोगी कहा जाता है।

प्रारंभ के तीन आळवार सरोयोगी भूतयोगी तथा महयोगी समकालीन थे। दैव संयोग से तीनों तूफानी वर्षा से रक्षा ढूंढ़ते एक दिन तिरूक्कोईल्लूर में एकत्रित हो गये। वर्षा के प्रारंभ में एक आळवार पहले एक छोट से संकीर्ण स्थान में जो किसी घर का प्रवेश देहली था विराजमान थे। देखें पाशुर **2167** जिसमें आळवार संत ने स्वयं इस स्थान का उल्लेख किया है। दूसरे आळवार वर्षा से बचने हेतु स्थान खोजते वहां पहुंचे। लेटे हुए प्रथम आळवार बैठ गये एवं उन्होंने दूसरे आळवार का स्वागत किया। स्थान इतना तंग था कि एक आदमी लेट सकता था परंतु दो आदमी किसी तरह बैठ सकते थे। इसी बीच तीसरे आळवार भी भारी वर्षा से सिर छिपाने के लिये जगह खोजते पहुंच गये। दोनों बैठे हुए आळवार संतों ने तीसरे का स्वागत खड़ा होकर किया। किसी तरह से तीनो उस संकीर्ण स्थान में खड़ा हो सकते थे। भीषण वर्षा से सर्वत्र अंधकार छा गया था। तीनों संतों को कुछ कसमससाहट अनुभव हो रहा था। इसीबीच बहुत तेज बिजली चमकी और तीनों ने अपने बीच नारायण हरि को विराजमान देखा। तीनों अपने हृदय के उद्‌गार से प्रभु की प्रशस्ति गाने लगे। यही प्रशस्ति एक एक करके तीनो आळवार संत के नाम यहां प्रस्तुत है। तीनों के गीत में प्रत्येक में सौ सौ पाशुर हैं। सरोयोगी ने जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) अरंगम यानी श्रीरंगम, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) वेग्का यानी यथोक्तारी भगवान कांची, (v) कोइलूर जहां देहली में तीनों संतों का समागम हुआ था, (vi) क्षीरसागर

कुछ छिटपुट बातें जिसका यहां आळवार संत ने उल्लेख किया है।

✐ शिव एवं नारायण का स्वरूप **2085 2086 2179**

✐ शिव को ब्रह्मा की खोपड़ी से शाप मुक्त करना कई स्थलों पर वर्णित है। देखें पाशुर **2127, 2155 2178**

✐ लक्ष्मी का स्वरूप **2123**

✐ कोइल्लूर में घर की देहली में तीन आळवारों का जमा होकर प्रभु का स्वरूप देखना **2167**

सरोयोगी ने पृथ्वी को एक दीपक बताया जिसमें समुद्र तेल का प्रतीक है तथा सूर्य बत्ती का

प्रतीक है। प्रभु के चरणों में इस गीत को समर्पित कर आळवार संत यशोगान का प्रारंभ करते हैं। जिस पर आपने सेतु बनाया एवं जिस पर आप शयन किये उसी समुद्र का मंथन हुआ। जिस धरा को आपने बनाया, ऊपर उठाया, खा गये तथा पुनः बनाये, उसी का आपने उपहार लिया। एक पैर आकाश में तथा एक पैर सागर किनारे। आप बढ़ते गये, बढ़ते गये, पता नहीं कैसे ?

पीपल वृक्ष के नीचे विषकंठ शिव ने कैसे दक्ष, पुलस्त्य, अगस्त्य, एवं मार्कण्डेय को योग की शिक्षा दी। उनलोगों ने पांचों इन्द्रियों के युद्ध द्वार को बन्द कर यह अनुभव किया कि केवल आप ही मुक्ति के मार्ग हैं। उनके नाम हैं हर एवं नारायण, एवं उनकी सवारी है वृषभ तथा पक्षी। उनके शास्त्र आगम एवं वेद, उनके घर कैलास पर्वत एवं क्षीर सागर, उनके कार्य प्रलय एवं पालन, उनके अस्त्र भाला एवं चक्र, उनके रंग अग्नि एवं बादल, और तब भी आप सबों के लिये एक हैं।

हे लोगों ! सागर सा सलोने प्रभु को मैं नहीं भूल सकता। जब हम गर्भ में आये आपकी पूजा के लिये हाथ जोड़ा। अब मैं दक्षिण दिशा में ध्यान रखता हूं जिस तरफ अरंगम के प्रभु देख रहे हैं ः यम दिशा की ओर। दिशायें एवं उनके देवगन, हर दिशा में उनके देव की पूजन विधि, ये सब चमत्कारिक प्रभु कृष्ण के बनाये हुए हैं। तिरूमल प्रभु ! पुराकाल के युद्ध में आपने अद्‌भुत शंखध्वनि की एवं तीक्ष्ण चक्र चलाये। लेकिन उज्ज्वल सूर्य को आकाश में रथ के चक्के से क्यों छिपा दिया ? विशाल स्वरूप में चरणारविंद से आप ने धरा को मापा जबकि संसार भयग्रस्त था एवं स्वर्गिक जन कांप रहे थे। जब वृहत वराह के रूप में आपने धरा को अपने दांत पर उठा लिया तब आपके दांत टूटे कैसे नहीं क्योंकि धरा एक ही दांत पर टिकी थी। कहते हैं यह सच है कि आपने पृथ्वी पर्वत समुद्र वायु एवं आकाश को निगल लिया। जरा सोंचो, क्या आपका मुंह इतना बड़ा था जितनी बड़ी पृथ्वी है ? धरा मापने वाले प्रभुने चाव से शिशु के रूप में पूतना राक्षसी का स्तन पिया। हमारे हाथ आपके सिवा किसी अन्य को प्रणाम नहीं करेंगे। मेरे होंठ दूसरे की प्रशंसा नहीं करेंगे, मेरी आंखें किसी और रूप को नहीं देखेंगी, एवं दूसरे नामों को कान नहीं सुनेंगे। कान एवं अन्य इन्द्रियां, पांच मुख्य तत्व, पांच अनुभव करने वाली इन्द्रियां, पांच चालक इन्द्रियां एवं भीतर का एक शाश्वत प्राणी सभी प्रभु के स्वरूप हैं जो वराह बन कर आये थे।

तुलसी धारी नारायण के चरण प्राप्त करने के लिये सभी देवगन उपाय खोजते रहते हैं। पूर्व के सम्यक अध्ययन एवं अभ्यास से वे दैविक स्तर प्राप्त कर सके हैं। तब भी धरा को मापने वाले प्रभु आदिनाथ हैं एवं सर्वोपरि हैं। सभी देवों में त्रिमूर्ति सर्वोपरि हैं एवं त्रिमूर्ति में सागर सा सलोने प्रभु सर्वोपरि हैं। बेकार के दिन बीतते गये। हम भयग्रस्त होकर

सेवा तरंगे कर रही थी। हमने आपकी पूजा की। प्रभु गरूड़ की सवारी करते हैं। आपने अपने तीक्ष्ण पंजों को हिरण्य की छाती में घुसा दिया। कहते हैं जब आप धरा माप रहे थे आपके चरण धरा पर फैल गये भुजायें दिशाओं में छा गयी एवं मुकुट आकाश में छा गया।

प्रभु ने स्तन का जहर पिया, रस्सी के छींके से लटकते मक्खन खाया, मदमत्त हाथी का सामना कर उसके दांत उखाड़े, दो मरूदु वृक्षों के बीच अति संकीर्ण स्थान से पार किया, एवं दुष्ट पक्षी का चोंच चीरा। प्रभु ने धरा को निगला एवं बट पत्र पर सोये। जब प्रभु सोते हैं तो तुम उनके शरीर की रक्षा करते हुये आनंद मनाते हो। कौन सी तपस्या से तुमको यह सौभाग्य मिला ? आपने अपने माता पिता की बेड़ी को हटाया एवं स्वयं शत्रु के कारागार से बाहर निकल कर किसी और के घर में पाले गये। आपका अस्त्र चक्र है, सवारी पक्षी है, एवं शेष विछावन है। केवल हम ही नहीं सारा जगत जानता है कि प्रभु ने गोपियों के सुगंधित मक्खन खाये एवं रस्सी से बांध दिये गये जिसका चिह्न उदर पर विराजमान है। शारंग धनुष की डोरी से आपकी अंगुली पर निशान बन गये। गाड़ी को ठोकर मारने से आपके पैर पर निशान बन गये। जब आप हिरण्य की छाती चीर रहे थे और लक्ष्मी भी डर गयी थीं उस समय भी आपकी अंगुली पर निशान बन गये। जब आपकी अंगुलियों एवं होठ पर मक्खन निशान की तरह लगे थे तो गोप नारी यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी। उस समय लोग देख रहे थे, क्या आपने रोया एवं चिल्लाया नहीं ? बताओ।

सागर में सोये प्रभु पर्वत पर मणि के समान शोभायमान दिखते हैं। तिरूवेंकटम में पूजा करते हुए जो तुलसीधारी प्रभु का ध्यान करते हैं वे सारे कर्मों के बोझ से मुक्त हो जाते हैं। पर्वत को उलट देने पर वह गायों के लिये छाता हो गया। प्रभु ने केसिन घोड़ा का जबड़ा चीरा, एक बाण से सात पेड़ों को बेधा, मदमत्त हाथी का दांत उखाड़ा एवं कुरून्दु के पेड़ों को नष्ट किया। वेंकटम प्रभु के हाथ में इतनी शक्ति है।

खमल समान लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर रहती है। आपके नाभिकमल पर ब्रह्मा रहते हैं। वदन के छोटे हिस्से पर त्रिपुर विनाशक शिव रहते हैं। हृदय से बुरे विचारों को हटाते हुए स्थिर भक्तिभाव वाले ऋषिगण तुलसीधारी प्रभु के चरणों को वैसे हीं पा जाते हैं जैसे प्रेम से बछड़ा अपनी मॉ गाय से मिलता है। आपके चरण को छोड़कर और कोई वस्तु ध्येय है क्या ? संदेह मुक्त हो सदा आपका ध्यान करते, बाहरी बयार से मन को अलग रख जो प्रभु को अपने हृदय में प्रेम से रखता है वह हजार फनवाले शेष पर शयन करते प्रभु के निवास को प्राप्त कर लेता है। बिना प्रेम का प्रभु के नाम का ध्यान कर

अगर केवल गिनती में संध्या बंदन कोई करता है तो यह किस काम का होगा ? राक्षसी ने अपना स्तन पिलाया तो मृत्यु को प्राप्त हो गयी जबकि गोप नारी यशोदा ने अपना स्तन आप को पिला कर प्रेम से पालन पोषण किया। प्रेम एवं भक्ति से जब भक्त कोई भी शब्द बोलता है तो वह आपकी शुद्ध प्रशस्ति हो जाती है। क्या आपके चरण को प्राप्त करने का यह उपाय नहीं है ?

क्या उसकी बढ़ती शक्ति को रोकने के उद्देश्य से आपने ऐसा नहीं किया कि जो धरा आपकी थी उसी का आपने उपहार लिया ? श्वेत शंख बजाने वाले तिरूमल प्रभु का चहेता निवास वेंकटम है। ऊंची मेधा एवं ज्ञान वाले वैदिक ऋषि चारों तरफ से दीपक सुगंधित धूप एवं जल से आपकी पूजा करने के लिये एकत्र होते हैं। वेंकटम में प्रभु खड़ा रहते हैं जबकि गहरे सागर में सोये रहते हैं। जो आपने उठाया वही धरा है। पर्व त वही है जिसे आपने ऊपर उठा रखा था। कंस वही है जिस पर कूद कर आपने उसका बध कर दिया था। सच में हमारे प्रभु का गौरव महान है। । हे मन ! आज से लेकर आगे सदा के लिये चक्रधारी श्रीपति का ध्यान धर एवं यशोगान कर चाहे वह दिखावटी ही क्यों न हो।

श्री देवी, भू देवी, एवं नीला देवी दूध का बौछार करने वाले सागर में आपकी सेवा करती हैं एवं जहां आप फनधारी सर्प पर विश्राम करते हैं। आपका हृदय श्रीदेवी पर लगा रहता है। यह कैसे ? वही अपने हृदय में जानती हैं।

प्रभु की पूजा फूलों एवं ताजे जल से की जाती तब हृदय कचरा एवं पूर्व कर्मों से मुक्त हो जाता है तथा संपन्नता स्वतः आती है। भक्तों पर ऐसी दया है। भक्तगण जिस रूप में प्रेम से प्रभु को देखना चाहते हैं उसमें देखते हैं। आप वही नाम स्वीकार कर लेते हैं जिससे पुकारा जाता है। आपका वही स्वभाव हो जाता है जिससे प्रेमपूर्वक हृदय में ध्यान किया जाता है। प्रभु देवों की सहज पहुंच में हैं लेकिन उससे भी ज्यादा हमलोगों की पहुंच में हैं। राक्षसराज रावण ब्रह्मा का उपासक था परन्तु प्रभु ने शत्रु के सिर अपने पैर के अंगूठों से गिना। हम प्रभु की दया की गिनती कर लें। वेदोच्चार करने वाले ब्रह्मा का गौरवशाली सिर रूद्र का भिक्षा पात्र बन गया। हमारे प्रभु ने अपने हृदय के रस से उसे भर दिया एवं उन्हें शाप से मुक्त कर दिया।

आपदाग्रस्त स्वर्गिक हाथी की प्रभु ने रक्षा की। जो अपने पांच इन्द्रियों रूपी हाथियों को नियंत्रण में रखते हुए प्रभु पर स्थिर मन से चित्त लगाते हैं वे अवश्य श्रीचरणों का दर्शन करते हैं। आपने एक पैर से नमुची को फेंकेत हुए एक हाथ से उसे हवा में घुमा दिया एवं दूसरे हाथ से चक्र चलाया जिसे देखकर देव दानव भयग्रस्त हो गये। चुने हुए नूतन

पुष्प को प्रेम से फैलाने वाला ही माबली से धरा पाने वाले प्रभु के चरणों का सुलभता से दर्शन कर सकता है। प्रभु अपने चरणों का आसानी से दर्शन देंगे। हठी हिरण्य का नाश करने के लिये प्रभु नरसिंह बनकर आये। आठ अक्षर वाले मंत्र से प्रभु का ध्यान कर। आठ वसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्य, एवं दो अश्विनी कुमार प्रति दिन नूतन पुष्प के साथ तिरूमल प्रभु की प्रशस्ति गाते हुए करबद्ध हो पूजा अर्पित करते हैं। तिरूमल प्रभु के पास एक नाग है। जब आप चलते हैं तो वह छत्र बन जाता है। जब आप बैठते हैं तो वह सुन्दर सिंहासन बन जाता है। जब आप खड़ा होते हैं तो वह पादुका बन जाता है। जब गहरे सागर में शयन करते हैं तो वह सुकोमल शय्या एवं बांह को सुखपूर्वक टिकने का आधार प्रदान करता तथा उसकी आंखें ज्योति प्रदान करती हैं। विदित हो कि यमदूत यह कहते हुए चले जाते हैं 'प्रभु के भक्तों के कर्मों का कुछ भी लेखा हो, ये हमारे नाथ के दास हैं'।

बार बार प्रभु का नाम जपने से ही प्रभु के बारे में जानकारी मिलती है। दूसरा उपाय कोई जानता है क्या? जानता होगा परन्तु कृष्ण के नाभि कमल पर बैठने वाले ब्रह्मा भी प्रभु का चरणारविंद नहीं देख सकते। प्रभु मैं आपके चरणारविंद को ही प्राप्त करना चाहता हूँ। गीत की माला से ही हमने 'नमो नारायणा' सीखा। रे मन ! चुने हुए नूतन पुष्प एवं सुगंधित धूप से पूजा करके ही उठो, जागो, एवं सफलता पाओ। सीखे हुए सभी शुद्ध मंत्र पूज्य प्रभु की पूजा के लिये हैं। प्राप्त करो, आलस मत करो। सागर से घिरी धरा, प्रलय कालीन बाढ़ के बाद का समय, सुन्दर गहरा सागर, पर्वत, हवा, पेड़ एवं आकाश सभी तिरूमल एवं श्रीदंपति की ईच्छा से निर्मित हैं। नीच की संगति छोड़ कर अब मैं ऊच्च जनों के साथ र हूँगा। दूसरे के धन की कभी चाह नहीं रखूंगा एवं तिरूमल को छोड़कर दूसरे देव की प्रशंसा नहीं करूंगा। मैं दृढ हूँ। कर्मों का संचय कैसे होगा ? सारी नदियों की दौड़ का सागर ही अंतिम लक्ष्य है। कमल प्रस्फुटित होकर उदयकालीन सूर्य की ओर घूमा रहता है। सारे जीवित प्राणी मृत्यु के देवता के पास गिरते हैं। कमल वाली लक्ष्मी के नाथ ही साक्षात्कार के एक मात्र लक्ष्य हैं। आपने शिशु के रूप में सातों लोक को निगल लिया एवं एक तैरते बट पत्र पर सो गये। अगर यह सच है तो बट वृक्ष कहां था प्रलय सागर में या आकाश में या धरा पर ? हरे भरे पर्वत उठाने वाले प्रभु बोलिये न, विनती है। जब मुंह में बाणी रहे, शरीर काम करे, नूतन फूल माला से, यज्ञ से, तंत्र एवं मंत्र से तिरूमल प्रभु की पूजा कीजिये। हे मन ! अगर प्रभु के नाम का गान कर प्रशस्ति कर सको तो तेरा काम अच्छे तरीके से हो गया। व्याधि एवं क्षीणता से मुक्त अगर तुझे चार युगों तक धरा का शासन करना पड़े तब भी चक्रधारी प्रभु के प्रेम को न

भूल।

प्रशंसा करो या दोष लगाओ, आदर करो या निरादर करो, प्रभु को सब स्वीकार है। क्या प्रभु महान सागर, पर्वतों, मैदानी क्षेत्र, वायु, शरीर एवं जीवन, सभी अपने भीतर नहीं रखते ? आप शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। आपने जब चरण ऊंचा उठाया तो ब्रह्मा ने उसे धोया। आप ने शिव की रक्षा की जो वृषभ की सवारी करते हैं, तीन पुरियों के विध्वंसक हैं, जटा धारी हैं, भस्म लगाते हैं, आधे नारी शरीर के हैं, एवं गंगा के प्रवाह को अपने शिर पर लेने वाले हैं। सिर जो प्रभु के चरणों पर झुकेगा उसे उपाय सुलभ होगा। जो आपका स्मरण करता है उसको वृद्धावस्था का डर नहीं होता। युगकालीन वेद बताते हैं कि जो सम्यक तरीके से आपकी पूजा करता है उसे पूर्ण आत्मज्ञान मिल जाता है। धरा मापने वाले प्रभु के प्रति प्रेम सर्वस्व वैकुंठ को प्राप्त कराता है।

वेंकटम में आप खड़े हैं, गौरवशाली आकाश यानी वैकुण्ठ में आप बैठे हैं, वेग्का में आप शयनावस्था में हैं, हरेभरे नगर कोईलूर में आप चरण उठाये हैं। जब माबली से जमीन मांगने पर आपने वदन का विस्तार कर चरण को बढ़ाया तो आभूषण वाले हाथ सभी दिशाओं में फैल गये।उपहार पाने वाले पर सभी ने दोष मढ़े परंतु देनवाले को किसी ने कोई दोष न लगाया। जब आश्रय मांगते सुमुख नाग आपकी शय्या से चिपक गया था तो सुरक्षा की प्रतिज्ञा करते हुये विशाल हृदयवाले प्रभु ने उसे उसके परम शत्रु गरूड़ को दे दिया। यह जानकर अपने आश्चर्यमय प्रभु को छोड़कर क्या कोई अन्य देवता की पूजा करने जायेगा ?

वेल जैसी आंखों वाली सुन्दर नारियां हाथ में सुगंधित धूप एवं फूल लेकर पुरा काल में हिरण का बध करने वाले प्रभु की पूजा के लिये द्वादशी को प्रतीक्षा करती हैं जो वेंकटम में रहते हैं। जब प्रभु ने गायों की रक्षा की तो पर्वत छाता बन गया एवं आपकी भुजा छाते का डंडा। आपको मापने के लिये धरा कितनी बड़ी थी ! जब आप वराह के रूप में आये तो यह आपके दांतो के बीच में कितनी छोटी थी कि आ गयी ?

सुन्दर बागों से घिरे कोवल नगर में एक घर के ड्योढ़ी में कमल वाली लक्ष्मी के साथ पधारकर आपने हमलोगों पर दया दिखायी।पासुर **2167**।

अब नरक के द्वार पर कोई नहीं जायेगा। यमदूतगन ! बिना क्रोध किये अच्छा है ताला लगाकर (नरक पर) चले जाओ। सब कुछ छोड़कर मैं हर दिन आपके चरण की पूजा करता हूँ। गाता हूँ तो केवल आपकी प्रशस्ति। आपके दिव्य चरण का ही फूल धारण करता हूँ। मेरा कौन मित्र है केवल प्रभु को छोड़कर। आप अपने आप में

अपनी बराबरी हैं आपसे बढकर कहां कोई है। धरा को उठाने वाले आदि वराह के चरण इस मांस के शरीर के पर्णकुटीर के भीतर हृदय की ज्योति हैं जो ज्ञान से अंधकार को दूर करते हैं। जो नित्य आप पर ध्यान नहीं करते उनकी मुक्ति कहां ?

पुरा काल में धरा को जो आपने खाया था उसका वमन कर दिया। क्या गोप नारियों के मक्खन आपके दिव्य उदर की पूर्ति के लिये पर्याप्त थे ? वैदिक ऋषि मार्कण्डेय को तब आप ने अपने पेट में सबकुछ दिखा दिया। जब हर मुंह में जीभ है, जब नमो नारायण मंत्र जपने के लिये सुलभ है, जब इन्द्रियों से बचने के आसान रास्ते हैं, आश्चर्य है कैसे कोई दुःख के गर्त में गिर सकता है ? आपदाग्रस्त हाथी की रक्षा करने वाले विशाल हृदय के प्रभु ! भस्म लगाये अग्निधारी शिव अपनी जटाओं से गंगा को निकालते हैं। क्याउसे अपने दिव्य चरण से स्पर्श कर आपने शुद्ध नहीं किया ? दिव्य सुनहले वर्ण के प्रभु दो स्वरूपों में घूमते हैं, जटाधारी शिव एवं धरा मापने वाले नेडुमल। देखो, तब भी एक दूसरे के भीतर समाहित हैं।

देखो, सार्वभौम प्रभु की अपनी सत्ता है। और हमेशा आपकी अपनी सत्ता है भक्तों के हृदय में, क्षीर सागर में, वेंकटम में। हे मन ! तुझमें प्रभु की सत्ता है। हे मन ! शीतल तुलसी की माला पहने प्रभु की सदा पूजा करो। चमत्कारी बालक ! जिन्होंने गाड़ी को अपने पैर से फेंक दिया। धरा को एक पग से मापने वाले केशव प्रभु ! प्रभु के दोनों चरण इस धरा पर देखे जा सकते हैं।

<u>प्रबंध 14। इरान्दाम तिरूवन्दादि **: 2182 से 2281**</u>

भूतद आळवार की इस कृति में **2182** से **2281** तक **100** पासुर हैं। आपका अवतार स्थल महावलीपुरम तिरूकडडमल्लै या थलशयनम प्रभु के मंदिर के पास है। आयप्पासी यानी आश्विन मास में धनिष्ठा यानी अवित्तम नक्षत्र में आपने कौमोदकी गदा के अंश से अवतार लिया।

यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) अरंगम यानी श्रीरंगम, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) तिरूक्कोट्टियूर जहां गोष्ठीपूर्ण स्वामी का अवतार हुआ, (v) मलिरूमसोलै यानी सुन्दरबाहु भगवान, (vi) तिरूनिर्मलै, (vii) क्षीरसागर, (viii) तिरूअनंतपुरम, (ix) पडकम या पांडवदूत कांची, (x) अत्तियुर यानी वरदराज पेरूमाल कांची, (xi) कुडन्दै, (xii) तंजैमामणि, (xiii) कोवलूर, (xiv) कडमल्लै।

✐ कुछ छिटपुट बातें जिसका यहां आळवार संत ने उल्लेख किया है।

✐ नारायण मंत्र **2183, 2201**

✐शिव को ब्रह्मा की खोपड़ी से शाप मुक्त करना कई स्थलों पर वर्णित है। देखें पासुर **2198 2244 2277**

✐लक्ष्मी का स्वरूप **2185, 2233, 2237, 2239, 2263**

✐मुक्त जीव जो इस जगत में जन्म लेते हैं वे सांसारिक सुखों का त्याग कर प्रभु की पूजा करते हैं। **2223**

✐तमिल का सबसे बड़ा कवि **2255**

✐प्रभु के चरणारविंद एक समान हैं **2255, 2257, 2261**

प्रेम हमारा दीपक है जिसमें उत्सुकता तेल है एवं मेरा हृदय बत्ती है। अपने आपको द्रवित कर हम दीपक को जलाते हैं एवं तमिल ज्ञान के इस माला को अर्पित करते हैं। अगर हम नारायण एवं अनेकों अन्य नामों का, अनेकों मंदिरों में गान करें, तो क्या हमारी पूजा हमें प्रभु के पास देवों के समूह में एक स्थान नहीं दिलायेगी ? सागर में शयन करते रूवरूप के चरणाविंद का फूलों से अर्चना करने से भक्तों की श्रेणी में गिनती होती है और वैकुंठ में प्रवेश की योग्यता हो जाती है। वैकुण्ठ में आप मोती रत्न एवं हीरा जड़ित तथा फूलों से सुसज्जित छत्र के नीचे कमल वाली लक्ष्मी को दायें धारण करते हुए बैठे रहते हैं। हम आपके चरण की पूजा करते हैं। आपने तीन पग जमीन मांगी परंतु सारी धरा ले ली। तीन ही पग जमीन क्यों मांगी, दो पग भी तो पर्याप्त होता ? जो अपने इन्द्रियों को भीतर शमन करता है तथा हृदय के उद्गार से फूल चढ़ाकर नाम जपते हुए धैर्य पूर्वक पूजा करता है वह निश्चित रूप से सागर सा सलोने प्रभु के चरणों को प्राप्त करता है। उठे हुए पग से पभु ने विरोधियों के मुंह बन्द कर दिये तथा देदीप्यमान चक से उनकी आंखें चकाचौंध कर दी।

आपको अपने जहरीले स्तन पर लगाते हुए राक्षसी ने खुशी से दूध पिलाया जैसे कि आप एक सीधे सादे शिशु हों। परंतु तब तो आपने उसके दूध के साथ प्राण भी ले लिये। तब भी गोप नारी यशोदा आपके लिये बहुत ही चिंतित हुई एवं निर्भय होकर आपको अपने स्तन का दूध पिलायी। सागर से घिरी हुई सारी धरा जिसे आपने मापा एवं ले लिया क्या उसके प्रेम का उपहार हो सकता है ? प्रेम से परिपूर्ण हो हम फूल लेकर एवं सम्यक नाम का गान करते हुए खड़े हैं। हे रक्षक प्रभु ! शिशु के रूप में आपने गाड़ी को नष्ट किया। जमीन मांगकर आपने धरावासियों की रक्षा की। विनती है, हमें उचित दिग्दर्शन प्रदान करें। वैकुण्ठ के रास्ते के बीच स्वर्गिक जन आपके चरण की पूजा करते हैं तथा स्वर्ग का आनन्द उठाते हैं। हे सागर सा सलोने शाश्वत प्रभु ! उनलोगों में से कौन आपके चरण का संपूर्ण यशोगान कर सकता है ? एक भी नहीं। एक या दो

नहीं, सारा जगत शेषशायी प्रभु के चरणारविंद की पूजा करता है। यहां तक कि जाज्वल्यमान सूर्य, पुष्पासीन ब्रह्मा तथा ललाटनेत्री शिव, क्या वे प्रतिदिन आपका अनुसरण करते हुए आपकी पूजा नहीं करते ? हाथी कमलसरोवर में प्रवेश कर भयग्रस्त हो कांप उठा। तब फूल लिये सूंढ़ को ऊपर उठा आपकी पूजा की। क्या वह प्रभु के धाम में शीघ्र ही वहां से नहीं चला गया ?

मूर्खो ! प्रभु के मंदिर को भोजनालय समझते हुए पाप एवं दोषपूर्ण बातों में निरत मरणशील जनों की प्रशंसा करते हो। इसके बदले आठों दिशाओं में फैली बाहों वाले प्रभु का नाम लेते हुए भ्रमण करो एवं प्रभु का पावनजन बन जाओ। शीतल शेष शय्या पर सोने वाले युद्ध में रथवाहा बने। आपने एक मृग का पीछा कर सीता को गंवा दिया एवं कठोर भूमि पर सोये। क्या विरोधाभास ! यद्यपि हम यह नहीं जानते कि प्रभु कैसी सेवा हमसे लेना चाहते हैं परतुं हमें अपना चित्त प्रभु पर ही लगाकर रखना चाहिए। सरोवर के निर्माण के लिये जंगल काटकर हम बांध बना सकते हैं परंतु वर्षा कौन करायेगा ? जब शिव के आवेदन पर सकारात्मक होकर उन्हें पाप से विमुक्त कर दिया तबसे शिव भी आपका अनुसरण करने लगे तथा प्रार्थना करने लगे। इस तरह से दयाकरने की शक्ति किसमें हो सकती है ?

मर्यादामय वामन ने धरा को प्राप्त किया। डरावना सिंह ने हिरण्य की छाती चीर डाली। शिशु सातों लोक को निगल गये। पंखुड़ी समान कोमल चरण से आपने गाड़ी को तोड़ दिया जो ठीक नहीं किया। राक्षसी बछड़े को घुमाकर राक्षसी ताड़ फल पर पटक दिया, यह नहीं सोंचो कि आपने यह भी ठीक किया। संसार वालों की नजरों में ये सब गलत थे। भक्तगन प्रतिदिन बिना रूकावट के आपकी पूजा करते हैं तथा नारायण मंत्र को समझते हुए विश्वास पूर्वक जाप करते हैं। वे कुमार्ग छोड़कर आपके साथ का अच्छे जीवन की पहुंच में आ जाते हैं। वामन प्रभु के चरण धारण करने के लिये भक्तों के सिर तैयार हैं। यह सब होते हुए नरक जाना असंभव है। बलपूर्वक ठीक करने वाले तथा प्रेमपूर्वक स्वीकार करने वाले प्रभु का जब आश्रय लिया जाता है तो असंभव भी संभव हो जाता है। जल में जीवन के लिये संघर्ष करने वाले बलशाली हाथी की ईच्छा तब पूरी हुई जब झुककर उसने फूल समर्पित किया। नम्रता से झुकते हुए प्रभु वेष बदलकर आये एवं धरा को आपने अपने चरणों का आश्रय प्रदान किया। हे भक्त मन ! अच्छा एवं बुरा सब भगवान हैं। आप ही धरा, वायु, जल, अग्नि, एवं आकाश हैं, तथा पांचों इन्द्रियों में आप ही व्यक्त हैं।

आप ने जब युद्ध किया तब रावण का नाश किया। जहां आप खड़ा हुए वह वेंकटम की

बांसबाड़ी है। वेंकटम प्रभु का पावन धाम है जहां आपकी अर्चना स्वर्गिक तथा वैदिक ऋषिगण करते हैं। जो मन प्रभु को खोजता है तथा वेंकटम के प्रभु के स्वरूप का ध्यान करता है वह उस लता की तरह है जो एक वृक्ष का सहारा पाकर शीघ्र हीं बढ़ते हुए चांद को छूने लगता है। सागरशायी प्रभु वेंकटम में तथा कल्पना से परे सुन्दर अरंगम में एवं सबों के हृदय में रहते हैं। राक्षसी ने कहा 'बच्चा आओ स्तन पान करो'। अपनी माँ के हृदय में भय उत्पन्न करते हुए आपने कहा 'जी भर के पीयूंगा'। आपने धरा को उठा लिया तथा सागर मंथन किया। सागर सा सलोने प्रभु ! आपने सागर पर सेतु बनाया। आपके वराह स्वरूप के चरणों पर जो नूतन पुष्प चढ़ाकर पूजा करते हैं तथा बार बार 'प्रभु ! कितना अच्छा दिन !' कहकर प्रशंसा करते हैं वे आपके रत्न समान प्रकाशित स्वरूप का दर्शन प्राप्त करेंगे। शंख एवं चक्र का कीर्तन करते हुए आपके आस पास नाचने से मेरा शरीर प्रसन्न रहता है।

तुलसीधारी प्रभु के नाम का आनन्दातिरेक से नाम लेते रहने से मन प्रभु पर टिक जाता है।मेरी जिह्वा एकमात्र आपकी गाथा गाती है।मेरा शरीर बांस के जंगल से घिरे वेंकटम के प्रभु की ही पूजा करता है। फूल एवं सुगंधित धूप अर्पित करके आपसे जो स्नेह बनाया उसके फलस्वरूप हमें आपके दिव्य चरणों का आश्रय मिल गया है।

कहते हैं कामना मीठी होती है परन्तु उससे तो मीठा जल होता है। दोनों की मिठास को भुलाकर अगर कोई प्रभु की प्रशस्ति में दो मीठे शब्द का प्रयोग करे तो जीवन की कुशलता सुनिश्चित हो जाती है। छोटे देवों की प्रशंसा छोटा फल वाला होता है। अनभिज्ञ हमेशा अनभिज्ञ ही रह जायेगा। अनेक जन्मों में आकर अगर आपके युगल समतुल्य चरणारविंद की पूजा करना नहीं सीखा तो सारे जन्म व्यर्थ हुए।

हे प्रभु ! सृष्टिकर्ता ब्रह्माआपके नाभिकमल पर बैठते हैं। मन को प्रशिक्षित कर प्रभु की गाथा का स्मरण करना सीखाओ एवं माधव को बड़ा धन एवं एकमात्र आश्रय समझो। अपनी जीभ को उनके नाम स्मरण करना सीखाकर विद्वान बनाओ। सभी वेद एक स्वर से यही बताते हैं। हे लोगों ! प्रशस्ति की महत्ता को समझो। अगर धर्मशास्त्र जान लेते हो तो अच्छी बात है अन्यथा माधव का नाम अकेले ही पर्याप्त है। जीवन का भौतिक सुख निस्सार है। इसके पहले कि कफ छाती एवं सांस को अवरूद्ध करे प्रभु के श्रीचरणों एवं श्रीसंपन्न वक्षस्थल का ध्यान करो।यह निश्चित मत समझो। धन से स्वर्गिकों के जगत में प्रवेश नहीं मिल सकता। प्रभु की कृपा से ही वह धर्ममय लोक मिलता है। मैं जिनका ध्यान करता हूँ वे तिरूमल के प्रभु हैं। जो इनका ध्यान करता है वह आगे के जन्म से मुक्त हो जाता है। मुक्त जीव जो इस जगत में जन्म लेते हैं वे

सांसारिक सुखों का त्याग कर प्रभु की पूजा करते हैं। आपने अकेले ही बाणों से लंकेश के दस सिर एवं बीस भुजाओं को काट डाला।आपके श्रीचरणों की पूजा करने वाले हमारे नाथ हैं। हमारे हाथ सौभाग्यशाली हैं जो ऐसे विशिष्ट जनों के चरणों की पूजा करते हैं। निश्चित मन से यह समझो कि माधव ही धर्म के धारक हैं एवं इनके नाम जपने की आदत बनाओ। प्रभु का नाम ही स्वरूप धरकर वेंकटम में विराजमान है। आप अगम्य वेदों के प्रभु हैं। आपके चरणारविंद स्वर्गिकों द्वारा पूजे जाते हैं। प्रभु की पूजा करने से भक्तों के मन में सबचीज प्राप्त कर लेने का संतोष प्राप्त हो जाता है एवं कभी भी किसी चीज की कमी की चिंता नहीं सताती।

पूज्य प्रभु अरंगम के प्राचीन निवासी हैं। तिरूक्कोट्टियूर एवं तिरूवेंकटम भी आपके वंशानुगत निवास हैं। सुन्दर मलिरूमसोलै एवं तिरूनिर्मलै प्रभु का पुराना निवास है। आपने प्रभु वेद को प्रकट किया तथा जीवन धर्म के बारे में बताया। पंकजनिवासिनी लक्ष्मी को आपने अपनी बाहों में रखा। हे मन! सात पर्वत, सात समुद्र एवं सात महादेश में प्रभु का नाम गूंजने दो। जोर से स्पष्ट शब्दों में पुकारो 'आनन्द से राक्षसी का जहरीला स्तन पीने वाले प्रभु'। सबों के समक्ष बिना भय के हम पुकारेंगे 'हे यादव! हे गाय चराने वाले! हे आश्चर्यमय देव!' एवं अन्य दूसरों नामों से जो उनलोगों ने पुकारा था जब प्रभु ने उनकी रक्षा की थी। मणिवर्ण वाले प्रभु के चरणों को सदा याद करो तथा उनके नाम का भी स्मरण रखो। समुद्र मंथन करने वाले सागर सा सलोने प्रभु के वदन के रंग का सतत ध्यान करो। प्रभु लाल कमल निवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं। आप धर्म के स्वरूप हैं।

संयम से रहने वाले संतगन जिनकी जटायें आगे तथा पीछे कंधों तक लटकती हैं आपके ध्यान में वेंकटम के पर्वत पर निमग्न बैठे रहते हैं।आस पास की लतायें पहाड़ियों की तरह इनपर चढ़ी रहती हैं। नालों का जल ढ़लान पर संघर्ष करता हुआ नीचे आता है।यह प्रभु का प्यारा पर्वत है। ाालिरूमसोलै एवं वेंकटम के पर्वतीय आरामगाह आपके प्रिय निवास स्थल हैं तथा इसीतरह हमारा हृदय भी आपका निवास स्थल है। सात जन्मों एवं सात युगों से हम आपको हृदय में रखे हुए हैं। इसलिये आप हमें अपना गहरे सागर वाले निवास का दर्शन करायें। जब प्रभु के दर्शन की चाह सागर सी उमड़ने लगती है तो क्या कोई चाह कर भी इसे रोक सकेगा ? इसके पहले कि प्रभु अपना श्यामल स्वरूप का दर्शन करायें कमलनिवासिनी माता लक्ष्मी आपकी दिव्यता की झांकी दिखा देती हैं। लक्ष्मीश्री का दिव्य निवास प्रभु का प्रशंसनीय स्वरूप है। अतः सावधानी से ध्यान पूर्वक प्रभु का पीछा करो। चारों दिशाओं! सुनो, प्रभु के श्रीचरणों

की पूजा करना तथा यशोगान करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। चक्रधारी प्रभु की प्रशंसा में नीम का कड़ुवापन है परंतु हमारे हृदय में सरस्वती का निवास होने से हम प्रभु की गाथा का गान करने के लिये उत्प्रेरित होते रहते हैं। हमारा यह सौभाग्य कमल निवासिनी लक्ष्मी की कृपा से ही प्राप्त है। अंधकरा का नाश करते हुए जब प्रभु ने अपना स्वरूप दिखाया तो भक्तों पर लक्ष्मी की कृपा से ही हम प्रभु के स्वरूप का स्पष्ट दर्शन कर पाये। प्रभु के चरणों पर ध्यान केन्द्रित कर हम अपनी शरणागति कर सके। आप का एक ही स्वरूप नहीं है। आप ज्योर्तिमय हैं। जगत में आपके विरोधाभास की जोड़ी का वर्णन किया गया है। शास्त्रों में आपके मूल स्वरूप का वर्णन है। श्यामल वामन के रूप में आपने छल का सहारा लिया। जबकि आपका एक पाद पृथ्वी को माप डाला, आपकी लंबी भुजायें फैलकर दिशाओं को माप डाली। अहो! वे सौभाग्यशाली हैं जिन्होंने आपका उस समय दर्शन किया। तब मुझे अपना उद्देश्य नहीं पता था और न तो हमनें दूसरों से इसकी जानकारी ली। यह हमारी भूल थी। अपने में परिवर्तन की चाह से नप्पिनाय के लिये सात गुस्सैल लड़ाकू बैलों को शमन करने वाले प्रभु के चरण कमल की पूजा की।

सात वृषभों का नाश करने वाले प्रभु ने वृषभ वाहन गुस्सैल शिव की भिक्षा पात्र को जो ब्रह्माका गिद्ध द्वारा खाया हुआ कपाल था अपने हृदय के खून से भर दिया तथा उन्हें शाप से मुक्त किया। यह एक प्राचीन काव्यात्मक कहानी है। काव्य के विषय वस्तु कृष्ण! महान काव्यों की ऊच्च भाषा तिरूमल प्रभु! मुझे इस बात की स्वीकृति प्रदान करें कि सुन्दर शब्दों से आपकी गाथा गाते हुए हम आपको अपने हृदय की गहराई में देख सकें। हृदय के स्नेह से हम आपकी अर्चना करते हैं तथा अपने हाथों से आपके श्रीचरणों पर पुष्प अर्पित करते हैं। अपने प्रिय शब्दों से हम आपके दूसरे लोकों के स्वरूपों की बन्दना करते हैं जिससे कि हमें इह लोक के बाद भी वहां बन्दना करते रहने की अनुमति मिले।

नेक मन! तुम्हें सुबुद्धि मिले ओर समझो कि तुम ही पुनर्जन्मों की आवृत्ति के कारण हो। यह हमारे कर्मो का फल है एवं नारायण का नाम अकेले ही नरक से हमारी रक्षा के लिये उपयोगी है। अपने स्वप्न में हमने देखा कि आपका सुन्दर स्वरूप हाथ में तेजोमय चक्र धारण किये है तथा आपने हमें अच्छे एवं बुरे कर्मो से मुक्त कर पुनर्जन्म के चक्कर से निवृत्ति कर दिया है। आपकी शक्ति का भी उसमें दिग्दर्शन हुआ। आपने शक्तिशाली हाथी का दांत उखाड़ कर उसका नाश किया। शक्तिशाली नरसिंह रूप में आये और बलशाली हिरण्य असुर का नाश किया। शक्तिवान नाग को महान पर्वत पर

लपेट कर समुद्र मंथन किया। आप शक्तिशाली स्वामी हैं। धरा पर शासन करने वाले महान राजालोग जिन्हें घोड़े की सवारी की सुविधा उपलब्ध है आपके भक्त हैं। सात जन्मों तक पद्मनाभ प्रभु के श्रीचरणों की पुष्प से पूजा करके ये लोग राजा हुए हैं। भक्तों की साक्षात प्रसन्नता धनुषधारी मेरे जनक प्रभु तंजैमाम्नी के मंदिर, श्रीरंगम, तिरूतन्कल, पूज्य तिरूमल, तटीय कडलमल्लै के मंदिर, दीवारों से घिरे कुडन्दै, भक्तों के हृदय स्थल, एवं सागर यानी क्षीरसागर में रहते हैं। सागर सा सलोने प्रभु ने विष वमन करते शेषशय्या से जब अपना फूल की पंखुड़ी समान सुकोमल चरण को धरा मापने के लिये उठाया तो बायें हाथ का दक्षिणावर्त शंख गूंज उठा तथा दायें हाथ का चक्र अपनी ज्योति से सर्वत्र दिन का प्रकाश बिखेरते हुए विरोधियों का शमन कर डाला। दिन के उजाले में बन्दरगन वेंकटम के बागों से फूल चुनकर प्रभु की पूजा करते हैं। मेरा मन ! उठो, हमें भी वेंकटम के सुन्दर प्रभु की पूजा के लिये फूल चुनना चाहिये।

दिन में तीन बार फूल एकत्र कर धैर्य पूर्वक हजार नामों का उच्चारण करते हुए हम पूजा करें। प्रभु सात जन्मों से एवं सतत से हमने अकेले आपकी तपस्या की एवं अकेले उसका फल प्राप्त किया। आपके पूर्णतया एक समान चरणों की सेवा में हमने तमिल मधुर गीतमालिका समर्पित किये। सचमुच मैं तमिल का सबसे बड़ा कवि हूँ। पर्वतीय चंदन की सुगंधि, रेशमी वस्त्र, सुंदर आभूषण, तथा ढ़ेर सारे सुगंधित चमेली धारण किये हुए प्रभु शुद्ध ज्ञान तत्व के रूप में (वेंकटम में) खड़े हैं। हमारा यह कर्त्तव्य होता है कि हम प्रभु के एक समान पादारविंदों का यशगान करें।

हे मन ! आपके चरणारविंद स्वतः प्राप्त होंगे। पद्मनिवासिनी लक्ष्मी की दया भी स्वतः एकत्रित होती जायेगी। हजार नाम के यशगान की तपस्या एवं पूजा का लाभ भी स्वतः जमा होते जायेंगे। ब्रह्मा के महान तपस्या का फल स्वतः मिला कि गगन में उठे प्रभु के दिव्य चरण के दर्शन का सौभाग्य मिला। तब प्रभु के जितने नाम उनको ज्ञात था सबों का उच्चारण करते हुए उन्होंने पादारविंद को अपने हृदय की संतुष्टि तक पखारा और इससे गंगा निकली। अपने पीठ पीछे माँ की बातों को अनसुना करते हुए आप अपने नगर से संतुष्ट भाव में निकले। सामने खड़ी जूड़ेवाली की बातों पर आपने ध्यान दिया। हमारे प्रभु की गाथा उतनी ही विशाल है जितनी बड़ी पृथ्वी आपने मापा एवं अधिकार में ले लिया। आपके पाद की पूर्णता को देखने में प्राप्त आनन्द के बाद, क्या हम आपके वामन स्वरूप के सौंदर्य का पुनः दर्शन नहीं प्राप्त कर सकेंगे ?

आळवार संत बहुत ही विश्वास से घोषणा करते हैं कि हमने दिन का प्रकाश देखा।

नारायण का दर्शन मिला। पहले स्वप्न में साक्षात्कार मिला, पुनः सच्चाई में देखा। आप चक्रधारी हैं, आपके अरूणाभ पादारविंद हैं, तथा आकाश से उज्जवल हैं। आभापूर्ण बड़ी सी मत्स्यनयना कमलवासी लक्ष्मी प्रभु के सुन्दर वक्षस्थल को अनंत काल से भी निहारकर तृप्त नहीं दिखती। भू देवी भी यहां वक्षस्थल पर स्थान प्राप्त कर बैठने का आनंद उठा रही हैं। यह सब कैसे हुआ ? क्योंकि प्रभु का सौंदर्य असीम है। निम्नस्तरीय शब्दों के साथ प्रभु की सीमित गाथा हमने गायी जिसे वेद भी अपर्याप्त रूप से ही गा सके हैं। तब भी हम धैर्यपूर्वक अपनी विनती की स्वीकृति की आशा लगाये बैठे हैं। क्यों, प्रभु अति आश्चर्यमय नहीं हैं क्या ? आश्चर्यमय नरसिंह के रूप में पधारकर अपने तपस्या के अभिमान से चूर स्वच्छंदी मूर्ख राजा की छाती प्रभु ने चीर डाली। हम अपनी मधुर गीतमालिका से आपकी पूजा करते हैं एवं प्रशस्ति गाते हैं। प्रभु की फूल से पूजाकर विद्वान प्रशस्ति गायकजन श्यामल मेघवर्ण मणि समान प्रभु की उदारता का पात्र बनते हैं जबकि बहुत सारे तपस्वी को आपका दर्शन दुर्लभ है। किस तपस्या से हम आपको देख सकेंगे ? क्या अब हम तिरूकोट्टियूर प्रभु की उदारता की अनुभूति पा सके हैं ? नहीं, जब हम तिमिराछन्न गर्भ में पड़े थे उस समय हम बद्धांजलि हो धरा को मापने वाले पादारविंद का दर्शन प्राप्त कर चुके हैं। जो भक्ति के रास्ते चलते हैं उनके लिये आप नरक के कंटीले झाड़ी पूर्ण रास्ते को साफ कर अपने भवन का दरवाजा खोल देते हैं। यह अब हम जान गये हैं कि अन्यजनों के लिये आप दरवाजा बन्द रखते हैं। मैं आपको जानता हूँ। क्या आप वह नहीं हैं जिसने वामन रूप में जमीन की भिक्षा मांग कर अपने पादारविंद से सारी धरा को माप लिया, जिसने मदमत्त हाथी के दांत से ही उसका अंत कर दिया, तथा दुष्ट कंस का उसके स्वयं के गुस्सा से ही नाश कर दिया ?

यद्यपि मैं आपकी पूजा करता हूँ लेकिन मुझे धरा का राज्य या स्वर्गिक देवराज इन्द्र का साम्राज्य नहीं चाहिए। मूर्खो ! ऐसा न हो कि इस जीवन के बाद नरकगामी होना पड़े। जबतक जीवित हो प्रभु के चरणारविंद की पूजा करना सीखो। सभी शास्त्र आपको सार्वभौम कहते हैं। आप गरूड़ध्वज वाले हैं। सतत आपके दिव्य नाम का जप कर। इतना छोटा सा काम करने पर आप हमारे सभी इच्छाओं की शीघ्र तथा सुलभता से पूर्ति करते हैं। आसानी से प्राप्त होने वाला नरक भयानक है तथा उसके बाद जो मिलता है वह ज्यादा डरावना है। इसके पहले कि यह हो जाये प्रभु की पूजा करो जो शंख धारण करते हैं तथा जिन्होंने केशिन घोड़ा का अंत किया और राक्षसी के विषैले स्तन का प्रेम से पान किया। आप पडकम के सुन्दर नगर में रहते हैं। मैं हृदय से आपकी

प्रशस्ति गाता हूँ। हमारे हृदय के स्थायी निवासी अपना श्रीचरण हमारे सिर पर रखे हुए हैं। प्रलय एवं सृष्टि के प्रथम कारण, चक्रधारी प्रभु, अत्तियूर कांची के निवासी हैं। अत्तियूर कांची के प्रभु पच्छी की सवारी करते हैं। आप सुन्दर नाग पर सोते हैं जिसके फन में ज्योतिर्मय मणि जड़े हैं। आप मुक्ति के मार्ग हैं। आप नीलविषकंठ शिव के स्वामी है तथा हमारे स्वामी हैं।

आप देवों के सम्राट हैं। कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर रखने वाले शंकनमाल यानी लाल आंखवाले आप हजार फन वाले नाग पर शयन करते हैं। आप कुडन्दै के मन्दिर में रहते हैं। मेरे स्वामी गोपवधू यशोदा से गोपकिशोर के रूप में पाले पोसे गये। पात्रों के साथ नृत्य कर आपने सब के हृदय को जीत लिया। आप सातों लोकों को निगल गये। आप हमारे हृदय में बसते हैं।

फूलों से आपकी पूजा कर तथा आपका दयापात्र बनने के लिये सदा से देवगन धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। मेरे स्नेह ! रूनझुन नूपुर बजते पादारविंद के साथ आप सुन्दर राजीवनयन वामन बन कर आये और माबली से धरा ले ली। मेरे स्नेह ! मेरे प्राचीन नाथ ! मेरे कृष्ण ! सभी स्वर्गिकों के नाथ ! नूतन तुलसी की माला पहने प्रभु ! ताड़वृक्ष को बछड़े की मार से धराशायी करने वाले प्रभु ! ओह ! मैं अपने स्नेह को रोक नहीं सकता।

<u>प्रबध **15** । मून्राम तिरूवन्दादि ः **2282** से **2381**</u>

पेय आळवार यानी महयोगी की इस कृति में **2282** से **2381** तक **100** पासुर हैं। आपका अवतार स्थल मैलापुर चेन्नै माधवपेरूमाल मंदिर के पास है। आयप्पासी यानी आश्विन मास में शतभिषा यानी सडयम नक्षत्र में आपने नंदक खड्ग के अंश से अवतार लिया। यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) क्षीरसागर, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) तिरूवल्लीकेणी, (iv) वेग्का कांची, (v) वेलुक्कै कांची, (vi) कुडन्दै, (vii) पडगम पाण्डव दूत कांची, (viii) वैकुंठ, (ix) अयोध्या, (x) कडिगै यानी शोलंगिर, (xi) श्रीरंगम, (xii) तिरूकोट्टियूर, (xiii) विण्णगरम यानी ओप्पलीअप्पन, (xiv) अहोविलम, (xv) वरदराज, (xvi) मालिरूञ्शोलै, (xvii) अष्टभुज ।प्रशस्ति का प्रारंभ आपने प्रभु के वक्षस्थल पर स्थित लक्ष्मी माता के दर्शन से किया है। प्रशस्ति का उपसंहार भी माँ लक्ष्मी के शरण में समर्पण से किया गया है। कुछ छिटपुट बातें जिसका यहां आळवार संत ने उल्लेख किया है।

✐ नारायण मंत्र **2289**

✐ शिव को अपने स्वरूप पर धारण करना **2312**

✐ **2344** में वेंकटम प्रभु के स्वरूप को नारायण एवं शिव के स्वरूप का अद्भुत मिश्रण बताते हैं।

✐ लक्ष्मी का स्वरूप **2282 2283 2324 2335**

✐ योग से प्रभु की प्राप्ति **2292 2293**

आज हमने कमल निवासिनी को सागर सा सलोने प्रभु के वदन पर देखा है। प्रभु अपने हाथों में ज्वालामय चक्र तथा दक्षिणावर्त शंख धारण करते हैं। आपकी आभा सुनहले सूर्य के समान है। श्रीपति ! रत्नों से आभूषित आपका वक्षस्थल पुरा काल में श्रीदेवी की तुलसी माला को धारण किया। आपके स्नेह से उत्प्लावित हमारा हृदय आपके चरणारविंद का आश्रय लेता है। अब हमारे सात जन्मों का अंत हो गया।

गुस्सैल असुरों का हर्षित मन से नाश करने वाले प्रभु हमारे हृदय में कर्म से मिलने वाले नरक से बचने की औषधि के रूप में निवास करते हैं। सागर सा सलोने प्रभु सागर में रहते हैं तथा तुलसी धारण करने वाले प्रभु कमल निवासिनी लक्ष्मी के हृदय में बसते हैं। आपने ब्रह्माण्ड को बनाया, निगला, एवं पुनः उसका निर्माण किया, तथा तीन पग जमीन का उपहार प्राप्त कर इसको माप डाला। धरा को मापने वाले चरण कमल के रंग के हैं। आपका वदन सागर के रंग का है। आपका किरीट सूर्य की तरह प्रकाशमय है तथा चक्र भी सूर्य की तरह है। क्या आपकी सुन्दरता तुलना से परे नहीं है ?

जब जमीन का उपहार मिला तो आप उठे और पूर्ण आकाश में फैल गये। फूल से उत्पन्न ब्रह्माने आपके चरण को जल से धोया जिससे गंगा निकली। क्या यह सुन्दर नहीं था ? आप गरूड़ पक्षी की सवारी करते हैं। आप संपन्नता वाली लक्ष्मी के पति हैं। आओ मन ! हम आपके चरणों की पूजा करें। आओ मन ! नारायण एवं अन्य नामों के साथ हम आपकी स्नेहपूर्ण प्रशस्ति गायें। आपके स्वरूप का रंग मेघ, गहरे सागर, तथा रत्नपर्वत जैसा है। आपकी आंखें, हाथ, एवं चरण सभी कमल के समान हैं। ऐसी वस्तु की स्थिति कोई सोच सकता है क्या ? वास्तविकता है कि आपके बायें हाथ में दक्षिणावर्त शंख है। बल, आभा, धन, सौंदर्य, ऊच्च्च कुल एवं सब कुछ प्रभु के नाम के स्मरण से स्वयं मिल जाते हैं।

प्रभु वेदों के वस्तु तथ्य हैं। आप मधु से मृदुतर पर्वत के झरना हैं। गहरे सागर के रंग आप ही हैं। आप क्षीरसागर में शेषशायी हैं। आप विद्वत्जनों के लिये ज्ञान के सागर हैं। आप सूक्ष्म ज्ञान हैं। सूक्ष्म ज्ञान क्या है ? इन्द्रियों के दरवाजों को बन्द कर उस पर विवेक का ताला लगा दो। रहस्य ग्रंथों का बार बार अध्ययन कर उनके अर्थ को समझो। शनैः शनैः सागर सा सलोने प्रभु का योग के माध्यम से साक्षात्कार हो जायेगा।

योग के प्रभु ने पुराकाल में जमीन का उपहार पाया एवं अपना विस्तार कर सारी पृथ्वी को माप लिया। आपका मुकुट आकाश को चीरते हुए ब्रह्माण्ड के बाहर चला गया।
अगर नारियों के बाहुपाश से अपने को मुक्त कर लो तो रहस्य ग्रथों का अध्ययन एवं समझना आसान हो जायेगा। अपना मन प्रभु पर लगाओ। प्रभु ही चारो वेद हैं एवं वेंकटम के निवासी हैं। तरंगों वाले गहरे सागर में हजार फन एवं लाल रत्न सी आंखों के कुंडली मारे नाग पर शयन करने वाले प्रभु हमारे नीच एवं चंचल हृदय में शयन करने आये हैं। कितना आश्चर्य ! कूदती तटीय लहरों के तिरूवल्लिकेणी में कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण किये हमारे नाथ निवास करने आये हैं। इस दास की जिह्वा पूज्य शेंकणमाल प्रभु के पादारविंद की प्रशस्ति विना अवरोध के करती रहें। बीते हुए दिन आने वाले दिन एवं अन्य सब दिन शुभ हो जायेंगे।
शातों लोकों को निगल कर शिशु की तरह सोने वाले प्रभु कभी भी दया से वंचित नहीं करेंगे। लेकिन जो लोग विश्वास पूर्वक शांत चित्त हो प्रभु के चरणों में नूतन फूल करबद्ध होकर चढ़ाते हैं वे ही पहले दया पाने के अधिकारी होंगे। बड़बोला दंतबक्र का नाश करने वाले, चक्र, शंख, शारंग धनुष एवं सुगंधित तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु की गाथा का कोई अंत पा सकता है क्या ? हे मन ! हम कहते हैं कि किरीटधारी स्वर्गिकजन प्रभु के चरणों पर सिर रखकर नूतन पुष्प दर्शन प्राप्त करने के उद्देश्य से चढ़ाते हैं। तू भी यही कर। हे मन ! चक्रधारी प्रभु के पूज्य पादारविंद शीघ्र ही पृथ्वी आकाश जल अग्नि एवं वायु रूपी मौलिक तत्वों में मिल जायेंगे। लेकिन पूजा से श्रीचरणों का अनुगमन करो।
पूजा से कोई क्षति नहीं होगी। ब्रह्माण्ड को निगलने वाले शिशु ही जूड़ावाली गोपनारी के मक्खन खा गये, सात वृषभों का अंत कर दिया, तथा देवों के लिये दुर्लभ हो गये। देवों के प्रभु जो हमारे हृदय एवं शेषशय्या का त्याग नहीं करते तुलसी की माला धारण करते हैं। आप पावन वेंकटम तथा आनंद का नगर कांची के वेग्का एवं वेलुक्कै में रहते हैं।
क्षा संसार इस आश्चर्य को समझ सकता है ? गहरे सागर मे शयन करने वाले प्रभु ने चमत्कारी शिशु के रूप में राक्षसी का अंत किया। आपने घोर भारत युद्ध का संचालन कर बलशाली राजाओं का अंत किया। और फिर भी जब माँ ने मक्खन चुराने के लिये मथानी वाले डंडे से धमकाया तो डर कर सिर नवा लिये। तब भी आपको उठाकर माँ ने मधुर स्तन का पान कराया तथा इस बात से बिल्कुल नहीं घबरायी कि आपने राक्षसी का अंत किया है। उसके लिये आप एक लाल मुक्ता से होठ वाले अस्पष्ट तोतली बातें

बोलते श्यामल शिशु हैं। हम भी आपको देखकर आनंद लेते हैं। आप वेंकटम, कुडन्दै, पडकम एवं बहुतों के हृदय में बसते हैं। आप वृषवाही शिव को अपने स्वरूप पर धारण करते हैं।

वेंकटम में रहने वाले प्रभु ने कृष्ण के रूप में कुरून्दु वृक्ष का नाश किया और अभी भी आप सागर में, वैकुंठ में, वेदों में तथा सच्चे वैदिक ऋषियों के हृदय में रहते हैं। सच्चे प्रभु पुराकाल में सभी लोकों को निगल गये एवं तब एक शिशु के रूप में जल में तैरते बट पत्र पर सो गये। पूज्य प्रभु ! आपने समुद्र मंथन एक पर्वत से किया तथा देवों को आकाश में अमृत प्रदान किया। आपके चरण जो आकाश में फैल गये थे क्या वे थक गये थे ? हे मन ! देखो, प्रभु वेलुक्कै (कांची) में बैठे हैं, तथा वेग्का (कांची) में सोये हैं। आपका ध्यान करो। विस्तृत वक्षस्थल पर प्रभु जाजवल्यमान हार पहनते हैं। हमारी आंखें आतुर हैं 'अहा ! देखो, देखो'। आपकी तुलसी माला पर लटकने वाले मधुमक्खी सुन्दर पान धुन में आपकी प्रशस्ति गाते हैं। मेरा मन भी उनलोगों की तरह गाना चाहता है तथा हाथ आपके चरणों की पूजा करना चाहता है।

जब आश्चर्यमय प्रभु के पाद ने धरा को मापा तब आपके दिव्य अस्त्र आग्नेय चक, श्वेत शंख, भारी गदा, एवं काला धनुष, तथा चमकता खड्ग, सब आपके साथ बड़े आकार के हो गये। यहां तक कि सागर में आपका शय्या भी आपके साथ बड़ा हो गया। आप हमारे गहरे हृदय में बैठे हैं और हम आपके सेवक दास हैं। सभी स्थित बस्तु आप हीं हैं। तपस्वी ऋषिगन, तारागन, प्रज्चलित अग्नि, पर्वत, आठों दिशायें, युगल ज्योति पुंज सब आप हीं हैं। आप अकेले नाथ हैं, एवं अपनी बराबरी स्वयं हैं। आप वही हैं जो गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठा रखे थे। गायों को चराते हुए गोपकिशोर प्रभु ने बांसुरी बजाई। गुस्सैल कुवलयापीड हाथी अपना दांत गंवा कर जान भी गंवा बैठा। भू देवी तुलसी माला से सुशोभित आपके वक्षस्थल के एक हिस्से पर विराजमान रहती हैं। सारे जगत को प्रभु अपने में समाहित कर प्रलय से रक्षा प्रदान करते हैं।

वराह के रूप में धरा को अपने दसनों पर उठाने वाले प्रभु वेंकटम में विराजमान हैं। मोतीमय सागर का प्रभु ने स्वयं मंथन किया। कच्छप के रूप में आपने पर्वत को अपने ऊपर संभाला जो बासुकी नाग से आगे पीछे घूमते हुए जगत के अंत तक फैलने वाला तेज तरंग उत्पन्न कर रहा था। आप चट्टान की तरह अटल रहे। नप्पिनाय के लिये आपने सात महान वृषभों का नाश किया। प्रभु रत्न का ऊंचा मुकुट पहनते हैं तथा उसपर तुलसी की माला धारण करते हैं। झील में बसे ग्राह का आपने बध किया।

शीतल जल की धाराओं वाले एक पर्वत (वेंकटम) पर आप रहते हैं।
लंका नगर को मटियामेट करने वाले आप ही थे। आप ही हमें सुन्दर एवं महान नगर अयोध्या का दर्शन करायेंगे। आप अयोध्या में राम बनकर आये। आपने सात वृक्षों को गिरा दिया। आपने जादू के मृग का बध किया। आपने लंकेश रावण के शिर को धराशायी कर दिया। आपने सुकोमल चरणों से गाड़ी का नाश किया तथा हाथी एवं दो मरूदु पेड़ों का नाश किया। वराह के रूप में शौर्य पूर्वक आपने पृथ्वी को अपने दांतों पर उठा लिया। कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर रहती हैं तथा भू देवी के प्रति भी आपका बहुत गहरा स्नेह है। श्वेत लाल पीला हरा एवं काला प्रभु के रंग हैं परन्तु प्रथम तीन हमने नहीं देखा है। जरा सोंचो। क्या ज्ञानवती सरस्वती भी लक्ष्मी के पतिदेव की यशगाथा पूर्णतया गा सकती है ! जैसे श्याम घन बिजली से सुशोभित होता है वैसे ही प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण कर गरूड़ पर सवार होकर सुशोभित होते हैं। ज्ञान के माध्यम से प्रभु के चरण को देख चुके हो। हे मन ! अब उठो।
आपने भारत के घोर युद्ध में विजय का शंखनाद किया। प्रभु क्षीरसागर एवं वेंकटम में ऐसा मान कर रहते हैं जैसे आप अपने स्थायी निवास वैकुंठ में हों। युवापूर्ण प्रभु अब मधुमक्खी से गूंजते फूल के बागों से घिरे कडिगै (शोलंगिर) में रहते हैं। अमृतमय बागों से घिरे श्रीरंगम, दक्षिण तिरूकोट्टियूर, सुन्दर कुडन्दै, अटारी वाले वेलुक्कै (कांची), वेग्का (कांची) एवं विण्णगरम (ओप्पली अप्पन) प्रभु के अन्य निवास स्थल हैं जिन्होंने अपने हाथ में धरा का उपहार स्वीकार किया तथा जो झरनों से भरे पर्वतों वाले वेंकटम में रहते हैं।
नाले झरने के पर्वत वाले तिरूमल (वेंकटम) के प्रभु हमारे पिता जटा एवं मुकुट के साथ दिखते हैं। आप कुल्हाड़ी एवं चक्र, गले में सांप एवं जनेऊदोनों धारण किये हैं। दो स्वरूपों का अद्भुत आश्चर्यमय संमिश्रण। क्या आश्चर्य है कि वेग्का मंदिर कांची में प्रभु शयनावस्था में है जबकि अन्य जगहों वे बैठे तथा खड़े दिखते हैं। क्या यह देवताओं के लिये समुद्र मंथन में पर्वत की मथानी एवं नाग की रस्सी चलाने के थकान के कारण है ? अत्याचारी मधु कैटभ कोध में अग्नि वमन करते शेषशायी प्रभु के पास आये जहां शेष की रत्न समान आंखें दिन के उजाले की तरह चमक रहीं थी। यह उनकी गलती थी और उनका अंत हो गया।
प्रभु की नाभि से एक डंढल निकला है जिसके ऊपर कमल खिला है जो खुलते एवं बन्द होते रहता है जैसे वह सूर्य एवं चांद को देखकर करता है। परंतु यहां तो प्रभु का ज्योर्ति मय चक्र एवं शंख है। भक्तगण उपवास के दिनों में अपनी चोटी में तुलसी बांध कर

स्नान के लिये 'केवल वेंकटम ही पर्वत है' गाते हुए जाते हैं। स्नान की डुबकी से उन्हें शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु के शयन करने वाले सागर में स्नान का आनंद आता है। स्वर्गिकों के स्वामी, पूर्णयुवा प्रभु पर्वत पर रहते हैं जहां की बनवासी लड़कियां बांस का कंगन पहन बांसों पर चढ़कर खेलती हैं तथा बांसबाड़ी में उलझे चांद को छुड़ाने का प्रयास करती हैं। यह पर्वत वेंकटम है। आप पूर्व से पश्चिम सूर्य का रथ चलाते हैं तथा ऊत्तर में रहते हैं। होंठों का काम प्रभु की प्रशंसा करना ही है। प्रभु ने राक्षसी के जहरीले स्तन पर होंठ रखकर तबतक चूसा जबतक वह दर्द से कराहती हुई विखर कर जमीन पर नहीं गिर गयी। तब गोप नारी यशोदा चिंतित होकर आपको उठाई और अपना स्तन पीने को दिया। देखों प्यार कितना बलशाली होता है। पर्वत शिखर पर खड़ा होकर, पानी में गले भर डूबकर तथा पंचाग्नि के बीच रहकर तपस्या करने की आवश्यकता नहीं है। नूतन फूलों से वेग्का (कांची यथोक्तकारी) प्रभु की सहृदय होकर पूजा करने मात्र से ही सभी कर्म लुप्त हो जायेंगे।

विद्वान वैदिक ऋषि ब्रह्मा की गोद में मनमतंग प्रभु शिशु के रूप में विराजमान थे कि तपस्या एवं पूजा हेतु रावण आया। तब प्रभु ने अपने चरण की दस उंगलियों से उसके दसों सिरों को गिना। प्रभु में अपना विश्वास स्थिर करो। राजकुमारियों को मुक्त करने हेतु चक के साथ हमारे कृष्ण प्रभु ने मुर का बध नहीं किया क्या ? अपने आपको प्रभु पर समर्पित कर यह चिंता न कर कि 'हमारा क्या भाग्य है' 'हमारा आश्रय कौन है' 'हमारा पुनर्जन्म कब होगा' आश्चर्य मय प्रभु की करूणकृपा की प्रतीक्षा कर।

हमारा जीवन चकधारी प्रभु की ओर स्वतः खींच जायेगा। जब बाणासुर रत्नाभूषित रथ पर सवार हो आप से युद्ध करने आया था आपने उसके हजारों हाथ को टुकड़े टुकड़े कर दिये थे। इसके बावजूद कि प्रभु पर मन को स्थिर करना कठिन है आपकी मधुर गाथा को गाते रहो। प्रभु सद्यः प्रकट होकर मन में बस जायेंगे। तब आप पर ध्यान कैसे स्थिर नहीं रहेगा ? रहस्य ग्रंथों से आपको समझना कठिन है। जबकि आप हमारे हृदय में हैं परंतु आपकी उपस्थिति का आभास होना कठिन है। अगर यह स्थिति है तो मधु टपकते मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला पहने प्रभु को सच में कहां पाया जा सकता है ?

जबकि आपको आश्चर्यमय कहा जाता है, आपका दर्शन दुर्लभ बताया जाता है, आपने छल से धरा एवं गगन को अपने पादों से माप डाला, आप निश्चित ही हमारे हृदय में बसते हैं। वेद के गूढ़ अर्थ दैविक शक्ति की व्याख्या करते हैं। जबकि आप हमारे हृदय में रहते हैं परंतु आश्चर्यमय राजीवनयन प्रभु का अनुभव करने वाले विरले हीं

हैं। जबकि सबलोग कवि हो जायें, सभी ज्ञान अर्जित कर लें, पर प्रभु के पास हाथ में फूल लिये, आंखों में दर्शन का ललक लिये जाकर गाथा की रचना अर्पित करें तो प्रभु के गौरव का प्रसार होगा।

संध्याकालीन आकाश आपके वक्षस्थल के लाल कौस्तुभ मणि से आभासित आपके वदन के स्वरूप का स्मरण कराता है। वक्षस्थल पर मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला हरे पन्ने से आभासित वदन का दर्शन देता है। क्या अच्छा है एवं क्या बुरा है इसका द्वंद छोड़कर वक्षस्थल पर तुलसी माला धारण किये सुलभता से प्राप्त प्रभु के दिव्य चरणों की पूजा करो। हमारे सभी कर्मों के नामोनिशान वृद्धावस्था के पूर्व ही लुप्त हो जायेंगे। तुलसी माला धारण किये प्रभु ने बजते पाजेब के साथ एक पाद को आकाश में उठाया जहां ब्रह्माने आकाश गंगा के जल से चरण पखारा। आपकी बाहें आठो दिशाओं में फैल गयीं थी। आपने इस छोटी पृथ्वी को कैसे मापा ? पृथ्वी निगलने वाले एवं राक्षसी के विषैले स्तन पीने वाले प्रभु फिर भी भूखे थे। आप सब मक्खन खा गये। कोधित गोपनारी यशोदा ने गांठ वाली रस्सी लाकर आपको बांधा एवं आप शांतिपूर्वक एक बच्चे की तरह बंध गये। जो उसकी संतान नहीं थी वह मेधावी एवं चमत्कारी थी। जब आपका पौत्र अनिरूद्ध बाना के कारागार में बंद था आपने असुर के हजारों हाथों को काट डाला। हे मन ! सावधानी पूर्वक आपको अपने भीतर विराजमान कराओ। हमने आपको अपने हृदय में लाकर चेतना का दीप जलाया तथा सिर झुकाया एवं आपको भीतर ही देखा। आश्चर्यमय प्रभु हमारे हृदय में बिना कोई क्षति पहुंचाये आये, थोड़ी देर खड़ा हुए, फिर बैठे तत्पश्चात् आराम से सो गये। जैसे ही सूर्यास्त हुआ प्रभु नरसिंह के रूप में पधारे। अपने नखों से हिरण्य की छाती बिदार कर सर्वत्र मांस खून आदि फैला दिये। तब आप कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ मिल गये। हे मन ! मात्र आपकेही पादारविंद की पूजा एवं प्रशंसा करो। (अहोविलम के श्रीलक्ष्मी नृसिंह की बन्दना है।)

गौरवर्ण इन्द्, कमलासीन ब्रह्मा, एवं जटाधारी शिव, कमल के वर्ण एवं पद्मनाभ प्रभु की गौरव गाथा का अंत नहीं पा सकते। जिस प्रभु ने पर्वत वायु आकाश एवं सबों को अपने भीतर रख रक्षा की वे अवश्य ही हमलोगों को नरकगामी होने से बचायेंगे। आठ हाथों में आठ विजयी अस्त्रों से लैस प्रभु, जिन्होंने कभी हार का मुंह नहीं देखा, अत्ताब्युकारम यानी अष्टभुज कांची के प्रभु, आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं। चक्रधारी तुलसी की माला वाले प्रभु कमल निवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर ऐसे धारण करते हैं जैसे श्याम घन पर दामिनी हो। माँ लक्ष्मी की सुन्दर कमल सी आंखे हैं

एवं आप अमृत बहाते फूल पर बैठी हैं। आज एवं सदा के लिये आप ही हमलोगों की आश्रयिनी हैं।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **86**। वेलुक्कै कांचीपुरम

1।स्थान ः विष्णुकांची में दीप प्रकाशार मंदिर से आधे कि मी दक्षिण में यह दिव्यदेश अवस्थित है। यह तुपुल क्षेत्र के पास है जो वेदांतदेशिक स्वामी का अवतार स्थल है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर यहां अळगैयासिंगार या नरसिंह कहे जाते हैं। आप बैठे अवस्था में योगनरसिंह मुद्रा में चतुर्भुज स्वरूप में पश्चिमाभिमुख हैं। उत्सव विग्रह खड़े अवस्था में मुकुन्दनायक कहे जाते हैं। तायर अमृतावल्ली या वेलक्कुवल्ली कही जाती हैं। तीर्थ को कनकसारस, हेमा सारस, तथा प्रह्लाद तीर्थ कहते हैं तथा विमान को कनकविमान कहते हैं।

3।महिमा ः कहते हैं वरदराज पेरूमाल कोइल के गुफावाले योगनरसिंह भगवान असुरों का पीछा करते हुए कांची से बाहर निकलकर इस स्थान पर स्वेच्छा से स्थित हो गये हैं। 'वेल' का शाब्दिक अर्थ 'स्वेच्छा' होता है इसीलिये आप वेलुक्कै कहे जाते हैं। एक और कथा के अनुसार हिरण्यकशिपु के बध के पश्चात घूनते हुए प्रभु अहोविलम से यहां पधारे तथा वेगवती के किनारे स्वेच्छा से बस गये। मागशीर्ष माह में आपका वार्षि कोत्सव मनाया जाता है।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमडल **2674**। पेय आळवार, मुन्राम तिरूवन्दादि**2307 2315 2343**।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

<u>प्रबंध 16। नान्मुगम तिरूवन्दादि ः **2382 से 2477**</u>

तिरूमलिशैयाळवार यानी भक्तिसार स्वामी की इस कृति में **2382** से **2477** तक **96** पासुर हैं। आपका अवतार स्थल तिरूमळिशै चेन्नै के पास है। तायी यानी पौष मास में मगम यानी मघा नक्षत्र में आपने सुदर्शन चक्र के अंश से अवतार लिया।यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) श्रीरंगम, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वैकुंठ, (iv) तिरूकोट्टियूर, (v) मयिलै, (vi) तिरूवल्लीकेणी, (vii) कुडन्दै, (viii) वेग्का कांची, (ix) तिरूवल्लूर , (x) तिरूप्पेर, (xi) अनबिल, (xii) क्षीरसागर, (xiii) द्वारका, (xiv) तिरूकपिस्थलम। प्रशस्ति का प्रारंभ एवं अंत आपने नारायण प्रभु को ब्रह्मा एवं शिव के नाथ के रूप में किया है। कुछ अन्य छिटपुट बातें जिसका यहां आळवार संत ने उल्लेख किया है।

✐ ब्रह्मा एवं शिव की उत्पत्ति **2382**
✐ श्रमण बौद्ध एवं शैवों की स्थिति **2387**
✐ नारायण ने शिव को ब्रह्मा के कपाल के शाप से मुक्त किया। **2412**
✐ वेंकटम प्रभु के प्रति अपना असीम अनुराग दर्शाते हैं तथा कहते हैं कोई भी पर्वत देखकर हम वेंकटम पर्वत की स्तुति करते हैं।**2421**। वेंकटम के दुर्गम मार्ग के कारण कहते हैं कि युवाजन को ही वहां जाना चाहिये। **2425**।
✐ वेंकटम प्रभु की प्रशस्ति में कुडल गोला बनाने को उत्तम कार्य मानते हैं। **2420**
✐आदिशेष से ज्योतिष सीखना **2444** ।

नारायण ने चतुर्मुख ब्रह्माकी सृष्टि की तथा ब्रह्माने शिव को बनाया।इस गहरे सच को हम अन्दादि गीत के माध्यम से बता रहे हैं।सावधानी पूर्वक इसे ग्रहण करो तथा छलक कर वर्बाद होने से बचाओ। ऐसा कहते हैं प्रभु एक हैं। ध्यानपूर्वक सोच लो। आपकी गाथा किसी को विदित नहीं है। चारों अवस्था की साधना भी इसे नहीं पा सकते। तपस्या का जो भी फल मिलता है वह मात्र चक्रधारी प्रभु से ही प्राप्त होता है। प्रभु का सागर में शयन, श्रीरंगम में आकर रहना, बटपत्र पर सोनाः ये सब आपने देवों को बता दिया है कि आप जल के सार नारायण हैं। हमने जिस तरह से यह समझा है दूसरा कौन समझ सकता है ?

वस्तु स्थिति है कि जटाधारी शिव एवं हिरण्यगर्भा ब्रह्मा प्रभु के ही स्वरूप के एक हिस्सा हैं। आप तो वरीयतम हैं।आप हमारे नाथ हैं। शास्त्रों की सारी उक्तियां आप ही हैं। मैं आपकी गाथा गाता हूँ। वरदान के मद में चूर हिरण्य की छाती को अपने घुमावदार नखों से फाड़ने वाले एवं शक्तिशाली भुजा वाले प्रभु ! आप सब चीज का नाश करके पुनः सबों को बना देते हैं। आप ही चार युग हैं। यह सब मैं जानता हूँ। श्रमण लोग अनभिज्ञ हैं।बौद्ध लोग द्वंद में हैं। शैव लोग संकीर्ण बुद्धि के हैं। जो लोग आश्चर्यमय प्रभु माधव की बन्दना नहीं करते वे आज महत्वहीन हो गये हैं।

नारायण प्रभु आपकी दया आज मिले, कल मिले, या बाद में कभी मिले इतना तो निश्चित है कि दया मिलनी है। हम आपके बिना नहीं रह सकते हैं और न आप हमारे बिना रह सकते हैं। मन ! अरूणाभ नयन पूज्य राम ने प्रशुराम से विष्णु धनुष ले लिया और स्वछंदी राजा दसानन का बध कर अग्निवाण से लंका को भस्मीभूत कर दिया। जब प्रभु ने अपना पग आसमान में बढ़ाया तो ब्रह्माने अपने कमंडल के जल से पग पखारा तथा प्रशस्ति के गीत गाये। वह जल जटाधारी शिव के सिर पर गिरा एवं पावन गंगा नदी का उद्‌गम हुआ। गर्जन भरे सागर के बीच आग उगलते शेष की शय्या पर

प्रभु विश्राम करते हैं। जय ! क्या हमलोग आपके दिव्य स्वरूप के दर्शन के लिये उपयुक्त नहीं हैं ? क्या शिव और ब्रह्माआपकी प्रशस्ति गाने योग्य नहीं हैं ? हमारे पुराकालीन प्रभु ऊंचे मुकुट पर तुलसी की माला धारण करते हैं। मनोयोग पूर्वक ध्यान करो तथा प्रार्थना के लिये करबद्ध हो पुष्प अर्पित करो। प्रभु के चरणारविंद पर अपना सिर झुकाओ। जीभ को प्रभु की प्रशंसा करने दो आंखों को प्रभु का दर्शन करने दो तथा कानों को प्रभु की गाथा सुनने दो।

प्रभु ! आपने निर्णय कर लिया है कि विश्वासहीन जन चार स्तर के पुनर्जन्म को प्राप्त होंगे। लेकिन उनलोगों को अभिशाप से मुक्त करने के लिये आप भी प्रतीक्षा करते रहते हैं। क्या क्षीण होते चंद्र को शाप से आपने मुक्त नहीं किया ? क्या आपने चक्र चलाकर गज एवं ग्राह को शाप से मुक्त नहीं किया ? ओह ! लोग अपने अस्तित्व की जानकारी के अभाव में तपस्या रत रहते हैं। विदित हो कि नारायण ही मार्ग एवं लक्ष्य हैं। आप हीं वेद के प्रतिपादित प्रभु हैं। तिरूमल हमारे नाथ एवं रक्षक हैं। नारायण के नाम नहीं लेने वाले दुष्टों से दिग्भ्रमित होकर बहुत सारे लोग भ्रम वश गलत रास्ता के शिकार हो जाते हैं।

अगर सत्य के बारे में जानना चाहते हैं तो मार्कण्डेय मुनि का निश्चित किया हुआ मार्ग पकड़िये जिन्होंने देवों से प्रशंसित प्रभु के धरा मापने वाले पग का फूलों से पूजा की तथा उसकी प्रशस्ति गायी। देवताओं के नाथ प्रभु ने महान राजाओं के विरूद्ध युद्ध कर उनका नाश किया। आपने रथ के चक्के से सूर्य को छिपा दिया। आप ही हमारे मन के आश्रय हैं। तपःपूत शिव ने पीपल वृक्ष के नीच चार जनों को मार्ग बताया ः दक्ष, अगस्त्य, पुलस्त्य, एवं मार्कण्डेय। यह मार्ग पृथ्वी मापने वाले एवं बटपत्र शायी प्रभु की पूजा का मार्ग है। आपकी पूजा की सरलता के कारण से ही आपके भक्त दूसरे देवों की प्रशस्ति से विरत हैं। तपस्या से ब्रह्माका वरदान अर्जित करने वालों के फल का आप नाश करते हैं। आप भक्तों के रक्षक एवं रक्षा के माध्यम हैं। सभी जीवत्मा को वैकुंठ देने वाले हैं।

प्रभु सारा ब्रह्माण्ड आप ही हैं। समस्त चेतन प्राणी आप ही हैं। तपःपूत शिव एवं उनके देव ब्रह्मा भी आप ही हैं। अग्नि, आठ दिशायें, एवं युगल ज्योति पुंज भी आप ही हैं। देवों के प्रभु ने भयानक नरसिंह रूप धारण किया। क्षा आश्चर्यजनक स्वरूप ! आपका खुला मुंह आग उगल रहा था। लाल आंखें अंगारे की तरह जल रही थीं। कितना सुंदर स्वरूप था ! आप सुन्दर स्वरूप हैं। आप नरसिंह रूप में हैं और आप शिशु रूप में हैं। आप सातों लोकों के सार एवं अन्तरस हैं। मत्स्य के रूप में आपने सब

जीवात्माओं की रक्षा की। सात वृषभों का नाश करने वाले प्रभु भक्ति की खेती कराते हैं। क्या बार बार जोते गये खेत में नया बीज डालने की आवश्यकता नहीं होती ? पौधा बढकर प्रभु के रंग वाले श्यामल मेघ की वर्षा की आवश्यकता महसूस करता है। प्रभु ! भिन्न भिन्न युग में आपने अलग अलग श्वेत लाल पीला एवं काला रंग धारण किया। लेकिन हृदय से आपने राजस के लाल एवं तामस के काले रंग का बहिष्कार किया। घृणा के युद्ध में आप संचालक होकर श्वेत सात्विकता के प्रतीक अर्जुन को युद्ध के लिये उत्प्रेरित कर कोध उत्पन्न किया एवं युद्ध कराया। बिना विचारे आपने जमीन की भिक्षा मांगी। क्या इससे असराहनीय और अन्य कार्य हो सकता है ? फिर भी मावली के महान अभिमान का आपने नाश किया जो सारतत्व का रस पीकर जीवित रहे। क्या आश्चर्य है !

हम आपके अतिरिक्त अन्य किसी की पूजा नहीं करते जिसके साक्षी जटाधारी शिव हैं। आशीर्वाद दें कि हम सदा के लिये आपके प्रति समर्पित रहें। मूर्खो ! हमारा हृदय प्रभु पर टिक गया है। क्या इसके लिये हमें कोई पारितोषिक चाहिए ? हमने प्रभु के पादारविंद को माला से सुसज्जित देखा है जो भस्म लगाये शिव नहीं कर सकते। यही हमारा पारितोषिक है। यह वही सेतु है जो प्रभु ने लंका के नाश के लिये बनाया। यहां प्रभु ने वाली का बध किया था। यहां आपने अपने धनुष से महान शक्तिशाली राजा रावण का सर्वनाश किया था। अपने धनुषाकार भौंहों तथा अग्नि बाणों से आपने बहुत ही विशाल कुंभकर्ण का बध किया। आपकी भौंहे, आकर्षक मुखड़ा, तथा ज्योर्तिमय वदन ध्यान करने योग्य हैं। आप हमारे हृदय में खड़ा रहते हैं तथा बैठते हैं। तब कैसे आप अन्य जगह गहरे सागर में रहना पसंद करेंगे ? शिव को ब्रह्माका शाप नारायण ने समाप्त किया। धरा के क्रूर लोगों ! देवों के नाथ की गाथा तुमलोग नहीं गाते हो। तुम्हारे पुनर्जन्म का अनंत सिलसिला है। सारा ब्रह्माण्ड कृष्ण के उदर में रहता है। जो इस गौरवशाली गाथा में आनंद नहीं लेते वे मृतप्राय हैं। एक क्षण भी बर्बाद न करो और प्रभु के गौरवशाली स्तुति के योग्य पादारविंद को प्राप्त करो।

आपने राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया, पैरों से गाड़ी को नष्ट किया, नाग पर नृत्य किया, मदमत्त हाथी का बध किया, मुक्तामय होठवाली नप्पिनाय के आलिंगन के लिये सात वृषभों का नाश किया और राजा बने। इसे ध्यान पूर्वक समझ लो। हम तिरूकोट्टियूर के प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं परंतु क्या वेंकटम प्रभु के प्रति हमारा प्रेम घटा हुआ है ? भौतिक व्याधि से मुक्त करके हमारी इच्छाओं को पूरा करने का आप ख्याल रखते हैं। आपके चरणारविंद ही हमारा आश्रय है। सागर तटीय मयिलै एवं

तिरूवल्लिकेण्णी के प्रभु पांच फन वाले नाग शय्या पर सागर में बिना बोले एवं बिना चलते हुए निवास करते हैं। धरा मापने से आप थक क्यों गये ? प्रभु कुडन्दै (कुंभकोनम), वेग्का (कांची) एवं तिरूवल्लूर में शेषशायी हैं। प्रभु अरंगम (श्रीरंगम), तिरूप्पेर एवं अनबिल में शेषशायी हैं। प्रभु क्षीरसागर में शेषशायी हैं। परंतु कालातीत आदिरहित प्रभु सरलता से भक्तों के हृदय में प्रवेश करते हैं।

आकाश, अग्नि, सागर, पर्वत, सूर्य, चंद्र, बादल, आठ दिशायें, सारा ब्रह्माण्ड एवं इसके चारों तरफ का सबकुछ प्रभु का स्वरूप है। जिन लोगों के पास प्रभु को पुकारने का हृदय नहीं है उनलोगों के लिये आपने दर्शनशास्त्र के छः शाखायें बना दी है। परंतु अगर वे आपके कोपभाजन हुए तो उनके देवता या प्रार्थना कोई काम नहीं आता। मैं वेंकटम प्रभु को पुकारते रहता हूँ एवं रहस्य मयी कुडल गोला चित्रित करते रहता हूँ जिससे कि हम आपसे मिल सकें। आप पर्वत शिखर पर रहते हैं जहां जलस्रोत रत्न विखेरते हैं जिसे देखकर हाथी भयभीत हो सांप का शिकार छोड़ देते हैं। प्रभु लक्ष्मी के पति हैं एवं वेदों के सार हैं। आपके चरणाविंद के जाल में हम फंस चुके हैं। पर्वत देखकर हम वेंकटम की स्तुति गाते हैं। वेंकटम के पूज्य प्रभु आप हमारे हृदय में प्रवेश कर चुके हैं। पहाड़ी झरने आपके पर्वत पर मोती धोते हैं। ओनम पर्व का आनन्द लूटने हम आपके यहां आने को लालायित हैं। प्रभु भक्तों के साथ रहकर उनकी कामना का अंत करते हैं। चार मुंह के ब्रह्मा एवं तीन आंख वाले शिव सदा कमल के फूल से आपके चरणारविंद की पूजा करते हैं। ऊंची शिखरें (वेंकटम) पूजा के लिये आमंत्रित करती रहती हैं।

बादलों के बीच रहने वाले ऊत्तरी वेंकटम पर्वत के प्रभु चंद्रधारी शिव एवं कमलासीन ब्रह्मा से पूजित हैं जो रात में छत्र आदि लाकर प्रभु की सेवा करते हैं। जब राक्षस रावण तपस्या के बाद ब्रह्मा के पास वरदान के लिये गया तो प्रभु ब्रह्मा की गोद में शिशु के रूप में प्रकट होकर रावण के दस सिरों को अपने चरण के दसों अंगुलियों से गिने। प्रभु वेंकटम के बागों में रहते हैं। जब तुम युवा हो प्रेमपूर्वक वहां जाओ। वेंकटम के प्रभु देव तथा मनुष्य के लिये स्थायी धनराशि हैं। वेंकटम सभी शारीरिक कर्मों की यातना के लिये औषधि है।

सचेत हाथी जब शिकारियों से घिर जाते हैं तो वे अपना सूंढ़ उठाकर प्रभु को चांद लाकर देने का प्रयास करते हैं परंतु वनवासी अपने तीर धनुष से शिकारियों को भगा देते हैं। अच्छा होता हम वहां (वेंकटम) जमा होकर गोल में नाचते। वेकटम चक्रधारी प्रभु का निवास है जो असुरों का नाश कर देवों की रक्षा करते हैं। कच्छप के रूप में आकर

आपने एक पर्वत को अपने पीठ पर बिना गिरे हुए रख लिया तथा उसपर एक सांप को लपेट दिया एवं सागर का अमृत के लिये मंथन किया। आपके नाम का उच्चारण ही सार्थक शब्द है। चमत्कारी कृष्ण प्रभु 'अरट्टैं गरै कण्णन' (कपिस्थलम दिव्यदेश के प्रभु) जो सागर में तथा नदी किनारे रहते हैं वही हमारे कवि हृदय में रहते हैं। मृत्यु कभी भी हमारे पास नहीं आ सकती। हमारे कर्मो का कभी संचय नहीं होगा। कर्मों के भयानक प्रभाव हमें कभी आहत नहीं कर सकते। हमें मार्ग पता हो गया है।

प्रभु को छोडंकर जिनका कोई समतुल्य या वरीय नहीं है कौन हमारे साथ निभाने वाला है ? कया फूल के रंग के प्रभु को जितना मैं जानता हूँ उतना कोई नहीं जानता है। हमारी बुद्धि का मूल्य संपूर्ण आकाश हो सकता है क्या ? प्रभु जहरीला स्तन पीने वाले राजकुमार हैं। जो आपकी पूजा नहीं करते वे मजदूर की तरह रहेंगे और बहुत सारी बीमारियों के शिकार हो जायेंगे। छोटे देवता के लिये हो सकता है कि उन्हें बलि के रूप में अर्पित कर दिया जाय। वे लोग अनुपयोगी अनभिज्ञ एवं सदा के लिये पापी रह जायेंगे। स्वच्छंद राक्षसों की नगरी लंका को नष्ट करने वाले काकुत्स्थ राम को छोड़कर हम किसी अन्य देव को नहीं जानते। ऐसे देवों की पूजा मत करो जो निम्न स्तर के देव हैं या जो देव नहीं हैं या जो मंगलमय देव नहीं हैं। ईश्वरीय गुण वाले देवगन, पुराकाल से आ रहे त्रिमूर्ति तथा सभी चैतन्य, सब नेडुमल प्रभु ही हैं। जो यह नहीं समझते उनकी जिन्दगी निरर्थक कूड़े कचरे के तरह बीत गयी।

स्वर्गिक गन हाथ जोड़े प्रभु की पूजा कर स्वर्ग का फल प्राप्त करते हैं। सागर सा सलोने शाश्वत प्रभु ! कौन उनलोगों में से आपके चरणारविंद की प्रशस्ति पूरी तरह गा सकता है ? कोई नहीं। मदन के जनक कृष्ण के लिये कोई भी सार्थक नहीं है तथा कोई आपका विरोध नहीं कर सकता। विषकंठ या नीलकंठ शिव जिन्होंने वाणासुर के लिये लड़ना अपना कर्त्तव्य समझा था प्रभु से मुंह की खा गये। यह बोलो कि कुरून्दु पेंड़ को तोड़ने वाले प्रभु ही एक मात्र अच्छे एवं बुरे कर्म सबकुछ हैं। यहां तक कि देवगन, असुर समुदाय, पृथ्वी आदि यह सब अगर प्रभु का हमारे हृदय में प्रकट होना नहीं है तो और क्या है ? सभी हृदयों के नाथ ने सबको भयाक्रांत करते हुए पृथ्वी को मापा। हमारे हृदय के प्रभु ने अंधकार मिटाकर हमें मृत्यु के फंदा से बचा लिया। मैंने अपना प्रेम प्रभु को अर्पित किया है। कमल निवासिनी लक्ष्मी के नाथ ! मेरे दिव्य केशव ! आप हमारे प्रेम हैं। बिना दोष देखे आप हम पर शासन करते हैं। हम आपके विनीत दास हैं।

अरंगम के प्रभु ! विद्वानों के अमूल्य निधि ! आप अपने भक्तों को खोजते हुए घूमते रहते हैं। हम भी आपके चरणारविंद को खोजते हुए घूमते हैं। विनती है हम पर ध्यान

रखें। हमारा मन आपको प्रेम करने से मानता नहीं। प्रभु के लिये, मधुसूदन प्रभु में आश्रय लो। यातनाविहीन रहोगे। आप खड़े होकर सातों लोकों पर नियंत्रण रखते हैं। आज आपकी चिरस्थायी गाथा हमारे साथ है। श्री को अपने वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु के मधुमक्खी लिपटे धारण किये तुलसी की माला को जो धारण नहीं करते एवं यह नहीं अनुभव करते कि दायीं (वक्षस्थल के) तरफ जहां श्री का निवास है, वही पार्श्व भाग खड़े होने की ठीक जगह है, वे सदा के लिये अनभिज्ञ एवं जन्म की आवृति में फंसे रहेंगे। इन सारे वर्षो में हम आपके लिये धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा रत रहे हैं। आदिशेष से इसी कारण से हम आपके बारे में ज्ञान प्राप्त कर सके जिन्होंने ज्योतिष रहस्य को प्रकट किया। यह मुझे लिखित, मौखिक, श्रद्धा से, सेवा से, एवं प्रार्थना से मिला। सुनहले मकरकुंडल पहनने वाले प्रथम नाथ नारायण की पूजा पुष्प से करो। आप नेक नाथ हैं। आपके नाम ही मात्र से सात जन्म का पुनर्जन्म का बंधन टूट जाता है। आपके नाम का गान करना हमारी मुक्ति का एक मात्र उपाय है। गीतों की इस माला का गान हमने मुक्ति के उपाय के रूप में किया है। पूज्य माधव का चिंतन हमेशा से हम कई विधि से करते हैं। कृपा करके यह बताइये, हमारे लिये वैकुंठ में कोई जगह नहीं है क्या ? पूर्व में प्रभु फनधारी शेष पर शयन करते थे। अब वे हमारे हृदय में रहते हैं। मैं दृढ़ विचार से यह बता रहा हूँ कि कभी भी हम शशिभूषण शिव या कमल से उत्पन्न ब्रह्माको अपने हृदय में नहीं लायेंगे और न तो उनकी प्रदक्षिणा करेंगे। हमारी जिह्वा के प्रभु हमारे ज्ञान के एवं गुणों के प्रभु नारायण हैं। यह लाभदायक हो या निरर्थक हो, चाहे प्रशंसा का हो या निन्दा का हो, प्रभु के नाम का उच्चारण सदा अच्छा होता है।

मृत्यु के देवता यम अपने दूतों को अलग बुलाकर बोले 'कभी भूल नहीं करना। प्रभु के भक्तगन प्रभु का नाम भूल जा सकते हैं पर वे कभी भी इतर देवों के सामने झुक कर पूजा नहीं करेंगे। अगर उनको देखो तो नम्रता से झुककर सम्मान देते हुए हट जाओ।' प्रभु को समझने वाले आज हम अकेले नहीं हैं। आप बालक रूप में वामन बनकर आये। आपने सूकर स्वरूप में धरा को अपने दांतों पर उठा लिया। प्रभु बहुत विशाल हैं तथा बहुत लघु हैं। प्रभु बहुत दूर हैं तथा बहुत पास हैं। आप आश्चर्यमय द्वारकाधीश हैं। युद्ध में प्रभु की बोली गयी बातों को (श्रीमद्भगवत गीता) जो नहीं सीखे वे हमेशा के लिये अनुपयोगी एवं अज्ञानी रह गये। वर्णाश्रम धर्म के नियमों का पालन करना यानी ब्रह्मचर्य , गृहस्थ, वानप्रस्थ, एवं सन्यास का मानना ही जीवन को फलदायक बनाता है, सही नहीं है। वेदों के धर्म एवं त्याग के मार्ग भी सार्वभौम प्रभु नारायण को ही एकमात्र लक्ष्य मानते हैं। कौन इससे असहमत होगा ? चकधारी प्रभु की गाथा को कौन समझ सकता है जो

ब्रह्माण्ड को निगल कर पुनः निर्माण करते हैं। यहां तक कि नीलकंठ शिव तथा आठ आंखों वाले ब्रह्मा भी अपने पूर्वज के आवास वैकुंठ का रास्ता नहीं जानते।
जब गरूड़ के परम शत्रु सुमुख प्रभु के शय्या में लटक गया तो प्रभु ने सुरक्षा के लिये उसे गरूड़ को सुपुर्द कर दिया जिसे उसने अपने बांह में आभूषण बना लिया। मरणशील मनुष्यों की गाथा हम नहीं गाते। हमारे गीत हमारी एकमात्र संपत्ति प्रभु के चरणों के लिये है जिसमें अग्नि ढ़ोने वाले जटाधारी शिव भी नूतन पुष्प से वैकुंठ तक जाकर पूरी योग्यता से प्रशंसा करने के प्रयत्न के बाद भी असफल रह जाते हैं। गीत, पूजा की विधि, पुराकाल की गाथा, मनु स्मृति, चार वेद की श्रुति, पवित्र अग्नि, आकाश ये सभी आश्चर्यमय प्रभु के चमत्कारिक सृष्टि हैं। सागर से रंग वाले तथा सागर पर सेतु बनाने वाले प्रभु हमें नहीं जानते थे परंतु हमारे कर्म संचित नहीं हो इसकी व्यस्था आपने स्वतः कर दी। अतः अब कितना भी बड़ा कर्म का पाप हो हमें सता नहीं सकता। मदन को जलाकर भस्म करने वाले शिव ने जब उमा से मधुमक्खी लिपटे तुलसी धारण करने वाले प्रभु की प्रशस्ति सुनी तो ध्यानमग्न होकर निश्चल हो गये। जो प्रथम कारण प्रभु का ध्यान करते हैं एवं अपने प्रेमपूर्ण हृदय को समर्पित करते हैं वे वैकुंठ की स्वाधीनता का दर्शन पाने के लिये प्रतीक्षा रत हो जाते हैं। भक्तों का गान सुनो तथा पावन स्थलों पर उनके नृत्य देखो। शीघ्र ही कृष्ण प्रभु को प्राप्त कर लोगे जिन्होंने शिशु के रूप में प्रलय की बाढ़ से पृथ्वी की रक्षा की थी। नरक के द्वार स्वतः बन्द हो जायेंगे। प्रभु ! हमारा हृदय एक बंजर स्थल था। आपने अच्छे तमिल का बीज डालकर इसको उपजाऊ बनाया जहां ज्ञान की फसल की कटाई हुई। बेड़ी एवं स्वतंत्रता के बीच अब हमारा हृदय एकदम ही नहीं घूमता। जबकि शिव एवं ब्रह्मा भी फूल चढ़ाकर पूजा करते हैं परंतु वे भी प्रभु की पूरी गाथा नहीं गा सकते। आप मदन के जनक हैं तथा मेरे हृदय में हैं। क्या इससे कोई अच्छा सौभाग्य हो सकता है ? जो सबों के प्रति सहृदय होकर आपको खोजते हैं वे ही आप 'पूज्य चकधारी प्रभु' के दया के पात्र बनते हैं। आपकी शीतल करूणा राजा, देवगन, लोगों, मित्रों, मॉ एवं अन्यों से आती है तथा इनसबों में आपका ही अप्रत्यक्ष हाथ कर्ता बनता है।
मेरा मन चंचल नहीं है। मैं शिव का विरोध करूंगा, वे हमारे समकक्ष नहीं हैं। हमारे हृदय का प्रेम केवल हमारे सम्राट एवं नाथ कृष्ण के श्रीचरणों की नित्य सेवा के लिये है जो अपने पैरों में विजयप्रदायी शब्द करने वाले नुपूर पहनते हैं। महान योद्धा वाली की छाती को बाण से विदीर्ण करने वाले धनुर्धारी प्रभु सदा हमारे हृदय में रहते हैं। पुरा काल के प्रभु की प्रशस्ति गाना हमारा व्यवसाय तथा शौक है। हे मन ! देखो, सार्वभौम

प्रभु विराजमान हैं। हमेशा आप विराजमान हैं तथा भक्तों के हृदय में आप विराजमान हैं। अद्वितीय प्रभु हमारे जैसे भक्त के सामने भी प्रकट होते हैं। यह जान लो। इन्द्र के लिये पर्वत के समान एकत्रित भोजन सामग्री प्रभु खा गये एवं एक पर्वत से गायों की रक्षा की।दूसरा कौन ऐसा कर सकता है ? आप धर्मशास्त्रों के रचयिता एवं संरक्षक हैं।आप शिव ब्रह्मा तथा सारे जगत को निगल गये।

जब शरीर छोड़कर प्राण बाहर निकलता है तब प्रभु अपने जीवात्माओं की रक्षा के लिये दौड़े आते हैं। आपके नाम गाते हुए एवं ध्यान करते हुए कर्मों का क्षय करो। इस तरह से जीने वाले अकेले जीते हैं। जो छोटी उपलब्धि से जुड़े हैं उनकी जिन्दगी शून्य है। हमें एक अक्षय सत्य का ज्ञान हुआ है। क्षीरसागरशायी प्रभु के चरणों की हर दिन पूजा करने वाले भक्तों के चरणों की पूजा करने वालों के लिये वेंकटम का दरवाजा हमेशा खुला रहेगा। वेंकटम के नाथ की नित्य निश्छल मन से फूल से पूजा करने वाले वैंकुंठ पर शासन के लिये प्रत्याशी हैं।ये सभी के प्रति सहृदय एवं प्रभु के भक्तों के समक्ष नम्रता से झुककर रहते हैं और इस तरह ऊन्नत जीवन प्राप्त करते हैं। जो श्यामल प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं वे आपके पूज्य चरणारविंद पर नूतन पुष्प चढ़ाकर भक्त बनते हैं। इसतरह की जीवात्मायें शिव एवं ब्रह्मा तथा अन्य देवों के भी देव हो जाते हैं। श्री को धारण करने वाले श्रीधर प्रभु का भक्त बनकर हमने पूज्य प्रभु को सोते जागते एक क्षण भी नहीं भूलते हुए अपने हृदय में रख लिया है।गर्भ से ही हम संरक्षित हैं। प्रभु ने जो संरक्षण दिया है वह हम कभी भूल नहीं सकते। मैं केवल कृष्ण को ही जानता हूँ। प्रलय में सभी जीवों के संरक्षण के लिये आप अपना शरीर उपलब्ध करा देते हैं। हे उदारमना सम्राट ! मुक्त जीव कभी भी आपको छोड़ नहीं सकते।

दिव्य शेष पर शयन करने वाले प्रभु ! आपने मतिभ्रम सैकड़ों के विरूद्ध स्पष्ट उद्देश्य से युद्ध संचालित कर उन्हें मटियामेट कर दिया। विनती है कि इस दास पर कृपा कटाक्ष रखें। ठीक से पकाने पर नीम भी भोजन हो जाता है। प्रबुद्ध मन से कितना और किया जा सकता है ! पुनर्जन्म की यातना भोगते हुए आपके चरणों का आश्रय लिया एवं ऐसी कृपा मिली कि ब्रह्मा को भी वह सुख प्राप्त नहीं है। ऋण से भरा सांसारिक जीवन से मुक्त होकर हम अब सर्वोत्तम लोक वैकुंठ का दर्शन प्राप्त करने जा रहे हैं। हे प्रभु ! अब हम जान गये कि आप ही शिव एवं ब्रह्माके नाथ हैं।आप ही कारण हैं। जो विदित है वे सब आप ही हैं। जो जानने के लिये बचा रह जाता है वे भी आप ही हैं। आप उदारमना नारायण हैं। हम अच्छी तरह यह समझ गये हैं।

००

दिव्यदेश **87** । तिरूअनविल

1 । स्थान ः तमिलनाडु में यह स्थान तिरची से **25** कि मी पर तथा लालगुडी स्टेशन से **8** कि मी पर अवस्थित है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर पूर्वाभिमुखी भुजंगशयनावस्था में तिरूवडिवाळगिया नांबी कहे जाते हैं । श्रीचरण के दोनों तरफ श्रीदेवी एवं भूदेवी सेवारत दर्शन देती हैं । उत्सव मूर्ति को सुन्दरराजन तथा रूपनारायण कहते हैं । पेरूमाल का मुखमंडल अति आकर्षक है । तायर अळगियावल्ली कही जाती हैं । आन्डाल यहां बैठी हुई मुद्रा में दर्शन देती हैं । माण्डूक पुष्करणी तीर्थ है तथा तारक विमान है । तळम्पु स्थल वृक्ष है तथा यहां का स्थल पुराण स्कन्द पुराण है ।

3 । महिमा ः इस क्षेत्र को तिरूमालयनदुरै, मण्डूकपुरी, तथा ब्रह्मपुरी भी कहते हैं । यह माण्डूक मुनि को दुर्वासा के शाप से मुक्त करने वाला स्थान है । जल में ध्यान रत जब माण्डूक मुनि ने स्थल पर विराजमान दुर्वासा के स्वागत के लिये जल से बाहर नहीं आये तो दुर्वासा ने अपने को मुनि से उपेक्षित समझ मुनि को मेढ़क होने का शाप दे दिया । इस स्थान पर भगवान की उपासना से मुनि शापमुक्त हुए ।

ब्रह्मा एवं शिव पांच शिर वाले थे । एक बार पार्वती ने पूजा के बाद ब्रह्मा को शिव समझ उनकी पाद पूजा की । शिव कुपित हो गये तथा ब्रह्मा के पांचवें शिर को अपने नख से काट दिया परंतु ब्रह्मा का शिर शिव के हाथ से चिपक गया । उत्तमार कोईल के रास्ते तिरूकन्डियूर जाने के क्रम में शिव का अन्विल में पदार्पण हुआ तथा यहां पेरूमाल की प्रशस्ति गाने पर शिव ब्रह्महत्या से मुक्त हुए ।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2417** ।

ºº

दिव्यदेश **88** । तिरूकपिस्थलम ः

1 । स्थान ः तमिलनाडु के पांच कृष्णारण्य क्षेत्र में से यह एक है । कुंभकोनम के पास पापनाशनम से यह **3** कि मी पर अवस्थित है ।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर भुजंगशयन अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं एवं 'गजेन्द्र वर्द्धन' कहे जाते हैं । कपिस्थलम दिव्यदेश के प्रभु को 'आट्रंगरै कण्णन' भी कहते हैं । तायर को राममणि वल्ली या पोट्रामरियल कहते हैं । यहां का विमान गगनाकृति विमान है । पुष्करणी को गजेन्द्र पुष्करणी कहते हैं या कपिल पुष्करणी भी कहते हैं । पारिजात यहां का स्थल वृक्ष है तथा विष्णु पुराण स्थल पुराण है ।

3 । महिमा ः भगवान ने तपस्यारत आंजनेय स्वामी को राम के स्वरूप में दर्शन दिया था

इसीलिये इस स्थान को कपिस्थलम कहते हैं। यहां भगवान ने गजेन्द्र को भी दर्शन दिया था।

एक अन्य जनश्रुति के अनुसार मुपी नामक रानी की संतान जो मुपनार कहे गये इस क्षेत्र के निवासी रहे हैं तथा ये लोग अपनी कवित्व कौशल के लिये प्रसिद्ध रहे हैं। इस स्थान को 'कवि स्थलम' कहते थे जो अपभ्रंश होकर 'कपि स्थलम' हो गया है।

राजा इन्द्रद्युम्न यहां तपस्या रत थे। दुर्वासा ऋषि पास से गुजर रहे थे और राजा को पता नहीं चला। ऋषि ने कोध में राजा को अभिमानी होने के कारण हाथी बनने का शाप दे दिया। राजा गजेन्द्र होकर जब घड़ियाल से पकड़े गये तब गजेन्द्र को भगवान को 'आदिमूल' कह कर पुकाारा। नारायण हरि ने आकर उद्धार किया।इसलिये यहां के भगवान को 'गजेन्द्र वर्द्धन' तथा 'आदिमूल' पेरूमाल कहते हैं। तिरूकण्णमंगै की तरह यहां भी तायर की सन्निधि में एक मधुमक्खी का छत्ता लटका हुआ है।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः भक्तिसार स्वामी, नान्मुगम तिरूवन्दादि, **2431**।

ºº

<u>प्रबंध **17**। तिरूविरूत्तम ः **2478 से 2577**</u>

नम्माळवार यानी शठकोप स्वामी की इस कृति में **2478** से **2577** तक **100** पासुर हैं। इसे ऋक्वेद कहते हैं। आपका अवतार स्थल आळवार तिरूनगरी तिरूनेलवेली के पास है। वैकाशी यानी वैशाख मास में विशाकम यानी विशाखा नक्षत्र में आपने सेनैमुदालियर विष्वकसेन के अंश से अवतार लिया। यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) वैकुंठ, (ii) तिरूमल यानी वेंकटम, (iii) वेग्का कांची, (iv) तिरूतन्कल यानी दीपप्रकाश कांची, (v) श्रीरंगम, (vi) क्षीरसागर। नम्माळवार की पूरी प्रशस्ति परांकुश नायकी भाव या गोपी भाव में है जो इस प्रस्तुति के ठीक दूसरे पासुरम यानी **2479** में स्पष्ट किया गया है 'इस जूड़े वाली बालिका ने अपना प्रेम का हार उनके समतुल्य युगल चरणों पर समर्पित किया'। भगवान के युगल चरण विल्कुल एक समान हैं इसी तरह का चित्रण भूतद आळवार ने भी पूर्व की प्रस्तुति में किया है। देखें पासुर **2255, 2257, 2261**। कुछ अन्य छिटपुट बातें जिसका यहां आळवार संत ने उल्लेख किया है।

✐ परांकुश नायकी भाव में जूड़े बांध कर रहना, मछली सी आंखों का प्रभु के लिये तड़पना, तथा प्रभु पर पुष्पबाणों का संधान करना यानी अर्चना पुष्प अर्पित करना। पासुर **2479** से **2483**

✐ तिरूविरूत्तम प्रबंध की यह विशेषता है कि नायकी, उसकी सखियों, एवं उसकी मां

के वार्तालाप से सुन्दर तरीके से गुंथा हुआ है। जैसे **2592** में वेंकटम प्रभु की गाथा में पद्मावती का बगैर नाम लिये उनकी वेंकटम प्रभु की प्रथम भेंट को चित्रित किया गया है। पासुर पासुर

✐ नारायण ने शिव को ब्रह्मा के कपाल के शाप से मुक्त किया। **2563**।

तालिका 7 ः परांकुशनायकी के प्रसंग (तिरूविरूत्तम)

पात्र पासुर अभियुक्ति

1। नायकी **2479 से 2483** नायकी जूड़े बांधती है। प्रभु पर पुष्पों का बाण चलाती है।

2। सखियां **2486 से 2488** नायकी की सुन्दरता का वर्णन

3। नायकी **2489 से 2491 2504** नायकी का स्वयं की स्थिति का चित्रण। पदमावती से मिलन प्रसंग **2492 2499**

4। सखियां **2495** नायकी की दशा के बारे में

5। माँ **2496 2501 2502** नायकी की दशा के बारे में

6। नायकी **2505 2506 2507** श्रीरंगम के प्रभु से याचना तथा हंस एवं सारस का दूत भेजना तथा अपने हृदय को वापस बुलाना। **2508** बादल को वेंकटम प्रभु के पास दूत बनाकर भेजना चाहती है।

7। माँ **2510 से 2514** नायकी की दशा के बारे में

8। नायकी **2515 से 2523** अपने हृदय के लिये चिंता दिखाना

9। माँ **2524** नायकी की दशा के बारे में

10। नायकी **2525 से 2576** अपने हृदय के लिये चिंतिा दिखाना

स्वर्गिकों के देव ! संपूर्ण जीवात्माओं की रक्षा के लिये आपने कई गर्भ से अवतार लिये। हम फिर अनर्गल ज्ञान की निम्न स्थिति, दुष्टतापूर्ण कार्य, एवं गंदगी से भरे शरीर को नहीं प्राप्त हों इसकी कृपा कर स्वीकृति दीजिये। हमारा यह विनम्र समर्पण है कृपा कर मेरा निवेदन सुनें। श्याम घन वदन वाले कृष्ण को जिनकी पूजा स्वर्गिक जन करते हैं इस जूड़े वाली बालिका ने अपना प्रेम का हार उनके समतुल्य युगल चरणों पर समर्पित किया। इसकी अरूणाभ आंखें अश्रुवर्षा करती हुई एक बड़े तालाब में झगड़ा करती दो मछलियों की तरह एक दूसरे का पीछा कर रही हैं। अहो ! प्रेम दीर्घायु होता। बांसुरी वादन करते उदार प्रभु नप्पिनाय, भू देवी, एवं कमलनिवासिनी लक्ष्मी श्री देवी को कभी अलग नहीं होने वाली छाया की तरह साथ ले भयंकर विनाशक चक्र धारण करते हुये घोर गुस्सैल गरूड़ पक्षी की सवारी करते हैं। क्या हमारा अकेला हृदय जो उनके

पीछे गया है उनके साथ रहेगा या लौट आयेगा ? हाय ! छली एवं कोधी राक्षसी के स्तन चूसने वाले प्रभु की तुलसी की माला की मृदु विषैली सुगंधि को फैलानी वाली ठंढी हवा ! प्रभु का गरूड़ पक्षी हमारे अकेले हृदय को चुरा चुका है। अब हमारे पास दूसरा है नहीं जिसे शीतल तुलसी चुरा सकती है। क्या आपके लिये उचित है कि हमारे हृदय में घुसकर उसे बर्फ जैसा ठंढ कर देते हैं ? शीतल सुगंधित तुलसी को चाहने वाली किशोरी की बड़ी आंखें अश्रु वर्षाती हैं। शीतल वायु जो स्वभाव से ठंढ करने वाली है, समय स्थान एवं अपने महत्त्व को भुलाकर गर्म होकर बह रही है। क्या घनश्याम वदन प्रभु का राजशाही दंड अब बदल दिया गया है ?

आळवार संत कहते हैं कि नायकी अब आकामक हो गयी है तथा कामदेव के पुष्प बाणों को प्रभु पर संधान करने वाली है। मदन के मुड़े हुए बाण एवं टूटे धनुष के ढ़ेर से वह अच्छे अच्छे बाणों को चुन लेती है। मुर्झाये हुए लता की तरह पीछे हट गयी है परंतु लौटेगी। हे जगत ! अपनी जान बचाओ। मदन के राजदंड से वह शीघ्रगामी गरूड़ की सवारी करने वाले असुरों के विनाशक पर जानलेवा प्रहार करेगी। जो हम देखते हैं या सुनते हैं उससे यह समझ में आता है कि मधुमक्खी लिपटे प्रभु आजकल क्या कर रहे हैं। यह स्पष्ट हो गया है कि पर्वत उठाने वाले कृष्ण ने देवों से पूजित ऊंचे पहाड़ों वाले वेंकटम में धन अर्जित करने के लिये आने का निर्णय ले लिया है।

गोपियां या सखियां नायकी की स्थिति का चित्रण करती हैं। यह किशोरी एक सुन्दर लता है जिसके फूल उतने ही सुन्दर हैं जितना कि मजबूत तीक्ष्ण एवं प्रकाशमय चक्र को धारण करनेवाले श्रीसंपन्न स्वर्ग के नाथ का शौर्य है। इस तरह की किशोरी का कौन तिरस्कार कर सकता है ? हाय ! उसकी कजरारी काली कमल सी बड़ी आंखें मोती जैसे आंसू बहा रही है। उसकी आंख की पलकें नीले कमल के उड़े हुए पंखुड़ी जैसी हैं। उसकी बड़ी बड़ी आंखें मृगशावक की आंखें जैसी हैं। हाय ! उसके होंठ कैसे फड़क रहे हैं !आश्चर्यमय प्रभु के वेंकटम पर्वत की लताओं की तरह हे किशोरियां ! हाय ! हमारी यातना की कोई भी शिकायत आप नहीं सुनते। बताइये, यह कौन है जो हमें वेदना दे रहा है 'आपके संभाषण या आपकी आवाज' ? और क्या यह वह आबाज 'ऐ' है जो आप सुग्गे एवं मुझ जैसी दुखिया को भगाने के लिये निकालते हैं ? यह समझना मुश्किल है। हमलोग ने इतना ही कहा 'क्या वे तुम्हारे पास से हटकर धन अर्जित करने चले जायेंगे ?' धरती को खरीदने वाली सुन्दर आंखों की यह किशोरी, जिसकी बाहर निकलती एवं भीतर जाती चंचल आंखें केन्डै मछली की तरह एवं हाथ की तलहथी

जैसी बड़ी बड़ी हैं, आंखों से मोती जैसे आंसू बहाते हुए मुर्झाकर पीली हो गयी है। हाय ! कृष्ण के स्वर्गिक सौंदर्य जैसी इस किशोरी को वेदनाग्रस्त देखना कठिन है।

नायकी अपनी व्यथा सुनाती है। हमारा वदन फीका पड़ गया है। बीमारी की तरह हम पीले पड़ गये हैं और यह रात युग की तरह लंबी हो गयी है। मेरा हृदय, मेरे प्रभु कृष्ण, जो तीक्ष्ण चक्र धारण करते हैं उनकी शीतल तुलसी माला के साथ चला गया है। हाय ! यह बड़ी संपत्ति है जो उन्होंने हमारे लिये छोड़ा है। प्रचंड ज्योति एवं दंड वाले सूर्य के सुनहले शासन का अंत हो गया है। (रात्रि का आ गमन हो गया है) सर्वत्र अंधकार का राज्य हो गया है। शीतल हवा प्रभु की पूज्य तुलसी के घातक सुगंध को फैला रही है, इस आतंक के लिये इसे कौन सजा देगा ? विधि व्यवस्था की रक्षा कौन करेगा तथा हमारे कंगन को कौन बचायेगा ? हाय ! कितने युगों तक ऐसी स्थिति रहेगाी ? क्या ये हृदय में घुस जाने वाले भुजाल हैं या सुन्दर मछलियां हैं ? या क्या ये मदन के धनुष के बिना छोड़े हुए बाण हैं ? ये आंखें सच में ईश्वरीय मछली हैं जो जल के वर्ण वाले दिव्य प्रभु को वैकुंठ में खोज रही हैं।

वेंकटम प्रभु की पद्मावती से प्रथम भेंट की कथा है। पा **2492** । आप हाथी खोजते आये एवं सभी दर्शकों के सामने हमलोगों की आंखें एवं मछली के बारे में बोलने लगे। यह कैसी बातें आप कर रहे हैं ? हमलोग इस बाग की रखवाली वेंकटम के घनश्याम प्रभु के लिये बहुत लंबे समय से कर रही हूँ। आप हमलोगों के बीच के नहीं हैं।

यह अंधकार या तो युग युगान्तर तक रहेगा या एक क्षण के अति ही सूक्ष्म अवधि में सिमट जायेगा। हमारे हृदय के प्रेमी हमारे साथ हो जायें या हमें त्यागे रहें दोनों ही स्थिति में हम वेदनाग्रस्त हैं। हाय ! यह अंधकार बहुत सारे दोषों से भरा है। यह बनी रहे ! हे नीले श्यामल सागर जहां श्यामल आभा वाले प्रभु शेषशय्या पर शयन किये हुये हैं जो नीली किरणें विखेरते एक काले सूर्य की तरह हैं। आप बने रहें। मेरे प्रभु रात के अंधेरे में खिसक लिये। आपके रथ का चिह्न हमें सागर तट तक ले आया। विनती है कि चिह्नों को अपने काले तरंगों से मिटाये नहीं। हे सुन्दर किशोरी ! बादल सागर से जल लेकर ऊपर उठते हैं। सागर ने पीछा कर पानी वापस ले लिया जिससे प्रलयकारी बाढ़ आयी एवं कृष्ण ने धरती आकाश सब को निगल लिया। क्या दूसरे समय में दूसरा प्रलय आयेगा ? क्या यह वर्षा का समय है ? हाय ! यह तुम्हारे आंसू हैं जो सागर की तरह उमड़ पड़े हैं।

मॉ अपनी शांत प्रकृति की बेटी के बारे में बताती है। नारियों ! देखो कैसे काले बादल गरजते हुए चुनौती दे रहे हैं। आप लोगों में से कौन मर्यादा से रहेगी ? कम से कम

अभी गरूड़ पर चक्कर काटने वाले प्रभु हमलोगों की थोड़ी सी तुलसी दल देने के लिये न पुकार दें ? हाय ! इसी कारण से हमारी कम बोलने वाली बेटी नगर के शिकायत की वस्तु बन गयी है। संसार अमर रहे। इस कम बालेने वाली किशोरी की बीमारी का कारण एक बहुत बड़े प्रभु हैं। किसी छोटे देवता की यह करतूत नहीं है जो इस भुजाल नर्तक से सुन जाये। सात लोकों को निगलने वाले प्रभु का नाम लो तथा इसके जूड़े में तुलसी की माला लपेट दो। आप जादू की तरह क्षण भर में क्या यहां आकर मक्खन नहीं चुराये एवं सात वृषभों के सींग पर गोप किशोरी नप्पिनाय के लिये नृत्य नहीं किया? पदमावती से वेंकट प्रभु के मिलन की **2492** पासुर वाली कथा **2499** में आगे चलती है। श्रीमान आपका दंड नमीपूर्ण एवं ताजा है। इसपर प्रत्यंचा का कहीं नामो निशान नहीं है। श्रीमान आपने जिस हाथी पर बाण मारा उसे खोजते हुए यहां आये। गरूड़ की सवारी करने वाले आश्चर्यमय प्रभु के विस्तृत पृथ्वी पर इस तरह की बातें कभी नहीं हुई हैं। आपकी शिकार यात्रा आनंद उठाने का एक बहाना मात्र है। आप अप्रासंगिक बातें कर रहे हैं। क्या इसीलिये आपने हमलोगों को इस बाग में रोक रखा है ? नारियों ! क्या आपलोग इस बाग के संरक्षक हैं या इस भाग्यहीन राहगीर के हृदय के ? आपलोग कृष्ण के आकाशीय जगत के स्वर्गिकों के समूह हैं जिस प्रभु की आंखें कमल के गुच्छों की तरह दिखती हैं। बताओ, क्या तुम्हारे लिये यह ठीक है ? हमारी कंगन वाली बेटी भयंकर बीमारी की शिकार हो गयी है। इसकी मछली सी आंखें तलहथी भर अश्रु बहा रही हैं। हाय ! इसका एवं इसके हृदय का क्या होगा जो पक्षी आरोही प्रभु जिन्होंने पर्वत से वर्षा के विरोध में गायों की रक्षा की उनकी अमृतमय तुलसी की माला के लिये तड़प रही है ? हमारी कंगन वाली बेटी के कारण यह तुलसी कृष्ण की धरती एवं आकाश के शासन में एक कलंक बन गयी है जिसमें देवों के प्रभु स्वर्गिकों के प्रभु एवं सबों के प्रभु इतना प्रेम रखते हैं। हाय ! इस चार भाग वाले जगत में अब और इससे ज्यादा क्या होगा ? गर्म स्वभाव के सूर्य चार भाग वाली धरती को खा जाते हैं। इसका रस चूसकर सूखा मरूभूमि उगल देते हैं। प्यारी किशोरी ! तू अभी तुरत उस क्षेत्र से पार की है। स्वर्गिक जन नीचे आकर कृष्ण की पूजा वेग्का (कांची यथोक्तकारी) में करते हैं जो विल्कुल पास है। इसके बाद सुगंधित अमृमय बागों से घिरा तिरूतन्कल (कांची दीपप्रकाश) है। यह किसी को भी किसी भी स्थिति में आराम देता है। अतः यहां रूको। 'राजा का कृपापात्र बनने से शत्रु भी मित्र बन जाता है' यह कहावत चरितार्थ हो गयी। प्रभु की तुलसी माला मिलने के बाद युगों से चलने वाली हवा जो हम पर आग उगलती थी अब शीतल एवं सुखदायी हो गयी है। अब पा **2505** में नायकी तिरूवरंगम के प्रभु से

शिकायत करती है। हे प्रभु ! यहां कावेरी जल की लहरों के कारण तीक्ष्ण चोंच वाले पक्षी घोंघा पर चोट नहीं कर पाते। जबकि तुलसी माला के लिये हमने अपना कंगन गंवा दिया। क्या शीतल हवा के लिये यह उचित है कि वह हमारे अंदर से बहकर हमारे रंग को सुखा दे ? क्या पहले इस तरह से हुआ है ? बताओ। हम इसी तरह से प्रभु के बारे में बोलते रहे क्योंकि हम जानते थे कि हम बिना किसी सहायता के अकेले पड़ गये हैं। अच्छे कुल के कारण हंस की जोड़ी बुरे चीज के बीच से अच्छी चीज को चुन लेती है। मेरे शब्दों से केवल मृदु शब्दों को प्रभु तक मेरा संवाद पहुंचाना। हे बुरे कुलवाले हंस ! क्या कभी मेघ एवं तड़ित वर्ण के प्रभु के सुखद जगत में ऐसा हुआ है कि हंस कभी हंसिनी का संवाद नहीं पहुंचाये।

नायकी अपने को अपने हृदय से अलग कर लेती है तथा दूत को कहती है कि हमारे हृदय को भी संवाद देना। उड़ने के लिये तैयारी करते हुए हे हंस एवं सारस ! आपलोगों से एक प्रार्थना है। जो भी वहां पहले पहुंचो, भूलो नहीं। अगर तुम हमारे हृदय को वैकुंठ के नाथ कृष्ण के पास देखो तो प्रभु को बताओ 'मेरा हृदय है, परिचय दो। उनको प्रभावित करो।' एवं पूछो ' क्या आप अभी भी नहीं लौट जायेंगे ? क्या यह उचित है ?'

नायकी वेंकटम प्रभु के पास बादल को दूत बनाना चाहती है। बादल के जल वरसाने वाला कैंकर्य की प्रशंसा करती है। श्याम एवं तड़ित रेखा वाले बादल वेंकटम के स्थायी शिखरों पर जाकर सोना एवं मोती वर्षाने के लिये तैयार हैं। जब मैंने उनसे अपना एक संवाद ले जाने के लिये निवेदन किया तो मना कर दिया। क्या वे कम से कम हमारे सिर के ऊपर से तो उड़ कर जायेंगे ? अहा ! हां। हे बादल ! बताओ तुम तिरूमल प्रभु के श्याम रंग को कैसे पा गये ? मैं जानता हूँ। जीवन प्रदान करने वाले जल लेकर तुम यत्र तत्र घूमते रहते हो जिससे तुम्हारे वदन को बहुत पीड़ा पहुंचती है। इसी तपस्या से तुम दया पात्र बने हो।

नायकी की माँ हस्तक्षेप करती है। शेष पर शयन करने वाले प्रभु ! आप अपने उदार चक्र के माध्यम से कर्म के अंधकार को दूर करते हुए विस्तृत धरती एवं आकाश में शासन करते हैं। यह किशोरी दिन प्रति दिन दुबली होती जा रही है। क्या इसलिये कि नारियों को अपनी सृष्टि में आप निरर्थक पाते हैं ? या यह किशोरी आपके न्याय के क्षेत्र से बाहर है ? हमलोग नहीं जानते। हे आदरणीय प्रभु ! यह किशोरी अपने पैर से बालू के ऊपर गोले का चित्र बनाते हुए उन्हें गिनती है। अगर गिनती का शकुन अच्छा नहीं निकलता तो गुस्से से उन गोलों को पैरों से ही मिटा देती है। इसका हृदय आपके

शीतल तुलसी माला पर टिका हुआ है जो यह बड़बड़ाते रहती है। हमें नहीं पता कि हम इस किशोरी के लिये क्या करें। लूटेरा सूर्यास्त ने बहादुर दिन का बध कर दिया है। इसकी युवा पत्नी पश्चिम अपने कमर पर दूध टपकाते चंद्र को लेकर चित्कार कर रही है। जो धरती मापने वाले प्रभु की तुलसी माला चाहते हैं उनलोगों का सबकुछ इसकी प्रजा शीतल वायु उत्पात मचाते हुए हर ले गयी है। किला से संरक्षित लंका का नाश करने वाले प्रभु अपनी शीतल तुलसी की माला नहीं देते। आपका हृदय दया से द्रवित होकर यह नहीं कहता 'यह किशोरी वेदनाग्रस्त है। यह स्थान इसके लायक नहीं है।' हाय ! भयानक व्यवहार है। मेरी कोमल मृगशावक जैसी बेटी जो लंबे काल से कृष्ण के चरणों की पूजा करती थी चली गयी है। हमलोगों के चारो ओर की मरूभूमि भयानक धनुष चलाने वाले शिकारियों, पशु चोरों, हत्यारों एवं रात भर नगाड़ा बजाने वाले तेज धावकों से भरा है।

नायकी कुमुद फूल के साथ खेलती है। गाढ़े नीले जलकुमुद ! तुम्हारा रंग पात्र नर्तक प्रभु का है जिन्होंने धरा एवं आकाश को अपने गर्जनभरे चरण से माप दिया। क्या यह आपकी तपस्या का फल है ? आप अपने बाग वाले घर का त्याग कर सब समय एक पैर पर गहरे जल में खड़ा रहते हैं। हमारे प्रभु श्याम रंग के हैं, सागर से घिरे धरा के प्रभु हैं, आकाश के प्रभु हैं तथा नेक लोगों के प्रभु हैं। आपकी सुन्दर आंखें श्यामल पर्वत के रत्न सरोवर में कमल के गुच्छे जैसे हैं। ये हमें सब जगह दिखती हैं।

नायकी पुनः संध्या के आगमन का मार्मिक चित्रण कर तुलसी की माला खोजती है। नारियों ! सुवर्ण जड़ित नर हाथी सूर्य पश्चिम दिशा के पर्वतों पर चला गया है एवं काले हाथियों के समूह जैसी रात्रि ने उसे चारो तरफ से घेर लिया है। क्या हम अपने घुंघराले लटों में भू देवी एवं श्रीदेवी के पति की तुलसी माला पहरने के लिये पा सकेंगे ? कब हमारी माँ हमें इस तरह से देखेंगी ? हाय ! गरूड़ की सवारी करने वाले एवं दुष्ट असुरों के विनाशक प्रभु आज दया दर्शाते नहीं दिख रहे हैं। दक्षिण की तेज हवा लंबी अवधि तक परिसर में बह रही है एवं हमें अपशब्दों से आहत कर रही है। हमलोगों ने इस तरह की कठोर हवा पहले भी देखी है परंतु इस तरह की गर्मी आक्रोश एवं विनाश नहीं देखा है। जब प्रभु फैलकर आकाश में चले गये तो उनकी आंखें पार्श्व में देखकर मानो कह रही थीं 'ये सभी लोक हमारे चरण के लिये उपयुक्त नहीं हैं।' हमारे ऊपर की बहती हुई हवा हमें कमल से भरा सरोवर दिखा रही है जो सब एक तरफ झुके हुए हैं। धार्मिक शास्त्रों के जानकार लोग जो प्रभु के रंग, आभूषण, नाम, एवं स्वरूप का बखान करते हैं वे अतिविशिष्ट ज्ञान की केवल झांकी तक ही प्राप्त कर सके हैं, जो दिव्य प्रकाश की

तरह खड़ा है, परन्तु गौरव पूर्ण गाथा की बाढ़ का लेश मात्र भी नहीं पा सके। हाय ! मेरे कमजोर हृदय ! बने रहो। बताओ, महान सूकर प्रभु ने अपनी कमल सी आंखों से हमलोगों को देखा है एवं हमलोगों को बहुत सारे बुरे समय दिखाया है। हमलोगों के जैसा आपको पुराकाल से जानने वाला एवं साथ रहने वाला और कोई है क्या ? क्या भविष्य के जन्म में हमें धैर्यपूर्वक रख सकेंगे ?

नायकी अपने हृदय के बारे में शिकायत करती है। जो लोग हृदय को आज्ञाकारी मानकर कार्यक्रम बनाये हुए हैं कि जो कहेंगे वह करेगा उनको अपना कार्यक्रम छोड़ देना चाहिये। मैंने अपने हृदय को प्रभु के चरणों में भेजा जिन्होंने असुर की लौहवत छाती को चीर दिया था। हाय ! वह मेरा हृदय वहीं स्थिर होकर रह गया और आज तक एक बार भी मेरे पास नहीं लौटा।

मॉ अपनी बेटी के कल्याण के लिये आशंकित है। उसने केवल कृष्ण के आकाशीय घर को नमस्कार किया। हाय ! ओस कणों से अभिषिक्त हवा चांद का ताप लेकर बहती है जबकि चांद गर्मी से तप रहा है। उसके कंगन खिसक रहे हैं। शीतल तुलसी माला की चाह में उसका सारा वदन पीला पड़ गया है। हाय ! हमारी कृशकाय प्यारी का क्या होगा ?

नायकी अपनी स्थिति बताती है। मैं घाव का एक भूखा कीड़ा हूँ जो केवल घाव में ही रेंगना जानता है। अन्य दुनियां वह जान ही क्या सकता है ? तिरूमल प्रभु अपनी गाथा का गीत रचने से हमें वंचित करते हैं परंतु मैं कविता करना कितना जानती ही हूँ ? तबभी एक छिपकली की आवाज पुरातन काल से एक बोले हुए शब्द के रूप में तो लिया ही जाता है।

सखियां हस्तक्षेप करती हैं। हे आभावाली किशोरी ! टुम्हारे ललाट में उस धरती की चमक है जिसे मधुमक्खी लिपटे शीतल तुलसी की माला धारण करने वाले श्यामल प्रभु मधुसूदन दामोदर निगल गये एवं फिर बनाकर उसे चरणों से माप दिया। पूर्व में भी प्रभु के श्यामल रंग के बारे में सुने थे परन्तु ऐसा श्यामल तो न जाना न सुना।

नायकी आगे की योजना बताती है। हे निपुण भाई ! इससे पहले कि किशोरी का तेजपूर्ण ललाट पीला पड़े या शरीर शिथिल हो जाये अपना रथ तेजी से हंकाओ। हमलोगों को मधुमक्खी मंड़राते महान वेंकटम पर्वत पर पहुंचना है जहां जल के झरने जमीन पर प्रभु के किरीट से चरणारविंद तक के मोती की लड़ियों की तरह गिरते हैं। प्रभु से नाग एवं पर्वत को उपयोग में लाते हुए अमृत निकाल लेने से सागर बहुत गुस्से में है तथा मुझे एक हिस्सेदार के रूप में लड़ने के लिये बुला रहा है। हाय ! ये कंगन हमने

सागर तट के आदिम निवासियों से खरीदा है और इसके पास में तुलसी की सुगंध भी है। श्रीदेवी एवं भूदेवी की प्रतियोगी भावना का अनोखा चित्रण साथ में वर्षा के सच्चे स्वरूप की बात कही गयी है। पा **2529** । कमल में निवास करने वाली लक्ष्मी सागर से प्रभु की पुकार सुनकर आपके श्वेत तरंग वाले हाथों को पकड़ के आपके शेषशय्या पर पहुंच जाती है। यह देखकर भू देवी अपने आकाश रूपी मुंह से चिल्लाती है 'तिरूमल दुष्ट हैं' एवं अश्रु वर्षा करती है जिससे पर्वत की नदियां उमड़ पड़ती हैं।

सखियों का हस्तक्षेप। पूर्ण उरोज वाली इस किशोरी को मंगलमय प्रभु से ईश्वरीय रोग का संक्रमण लग गया है। इसे प्रभु का धारण की हुई शीतल तुलसी माला सुंघा दो। चाहे उसकी एक पत्ती या डंठल या वह मिट्टी जहां तुलसी उपजी है कोई भी हो, असर करेगा।

नायकी का भौंरा को दूत बनाकर भेजना तथा अपनी विशेषता से भौंरा को अवगत कराना। हे भ्रमरगन ! तू हमें पूर्ण प्रभु के चरणों से मिलाने वाले हो जो देवों के नाथ हैं एवं मक्खन चुराने के लिये डांट सुन चुके हैं। तुम्हारे पंख तुम्हें वैकुंठ तक सरलता से ले जायेंगे। इसके पहले कि तुम जाओ यह बताओ कि हमारे बारे में वहां उनसे क्या बताओगे ? हे भ्रमरगन ! तू जल के फूल, मिट्टी के फूल, एवं आकाश के फूल का रस चख चुके हो। हमें कुछ पूछना है। प्रभु सूकर के स्वरूप में आये एवं धरती की धूल का आनंद लिया। उनके वैकुंठ की तरह यह किशोरी भी मृदु है जिसके जूड़े के फूल अमृतमय सुगंध विखेरते हैं। क्या ऐसा सौंदर्य अन्य कहीं देखा है ?

नायकी सखियों को सूचित करती है। बहन ! डरो मत। पृथ्वी निगलने वाले प्रभु की कृपा से हम आश्रय पा गये हैं तथा हमारा पुनरोद्धार हो गया है। बादल के स्वर्गिक स्पर्श एवं तुलसी के अमृत को ढ़ोते हुए शीतल वायु हमारे अंगों एवं इन्द्रियों को आराम दे चुकी है। अन्य कोई इसके बारे में नहीं जानता था। कमल जैसे मुखमंडल पर कान के दो कुंडल एवं केन्डै मछली की तरह की आंखों का युद्ध बीच के लता जैसे नाक के कारण बच गया है। कटार की तरह नजरों ने हमारे हृदय को वैसे उद्वेलित कर दिया है जैसे कृष्ण ने अमृत के लिये सागर का मंथन किया था। जिसने यह देखा है हमें कभी डांट नहीं लगायेगा। आपका एक तलुवा धरती को ढके हुए था एवं आकाश वाले पैर की छाया से उसके नीचे के सभी लोक ओझल हो गये थे। ज्ञान के आनंद की ज्योति संपूर्ण ब्रह्माण्ड पर फैल गयी थी। कीचड़ के कमल की तरह सुन्दर कृष्ण जैसा कोई दूसरा नहीं है। आश्चर्य है कि हम लोगों के लिये उन्होंने क्या सोच रखा है ?

मॉ बेटी के लिये पुनः चिंतित होती है। हाय पापिनी मैं ! मृदु विजयी मुस्कान एवं मूंगे

की तरह होंठ वाली हमारी बेटी वेदना में कहती है 'युग की तरह लंबी रात जिसे मापना संभव नहीं है, वह उतनी ही बढ़ती जा रही है जितनी मधुसूदन प्रभु वाली तुलसी के लिये हमारी चाह बढ़ रही है। परंतु, हाय ! वे तो सागर से घिरे पृथ्वी के शासक हैं। उसके उरोज पूर्णतया उन्नत नहीं हुए हैं, उसके कोमल बाल जूड़े में बंधते नहीं, उसके वस्त्र अभी उसके शरीर पर टिकते नहीं, अभी उसकी आवाज अटपटी है। फिरभी उसके होंठ की चमक को धरती तथा सागर कभी खरीद नहीं सकते। वह हमेशा यह बोलती रहती है 'प्रभु का पर्वत तिरूवेंकटम है।'

नायकी का अर्न्तचिंतन ः स्वर्गिकों के देव एवं देवों से पूजित प्रभु ने दो पग में धरा को बिना एक घास का तिनका छोड़े माप दिया। गोपकुमार के स्वरूप वाले आप हमारे नाथ हैं। क्या हम आपके बारे में द्वंदरहित कुछ बता सकते हैं ? दया की मांग करने पर भी नीले सागर के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं दिखता और न वह इस किशोरी पर कोई दया ही दिखाता है, सदा विजयघोष ही करते रहता है। हाय ! यहां के शेषशायी प्रभु ! यह क्या उचित है ? हाय ! आपकी कृपा के बिना यह किशोरी अपने सौंदर्य को अक्षुण्ण नहीं रख सकती। अहो ! आपकी अरूणाभ राजीव नयनों से हमारे प्रेमासिक्त हृदय में प्रभापूर्ण शीतल प्रकाश फैलता है। तिरूमल कृष्ण इस तरह के मुखमंडल से हमारे समक्ष इस बार सदा के लिये प्रकट हुए हैं। धरती के देवता वैदिक ऋषिगण, धरा को मापने वाले प्रभु की पूजा ऋग वेद के मंत्रों से करते हैं। अपने को पापी समझते हुए तथा अपने पाप पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए हम आपके पास इसी उद्देश्य से आये कि हम भी विधिवत पूजा करें। लेकिन जैसे फल चुनने वाला जब देर से आता है तो पके फल समाप्त रहते हैं अतः उसे कच्चे फल पर ही संतोष करना पड़ता है, हमें भी आपके नाम के जप मात्र से ही संतुष्ट होना पड़ेगा। आपकी पंखुड़ी समान कोमल मृगशावक की तरह आंखें भारी भीड़ में भी अलग ही दिखती है। आपकी केंद्रित नजर अपनी आंखों से ओझल हो जाती है और लगता है कि धरा को निगलकर पुनः बनाने वाले प्रभु के चरणों को नहीं देखपाती है। आपकी प्रकाशपूर्ण आंखें हमारे हृदय में छायी हुई है। यह कुशल किशोरी प्रभु के वैकुंठ की तरह है जो स्वयं धरा जल अग्नि वायु एवं आकाश हैं। आपकी कमल समान तेजपूर्ण आंखों को यह पापिनी सदा देखते रहना चाहती है जिसमें ऐसा आकर्षण है कि बिना भोजन एवं नींद के चैतन्य का अभ्यास करने वाले योगी लोग भी जिसे देखकर विचलित हो जाते हैं। पक्षी की सवारी एवं असुरों के संहारक माधव एवं गोविन्द प्रभु के आवास वेंकटम पर्वत पर की सुन्दर हंस की तरह यह किशोरी दिखती है। इसकी पूर्णतया समान आंखें कमल, नीले जलकुमुद, कटार,

एवं मछलियों पर बहुत सी बातों में आसानी से जीत प्राप्त कर लेती है। हमारे ह्दय को सहने से ज्यादा प्रभावी इसकी नजरें हैं। हे सागर से घिरे धरती को मापने वाले प्रभु के वैकुंठ की तरह कुशल किशोरी ! तुम्हारी प्रेमी को लौट आने की प्रत्याशा में कोन्रै वृक्ष फूल की कली खिला रहे हैं। लेकिन अभी तक लताओं एवं पत्तों की छतरी पर पूर्ण पुष्प नहीं खिले हैं। हे जूड़े की तरह उरोज वाली सुकोमल प्यारी ! कंगन की चिंता छोड़ दो। अंधकार रूपी काला सांढ़ सूर्य रूपी लाल सांढ़ से हार गया है। परंतु लंगड़ाते हुए फिर लड़ने के लिये उठ खड़ा हुआ है। यह संध्या की प्रारंभिक वेला है। प्रभु ने संकल्प का जल स्वीकार करते हुए पूरी पृथ्वी को माप डाला। क्या वे तुम पर कृपा नहीं करेंगे ? जबसे हमने तीक्ष्ण चक्र को धारण करने वाले प्रभु के मुकुट की तुलसी की कामना की है तबसे हम पर दिन फीका पीलापन बरसा रहा है और यह स्थिति महीनों वर्षो तथा युगों से कायम है। हाय ! इसपर यह भयानक हजारों युगों तक रहने वाली रात्रि का प्रवेश हमें समाप्त कर देने के लिये हुआ है।

नायकी सखी को संबोधित करती हुई पूछती है। हे सखी ! काला फल को देखकर हमने यह नहीं कहा कि प्रभु युग युगान्तरों से सात लोंकों को निगलते आ रहे हैं वल्कि हमने कहा 'सागर का रंग काला फल का रंग है'। इसपर हमारी माँ कहती है 'मैं दोषी हूँ क्योंकि मैंने पृथ्वी निगलने वाले प्रभु के रंग की बात की' एवं हमें पीटती है। बताओ मैं क्या करूं ? सुखद चांद रात्रि के अंधकार से उत्पन्न भयावह दृश्य को हटाने आता है परंतु मेरे ह्दय को तोड़ देता है। इस अकेली आत्मा के पास एक ह्दय है जो केवल तुलसी पाने के लिये लालायित रहता है। क्या इसीतरह से आज भी होगा ? हाय ! शत्रु प्रवल हो गया है। सारे संसार पर देर संध्या में आकाश की गाय चांद रूपी थन से चांदनी के समान दूध बरसा रही है जो सबों के लिये सुखद है परंतु इस किशोरी के लिये यातना है। हाय ! सुनहले तेजोमय चक्र धारण करने वाले सातों लोकों के रक्षक प्रभु का दुखिया को आराम पहुंचाने का यही तरीका है ?

तुलसी की हवा से नायकी प्रसन्न दिखती है। उठते गिरते लहरों वाले सागर की शय्या पर प्रभु श्रीदेवी के साथ नींद में चले जाते हैं फिर जागकर ब्रह्माण्ड को निगल जाते हैं तब पर्वत को उलट कर पकड़ते हैं तथा अपनी गायों की रक्षा करते हैं। सुखद हवा उनकी तुलसी माला का सुगंध लेकर यहां आती है। क्या आश्चर्य है ?

नायकी अपने ह्दय के लिये चिंतित हो जाती है। आभापूर्ण मुखड़े वाली नारियां अपनी मछली समान कटारी आंखों के बाण को भौंहे रूपी धनुष से छोड़कर हमारे ह्दय को छेद देती हैं। सागर में शयन करने वाले प्रभु के भक्तगण आपके स्थायी निवास वैकुंठ को

पसंद करते हैं कि पृथ्वी को ? पृथ्वी को मापनेवाले प्रभु की तुलसी माला को चाहने वाला हमारा मूर्ख हृदय ! जब लाल कमल की बड़ी पंखुड़ियां बंद होती हैं तो चांद से श्वेत कुमुद की छोटी पंखुड़ियां खुलती हैं। चांद अपनी विषैला चांदनी हमलोगों के धवल कंगन को हरने के लिये फैलाता है। क्या यह आश्चर्यजनक है ? गोधूलि वेला रूपी पत्नी पश्चिम के रक्तिम युद्ध क्षेत्र में अपने पति सूर्य के बध के लिये शोक से कराहती है जबकि बच्चा चांद बिना सांत्वना के विलाप करता है। हाय ! दक्षिणी नगर लंका के नाश करने वाले राम प्रभु अपनी तुलसी माला के सहयोग से हमलोगो की कुशलता को नष्ट करने आये हैं। नरकासुर का नाश करने वाले, बानासुर के शक्तिशाली भुजाओं का काटने वाले, एवं अन्य विरोधियों को पराजय करने वाले पर्वत सा श्याम प्रभु कृष्ण भी हमलोगों के ऊपर दया नहीं दिखाते। मेरा मूर्ख हृदय मुझे छोड़कर प्रभु के खिलते तुलसी माला की खोज में चला गया है। हाय ! इस तरह से हमें केवल यातना ही मिली है।

नायकी स्वयंचिंतन करती है तथा सखियों को संबोधित करती है। वेदों के प्रभु, यज्ञोपवीत धारण करने वाले प्रभु, स्वर्गिकों से पूजित प्रभु, सबों के नाथ, ब्रह्माण्ड को निगलने वाले जिनका कोई नाथ न हो, धरा को मापने वाले प्रभु, गहरे क्षीरसागर में शेषशायी प्रभु ः जो आपको इस तरह से पूजा करता है वे देवों से भी ऊपर हैं। आपके सुराज को कुछ दिनों के लिये अवधि विस्तार देते हुए सूर्य भी अनेकों अन्य राजाओं की तरह लुप्त हो गया है। धरा को मापने वाले महान राजा, स्वर्गिकों के राजा, बिछुड़न से विषाद के साम्राज्य वाले राजा। कृपा करें, भयानक विषाद से हम घिर गये हैं। जो नारियां इस किशोरी को घेरे हुए हैं वे कभी भी इसके पुर्नस्थापन की बात नहीं करती न तो कोई कठिन मार्ग ही बताती हैं। वे इसके जूड़ो में तुलसी भी नहीं बांधती और न तो वेंकटम पर्वत की परिक्रमा में जाती हैं। हाय प्रेमाग्नि से इसका हृदय जल रहा है। उदयगिरी पर्वत पर दो प्रकाशमान सूर्य की तरह उदय लेने वाली प्रभु की दो आंखे फिर से चमकने लगी हैं और जैसे असुरगन इसमें गिरकर नष्ट हो गये थे वैसे ही ये हमें भी जला रही हैं। सखी ! बताओ, क्या अच्छा संसार इस तरह की ईच्छा रखता है ? ताड़ वृक्ष के कंटीले घोंसले में अपने सुकोमल जोड़ी से मिलकर अन्रिल पक्षी की बार बार आने वाली आवाज की तरह यह किशोरी भी मेघ जैसे श्यामल प्रभु के नाम को बारबार बिना थके बोलकर अपना स्वास्थ्य एवं कुशलता नष्ट कर रही है। क्या जब यह सबतरह से टूट जायेगी तब इसकी मुक्ति होगी ? मैं नहीं जानती । मैं आपका दिव्य चक्र एवं धवल शंख के साथ दर्शन चाहती हूँ। मत सोंचो, यह या तो भीड़ भरी स्थिति में हो

जब आप बहुतों नारियों से घिरे हों, या विद्वान संतों द्वारा आयोजित उत्सव में हो, या कहीं भी हो। जैसे बन्दर रत्न चुनचुन कर फेंकते जाता है उसी तरह संध्या के आकाश ने सूर्य को अंधकार में फेंक दिया है। हमारे अधम प्राण के लिये आप एकमात्र सहारा हैं। शंख एवं चक्रधारी प्रभु ने खोपड़ीधारी शिव को कमल से उत्पन्न ब्रह्माके शाप से मुक्त किया। फिर भी मक्खन चुराने के लिये हमारे प्रभु गोपनारी द्वारा बांध कर पीटे गये तथा रूलाये गये। हाय ! आपको पुकार कर हम आश्रय के लिये रोयें क्या ? तिरूमल प्रभु ! यह 'तिरू' की तरह पावन किशोरी आपके शक्तिशाली गरूड़ पक्षी की गाथा गान के लिये सब से अपशब्द सुनती है। अन्रिल पक्षी की जोड़ी का आपस में मिलन की रूखी एवं मोटी पुकार तथा आस पास के सागर की लहरों के गर्जन के बीच 'सत्त पान्न' का धुन विराजमान है। क्या आपके लिये यह उचित है कि आप इसे इस तरह की स्थिति में रखें ?

नायकी आशान्वित दिखती है। ঃ मेरू पर्वत तिरूमल प्रभु के आकार जैसा दिखता है।इस पर्वत पर उदयकालीन सूर्य प्रभु के हाथ का सुन्दर दीप्तमान चक्र की तरह दिखता है। समान चीजों को देखकर प्रभु की एवं प्रभु के प्रतीक चिह्नों की तुलना करते हुए प्रेम से उद्वेलित हृदय से हम गाथा गाते हैं। यातना कभी भी हमें कैसे सतायेगी ? बुरे कर्म के विरूद्ध में आप हमारी औषध हैं तथा अच्छे कर्मो के लिये पुरस्कार हैं। कमलनिवासिनी देवी के आप पतिदेव हैं। गाय को चराना एवं उसकी रक्षा करने से आप तनिक भी निम्न स्थिति को प्राप्त नहीं हुए। पुरा काल में आपने धरा को दो कदमों में माप दिया। हाय ! कब हम आपको प्राप्त कर सकेंगे ? अपने सिर से आपके चरणारविंद की पूजा करने की कृपा से हमारा हृदय आप पर स्थिर हो गया है। हमारे शरीर को चमत्कार पूर्वक संचालित समझते हुए तथा चमत्कार पूर्वक शारीरिक श्रम के फल के लाभ से हमारी युग जैसी लम्बी प्रतीक्षा की बीती हुई अवधि छोटी दिखती है। रस्सी के छींके से मक्खन चुराने वाले, एक कौर में संपूर्ण ब्रह्माण्ड को निगल जाने वाले, एवं मावली के पास सम्मानीय वामन की तरह जाकर उसे छकाने वाले प्रभु हमारे हृदय के परम ईष्ट हैं। मैं किसी अन्य की सेवा नहीं करती। स्वर्गस्थों ने निष्ठुर राक्षसों के टापू वाले लंका नगर के नाश के लिये आपसे प्रार्थना की और आपने मरणधर्मा मनुष्य का शरीर धारण कर इस धरा पर आकर उसका नाश किया।क्या वे आपकी रात दिन पूजा आपके बहुआयामीय सुन्दर स्वरूप के एक भाग के दर्शन के लिये करते हैं ? अंधकार की दुष्टता जो सूर्योदय के पूर्व भाग जाता है, पुनः संध्याकाल में सूर्य के डूबने पर वापस आकर धरा को हर दिन आक्रांत करता है।यह देखते हुए भी कोई अपना मन श्याम

प्रभु पर नहीं लगाता, कोई ज्ञानसरोवर में नित्य प्रातः नहीं नहाता, कोई अन्र्तमन से जागकर तिरूमल प्रभु की प्रार्थना नहीं करता। सात्विक वैदिक ऋषि हीं केवल आपके चरणारविंद को धारण करने के योग्य हैं। समूह में चरने के लिये जाती अंधी गाय की तरह हमने भी आपकी स्तुति की। मैं अपनी अधम आत्मा के लिये और क्या कह सकती हूँ ? हर जीवात्मा को पुनर्जन्म एवं मृत्यु की आवृति में पड़कर विभिन्न शरीरों से गुजरते देखकर माता एवं पिता की तरह उदार तिरूमल प्रभु हमारी रक्षा में आते हैं एवं हमें अनावश्यक आशाहीनता की उदासी से बचाते हैं। मैं आपकी पूजा करती हूँ। आपने इतने सारे पूजा की विधि बनाई, आपने इतने सोर विरोधाभासी सिद्धांतों को बनाया, एवं हर में आपने इतने सारे देवों का निर्माण किया, तथा सबों में आपने अपना अद्वितीय स्वरूप को रख दिया।मेरा हृदय आपके प्रेम से भरकर ऊंचा हो गया है। देवों के समूह पुराकालीन प्रभु की पूजा कर परिक्रमा करते हैं तथा प्रेमासिक्त नजरों से प्रभु को घंटों निहारते हैं।हरबार जब आंख की पलके गिरती हैं तो वे उसी तरह की वेदना का अनुभव करते हैं जैसे शाश्वत काल से जन्म मरण की आवृति से। निद्राहीन मुनिगन जो पुनर्जन्म की आवृति की यातना से मुक्त हैं तथा अन्य लोग भी अद्वितीय प्रभु की पूजा करते हैं जिसकी पूजा स्वर्गस्थजन भी करते हैं। लेकिन आपका मक्खन चुराने के लिये आने का आश्चर्य वास्तव में उनलोगों की समझ के परे है। आकाश के देवों के लिये, धरती के मरणशील जनों के लिये, तथा अन्य जनों के लिये मैं जो जानती हूँ उसकी घोषणा करती हूँ ः ज्ञान के प्रभु के अतिरिक्त एवं जो वराह रूप में आये एवं धरा को उठा लिये दूसरा कोई देवता नहीं है। अगर ये शब्द अप्रिय हैं तो रहने दो। यह शतक पदावली मारन शठकोपन के हैं जो ऐसे भक्तों के चरण को धारण करते हैं जो प्रभु के नाम का गान अपने गले की माला की तरह करते हैं। जो इसे कंठ कर लेंगे वे कभी भी यातना पूर्ण जन्म के रहस्यमय कीचड़ में नहीं पड़ेंगे।

प्रबंध 18। तिरूवाशिरियम ः **2578 से 2584**

नम्माळवार यानी शठकोप स्वामी की इस कृति में **2578** से **2584** तक **7** पासुर हैं।इसे यजुर्वेद कहते हैं। आपका अवतार स्थल आळवार तिरूनगरी तिरूनेलवेली के पास है। वैकाशी यानी वैशाख मास में विशाकम यानी विशाखा नक्षत्र में आपने सेनैमुदालियर विष्वकसेन के अंश से अवतार लिया।यहां अदृश्य दिव्य देश क्षीरसागर की प्रशस्ति गायी गयी है। कुछ छिटपुट विशेष बातें हैं ः

✐ ब्रह्मा एवं शिव का सृजन **2581**

✐ अन्य देवों की पूजा से कोई लाभ नहीं

अरूणाभ चरणारविंद से धरा को मापने वोले प्रभु ! रक्तिम बादल का वस्त्र, ज्योतिर्पुंज सूर्य का मुकुट, सुखद चांद वदन पर, सर्वत्र तारागनों के प्रदीप्त कण, लाल मूंगावत होंठ, आभा विखेरते हरे पन्ना के पर्वत समूह, सागर प्रभु के बाहों में ऐसे पड़े हैं जैसे कोई सोया है। पीला वस्त्र, मुकुट एवं अनेकों आभूषण धारण किये, चमकती आंख एवं होंठ की लालिमा, शरीर का हरापन या श्यामपन लाल रंग के ऊपर प्रभावी, क्षीरसागर में अनेकों फन के शेष पर आप गहरी नींद में सोये हुए, जहां शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र के साथ सभी देवगन पूजा अर्पित करते हैं। नाभि में कमल वाले अद्वितीय प्रभु !

प्रभु मेरे जनक ! आपने जगत को बनाया एवं निगल गये। जो प्रेमपूर्वक प्रभु के नुपूर वाले पादारविंद के फूल को अपने सिर पर प्रेमासिक्त हृदय से धारण करना चाहते हैं वे गौरवगाथा के आनंदामृत के प्रवाह का आनंद लेते हैं। क्या स्पष्ट विचार वाले कभी मोक्ष की इच्छा करेंगे जो कि कमलवासिनी लक्ष्मी की संपन्नता एवं तीनों लोक के सतत राज से आये ? जो ऐसा करते हैं उन्हें करने दो। अद्वितीय सर्वोत्तम प्रभु ने नागराज बासुकी को विशाल मंदर पर्वत पर लपेटकर सागर का मंथन किया एवं आपके गर्जन से पर्वत कांप उठे। आपका वक्षस्थल ज्योर्तिमय है। आप त्रिमूर्ति के प्रथम कारण हैं। आप जगत पर न्यायपूर्ण एवं यशोमय राज्य करते हैं तथा तीनों लोकों में पूजित हैं। कम से कम अबसे, क्या हम युगों युगों तक आपके भक्तों के सेवक नहीं बन सकेंगे ?

महान प्रलय में जब सभी देवगन एवं सब लोक लुप्त हो गये, जो बच गये थे उनके लिये प्रभु अमूल्य बीज बन गये, एवं अंकुरित होकर डंढल पर कमल उत्पन्न किये तथा उस पर चतुर्मुख ब्रह्माकी रचना की। तब तीन आंखों वाले शिव एवं अनेकों देवगन आये। क्या हम आश्चर्यमय देव की अनवरत प्रशस्ति का युगों युगों तक आनंद ले सकेंगे जिनकी नाभि में कमल है एवं जिन्होंने सब लोकों की रचना की ?

हजारों सूर्य से प्रकाशित मुकुट पहन कर आप आकाश में खड़ा हुए। आपकी हजारों भुजायें कल्प वृक्ष के घने जंगल की तरह फैली थीं। आकर्षक मुखमंडल था एवं कमल फूल के गुच्छों की तरह आंखें थीं। एक चरणकमल धरती पर स्थिर था तो दूसरा चरण कमल लोक लोकान्तरों से पार करता हुआ ब्रह्माके लोक में प्रवेश किया जहां देवगन आनंदमय आश्चर्य से भरे खड़े थे। समूह में देवगनों ने आकर पूजा अर्पित की। क्या जगत किसी दूसरे देव का भक्त हो सकता है ?

हाय ! हाय ! संसार की रीति ! माँ गाय को छोड़कर नवजात बछड़े को नहाते हैं। प्रथम कारण प्रभु जिन्होंने ब्रह्माण्ड को बनाया, उठाया, निगला, फिर बनाया, और मापा। इस तरह से सब समय इसकी रक्षा की। परंतु ऐसे प्रभु को छोड़ देते हैं और राह

के किसी अज्ञात छोटे देवता की पूजा करते हैं तथा अपनी छोटी बुद्धि एवं बड़े अहंकार का प्रदर्शन करते हैं। दुष्ट कार्य तथा निर्दयता में लिप्त हो मृदु वेदना लेते हैं जिससे कांपता हुई जीवात्मा कार्मिक नरक के गर्त को प्राप्त होता है।

बिना किसी अपवाद के, सारे लोक, सभी जीवात्मायें, सभी देवगन, शशिभूषण शिव, चतुर्मुख ब्रह्मा, तथा तेजोमय इन्द्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, हवा, आकाश, दोनों ज्योर्ति पूंज, सभी एक छोटे शिशु के उदर में चले जाते हैं। प्रभु सब को निगलकर बटपत्र पर सोये हुए प्रलय जल में रहते हैं। इनको जानकर, क्या हम दूसरे देव की पूजा करेंगे ?

<u>प्रबंध **19** । पेरिय तिरूवन्दादि **2585 से 2671**</u>

नम्माळवार यानी शठकोप स्वामी की इस कृति में **2585** से **2671** तक **87** पासुर हैं। इसे अथर्व वेद कहते हैं। आपका अवतार स्थल आळवार तिरूनगरी तिरूनेलवेली के पास है। वैकाशी यानी वैशाख मास में विशाकम यानी विशाखा नक्षत्र में आपने सेनैमुदालियर विष्वकसेन के अंश से अवतार लिया। यहां जिन दिव्यदेशों की प्रशस्ति गायी गयी है वे हैं ः (i) क्षीरसागर, (ii) वैकुंठ, (iii) तिरूमल वेंकटम। कुछ छिटपुट विशेष बातें हैं ः

✐ ब्रह्मा एवं शिव का सृजन **2655**

✐ प्रभु के चरण एक समान हैं **2671**

हे उत्सुक हृदय ! इस पद की रचना में मेरे साथ रहो। चलो साथ मिलकर काया के रंग वाले प्रभु की गौरव गाथा अपनी जिह्वा से निकले कुतूहल पूर्ण शब्दों की धागा से बाध दें। पूज्य अरूणाभ पंकजनेत्र प्रभु ! हम प्रशंसा करें न करें, दोष लगायें न लगायें, सम्मान दें न दें, आनन्द मनायें न मनायें, प्रार्थना है कि आप कोप न करें। यद्यपि हम पापी हैं परंतु आप ध्यान दीजिये यह हमारा प्रेमोद्‌गार है। प्रभु ! हम अच्छा बुरा नहीं जानते। क्या है या नहीं है यह भी नहीं जानते। और अगर कुछ करें भी तो हम स्वयं न तो कुछ ले सकते हैं और न रख सकते हैं। क्या है जो हम कर सकते हैं ? सागर से अथाह दिव्य गौरव गाथा वाले आभापूर्ण श्यामल कृष्ण प्रभु से हमारा हृदय का परिणय हो गया है। इस जगत में हमसे महत्वपूर्ण कौन होगा ? झरा सोंचो, हमें छोड़कर ऐसा कोई अन्य हो सकता है क्या ? आप गर्भ में शिशु पालने वाली माँ हैं तथा जन्म देने वाले पिता हैं एवं जो कहा जाता है आप सबकुछ हैं। राक्षसी के विषैले स्तन पीने वाले प्रभु ! आपकी रीति कितनी आश्चर्यमय है ? कृष्ण ! क्या अपने चरण तक का मार्ग दिखायेंगे और तब लुप्त हो सकते हैं। और क्या अपना श्यामल स्वरूप भी दिखायेंगे ? आगे क्या होगा हम नहीं जानते। प्रार्थना है, कृपया बतायें कि आपकी ईच्छा क्या है ? आप जो भी करेंगे हम उससे प्रभावित होंगे।

हमारा हृदय तो आपके चरणारविंद प्राप्त कर चुका है। हाय ! केवल हम पापी हीं अभी दूर हैं। आप इतने सूक्ष्म हैं कि इस पापी की आंखों से नहीं देखे जा सकते हैं। न तो आपको प्राप्त करने की हम कोई युक्ति ही जानते हैं।फिरभी आपके लिये हमारा प्रेम उद्वेलित हो रहा है। यह कैसे ? कृपया बताईये। हे हृदय ! जब प्रभु के प्रियतमों के लिये प्रभु के पास जाना कठिन है तो हमारे निवेदन से "हम आपके सेवक हैं, यह और वह करूणा की बातें आदि" से क्या लाभ ? हमलोगों पर कुछ भी होने दो तुम प्रभु के वारे में सोंचता रह। हम तो आठ बसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्यों, तथा दो अश्विनी कुमारों में से हैं नहीं।प्रभु के हम कौन हैं ? हमारी पूजा क्या है ? हे हृदय ! हमारे पास केवल गर्वीली जिह्वा है। आपने युद्ध में आमंत्रित कर एक अभिमानी राक्षस के प्रिय प्राण को हर लिया। क्या यह आप के शौर्य के अनुरूप है जबकि आप ही धरनी अग्नि वायु जल आकाश तथा अपने आप हैं ? हे हृदय ! क्या अपने कार्यो से तूने हमें गहरी उदासी में नहीं रख दिया है ? इसकी लंबी व्याख्या से क्या लाभ ? जाओ, तूने कभी भी मेरी नेक राय नहीं सुनी। यह जान लो कि कृष्ण की प्रशस्ति गाना अच्छा है। हे प्रभु ! यह विश्वासघात नहीं है। आपने सदा अपने भक्तों को अपवाद की अनुमति दी है।यह कोई बड़ी क्षति नहीं है। चूंकि हम आपके भक्त हैं अतः एक विनती है 'हमारी आंखों को आपके श्याम वदन की झांकी मिले'। हे हृदय ! जब सागर लहराता है तब प्रभु इसमें शयन करते हुए इसकी लहरों को अपने चरणाविंद का स्पर्श करने देते हैं एवं अपने वदन की सेवा की अनुमति देते हैं।अपने स्वप्निल आंखों से इसे प्रेमपूर्वक निहारते भी हैं। अपने आत्मनाश से बचो एवं प्रभु की प्रशस्ति गाओ। यह एक स्पष्ट सच है कि इससे पहचान को कोई क्षति नहीं होती।

हे हृदय ! झबकि आप ऊंचे कुल में जन्म नही लिये पर पालन पोषण संपन्नता में हुआ एवं एक बह्मचारी के रूप में प्रकट होकर उपहार की याचना करने आये। क्या पृथ्वी को लेना आपके लिये कठिन था जिसे आपने पूर्व के समय में अपने वक्षस्थल के पास रखा था, निगल गये थे तथा पुनः बना दिया था ? विनती है, मुझे बताइये जिससे कि हम आश्वस्त हो जायें। जबकभी भी भक्तगन एकत्र होकर प्रभु को पुकारते हैं, यद्यपि आप प्रकट नहीं होते परंतु राहत तो प्रदान करते ही हैं। इसके बाद भी आप बोलते नहीं हैं। आपने धनुष धारण कर एक पर्वत की तरह खड़ा होकर राक्षसों के सिरों को वैसे ही धराशायी किया जैसे कि पत्थर लुढ़क रहे हों।आप जब बांधे गये थे तो उसका चिह्न आप पर रह गया। जब आपने नाग से युद्ध किया तो उसके चिह्न ने पुराने चिह्न को मिटा दिया। तब भी कौन आपके मूल स्वरूप को समझता है ?

बताइये। आक्रमणकारियों की महान सेना के विरूद्ध प्रभु ने पांच जनों को रात दिन तथा हर समय संरक्षण प्रदान किया। देखो, तुम भी प्रभु को देख सकते हो।
अहो ! यह हृदय संवेदनशील है। जब कोई कहता है या यह स्वयं सोचता है कि धरा का उपहार लेने वाले सुन्दर वामन प्रभु को स्पर्श करना है तो यह लज्जा से भर जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिये हमें नरकगामी न होना पड़े मेरे हृदय ने आज प्रभु के पदारविंद को अपने में स्थापित कर लिया है। पूज्य प्रभु हमारे हृदय में बैठ गये हैं।
हमारे कर्म के आततायी राजा अपने दुष्कर्मों के शरीर के लिये ठहरने का कोई ठौर नहीं पा रहे हैं एवं अपना समय घूमते हुए तथा घायल पैरों के साथ कराहते हुए बिता रहे हैं।
हे हृदय ! मेरी बातो से तू मूर्छित हो जा सकता है। यमदूत हमपर अपने कुत्तों को छोडकर हमारा कचूमर निकाल देंगे।लेकिन अपनी शक्ति का ह्रास नहीं होने दो। सबकुछ देखने वाले प्रभु जो सभी जीवात्माओं के माता एवं पिता हैं यह नहीं होने देंगे। प्रभु स्वयं निर्मित हैं।न तो कोई आपके समान है और न आपसे कोई बड़ा है। कोई अगर आपके गुणों को प्राप्त करता है तो आपकी कृपा से ही। जब आप चाहते हैं तो जगत में उथल पुथल मच जाता है लेकिन उसे आप ही ठीक कर देते हैं। आपकी गाथा को कौन पार पा सकता है ?
जो जैसा चाहता है वैसा करने दो। क्या इस वृहत संसार को समझाना एवं ठीक रखना संभव है ? कृष्ण की कृपा से हमने अपने हृदय को अकथनीय यातना से मुक्त कर लिया है। प्रभु ! घोर अंधकार ने हमें कृपा रूपी एक डंडा दिया है। इसकी सहायता से हम अपने हृदय के साथ मिलकर अपने दुष्कर्मों को जंगल एवं पर्वतों में खदेड़ देना चाहते हैं। क्या यह आपके चरणारविंद से धरा को मापने का आनन्द है या आकाश को आपके मुकुट से मापने का आनन्द है ? मैं नहीं जानता। हे पुरा काल के प्रभु ! जब आभूषित पदारविंद को बढ़ाकर आपने ब्रह्माण्ड को मापा उस समय का आपके मुखमंडल का आश्चर्य !
इन आंखों से प्रभु का दर्शन कभी नहीं मिल सकता लेकिन यह केवल अब की बात है। जब अन्तःचक्षु जिसे हृदय कहते हैं आपके स्वरूप का ध्यान करता है तो उसे अनुभूति होने लगती है। तब ये आंखें भी चक्रधारी प्रभु के श्याम स्वरूप देखने लगती है। प्रभु, मेरे पिता ! ओजस्वी तुलसी धारण करते हैं। क्या कोई आपको पूर्णतया समझ सकता है ? जो जितना ही विनम्र होता है उतनी ही प्रभु की गौरव गाथा को समझ पाता है। वह आपके पास सरलता से पहुंच जाता है। अरूणाभ नयन पूज्य प्रभु की गौरव गाथा को रखने के लिये हमारा हृदय बहुत ही छोटा है। अतः बूढ़े की तरह हमारा पुराना कर्म

यहां बैठ नहीं सकता। बल्कि किसी कोने में खड़ा होकर कांपता एवं कहता 'उन्हें अपना रास्ता पाकर निकल जाने दो'। गहरे सागर में सोने वाले प्रभु हर्षित मन से अपने सिर पर पात्र रखकर सर्वत्र नाचते हैं। हमारे कर्मो को नाश करने की आपकी शक्ति एवं आपके सौंदर्य को जानकर हम आपके चरण चिह्न एवं आपकी छाया हो गये हैं।

दामोदर प्रभु जो ऊखल में बांध दिये गये थे सेवा से प्रसन्न होते हैं। लेकिन बताने पर हृदय सेवा नहीं करेगा। यह नीच कर्मों की सेवा में लगा रहेगा एवं कहेगा 'मैं स्वयं का हूँ'। (अहं ब्रह्मास्मि पर कटाक्ष है)

ऐसी स्थिति में हम क्या कर सकते हैं। प्रभु अपने चक्र से असुरों का सर्वनाश कर देते हैं जो अपने को सुधारने के लिये कोई प्रयास नहीं करते हैं। आपको अति अल्प जानने पर भी बहुत आनंद मिलता है। तब भी कोई आपके पास किसी भी माध्यम से क्यों नहीं पहुंचता है ? क्षीरसागर में शयनावस्था के आपके गौरवशाली स्वरूप के बारे में हमने सुना है। हाय ! आपको प्राप्त करने की ईच्छा को जानकर हमारे पैर कांपते हैं, हृदय मूर्च्छित हो जाता है, एवं आंखें घूमने लगती हैं। खड़े, बैठे, सोये एवं चलते हुए प्रभु कभी आराम की चिंता नहीं करते एवं कभी भी मेरे हृदय को नहीं छोड़ते। पुराकाल में आप सुन्दर हाथ एवं शक्तिशाली नखों के साथ आये। आपने हिरण्य के मुंह को बंद करते हुए उसकी छाती चीर डाली। क्या आप हमें प्रेम नहीं देते ? आपके विभिन्न रूपों को देखकर कि आप वहां, आप यहां, आप बीच में, एवं आप आकाश में, द्वंद में मत पड़ो। यह जान लो कि कृष्ण अकेले ही सर्वत्र हैं एवं आपकी पूजा करो। तुम जिस रूप में चाहोगे आप प्रकट होंगे। हे हृदय ! सोच लो, क्या आपकी प्रशस्ति के लिये हमारे पास पर्याप्त समय है ? हर क्षण मधुर माला वाले प्रभु के बारे में बोलो, यहां तक कि वह गोप किशोरियों के व्यंग हीं क्यों न हो। हे हृदय ! तुलसी माला वाले प्रभु का एक बार ही नाम लेकर क्या हम आपकी सेवा करने के लिये वैकुंठ चले जायेंगे ? क्या हम यहां प्रतीक्षा नहीं करते रहे हैं तथा हर अवसर पर प्रशस्ति नहीं गायी है ? बताओ।

आओ, हे हृदय ! इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा। हमें बार बार नरक नहीं दें। अच्छा हो कि राक्षसी के विषैले स्तन पीने के साथ उसके प्राण पी जाने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ। मल्ल योद्धाओं ने सोचा कि वे शक्तिशाली हैं परंतु चक्र धारण करने वाले सुन्दर हाथ से आपने उनके सिर लुघड़ा दिये तथा उनका नाश कर दिया। अब संसार बहुतों वर्षों तक व्यवधान मुक्त रह सकेगा। कहते हैं कि धरा को निगल कर पुनः बनाने वाले, उठाकर मापने वाले, वही प्रभु हैं जिन्होंने प्रारंभ में धरा एवं आकाश को बनाया था। अगर प्रभु स्वयं धरा एवं आकाश हैं तो हमारा आश्रय कौन हो सकते हैं ? अन्य

किसी को खोजना तो असंभव है। देवगन जो आश्रय खोजते आते हैं प्रभु उनकी यातना का नाश कर देते हैं। जो आपको अपने हृदय में दृढ़ता से नहीं रखते तथा आपकी पूजा नहीं करते ऐसे लोगों को मानसिक वेदना से मुक्त करने का कोई मार्ग है क्या ? अच्छा हृदय अपनी चेतना के साथ, जीभ अपनी बोलने की शक्ति के साथ, अपने को प्रभु की प्रशस्ति में स्वयं नहीं लगाते, तथा जो प्रभु की गाथा गाने के लिये कोई प्रयास नहीं करते, कर्मों का संचय कर लेते हैं। कर्म की यातना से डर कर स्वर्गिकों से पूजित एवं प्रशंसित प्रभु की अपने पदों से हमने पूजा की है तथा भक्ति के मार्ग से हम तनिक भी विचलित न हुए हैं।

हर दिन जो हम बोलते हैं यह उसका सार है। सागर के वर्ण वाले एवं आकर्षक राजीव नयन प्रभु हमारे शाश्वत आश्रय हैं। घोर नरक में डाल दिये जाने के विरूद्ध आप हमारे रक्षक हैं। पूज्य प्रभु ! आपको तनिक भी भयग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है कि जो आपका ध्यान करता है वह आपसे वरदान मांगने पहुंच जायेगा। कितने ऐसे हैं जो आपका सीधा ध्यान करते हैं तथा गाथा गान करते हैं ? कहां हैं वे लोग ? निश्चित रूप से, क्या हम तनिक भी ऐसी इच्छा रखते हैं ? पतली बाहों वाली नप्पिनाय के लिये प्रभु ने सात वृषभों का बध शीघ्र ही कर दिया। आपका ध्यान करते हुए हमने वैकुंठ का मार्ग ढूंढ़ा है जो ऊच्चतम स्वर्ग से भी ऊपर है। क्या यह उचित एवं योग्य नहीं है ? जब कभी भी हम श्याम मेघ या श्याम पर्वत या गहरा सागर या श्यामली रात या मधुमक्खी लिपटे कया के फूल या श्यामल रंग का अन्य कुछ भी खोजते हैं तब हमारा हृदय हमें छोड़कर यह कहते हुए चला जाता है 'यह हमारे कृष्ण का गौरवशाली वर्ण है'।

जो सबकुछ न्योछावर कर अन्य विचार को त्यागते हुए प्रभु के पीछे दौड़ते हैं उन पर प्रभु शीघ्र ही करूणा नहीं दिखाते। तब वे पूछते हैं 'ओह ! घोड़ा के जबड़ा चीरने वाले प्रभु क्या इतने कठोर हृदय के हैं ? हृदय पर शासन करने वाले पांचों दुष्ट इन्द्रियों के कोप को दबाते हुए सुदृढ़ मन से तुलसी माला धारण करने वाले प्रभु के चरणारविंद का ध्यान करते हुए भद्र जनों की सेवा में जीवन लगाना श्रेयस्कर है। प्रभु ने वामन रूप में भूमि की भिक्षा मांगी एवं रूचि के साथ राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया। मेरी आंखें आपके पूज्य स्वरूप के दर्शन के लिये लालायित है एवं अन्य कुछ भी नहीं देखना चाहती। मेरी जिह्वा आपके नाम का स्वाद लेना चाहती है और अन्य कुछ भी नहीं। हमें कुछ कहना है। आप सदा अपने भक्तों के लिये कुछ करने को आतुर रहते हैं। परंतु वैकुंठ का अनुभव जो आप बताते हैं वह आपकी गाथा गाने के आनंद से मृदुतर नहीं हो सकता है। बछड़ा फेंककर ताड़ वृक्षों को उसके फलों के साथ गिराने वाले प्रभु के चरणों में हम

पूजा अर्पित करते हैं। अहो ! हमारी सारी यातनायें बिना कोई निशान छोड़े हमलोगों को त्याग कर चली गयी। आश्चर्य है कि वे कहां चली गयीं ! आकाश में या सागर में या हवा में या अग्नि में। मणि से युक्त फनवाले नाग की शय्या पर प्रभु लहरों के सागर में शयन करते हैं। आप हमारे पास नहीं आ सकते परंतु हम अपने हृदय में आपको सदा ही देखते हैं तथा चिंता मुक्त रहते हैं। अब लौटना नहीं। अहो ! यह नया जीवन मधुर है। सुदूर वाले प्रभु गोपकिशोर होकर आये। धरा मापने वाले आश्चर्यमय प्रभु पुनर्जन्म से बचने के सरल मार्ग बताते हैं। प्रभु ने असुर हिरण्य को अपनी गोद में दबाकर उसकी छाती चीर दी जिससे खून का झरना निकल कर सब जगह फैल गया। क्या आप हमलोगों को घोर कर्म से मुक्त नहीं करेंगे जो आपके और हमारे बीच में खड़ा है ? अपना तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय से पुनः कभी नहीं हटाईयेगा। आपके दूध जैसा मधुर गौरव गाथा की बाढ़ से प्रेम करने के लिये ही हम बढ़े हैं। मुझे पुनर्जन्म से मुक्ति नहीं चाहिये बल्कि आपके चरणों की सेवा अनवरत करते रहें एवं आपको कभी नहीं भूलें। तेज लहरों के मध्य प्रभु सागर में शेषशायी हैं। हम जैसे ही आपके वारे में सोचते हैं हमारा घोर कर्म हमें छोड़ देता है परंतु वह जंगल या अन्यत्र नहीं जाता। वह पास ही रहता है जिससे कि पुनः मुझमें प्रवेश कर जाये। हे हृदय ! कहीं अन्यत्र ध्यान न देकर अगर चाहता है तो तू तुलसी माला वाले प्रभु पर ही ध्यान केन्द्रित कर। अगर तू ऐसा न करेगा तो हमें छोड़ कर चला जा। लेकिन यह जान लो कि अन्य कोई भी देवता ऐसा नहीं है जो तुझे नरक की यातना से बचाये।

जब प्रभु विस्तृत होकर आकाश में विराजमान थे तो नीचे के तारे ऐसे दिख रहे थे मानों वे पराग से भरे अनेकानेक विखरे हुए फूल हों जो देवसमूह ने आपके कदमों में पूजा हेतु गाथा गान करते हुए चढ़ाया हो। जब वामन ने धरा को मापा तो आकाश छाता बन गया विस्तृत प्रभु स्वयं उसके डंडा हो गये तथा तारे कमानी बन गये एवं ग्रहादि सुन्दर फुदेना हो गये। आप हमारे सभी रोग की औषधि हैं। तड़ित पूर्ण श्याम मेघ से वर्षा ऐसे आई मानो धनुर्धर प्रभु ने भयानक राक्षसी के नाक कान काट लिये हों एवं विरोधी हवा से बह कर रूक गयी जैसे चक्रधारी प्रभु पुनः आपने सागर आवास में विश्राम हेतु चले गये हों। अगर देवों ने यह समझा होगा कि प्रभु ने ही रामावतार में सात वृक्षों को वेधा था तथा कृष्णावतार में बकासुर पक्षी के चोंच चीर दिये थे तो क्या उनलोगों ने उस समय करबद्ध हो प्रभु की पूजा में दिन में तीन बार पुष्प नहीं चढ़ाये होंगे ?

आप हमेशा यातना देने वाले हमारे घोर कर्म का नाश करते हैं। हे हृदय ! तू आपकी हमेशा गीत एवं माला से अर्चना कर। हे हृदय ! मैं तुझे बताता हूँ कि प्रभु कौन हैं।

आप तीक्ष्ण चक्र धारण करते हैं तथा भयानक राक्षस रावण का नाश करने वाले आप आश्चर्यमय प्रभु हैं। आप वेदों के सार हैं तथा शीतल तुलसीमाला धारण करते हैं। हे मूर्ख हृदय! अगर तू स्वर्गिकों के जगत को सर्वोत्तम मानते हुए उसकी चाह रखता है तो जान ले वह ऊच्च लक्ष्य नहीं है। बल्कि तू धरा पर रहकर शासन कर यही अच्छा है और केवल तू कृष्ण के चरणों की बंदना करना सीख ले। श्याम वदन सर्वोत्तम देव हमारे नीच हृदय में कभी नहीं लौटने के लिये प्रवेश कर गये हैं। आश्चर्य है कि आपका पर्वतिय आवास, सामुद्रिक आवास, आकाश का आवास, एवं वैकुंठ कहीं सूना न हो जाये! क्या करूणामय दृश्य होगा! हमारे घोर कर्म उनकी आंखों में लाल रंग होकर तनाव में है। कर्मों का मुखड़ा समाप्त हो गया है। भलाई के सागर शक्तिशाली तिरूमल प्रभु हमारे हृदय में आ गये हैं। अब कौन हमें यातना देगा? सुवर्ण मुकुट एवं हजार नाम वाले तेजोमय चक्र के प्रभु हमारे माँ एवं हमारे बाप हैं। हम आपको अन्तःपुर में रखते हैं, आप हमारी यातना का नाश करते हैं। जो होगा सो देखेंगे, क्या होगा ही? अपनी जटा में गंगा को धारण करने वाले शिव आपके स्वरूप में एक कोने में हैं। कमलासीन ब्रह्माका प्रारंभ ही आप से है। ऐसे स्वरूप वाले प्रभु जिसका न तो कोई समतुल्य है और न कोई श्रेष्ठ है, मैं किन शब्दों से आपकी गाथा का गान करूं?

कहते हैं कि त्रिमूर्ति सबसे प्रथम हैं और यह भी कहते हैं कि तीनों एक प्रथम कारण से उत्पन्न हुए। शिव को धारण करने वाले प्रथम कारण श्यामल स्वरूप के प्रभु! क्या ब्रह्माका दिव्य कमल भी आपसे नहीं निकला? जबकभी भी मैं पूवै, काया, नीला कमल, एवं लाल कमल को देखता हूँ मेरा क्षीण हृदय आनंद मनाते हुए कहता है 'अहो! ये सब तो प्रभु के रंग हैं।' हर दिन बिना किसी रूकावट के मैं पूजा करता हूँ परंतु गायों की रक्षा में पर्वत उठाने वाले गोपकिशोर नहीं आते। आपको कोई दया नहीं है। हे मन! क्या धरा केवल एक ही तरफ फैली है? मांस तक को कतर देने वाले चक्र को धारण करने वाले प्रभु धरा जगत तथा आकाश जगत आप में ही है। आप हमारे कानो के रास्ते चुपके से बिना हमारी जानकारी के हमारे अन्दर प्रवेश कर गये। क्या मैं आपसे बड़ा हूँ या आप हमसे बड़े हैं? यह कौन जानता है? मुझे बताइये। धरा को मापने वाले प्रभु जब मैं आपको सोचता हूँ एवं ध्यान में चला जाता हूँ यानी बाहरी होश खो देता हूँ तो मेरा हृदय आपको भीतर पाकर वृहत हो जाता है और हमारे कर्म लुप्त हो जाते हैं। जब होश आने पर जागता हूँ तो अपने को आपके समूचे ब्रह्माण्ड का, जो आप हैं, एक अंग पाता हूँ। यह कैसे होता है? बताइये।

गरजते सागर में शयन करने वाले प्रभु ! जरा सोचिये, हमारा कौन सखा है एवं कौन संबंधी है ? आपके अतिरिक्त मेरा कोई नहीं है। जो अच्छे शब्द आपकी प्रशस्ति में बोलता हूँ वही हमारे सखा हैं। नेक हृदय ! यद्यपि तुम स्वागत करते हो तथा आनंद उठाते हो अच्छे मित्रों का, लंबी आयु का, अनुवर्ती वंशजों का, अग्रजों का, संबंधियों का, साथियों का, तबभी सदा टंकार करते शारंग धनुष वाले प्रभु के गौरव गाथा से अपनी भूख की तृप्ति करो जो कि अंत न होने वाले भोज्य पदार्थ हैं। धरा पर गोपकिशोर बनकर आये चक्रधारी प्रभु की सेवा में लगाया हुआ जीवन धरा पर गौरवशाली है, चाहे वह कोई भी हो तथा कितना ही निम्न स्तर का पेशारत हो। क्या इसतरह के लोग कर्म से भय खायेंगे ? क्या ये लोग स्वर्ग का लक्ष्य पायेंगे ? यद्यपि कोई जन्म मरण बृद्धावस्था एवं व्याधि से मुक्त होकर कैवल्य का भी आनंद उठाता हो परंतु अगर वह धरा मापने वाले प्रभु के चरणों का गाथा गान भूल गया हो तो क्या उसके सारे समय व्यर्थ नहीं व्यतीत हुए ?

सागरशायी सर्वज्ञ प्रभु किसी को नीच, दया के लिये कुपात्र, एवं उद्धार के लिये अयोग्य नहीं समझेंगे।अहोरात्र हमें सेवा का अवसर एवं आनंद प्रदान करते हुए हमें स्वीकार करेंगे। अंगूठी धारण किये प्रभु ने मृग के रूप में छली राक्षस का पीछा कर उसका वध किया। हाय ! सच्चाई से अनभिज्ञ रहते हुए हमने सदा बिना थके प्रशस्ति गाने का जो अवसर खो दिया वे दिन व्यर्थ बीते। हे हृदय ! तुम प्रभु को याद करो या मत याद करो परंतु हमें इस बात का भय है कि तुम्हारा व्यस्त जीवन उचित नहीं था। मल्ल योद्धाओं का नाश करने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ। उद्धार का यही एक रास्ता है। स्वयं के विनाश में उद्धत मेरा हृदय ! करबद्ध होकर प्रभु के चरणारविंद में सिर नवाकर पूजा अर्पित करते हुए प्रशस्ति गान करो। लेकिन तुम यह कभी नहीं करोगे। अगर तुम प्रभु को बिना याद किये 'हे प्रभु ! आप कहां हैं ?' अपना काम कर लेते हो तो ठीक है करते रहो। मेरे प्रभु कृष्ण गहरे क्षीरसागर में योगनिद्रा में हैं। परिपक्व बादल ने प्रभु का रंग प्राप्त कर लिया है। इनलोगों ने आकाश में यत्र तत्र घूमने की कला कितना श्रमसाध्य तपस्या करके पाया है। मेरा हृदय ! सदा चक्र धारण करने वाले प्रभु ने हमें कर्मों से मुक्त कर दिया है।सदा प्रभु के एक समान चरणों की प्रशस्ति गाने का प्रयास करो।यह हम अब कह रहे हैं, बाद में भी कहेंगे, तथा सदा कहेंगे।

<u>प्रबंध **20**। तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै **2672**</u>

तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी की यह कृति मात्र एक पासुर का है जो **2672** है। आपका अवतार स्थल आळवार तिरूकुरैयलूर या तिरूवाली तिरूनगरी शिरकाळी

के पास है। कार्तिकै यानी कार्तिक मास में कृतिकै यानी कृत्तिका नक्षत्र में आपने सारंग धनुष के अंश से अवतार लिया।

एक वृहत नाभि कमल पर एक पैर के ऊपर दूसरा पैर चढ़ाकर बैठे हुए मुद्रामें ब्रह्मा का जन्म हुआ। जब दोनों ज्योर्तिपुंज यानी सूर्य एवं चन्द्र, तीन तरफ से दीवार से घिरे लंका के ऊपर से गुजरने में डरने लगे तो प्रभु ने महान धनुष के दोनों किनारों को मोड़ते हुए एक बाण छोड़ा जो दो मुड़े हुए दांत के बीच से भयंकर अग्नि उगल रहा था। तीन ऐंठे धागे का द्विज वाला यज्ञोपवीत पहने आपने चार जमीन से तीन पग की भिक्षा मांगी। क्षण भर में आपने दो चरणों से तीनो लोकों को माप लिया।

अलौकिक चार पैर के दो कान वाले तीन तरफ (दोनों कपोल एवं ललाट) से मत्त से भींगे गजेन्द्र की रक्षा हेतु जब पांच पंख वाले गरूड़ पर आप सवार हुए तो चारों दिशायें कांप उठी। एक दिन दो सौ हाथ गहरे जल में, हे प्रभु! तीन अग्नि, चार वेद, पांच यज्ञ, छः कर्म से आप पूजित हुए। पांच इन्द्रियों एवं चार अतिरक्तिों पर नियंत्रण रखते हुए तीन गुणों में से दो को मिटाते हुए एक (रज तम का विनाश कर केवल सत्व में) में स्थिर होकर, जो जन्म एवं मरण के दो धागों को तोड़ देते हैं वे आपको अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन तीन आंख, चार हाथ, वदन पर पांच फन के नाग, एवं छः धारा वाली गंगा को जटाओं पर धारण किये हुए शिव से अपने को अलग रखते हैं।

आपने सातों लोक को अपने दांत पर उठाकर संसार के छः स्वाद को वापस ला दिया। आप अपने हाथों में पांच अस्त्र धारण करते हैं। चार हाथ एवं तीन बादल के रंग वाले प्रभु! जब आप योग निद्रा में रहते हैं आपके युगल चरणारविंद को अपने एक मात्र हृदय में रखते हुए दो चंद्रमुखी लक्ष्मी तीन बार आपके चरणों की सेवा करती हैं। आप मानव समुदाय के चार वर्ण हुए। पांचो तत्व भी आप ही है। छः पैरों वाले मधुमक्खी से लिपटे जूड़े वाले नप्पिनाय के लिये आपने सात वृषभों का अंत किया। आप अगम्य सनातन धर्म के छः सिद्धांत हैं। पांच मंगलमय गुणों वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर विराजती हैं। हे चार पुरूषार्थ फलों के दाता, त्रिमूर्ति, विरोधाभास की जोड़ी, बहुरूप प्रभु!

जहां ऊंची दीवारों वाले सुनहले अटारी ऊपर उठकर कोमल चांद को छूते हैं एवं नदी अंतहीन उपजाऊ खेतों में बहुत सारे धन प्रदान करती है, मैं झुककर आपके चरणों को स्पर्श करता हूँ। विनती है मुझे पूर्व के कर्मो से मुक्त कर दीजिये एवं आने वाली यातना से रक्षा कीजिये।

<u>प्रबंध 21 शेरिय तिरूमडल **2673**</u>

इस प्रबंध की रचना तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी ने की है। यह प्रभु की प्रशस्ति है जिसमें आळवार संत का विश्वास झलकता है कि प्रभु रूपी रत्न कोष आपको प्राप्त हो गये हैं। पासुरों की गिनती की एक रीति से यह प्रबंध एक ही पासुर वाला यानी पासुर **2673** माना जाता है जिसमें **77** पंक्तियां हैं। दूसरी रीति से इसमें **38** पासुर हैं जो **2673** से **2710** तक गिने जाते हैं। यहां 'परकाल नायिका' की स्थिति चित्रित है।

बादल के शिखरवाले पर्वत भूदेवी के वक्षस्थल हैं। सागर झिलमिल वस्त्र है। सुन्दर नदियां नस हैं जो उरोज से गुजरती है। श्यामल मेघ से बनी जूड़े वाली सूर्य को अपने ललाट के आभूषण की तरह धारण करती हैं। आपके तीन मुख्य सिद्धांत हैंः धर्म, अर्थ, एवं काम। जो तीसरे की खोज करते हैं वे अन्य दोनों को भी प्राप्त कर लेते हैं। जो चौथे (मोक्ष) को चाहते हैं वे इनके बारे में केवल बोल सकते हैं जैसा कि 'हमने सुना है'। 'हमने सुना है' का क्या अर्थ है, मैं बताता हूँ। जो सात काले घोड़े से खीचे जाने वाले सूर्य के आभा क्षेत्र में चले जाते हैं एवं वहां अमरता के अमृत का आनंद उठाते हैं वे केवल वहीं रहते हैं कभी लौट नहीं सकते।

जैसा भी है रहने दो। लोमड़ी को छोड़ कर जाने वाले काग के पीछे जाने से क्या लाभ? कोमल उरोजवाली! क्या हुआ तुम जानती हो? मैंने बाल संवारा, उरोज पर कंचुकी पहनी, कमरधनी डाली, आंखों में काजल लगायी, तथा गेंद खेलने लगी। एक सुन्दर मनोरंजन करने वाला सरोवर के नूतन कोमल लाल कमल जैसी आंखे लिये सबको मुग्ध करने वाले रूप के साथ वीथि में खड़ा पात्रों से नगाड़े की धुन पर खेल रहा था तथा पुकार रहा था 'दूसरा कौन? दूसरा कौन?' कोमल उरोजवाली हमारी बहन तथा माँ एवं अन्यों ने कहा 'आओ'। अतः मैं लौटकर चली गयी। हाय! मैंने श्यामल रत्न वर्ण वाले को गंवा दिया तथा अपने कंगन भी गंवा दिये। मुझे कोई सांत्वना नहीं दे सका।

मैंने अपनी बुद्धि गंवा दी है। मेरा शरीर प्रेत जैसा हो गया है। सुग्गे की तरह मधुर बोलने वाली मेरी माँ ने हमारे ऊपर लाल कुमकुम लगाया है तथा उसने लाल कुरूंजी माला से शास्ता की पूजा की है जो कि पहले पूर्व में वह कभी ऐसी नहीं करती थी। इससे भी मेरे हृदय का रोग ठीक नहीं हुआ और न तो हमारा प्रेतनुमा रूप ही बदला। मेरा रंग भी वापस नहीं लौटा। ऐसा देख पुरानी प्रथा जानने वाली कुछ वृद्धाओं ने राय दी 'भविष्य बताने वाले किसी वनबासिनी से इसे दिखाओ, वह बता देगी कि कौन इस पर सवार है'। यह सुनकर एक काले जूड़ेवाली वनबासिनी वहां आयी। कुछ अन्न एक तश्तरी पर डालकर शपथ खाते तथा उसे हिलाते हुए चारों तरफ घूमकर शांत हो गयी।

अपनी तलहथी सूंघ कर बोली 'यह हजार नाम वाला है' ।
फिर एक श्यामल स्वरूप दिखाया। अपने हाथ से शंख की तरह बनाकर तुलसी माला से सजा हुआ दिखायी और बोली 'डरो मत, जो तुम्हारी किशोरी पर सवार है वह कोई दूसरा नहीं है, मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ।' कटारी नयनों वाली सजनियों ! मैं बताऊं ? किसके चरण ने धरा को मापा ? किसने लंका को जलाकर भस्म कर दिया ? एक तूफान में किसने पर्वत उठा लिया ? किसने समुद्र मंथन किया ? अब यह देखो, संसार को निगल कर पुनः बनाने से संतुष्ट न हुए तो आप आयप्पादि (वृन्दावन मथुरा) में गाय चराने आये।
तब एक दिन सुन्दर वस्त्राभूषित सुन्दर चाल लाल होंठ एवं कंचुकी वाली यशोदा मथानी लेकर दिन भर दही मथकर थक कर चूर हो गयी।सभी मक्खन एक घड़े में जमाकर ऊंचे रस्सी के छींके पर सुरक्षित रख दी। जब कटारी नयनों वाली यशोदा वहां से हट गयी तो प्रभु जो थकने के बहाने से सोने का स्वांग रचे हुए थे उठे और अपनी बांह की ऊपरी भाग को वहां तक जहां कंधे पर माला लटक रही थी जब घड़े के कनखा को छूने लगा मक्खन के पात्र मे डूबो दिया एवं संपूर्ण मक्खन चट कर गये। तब एक छांछ के घड़े को वहां फोड़कर थककर सोने का स्वांग भरते हुए सो गये। जब वह लौटी तो आपको देखी। तब जो मक्खन रखी थी उसे गायब हुए देख अपने पेट को पीटते हुए सोची 'इस श्रीमान्‌को छोड़ कर दूसरा कौन यहां आ सकता है ?' तब वह बोली 'ऐ ! मैं जानती हूँ तूने यह किया है।'
तब सबों को देखने के लिये एक लंबी रस्सी से प्रभु को ऊखल में मजबूती से बांध दी। तब झूठे गुस्से का प्रदर्शन करती हुई प्रभु की पिटाई की और आप अपने पेट के तह से जोर से चिल्लाते रहे। अब आगे सुनो।तब प्रभु एक बड़े ताल में जाकर उसके जल को उद्वेलित करने लगे। जब एक साक्षात मृत्यु के समान भयंकर नाग अपने हजार फनों को उठाकर बोला 'आओ' आप उसके फनों पर अपने मंगलमय चरणों से कूद पड़े। उसके बाद जब शूर्पनखा ने आकर कहा 'मैं सीता के समतुल्य हूँ' तब प्रभु ने तलवार से उसके नाक कान काट लिये।तब उसके भाई खर दूषण को अपने धनुष से नरक भेज दिया।लाल फल के समान होंठ एवं कंचुकी धारण किये वैदेही के लिये आपने रावण के दस सिरों को धराशायी कर आनंद मनाया। आप अरूणाभ नयन प्रभु शेंकनमाल है।
आप नरसिंह हैं जिसने अपने नखों से हिरण्य की छाती चीर कर उसकी अंतड़ी का माला अपने पवित्र वक्षस्थल पर धारण कर लिया। आपके वदन से उसके लहू टपकते रहे और आप खड़े रहे एवं उसके मांस एवं लहू से ढ़के हुए अपनी भुजाओं को ठोकते हुए

आप गरजते चले गये। जब आप वामन रूप में मावली के पास आये तो आपने तीन पग जमीन मांगी। तब वृहत रूप धारण कर सारी धरा माप ली। आप वक्षस्थल पर तुलसी धारण करने वाले प्रभु हैं जिसने देवों तथा असुरों के बीच की अंतहीन शत्रुता में हस्तक्षेप करते हुए एक काले पर्वत को स्थापित कर नाग की रस्सी लपेटते हुए सागर का मंथन किया।

जब एक विशाल हाथी कमल के सरोवर में खड़ा हो आक्रमणकारी ग्राह से संघर्षरत था तो उसने लंबे सूंढ़ से एक कमल अर्पित करते हुए आर्त पुकार की 'नारायण, रत्न वर्ण वाले, शेषशायी प्रभु हमारी सहायता कर रक्षा कीजिये'। प्रभु यह सुनकर आये एवं ग्राह के जबड़े को दो भाग में चीर दिया तथा यातनाग्रस्त हाथी का उद्धार किया। हे सजनी ! हजार नाम वाले प्रभु ने आपकी बेटी को इसतरह से रोगग्रस्त कर दिया है। यह कह कर वनबासिनी ने अपनी बात पूरी की।

हमलोगों की माँ अपने संदेह को मिटाते हुए बोली 'मत्स्य नयना सजनियों ! अगर प्रभु ही हैं तो क्या अपनी तुलसी माला नहीं देंगे ? क्या यह बेटी उनकी भक्ति में नहीं रहती है ? प्रभु इसके लिये अजनवी नहीं हैं' और चली गयी। जब से हमने आपका श्यामल स्वरूप देखा है गली गली बिना सांत्वना के उतावलापन में घूमे चल रही हूँ। बिना हमें बताये शीतल हवा धीरे धीरे हमारा प्राण ले रही है।

हे जूड़े वाली सजनी ! लोक अपवाद से बचने के लिये मैं कुछ नहीं कर सकती। मैंने अपने हृदय को बताया 'हे मेरे असक्त हृदय ! मणिवर्ण के प्रभु के पास जाकर पूछो, ऐसा न हो कि अपने शत्रु सुन लें, 'क्या आप अतिसुंदर अपनी तुलसी की माला प्रदान करेंगे या नहीं करेंगे ?' वे या तो रूकें या नहीं बोलें, वहां ठहरना नहीं, लौट कर आ जाओ। हाय ! मेरा हृदय भी मुझे भूलकर सागर सा सलोने प्रभु के पीछे चला गया और कभी नहीं लौटा। मैं पापिनी ! अपने पड़ोस के लिये मनोरंजन का साधन बनगयी हूँ। कोई मेरी ओर से नहीं बोलता। मेरा हृदय आग में मोम की तरह पिघल रहा है। जबकि लोक सोता है मेरी बड़ी बड़ी आंखों में नींद नहीं है। निष्कलंक प्रभु का नाम मैं व्यतिक्रम से बोलती रहती हूँ। पूर्व में भी ऐसे जन हुए हैं जिनका प्रेम नीले सागर की तरह उमड़ता रहा है। मदन की निष्ठुरता को कौन नहीं जानता ? विशेषकर इसे देखो जो कि अन्य जन या एक जन नहीं है बल्कि इन्द्र की बेटी वासवदत्ता है। इसने अपने राजशाही परिवेश को छोड़ दिया और बेड़ी वाले प्रेमी के लिये गली में आ गयी जो अपने वक्षस्थल पर अपनी प्रेमिका का माला पहने हुए था। तब क्या लोगों ने उसकी हंसी उड़ायी ? फिर कौन मुझे शिक्षा देने का साहस करेगा ? और जबतक मैं श्यामल प्रभु के रूवरूप को

देखती हूँ जिन्होंने मरूदु वृक्षों को तोड़ा, एक हाथी की रक्षा की तो दूसरे का दांत उखाड़ लिया।

तिरूवेंकटम, तिरूक्कोवलूर, ऊंची दीवाल वाली कांची के ऊरगम एवं पेरगम, वेल्लारै, वेग्का, तिरूवाली, तिरूत्तन्कल, नरैयूर, तिरूप्पुलियूर, तिरूअरंगम, कण्णमंगै, कवानूर, विण्णगरम, तिरूक्कण्णपुरम, तिरूच्चेरै, तिरूअलन्दूर, शीतल कुडन्दै, कडिगै, कडलमल्लै, सुगंधित बागों का इडवेन्दै, नीर्मलै, मालिरूमशोलै, तिरूमोगूर, जगत प्रसिद्ध बदरी, उत्तर मथुरा, एवं सभी मंदिर वाले नगरों में अपने राजीवनयन तुलसीमालाधारी एवं शीतल अरूणाभनयन प्रभु के अनगिनत मंगलमय नामों को उलटा पुलटा उच्चारण करते मैं घूमती चलूंगी। मैं शपथ खाती हूँ कि लोक अपवाद को भुलाकर लंबे ताड़ के धड़ पर पसंदीदा घोड़े जैसी सवारी करूंगी तथा त्याज्य मडल पाऊंगी।

प्रबंध **22**। पेरिय तिरूमडल **2674**

इस प्रबंध की रचना तिरूमंगै आळवार यानी परकाल स्वामी ने की है। यह प्रभु की प्रशस्ति है जिसमें आळवार संत का विश्वास झलकता है कि प्रभु रूपी रत्न कोष आपको प्राप्त हो गये हैं। पासुरों की गिनती की एक रीति से यह प्रबंध एक ही पासुर वाला यानी पासुर **2674** माना जाता है जिसमें **148** पंक्तियां हैं। दूसरी रीति से इसमें **80** पासुर हैं जो **2711** से **2790** तक गिने जाते हैं। यहां परकाल नायिका की स्थिति चित्रित है।

प्रभु की जय हो जो सागर के मध्य चितकवरे हजार फन के नाग पर शयन करते हैं जहां हर फन ज्योतिर्मय मणि से विभूषित है, प्रभु मकर कुंडल धारण किये हैं जो चतुर्दिक प्रकाश विखेरता है। तारों के समूह के साथ आकाश आपका छत्र है जबकि सूर्य एवं चंद्र प्रकाश के स्रोत हैं।

भूदेवी के लिये तारे फूलों की माला जैसे हैं, बादल जूड़ा है, एवं मालिरूमशोलै तथा वेंकटम के पर्वत उरोज हैं। आप प्रभु के चरणारविंद की सेवा सागर लहरों रूपी हाथों से करती हैं। गौरवशाली कमलनिवासिनी हंसगामिनी लक्ष्मी भी प्रभु के चरणाविंद की सेवा अपने हाथों से करती हैं। प्रभु योग निद्रा से जागकर जगत की सृष्टि का प्रारंभ करते हैं जिनकी नाभि से कमल निकलता है जिसपर ब्रह्मा बैठे हैं और जिन्होंने वेद की रचना की।

वेद इस जगत में चार पुरूषार्थ के रूप में धर्म अर्थ काम मोक्ष की व्याख्या करते हैं। क्या नहीं है ? इन चारों में अंतिम को जो प्राथमिकता देते हैं,जो सबसे कम महत्व का है, वे गिरे हुए फल एवं पत्ते खाकर रहते हैं, अपने शरीर को कष्ट देते हैं, पर्णशाला में सोते

हैं, गर्मी में धूप में रहकर तथा जाड़े में ठंढ़े सरोवर के जल में प्रवेश कर अपने आप को दंडित करते हैं, तथा जैसा कि कहते हैं शरीर छूटने पर प्राचीन मार्ग का अनुसरण करते हैं। लेकिन हम नहीं जानते कौन कहां गया। अगर सूर्य के छेद से पारकर वे स्वर्ग जाते हैं तो यह बताने कोई लौट कर आया है क्या ? छोटी बुद्धि एवं क्षुद्र विचार वाले इस पर बहुत कुछ कहते रहते हैं। उनको सही ज्ञान देने वाले हम कौन हैं ?

जैसा भी हो इसे छोड़ो। अब उनको देखो जो प्रथम मार्ग धर्म का अनुसरण करते हैं। वे हजार आंख वाले स्वर्ग के अधिपति इन्द्र के सुनहले नगर में जाते हैं एवं देवों से सम्मान प्राप्त कर सिंहासन पर विराजमान होते हैं जहां फूल सी कोमल किशोरियां उनका चवर डुलाती हैं। शीतल हवा बहती है, तड़ित रेखा सी कृश कटि किशोरियां आस पास में चमकती रहती हैं तथा अपने चंद्र समान मुखमंडल पर मुक्तामय मुस्कान विखेरती हैं। उनकी शांत आंखें तथा मृगशावक सी नजरें उनको आकर्षक एवं पूज्य बनाती हैं। कल्पवृक्षों के सुनहले फूल एवं मधुमक्खी लिपटे अमृतमय मंदार वृक्षों के वन से घिरा है। शुन्दरियां स्वर्गीय फूलों की माला पहन मोर की तरह सुन्दर दिखने वाला जूड़ा पहनती हैं। धर्म के अनुसरण करने वाले स्वर्ग में इन सुन्दरियों से अपना मनोरंजन करते हैं जहां रत्नजड़ित फर्श में रूबी से पंक्तियां लगी हैं और स्फटिक के किनारे चमकते हैं। मूंगा जड़ित एवं सुवर्ण पत्तियों से सजे पलंग हैं।

हंसगामिनी रंभा वीणा पर तेजी से अंगुलियां घुमाती हुई दिव्य स्वर में गाती हैं। वे लोग जब चाहें ये सब ऊपर आकाश में सुन सकते हैं। यहां घने वर्षा के बादल, पूर्ण चंद्र पर तथा गगन चुंबी ज्योर्तिमय अटारियों पर जहां आभूषण की बत्तियां लगी हैं, लता की भांति शोभा देते हैं। शांत आंखों वाली सुन्दरियां कोमल रूई के गद्दे पर सुखद विछावन लगाती हैं। जब खिड़कियों के दरवाजे खुलते हैं तो हंस के पैर से विखर कर उड़ते हुए नीले कमल का पराग शीतल हवा के साथ सुन्दरियों के उरोज पर के चंदन को सुखाते हुए धीरे से बहती हैं तथा जिसके सुगंध का पीछा करते भौंरे मंड़राते हैं। तड़ित रेखा सी कृशकटि दो बांस सी बाहों पर आधारित हैं तथा गले के हार के सुवर्ण शिक्के मधुर आवाज देती हैं। धर्म मार्गवाले इस तरह का सुख भोगते हैं, उनके हृदय पिघलते हैं, जब पलकें न गिरने वाली नयनों के मृगशावक सी चितवन को देखते हैं, तथा उनकी विजयी मुस्कान से आनंदित होते हुए उनके अमृत होंठों का पान करते हैं। क्या धर्म मार्ग का अनुसरण इस तरह के विदित उद्देश्य से तो नहीं करते हैं ?

यहां तक कि अर्थ के मार्ग का भी यही उद्देश्य है। अतः हम युक्तिसंगत काम मार्ग का ही अनुसरण करेंगे। हमलोगों ने सुना है कि तमिल प्रथा में मृगनयनी हंसगामिनी सुन्दरी

कभी भी पुरूष प्रेमी के कारण मडल नहीं करती। हम यह स्वीकार नहीं करेंगे अतः उत्तर के संस्कृत वाली प्रथा का अनुसरण करेंगे। जो हमलोगों के साथ सहमत नहीं हैं उन्हें दक्षिण के पहाड़ों के लाल चंदन के गुणों के बारे की जानकारी का अभाव लगता है। वे लोग उनलोगों में नहीं है जो गोपकिशोर की बंशी की धुन से द्रवित होते हों। वे कभी भी सांढ़ों के गले की घंटी की आवाज से दुखी नहीं होते। ताड़ वृक्षों के कंटीले घोसलों से लंबे चोंच वाले अन्रिल पक्षी की जोड़ी की मैथुन हेतु पुकार को सुनकर वे द्रवित नहीं होते। आंगन में पूर्ण चंद्रमा की चांदनी के छलकाव से वे मूर्च्छित नहीं होते। प्रेम के देवता मदन के फूल के बाणों से वे कभी आहत न होते और न सुनहले धूल भरी वीथियों में वे मडल के लिये जाते। चमेली से सुगंधित सुखद हवा से उनके उरोज अधोभाग एवं जूड़े में गुदगुदी नहीं होती तथा वे कोमल विछावन पर अपने प्रेमी के साथ के सुखद क्षणों के लिये उत्कंठित नहीं होते। वे अपने नारी स्वरूप को निरर्थक गंवा देते हैं। वे दीर्घायु हों!

योद्धा राजा ने अपने पिता की आज्ञा पर राज्य तुरत छोड़ दिया और नगर के लोग रोते उसके पीछे आये। अपना देश छोड़कर भूखे पेट चिलचिलाते मरूभूमि क्षेत्र के पथरीले पहाड़ों को बांस को भी फाड़ देने वाली गर्म हवा की झोंका को सहते पार किया। मृत्युदायी राक्षसों के कंकरीले क्षेत्र में प्रवेश कर चिलचिलाती धूप में सुमन सा सुकोमल चरणों से भ्रमण किया। राजा राम के पीछे पीछे क्या हंसगामिनी वैदेही नहीं घूमी ? तड़ित रेखा सी कृश कटि, लाल होंठ, काली आंखों एवं मृगनयनी की चितवन वाली यह किशोरी पुनः वहां उपस्थित हुई। अपने प्रेमी को न पाकर यह अपने बड़े भाई के पास गयी जो इसे सुदूर क्षेत्र में ले गये। भाई को छोड़कर यह युद्धक्षेत्र में गयी जहां अपने प्रेमी को पाकर उनसे व्याह रची। युद्ध के अंत तक प्रतीक्षा कर उनके दिव्य वक्स्थल के आलिंगन को प्राप्त की। महाकाव्य महाभारत से सुनकर हमने क्या नहीं जाना है कि नाग कन्या उलुपी ने महान कुरूयोद्धा धनंजय से प्रेम किया जिसने सुगंधित गंगा से सिंचित उपजाऊ क्षेत्र पर शासन किया ? नारी लाज भय वेवसी एवं मर्यादा को गंवाकर उलुपी ने अपने तने हुए उरोजों के साथ प्रेमी के पर्वतनुमा वक्षस्थल का आलिंगन किया तथा पाताल लोक के राज्य में वापस लौट गयी।

सागर से परिवृत्त धरा पर सुनहले नगर में रहने वाले असुर पुरंदर से नाश को प्राप्त हुए। देवेन्द्र के समतुल्य बानासुर की गुड़िया सी सुन्दर बेटी ऊषा थी जो बिना कोई प्रतियोगी के अकेले चमकती रहती थी। उसकी सखी चित्रलेखा ने उसके पर्वत समान चतुर्भुज प्रेमी अनिरूद्ध को ला दिया जो हमारे प्रेमी कृष्ण के पौत्र हैं और जिसके साथ अनेकों

दिन वह आनंद मनायी। सजनी ! आपलोगों ने हमारी बात ध्यान से सुना, अब ज्यादा हम क्या कहें ?

पर्वत राज हिमवान की मूंगा जैसी होंठ एवं विजयी मुस्कान वाली हंसगामिनी लता सी कृशकाय दिव्य बेटी उमा ने पांचो इन्द्रियों का शमन कर केश को जटा बनाती हुई घोर तपस्या की। शिव ने अपने हजारों हाथों को फैलाते हुए अग्नि उत्पन्न करने के लिये मुट्ठी खोली तथा हाथों में त्रिशूल लिये वदन पर भस्म लगाये जटा से भरे सिर एवं पैरों में पाजेब पहने संसार के ऊपर आकाश में नृत्य किया। उमा के समान तपस्वी होने से शिव ने उसका आलिंगन किया।

अगर मैं ज्यादा उदाहरण दूंगी तो महाभारत के तुल्य हो जायेगा। अतः मैं अपने प्रेमरोग का दृष्टांत देती हूँ। वैदिक ऋषियों के निवास स्थान सुगंधित बागों से घिरे तिरूनरैयूर में जब पर्वत समान सुवर्ण दरबाजा खुला तो हमारे प्रभु का हमें दर्शन मिला। उसी क्षण प्रभु का वक्षस्थल होंठ चरण हाथ आंखें पर्वतनुमा काले सरोवर में कमल फूल के घने गुच्छे से दिखे। आपका कमरधनी, गले का हार, कंगन, कुंडल, मुकुट, तथा शिखर के रत्न सब तेजोमय सूर्य के समान प्रदीप्त थे।

रत्नपर्वत प्रभु पर एक सुकोमल लता लिपटी थी। वह हंसनी एवं मोरनी जैसी थी तथा कटि तड़ित रेखा जैसी थी। वह दो बांसो पर दो कटोरियों को संभाले थी। उसका होंठ पके कोवै फल जैसी मांसल था। उसकी आंखें केण्डै मछली जैसी थी। ऐसी सुन्दरता वाली नारी श्री देवी अपने प्रेमी के पास खड़ी थी। हमें यह तनिक भी पता नहीं चला कि हमारा मन, हृदय, कंगन एवं कमरधनी खिसक रहे थे। तब सागर का अंतहीन गर्जन हमें यातना देने लगा। प्रिय चांद की चांदनी हम पर तप्त होकर गिर रही थी। न जाने कैसे चांद ने अपना स्वभाव बदल लिया ? फूलों की सुगंध वाली तथा दक्षिण पर्वत के चन्दनवृक्ष के पराग से अभिषिक्त सबको सुख पहुंचाने वाली शीतल वायु हमारे ऊपर तप्त हवा की तरह बह रही थी। आंगन के ताड़ वृक्ष पर के कंटीले घोसला से आनेवाली अन्रिल युगल के मैथुन की पुकार हमारे हृदय में बर्छी की तरह घुस रही थी।

शक्तिशाली भुजाओं वाले मदन अपने गन्ने के धनुष की डोरी को कान तक खींचकर फूलों के बाण से हमारे हृदय को वेध रहे हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। हम अपनी किशोरीपना एवं अनुभवहीनता के कारण कन्नपुरम के प्रभु के वक्षस्थल का आलिंगन नहीं प्राप्त कर सके जो श्रीपति हैं तथा सुवर्ण के पर्वत जैसे खड़े हैं। जैसे पथरीले वनों में फूल खिलकर बिखर जाते हैं उसी तरह हमारा किशोरीपन हमारी आखों के समान व्यर्थ होता जा रहा है। हाय ! इसे रोकने की औषध से कोई अवगत नहीं दिखता।

एक वृषभ अपने गले में रस्सी से ऊंची घंटी बांधे किशोयियों की आंखों में चमक उत्पन्न करते हुए शाम में आकर लगातार घंटी बजाता है। यह आवाज हमारे कान में मृत्युदायी बर्छी की तरह घुसती है। बताओ कैसे इस निष्ठुरता को रोका जाये। किसने यह किया ? अपने वक्षस्थल पर तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु ने, चांद को शाप से मुक्त करने वाले मेघ वर्ण वाले प्रभु ने, छोटे काया फूल के सुगंध को विखेरने वाले प्रभु ने, सागर पर सेतु बनाकर हाथी एवं घोड़े वाले राक्षस राज को युद्ध में चुनौती देते हुए उसके दस मुकुट वाले सिरों को धराशायी कर दक्षिण दिशा में भेज दिया।

उस प्रभु ने जो हजार आंखों वाले इन्द्र एवं अन्य देवताओं के बलपूर्वक राज्य छीनने वाले हिरण्य के विरोध में आग बवूला आंखें तथा चक लिये भयानक सिंह के रूप में आकर बिना हथियार के उसे उसका केश पकड़कर अपनी गोद में बैठाया एवं अपने घुमावदार नखों से उसकी छाती चीर दी तथा सबों से पूजित हुए। उस प्रभु ने जो सूकर के रूप में घुमावदार दांतों पर हिरण्याक्ष द्वारा जल में छिपायी धरनी को ऊपर उठाया एवं नृत्य किया। उस प्रभु ने जो उदार रूप में पर्वत एवं नाग से सागर का मंथन किया और मंथन के समय दोनों ज्योतिर्पुंज तारेगन तथा अन्य सभी सागर के साथ चक्कर काटते दिखे तथा लंबे समय से देवों के यातनाग्रस्त जीवन का अंत करते हुए अमृत निकालकर उन्हें दे दिया। उस प्रभु ने जो फिर छोटे वामन रूप में असुर मावली के महान यज्ञ में आये तथा उसे अति प्रसन्न करते हुए युक्तिपूर्वक अपने पैर की माप से तीन पग जमीन मांग ली एवं असुर ने वचन दे दिया, तत्काल आपका दिव्य मुकुट आकाश छूने लगा तथा पाजेब वाले पैर सातों लोक को पार कर गया, माबली को छल पूर्वक वश में करते हुए सारा जगत अपना लिया।

आप कमल निवासिनी तड़ित रेखा सी कृश कटि वाली लक्ष्मी के पति हैं। आप विण्णगर के सुवर्ण पर्वत हैं। रत्न से भरपूर कुडन्दै के योद्धा वृषभ हैं। दक्षिण कुरूंगुडी के मूंगा पर्वत हैं। शांत तिरूचैरै के उदारमना प्रभु हैं। वयलालि के प्यारे अमृत हैं जहां हंस कमल में घर बनाते हैं। दीवारों से घिरे कण्णमंगै के कल्पवृक्ष तड़ित एवं ज्योतिर्मय सूर्य हैं। वेल्लारै के पन्ना एवं सुवर्णमय कोष हैं। पुटकुली के योद्धा वृषभ हैं। संपन्न अरंगम के रत्न पर्वत हैं। वल्लवल में नप्पिनाय के पतिदेव हैं। तिरूप्पेर के अजन्मा प्रभु हैं। क्षीरसागर के बिनाकाटे मणि हैं। हमारे हृदय में रहने वाले पूज्य हैं। कडलमलै के आश्चर्यमय प्रभु हैं। स्वर्गिकों के शिरमौर हैं। तिरूतन्कल के दक्ष शक्तिशाली प्रभु हैं। ऐसा रहस्य जो कोई समझ नहीं पाता ः मोती, हंस, मत्स्य, सिंह, चार वेद, ब्रह्माण्ड को निगलने वाले, कोवलूर के प्रवेश बैठका में प्रकट होने वाले आश्चर्यमय प्रभु, दर्द से

कराहते राक्षसी के स्तन पान करते रहने वाले शिशु, अलन्दूर के तेजोमय प्रभु जहां सरोवरों में हंस मछलियों को खोजती हैं, दक्षिण चित्रकूट के मेरे धन, सदा बरसते रहने वाले पर्वत वेंकटम के प्रभु, मालिरूमशोलै के राजा एवं दूल्हा प्रभु, कोट्टियूर के प्रभु जो मृत्युदायी तीक्ष्ण चक्र को धारण करते हैं।

मेय्यम के हरि जो अमृत की बाढ़ हैं। इन्दलूर के वैदिक ऋषि, दीवारों के नगर कांची के स्वर्गिकों के नाथ, वेलुक्कै के नरसिंह, संपन्न पडकम के राजकुमार, वेग्का के योग निद्राशायी प्रभु, उरूकम के प्रभु, अट्टाव्युक्कारम के शक्तिवान वृषभ, मेरे हृदय को चुराकर स्वर्गिकों पर राज्य करने वाले प्रभु, मुळिकळम के प्रकाशदीप, समय मापने वाले आदनूर के निवासी, कल आज एवं आनेवाला कल, नीर्मलै के चार वेद बनने वाले प्रभु, पुल्लाणि के प्रभु, <u>तमिल एवं संस्कृत के प्रभु</u>, नांगुर के मणिमाड कोयिल के दूल्हा प्रभु, तलैच्चंग नाण्मदियम के नेक प्रभु । कण्णपुरम के मेरे कृष्ण प्रभु। हरजगह आपको खोजते हुए मैं करबद्ध हो पूजा अर्पित करूंगी तथा हृदय के उद्‌गार को प्रकट करूंगी। क्या आप अपनी करूणा एवं वदन से हमें लाभान्वित नहीं करेंगे ? अगर नहीं करेंगे तो हम सुन्दरियों के समक्ष वैदिक ऋषियों से, भक्तों से, तथा इस विशाल धरा के राजाओं से आपकी करतूत के बारे में खुलेयाम बताऊंगी। आपने गोपजनों की कुटिया से मक्खन चुराया, ऊखल में बांध कर आप गोपनारी यशोदा से पीटे गये, पर्वत के रूप में इन्द्र के लिये लाया गया गाड़ीभरे भोज्य पदार्थ गोवर्द्धन पर खा गये, पुराकाल में राजाओं की सभा में निम्न दूतवाहक के रूप में जाकर अपमान का घूंट पीये। गलियों में नगाड़े की धुन पर नृत्य करते हुए किशोरियों के मन को चुरा लिये तथा अन्यों ने आपके इस शरारत के लिये आश्चर्य प्रकट किया। शक्तिशाली लंका के राजा की बहन शूर्पनखा ने जब जंगल में काम से वशीभूत भयानक रूप धारण कर लिया था तब आपने उसके नाक कान काट लिये थे। ऋषि के यज्ञ की रखवाले करते समय आपने पर्वत के समान राक्षसी ताड़का का नाश किया। एवं अन्य बहुत सारे कल्पनातीत कारनामों को आपने किया है।जगत को खुलेयाम बताते हुए लोकलाज को त्याग कर धैर्यपूर्वक मडल करूंगी।

ºº

दिव्यदेश **89**। तिरूअदनूर ः

1।स्थान ः तमिल नाडु के स्वामीमलै तथा तिरूपुळमबुतमगुंडी दिव्य क्षेत्र के पास अवस्थित है। यह कुंभकोनम से **18** कि मी पर है तथा कुंभकोनम से स्वामीमलै रोड में तिरूवैकवूर के रास्ते स्थित है।

2 । विग्रह स्वरूप ः आप भुजंग शयन अवस्था में अपना सिर मरक्कल पर रखकर सोये हुए हैं। मरक्कल माप तौल का एक पात्र है। आप पूर्वाभिमुख हैं और आनंदलक्कुमैयन कहे जाते हैं। उत्सव विग्रह को रंगनाथन कहते हैं। गर्भगृह में कमल में ब्रह्मा, श्रीदेवी, भूदेवी एवं कामधेनु का दर्शन होता है। तायर कमलवासिनी या भार्ग वी या मंत्रपीठेश्वरी या श्रीचक्रनिवासिनी कही जाती है। तायर का उत्सव विग्रह रंगनायकी नाम से जाना जाता है। यहां सूर्य एवं चंद्र पुष्करणी हैं तथा प्रणव विमान है। पुन्नै मळम स्थल वृक्ष है तथा यहां का स्थल पुराण ब्रह्मांड पुराण है।

3 । महिमा ः यह भार्गव क्षेत्र कहा जाता है। इसे सिंहापुरम या संजीवीपुरम भी कहते हैं। पेरूमाल 'अंदु अलक्कुन अय्यन' यानी जो समय एवं स्थान का लेखा रखने वाले कहे जाते हैं। यहां तिरूमंगै आळवार भगवान के गर्भगृह में विराजमान हैं। आळवार संत हाथ में तलवार खींचे खड़े हैं। कहते हैं श्रीरंगम मंदिर के निर्माण से थककर आप यहां एक दिन विश्राम करने आ गये। रात में पेरूमाल ने स्वप्न दिया कि हम से जो जुड़ता है वह श्रीसंपन्न हो जाता है परंतु आप तो विपन्न ही रह गये। कल प्रातः आप नदी किनारे आइये आपको धन प्राप्त होगा। संत प्रातःकाल नदी किनारे पहुंचे। एक शक्तिमान पुरूष ने आपको एक पात्र से मिट्टी दिया जो आपके पास आते ही स्वर्ण में परिणत हो गया। जब दूसरे लोग भी मिट्टी मांगे जो उनके पास मिट्टी ही रह गयी। नाराज होकर अन्य लोगों ने उस आदमी पर यानी पेरूमाल पर हमला कर दिया। आळवार संत ने अपनी तलवार खींचकर प्रभु की रक्षा की।

कामधेनु का प्रादुर्भाव लक्ष्मी से पहले हुआ था इसलिये कामधेनु ने अपने को लक्ष्मी से श्रेष्ठ बताया। पेरूमाल ने मरक्कल यानी माप का एक पात्र देते हुए कामधेनु को भरने को कहा। कामधेनु उस पात्र को भर नहीं सकी। जब लक्ष्मी की बारी आई तो लक्ष्मी ने उसमें एक तुलसी दल डाल दिया और पात्र भर गया। कामधेनु ने लक्ष्मी को श्रेष्ठ मान कर यहां तपस्या की। तमिल में 'आ' का अर्थ है गाय एवं 'दन' का अर्थ है तप तथा 'उर' का अर्थ है स्थान। तात्पर्य है कि जहां गाय ने तप साधना की वह अदनूर है।

तिरूमंगै आळवार को प्रभु ने स्वप्न देकर कोल्लिडम में बुलाया एवं एक पगड़ी बांधे व्यवसायी के रूप में श्रीरंगम के निर्माण हेतु माप पात्र मरक्कल से तौलकर लेखा पुस्तिका 'ओलै' में 'एळुतनी' से दर्ज करते हुए आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराया। आळवार संत को संशय हो गया। उन्होंने व्यवसायी का पता पूछा। व्यवसायी वहां से उठकर चल दिया। आळवार संत ने पीछा किया तब वह व्यवसायी अदनूर के गर्भगृह में घुस गया। यहां पेरूमाल अपने बायें हाथ में ओळै एवं एळुतनी रखकर शयन करते हैं तथा

मरक्कल आपके सिरहाने तकिया की तरह पड़ा हुआ है।
नित्यसूरी से क्षुब्ध होकर भगवान ने वैकुण्ठ छोड़ दिया एवं यहां आकर भूमि पर विश्राम करने लगे। लक्ष्मी ने आदिशेष को भेजकर प्रभु का पता लगाया। आदिशेष ने भगवान से उसे अपने शय्या के रूप में उपयोग लाने का अनुरोध किया। पहले भगवान ने आदिशेष का समाश्रयम किया तब उस पर शयन किया।
लक्ष्मी ने एक बार एक माला उपहार के रूप में भृगु मुनि को दिया। मुनि ने उसे इन्द्र को दे दिया। इन्द्र ने उस माला को ऐरावत हाथी के गले में डाल दिया। ऐरावत ने उस माला को अपने सूंड़ से तोड़कर पैरों से कुचल डाला। मुनि ने कुपित होकर इन्द्र को शाप दे दिया तथा अदनूर में आकर एक संतान के लिये तपस्या करने लगे। इन्द्र भी यहां आकर तपस्या करने लगे। कमल के फूल में प्रकट होकर लक्ष्मी ने मुनि को भार्गवी के नाम से संतान संपन्न किया। भगवान यहां पधारे तथा भार्गवी से परिणय सम्बंध किया। परिणय के समय ही लक्ष्मी ने इन्द्र को शाप से मुक्त कर दिया।
कहते हैं यहां के गर्भगृह में मणितूण नामके दो खंभे हैं। इन खंभों के आलिंगन करने वाले का मोक्ष अवश्यंभावी बतलाया जाता है।
4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः परकाल स्वामी, पेरिय तिरूमडल **2674**।

ººº

प्रबंध 23। रामानुज नूट्रन्दादि

श्रीकूरत्ताळवार यानी श्री कूरेश स्वामी के शिष्य तिरूवरंगतमुदनार ने इसकी रचना की। जनश्रुति है कि मुदनार एक प्रकांड विद्वान थे और कुरेश स्वामी अपने जीवन काल में किसी को शिष्य नहीं बनाते थे। श्रीरंगम के कार्यकलापों के संपादन में सहायता के दृष्टिकोण से रामानुज स्वामी ने उन्हें कुरेश स्वामी के शासनाधीन कर दिया था। प्रारंभ में मुदनार ने केवल रामानुज स्वामी की प्रशस्ति गायी थी इसलिये रामानुज स्वामी ने इनकी रचना को सुनकर उसे नष्ट कर देने को कहा। जब मुदनार ने पुनः सभी आळवारों की प्रशस्ति गायक के रूप में रामानुज स्वामी की प्रशस्ति गायी तो रामानुज स्वामी ने इस रचना को स्वीकार कर लिया। तब से यह रचना दिव्यप्रबंधम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो गया है तथा इसे इयर्पा यानी तीसरे हजारवाले प्रबंध की कड़ियों के अंतिम कड़ी में स्थान दिया गया है।
पासुरों की गिनती की एक रीति से इसे समेकित नालायिरा पासुरों की गिनती से बाहर रखा गया है। इसमें कुल **108** पासुर हैं एवं पासुर गिनती की दूसरी रीति से इसके पासुर नालायिरा के पासुर **2791** से **2898** तक हैं। इस रचना का सार निम्नवत है।

हे हृदय ! आओ रामानुज का नाम लो। आपने ज्ञानवान लोगों को मार्ग दिखाया। आपने प्रकांड कवि मारन के चरणों की पूजा की जिन्होंने वक्षस्थल पर कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु की आकंठ प्रशस्ति गायी। हमें सदा आपके चरणकमल के पास स्थान मिले। मैं अपने सौभाग्य को समझ नहीं सकता। रामानुज के असीम उदारपना को छोड़कर मेरा हृदय और कुछ नहीं सोचता। आपने उनसबों का संग छोड़ दिया जो अमृतमय बागों से घिरे अरंगम के प्रभु के चरणों की प्रशस्ति नहीं गाते तथा कुरैयालुर के राजा तिरूमंगैयाळवार की शरणागति नहीं ली । हे उदार हृदय ! दुष्टात्मा कुल के लोगों की संगति से हटाकर मुझे अद्बितीय संत रामानुज के परम पूज्य एवं प्रिय लोगों के चरणों में लगा दिया। इस कृपा के लिये हम सिर नवाते हैं। रामानुज प्रभु ने सबों को केवल प्रथम प्रभु की पूजा करने को उत्साहित किया एवं मुझे इस संसार में आदमी बना दिया। आपने हमारे युगों पुराने कर्मो के अंधकार को दूर कर अपने चरण को हमारे सिर पर रख दिया।हमें अब कोई भय नहीं है। मतिभ्रम लोग जो रामानुज को अपनी संपत्ति नहीं समझते उनके अपशब्द को हम प्रशंसा समझेंगे। जो लोग आपके गुणों को प्रिय समझते हैं वे हमारी कविता में खोट नहीं पायेंगे क्योंकि इससे हम आपके नाम का गान कर रहे हैं। प्रेमासिक्त हृदय वाले प्रिय कवि रामानुज की प्रशंसा में उपयुक्त शब्दों के चुनाव में सक्षम नहीं होते। हाय ! इस पापी हृदय में भक्ति के कारण ही हम भी आपकी प्रशंसा करने का प्रयास कर रहे हैं।यह एक उन्माद ही कहा जा सकता है।

कुरत्ताळवार के शरण में आकर जिनकी गाथा शब्दों से परे है और जो हमें छद्म ज्ञान के गह्वर से बाहर निकालते हैं हम रामानुज की प्रशस्ति गाते हैं जिन्होंने हमें पाप से बाहर निकाला।कुमार्गी बनने से हम बच गये हैं और हमें किसी बात का पश्चात्ताप नहीं है। पोयगै आलवार ने वेद के सार एवं तमिल कविता की सरसता को मिलाकर एक दीप जलाया जो यातना के अंधकार को दूर भगाया। रामानुज ने उस दीपक को अपने हृदय में स्थापित किया, आप हमारे नाथ एवं स्वामी हैं। भूत आलवार ने ज्ञान का दीप जलाया तथा भक्तों के हृदय के अंधकार को दूर भगाया। रामानुज उस आळवार के चरण को अपने हृदय में रखकर आनन्दित हुए। जो वेद के रक्षक हैं और नेक हैं वे आपकी सदा प्रशस्ति गायेंगे। तिरूकोईलूर में उस रात जब अंधकार की छाया का अंत हुआ तो पेय आळवार ने गोपकिशोर आश्चर्यमय प्रभु को कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ देखा। रामानुज ने आळवार के दिव्य चरण की पूजा की। जो रामानुज पर अपना प्रेम बरसाते हैं वे सौभाग्यशाली एवं विशिष्ट मेधा के भक्त हैं। तिरूप्पनाळवार ने वेद

के तथ्य को मधुर तमिल पदों में ढ़ाल दिया। रामानुज ने सदा आळवार के चरणकमल पर अर्पित पुष्पों की माला पहनी। जो रामानुज की शरण लेते हैं उनकी विशिष्टता का इस विस्तृत जगत में हम वर्णन नहीं कर सकते हैं। रामानुज के हृदयाकाश में तिरूमळिशैयालवार के चरणारविंद छाये रहते हैं। जो रामानुज के भक्तों की पूजा कर आपके चरणारविन्द की प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे प्रिय स्वामी हैं। तोन्डरादिप्पोडि आळवार ने वैदिक ज्ञान से सुगंधित तमिल पदों की माला बनायी तथा आपके द्वारा निर्मित नूतन हरी तुलसी पत्ती की गुथी हुए माला अरंगम प्रभु के चरणारविंद पर अर्पित करने योग्य हैं।सत्यवादी रामानुज ने आळवार की एकमात्र पूजा की। रामानुज के चरण हमारे एक मात्र आश्रय हैं।

कोल्ली के राजा कुलशेखर आळवार ने कलात्मक गौरव से पूर्ण पदों को गाया। उन महान लोगों की रामानुज प्रशंसा करते हैं जो आळवार के पदों को गाते हैं। अपने उद्धार के लिये तप्त वन पर्वत एवं सागर में खड़े होकर कठिन तपस्या के मार्ग को छोड़कर हमने रामानुज के चरणों में आश्रय पाया है, हमारा तिरस्कार आप कभी नहीं करेंगे। प्रेम के झरना से नहाते हुए पेरियाळवार ने प्रभु के लिये प्पलांडु गाया "आपकी जय हो" "आपका गौरव अक्षुण्ण रहे" जैसे गीत जिसमें अन्य चीजों को भुलाकर निरंतर प्रेम का प्रवाह बहता है। रामानुज सदा इनको अपने हृदय में रखते हैं। जो रामानुज की महानता को समझते नहीं है वैसे नीच लोगों की संगति मैं कभी नही करूंगा।अब मैं यह नहीं चाहूँगा। कलि के एक छत्र प्रभाव में आकर निष्कलंक वेद में भी कलंक लग जाने पर परम उदार रामानुज मुनि का अवतार हुआ जो आंडाल के कृपा पात्र हुए। आंडाल एक बालिका कवयित्री थी जो पहले स्वयं माला पहन कर बाद में अरंगम के भगवान को पहनाती थी और भगवान उस माला को अपने मुकुट पर लपेटकर धारण करते थे। ओजस्वी एवं अलौकिक कवि नीलन तिरूमंगैयाळवार ने कन्नमंगै के प्रभु एवं अन्य मंदिर नगरों पर तमिल मे गीत की रचना की। हमारे रामानुज आपको बहुत ही चाहते हैं। जो आप में आश्रय लेगा वह दुर्दिन या सुदिन की घटनाओं से मुक्त रहेगा। मधुरकवि अपने हृदय में अपने स्वामी शडगोपन को स्थित कर आनंदित रहना चाहते थे जिनका पृथ्वी पर अवतार अगम्य वेद को हजार मृदु पदों में रूपांतरित करने के लिये हुआ था। रामानुज ने आळवार के चरण की शरण का मार्ग बताया। आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं। मारन शडगोपन के श्रीमुख से गाये जाने वाला तमिल वेद तिरूवायमोळि ही प्रभु का आनंद प्रदान करने वाला एक मात्र अर्जित करने योग्य संपत्ति है। यह माता, पिता, श्रेष्ठ आचार्य, यहां तक कि कमलनिवासिनी लक्ष्मी पति है। इस

बात का रहस्योद्घाटन करने वाले रामानुज हमारे अमृत हैं।
नाथमुनि मृदु मधुरकवि की पूजा से गौरवान्वित होते थे जो रसाषिक्त तिरूवायमोळि को गाने का महारथ प्राप्त किये हुए थे और जो उन्हें फूलों के बाग से घिरे दक्षिण कुरूगुर के स्वामी शडगोपन से विरासत में मिला था। नाथमुनि के लिये अपने हृदय को प्रेम से भरने वाले रामानुज हमारी अपार संपदा हैं। यामुनाचार्य हमारे प्रभु रामानुज के पथ प्रदर्शक हुए जो धर्ममार्ग पर चलने वाले संयमी संतों के सम्राट हैं। आपका संरक्षण मिल जाने के बाद हम कभी भी संकीर्ण बुद्धिवाले मरणधर्मा मनुष्यों के द्वार पर यातना झेलेते हुए यह नहीं गायेंगे "हे संपदा बरसाने वाले मेघ"।
सुब्रमण्य, विनायक, शिव पार्वती, अग्नि एवं अन्य देवता अपना पीठ दिखाते हुए भाग गये और पुकारा "हे तीनों लोकों के नियंता" "हे सृष्टिकर्ता"। कृष्ण ने इस हद तक अपने पुत्र रामानुज पर दया दिखायी। जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे भविष्य की निधि हैं। धार्मिक प्रवृति वाले लोग रामानुज को अपने हृदय कोष में रखते हैं। मैं पापी! इस जगत में मेरे समान अन्य पापी नहीं है, अपने छली कठोर हृदय से आपकी प्रशस्ति गाने का दुस्साहस दिखाया है। अगर सभी प्रातः संध्या एवं रात्रि अनवरत आपकी गाथा गाते रहें तब भी आपके अनंत सद्गुणों का अंत नहीं पा सकते।
वे दिन थे जब घोर पाप के कर्मो से हमारे अनगिनत जन्म हुए, हमारी उम्र बढ़ी, एवं हम थके। अब हमने सुखद श्याममेघ की तरह रामानुज को देख लिया है और हमारी रक्षा हो गयी है क्योंकि ढ़ोगपूर्ण तपस्या के अधम मार्ग से वे अलग रखते हैं। श्याममेघ की तरह उदार रामानुज! इस विस्तृत जगत में कौन आपका करूणामय स्वभाव को समझ सकता है? मैं तो पाप का खेत था एवं आपने स्वयं हमें स्वीकार किया। आज आपका सदगुण इस अधम जीव के लिये अमृत है। श्याममेघ की तरह उदार जगतप्रसिद्ध रामानुज ने हमें पूर्व के घोर दुष्कर्मो से अलग किया। धार्मिक जन जो आपका शरण लेते हैं चाहे वे किसी भी कुल के हों और जो भी उनका दुष्कर्म रहा हो वे हमारे गुणवान स्वामी हैं। कभी नहीं कम होते तेज एवं गौरववाले तथा सदा प्रभाव में बढ़ते रहने वाले रामानुज! श्याममेघ की तरह आपकी उदारता हमारे हृदय को मुग्ध किये हुए है। आपके बड़प्पन की आभा में कोई दोष नहीं है परंतु मैं सहमा रहता हूँ।
जो नप्पिनाय के प्रेमी तथा कंस के वध करने वाले कृष्ण के फूल सा सुकोमल चरणों की पूजा नहीं करते ऐसे अधमबुद्धि वाले को रामानुज कभी नहीं मिलते। आपके नाम को छोड़कर हमारा हृदय अन्य किसी का गान एवं विरूदावली नहीं करता। अहो मेरे जीवन को क्या ही सौभाग्यशाली आशीष मिला है! रामानुज ने भक्तिमार्ग को बड़ी दृढ़ता से

स्थापित किया है जिसमें प्रभु से मिलने का साधन दक्षिणी कुरूगुर के स्वामी के गाये हुए मधुर तमिल वेद हैं। अहो कब हमारी आंखें इस सत्य को जानने वाले भक्तों की पंक्तियों को देखकर प्रसन्न होगी ! मित्रवत निष्कलंक रामानुज ने अपने व्याखयान से स्पष्ट कर दिया कि आश्चर्यमय प्रभु कृष्ण इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों के स्वामी हैं। आप हमारे हृदय के स्वामी हैं। अब यह बात निरर्थक है कि चाहे हम स्वर्ग का आनन्द उठायें या नरकगामी बनें। हे हृदय ! अनेकों जन्मों से अनेकों गर्भों में हम अंतहीन दिन महीना एवं वर्षों तक यातना भोगते रहे। अब बिना किसी दूसरे विकल्प का विचार किये हम रामानुज के चरणों में आ गिरे हैं जिनका हृदय अत्तिगिरी के नाथ उदार हाथों वाले वरदराज के प्रेम से उत्प्लावित है।

अपनी तपस्या के प्रभाव से रामानुज ने कलि के विनाशकारी प्रभाव से जगत को बाहर निकाला तथा रक्षा की। जो आपको प्राप्त कर लेंगे उनके पास तेजोमय ज्ञान, सहिष्णुता, योग्यता, यश, संपत्ति सबकुछ अपने आप आ जायेंगे। पद्मश्री लक्ष्मी के नाथ सुदर्शन चक्र, नन्दकी खड्ग, कौमोदकी गदा, शारंग धनुष, एवं दक्षिणावर्ती पाञ्चजन्य शंख धारण करते हैं। अच्छे लोगों की रक्षा के लिये ये सभी रामानुज मुनि के रूप में आये हैं। यद्यपि घोर कलि के सर्वव्यापी कल्पनातीत शक्ति का नाश हो गया था परंतु रामानुज का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हो पाया। जब नरक के लेखा में हमारे पूर्व के पापों को मिटा दिया गया तब रामानुज की महानता सूर्य के तरह चमक उठी। धरा पर मैं किसी देव की पूजा नहीं करूंगा। 'हे मेघ' कहते हुए मरणाधर्मा की प्रशंसा नहीं करूंगा। लेकिन रामानुज के चरणारविंद को कभी नहीं भुलूंगा जो केवल तिरूअरंगम का नाम मात्र लेने से प्रेम की बाढ़ से उत्प्लावित कर देते हैं। कर्म कैसे कभी भी हमारे पास आयेगा ? चक्रधारण करने वाले सभी जीवों के नाथ ने पुरा काल में अर्जुन को वेद का छिपा हुआ रहस्य बताया। उस समय भी जो उदासी की वेदना से ग्रस्त थे प्रभु ने उन्हें अच्छे मार्ग का परामर्श दिया, और इस तरह से रामानुज का पदार्पण हुआ। भक्तिभाव से ओतप्रोत जगप्रसिद्ध रामायण को रामानुज ने अपने हृदय में रखा। आपके प्रंशसनीय भक्त कुरत्ताळवान एवं चरण वंदनीय हृदयद्रावी संत पराशर भट्ट ने इस अधम में आशा की किरण देखकर अपनी सेवा में लगा लिया।

सौभाग्यशालियों से प्रशंसित रामानुज ! आपने आज हमें अपना सेवक बनाकर अपनी करूणा का प्रदर्शन किया है। लेकिन हमें स्वच्छंद छोड़कर क्यों हमारे जीवन के इन वर्षों को आपने व्यर्थ जाने दिया ? हाय ! इस सूक्ष्म बात को मैं समझ नहीं सकता, कृपया बतायें। हे हृदय ! संतान संपत्ति एवं पत्नी की मृगमरीचिका में दौड़ते हुए हम अपनी

शक्ति व्यर्थ गंवा दिये। रामानुज ने यातना एवं अंधकार के जीवन को बदलते हुए हमें आपको समझने की बुद्धि दी। क्या अन्य कोई आपके सनातन गौरव के समान है ? संयम का व्रत रखने वाले रामानुज ने जगत को यह बताया कि जीवन के चार उद्देश्य हैंः सिद्धांत का जीवन (धर्म), अर्थ अर्जन (अर्थ), ईच्छा की पूर्त्ति (काम), एवं पुर्नजन्म से छुटकारा (मोक्ष)। इन सबों में कृष्ण को प्राप्त करना ही इच्छा पूर्त्ति है एवं अन्य तीन इसके सहायक हैं। यद्यपि माधव हर गर्भ मे प्रवेश कर जन्म लेते हैं एवं हमारी आंखों के सामने खड़े होते हैं हम आपको देखने में असमर्थ हैं। जबकि रामानुज के एक अवतार से सबों का नारायण के चरणों तक जाने का सूक्ष्म ज्ञान मिल गया है।

सत्वगुण संपन्न रामानुज ने बताया कि पद्मश्री पति अरंगन ही सभी जीवों के नाथ हैं। अपनी असीम कृपा से आपने नारियों के उरोज प्रेम के कीचड़ से हमें खींचकर बाहर निकाला एवं हमारी रक्षा की। हे जगत के लागों ! आत्मविनाशक कलि से निपटने का हम एक महान रास्ता बताते हैं। 'रामानुज' कहो। जैसे ही यह काम करोगे तुम्हारी बुद्धि धवल सात्विक हो जायेगी, मुंह अमृत से भर जायेगा, एवं जन्म मरण की यातनायें भाग जायेंगी। अच्छे लोग रामानुज को सभी धर्मों द्वारा बताये गये अनेकों धर्म मार्ग के ज्ञाता के रूप में जानते हैं । आप चारो वेद के ज्ञाता हैं तथा मधुर तमिल के तीन आयामों में निपुण हैं ः कविता, संगीत, एवं नाटक। जो आपका नाम विश्वास पूर्वक नहीं लेते वे किस उद्देश्य से इस संसार में रहते हैं ? रामानुज ! आपके चरण को प्राप्त करने से बड़ा उद्देश्य नहीं हो सकता एवं आपके चरणों की कृपा के बिना यह मिल नहीं सकता। जो यह जानते हैं वे इसे महत रूप में प्राप्त कर चुके हैं जैसा आपने आज हमें दिया। कितना दिया ? यह कहना हमारे शब्दो से परे है। श्रीभाष्यम् प्रदान करने वाले रामानुज की हम प्रशस्ति गाते हैं। आपने मारन शडगोपन के तमिल वेद के सार को समझ कर छः मार्ग के द्वंद को समाप्त किया। हमारे अधम हृदय में प्रवेश कर आपने हमारे विचार को निर्मल कर दिया। हमारे प्रवीण रामानुज ने संसार को विश्वास दिलाया कि रंगनाथ के प्रभु ही ब्रह्माण्ड के पूजनीय नाथ हैं। आप अद्वितीय हैं एवं हमारे घोर कर्मो को चूर करते हुए हमारे हृदय में दिन रात निवास करते हैं। अब संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? सात्विकों से प्रशंसित रामानुज ! आपकी दया के सिवा हमारे जैसे अधम के लिये कोई आश्रय नहीं है। हमारे सिवा आपकी दया अन्यत्र जा भी नहीं सकती। जब दोनों एकही मार्ग का अवलंबन करें तो फिर दोनों को अलग रखना निरर्थक नहीं है क्या ?

दक्षिणी अरंगम खेतों एवं कमल फूलों की अमृतमयी नदियों से घिरा है। रामानुज ने रंगनाथ के चरण को अपने सिर पर रखा तथा अपने को रंगनाथ के चरणों पर रख

दिया। धरा पर रामानुज के अवतार के बाद छः नास्तिक मतों का प्रसार समाप्त हो गया तथा धर्म का मार्ग प्रशस्त हुआ एवं कलि पर विजय प्राप्त कर लिया गया। यतिराज एवं शाश्वत यश वाले रामानुज के चरणारविंद अच्छे लोगों के विचार में प्रभात की छटा विखेरते हैं। विरोधियों को भयाक्रांत करते हुए वे उनके हृदय को विदीर्ण कर देते हैं। हमारे दोषपूर्ण एवं निम्नस्तर की कविता के वे सुधी धारक हैं। पुराकाल में प्रभु ने भारत के युद्ध में पांच पांडवों के लिये घोड़ेवाले रथ को हंकाया। अब आपही भक्तों के अमृत रामानुज बनकर हमारी उन्नति के लिये अवतार लिये हैं। हम इसमें अन्य कारण तो नहीं देखते। अपने दर्शन से रामानुज ने छः नास्तिक मतों को पराजित कर चतुर्दिक अपना यश फैलाया। हमारे अधम हृदय में प्रवेश कर युगल कर्मों (संचित एवं प्रारब्ध) का अंत किया तथा हमें रंगनाथ के चरणारविंद से लागी लगा दिया। ये आपके कुछ चमत्कारिक कृत्य हैं। आश्चर्यमय गौरवशाली रामानुज हमारे कल्प वृक्ष हैं। आपको विद्वतजन चाहते हैं एवं आप हम पर शासन करने के लिये आये। आपने क्लिष्ट सिद्धांत का प्रतिपादन कर यह बताया कि सारा जगत प्रभु का आवास है एवं सभी जीव प्रभु की आत्मा हैं। रामानुज दर्शन की अच्छाई को देखकर नीच नास्तिक सब विखर गये। वैदिक सत्य नारायण का सुखद प्रतिपादन हुआ। दक्षिणी कुरूगुर के सन्त का आनन्ददायी तमिल वेद को नया जीवन मिला। सुगंधित बागों से घिरे दक्षिण अरंगम के प्रभु के भक्तगन रामानुज की प्रशस्ति गाने में आनंद मनाये। आपने तमिल वेद के गान की परंपरा स्थापित की। जो आपको मेघ सा उदार मान कर पूजा करते हैं वे हमारे वंशानुगत स्वामी हैं।

जग से सम्मानित हमारे पावन आचार्य रामानुज युद्ध में फरसा चलाकर इक्कीस राजाओं का अंत करने वाले प्रभु की चरणवंदना करते हैं। आपको पाकर हमारा हृदय अन्य कुछ नहीं सोचता तथा हमारा होंठ अन्य कुछ नहीं बोलता। अन्य किसी चीज से प्रभावित न होकर यतिराज रामानुज ने रंगनाथ के भक्तों के चरणों को अपना प्रिय माना। आपकी दया से सौभाग्यशाली बन हमारा हृदय अन्य कुछ नहीं चाहता। यह मानते हुए कि वेद का सार आत्मज्ञान प्राप्त करना है। बालसिद्धांत वालों ने चैतन्य को ब्रह्म मान लिया तथा जड़ जगत का तिरस्कार कर दिया। उनलोगों ने आगे बताया कि शरीर त्यागने पर जीव सर्वेश्वर से मिल जाता है। हमारे रामानुज ने इनसब अनर्गल बातों पर अपने सिद्धांत के बेजोड़ तर्क एवं गहरे विचार से विजय प्राप्त की। कलि के समसामयिक काल में जबकि अंधकर आठों दिशाओं में फैलकर सागर पर्यन्त व्याप्त है अगर रामानुज चार वेदों के प्रकाश से अंधकार का नाश नहीं किये होते तो हमलोग इस

सच्चाई के ज्ञान से दूर रह जाते कि नारायण ही सारे जीव के प्रभु एवं नाथ हैं। जहां प्रभु को समझने वाले जीवों की पंक्तियां हों, जहां तिरूवायमोळि का संगीत बजता हो, जहां अपने वक्षस्थल पर पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु रहते हों, उदार एवं हमारे कुल के स्वामी रामानुज वहीं प्रवेश कर टिकते हैं।

पाप के नित्य बढ़ते जहरीले गुच्छे में हम फंस गये थे परंतु रामानुज आये और हमारे स्वामी बने।इसके बाद भी यह संत, योगियों से पूजित हो, शाश्वत यश की ज्योति के साथ बढ़ते गये। इस जगत ने यह चमत्कार देखा है। देवाधिराजा को पूजने वाले कुरत्ताळवार की शाश्वत कृपा सबों को मिली जो रामानुज के चरण में शरण लिये। कुरत्ताळवार के चरण को पकड़े रहने से हम पर पाप की पकड़ ढ़ीली पड़ गयी है। अब हमें कोई दुःख नहीं है। महान विद्वान रामानुज ! जो छः नास्तिक मतों के अंधविश्वासी हैं वे धरा पर यत्र तत्र आपके द्वारा पीछा करने के कारण भागे चल रहे हैं।हमें आशीष दें कि आपके चरणाविंद का पीछा हम उसीतरह करते रहें जैसे वृषभ गाय की करता है। निरर्थक शास्त्रार्थ वाले ! शावधान ! मधुर तमिल पन्न वाले तिरूवायमोळी के मद से मत्त एवं वैदिक सत्य रूपी भारी सूंढ़ वाला रामानुज नामक हाथी उन्मत्त हो सर्वत्र घूम रहा है। तुमलोगों के जीवन का अंत हो गया है। रामानुज ने जो ज्ञान दिया है उससे उपनिषद के सभी विवादों का अंत हो गया है। निरर्थक शास्त्रार्थ वाले का प्रभाव समाप्त हो गया है।वैदिक ऋषियों को ऊंचा स्थान मिला है। जगत का बहुत कल्याण हुआ है। दोषी जीवन के युगल कर्मों का नाश हो गया है। जो ज्ञान से परिपक्व हृदय से नित्य पूजा करते हैं उन्हें माधव प्रभु आकाश जगत का मोक्ष देते हैं। हमारे हृदय की कमियों को दूर करने वाले रामानुज भी शरणागत को दयावश वही पद प्रदान करते हैं। आश्चर्यमय प्रभु ने सौ जनों के ऊपर शरणागत धर्मपुत्र को विजय दिलवायी। रामानुज ने हमलोगों को यह बताया कि हमारे अंग प्रभु की सेवा के लिये हैं जो यातनाग्रस्त जीवों को शरण देते हैं। आश्चर्यमय प्रभु ने पुराकाल में सौ जनों से पांच की लड़ाई में अर्जुन के रथ चलाते समय उसे गीता सुनायी। हमारे स्वामी रामानुज ने इसकी रसासिक्त व्याख्या से जगत को अर्थ समझाया। आपके ही भक्तों की अच्छाई में हमारा हृदय एवं आत्मा स्नान करते हैं। बताओ हमारा शिरमौर कौन है ? प्रलयकाल में सभी जीव बुद्धि एवं इन्द्रियां को नष्ट हो जाने पर आत्मा में शिथिल थे। यह देखते हुए अरंगम के प्रभु ने उनसबों की आत्मा को ठीक कर इन्द्रियों को कार्यशील कर दिया। परंतु आपने हमें उस हद तक आश्रय नहीं दिया जो रामानुज ने हमें ऊपर उठाकर आज दिया है। हे रामानुज ! मुझे एवं मेरे स्वभाव को देखते हुए एवं आपके अनंत गुण को देखते हुए आपकी कृप्रा

ही हमारे लिये कल्याणकारी है। इसके बाद भी अगर आप मुझमें कुछ गुण देखते हैं तो आपके भक्तगन आपकी असीम करूणा के बारे में क्या कहेंगे ? हे उदार एवं कल्याणकारी रामानुज ! हमारा ध्यान सदा आपके चरणारविंद पर रहता है। मेरा सारा स्नेह ह्रय चरणकमल पर न्योछावर है। आपके कल्याणकारी गुण में हमारी सेवा समाहित हो गयी है। आपके कारण हमारे पूर्व के कर्मों का नाश हो गया है। रामानुज ने हमें उनकी संगत में रखा है जिनका हृदय इस बात से द्रवित होते रहता है कि आपने नास्तिकों से जगत को मुक्त कर वैदिक मार्ग को स्थापित किया है। यह हमारे स्वामी की असीम करूणा है।

अत्यंत उदारता, दया, एवं चंद्र के समान शांति से रामानुज ने जगत को आश्रय देते हुए वेद के सत्य एवं ज्ञान को प्रकाशित किया। यह सोच लो आपके चरण का ध्यान के सिवा हमारी कोई इच्छा नहीं है। भयदायी समय चक्र के माध्यम से आश्चर्यमय प्रभु दुष्टों का अंत करते हैं जो वेद के मार्ग का अवलंबन नहीं करते। जबकि मेघ समान शीतल रामानुज उन्हें तथ्य समझाकर तेजोमय वैदिक मार्ग पर लाते हैं। हे रामानुज ! मोती एवं शंख देने वाले सिंचित खेतों से घिरे अरंगम के प्रभु सुन्दर हाथों में चक्र शंख धारण कर हमारी नयनों मे बसते हुए कहते हैं 'मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा' । फिर भी आपके गौरव से हम खींच कर प्रेतात्मा से ग्रस्त की भांति कूदते हैं। हे रामानुज ! वेंकटम पर्वत, वैकुंठ, एवं क्षीरसागर से समेकित आनंद जो आप बटोरते हैं वैसा ही आनंद हमें आपके चरणारविंद के ध्यान से मिलता है। विनती है, दास को अनुगृहीत करें। रामानुज ने कल्पनातीत उदारतापूर्ण करूणा की वर्षा की। प्रगाढ़ वैदिक ज्ञान से आपने नास्तिक विचारों को हटाया। सारे संसार में आपका यश फैल गया है। हमारे कर्म को आपने जड़ से निकाल दिया है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि योग्य जन अब इसके बाद क्या करेंगे ? हे रामानुज ! मेरे अधम हृदय में प्रवेश कर आप ने इसे अपना आवास बना लिया है। दुष्ट कृत्यों से मुक्त रखते हुए अपनी करूणामयी प्रभाव से हमें सही रास्ते पर लाकर पद्मश्री के पति की सेवा में लगा दिया। अब अनर्गल सिद्धांत हमारे मन में कभी नहीं आ सकते। जब रामानुज इस संसार में सत्य के अभिभावक हैं एवं पाखंडी सिद्धांतो को नष्ट करने वाले हैं तब भी हाय ! लोग अन्य प्रभु की खोज में लगकर विखर रहे हैं तथा अपनी बुद्धि का नाश कर रहे हैं एवं द्वंद में जीवन यापन कर रहे हैं।

जो उन अच्छे लोगों को याद करते हैं, जिनका विश्वास मात्र रामानुज के नाम में है तथा इनकी प्रशंसा करते हैं, मैं केवल इन लोगों की सेवा बिना थके मन, वचन, कर्म से सर्व दा, सर्वत्र, सब मौसम में करूंगा। हे रामानुज ! आपके चरण के अथक भक्तों की मैंने

सेवा की है। आपने स्वयं हमें अरंगम के प्रभु के अरूणाभ चरणारविंद सदा के लिये दिया है। इस असीम करूणा के बदले हमें कुछ नहीं देना है। बिना सम्यक ज्ञान के हम अनभिज्ञ भ्रमात्क समझ के साथ घूम रहे थे। क्षण भर में रामानुज ने हमें वेजोड़ विद्वान बना दिया और हमारे पार्श्व में खड़े हो गये।जबकि संसार ने उत्साह से कहा 'क्या सौभाग्य है !' आप मेघ की तरह उदारता के लिय प्रसिद्ध हैं। हे रामानुज ! मैं जगत के योग्य जनों में नहीं हूँ जो भक्ति योग के ऊंचे मार्ग का अनुसरण कर मोक्ष की पूर्णता को प्राप्त करते हैं। देखिये, आपके मेघ समान उदारता के कारण, सहज रूप में हम वैकुण्ठ की महान मुक्ति पा जायेंगे। मैंने रामानुज को पा लिया है और इसी के कारण हम इनके भक्तों के चरण को पा सके हैं एवं युगों पुरानी कर्म की यातना को काट सके हैं। आज हम इनके गौरव की नदी की बाढ़ में गहरे जाकर रस पान किये हैं। मैं और अधिक की मांग करने वाला था लेकिन इसका कोई अंत नहीं है। जो लोग वेद पढ़ने में लगे रहते हैं लेकिन यह नहीं जान पाते कि वेद का सार या इसका सूक्ष्म तत्व इस बात में निहित है कि सर्वतेजोमय प्रभु ही इस ब्रह्माण्ड के नियंता हैं उनके लिये तथा अन्यों के लिये रामानुज पथ प्रदर्शक हैं। आपकी पूजा करने वाले हमारे स्वामी हैं। हमारे हृदय में इनलोगों की चरणों की सेवा छोड़कर अन्य कोई चाह नहीं है। हृदयहीन जनों को सम्बन्धी कहते हुए, उनके स्नेह की चाह रखते हुए, श्रांत हो, अब हम और नहीं उनके पीछे दौड़ेंगे। जिनके हृदय शुद्ध हैं, जो पवित्र ग्रथों को पढ़ते हैं, एवं जो रामानुज की पूजा करते हैं, केवल वही हमारे स्वामी हैं, हम उनकी पूजा करते हैं। जो रामानुज को जानते हैं वे आपके लिये हमेशा प्रशंसा करते हैं 'आप चाहे विद्वान से बात करें या साधारण जन से, सदा आप सबों से अच्छे शब्दों में बात करते हैं, आदि आदि।' वेद के चुने हुए ज्ञान जो आपने संसार को दिया है वह सर्वदा प्राप्य है। जो ऐसा नहीं करते वे कलि की यातना से ग्रस्त रहते हैं। जब नास्तिक जन बाघ की भांति घूम रहे थे रामानुज हृदय को पन्न आधारित पद से शक्तिवान बनाकर उनलोगों पर सिंह के रूप में आये। उप्जाऊ कुरैयालूर के राजा कलिकन्रि को हम सिर नवाते हैं। हे रामानुज ! आपकी गाथा प्रशंसा से परे है। अगर मैं यह सोच कर आपकी प्रशस्ति गाऊं कि मैं आपके महान गुणों को जानता हूँ यह नीच स्तर का होगा। अगर मैं यह कह कर छोड़ दूं कि यह हमारे बश का नहीं तो यह सही प्रशस्ति होगी। यह जानते हुए हमारा हृदय कभी भी आपकी प्रशंसा से संतुष्ट नहीं होता। मुझे भय है कि आप हमारे बारे में क्या सोचते होंगे। रामानुज हम पर शासन करने तथा हमें जन्म से मुक्त करने आये। जो आपके बारे में सोच नहीं सकते या प्रशंसा के पद नहीं गा सकते या आपके प्रशंसकों के चरण की पूजा नहीं कर सकते वे

अंधकार के वाहक हैं तथा अनेकों जन्मों की यातना धरा पर भोगते रहेंगे। आगम के भ्रमात्मक व्याख्या करने वाले केवल क्षय एवं अंधकार की ओर ले जाते हैं। संसार को अंधकार से मुक्त करने के लिये रामानुज ने उदारपूर्ण करूणा की वर्षा करते हुए कहा कि अरंगम के प्रभु सभी जीवों के स्वामी हैं। आप एक पूर्णतया पवित्र जीवात्मा हैं। हे विद्वानों से अगम्य गौरव वाले रामानुज ! जाग्रत बनने के लिये हमने कोई तपस्या नहीं की है। न तो हमने आपके चरण की पूजा की और न प्रश्न पूछ कर आपसे ज्ञान प्राप्त किये। तबभी आप हमारे हृदय में प्रवेश कर हमारी आंखों में रहते हैं। विनती है, बताइये किस उद्देश्य से ? करूणा की चमकती तलवार निकालकर महान तपस्वी रामानुज हमारे पास आये और हमारे कर्म का मूलोच्छेदन कर दिया। क्या आप हमारे स्वामी नहीं हैं जो दुष्ग्रंथों को वैदिक वाणी कहने वाले दुष्टों की बड़बड़ाहट को शांत करते हैं ? जो आपकी शरण लेते हैं रामानुज उसे दया का धन, तपस्या का फल देकर उसके कर्म के कारण जन्म की आवृत्ति का अंत करते हैं और वैकुण्ठ का ऊंचा आसन देते हैं। आपकी गाथा गान के सिवा मेरा हृदय अन्य किसी चीज से प्रसन्न नहीं रहता। प्रभु सब जीवों के हृदय में रहकर उसका कल्याण करते हुए मुक्ति देते हैं। लेकिन रामानुज के समक्ष यह स्नेह छोटा दिखता है जो वैकुंठ छोड़कर चारों वेद के प्रसार एवं हर जीव को मुक्त करने हेतु धरा पर अवतरित हुए। घोर कर्म जो जीव को उद्वेलित करते रहते हैं इसके कारण हमने अभी मोक्ष में पूर्ण विश्वास नहीं उत्पन्न किया है। जब यह गन्दा शरीर असहाय होता है एवं जीवन मरण के बीच जूझता है तब रामानुज के भक्तगन जो हमारे स्वामी हैं अकेले हमारा आश्रय होंगे। जो आपकी सेवा करते हैं उनके स्नेह की रक्षा हेतु रामानुज ने अपना चरणारविंद का आश्रय देकर उन्हें अपना लिया। अपने शिष्यों के अलावे जो जिज्ञासु नहीं हैं उनके कल्याण हेतु अपनी असीम करूणा से शिष्यों को सर्वत्र सिद्धांत के प्रसार के लिये उत्साहित किया। हे मेरा मन ! एक बार जब रामानुज की शरण में चले आये तब वे चाहे हमें सुखद स्वर्ग भेजें या ज्वालापूर्ण नरक दें या पुनर्जन्म की आवृति में डाल दें या हम जैसा चाहते हैं वैसा होने दें हमें विचलित नहीं होना है। हमारे दिव्य कल्प वृक्ष रामानुज मुनि के अवतार के बाद बड़बड़ाते श्रमन, निराधार शाख्य, शिव आगम के आलसी शून्यवादी, तथा वेदांत के भ्रमपूर्ण व्याख्या करने वाले सभी इस पृथ्वी पर पराजित हो चुके हैं। हे रामानुज ! हमारा हृदय एक सुनहला मधुमक्खी है जो आपके आस पास इस चाह से मंड़राता है कि आपके चरणार विंद के गौरवपूर्ण बाढ़ से अमृत का पान कर सके। मधुमक्खी अन्य किसी चीज का पान भी नहीं कर सकता। विनती है इसे अवसर दीजिये जो यह चाहता है। कोई अन्य चीज

में बहला कर इसे अपने से दूर मत भगाइये। हे रामानुज ! पुनर्जन्म की आवृति में पड़कर हम कर्म की माया में अंधे बनकर जीवन बिताते रहे। आपने स्वयं हमें यातना से बाहर निकाला। आपकी करूणा के स्मरण मात्र से अपने द्रवित हृदय के साथ रहने वाले योग्य जन इसे दोष पूर्ण बताते हैं कि हमने आपसे इसके लिये याचना की थी। हे हमारे प्रभु एवं नाथ रामानुज ! आपके सदगुणों को यादकर हमारा हृदय द्रवित होता है। मेरी जीभ केवल आपका नाम लेती है। मेरे हाथ प्रार्थना रत हैं तथा आंखें आपके सुन्दर स्वरूप के दर्शन के लिये लालायित हैं। कितना घोर पापी हैं हम ! क्यों आपने सागर से घिरी धरती पर केवल मुझे अपना दया का पात्र बनाया ? पुराकाल में प्रभु विशाल एवं महाक्रोध से ग्रस्त नरसिंह के रूप में प्रकट हुए तथा शस्त्रों से सुसज्जित हिरण्य के सुनहले छाती को चीर डाला। रामानुज के उपजाऊ हृदय में आपकी गाथा सदा बढ़ती है। हमारे कर्म के जन्मों के घास को निकालते हुए वे हमें सम्यक ज्ञान की अच्छी फसल काटने का अवसर देते हैं। हे हमारे तैयार सघन मेघ रामानुज ! अगर एक फल की तरह कृष्ण को भी हमारे हाथ में देंगे तबभी हम आपके स्वरूप से बहने वाली आपकी गाथा की चाह रखते हैं। चाहे हम नरक के मलकुंड में जायें या ऊंचे गौरवशाली स्वर्ग में आप हमें यह अवश्य प्रदान करें नहीं तो हमारे जीवन का अंत हो जायेगा। भक्तगन जो सागरशायी प्रभु के चरणाविंद में शरणागत हैं रामानुज को प्रबुद्ध मानते हैं। वैदिक विद्वान आपके चरणकमल की पूजा करते हैं। महान जीव आपके नाम के साथ नृत्य करते हैं। ये लोग जहां भी रहते हैं वे सब हमारे लिये तीर्थ हैं। योग्य जन यही कहते हैं कि वैकुण्ठ, वेंकटम, एवं मालिरूञ्शोलै आश्चर्यमय प्रभु के गौरवशाली निवास हैं। इनसबों के साथ प्रभु रामानुज के हृदय में रहते हैं। तथा रामानुज प्रेम से हमारे हृदय में रहने आये हैं। हे मृदु स्वभाव के रामानुज ! हमें कुछ कहना है। इस हाड़ मांस के पिंजरा में हम कितने जन्म मरण से गुजरें आप सदा सर्वत्र हमारे हृदय को अपने भक्तों के प्रेम से भर दीजिये एवं हमें उनके चरणाश्रित बना दीजिये।

नालायिरा **4000** पासुर वाले दिव्यप्रबंधम का तीसरा हजार का भाग पूरा हुआ ।

प्रबंध 24 तिरूवायमोळी : एक विहंगम अवलोकन

तिरूवायमोळी प्रबंधम का चौथा हजार है। यह सर्वोत्तम महत्व का प्रबंध है तथा इसका पाठ सदा भगवान के सम्मुख मंदिर में ही होता है। शोभा यात्रा में इसका पाठ नहीं किया जाता। यद्यपि यह नम्माळवार की कृति है परंतु गीता की तरह तिरूवायमोळी के सारे पासुर भगवान के श्रीमुख से निकले हैं। इसे साम वेद कहते हैं। पूर्व में बताया गया है कि नालायिरा दिव्यप्रबंध के पासुरों की गिनती की दो रीति हैं। एक रीति से इर्यपा में तिरूमंगै आळवार के तीनों प्रबंधों में एक एक ही पासुर की गिनती करने पर तथा रामानुज नुट्रन्दादि की कोई गिनती नहीं करने पर तिरूवायमोळी का प्रारंभ पासुर **2675** से होता है। चूंकि इसमें **1102** पासुर हैं इसलिये नालयिरा दिव्यप्रबंध के कुल पासुर **3776** पर ही समाप्त होते हैं। दूसरी रीति से तिरूवायमोळी के पासुर **2899** से पारंभ होकर **4000** पर अंत होते हैं।

तिरूवायमोळी में कुल **10** शतक हैं। सभी शतकों में **10** दशक हैं तथा एक दशक में **11** पासुर हैं जिसमें **11** वां पासुर सदा फलश्रुति है। मात्र एक दशक **2**।**07** कुल **13** पासुरों से बना है जिसमें **12** केशवादि नाम के लिये एक एक पासुर हैं तथा अंतिम **13** वां फलश्रुति है।

नम्माळवार ने अपने चारों प्रबंधों में जिन **39** दिव्यदेशों का यशोगान किया है वे निम्नवत हैं।

1।क्षीरसमुद।**2** वैकुण्ठ। **3**।बदरी।**4**।तंजै मामणि।**5**।अयोध्या।**6**।मथुरा।**7**।द्वारका दुवरापदि।**8**।वेंकटम।**9**।श्रीरंगम्।**10**।तेन तिरूप्पेर।**11**।कुडन्दै।**12**।मलीरूमसोलै।**13**।तिरूक्कोलूर।**14**।वेग्का यथोक्तकारी कांचीपुरम।**15**।तिरूतन्का कांची।**16**।तिरूक्कुरूंगुडी।**17**।तिरूकन्नपुरम।**18**।ओप्पली अप्पन तिरूविण्णगर।**19**।वानमामलै।**20**।आदिपिरान कुरूगुर आळवार तिरूनगरी।**21**।तुलैविल्ली मंगलम्अरविन्दलोचन एवं देवपिरान।**22**।तिरूप्पेरियल।**23**।वरगुणमंगै।**24**।श्रीवैंकुठम।**25**।तिरूपुलिंगुडी।**26**।मायाकुत्तन।**27**।तिरूवारन्विल्लै या अरनमूला।**28**।तिरूमूळिकुळम।**29**।तिरूवन वन्डूर।**30**।तिरूवल्लवाळ।**31**।तिरूनवै।**32**।तिरूवनंदपुरम।**33**।तिरूप्पुलियूर कुट्टनाड्ड।**34**।तिरूक्काटकरै।**35**।तिरूवत्तारू।**36**।तिरूच्वेंगनूर।**37**।तिरूक्कडित्तानम।**38**।तिरूवनपरिशरन।**39**।तिरूमोगूर।

तिरूवायमोळी प्रबंध की कुछ छिटपुट बातें जिसका आळवार संत ने उल्लेख किया है वे हैंः

✐ नारायण एवं लक्ष्मी की शाश्वत सत्ता का प्रतिपादन है। **3328**। **3104**

✐ शिव एवं नारायण का स्वरूप **3317**। **3093**

✐ शिव को ब्रह्मा की खोपड़ी से शाप मुक्त करना कई स्थलों पर वर्णित है। देखें पासुर **3333**। **3109**

✐ जैन एवं बौद्धों का संदर्भ **3334 । 3110**

✐ कल्कि स्वरूप का संदर्भ **3350 । 3126**

✐ रामानुज स्वामी के आगमन की भविष्यवाणी **5 । 02**

✐ नम्माळवार ने पहली बार तिरूवायमोळी में परांकुश नायकी के रूप में प्रभु को मडल की धमकी दी है। देखें **5 । 03** पा **3147** एवं **3148**। इसीतरह से परकाल स्वामी के शिरिया एवं पेरिया मडल में भगवान को परकाल नायकी मडल की धमकी देती है। तमिल साहित्य में पुरूष द्वारा मडल करने की प्रथा का उल्लेख मिलता है। प्रेमी अपनी प्रेयसी के छलावे से ऊबकर कटे फटे कपड़े पहन शरीर में भस्म लगाकर अपनी प्रेयसी के चित्र का एक ध्वज लेकर नारियल वृक्ष से घोड़ा बनाकर उस पर सवार होता है एवं उसके मित्र घोड़ा को खींचते हैं। नगर एवं गांव को वह घूम घूमकर बताता है कि कैसे प्रेयसी वचन देकर व्याह से पीछे हट रही है। परंतु नम्माळवार के दो पासुर में तथा परकाल स्वामी के शिरिया एवं पेरिया मडळ में नायकी द्वारा प्रभु के विरूद्ध मडल की धमकी देने का चित्रण किया गया है। यहां प्रेमिका ही मडल करती है जो तमिल साहित्य के प्रथा के प्रतिकूल प्रतीत होता है परंतु आध्यात्मिक प्रेम में कुछ भी संभव है।

✐ **7 । 09** के अनुसार तमिल का यह पूरा तिरूवायमोळी प्रबंध गीता की तरह प्रभु के मुखारविन्द से निकला है।

✐ तिरूवायमोळी मे 'तोळी पासुर' के नाम से तीन दशक ऐसे हैं जिसमें एक सखी किशोरी नायिका की स्थिति को चित्रित करती है। ये दशक हैं (1) **3286** से **3296**, (2) **3495** से **3505**, (3) **3759** से **3769**

✐ नम्माळवार गोरे रंग के थे। **9 । 03 । 11**

✐ वैकुंठ यात्रा का विवरण **10 । 09** में सुन्दर तरीके से किया गया है।

<u>तालिका 8 ः परांकुश नायकी के प्रसंग तिरूवायमोळी</u>

पात्र	शतक	पासुर	अभियुक्ति
नायकी	**1 । 04**	**2708** से **2711**	दूत भेजना
नायकी	**2 । 01**	**2785** से **2795**	स्वयं के हृदय की स्थिति
मॉ	**2 । 04**	**2818** से **2828**	मॉ चिंतित हैं
नायकी	**2 । 05**	**2829** से **2839**	नायकी स्वयं अन्तर्मन में झांकती है
मॉ	**4 । 02**	**3018** से **3028**	मॉ चिंतित हैं
मॉ	**4 । 04**	**3040** से **3050**	मॉ चिंतित एवं अचंभित हैं
मॉ	**4 । 06**	**3062** से **3072**	शुभचिंतकों से उपचार पूछना

नायकी	**4 | 08**	**3084 से 3094**	नायकी का निवेदन
नायकी	**5 | 03**		सखियों से वार्ता
नायकी	**5 | 04**		अन्तर्मन की व्यथा स्वयं से बताती है
नायकी	**5 | 05**		तिरूकुरूंगुडी के प्रभु की प्रशस्ति
मॉ	**5 | 06**		मॉ चिंतित एवं अचंभित हैं
नायकी	**5 | 07**		वानमामलै के प्रभु की प्रशस्ति
नायकी	**5 | 08**		कुडन्दै के प्रभु से नोक झोंक
नायकी	**6 | 01**		दूत भेजने की कामना
नायकी	**6 | 02**		नायकी का प्रभु से नोंक झोंक
मॉ	**6 | 05**		मॉ चिंतित एवं अचंभित हैं
मॉ	**6 | 06**		मॉ चिंतित एवं अचंभित हैं
मॉ	**6 | 07**		मॉ चिंतित एवं अचंभित हैं
नायकी	**6 | 08**		नायकी दूत भेजती है
मॉ	**7 | 02**		श्रीरंगम प्रभु से निवेदन
नायकी	**7 | 03**		सखी से नायकी वार्ता करती है
नायकी	**7 | 07**		सखी से नायकी वार्ता करती है
नायकी	**8 | 02**		सखी से नायकी वार्ता करती है
सखी	**8 | 09**		सखियों का आपस में वार्ता
नायकी	**9 | 05**		पक्षी आदि से शिकायत
नायकी	**9 | 07**		पक्षी आदि को दूत भेजना
नायकी	**9 | 09**		मिलन एवं विछोह का स्मरण
नायकी	**10 | 03**		विषाद में सखियों का साथ

<u>प्रबंध **24** । तिरूवायमोळी</u>

<u>पहले शतक का पहला दशक ः **1 । 01** ः उयर्वर</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 । 01 । 01 से 1 । 01 । 11 पासुर **2899 से 2909** या **2675 से 2685** ः

<u>सर्वेसर्वा प्रभु से शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति ः</u>

उठो ! हे हृदय ! आपकी पूजा करो जो उच्चतम से भी उच्चतर हैं। सदा जाग्रत स्वर्गिकों के नाथ हैं। सभी शंका का निवारण कर शुद्ध ज्ञान देते हैं। **2899 । 2675**

आप हृदय को शुद्ध कर इसे प्रस्फुटित करते हैं एवं वृद्धि कराते हैं। आप विचार

अनुभव एवं इन्द्रियों से परे हैं। आप शुद्ध चैतन्य सर्वथा योग्य एवं शाश्वत हैं। कोई अन्य आपसे वरीय एवं योग्य नहीं है आप सब जीवों में हैं।**2900 । 2676**

आप 'यह हैं' 'वह नहीं हैं' की तरह नहीं सोचा जा सकता।आप चैतन्य एवं जड़ हैं। आप ऊंचे में है तथा नीचे में हैं। आप इन्द्रियों में हैं लेकिन उनसे ही नहीं हैं तथा अंतहीन है। श्रेष्ठतम को खोजें जो सर्वत्र हैं। **2901।2677**

आप नर की तरह हैं 'वहां' 'यहां' 'बीच में' । आप मादा की तरह हैं 'वहां' 'यहां' 'बीच में' एवं 'कहीं भी'। आप वस्तुएं हैं 'वहां' 'यहां' 'बीच में' एवं 'कहीं भी'। आप 'अच्छे' 'बुरे' 'उदासीन' एवं सबके भूत काल तथा भविष्य काल हैं। **2902 ।2678**

जो जैसा उचित समझता है वैसी पूजा करे।प्रत्येक अपने देवता के चरण को पायेगा। हमारे प्रभु जो सर्वोपरि हैं अन्य देवों को अर्पित पूजा को स्वीकार कर उस देवता को वैसा ही फल देने का निदेश करते हैं। **2903 2679**

हमारे प्रभु शाश्वत रूप से अपरिवर्तनशील हैं। खड़े बैठे सोये एवं घूमते हुए। खड़े नहीं, बैठे नहीं, सोये नहीं, एवं नहीं घूमते हुए। सदा एक तरह एवं सदा वैसा नहीं। **2904 । 2680**

वेदों के प्रभु जिन्होंने ब्रह्मांड को निगल लिया, अग्नि पृथ्वी जल आकाश एवं वायु के रूप में प्रकट हुए। इन सबों से निर्मित आप सब वस्तुओं में हैं। प्राण की तरह छिपे हुए सब शरीर में आप हैं। **2905 ।2681**

जबकि आप सर्वत्र हैं पर दिखते नहीं, यहां तक कि देवों को भी नहीं।आप प्रथम कारण हैं तथा सर्वशक्तिमान हैं एवं सबों को आपने निगल लिया।आपने तीन नगरों को जलाकर देवों को बुद्धि प्रदान की।आप ही सृष्टिकर्ता ब्रह्मा हैं, एवं विनाशक शिव भी। **2906। 2682**

क्या कहेंगे, आप हैं, तब आप हैं, एवं यह सब आप हैं। मानो कि आप नहीं हैं, फिर भी आप हैं सबों में रूपविहीन चैतन्य की तरह। इन दो गुणों 'है' एवं 'नहीं हैं' के साथ आप सब वस्तुओं में हैं, सर्वत्र हैं एवं सदा के लिये हैं। **2907।2683**

जिन्होंने सबों को निगल लिया शीतल सागर में शयन करते हैं।हर बूंद में हैं, ब्रह्मांड में हैं, संपूर्ण हैं, पृथ्वी पर हैं, आकाश में हैं, हर अणु एवं परमाणु में सदा के लिये सब जगह छिपे हैं। **2908।2684**

कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक प्रभु के बारे में है जो अग्नि में ताप की तरह, पृथ्वी में भार की तरह, जल में शीतलता की तरह, आकाश में शक्ति की तरह, एवं वायु में शब्द की तरह हैं। जो इसका पाठ करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं।

2909 । 2685

<u>पहले शतक का दूसरा दशक ः **1 । 02** ः विडुमीन्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 । 02 । 01 से 1 । 02 । 11 पासुर **2910 से 2920** या **2686 से 2696** ः

<u>प्रभु भक्ति से मिलते हैं ः</u>

सब चीज छोड़कर अपनी आत्मा नियंता के जिम्मे सुपुर्द कर दो एवं उनका संरक्षण स्वीकार करो। **2910 । 2686**

तड़ित से भी क्षणिक इस शरीर का जीवन काल है। इस पर तनिक देर स्वयं सोच लो। **2911 । 2687**

तुम एवं तुम्हारा का मूलोच्छेदन करो। प्रभु के साथ मिल जाओ इससे बड़ी उपलब्धि नहीं होगी। **2912 । 2688**

प्रभु 'हैं' एवं 'नहीं हैं' के परे हैं।सारे संबंध तोड़कर अनंत सुख प्राप्त करो। **2913 । 2689**

जब सारे संबंध टूट जाते हैं तो जीव मुक्त हो जाता है। शाश्वत प्रभु को प्राप्त करो एवं सभी संबंध तोड़ दो। **2914 । 2690**

प्रभु का कोई बंधन नहीं है आप सर्वत्र हैं। बंधन से मुक्त होकर प्रभु के साथ पूर्णतया मिल जाओ। **2915 । 2691**

ज्योति के वृहत साम्राज्य को देखो। विदित हो कि सब प्रभु का है एवं उनमें मिल जाओ। **2916 । 2692**

विचार के स्रोत शब्द एवं कृत्य के नजदीक जाओ। इनको प्रभु के प्रति उन्मुख करो एवं स्वयं को भी आत्मसात कर दो। **2917 । 2693**

इस तरह से उन्मुख होने पर सभी अवरोध समाप्त हो जायेंगे। तब शरीर त्याग के समय तक प्रतीक्षा करो। **2918 । 2694**

गौरवशाली नारायण के चरणारविंद के साथ आत्मसात हो जाओ जो अनगिनत सद्गुणों के प्रभु हैं तथा अप्रतिम हितैषी हैं। **2919 । 2695**

हजार पदों वाली रचना का यह दशक सिंचित खेतों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के सुविचारित शब्द हैं। **2920 । 2696**

<u>पहले शतक का तीसरा दशक ः **1 । 03** ः पत्तुडै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 । 03 । 01 से 1 । 03 । 11 पासुर **2921 से 2931** या **2697 से 2707** ः

प्रभु भक्ति से मिलते हैं ः

प्रभु प्रेम से भक्तों को मिलते हैं। आपके चरणारविंद का मिलना दूसरों के लिये कठिन है यहां तककि पद्मश्री लक्ष्मी को भी। ओह ! गोपनारी के घड़े से मक्खन चुराने के लिये अपने को निर्दोष बताते कितनी सुगमता से आप ऊखल में बंध गये ! **2921 ।2697**

स्थान एवं प्रसंग को भुलाकर आप अनेकों स्वरूपों में प्रकट होते हैं। आपसे निकलने वाली प्रभा का आदि अंत नहीं है। मुक्ति का अमृतमय अनुभव प्रदान करते हुए आप भीतर एवं बाहर आनंदप्रद करूणा के साथ वर्तमान रहते हैं। **2922 ।2698**

नारायण के आश्चर्यो को कौन समझ सकता है ? आप वैदिक यज्ञ के उच्चतम फल हैं। सृष्टि से एवं संहार से तथा इन दोनों के मिश्रण से आप सर्वदा खेलते रहते हैं। आप में देवगन, चेतन, एवं जड़ स्थित हैं। **2923 ।2699**

यह देखना कठिन है कि हमारे प्रभु अपरिवर्तनशील है। यह देखना सरल है कि हमारे प्रभु अपरिवर्तनशील है। हमारे प्रभु के हजारों नाम एवं स्वरूप हैं। हमारे प्रभु नाम, स्वरूप, दृश्यमान, एवं अदृश्यमान का विरोध करते हैं। **2924 ।2700**

वेद की विधि का पालन करते हुए आत्मानुभव से प्रभु को प्राप्त करो। वेद में बताये गये की तरह आप अंतहीन हैं तथा सबके प्रारंभ हैं। भ्रम का त्याग करके अपने बंधनों को काट दो। प्रभु ही छः दर्शन सिद्धांतों के द्वंद को समाप्त करते हैं। **2925 ।2701**

हे मानवों ! यद्यपि कि तुम शरीर, एवं रूपहीन बिना लंबाई चौड़ाई तथा ऊंचाई वाले स्वभाव स्वरूपी जीव के अंतर को अनुभव कर चुके हो इससे प्रभु का साक्षात्कार नहीं होगा। जो ब्रह्मा विष्णु एवं शिव की तरह बताये गये हैं उनकी प्रशस्ति गाओ। आप ही तुम्हारे हृदय में बसते हैं। **2926 ।2702**

आप सभी स्वरूपों में हैं जिसकी गिनती एक या अनेकों नहीं की जा सकती। आप तेजोमय नारायण चतुर्मुख ब्रह्मा एवं शिव हैं। दृढ़ भक्ति से आपको हृदय में रथापित करो। सब इच्छा को त्यागकर एकमात्र सेवा करो जो श्रेयस्कर है। **2927 ।2703**

सभी इच्छाओं से हृदय को रिक्त कर लक्ष्मीपति के दिव्य चरणों की पूजा करो। हमारे पूर्व के कर्मो का नाश हो जायेगा एवं नयी इच्छा उत्पन्न नहीं होगी। मृत्यु के आगमन पर शांति से शरीर छूटेगा। **2928 ।2704**

प्रभु के दायें तीन नगरों को जलाने वाले शिव रहते हैं एवं सातों लोक को बनाने वाले ब्रह्मा नाभि पर रहते हैं। तब भी प्रभु इस ब्रह्मांड में हमलोग सभी को दर्शन देते हैं। ये सब आपके चमत्कार हैं जो हमारे मन में छाये रहते हैं। **2929 ।2705**

स्पष्ट चित्त वाले देव गनों के लिये भी आप रहस्य हैं। आपके आश्चर्य आकाश को भर

देंगे। आपका वर्ण मेघ की तरह श्याम है, आपके चरणाविंद ने पृथ्वी को मापा। हम सर्वदा बैठ कर आपकी प्रशस्ति गायेंगे एवं सम्मान करेंगे तथा पूजा अर्पित करेंगे। **2930 | 2706**

घने बागों वाले श्रीसंपन्न कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक स्वर्गिकों के प्रभु के बारे में है जिन्होंने महान समुद्रमंथन किया। जो इसे याद कर लेंगे वे स्वर्ग में आनन्द मनायेंगे। **2931 | 2707**

पहले शतक का चौथा दशक ः **1 | 04** ः अंजिरैय

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 | 04 | 01 से 1 | 04 | 11 पासुर **2932 से 2942 या 2708 से 2718**ः

परांकुश नायकी भाव में दूत का भेजना

हे सुन्दर पंखों वाले अपनी सौंदर्यशालिनी प्रेयसी के साथ विहरते करूण क्षीणकाय सारस ! क्या हम पर तरस खाते हुए तुम दोनों हमारा संवाद गरूड़ पक्षी पर सवारी करने वाले प्रभु के पास पहुंचा सकते हो ? क्यों, तुम दोनों को वे पिंजरा में बंद कर देंगे ? क्या इससे तुमलोग दुखी होगे ? **2932 | 2708**

हे एकत्रित कोयल समूह ! क्या राजीवनयन प्रभु के पास हमारा संवाद पहुंचाने में तुम्हें पीड़ा पहुंचेगी ? क्या तुम हमारे प्रिय पालतू नहीं हो ? ओह ! हमारे पूर्व के कुकर्म कि हमने उन्हें लंबी अवधि से स्मरण नहीं किया ! **2933 | 2709**

हे गौरवमय हंस ! प्रिया के साथ रहना सौभाग्य है। चतुर बौना जिसने तिकड़म से पृथ्वी की भिक्षा मांग ली को जाकर कहो कि उनकी प्रेयसी अचेत हो गयी है। हाय ! असावधान मैं ! हमारे काले कर्म का अंत नहीं होगा। **2934 | 2710**

मेघ वर्ण के श्यामल प्रभु हमारी दशा को न तो देखते हैं और न कहते ही हैं 'यह उचित नहीं है'। ज्यादा मैं क्या कह सकती हूँ ? हे सारस की जाति के नीले पक्षी गन ! जा कर प्रभु को कहो कि उनमें श्रेयस रह नहीं पाया है। क्या तुम मेरा कहना करोगे या नहीं करोगे ? **2935 | 2711**

सिंचित बागों में कीड़ा खोजते हे मछली खाने वाले पक्षी ! विनती है, अगर तुम नारायण प्रभु को देखोगे तो क्या यह संवाद दोगे ? आपने बाग के रूप में सात लाकों को बनाया एवं स्नेह से इसकी वृद्धि करायी। केवल यह अभागिनी किशोरी अश्रुपूर्ण आंखों से अछूत सी खड़ी है। **2936 | 2712**

हे चतुर मधुमक्खी ! अगर हमारे प्रभु को देखो तो उनसे यह बताओ 'आप अन्यायी हैं, इसके पहले कि उसका जीवन बर्बाद हो जाये आप गरूड़ को उसकी गली में जाने के

लिये आदेश दें। ' हाय ! हमने कौन से अपराध किये हैं ? **2937 । 2713**
हे मेरी प्रिय सुगनी ! तुम अपनी बातों से हमें पीड़ा पहुंचाती हो। क्या तू हमारी पालतू नहीं हो ? ओस वाली शीतल हवा हमारी हड्डियों में सूई की तरह चुभ रही है। जो अकेले हमारे दोष को देख लेते हैं उन एकमात्र अडिग प्रभु से जाकर पूछो 'कौन सी गलती उसने की है जो उसे आप अपनी करूणा नहीं प्रदान कर रहे हैं ?' **2938 । 2714**
हे मेरी छोटी मैना ! मैं अपनी आभा एवं आकर्षण खो चुकी हूँ। हाय ! यद्यपि कि मैं तुम्हें आवश्यक कार्य से हमारे दूरस्थ प्रभु के पास जा कर 'मैं रोगपीड़ित हूँ' कहने के लिये कहती हूँ तो तुम ध्यान नहीं देती। अच्छा होगा कि किसी अन्य को खोज लो जो तुम्हें भोजन दे सकें। **2939 । 2715**
हे ओसवाली शीतल वायु ! यह शरीर नारायण प्रभु के चरणों पर नित्य फूल चुनकर चढ़ाने के लिये ही बना है। इस तरह से उनसे हमें अलग करने का क्या लाभ ? जाओ और यह उनसे पूछो तब लौटकर मेरी हड्डियों को विदीर्ण करना। **2940 । 2716**
चक्रीय पुनर्जन्म, जीव एवं अन्य सभी की सृष्टि के आदिकारण प्रभु तेजोमय चक्र धारण करते हुए सागर में शयन करते हैं। मैं अभागिन जब उनसे मिलूंगी तो यह बताउंगी और तब उनमें समा जाऊंगी। तब तक के लिये, हे काला अकेला हृदय ! हमारे साथ रहो। **2941 । 2717**
उपजाऊ खेतों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित अद्वितीय हजार पद का यह दशक सात लोकों को बनाने वाले अगम्य कृष्ण के बारे में है। जो इसे याद कर लेंगे वे स्वर्ग की संपन्नता का आनन्द उठायेंगे। **2942 । 2718**

<u>पहले शतक का पांचवा दशक ः **1 । 05** ः वळवेळ</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 । 05 । 01 से 1 । 05 । 11 पासुर 2943 से 2953 या 2719 से 2729ः

<u>परांकुश नायकी भाव में</u>

अभागिनी मैं ! स्वर्गिकों के देव एवं सातों लोक के कारण प्रभु को देखकर धीमे स्वर में बोली 'नटखट ! जिसने चोरी का मक्खन खाया' तब कहा 'चमेली जैसी मादक मुस्कान वाली नप्पिनाय को जीतने के लिये सात वृषभों को नष्ट करने वाले शक्तिशाली गोपकिशोर, मेरे प्रभु !' **2943 । 2719**
हे हमारे आश्चर्यमय प्रभु ! संपूर्ण सृष्टि की आप ही नहीं घटने वाली इच्छाशक्ति एवं बीज हैं जो केवल हृदय से जाने जाते हैं। स्वर्गिक एवं संत जन आपके ध्यान में अचेत

हो जाते हैं। जल चंदन अगरबत्ती एवं फूल से वे पूजा अर्पित कर द्रवित हृदय से आपकी गाथा गाते हैं परंतु कभी भी अंत नहीं पाते। **2944 | 2720**

आपने ही संत एवं स्वर्गिकों की सृष्टि की तथा चतुर्मुख को बनाकर उन्हें सारे जगत का गर्भ रचने की शक्ति दे दी। सारी सृष्टि के ऊपर से पैदल पार होने वाले प्रभु आपने संपूर्ण विश्व को माप डाला। मां की तरह सबों के प्रति आप दयावान हैं। **2945 | 2721**

स्वर्गिकों के प्रभु, वैकुंठ के प्रभु, मेरे अपने प्रभु, आपने ही ब्रह्मा शिव एवं इन्द्र को बनाया तथा अपने में स्थापित कर लिया। आपने स्वर्गिकों संतों एवं समस्त चेतन तथा अन्य सभी को बनाया और शेष शय्या पर गहरे सागर में सोये अवस्था में प्रकट हुए। **2946 | 2722**

पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु माधव ! धनुष के समान शरीर वाली त्रिविका को सीधा करने वाले गोविन्द प्रभु ! आभापूर्ण मणिवर्ण वाले मधुसूदन प्रभु ! हमें सुनिये। यह भाग्यहीना को अपना चरणारविंद प्रदान कीजिये। **2947 | 2723**

गोपकुल में प्रवेश कर उनके प्रमुख बनने वाले माधव ! स्वर्गिकों के प्रभु एवं हमारी उदासी की औषधि तथा निदान केशव ! सात घने वृक्षों को बाण से बेधने वाले श्रीधर ! अनेक महान कृत्य एवं बहुत से नाम वाले ! मैं तो आपके नामों को पुकारते पुकारते अचेत हो जाती हूँ। **2948 | 2724**

तुलसीमाला पहने मेरे प्रभु तिरूमल ! कृष्ण ! आप भक्तों को मृत्यु के बंधन से घास की तरह निकाल लेते हैं। हाय ! जब महान बुद्धि वाले आपको समझने में सक्षम नहीं हैं तब यह निम्न बुद्धि वाली आपके दर्शन के लिये विलाप करती है। इससे बड़ी गलती हो सकती है क्या? **2949 | 2725**

सात लोकों को निगलकर पुनः उगलदेने वाले प्रभु ! क्या आश्चर्य है कि कृष्ण शिशु के रूप में आपने मक्खन चुरा कर खाया एवं उसका कोई चिह्न नहीं छोड़ा। क्या जो मिट्टी आपके पेट के भीतर रह गयी थी उसको बाहर निकालने की यह औषध थी ? **2950 | 2726**

स्वर्गिकों के अद्वितीय नाथ ! हमारे नाथ एवं संरक्षक श्री पति हैं। माँ की तरह संपूर्ण सृष्टि के प्रति दयालु आपका सुन्दर स्वरूप है। एक शिशु की सरलता के साथ आपने घोर राक्षसी के विषैले स्तन का पान करते हुए उसका प्राण खींच लिया। **2951 | 2727**

प्रदीप्त ज्ञान वाले वैकुंठ के प्रभु ! आप आकार प्रकार एवं स्थिति से परे सभी में उनके

अन्तःचेतन की तरह विराजते हैं। हमारे युगल कर्मों को भगाते हुए आपने हमारे माया के बंधन को काट दिया और तब हमारे हृदय को विश्वासपूर्वक अपने ऊपर दृढ़ कर दिया। **2952 । 2728**

कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक संगीतज्ञ गायक एवं भक्तों से बहुप्रशंसित है तथा करूणा से पूर्ण आश्चर्यमय प्रभु के बारे में है। जो इसे गायेंगे वे पृथ्वी पर कभी यातनाग्रस्त नहीं होंगे। **2953 । 2729**

पहले शतक का छठा दशक ः **1 । 06** ः परिवदिल्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 । 06 । 01 से 1 । 06 । 11 पासुर 2954 से 2964 या 2730 से 2740ः

अक्षुण्ण आनंद को चाहने वाले छोड़ते नहीं। निर्मल प्रभु की गाथा गाओ एवं पूजा में फूल जल अगरबत्ती अर्पित करो। **2954 ।2730**

शीतल सुगंधित तुलसी वाले प्रभु वेद के प्रशंसित प्रभु हैं। पूरे मन से भक्ति ही आपकी सेवा के लिये योग्यता का काम करती है। **2955 ।2731**

प्रभु चाह एवं तिरस्कार से परे हैं। मेरा हृदय कभी आप से अलग नहीं होता, जीभ सर्व दा गाथा गान करती है एवं मेरा शरीर प्रेत की तरह नाचता है। **2956 ।2732**

प्रभु की सेवा एवं पूजा में मेरा शरीर प्रेत की तरह नाचता है जो सद्गुणों के कोषागार हैं एवं स्वर्गिक आपके लिये उतावले होकर व्याख्यान करते रहते हैं। **2957 ।2733**

प्रभु न तो आकर्षित होते हैं और न छोड़ते ही हैं। न घृणा एवं न तो मैत्री का प्रदर्शन करते हैं। संयम एवं दृढ़ पूजा से प्रसन्न रहने वाले भक्तों के अमृत हैं। **2958 ।2734**

प्रभु अमृत से भी मधुर हैं। आपने देवों को अमृत दिया। आप गहरे सागर में हाथ में तेजोमय चक्र के साथ शयन करते हैं। **2959 ।2735**

आपने लंका टापू के राजा के सिर एवं बाहों को काट गिराया। आपके आगे सिर नवा कर समय के अथाह सागर को तैर कर पार जाओ। **2960 ।2736**

हे भक्तों ! अपने को समर्पित कर दो। राह के जो रोड़े तुम्हारे कर्म हैं उनका क्षय हो जायेगा एवं तुम अक्षुण्ण श्रीसंपन्न बनोगे । **2961 ।2737**

युगल कर्मों को नष्ट कर आप ऊच्चतम फल देते हैं। महान सम्मानीय प्रभु लक्ष्मी के अलौकिक पति हैं। **2962 ।2738**

सुन्दर दूल्हा माधव पलक झपकते हमारे कर्मों को अलग कर देंगे। भयंकर गरूड आपके ध्वज के प्रतीक चिह्न हैं। **2963 ।2739**

शुद्ध हृदय के शडगोपन से विरचित निर्मल हजार पद का यह दशक सार्वभौम माधव के

बारे में है जो पुनर्जन्म से छुटकारा दिलाता है। **2964 ।2740**

पहले शतक का सातवां दशक ः **1 । 07** ः पिरवित्तियर

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1।07। 01 से 1।07।11 पासुर **2965** से **2975** या **2741** से **2751**ः

जो सबकुछ त्याग कर चेतन में प्रवेश करते हैं एवं प्रबुद्ध बनकर पुर्नजन्म की यातना से मुक्त रहना चाहते हैं वे अपने हृदयाकाश में सर्वदा चक्रधारी प्रभु के चरणारविंद पर ध्यान केन्द्रित रखते हैं। **2965 ।2741**

अनंत सद्‌गुण वाले प्रभु जो किसी व्यक्ति से एवं किसी स्थान पर नहीं पहुंचे जा सकते गोपकुल के लाड़ले कुमार हैं। आप भक्तों के औषध एवं संपन्नता हैं। भक्तों को सर्व नाश से बचाने के लिये आप इन्द्रियों की शक्ति को निरंकुश नहीं छोड़ते। **2966 ।2742**

अपने मृदुमय प्रभु का अमृत हमने जी भर के पिया है जो आश्‍चर्यमय प्रभु हैं, मणि के वर्ण वाले हैं, एवं गोपकुल के लाड़ले हैं परंतु मक्खन चुराने के लिये उनसे मार खा चुके हैं। पुनर्जन्म से जोड़ने वाला अज्ञान का धागा टूट चुका है। **2967 ।2743**

हम अपने पूज्य प्रभु को कैसे छोड़ सकते हैं ? अज्ञान को भगाकर आप हमारे हृदय में पूर्णतया प्रवेश कर गये हैं। सभी सर्वज्ञ स्वर्गिकों के आप मूल एवं कोष हैं। आपने हमें आत्म प्रकाश एवं गौरवशाली सद्‌गुण दिया है। **2968 ।2744**

गोपकिशोरियों के समक्ष एक छोटे शिशु के रूप में प्रकट होकर उनके साथ छेड़खानी करने वाले प्रभु हमारी आत्मा एवं ज्योति हैं। अब कैसे हम आपको छोड़ सकते हैं ? **2969 ।2745**

आपने प्रलय जल से धरा को ऊपर उठाया। क्या ही आश्‍चर्य कि आपने एक बाण से सात पेड़ों को बेध दिया। अपने मुकुट पर सुगंधित तुलसी धारण करने वाले प्रभु हमारे हृदय में बस गये हैं। क्या हम कभी भी आपको छोड़कर जाने देंगे ? **2970 ।2746**

अपने हृदय में हम आपको रोकना नहीं चाहते हैं। आप स्वयं आये और हममें पूरी तरह विराज गये। हमारे मॉस एवं सांस में आप पूर्णतया विलीन हो गये हैं। क्या हमें अब छोड़ने के लिये आप निर्णय लेंगे ? **2971 ।2747**

प्राचीन स्वर्गिकों के आप प्रथम कारण हैं। नप्पिनाय के बांस समान बाहों के साथ आलिंगन विहार में आप आनंद लेते हैं। अगर आप हमारा परित्याग करना चाहते हैं तो हमारा हृदय इतना अच्छा है कि हमें छोड़ कर जाने में आप असक्त हैं। **2972 ।2748**

देवों को अमृत देने वाले प्रभु गोपकुल के लाड़ले हैं। हमारी आत्मा ने हमारे प्राण को

आप में विलीन कर दिया है। फिर अलग होने का विचार कैसे उठा ? **2973 ।2749**
छोड़ देने पर हमारे प्रभु चले जाते हैं एवं रोकने पर ठहरते हैं। हमारे प्रभु को पाना कठिन है। हमारे प्रभु को पाना सरल है। हमलोग प्रभु की प्रशंसा करें एवं अनंत गाथा का गान करें। रात दिन आपके मिलन का आनंद उठायें। **2974 ।2750**
कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक मधुमक्खी लिपटे अमृतमयी तुलसी माला वाले प्रभु के बारे में है जो रोग एवं यातना का निदान प्रदान करते हैं। **2975 ।2751**

पहले शतक का आठवां दशक ः **1 । 08** ः ओडुम्बुळ

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।
1 ।08 ।01 से 1 ।08 ।11 पासुर 2976 से 2986 या 2752 से 2762ः
हमारे प्रभु शीतल तुलसी धारण करते हैं, गरूड़ की सवारी करते हैं, एवं शाश्वतों के साथ रहते हैं। **2976 ।2752**
यद्यपि सबों के नाथ हैं परंतु राजीवनयन कृष्ण के रूप में अवतार लेकर केशिन घोड़े का जबड़ा फाड़ा। **2977 ।2753**
स्वर्गिकों एवं मरणशीलों के आंखों के तारे होकर आप वेंकटम पर राज्य करते हैं जहां देव भी पूजा के लिये तरसते हैं। **2978 ।2754**
ऊंचे पर्वत को धारण कर खड़े रहने वाले प्रभु की हम सर्वदा प्रशस्ति गायेंगे जो आपके बड़प्पन का प्रमाण है। **2979 ।2755**
मक्खन चुराकर दोनों हाथ से खाने वाले प्रभु बिना संदेह हममें विलीन हो गये हैं। **2980 ।2756**
हमारी आत्मा में मिलकर आप हमारे लिये श्रेयस्कर हैं। मनमोहक किशोर के रूप में आपने धरा को मापा। **2981 ।2757**
आपने सात लोकों को निगला एवं सात वृषभों का शमन किया। आपका सुखद आवास हमारा चैतन्य है। **2982 ।2758**
हमारे स्नेह में गोपकुमार बनकर आये तथा मत्स्य एवं वराह भी। **2983 ।2759**
सभी स्वरूपों में आनेवाले हमारे प्रभु सुन्दर हाथों में चक्र एवं शंख धारण करते हैं। **2984 ।2760**
धरा को मापने वाले हमारे प्रभु सागर की लहरों की तरह वेदों से प्रशंसित हैं। **2985 ।2761**
शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक सागर सा सलोने प्रभु की गाथा गाता है।

2986 | 2762

<u>पहले शतक का नौवां दशकः **1 | 09** ः इवैयुम्अवैयुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

1 | 09 | 01 से 1 | 09 | 11 पासुर **2987** से **2997** या **2763** से **2773**ः

सर्वत्र के सभी वस्तुओं एवं प्राणियों के आप प्रथम कारण हैं। आप उन्हें अपने में रख लेते हैं एवं पुनः बनाते हैं तथा उनकी रक्षा करते हैं। हमारे प्रभु! हमारे अमृत! मधुर स्वादु! श्रीपति! हमारे पास आचुके हैं। **2987 | 2763**

हमारे केशव प्रभु अनेकों आश्चर्य के प्रभु हैं। आपने मदमत्त हाथी का वध किया, सूकर के रूप में धरा को उठाया। आप गहरे सागर में शयन करते हैं जो स्वर्गिकों के लिये भी रहस्य है। आप अब हमारे पास हैं। **2988 | 2764**

अनंत गौरव के निर्मल प्रभु ! स्वर्गिकों के प्रथम कारण ! श्यामल मणिवर्ण के अरूणाभ कमलनयन प्रभु! लक्ष्मी के अलौकिक पतिदेव ! भयानक पंखों वाले गरूड़ की सवारी में आप आनंद लेते हैं। मिलन का आनंद देते हुए आप हममें प्रवेश कर गये हैं। **2989 | 2765**

तीनों रानियां भू देवी, श्री देवी, एवं नीला देवी आपके साथ बैठने में आनंद लेती हैं। जगत जिस पर आपका राज्य है वे भी तीन हैं। सागर से भी ज्यादा आश्चर्यजनक प्रभु सबों को निगल कर एक शिशु के रूप में तैरते बटपत्र पर सो गये। जागकर अब आप हमारे गोद में आ गये हैं। **2990 | 2766**

अपनी ईच्छा से आश्चर्यमय प्रभु ने शिव इन्द्र ब्रह्मा तथा सभी देवों एवं समस्त जगत को बनाया। पूतना के विषैले स्तन पीने वाले आप हमारे लाड़ले शिशु कृष्ण हैं। जागकर अब आप हमारे वक्ष पर आ गये हैं। **2991 | 2767**

सभी के शरीर एवं प्राण, हमारे वक्ष के प्रभु, शुद्ध आकर्षक एवं छली हैं। वायु एवं अग्नि भी आप ही हैं। आप दूर भी एवं पास भी हैं तथा बुद्धि से आपको कोई नहीं समझ सकता। आप हमारे कंधों पर चढ़ गये हैं। इस आश्चर्य को कौन समझ सकता है ? **2992 | 2768**

आप आभापूर्ण ज्योति के प्रतीक हैं एवं आपकी प्रभा तुलना के परे है। कंधे, वक्षस्थल, मुकुट, तथा दिव्य चरणों पर आप तुलसी की गुंथी हुई माला पहनते हैं। दिनानुदिन प्रिय से प्रियतर होते हुए आप हमारी जीभ पर हैं। **2993 | 2769**

सबके ज्ञान में, एवं जीभ से प्रस्फुटित होने वाले कला में, आप शब्द एवं चेतन हैं। सुमन सा सुकोमल चतुर्भुज प्रभु, युद्ध विनाशक चक एवं शंख धारण करने वाले कमलनयन

प्रभु, अब हमारी आंखों में हैं। **2994 | 2770**
आपने कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा ललाट पर आंख वाले शिव को बनाया। आपने शुद्ध देवतागन तथा उनके समस्त लोक को बनाया। मैं कमलनयन प्रभु को अपनी आंखों में देखता हूँ और आप भी हमें स्पष्ट रूप से देखते हैं। आप हमारे ललाट में हैं। **2995 | 2771**
शशिभूषण शिव, चतुर्मुख ब्रह्मा, इन्द्र, एवं अन्य देवगन अपने अपने सिर प्रभु के चरणारविंद पर रखकर पूजा करते हैं। तुलसी की माला धारण किये कृष्ण मेरे ललाट से मेरी रक्षा करते हुए प्रभु अब मेरे सिर पर पधार गये हैं। **2996 | 2772**
कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक देवों के प्रभु कृष्ण को प्रेम से संबोधित करता है जो अपने चरणकमल सदा के लिये उन्हें प्रदान कर देंगे जो इसे आत्मीयता के साथ प्रभु के सामने गायेगें। **2997 | 2773**
<u>पहले शतक का दसवां दशक ः 1 | 10 ः पोरूमानीळ्पडै</u>
इसमें 11 पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।
1 | 10 | 01 से 1 | 10 | 11 पासुर 2998 से 3008 या 2774 से 2784ः
अपनी आंखों में मणि वर्ण के श्यामल प्रभु को युद्ध के लिये उद्धत तेजोमय चक्र एवं शंख को धारण किये देखा। उस समय आप वामन के रूप में आये और अपने महान चरणों से धरा को मापा। अहा कैसे आप विस्तृत होकर सातों लोकों से पूजे गये! **2998 | 2774**
हमारे प्रभु अपने को पृथ्वी आकाश वायु जल एवं अग्नि के रूप में प्रकट किये। जब भी मैं प्रेम से पूजा करता हूँ आप मेरी आंखों में प्रवेश कर जाते हैं एवं हमारे हृदय को भर देते हैं। इससे अधिक हमें क्या चाहिये ? **2999 | 2775**
हे हृदय ! शांत राजीवनयन प्रभु की पूजा करो। अपने वक्षस्थल पर आप पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करते हैं जिनका अधोभाग नागिन या पेड़ की डाली की तरह पतला है। आप हमारे पिता के नाथ हैं, उनके पिता के नाथ हैं, तथा उनके पहले के पूर्वजों के नाथ हैं। **3000 | 2776**
हमारे प्रभु राजकुमार हैं जिन्होंने पद्मश्री लक्ष्मी से व्याह किया। हे हृदय ! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तुम्हारी सहायता से हम क्या नहीं कर सकते ? अब हमारी कमी क्या है ? इस संक्रमण काल में प्रभु को दृढता से पकड़ लो। **3001 | 2777**
हे हृदय ! तुमने भी प्रभु को देखा है। आपने सात लोकों को निगल लिया तथा उन्हें तीन कदमों में माप दिया। बिना पंचायती के हमारे कृत्य अब फल देने लगे हैं।

3002 | 2778

हे हृदय ! मणिवर्ण वाले प्रभु सबकी माता पिता की तरह रक्षा करते हैं। देखो, जब तू एवं हम उनके सामने इस तरह से खड़े होंगे तो वे रोग को कभी भी प्रवेश नहीं करने देंगे। **3003 | 2779**

हे कितना पापी हूँ मैं ! मैंने प्रभु से प्रेम करने का दुस्साहस किया एवं आपको पिता से संबोधित किया जिन्हें स्वर्गिक गन ध्यान करते हुए सौभाग्य से पिता एवं नाथ कहते हैं। **3004 | 2780**

जब मैं 'श्री नारायण' शब्द सुनता हूँ हमारी आंखों से अश्रुधार झरते हैं और पूछता हूँ 'कहां ?' कितना आश्चर्य ! रात दिन लगातार आप मेरे साथ मित्रवत रहते हैं। **3005 | 2781**

तेजोमय प्रभु ऊपर के स्वर्गिकों के कारण हैं। स्वर्ण की तरह प्रदीप्त हो आप दक्षिण कुरूंगुडी में अपनी विशेष पहचान की तरह रहते हैं। ओह किन शब्दों से मैं आपको भूल सकता हूँ ? **3006 | 2782**

क्या स्मरण रखना चाहिये तथा क्या विस्मृत हो जाना चाहिए हमें नहीं पता है। और ऐसा न कि मैं भूल जाउं, आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये हैं। **3007 | 2783**

हजार पद का यह दशक कुरूगुर के शडगोपन द्वारा मणिवर्ण के अद्वितीय प्रभु की सेवा में समर्पित किये गये हैं। जो इसे याद करलेंगे वे शुद्ध ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। **3008 | 2784**

दूसरे शतक का पहला दशक ः **2 | 01** ः वायुमुतिरै

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 01 | 01 से **2 | 01 | 11** पासुर **3009** से **3019** या **2785** से **2795**ः

नायकीभाव मेंः

लवण घुले जल पर फुदकने वाली मछली खाने वाली हे श्वेत पक्षी ! यद्यपि कि हमारी मॉ एवं ईश्वरीय जगत सो रहे हैं तुम सोने नहीं गयी हो। क्या तुम भी मेरी तरह लक्ष्मी के दूल्हा प्रभु से तिरस्कृत होकर वेदनाग्रस्त एवं मुर्झाने के लिये छोड़ दी गयी हो ? **3009 | 2785**

हे दुखी पक्षी ! क्या तुम भी मेरी तरह प्रभु के जाल में पड़ गयी हो? देर रात जागकर एवं कर्कश चीख से पुकारती हुई क्या तू भी शेषशायी प्रभु के चरणों की शीतल तुलसी माला चाह रही है ? **3010 | 2786**

गर्जनभरी बहन सागर ! क्या तुम्हें नींद नहीं आती ? तुम रात दिन हृदय विदारक लहरों

से पुकारती रहती हो। दक्षिण लंका को जलाकर भस्म कर देने वाले प्रभु का मैं चरण चाहती थी। क्या तुम्हारी भी मेरी तरह वेदना है ? **3011 | 2787**

सागर पर्वत एवं आकाश से बहने वाली शीतल वायु ! मेरी तरह उज्जवल दिन या रात में तुम्हें चैन नहीं है। क्या युग युगान्तर से चक्रधारी प्रभु के दर्शन की प्रतीक्षा करती हुई वेदनाग्रस्त हो गयी हो ? **3012 | 2788**

जगत को जल देने वाले भाग्यशाली मेघ ! युग युगान्तर से मेरी एवं मेरी बहन की तरह तू भी पिघल रही है। क्या मधुसूदन के चक्रव्यूह में पड़कर तू प्रेमरोग से ग्रस्त हो गयी हो ? **3013 | 2789**

हे अर्द्धचंद्र ! आज तू अंधकार नहीं भगा रही हो। मेरी जैसी अभागिनी की तरह तू भी दिन दिन क्षीण होती जा रही है। शेषशायी चक्रधारी प्रभु की प्रतिज्ञा को क्या तूने सच मान ली थी ? **3014 | 2790**

हे बढ़ती हुई अंधकार ! अपने क्षीण हृदय को प्रभु के पास गंवाकर मैं अपने असह्य दुर्भाग्य पर रोती हूँ एवं शोकग्रस्त हूँ। हाय ! तू मेरे प्रवलतम शत्रु से भी अधिक कठोर हो। हो सकता है तू जीत जाओगी, कितनी देर तू मुझे प्रताड़ित करोगी ? **3015 | 2791**

पिघलती हुई अंधकार की तरह हे नमकीन जल प्रवाह ! यद्यपि कि रात एवं दिन का भी अंत होता है लेकिन तू कभी भी चैन से नहीं रहती। क्या विछुड़न की वेदना से तू ग्रस्त है ? क्या तू गाड़ी तोड़ने वाले प्रभु की कृपाकांक्षी बन गयी थी ? **3016 | 2792**

मेरी दुखी प्रिया शाश्वत ज्योति! प्रेमोन्माद के कारण तुम्हारा हृदय सूख रहा है एवं शरीर जल रहा है। क्या तू भी बड़े कमल जैसी आंखें एवं मूंगा जैसा होंठ वाले प्रभु की धारण की हुई तुलसी माला की चाहने वाली थी ? **3017 | 2793**

हे युवापूर्ण प्रभु ! आपने घोड़े के जबड़े को चीर दिया। अनेकों वृक्षों को वेध डाले एवं धरा को माप डाला। रात दिन की अनवरत प्रज्वलित प्रेमोन्माद की अग्नि से मेरी क्षीण आत्मा के अन्तः को जला डाला है और मुझे अपने चरणों पर डाल लिया है। विनती है, अब मेरा और अधिक तिरस्कार न करें। **3018 | 2794**

कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक महान प्रभु के बारे में है जो सबों के तेजोमय कारण हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी भी वैकुंठ से प्रस्थान नहीं करेंगे। **3019 | 2795**

दूसरे शतक का दूसरा दशक ः **2 | 02** ः तिण्णन वीडु

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 । 02 । 01 से 2 । 02 । 11 पासुर 3020 से 3030 या 2796 से 2806ः

स्वर्ग एवं अन्य सबकुछ देने वाले हमारे प्रभु ने धरा एवं आकाश को निगल लिया। आप समझ के परे हैं। आप हमारी आंखों की तरह प्रिय हमारे कृष्ण हैं। यह निश्चित है कि आप के अतिरिक्त कोई कर्ता नहीं है। **3020 । 2796**

स्वर्ग एवं अन्य सबकुछ देने वाले हमारे प्रभु ने धरा एवं आकाश को निगल लिया। आप समझ के परे हैं। आप हमारी आंखों की तरह प्रिय हमारे कृष्ण हैं। यह निश्चित है कि आप के अतिरिक्त कोई कर्ता नहीं है। **3021 । 2797**

वृषभारोही शिव़ पद्मयोनि ब्रह्मा पद्मश्री लक्ष्मी आपके शरीर पर साथ रहते हैं। देवगन आपकी पूजा करते हैं। आकाश में उठकर आपने धरा को ले लिया।आप से बड़ा कोई अन्य हो सकता है क्या ? **3022 । 2798**

प्रभु ने ब्रह्मा को अपने नाभि कमल पर उत्पन्न किया जिन्होंने आगे देवगन एवं विश्व के प्राणियों की सृष्टि की। हमारे कृष्ण के अतिरिक्त कोई अन्य फूल से पूजने योग्य है क्या ? **3023 । 2799**

राजीवनयन श्रीसंपन्न प्रभु ने स्वयं की इच्छा से उच्चस्थ देवों की तथा अन्य वस्तुओं एवं प्राणियों की रचना की। इनसे महान गौरव वाले कौन है जिसकी प्रशस्ति गायी जा सकती है ? **3024 । 2800**

सभी वस्तु सभी प्राणी एवं सभी लोक आप अपने भीतर बड़ी सरलता से रख लेते हैं। शाश्वत आभा से पूर्ण एक अलौकिक प्रतीक आप सागरशायी हैं।आप हमारे एकमात्र प्रभु हैं। **3025 । 2801**

हमारे प्रभु एक महान उदर वाले हैं। सात लोक को खा कर आप बटपत्र पर सो गये। क्या आपकी अपरिमित ईच्छा को हम समझ सकते हैं ? **3026 । 2802**

अपनी ईच्छा से आपने देवों एवं सब चीजों का निर्माण किया। आप तीन लोक को धारण करते हैं उनकी रक्षा करते हैं तथा अपने जैसा उन्हें शाश्वत बनाये हुये हैं। हमारे आश्चर्यमय प्रभु के अतिरिक्त कौन यह कर सकता है ? **3027 । 2803**

आपने ब्रह्मांड में अपने को मिलाकर विलीन कर दिया। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को आपने नाभिकमल से बनाया। आपने इन्द्र देवगन तथा सब लोक को बनाया। आप सर्वरक्षक हमारे प्रभु कृष्ण हैं।**3028 । 2804**

वृषभारोही शिव़ चतुर्मुख ब्रह्मा इन्द्र एवं अन्य सब देवगन पक्षी की सवारी करने वाले प्रभु की ओर देखते हैं तथा उनके चरण की पूजा करते हैं एवं कहते हैं

'कीड़ा करने वाले प्रभु ! आपने सात लोक बनाये एवं हमलोग सब आप में ही दिखते हैं।' **3029। 2805**

धरा को धारण करने वाले नर्तक प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक कुरूगुर शठगोपन के शब्दों में हैं।जो भक्ति से इसका पाठ करेंगे वे निष्काम हो जायेंगे। **3030। 2806**

दूसरे शतक का तीसरा दशक ः **2 । 03** ः ऊनिल्वाळ्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2।03।01 से **2।03।11** पासुर **3031** से **3041** या **2807** से **2817**

इस शरीर में बसने वाले प्राण ॐ अच्छा है तुम्हारे लिये। तुम्हारे कारण हम अपने प्रभु मधुसूदन में विलीन हो गये हैं जैसे दूध में मधु गन्ना का रस एवं घी। **3031।2807**

महान आश्चर्यमय प्रभु ! न तो कोई आपके समान है और न कोई आपसे अच्छा है।सभी वस्तुओं एवं प्राणियों से आप ही हमारे नजदीकी हैं। आप हमारे माता पिता एवं मित्र हैं। आप हमें वे सब पढ़ाते हैं जो हम नहीं जानते हैं।आपने कितना हमारे लिये कितना किया है हम कभी नहीं जान पायेंगे।**3032।2808**

हमारी अज्ञानता की अवधि माया के भ्रम में पड़ी हुई थी। आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये एवं भक्ति के लिये प्रेम का अंकुरारोपण किया। सरल चित्त शिशु की तरह आपने आकर पूछा 'महान बली ! तीन पग भूमि' एवं उसके साथ छल किया। **3033।2809**

हम पर महान कृपा कर आपने हमें अपने में मिला लिया एवं इसकी कृतज्ञता में हमने अपना हृदय आपको दे दिया। अब कैसे कभी इसे हम पुनः वापस पा सकेंगे ? सात लोक को निगलने वाले प्रभु ! आप हमारे हृदय में आत्मा हैं। मैं कौन हूँ ? मेरा क्या है ? आपने दिया एवं जो आपका था उसे ले लिया। **3034।2810**

बुद्धि के परे मधुर मुक्ति अमृत सागर से अछूते रहकर दयालु हृदय वालों के लिये आप सूकर रूप में आये एवं दाढ़ों पर धरा को उठा लिया। **3035।2811**

कर्म के लिये असाधारण औषध ! भक्ति की औषध ! ऋषियों के हृदय से अलग नहीं होने वाले ! ज्योति जो उनकी आत्मा को प्रकाशित करती है ! मैंने प्रभु को बहुत पहले पा लिया था। आपने शूर्पनखा की नाक काटी है। **3036।2812**

वाद्य यंत्र की ध्वनि ऋषियों को प्राप्त शुद्ध आनन्द गन्ना के रस अमृत श्यामल प्रभु ! हमारे कृष्ण ! आपके बिना हम कुछ नहीं हैं। विनती है आप हमें अपनी आवश्यकता के लिये उपयोग में लायें। **3037।2813**

युगों तक इन्द्रियों को संयमित रखते हुए जो तपस्या से प्राप्त होता है हम कुछ ही दिनों में

बच्च्वों के खेल की तरह पा गये। जीवन की यातना को पार करते हुए रस्सी के छींके पर रखे दूध एवं मक्खन चुराने वाले प्रभु के हम प्रेमी हो गये हैं। **3038 | 2814**

महान एवं शुद्ध हमारे कृष्ण स्वर्गिकों के एक मात्र प्रभु हैं। आप अमृतमयी शीतल तुलसी धारण करते हैं। आपके भलेपन के सागर में गहरे डुबकी लगाकर हमने छक कर पिया एवं आनन्द मनाया तथा अपने कर्मो को घास की तरह निकाल दिया। **3039 | 2815**

आप आभापूर्ण ज्योतिपुंज हैं। धरा एवं गगन आपका है। आप तेजोमय शंख एवं चक्र धारण करके हमारी रक्षा करते हैं। आनंद दुःख एवं चार तरह के दुर्गुण प्रस्थान कर गये हैं। कब हम आपके भक्तों की पंक्ति में बैठेंगे ? **3040 | 2816**

कुरूगुर शडगोपन से सुविरचित मधुर हजार पद का यह दशक लंका का गुस्सा से नाश करने वाले प्रभु के बारे में भावनापूर्ण शब्दों में बोले गये हैं। भक्तो पंक्ति में आंख मिला कर बैठो एवं हमारे साथ गाओ तथा नाचो। **3041 | 2817**

दूसरे शतक का चौथा दशक ः **2 | 04** ः आडियाडि

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 04 | 01 से 2 | 04 | 11 पासुर **3042 से 3052 या 2818 से 2828**ः

नायकी की मॉ की चिन्ता **1**

लगातार गाती एवं नाचती चमकते ललाट वाली यह किशोरी बोलती है 'नरसिंह' एवं चारो तरफ देखती है। आंसू बहाते हुए अचेत हो जाती है। **3042 | 2818**

आपके दर्शन की इच्छा से यह मेधावी किशोरी अचेत हो जा रही है। बाणा के बाहों को नष्ट करने वाले प्रभु ! ओह ! आप सच में हृदयहीन हैं। **3043 | 2819**

आप के लिये यह आग में मोम की तरह पिघल रही है। राक्षसों के गढ़ लंका का नाश करने वाले प्रभु ! आप अपनी दया को जागृत नहीं होने दे रहे हैं। हाय ! मैं क्या कर सकती हूँ ? **3044 | 2820**

इसकी सांस गर्म है। हृदय वेदनाग्रस्त है। आंसू के साथ हाथ जोड़ कर यह पुकारती है 'लंका के नष्टकर्ता' फिर धीरे से कहती है 'पक्षी की सवारी वाले'। **3045 | 2821**

रात दिन उन्मत्त की तरह बड़बड़ाती है। इसकी सुन्दर आंखें आंसू से भरी हैं। आप इसे अपनी तुलसी नहीं देते। हे महान प्रभु ! यह तो आपकी करूणा है ! **3046 | 2822**

'हे ! करूणानिधान' पुकारती है फिर धीरे से कहती है 'सर्वप्रिय प्रभु'। उसांसों के साथ 'हे ! मेरे आत्मामृत' कहती खड़ी होकर अश्रुमय हो जाती है। **3047 | 2823**

इसका हृदय सूख गया है इसकी आत्मा शुष्क हो गयी है। पुकारती है 'आंख की तरह प्रिय प्रभु !' फिर 'सागरशायी प्रभु'। हाय ! हमारी प्यारी कितनी छली गयी है !

3048 | 2824

'हे छलिया ! ' पुकारती है एवं फिर हाथ जोड़ लेती है। गर्म उसांसे लेती है तथा भारी मन से चिल्लाती है 'शक्तिशाली कंश के नाश करने वाले !' हाय ! आपके दर्शन के लिये कितना वेदनाग्रस्त है ! **3049 | 2825**

रात या दिन कब होता है यह नहीं जानती। कहती है 'ओस वाली तुलसी'। हे शक्तिशाली तेजोमय चक्र वाले प्रभु ! क्या होगा इसका ? **3050 | 2826**

यह बेचारी किशोरी रात दिन अश्रुपूरित आंखों से खड़ी रहती है। लंका के अपार धन को नष्ट करने वाले प्रभु ! कम से कम इस पर एक बार करूणा दष्टि तो डाल दीजिये।

3051 | 2827

उदार शडगोपन से गाये हुए हजार पद का यह दशक शाश्वत वामन प्रभु के चरणों की सुयोग्य माला है। **3052 | 2828**

<u>दूसरे शतक का पांचवां दशकः **2 | 05** ः अन्दामत्तन्बु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 05 | 01 से 2 | 05 | 11 पासुर 3053 से 3063 या 2829 से 2839ः

<u>नायकी का अर्न्तमन चित्रित है।</u>

हमारे प्रभु माला़ मुकुट़ शंख एवं चक्ऱ यज्ञोपवीत एवं हार धारण करते हैं। सुन्दर स्थान पर आपने हमसे प्रेम किया एवं हमारे प्राण में मिल गये। आपकी बड़ी आंखें कमल की पंखुड़ी की तरह है आपका मूंगा की तरह होंठ कमल फूल जैसी हैं आपका शरीर लाल सुवर्ण की तरह दीप्तमान है। **3053 | 2829**

कोई भी स्थान ऐसा नहीं था जो आपने स्पर्श न किया हो, इस तरह से आपने प्रेम किया। आपका वदन आभापूर्ण है एवं पद्म लक्ष्मी आपके वक्ष पर रहती है। ब्रह्मा नाभि कमल पर बैठते हैं तथा शिव भी एक कोने में रहते हैं। आपकी आंखें लाल कमल की तरह हैं एवं हाथ कमल फूल जैसे हैं। **3054 | 2830**

हमसे प्रेम करने वाले प्रभु का रूवरूप एक ज्योतिर्मय पर्वत की तरह है। आपका मूंगावत होंठ़, लाल आंख़, हाथ एवं चरण कमल की तरह हैं। सभी सात लोक आपके स्वरूप में समाहित हैं एवं इसके बाहर एक भी वस्तु नहीं है। **3055 | 2831**

प्रभु स्वयं सबकुछ हैं आपका स्वरूप एक वृहत मणि की तरह है। आपकी आंख चरण हाथ नूतन प्रस्फुटित कमल की तरह हैं। हमारे हमेशा अतृप्त रखने वाले अमृत़ हर क्षण, हर दिन, हर मास़, हर वर्ष़, हर युग, एवं युग युगांतर से नूतन फल के ताजे रस की तरह बहते रहते हैं। **3056 | 2832**

हमारे श्याम मणि के समान कृष्ण़ अमृत समान लंबी माला़ प्रदीप्त ऊंचा मुकुट़ जनेऊ एवं अनेकों सुन्दर आभूषण धारण करते हैं। हमारे जैसे तुच्छ से आपने प्रेम किया। लाल मूंगा आपके होंठ की बराबरी नहीं कर सकता और न तो कमल ही आपकी आंख हाथ एवं पैर की छटा को चुरा सकता है। **3057 ।2833**

हमारे प्रभु शेषशायी हैं। चलें हम आपकी रीति की गिनती करें ः आपके अनेक आभूषण ह़ैं, आपके अनेक नाम ह़ैं, आपके अनेक छटापूर्ण स्वरूप ह़ैं, उनकी संवेदनायें भी अनेक हैं। डेखऩे, खाऩे, स्पर्श करऩे, सुनने, एवं सुंघने से आप हमें आनंद प्रदान करते हैं। **3058 ।2834**

गुस्सैल वृषभ ! शीतल प्रस्फुटित तुलसी की माला वाले प्रभु मुकुट धारण करते हैं। आप फनधारी शेष पर क्षीर सागर में शयन करते हैं।बांस सी सुघड़ बाहों वाली नप्पिनाय को जीतने के लिये आपने सात वृषभों का अंत किया। आपने ओस टपकते सात वृक्षों को सीता के प्रेम के कारण वेध डाला। **3059 ।2835**

गुस्सैल वृषभ हमारे प्रभु अपने सुवर्ण मुकुट पर तुलसी की माला धारण करते हैं। आपकी चार सुन्दर बांहें हैं एवं अनगिनत सदगुण हैं। हमारी नीचता को विस्मृत कर आपने हमसे प्रेम किया।आपके वर्णन के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं। बताओ़ हम क्या बोलें ? **3060 ।2836**

अनंत श्रेय वाले हमारे अमृत ! आप मुक्ति के अनोखा आनंद हैं तथा सुगंधित कमल के समान मृदु हैं।श्याम मणि की छटा वाले प्रभु हमारी आत्मा के आरामगाह़ न नर हैं न मादा हैं। अहा ! कैसे हम आपके बारे में बोलें ? **3061 ।2837**

प्रभु न नर ह़ैं, न मादा ह़ैं, और न नपुंसक हैं। प्रभु देखे नहीं जा सकते । आपकी स्थिति नहीं ह़ै ऐसा भी नहीं है। आप वही स्वरूप धारण कर लेते हैं जिसमें आपको देखना चाहते हैं परंतु मात्र वही स्वरूप नहीं हैं। प्रभु का वर्णन एक अनोखी पहेली है। **3062 ।2838**

कुरूगुर शडगोपन से विरचित पूर्ण अन्दादि हजार पद का यह दशक गोपाल प्रभु की प्रशस्ति है जो वर्णनातीत हैं एवं पात्रों के साथ नृत्य करने वाले हैं। जो इसे याद कर लेंगे उन्हें वैकुंठ मिल जायेगा। **3063 ।2839**

दूसरे शतक का छठा दशक ः **2 । 06** ः वैगुन्दा

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 ।06 ।01 से 2 ।06 ।11 पासुर **3064** से **3074** या **2840** से **2850**ः

मणि समान रंग वाले वैकुंठ प्रभु ! मेरे शरारत पूर्ण सुन्दर वामन ! सब समय में सर्वदा

हमारे भीतर सुख से रहने वाले शाश्वत प्रभु ! भक्तों को राहत एवं असुरों को यातना देने वाले हे प्रस्फुटित कुन्द ! यह जान लीजिये कि हमने दृढ़ता से आपको अपने में रख लिया है। **3064।2840**

क्षण भर में सबको निगलजाने वाले राजीवनयन प्रभु ! समस्त विश्व को अपने में समाहित करने वाले हमारे भीतर प्रवेश कर गये हैं। प्रदीप्त ज्ञान के स्थिर प्रकाश शिखा आप हमारे भीतर बंद हमारे अमृत हैं। **3065।2841**

हमारे राजीवनयन प्रभु जो मृदु सुगंध की तुलसी फूल यानी तुलसी मंजर की माला पहनते हैं स्वर्गिकों से प्रशंसित सुवर्ण के पर्वत हैं। प्रशस्ति से हम आप तक पहुंच सकते हैं तथा गीत से आपकी पूजा कर सकते हैं। आप हमलोगों को ध्यान करके आनंद से नाचने देते हैं। आप कितने उदार हैं ! **3066।2842**

हमारे उदार प्रभु ! हमारे पिता ! हे पन्ना के पर्वत ! आपको सोच कर हम गाते हैं एवं आनन्द में नाचते हैं। आपकी धवल गौरव गाथा ने हमारे रोग को दूर कर दिया है। अब जब हमारी रक्षा हो गयी है हम कैसे आपको कभी भी जाने देंगे ? **3067।2843**

क्षीर सागर में फनवाले शेष पर सोने वाले प्रभु योगनिद्रा में रहते हैं। निरंतर आपको सोचकर हमने युगों के कर्म को नष्ट कर दिया है एवं अपने आपको बचा लिया है। अब जबकि हम आपकी सेवा में हैं क्या कभी भी आपको जाने देंगे ? **3068।2844**

हे हमारे स्फूर्त नरसिंह ! आपने दुष्ट विचार वाले हिरण्य की भारी छाती चीर कर अलग कर दी। आपकी प्रशस्ति करते हुए मैने अपनी ऊंची अवस्था वाला गीत गाकर इसके साथ नृत्य किया। अब हमारे युगपुराने कर्म जड़ से नष्ट हो गये हैं। मैं क्या नहीं कर सकता हूँ ? **3069।2845**

हमारे नियंत्रण के बाहर कौन सी वस्तु है ? सात लोक को निगलने वाले प्रभुने प्रसन्नचित्त हमारे नीच हृदय में प्रवेश किया और अब छोड़कर नहीं जाते। हमारे सारे सम्बंधी सात जन्म पीछे एवं सात जन्म आगे अंतहीन नरक की यातना से बच गये हैं। **3070।2846**

असुरों को खदेड़ते हुए गरूड़ की सवारी से धूल का बादल बनाने वाले प्रभु ! जन्म एवं मरण की अनगिनत आवृति से हमने आपका चरणकमल प्राप्त किया है। मेरा हृदय अब आश्वस्त है एवं आनंद की अंतहीन बाढ़ में नहाया है। विनती है हमसे आप अलग नहीं होंगे। **3071।2847**

शीतल वेंकटम पर्वत पर खड़े हमारे प्रभु लंका को नष्ट करने वाले हैं। आप ने एक महान बाण से सात वृक्षों का मूलोच्छेदन कर दिया। हमारे प्रभु स्वर्गिकों के नाथ हैं हमारे

अमृत हैं एवं शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। हमारे राजकुमार ! आप हममें मिल गये हैं अब कैसे जायेंगे ? **3072 | 2848**

शाश्वत गौरव के प्रभु तीन लोकों के महान प्रभु हैं। शीतल सुगंधित तुलसी के फूल यानी मंजर वाले प्रभु शीतल वेंकटम के स्वामी हैं। आप हमार पूर्व, वर्तमान, एवं भविष्य तथा पिता, माता, एवं प्राण हैं। अब जबकि हम आपको पा गये हैं क्या कभी आपको जाने देंगे ? **3073 | 2849**

राजीवनयन सुगंधित माला धारण करने वाले प्रभु की प्रशंसा में दक्षिण कुरूगुर नगर के मारन शडगोपन के ये सुविचारित हजार पद के दशक को जो गायेंगे वे केशव के भक्त हो जायेंगे। **3074 | 2850**

दूसरे शतक का सातवां दशक ः **2 | 07** ः केशवन्तमर्

इसमें **13** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 07 | 01 से 2 | 07 | 13 पासुर **3075 से 3087 या 2851 से 2863**ः

प्रभु कृष्ण के केशवादि बारह नाम

मेरे नाथ एवं प्रभु स्वर्गिकों के प्रभु मेरे राजीवनयन कृष्ण् मेरे मणिवर्ण नारायण ! 'केशव' नाम लेने से हमसे सात पीढ़ी आगे एवं सात पीढ़ी पीछे आपके भक्त हो गये हैं। क्या आश्चर्य ! क्या ही उपलब्धि ! **3075 | 2851**

वेदों से प्रशंसित 'नारायण' ही सभी लोक के नाथ हैं। मेरे नाथ ! आप ही कारण्, उपलब्धि, एवं कृत्य हैं। लक्ष्मी एवं सभी स्वर्गिक आपकी पूजा करते हैं। हाथी के दांत तोड़ने वाले माधव मेरे प्रभु हैं। **3076 | 2852**

'माधव' मात्र कहने से ही आप हमारे भीतर प्रवेश कर गये एवं बताया 'अबसे सदा के लिये हम यहीं रहेंगे तथा तुम्हारी रक्षा करेंगे।' पर्वत के रंग के राजीवनयन्, मेरे अमृत्, मेरे नाथ्, एवं मेरे गोविंद सभी अंतहीन कर्म को नाश करने वाले हैं। **3077 | 2853**

'गोविंद' गोपाल एवं अनेक ऐसे नाम के गाने एवं नृत्य करने से आपने हमें निर्मल करके अपनी सेवा में ले ली। चतुर नाथ विष्णु ने हमें पूर्व के दुष्कर्म से निवृत किया। तब आपने मुझमें संप्रति एवं सात जन्मों से प्रेम उत्पन्न किया। **3078 | 2854**

मेरे 'विष्णु' प्रभु तेजोमय मुकुट पहनते हैं। मधु के शत्रु हमारे प्रभु के चरणारविंद लाल हैं तथा हाथ एवं आंख आभा संपन्न हैं। सुन्दर पर्वत की तरह आपका श्याम स्वरूप आकर्षक है। हे मधुसूदन ! आपके शंख एवं चक्र चांद एवं सूर्य की तरह प्रदीप्त हैं। **3079 | 2855**

मैंने कहा 'मधुसूदन' हमारे एकमात्र आधार हैं एवं कृत्य से निवृत हो केवल गान एवं नृत्य

से पूजा की। सभी युग के अनेक जन्मों में आपने दर्शन देकर हम पर दया की। त्रिविक्रम प्रभु से हमें यही आशीष मिला। **3080 | 2856**

'त्रिविक्रम' एवं अन्य नाम का उच्चारण करने से हमने अरूणाभ राजीवनयन के मूंगा सा होंठ एवं आभापूर्ण वर्ण की कल्पना की। वामन स्वरूप वाले प्रभु ने हमारे अनगिनत जन्मों से चरणारविंद की सेवा एवं पूजा के लिये हमारे को हृदय को उत्प्रेरित किया। **3081 | 2857**

मणिवर्ण के प्रभु एवं काम के जनक ! 'वामन' एवं ऐसे अनेक नाम के गान से हमने आपकी पूजा की। आपने हमारे हृदय को निर्मल कर हमें जन्म की यातना से मुक्त की। हे मेरे श्रीधर ! हम आपके लिये क्या कर सकते हैं ? **3082 | 2858**

आंखों में आंसू एवं गर्म सांस के साथ हमने 'श्रीधर कमलनयन प्रभु' एवं ऐसे अनेक नाम से कीर्तन की। हमारे कर्मो के भंडार को समाप्त कर आपने हमें अपने आप को प्राप्त करा दिया। मेरे हृषीकेश ! तब आपने अपने को मेरे हृदय में सर्वदा के लिये स्थित कर दिया। **3083 | 2859**

हे हृदय ! सुबुद्धि से रह। सीखकर आपकी पूजा ठीक से कर। हृषीकेश का कीर्तन करो 'राक्षसों के लंका को जलाने वाले प्रभु मेरे नाथ एवं प्रभु स्वर्गिकों के नाथ़ पद्मनाभ' एवं ऐसे नामों से। प्रभु नहीं भी देंखें तो कभी कीर्तन बंद नहीं कर। **3084 | 2860**

अतिमहान पद्मनाभ उच्चतम से भी ऊंचा हैं। आप हमारे कल्पवृक्ष हैं। आपने हमें अपना बनाया तथा अपने को हमारा बना दिया। मेघ जैसे श्याम आप हमारे वेंकटम के अमृत हैं। हमारे प्रभु 'दामोदर' ऊंचे स्वर्गिकों के प्रभु हैं। **3085 | 2861**

जो दामोदर की पूजा करते हैं क्या वे आपकी महानता को जान सकते हैं ? आप जगत के प्रथम कारण तथा इसके निगल जाने वाले हैं। यद्यपि कि ब्रह्मा एवं शिव आपके एक अंश हैं क्या ये लोग भी आपका स्थिर ध्यान करके आपकी महानता को माप सकते हैं ? **3086 | 2862**

कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह गीतों के गुच्छा का दशक स्वर्गिकों के प्रभु मणिवर्ण वाले कृष्ण के बारह नामों का यशोगान है। जो इसे गा सकेंगे वे प्रभु के चरणों को पायेंगे। **3087 | 2863**

दूसरे शतक का आठवां दशक ঃ **2 | 08** ঃ अणैवदु

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 08 | 01 से 2 | 08 | 11 पासुर **3088** से **3098** या **2864** से **2874**ঃ

सभी वस्तुओं में विराजमान प्रभु पूर्णतया समान पद्मश्री लक्ष्मी के साथ शेषशय्या पर

शयन करते हैं। हमारे प्रभु शीतल तुलसी धारण करते हैं, गरूड़ की सवारी करते हैं, एवं शाश्वतों के साथ रहते हैं। **3088 । 2864**

शीतल तुलसी फूल यानी मंजर की माला पहनने वाले प्रभु आपदग्रस्त हाथी के रक्षक हैं। आपके साथ विलीन होना ही जन्म एवं अन्य यातना से मुक्ति है। **3089 । 2865**

आपकी नाभि से उत्पन्न कमल पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा आये एवं तब संहारक शिव आये। लक्ष्मी मर्यादित रूप से आपके वृक्ष पर बैठी हैं। आप क्षीर सागर में स्थित हैं। **3090 । 2866**

अगर पांच इन्द्रियों के क्षेत्र से बाहर निकलकर अक्षय श्रेय को प्राप्त करना है तो असुर समूह के संहारक प्रभु की गाथा गाना सीखो। **3091 । 2867**

देवों के नाथ पावन प्रभु जन्म की यातना से परे हैं एवं आप कच्छप मत्स्य तथा नर स्वरूप में आये। आप कल्कि की तरह भी आयेंगे। **3092 । 2868**

जब अर्जुन ने प्रभु के चरणों पर फूल अर्पित किया तो उन फूलों को उन्होंने शिव को अपने शिर पर धारण किये देखा। धरा को मापने वाले प्रभु की गाथा हमें अवश्य गानी है । **3093 । 2869**

शयन, बैठे, एवं खड़े अवस्था वाले प्रभु सूकर रूप में आये एवं आप सागर में गहरे जाकर भू देवी को अपने कंधे पर सुरक्षित लाये। आप विश्व को निगल कर पुनः उसे बाहर निकालते हैं। आपकी इस लीला को कौन समझ सकता है ? **3094 । 2870**

हमारे कृष्ण प्रभु को कौन कैसे समझ सकता है ? आपने संपूर्ण विश्व को एक कौर में निगल लिया। समस्त वस्तुओं एवं प्राणियों तथा आठ दिशाओं में आप सर्वत्र विराजमान हैं, यहां तक कि ऊंचे स्वर्ग में। **3095 । 2871**

जब किशोर युवक ने कहा कृष्ण सर्वत्र हैं तो पिता ने खंभे पर आघात करते हुए बोला 'यहां नहीं'। प्रभु उसी क्षण वहां भयानक नरसिंह रूप में प्रकट हुए एवं राजा का वध किया। क्या आश्चर्य ! **3096 । 2872**

स्वर्ग नरक एवं पृथ्वी मे व्याप्त सब के मूल एवं कारण आप ही हैं। आप ऊंचे आसन, देवगन, तथा मर्त्यों में व्याप्त हैं। **3097 । 2873**

मधुमक्खी मंड़राते बागों के वलुद के नायक के हजार गीतों का यह दशक राजीव नयन कृष्ण की गाथा है। जो इसे गा सकेंगे वे धरा एवं स्वर्ग पर शासन करेंगे। **3098 । 2874**

<u>दूसरे शतक का नौवां दशक : **2 । 09** : एम्मावीडु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 09 | 01 से 2 | 09 | 11 पासुर **3099 से 3109 या 2875 से 2885ः**

प्रभु ! आपने गजेन्द्र की आपदा का अंत किया। हम अपने लिये स्वर्ग नहीं मांगते हैं। शीघ्रता से आप अपने अरूणाभ चरणकमल को हमारे सिर पर रख दीजिये | **3099 | 2875**

श्याम आभा वाले प्रभु ! हम सर्वदा यही मांगते हैं कि हमें आपके चरणारविंद को पकडे रखने के लिये सम्यक ज्ञान दीजिये। **3100 | 2876**

चक्रधारी कृष्ण प्रभु ! आप हमें दुष्ट कर्मों से रक्षा करते हैं। सर्वदा आपके चरण की प्रशस्ति गाने का हमें सौभाग्य प्रदान कीजिये यहां तक कि उस समय भी जब कफ हमारे फेफड़ा को बन्द कर दे। **3101 | 2877**

हमारे हृदय में हमारे प्रभु यह कहते हुए स्थित हैं 'सर्वदा हमारी सेवा करो'। यह हमारे लिये सच में सौभाग्यपूर्ण है कि आपने मुझे अपना बना लिया है। **3102 | 2878**

हमें मुक्ति मिले या नहीं मरने के पश्चात् हम स्वर्ग जायें या नरक हम अजन्मा प्रभु को आनंद से स्मरण करेंगे जो धरा पर विभिन्न स्वरूपों में आये। **3103 | 2879**

स्वर्गिकों मर्त्यों एवं सभी वस्तुओं में धवल प्रस्फुटित आनन्द के रूप में स्थित रहने वाले प्रभु ! आइये जिससे कि हम मन वचन एवं कर्म से आपकी पूजा आनंदचित्त हो करें। **3104 | 2880**

प्रभु आप हमारे हृदय के लिये अतिशय प्रिय हैं। पर्याप्त रूप से आपने हमें अपने को प्राप्त नहीं कराया है। आइये जिससे कि हम आपके चरणारविंद से दृढ़ता से बंध जायें। **3105 | 2881**

वैदिक ऋषियों को आनंद देने वाले मधुर फल ! अगर आप हमारे नाथ होकर सदा के लिये हममें विलीन हो जायें तो हम और कुछ नहीं चाहेंगे। **3106 | 2882**

अपने वास्तविक स्वरूप को न जानते हुए मैंने सोचा हम स्वयं ही हैं। हे स्वर्गिकों से पूजित तेजोमय प्रभु ! हम एवं हमारा सबकुछ आपका है। **3107 | 2883**

सात वृषभों एवं सुन्दर लंका को नाश करने वाले प्रभु ! स्थायी रूप से अपने दिव्य चरणों से हमें जोड़ लीजिये अन्यथा मैं जीवित नहीं र हूँगा। **3108 | 2884**

कुरूगुर नगर के उत्सुक शडगोपन से विरचित अक्षय हजार पद का यह दशक अजेय चक्रधारी प्रभु की गाथा है जो गाने वाले को मुक्ति प्रदान करता है। **3109 | 2885**

दूसरे शतक का दसवां दशकः **2 | 10** ः किळरोळि

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

2 | 10 | 01 से 2 | 10 | 11 पासुर **3110 से 3120 या 2886 से 2896ः**

इसके पहले कि युवावस्था का रंग फीका पड़े उपजाऊबागों से घिरे तेजोमय प्रभु के मालिरूञ्शोलै मंदिर में बिना थके जाना श्रेयस्कर है | **3110 | 2886**

युवतियों के मधुर वचनों का तिरस्कार कर गर्जन करते चक्र के धारण करने वाले प्रभु का चांद को चूमते मालिरूञ्शोलै के मंदिर में पूजा करना श्रेयस्कर है | **3111 | 2887**

हे मन ! ये कर्म भी निरर्थक हैं। मनमोहक बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै पर्वत के मंदिर में जाओ जहां मेघ समान श्याम प्रभु गौरव के साथ स्थित हैं। **3112 | 2888**

पर्वत को उठाने वाले प्रभु मालिरूञ्शोलै में गौरव के साथ स्थित हैं जहां वर्षा का मेघ घुटने पर नीचे झुका रहता है। आप कर्म के धागे को तोड़ देते हैं, अतः वहां जाओ। **3113 | 2889**

बागों एवं मीठे पानी के सरोवरों से घिरे मालिरूञ्शोलै के चक्रधारी प्रभु अपनी इच्छाशक्ति से याताना का अंत कर देते हैं। उस पर्वत पर पहुचना ही हमारा एकमात्र कृत्य है। **3114 | 2890**

सोचो, नीच काम में मत लगे रहो। मक्खन चुराने वाले प्रभु क्रीड़ारत मृग के बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी पूजा के बारे में सोचना ही श्रेयस्कर होता है। **3115 | 2891**

ठीक से सोचो नरकगामी मत बनो। धरा को जल से उठाने वाले प्रभु शांत भाव से मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी पूजा ही श्रेयस्कर है। **3116 | 2892**

घूमते हुये जीवन बर्वाद करने से अच्छा है कि ठहरो एवं चरती गायों के पीछे घूमने वाले प्रभु की पूजा करो जो मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं एवं स्वर्गिक जन जिनकी पूजा करते हैं। **3117 | 2893**

श्रेय को देखो एवं दुष्टता में मत लिप्त हो। पूतना के स्तन को चूसने वाले प्रभु युवा हाथी के बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी वहां पूजा करना ही श्रेयस्कर है। **3118 | 2894**

श्रेय को देखो एवं आडंवर पूर्ण धूर्तता को त्याग दो। वेदों को प्रकट करने वाले प्रभु फूलों एवं मोर से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी पूजा के लिये प्रवेश करना ही श्रेयस्कर है। **3119 | 2895**

हजार पद का यह दशक कुरूगुर शडगोपन के शुद्ध हृदय का परामर्श है जो जगत के परम स्वतंत्र नियंता के बारे में है। जब अंत आता है तो यह प्रभु के चरण को निश्चित रूप से प्राप्त कराता है। **3120 | 2896**

<u>तीसरे शतक का पहला दशक ः **3 | 01** ः मुडिच्चोदि</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 | 01 | 01 से 3 | 01 | 11 पासुर 3121 से 3131 या 2897 से 2907ः

क्या आपके मुखड़े का लावण्य आपके मुकुट में प्रस्फुटित हुआ ? क्या आपका चरण का लावण्य आपके चरण के नीचे सिंहासन में पस्फुटित हुआ ? क्या आपके दिव्य वदन का लावण्य आपके वस्त्र एवं सारे आभूषणों में प्रकट हुआ ? बताइये प्रभु! **3121 | 2897**

कमल का फूल, आपकी आंख, आपके हाथ एवं चरण की समानता नहीं कर सकता। चमकाया हुआ सोना आपके मुखड़े की तुलना में नहीं आ सकता। आपके प्रति सारे लोकों के लिये की गयी सारी प्रशस्ति आपकी करूणा की प्रशस्ति के लिये शून्य है। **3122 | 2898**

उच्चतम ज्योतिर्मय प्रभु ! आपने ब्रह्मांड बनाया। आपके जैसा तेजोमय अन्य प्रभु हम नहीं पाते। अतः कोई वस्तु से आपकी तुलना नहीं किये जाने के कारण हम मूक रह जाते हैं। हे गोविन्दा ! मेरे प्रभु । **3123 | 2899**

यह जगत आपके वदन की दीप्ति को नहीं देख पाता। आपने लोगों का ध्यान बांट दिया जिससे वे घूमते रहते हैं एवं आप शीतल तुलसी के ध्यान में आनंदित रहते हैं। हे प्रभु ! क्या विश्व को इससे हानि नहीं हुई है ? **3124 | 2900**

भूत, वर्तमान, एवं भविष्य के स्वाभाविक तेज के प्रभु ! कठिनतम तपस्या से प्राप्त तेज से कहीं ज्यादा तेज वाले आप जगत की रक्षा करते हैं। कैसे मैं आपकी पूरी प्रशंसा कर सकता हूँ ? **3125 | 2901**

संसार जो शास्त्र या अन्य चीज पढ़ता है वे केवल आपकी आंशिक ही गाथा वाले हैं। तुलसी की मुकुट एवं कमल वक्ष वाले प्रभु ! कैसे अधिक से अधिक आपकी प्रशस्ति मैं गाउं ? **3126 | 2902**

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा एवं शिव को इच्छा से बनाने वाले प्रभु ! क्या होगा कितने भी आपके यश के गाने वाले हों वे सभी एवं सारे देवगन एकसाथ भी आपका यशगान करें तो आपका धवल यश का अंत नहीं पा सकते। **3127 | 2903**

स्वरूप का शुद्ध तेज वाले शाश्वत प्रभु ! पूर्ण ज्ञान वाले प्रभु ! हे पूर्ण आत्मा ! अगर स्वर्गिकों के स्वामी भी आपका यशगान करें तो आपके चरण कमल के तेज को भी पूरा नहीं गा सकते। **3128 | 2904**

हे प्रभु ! आप गरूड़ पक्षी पर आये एवं चक्र से भक्त हाथी की रक्षा की। अगर आपके सारे भक्त प्रबुद्ध हो जायें तो क्या वे आपके यशगान का अंत पा सकेंगे ?

3129 | 2905

वेद से प्रशंसित तेजोमय पद्म प्रभु ! आपने धरा को बनाया, खाया, पुनः बनाया, उठाया, एवं मापा। अगर शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र खड़े हों तथा आपकी पूजा करें तो क्या आपके आश्चर्य कभी समाप्त होंगे ? **3130 | 2906**

ईश्वरीय लोगों के रहने वाले कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक वेदों से प्रशंसित विस्मयकारी प्रभु का यशगान करता है। जो इसे गा सकेंगे वे जन्म के बंधन को काटकर स्वर्ग जायेंगे। **3131 | 2907**

<u>तीसरे शतक का दूसरा दशक : **3 | 02** : मुन्नीरज्ञालम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 | 02 | 01 से 3 | 02 | 11 पासुर 3132 से 3142 या 2908 से 2918:

मेघ समान श्यामल प्रभु ! आपने धरा एवं सागर बनाया। आपने जो यह शरीर दिया है यातनाग्रस्त होकर समय काट रहा है। कब मैं कर्म को मूल से काट सकूंगा एवं इस क्षुद्र शरीर को त्याग कर आपसे मिल सकूंगा ? **3132 | 2908**

विस्तृत धरा को मापने वाले वामन प्रभु ! माया से जकड़े जाकर हम अनगिनत जन्म से गुजर चुके।अंतहीन कर्म जो हमारी पीछा नहीं छोड़ता कब इसे हम काट कर आपके प्रिय चरणारविंद को पा सकेंगे ? **3133 | 2909**

युद्धक्षेत्र में रथ चलाकर दुष्टों को भारत युद्ध में मृत्यदंड देने वाले प्रभु ! विनती है बताइये कि हम कैसे अधम मार्ग को त्यागकर आपके चरणारविंद से जुड़ सकें ? **3134 | 2910**

बिना क्षय एवं वृद्धि के सर्वव्याप्त अनंत प्रभा के प्रभु ! विनती है बताइये कि हम कैसे अधम मार्ग को त्याग कर आपके चरणारविंद से जुड़ सकें ? **3135 | 2911**

काया फूल के रंग वाले प्रभु ! आप का आगमन हम अनुभव करते हैं परंतु आप ठहरते नहीं हैं। अगर आप ठहर कर हमें शक्ति नहीं देंगे तो कैसे हम आप से जुड़ सकेंगे ? **3136 | 2912**

सम्यक चयन करने की बुद्धि से रहित हम क्षुद्र भौतिक सुख में लगे रहे। प्रभु ! आपने अनगिनत आत्मा को बनाया है।कब हम आपके दिव्य चरण को पा सकेंगे ? **3137 | 2913**

हे मेरा हृदय ! ज्ञान के अभाव में हम कर्मजनित जन्म की यातना में रहे। कब हम ज्ञानमय कृष्ण प्रभु से जुड़ सकेंगे जो सबों में सर्वदा विराजते हैं ? **3138 | 2914**

हे मेरे प्रभु कृष्ण हमारे शाश्वत गौरव की बाढ़ ! हाय न तो हमने अधम कर्म को रोका

और न अनवरत आपके चरणारविंद की पूजा की। मैं आपको पुकारता हूँ 'कृष्ण' ! कहां आपका दर्शन मिलेगा ? **3139 । 2915**

खड़े होकर कर्म की गह्वर से आपको पुकारता हूँ परंतु क्षुद्र मार्ग में फंस जाता हूँ। हमारे प्रभु ने गायों पर कृपा की एवं धरा पर घूमे। ओह ! कहां हम आपको खोजे ? **3140 । 2916**

यातना की घनी छाया से हम ऐसे ग्रस्त थे मानो यमराज ने अपने पाश में हमें बांध रखा था परंतु कृष्ण के हृदय मे रहने के कारण ये सब अब समाप्त हो गये। आप ज्ञान एवं शाश्वत जीवन के प्रभु हैं। **3141 । 2917**

समस्त लोक एवं आत्मा को अपने में रखने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक मीठे कंठ के कोयल से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के शब्दों में हैं। जो इसका पाठ करेंगे वे आत्मा को मांस के देह से मुक्त कर लेंगे। **3142 । 2918**

<u>तीसरे शतक का तीसरा दशकः **3 । 03**ः ओऴिविल्कालम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 । 03 । 01 से **3 । 03 । 11** पासुर **3143** से **3153** या **2919** से **2929**ः

<u>वेंकटम के प्रभु की सेवा</u>

हमें जल के झरनों वाले वेंकटम गिरि के तेजोमय प्रभु की निष्ठा से प्रत्येक समय एवं सर्व दा पार्श्व भाग में रहकर सेवा अवश्य करनी है। आप हमारे पिता के पिता हैं। **3143 । 2919**

मेघ जैसे श्याम एवं शाश्वत यश वाले वेंकटम गिरि के प्रभु की फूल से सेवा इन्द्र एवं अन्य स्वर्गिकजन करते हैं। **3144 । 2920**

शीतल झरनों वाले अनंत यश के वेंकटम गिरि के प्रभु की सुन्दर कमल सी आंखें हैं़ वदन मणि के रंग का है़ एवं होंठ मूंगा जैसे हैं। **3145 । 2921**

आपकी गाथा का गान मुझ जैसा नीच एवं मूर्ख के लिये उचित है क्या ? तद्यपि हमें आपका प्रेम प्राप्त है। **3146 । 2922**

गौरवपूर्ण वेंकटम प्रभु वेद के अमृत हैं। सबों के प्रथम कारण हैं। क्या आपका यशगान करना संभव है ? **3147 । 2923**

जो केवल वचन से ही आपकी सेवा करते हैं वे पूर्व तथा भविष्य के कर्म से मुक्त हो जाते हैं। **3148 । 2924**

श्याम वेंकटम प्रभु की पूजा इन्द्र एवं स्वर्गिकगन फूल़ अगरबत्ती़ दीप़ एवं जल से करते हैं। आप शांत मुक्ति देते हैं। **3149 । 2925**

वर्षा रोकने वाले एवं धरा को मापने वाले प्रभु वेंकटम में निवास करते हैं। आपकी पूजा से हमारे कर्म का क्षय होता है। **3150 । 2926**

जो अपने प्रत्येक कर्म में गोपकुमार वेंकटम प्रभु के चरणारविंद का स्मरण करते हैं उनके चारों यातना का अंत हो जाता है। **3151 । 2927**

इसके पहले कि तुम्हारा सीमित जीवन का अंत हो जाये एवं बुढ़ापा अशक्त बना दे फनधारी शेषशायी वेंकटम प्रभु के चरणारविंद को पकड़ो। **3152 । 2928**

पृथ्वी को मापने वाले प्रभु के यशगान में कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक का गान सबों से प्रशंसा का पात्र बना देता है। **3153 । 2929**

तीसरे शतक का चौथा दशकः **3 । 04** ः पुगऴनलओरूवन्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 । 04 । 01 से 3 । 04 । 11 पासुर 3154 से 3164 या 2930 से 2940ः

अपने कृष्ण को हम कैसे संबोधित करें ? पूजा के सुयोग्य ? अद्वितीय पृथ्वी या विस्तृत शीतल सागर ? अग्नि हवा एवं फैला हुआ आकाश ? सूर्य़ चांद या सर्वव्याप्त सार्वभौम ! **3154 । 2930**

हमें नहीं पता पूजा के सुयोग्य कृष्ण को हम कैसे संबोधित करें ? अनेकों पर्वत से़ अच्छी वर्षा से़ धवल तारा से़ या कवितावली से ? **3155 । 2931**

या हम आपको निर्मल मणि समान राजीवनयन कहें या मूंगा जैसे होंठ वाले़ या दिव्य चरण वाले प्रभु या श्यामल वर्ण के लाल प्रदीप्त मुकुट वाले़ या चक्र शंख धारी या वक्ष पर लक्ष्मी वाला कहें ? **3156 । 2932**

जब सर्वत्र शून्य था हमारे निर्मल प्रभु विराजमान थे। क्या हम आपको निर्मल मणि कहें या चमकते सोना एवं मोती या उज्जवल हीरा या शाश्वत यश का दीप या प्रदीप्त प्रथम कारण तथा प्रथम प्राणि कहें ? **3157 । 2933**

क्या हम आपको निर्दोष महान प्रभु अच्युत कहें या अमृत सागर तथा भक्तों के दुख की औषधि या मधुर मिश्री या छःरस वाले भोज्य पदार्थ या मधुर दूध़ मक्खऩ फल़ या मधु कहें ? **3158 । 2934**

क्या हम अपने कृष्ण को आश्चर्यमय देव कहें या स्वर्गिकों के प्रभु कहें या दूध या चारो वेद का सार कहें या शास्त्र का सत्य कहें या उपनिषद का गीत या महान कर्म के फल कहें या इन सबों से अधिक कहें ? **3159 । 2935**

क्या हम आपको मणि समान तेजोमय प्रभु कहें या स्वर्गिकों के प्रभु कहें या उनके उत्सुक आनन्द कहें या उनके साध्य या अक्षय निधि कहें या शाश्वत स्वर्ग या कालातीत मुक्ति

कहें ? **3160 | 2936**

क्या हम अपने कृष्ण को अलौकिक तेज का मणि कहें या शशिभूषण शिव या चतुरानन ब्रह्मा या उनलोगों द्वारा पूजित प्रभु कहें या जिसने उनलोगों को बनाया वह प्रभु कहें ? गौरव एवं आनंद के प्रभु अमृतमयी तुलसी माला पहनते हैं। **3161 | 2937**

हमारे प्रभु सब चीजों में हैं, एवं सभी प्राणियों में हैं, तथा समझ के परे हैं। आप कृष्ण हैं जिन्होंने खेल की तरह सब को निगला एवं सबको फिर से बनाया। आपने सागर से अमृत मथकर देवों को दे दिया। आप शेषशायी अच्युत अनंत एवं गोविंद हैं। **3162 | 2938**

आप इन्द्रियों से परे चेतनराशि हैं। सभी वस्तुओं एवं प्राणियों के सर्वत्र तथा सर्वदा आप ही स्वरूप हैं तब भी सबों से पृथक हैं। अगर कोई अपने को निःस्पृह बनाले तो वह आप तक जा सकता है। **3163 | 2939**

तुलसी की माला वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये मधुर हजार पदों वाली रचना का यह दशक बागों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के हैं।जो इसको याद करलेंगे वे मुक्तात्मा होकर स्वर्गिकों की संगत में रहेंगे। **3164 | 2940**

<u>तीसरे शतक का पाचवां दशकः **3 | 05** ः पुगऴनल्ओरूवन्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 | 05 | 01 से **3 | 05 | 11** पासुर **3165** से **3175** या **2941** से **2951**ः

विनती है, हे सागर से घिरे धरा के लोगों ! बताओ वे किस काम के हैं जो कमल सरोवर में ग्राह के जबड़े से हाथी की रक्षा करने वाले श्याम वदन प्रभु का न तो यशगान करते और न साथ में नाचते ? **3165 | 2941**

नर मांस भक्षक असुरों को पीड़ा देने वाले प्रभु का जो अपने गले की ऊंची आवाज में यशगान करते हुए आनन्दातिरेक में नाचता नहीं वह कर्मजनित जन्म की यातना से छूट नहीं सकता। **3166 | 2942**

जो पर्वत से तूफान को रोकने वाले प्रभु का यशगान करते नाच कर अपने सिर को पृथ्वी पर बार बार स्पर्श नहीं कराते वे अवश्य हीं तूफानग्रस्त नरक में जायेंगे। **3167 | 2943**

नप्पिनाय के प्रेम में सात वृषभों को नष्ट करने वाले मूंगा जैसे होंठ के श्रीधर प्रभु का यशोगान करो। अपने हाथ को सिर पर रख के नाचो जिससे कि प्रभु के गौरव की हवा लग सके नहीं तो संत जनों के बीच जन्म का क्या लाभ ? **3168 | 2944**

वेद के प्रभु दिव्य वैकुंठ को छोड़कर मर्त्य लोक में कंस के अत्याचार से निर्दोष लोगों को

बचाने के लिये नरदेह में पधारे। वीथियों में प्रभु का यशगान करते हुए नाचने के सिवा विद्वानों को सीखने के लिये क्या बचा रहता है ? क्या वे नर कहा सकते हैं! **3169 | 2945**

अजन्मा प्रभु जो अवतार लेते हैं सागर में शयन करने वाले हैं। आप फल, अमृत, शक्कर, एवं शहद के समान मधुर हैं, एवं हमारे अमृत हैं। आप चेतन जड़ एवं सभी कुछ हैं। जो गीत एवं नृत्य के साथ आपकी प्रशस्ति गाते हैं वे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं। **3170 | 2946**

तेजोमय प्रभु ने वैमनस्य की भावना से ग्रस्त सौ जनों के विरूद्ध भयानक सेना से आक्रमण कर पांच जनों को विजय दिलायी। इस भले संसार में बाहों को मांसल बनाये रहने वाले लोगों से क्या लाभ अगर वे प्रभुगाथा गान के साथ हृदय को द्रवित करते हुए आनंद में नाचते नहीं ? **3171 | 2947**

शीतल जल के झरने वाले वेंकटम में प्रभु स्थित हैं। गांव या नगर कहीं भी आपके नाम उतावले होकर अनवरत उन्मादग्रस्त जैसा गाओ।लोगों को उपहास करने दो। आनन्दातिरेक में कूदते हुए गाओ स्वर्गिक तुम्हारी पूजा करेंगे। **3172 | 2948**

स्वर्गिकों से पूजे जाने वाले प्रभु समस्त सृष्टि के नाथ हैं। जो योग से तप साधना करते हैं वे आपको सर्वदा अपने हृदय में पाते हैं। अन्य लोगों के लिये आपका यशगान एवं नृत्य ही कर्म यानी कृत्य है। **3173 | 2949**

मणि वर्ण एवं राजीव नयन स्वर्गिकों के प्रभु ही कर्म हैं, फल हैं, तथा कारण हैं। अपने को भीतर में द्रवित करते हुए हृदय से गाओ एवं नाचो।अपना अभिमान एवं लाज छोड़कर उन्मत्त की भांति प्रभु की प्रशस्ति गाओ। **3174 | 2950**

उपजाऊक्षेत्र के कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक अच्युत प्रभु की प्रशस्ति है जो भक्त की भूल सुधारकर उसे अपनाते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे अपने घोर कर्म पर विजय पायेंगे। **3175 | 2951**

<u>तीसरे शतक का छठा दशक ः **3 | 06** ः शेय्यतामरै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 | 06 | 01 से **3 | 06 | 11** पासुर **3176** से **3186** या **2952** से **2962**ः

ब्रह्मांड के निगलने वाले राजीव नयन प्रभु के बारे में सुनिये। आप प्रभापूर्ण ज्ञान हो गये एवं उसके माध्यम से धरा आकाश आदमी देवगन एवं अन्य सबों की सृष्टि की। और तब आप तीनमुख वाले यानी दत्तात्रेय के प्रभापूर्ण प्रभु हो गये। **3176 | 2952**

कर्म से उद्धार करने वाले कमलनयन प्रभु की प्रशस्ति गाओ। स्वर्गिकों से पूजित आप

गहरे सागर में रहते हैं। आप शिव ब्रह्मा इन्द्र के प्रभु हैं एवं हमारे कर्म का क्षय करते हैं। आपने महान धनुष से लंका को धूल में मिला दिया। **3177** । **2953**
मणि वर्ण के प्रभु गहरे सागर में शेष शय्या पर शयन करते हैं। आपकी अहोरात्र प्रशस्ति में हृदय को दृढ़ता से लगाओ। स्वर्गिकों से पूजित आप तेजोमय प्रभु हैं। आप पात्र पर सुन्दर नृत्य करते हैं जो गोपियों के साथ रास रचाये। **3178** । **2954**
जब महान इन्द्र स्वयं तथा ब्रह्मा शिव आपके चरणारविंद का ध्यान करते भ्रमण करते हैं तो हमारे जैसा प्राणी प्रभु की करूणा के बारे में क्या बतायेगा। जैसा भी हो। **3179** । **2955**
श्याम रंग कमल नयन काली लटें एवं प्रदीप्त मुकुट के हमारे कृष्ण बहती हवा हैं आकाश हैं एवं कड़ी धरती हैं। आप लहरों वाले उछलते सागर हैं जलती अग्नि हैं तथा ज्योति पुंज यानी सूर्य चांद तथा देवगन हैं। देवों के प्रभु ही सर्वत्र मर्त्यजन तथा सभी वस्तु हैं। **3180** । **2956**
सात जन्मों से हमारे अन्य कोई नहीं एकमात्र कृष्ण हैं। आप हमारे घ्राणशक्ति स्वरूप स्वाद आवाज़ एवं स्पर्श हैं। अजन्मा, अमर्त्य हमारे प्रभुने विशाल नरसिंह रूप में आकर शिशु भक्त प्रह्लाद को चरणों में शरण दिया। **3181** । **2957**
सात जन्मों से आप मेरे हृदय के अमृत मेरी आत्मा के सखा मेरीप्रदीप्त ज्योति मेरे श्याम मणि हैं। हे मेरे पात्र नर्तक ! आप स्वर्गिकों एवं ऋषियों को आनन्दित करने वाले फल हैं। शुद्ध हृदय से प्रभु की पूजा करने से सारे कष्ट शीघ्र ही लुप्त हो जायेंगे। **3182** । **2958**
आप दुख सुख के दुष्ट कर्म हैं तथा उससे ऊपर भी हैं। आप तेजोमय प्रभु के रूप में ऊपर खड़ा होते हैं तथा सभी लोक को बनाते हैं और निगल जाते हैं। यमदूतों के विरूद्ध आप प्रभावकारी औषध हैं। आप दशरथ के पुत्र के रूप में आये और आपके सिवा हमारा कोई आश्रय नहीं है। **3183** । **2959**
आभामय देवों के प्रभु इन्द्र ब्रह्मा शिव से पूजित आप ही पिता माता तथा आत्मा हैं तथा सबसे पृथक भी हैं। हे लोगों ! भय एवं भ्रम से 'इस' और 'उस' देवता के चक्कर में मत पड़ो। मेरे श्यामल प्रभु उसी स्वरूप में दिखते हैं जो हृदय की चाह रहती है। **3184** । **2960**
सागर सा सलोने कृष्ण स्वर्गिकों के श्याम मणि हमारी अपनी आत्मा फनधारी शेष पर शयन करने वाले तेजोमय प्रभु हैं। सौ के विरूद्ध पांच की लड़ाई में आपने रथ हांकने का काम किया। ओह ! कब हमारी आंखें आपके विजयी चरण का दर्शन पायेंगी ?

3185 । 2961
मधुर बागों के वालुदी क्षेत्र के कुरूगुर के शडगोपन से विरचित पन्न आधारित हजार पद का यह दशक अदृश्यमान प्रभु की प्रशस्ति है जो हृदय के प्रिय हैं। हे लोगों ! इसे यादकर भक्त बनो। **3186 । 2962**
<u>तीसरे शतक का सातवां दशक : **3 । 07** : पयिलुम्शुडरोळि</u>
इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।
3 । 07 । 01 से 3 । 07 । 11 पासुर 3187 से 3197 या 2963 से 2973:
हृदय के अतिप्रिय कमलनयन तेजोमय प्रभु क्षीरसागर में शयन करते हैं। सुनिये ! जो भी आपकी पूजा करते हैं वे कोई भी हों हमारे सात जन्म से स्वामी हैं। **3187 । 2963**
मणिवर्ण के चक्रधारी प्रभु हमारे नाथ की चार शक्तिशाली भुजायें हैं। सुनिये! जो भी आपके चरणकमल की पूजा अपने हाथों से करते हैं वे हमारे सर्वदा के लिये स्वामी हैं। **3188 । 2964**
तुलसी की माला एवं दिव्य चक्र धारण करने वाले प्रभु स्वर्गिकों एवं मर्त्यों के नाथ हैं। सुनिये! जो आपके भक्तों की सेवा करते हैंवे हमारे हर सौभाग्यशाली जीवन के नाथ हैं। **3189 । 2965**
हमारे प्रभु गले का हार, कमरबंद, दिव्य जनेऊ, सुनहला मुकुट, तथा अनेकों आभूषण धारण करते हैं। सुनिये! जो आपके भक्तों के सेवकों की सेवा करते हैं वे हमारे हर जीवन के नाथ हैं। **3190 । 2966**
हमारे प्रभु स्वर्गिकों की सहायता के लिये आये एवं उन्हें क्षीर सागर से अमृत दिया। सुनिये! जो आपकी प्रशस्ति गानों वालों की प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे इस जीवन तथा सारे जीवन के नाथ हैं। **3191 । 2967**
मणिवर्ण एवं अमृतमयी तुलसी तथा हाथ में चक्रधारण करने वाले हमारे तेजोमय प्रभु सबकी रक्षा करते हैं। सुनिये! जो आपको अपने हृदय में रखते हैं वे हमारे समस्त जीवन के नाथ हैं। **3192 । 2968**
आप भक्तों की सहायता के लिये एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में आते हैं। आप अपना स्वभाव देकर उन्हें अपने चरणों में शरण देते हैं। सुनिये! जो आपके शाश्वत गौरव की गाथा गाते हैं वे हमारे सदा के लिये विश्वासी नाथ हैं। **3193 । 2969**
विश्वासी प्रभु जो लक्ष्मी एवं जगत स्रष्टा ब्रह्मा को धारण करते हैं स्वर्गिकों के लिये भी अगम्य है। सुनिये! अगर कोई कुंभी नरक से भी आपकी प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे हरेक जीवन के नाथ हैं। **3194 । 2970**

नीची जाति का अगर कोई चांडाल में भी अधम चांडाल हमारे चक्रधारी प्रभु के भक्त हों तो उनके सेवक का सेवक हमारे नाथ होंगे। **3195 । 2971**

धरा को निगल कर हमारे प्रभु एक शिशु की तरह बाढ़ के तैरते बट पत्र पर सो गये। आपके भक्त के सेवक का सेवक भी हमारे नाथ होंगे। **3196 । 2972**

कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक सौ के विरोध में पांच जनों की सहायता करने वाले प्रभु के भक्तों की प्रशस्ति है। जो इसे गा सकेंगे वे अपने कर्म के जीवन का अंत कर लेंगे। **3197 । 2973**

<u>तीसरे शतक का आठवां दशक ः **3 । 08** ः मुडियाने</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3 । 08 । 01 से 3 । 08 । 11 पासुर 3198 से 3208 या 2974 से 2984ः

स्वर्गिकों से ऊंचे प्रभु ! आपने सागर मथा। पर्वत के रंगवाले प्रभु ! आपका गरूड़ चिह्नित ध्वज है। आपके चरणारविंद तीनों जगत में पूजे जाते हैं। मेरा हृदय आपही के लिये उतावला है। **3198 ।2974**

हमारे हृदय के किला में रहने वाले मेरे आश्रय ! लंकेश के वध करने वाले प्रभु ! वामन के रूप में आकर धरा के लेने वाले प्रभु ! हमारी जीभ अनवरत आपकी प्रशंसा करती है। **3199 ।2975**

इस जीभ को शब्द प्रदान करने वाले स्वर्गिकों के प्रभु! गोपवंश के रक्षक प्रभु ! गोपी के घर से मक्खन चुराकर आपने खाया एवं अर्द्धाकार चांद सी मुस्कान का प्रदर्शन किया। **3200 ।2976**

शेषशय्या पर शयन करने वाले प्रभु ! बिना रूके हम दोनों हाथों से आपकी पूजा करते हैं। हमारी आंख आपके दर्शन एवं उसको अपनी दष्टि में सदा बनाये रखने को उत्सुक रहती है। **3201 ।2977**

उत्सुक नयनों की ईष्या में हमारे कान गरूड़ पंख की आवाज सुनने को तड़पते हैं। क्या धरा के स्वामी वामन को वे यहां लायेंगे ! **3202 ।2978**

दिव्य चक्र धारण करने वाले प्रभु! जबकि हमारे कान संगीत के रस से सरोबोर आपकी प्रशस्ति गीत को सुन रहे हैं मेरा हृदय आपके सहवास के लिये उत्सुक हो रहा है। **3203 ।2979**

हमारे हृदय के अमृत् हमारे नाथ! अपने वेदनाग्रस्त हृदय से हम आपको सदा बुलाते हैं। तेजोमय चक्र धारण करने वाले प्रभु! गरूड़ पर सवार हो आप आइये। हाय दुष्ट मैं ! आप अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन नहीं देते। **3204 ।2980**

सुन्दर कमल सी आंखों एवं काजल के समान काले रंग वाले प्रभु ! हे हमारे हृदय को तोड़ने वाले श्रेयवान प्रभु ! भूत वर्तमान एवं भविष्य को धारण करने वाले प्रभु ! कब हम आपको जी भर कर देखेंगे । **3205 । 2981**

तीन पग मांगकर सारी धरा को ले लेने वाले छलिया प्रभु ! कंस का नाश करने वाले तथा गरूड़ पर सवारी करने वाले प्रभु ! बाणासुर के हजार हाथ को काटने वाले प्रभु! कब हम आपसे मिलेंगे । **3206 । 2982**

दो घने मरूदु के वृक्ष में घुसने वाले प्रभु ! अपने गीत से आपकी प्रशस्ति गाते हुये हम आपके मात्र चरणारविंद के दर्शन के लिये अश्रुधारा बहा रहे हैं । हाय ! कबतक हम यहां रहें ? **3207 । 2983**

समृद्ध कुरूगुर नगर के शडगोपन के सुविचारित हजार गीतों का यह दशक धरा को मापने वाले प्रभु की प्रशस्ति गान है । इसे गाने वाले स्वर्गारोही होंगे । **3208 । 2984**

तीसरे शतक का नौवां दशक ः **3 । 09** ः शोन्नाल्

इसमें **11** पासुर हैं । दोनों रीति की गिनती दी जा रही है ।

3 । 09 । 01 से 3 । 09 । 11 पासुर 3209 से 3219 या 2985 से 2995ः

कविता प्रभु के लिये रचो मर्त्यो के लिये नहीं ।

यह कहना तो कठिन है परंतु मैं क हूँगा । सुनिये ! वेंकटम पर्वत के प्रभु हमारे प्रभु माता एवं पिता हैं अतः हम अपनी मधुर गीत अन्य किसी की प्रशस्ति में नहीं गा सकते । **3209 । 2985**

इन मर्त्यों की प्रशस्ति का क्या लाभ जो अपनी संपत्ति एवं अपने आप को ऊंची श्रेणी का मानते हैं जबकि हमारे प्रभु एवं पिता उपजाऊक्षेत्रों से घिरे कुरूंगुडी में रहते हैं **3210 । 2986**

हे नैसर्गिक दक्षता वाले कविगन ! जब स्वर्गिकों के देव हमारे प्रभु मार्ग को प्रशस्त करने हेतु वहां विराजमान हैं तो तुम झुककर इन मर्त्यों की प्रशस्ति गाते हो इसका क्या लाभ ? **3211 । 2987**

क्षणभंगुर लोगों की प्रशंसा गान करने वाले कविगन ! कितना तुम्हें मिलता है एवं कितने दिनों तक वह काम आता है ? तेजोमय मुकुट वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ । वे तुम्हें अपना बना लेंगे एवं सर्वदा के लिये पुरस्कृत करेंगे । **3212 । 2988**

शब्दरचना में दक्ष कविगन ! निरर्थक कचरा को अपना धन समझते हो । आओ और परम उदार सर्वसुयोग्य प्रभु की प्रशस्ति गाओ । आप ही तुम्हारी आवश्यकताओं की अक्षय पूर्ति करेंगे । **3213 । 2989**

आओ कविगन ! अपने शरीर के अवयवों से अभ्यास करते हुए हमने देखा है इस महान धरा पर कोई भी संपन्न नहीं है। उन्हें अपने देव की प्रशस्ति गान करने दो अंततः सब तेजोमय मुकुट वाले हमारे तिरूमल प्रभु के पास ही आयेगा। **3214।2990**

असीम एवं परमउदार प्रभु के हजारों नाम हैं। एक मात्र आप ही हमारी प्रशस्ति के लिये सुयोग्य हैं। हम मर्त्यों के लिये मिथ्यावादन नहीं कर सकते जैसे कि 'भुजायें पर्वतनुमा हैं' 'हाथ मेघ की तरह है'। **3215।2991**

असीम गौरव के प्रभु बांस समान सुघड़ बाहों वाली नप्पिनाय के दुलहा हैं। हमारा हृदय आपके वदन का दर्शन कर चरणारविंद को पकड़ना चाहता है। मरणशील मनुष्य की कैसे मैं प्रशंसा कर सकता हूँ ! **3216।2992**

मरणशील मनुष्य की प्रशस्ति गाने के लिये हमारा जन्म नहीं हुआ है। महान सदगुण वाले उदार चक्रधारी प्रभु हमारे विषय वस्तु हैं। आप हमारे जीवन का साधन इहलोक में तथा परलोक में प्रदान करते हैं। यहां तक कि इन्द्र का प्रभार भी हमें ही सौंप देते हैं। **3217।2993**

इस लंबी जीवनयात्रा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आप मध्य के सुखद विश्रामस्थलों का प्रावधान करते हैं। सर्वदा के लिये आपका कवि होकर क्या मैं दूसरे के लिये कभी गा सकता हूँ ! **3294**

कुरूगुर नगर के प्रसिद्ध शडगोपन से विरचित त्रुटिहीन हजार पद का यह दशक स्वर्गिकों के गौरवशाली कृष्ण प्रभु की यशगाथा है जिसके गान से पुनर्जन्म से छुटकारा मिल जाता है। **3219।2995**

<u>तीसरे शतक का दसवां दशक ः **3 । 10** ः जन्मम्पलपल</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

3।10।01 से 3।10।11 पासुर 3220 से 3230 या 2996 से 3006ः

असुर कुल की प्रताड़ना से मुक्ति के लिये गरूड़ारोही चक्र शंख गदा धनुष एवं खड्ग धारण करने वाले प्रभु ने इस जगत में कई अवतार लिये। आपकी प्रशस्तिगान हमारा सौभाग्य है एवं हमें किसी चीज की कोई कमी नहीं है। **3220।2996**

तेजोमय मणि के रंग के कृष्ण प्रभु गहरे समुद्र में शेषशय्या पर अर्द्धनिलमित आंख से विश्राम करते हुए योग रत रहते हैं। लाल चोंच वाले गरूड़ पर सवार हो आपने अनेकों शत्रुओं का नाश किया। आपकी प्रशस्ति गाते एवं नाचते हुए हम सभी आवश्यकता से मुक्त हो गये हैं। **3221।2997**

तीनों जगत के प्रभु शक्कर का ढ़ेला दूध शहद फल गन्ना तथा अमृत के समान मीठे हैं।

सदा एवं सभी समय में आप अपनी सृष्टि से आनन्द लेते हैं। आपके भक्त बनने से हमारी कोई चिन्ता नहीं बच गयी। **3222**।**2998**

गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु दिव्य चक्र धारण करते हैं। शक्तिशाली बाणासुर से आपने कई लड़ाईयां लड़ी एवं शिव़ कुमाऱ तथा अग्नि की रक्षा की। आपकी प्रशस्ति 'हे अच्युत़ हरि़ गोपाल' गाने से हमें कोई यातना नहीं सताती। **3223**।**2999**

अर्जुन तथा ब्राह्मण के साथ उसी दिन उसी क्षण सरलता के साथ रथ चलाकर यहां से बाहर अपने गौरवशाली लोक में गये एवं ब्राह्मण को उसका पुत्र वापस ला दिया। अतः हम चिंता छोड़ आपकी प्रशस्ति गाते हैं। **3224**।**3000**

अपने नैसर्गिक तेज को अक्षुण्ण रखते हुए आप इस अधम धरा पर नाशवान शरीर से अवतार लिये एवं अनेकों महान कार्य करते हुए अपनी ईश्वरीय प्रभुता स्थापित की। पर्वतनुमा गौरवगाथा के कृष्ण की प्रशस्ति गाकर हम चिंतामुक्त हो गये हैं। **3225**।**3001**

माया के अनेक प्रयोगों से आपने सुख एवं दुख के कर्म, अनगिनत जीव़, नीच नरक, एवं सुखद स्वर्ग की रचना की। ये सारी आपकी नैसर्गिक लीला हैं।सभी चिंता छोड़कर हम आपकी प्रशस्ति गाते हैं। **3226**।**3002**

सभी कार्यो के कर्ता कृष्ण लक्ष्मी को देखकर आनंदित होते हैं। शुद्ध अप्रमेय आनंद़ प्रभापूर्ण छटा से आच्छादित़ असीमित ज्ञान वाले प्रभु आप स्वतः प्रबुद्ध हैं। आपके चरणारविंद की प्रशस्ति करने के फलस्वरूप हम चिंता से मुक्त हैं। **3227**।**3003**

तुलसी माला धारण करने वाले तेजोमय ज्ञान के स्वरूप प्रभु अपने आश्चर्यमय कृत्यों से अनेकों स्थल पर तथा कीड़ाओं में प्रकट हुए हैं।एक क्षण में आपने शिव ब्रह्मा एवं अन्यों को निगल लिया। आपके चरणारविंद की प्रशस्ति करने के फलस्वरूप हम चिंता से मुक्त हैं। **3228**।**3004**

तेजोमय ज्ञान के प्रथम कारण प्रभु स्वरूपविहीन इन्द्रियातीत होकर स्थित हैं। आप तेजोमय कृष्ण़ प्रभापूर्ण पहचाऩ ज्योतिपुंज एवं तत्व हैं। आपकी सेवा कर हम यातना से मुक्त हुए हैं। **3229**।**3005**

हजार पद का यह दशक़ नगर एवं देश प्रसिद्ध कुरूगुर शडगोपन के हैं जो केशव की गौरव गाथा है एवं मुक्ति का साधन है तथा यह सर्वदा के लिये विश्व का सार्वभौम स्वामी बनाता है।**3230**।**3006**

<u>चौथे शतक का पहला दशकः **4**।**01**ः ओरू नायगम</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 | 01 | 01 से 4 | 01 | 11 पासुर **3231** से **3241** या **3007** से **3017**

धनसंपत्ति क्षणिक हैं एवं आत्मज्ञान भी निम्नवर्ग का है अतः नारायण की सेवा में लगो।

तिरूनारायण के चरणाविंद का ध्यान कर शीघ्र जागो। विश्व के एकछत्र राजा एक दिन भिक्षा में गये। काली जादू से पैर आहत हो गया पात्र टूट गया तथा लज्जित होकर संसार से तिरस्कृत हुए। **3231 | 3007**

शीघ्र आकर तेजोमय मुकुटवाले प्रभु के चरणारविंद को पकड़ो। जो प्रजा पर शासन करते हैं और जिन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है अब दूसरों के लिये महल को छोड रहे हैं जो रानी का आनंद लेंगे। ये अब जंगल के तप्त धूप में यातना का जीवन बितायेंगे। **3232 | 3008**

शीघ्र सुगंधित तुलसी की माला वाले कृष्ण के चरणारविंद का ध्यान करो। वे जिन्होंने अन्य राजा पर शासन किया, जिन्होंने इनके चरण छुये, सामने के प्रवेश द्वार में बड़े नगाड़े की आवाज के साथ धूल में मिल गये। **3233 | 3009**

गिनना शुरू करो। बालू के ढ़ेर में बालू कण से ज्यादा राजागण धरा पर शासन करके चले गये। जिनके महल धराशायी हो गये उनके बारे में आगे की जानकारी नहीं है। मदमत्त हाथी की हत्या करने वाले प्रभु के चरणारविंद की पूजा करो। **3234 | 3010**

जिन्होंने जूड़े वाली के साथ सुखद समय बिताये एवं जिनके यहां नारियां अच्छे सुगंधित फूल की शय्या तैयार करने की प्रतियोगिता में रहती थीं अब एक कटि वस्त्र पहने घूमते हैं, जिनका सबलोग तिरस्कार एवं उपहास करते हैं। मणि वर्ण के प्रभु के नाम का गान कर जीवन बिताओ। **3235 | 3011**

जो सुखद जीवन बिताये वे बड़े झरना के बुदबुदे की तरह थे। जो सर्वदा के लिये जीवित रहे वे शून्य हो गये। अगर तुम ठीक से जीवित रहते हुए अपनी स्थिति बनाये रहना चाहते हो तो गहरे सागर में शयन करने वाले प्रभु की सेवा करो। **3236 | 3012**

छः रस के भोजन का आनंद लेने वाले जो मृदु भाषी किशोरियों के साथ पुनः भोजन का आनंद लेते अब दर दर में अन्न के एक दाना के लिये तरसते घूम रहे हैं। तुलसी की माला वाले प्रभु के गौरव का स्मरण करो। **3237 | 3013**

दयावान छत्रधारी राजा जो उदार होकर धनराशि बांटते हैं विश्वासभाजन बन सुखद शासन को भोग सकते हैं परंतु वे भी एकदिन धराशायी हो जाते हैं। स्थायित्व की प्राप्ति के लिये शेषशायी प्रभु का नाम स्मरण करना सीखो। **3238 | 3014**

जिन्होंने तृष्णा का तिरस्कार कर दिया है एवं शरीर को सुख से इसतरह वंचित रखा है कि उसपर घास उगने लगे ये लोग भी लक्ष्यहीन दिखते हैं। स्वर्ग की एक सुखद अवधि

का आनंद ले वे वापस आ जाते हैं। गरूड़ध्वज प्रभु के शरण में आओ और फिर कभी नहीं लौटेगे। **3239 । 3015**

सबकुछ त्याग कर चेतन इन्द्रियों पर ध्यान करने वाले ऋषिगन आत्मा के स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। लेकिन स्मृति बनी रहती है जो उन्हें खीचकर वासना पर ले आती है एवं तब वे मुक्ति विहीन रहते हैं। अविनाशी प्रभु के चरण को पकड़े रहो क्योंकि यही एकमात्र मुक्ति है। **3240 । 3016**

फूल के घने बाग वाले कुरूगुर के शडगोपन से विरचित सुन्दर हजार पद का यह दशक एकमात्र आश्रय कृष्ण के चरणाविंद की यशगाथा है। जो इसे सीख लेंगे वे चिंता की गह्वर से निकलकर ऊंचे पद प्राप्त करेंगे। **3241 । 3017**

<u>चौथे शतक का दूसरा दशक ः **4 । 02** ः पालनाय्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 । 02 । 01 से 4 । 02 । 11 पासुर 3242 से 3252 या 3018 से 3028

<u>परांकुश नायिका की मॉ की चिंता 2</u>

हाय ! सात लोक को सरलता से निगलकर बटपत्र पर एक शिशु की तरह सोने वाले प्रभु के चरणाविंद की शीतल तुलसी मांगते हुए हमारी क्षीणकाय बेटी अचेत हो जाती है। **3242 । 3018**

मेरी बेटी एक दुखदायी चक्रीय आवृति में पड़ गयी है। प्रभु के श्रीचरण से सुगंधित तुलसी मांगती है जिन्होंने लोक लाज खोकर लता सी पतली कमरवाली गोपियों के साथ दैहिक आनंद की क्रीड़ा में प्रवृत हुये। **3243 । 3019**

हे वेदना की घनी छाया ! वैदिक ऋषि एवं स्वर्गिकों से प्रशंसित प्रभु के चरण को सुशोभित करने वाली सुनहली तुलसी की माला के लिये हमारी बेटी विलाप कर रही है। **3244 । 3020**

उच्चाभिलाषी दार्शनिकों से प्रशंसित प्रभु के चरण को सुशोभित करने वाली सुनहली तुलसी की माला के लिये मेरी पापिनी बेटी बड़बड़ाती रहती है। **3245 । 3021**

प्रभु ने गोपकिशोर के रूप में पात्र के साथ नृत्य किया तथा नप्पिनाय के हाथ के लिये सात वृषभों का वध किया। उस प्रभु के चरण की शीतल तुलसी माला का स्मरण कर मेरी सुन्दर बेटी हर दिन क्षीण होती जा रही है। **3246 । 3022**

सृष्टि के प्रारंभ में प्रभु ने सूकर के रूप में धरा देवी को प्रलय जल से बाहर निकाला। उस प्रभु के चरण की सुनहली तुलसी माला की चाह को बार बार दुहराते हुए मेरी बेटी विक्षिप्त हो गयी है। **3247 । 3023**

हे चमकते ललाट वाली नारियों ! मेरी बेटी उस प्रभु के चरण की शीतल सुगंधित तुलसी की माला के लिये उतावली है जो अपने वक्षस्थल पर कमलनिवासिनी लक्ष्मी को रखते हैं। **3248 ।3024**

हे नारियों! मैं क्या करूं ? मेरी बेटी उस प्रभु के चरण की सुगंध विखेरती तुलसी की माला के लिये उत्कट है जिन्होंने अपनी प्रेयसी सीता के प्रेम के लिये बाणों से लंका को जला दिया। **3249 ।3025**

हे नारियों! आप लोग भी बेटी वाली हैं और उन्हें प्यार से पाला है।कैसे मैं अपनी दुखी बेटी की वेदना को बताऊं ? रात दिन वह शंख़ चक्र एवं तुलसी बड़बड़ाती रहती है। हाय ! मैं क्या करूं ? **3250 ।3026**

हे नारियों! मैं क्या करूं ? मेरी मूर्खा सुकोमल बेटी हमारी सलाह नहीं सुनती और न तो हमारा आदेश मानती है। आभूषणों से सुशोभित कृष्ण के चरणों की तुलसी माला के लिये क्षीण होती जा रही है जो कि उसके सुवर्ण से ढ़के उरोज के लिये एक मात्र आभूषण है। **3251 ।3027**

प्रेमरोग की औषध कृष्ण के चरण की प्रशस्ति में कहे गये सुन्दर हजार पदों वाली रचना का यह दशक सौंदर्यपूर्ण नगर कुरूगुर के शठगोपन के शब्दों में हैं।जो इसका गान कर सकेंगे वे स्वर्गिकों के साथ मित्रवत रहेंगे। **3252 ।3028**

<u>चौथे शतक का तीसरा दशक ः **4 ।03** ः कोवै वायाळ्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 ।03 ।01 से **4 ।03 ।11** पासुर **3253** से **3263** या **3029** से **3039**

प्रभु ! आपने मूंगा से होंठवाली नप्पिनाय के लिये वृषभों के समूह से युद्ध किया। आपने लंकेश का वध अपने बाणों से किया एवं मदमत्त हाथी का नाश उसी के दांत से किया। क्या हुआ अगर हमने आपकी पूजा सुगंधित जल एवं पुष्प से नहीं की ? हमारा हृदय आपके सुमन समान मुखमंडल के लिये चंदन का लेप है। **3253 ।3029**

हमारे प्रभु के लिये जिन्होंने ब्रह्मांड को निगल कर फिर से बनाया हमारा हृदय चंदन का लेप है तथा गाथा के पद माला और आभापूर्ण वस्त्राभरण हैं। हमारा करबद्ध हाथ आपका बड़ा सा ज्योर्तिमय आभूषण है। **3254 ।3030**

हे नारायण ! आप एक हुए, दो हुए, तीन हुए और अनेको हो गये। पुनः पांच तत्व़, दो ज्योति पुंज़, एवं समस्त जीव बन गये। आप एक नाग के ऊपर चढ़ गये एवं सागर में शयन किया। आपकी उपस्थिति को हम अपने शरीर में भरकर अपनी आत्मा की यातना को जीत गये हैं। **3255 ।3031**

गोपकुल के प्रमुख! माधव़ वामऩ विषैले स्तनवाली पूतना राक्षसी के विनाशक ! मैं दिन में तीन बार फूल माला से आप की पूजा नहीं करता। मेरा शरीर ही आपके मुकुट पर माला की तरह लपेटे जाने के योग्य है। **3256।3032**

समय के चक्र को धारण करने वाले हमारे कृष्ण प्रभु के लिये हमारा शरीर ही माला है एवं हमारा प्रेम मुकुट है। हमारा प्रेम ही आपका अनगिनत आभूषण एवं वस्त्राभरण है। तीनो लोक द्वारा गायी जाने वाली प्रशस्ति भी मेरा प्रेम ही है। **3257।3033**

हे नारायण ! आपने जगत को निगल लिया एवं पुनः बना दिया। मैं चीखते हए पुकारता हूँ 'समय के चक्र एवं श्वेत शंख को धारण करने वाले'। यद्यपि इससे कुछ होता नहीं परंतु आपके नुपूर वाले चरण हमारे सिर के आभूषण हैं। **3258।3034**

हे प्यारे वामन प्रभु ! आपने नुपूर वाले पैर को बढ़ाया एवं धरा पर अधिकार कर लिया। करबद्ध हो कर आने वाले को शरण देने वाले प्रभु ! मैं सुगंधित फूल एवं जल से आपकी पूजा नहीं करता फिर भी आपका रहस्यमयी तेज हमारी आत्मा की रखवाली करता है। **3259।3035**

सात लोक को भरकर आप सर्वत्र वही हो गये। हमारे हृदय से धारण किये जाने वाले हे ज्ञान के प्रदीप्त प्रतीक ! मेरी जीवात्मा आपकी है एवं आप हमारे हैं। कैसे यह हुआ मैं कैसे बताऊं ? **3260।3036**

मैं आपके गौरव की बाढ़ को वर्णन करने योग्य नहीं हूँ। कब मैं इसके किनारों को पहुचूंगा ? हाय ! मैं प्रेम में अचेत हो जाता हूँ। निष्कलंक तेज के प्रभु ! आप हमारे प्रति उदासीन हैं। महान स्वर्गिकगन आपकी प्रशस्ति गाते हैं। मैंने भी इसे गाया। **3261।3037**

अगर मैं आपकी प्रशस्ति गाऊं एवं सातो लोक मिलकर गाने लगे तथा प्रभु स्वयं भी गाने लगें तो क्या हम लोग इसका अंत पा सकेंगे ? दूध शहद शक्कर एवं अमृत के समान मधुर प्रभु ! मैंने तो केवल आनंद मनाने के लिये गाया। **3262।3038**

एक मात्र आश्रय कृष्ण के चरण की प्रशंसा में कमल क्षेत्र से घिरे कुरूगुर शडगोपन से विरचित निष्कलंक हजार पद का यह दशक का गान जो कर सकेंगे वे यहां आनंद मनाते हुए स्वर्ग पर शासन करेंगे। **3263।3039**

चौथे शतक का चौथा दशक ः **4।04** ः मण्णै

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4।04।01 से 4।04।11 पासुर 3264 से 3274 या 3040 से 3050

नायकी की माँ की चिन्ता **3**

कंगन वाली नारियों ! मेरी बेटी को प्रेमरोग से पीड़ित करने वाले प्रभु का मैं क्या कर सकती हूँ ? पृथ्वी पर अपना स्नेह दिखाते हुए कहती है 'यह उनकी पृथ्वी है।' आकाश की ओर ध्यान कर बोलती है 'यह उनका बैकुंठ है।' इसकी आंखों से हृदय की पीड़ा बह कर निकलती है और उसांसे लेकर कहती है 'सागर सा सलोने प्रभु !' **3264 | 3040**

अपने कंगन वाली हाथ को मोड़कर कहती है 'प्रभु सागर में शयन करते हैं।' लालिमा लिये सूर्य की ओर दिखाकर कहती है 'यह श्रीधर का प्रतीक चिह्न है।' अश्रुप्रवाह से अचेत हो कहेगी 'नारायण' । नारियों ! मैं अपनी दैविक मृगनयनी को समझ नहीं पाती। **3265 | 3041**

लाल अंगारे को सावधानी से हटाते हुए कहेगी 'यह अच्युत हैं'। ठंढ़ी हवा को धीरे से हाथ से चलाने का उपकम कर बोलेगी 'गोविन्द आ गये'।यह मेरी पीड़ा है 'तुलसी फूल को कस कर सूंघेगी'।यही सब मेरी कंगन वाली मृगनयनी आज कल करती है। **3266 | 3042**

आभापूर्ण चांद को देखकर कहती है 'मणिवर्ण के प्रभु'। अचल पर्वत की ओर देखकर कहती है 'आइये हमारे प्रभु'। वर्षा को देखकर नाचती है 'यह नारायण आ गये'।अहा ! कब वे हमारे सुकुमारी लाड़ली पर एक दृष्टि डालेंगे ? **3267 | 3043**

सुन्दर बछड़े को गले लगाकर कहती है 'इनको गोविन्द चराये हैं'। छोटे सांप के पीछे जाकर कहती है 'यह रहा गोविन्द की शय्या'। मैं पीड़ित हूँ और नहीं जानती कब इसका अंत होगा़ प्रभु ने जो हमारी लाड़ली बेटी पर जादू डाल रखा है। **3268 | 3044**

किसी मदारी को पात्र पर नाचते देख दौड़ कर कहते जाती है 'अच्छा यह गोविन्द हैं'। कहीं से बांसुरी की धुन सुनकर कहते हुए दौड़ेती है 'गोविन्द आ गये'। ग्वालिन के मनमोहक मक्खन देख बोलती है 'अहा ! मक्खन उन्होंने खाया था'। पूतना के स्तन पीने वाले के बारे में ये सब इसके पागलपन हैं। **3269 | 3045**

इसका उन्माद बढ़ गया और वोलती है 'यह सृष्टि कृष्ण की रचना है'। लोगों के ललाट पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक देखकर कहती है 'प्रभु के भक्तगन'। सुगंधित तुलसी देखकर कहती है 'यह नारायण की माला है'। यह मेरी अमूल्य बेटी प्रभु के बारे में भावग्रस्त रहकर उन्माद पूर्ण बातें सोचती है। **3270 | 3046**

संपन्न एवं सभ्य जन को देखकर कहेगी 'तिरूमल को मैंने देखा है'। इन्द्रधनुष को देखकर नाचते हुए कहेगी 'वामन ने पृथ्वी को मापा'। सभी शंख चक आदि चिह्नों वाला मंदिर इसके सागर सा सलोने कृष्ण का मंदिर है। जबतक थक नहीं जाती प्रभु के

चरण को अनवरत खोजती है। **3271।3047**

संतजनों को देखकर उतावला होकर कहेगी 'प्रभु ने विश्व को निगल लिया'। काले वर्षा के बादल देखकर कहेगी 'कृष्ण' एवं उड़ने का उपक्रम करेगी। पशुओं के समूह को देखकर कहेगी 'इनके बीच प्रभु हैं' एवं उनका पीछा करेगी। कठिनता से प्राप्त मेरी बेटी प्रभु से संतप्त रोती रहती है। **3272।3048**

शून्य में दूर देखते हुए पसीना से तरबतर हो अचेत हो जाती है। वर्षा की तरह अश्रु बहाती है। गर्म उसांसे ले धीरे से कहती है 'कृष्णआईये मेरे प्रभु'। मैं पीड़ित हूँ मैं क्या करूं ? मेरी बेटी उन्मादपूर्ण प्रेमरोग से ग्रस्त है। **3273।3049**

उदार कृष्ण की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक कुरूगुर के शठगोपन के हैं।जो इसको याद करलेंगे वे अपनी यातना का अंत कर वैकुंठ में जायेंगे एवं सबों से पूजित हो शासन करेंगे। **3274।3050**

<u>चौथे शतक का पाचवां दशक ः **4।05** ः वीट्रिरून्दु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4।05।01 से 4।05।11 पासुर 3275 से 3285 या 3051 से 3061

<u>आळवार संत प्रशस्ति के पद रचने के अपने सौभाग्य की सराहना करते हैं।</u>

केशिन घोड़ा के जबड़ा फाड़ने वाले प्रभु शाश्वत श्रेयावस्था में शांति से सात लोकों पर शासन करते हैं। करबद्ध होकर प्रशस्ति में रचे गये मेरे पदों की माला आप अपने मुकुट पर पहनते हैं। अब हमें सात जन्म तक किस चीज की कमी है ? **3275।3051**

आप अपने वक्ष पर काली आंखों वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। आप स्वर्गिकों के नाथ हैं एवं आपकी अरूणाभ नयन वृहत तथा सुन्दर हैं। मृदु शब्दों से आपकी प्रशस्ति के पदों को रचकर गाने का हमें सौभाग्य मिला है जिसके फलस्वरूप विचित्र विश्व के हमारे घातक यातना का अंत हो गया है। **3276।3052**

स्वर्गिकों के नाथ़ पुष्प सी आंखोंवाले़ ऊच्चतम श्रेयप्रदान करने वाले हमारे अच्युत प्रभु शाश्वत आनंद की अधिकतम सीमा पर रहते हैं। हमने पदों के गायन से आपको प्राप्त कर लिया है। आपकी अंतहीन प्रशस्ति कर हम भी शाश्वत आनंद की अधिकतम सीमा प्राप्त कर गये हैं। **3277।3053**

आप सुन्दर पंखोंवाले गरूड़ की सवारी करते हैं एवं शक्तिशाली चक्र धारण करते हैं। मेरे प्रभु भक्तों को प्रेम करते हैं तथा उनका ध्यान रखते हैं जो खड़ा होकर आपकी पूजा करते हैं। अपनी जिह्वा से आपकी प्रशस्ति गाकर हमने आपको प्राप्त किया है। मुझे यह समझ में नहीं आता कि किस तरह चेतन हमारी आत्मा का मार्ग निर्देश करता है?

3278 । 3054

स्वर्गिकों के प्रभु मेरे प्रभु सबचीज का अर्थ स्वयं बताते हैं। आप धैर्यपूर्वक सुगम रास्तों को दिखाते हैं तथा सभी पाप एवं व्याधि को जलाकर भस्म करते हैं जैसे हवा छाई को उड़ाती है। शब्दों से पदों की रचना को गा कर हमने आप को पा लिया है।

3279 । 3055

स्वर्गिकों के प्रभु अपने ललाट पर श्वेत मिट्टी का तिलक लगाते हैं एवं आपकी आंखें सरोवर की तरह वृहत हैं। हमने प्रासंगिक शब्दों से पद की माला बना आपकी प्रशस्ति गायी है। अब से आगे भविष्य में कोई भी चीज ऐसी है जो हमारे पहुंच से बाहर है ?

3280 । 3056

आपके समान न कोई है और न आपसे बड़ा कोई है। आप समस्त विश्व को धारण करते हैं। आपने एक पर्वत से वर्षा रोक दी। पदों की माला से आपकी प्रशस्ति गाने का हमें सौभाग्य मिला है जिसे आप अपने मुकुट पर प्रेम से धारण करते हैं। इससे अधिक हमें क्या चाहिये ? **3281 । 3057**

धरा के निवासियों एवं स्वर्गिकों के प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी के उतने ही प्रिय हैं जितने हमलोगों के हैं।आपके चरण कमल के फूल पर आधारित रहते हैं। आपकी प्रशस्ति हमने पदों से गायी है। इस महान संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है?

3282 । 3058

स्वर्ग एवं ऊपर के लोकों में तथा पृथ्वी एवं नीचे के लोकों में आप सर्वव्याप्त होकर रहते हैं। आपका बलवान हाथ एक घुमावदार शंख को पकड़ता है। आप स्वर्गिकों के प्रभु हैं एवं पात्रों के साथ नृत्य करते हैं। हमने आपकी प्रशस्ति गायी है। क्या कभी भी कोई मेरी बराबरी कर सकता है ? **3283 । 3059**

पृथक खड़े होकर सृष्टि का आनंद लेते हुए आपने विश्व को निगला तथा उगला, इसे मापा एवं ऊपर उठाया।आप यहां शयनावस्था बैठने की मुद्रा तथा खड़े होने की मुद्रा में पूरी सार्वभौम शक्ति से रहते हैं। हमने जिन पदों से आपकी प्रशस्ति गायी है वे भक्तों के लिये अमृत हैं। **3284 । 3060**

शीतल बागों वाले नगर कुरूगुर के कारीमारन शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक अनवरत वृष्टि वाले वेंकटम के प्रभु की प्रशस्ति है। जो इसे याद कर लेंगे वे सदा नूतन कमल में निवास करने वाली लक्ष्मी की कृपा से सारी चिंता से मुक्त हो जायेंगे। **3285 । 3061**

चौथे शतक का छठा दशकः **4 । 06** ः तिरप्पारै

इसमें 11 पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 | 06 | 01 से 4 | 06 | 11 पासुर **3286** से **3296** या **3062** से **3072**

<u>नायकी की माँ की चिन्तित होकर उपचार ढूंढ़ती है **4**</u>

नारियों ! इस उज्जवल ललाट की किशोरी के रोग को हमलोगों ने ठीक से जांच लिया है। इसका हृदय रथवाहे की चाह में है जिन्होनें भयानक युद्ध में सेना का संचालन कर पांच पांडवों को विजय दिलायी थी। अब हम कैसे इसकी औषधि पता करें हाय ? **3286 | 3062**

हाय ! तुमने इसकी बीमारी को समझा नहीं है। एक महान शक्ति ने इसे भावग्रस्त कर रखा है न कि एक छोटा देवता जिसके लिये तुम नाचती हो। उसके कान में प्रेम से स्पष्ट बोलो 'शंख एवं चक्र'। देखो वह शीघ्र ठीक हो जायेगी। **3287 | 3063**

देखो सजनी ! माँस एवं ताड़ी फेंककर जंगली रीति से काम न करो। इस वनवासी भगत जादूगर के शब्दों पर ध्यान मत दो। तुलसी का मुकुट धारण करने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ एकमात्र वही इसको ठीक कर सकते हैं। **3288 | 3064**

जादूगर भगत की बात सुनकर वेदी पर लाल एवं काला पकाया हुआ चावल फेंकने से क्या लाभ ? प्रभु का नाम बोलो जिन्होंने क्षण भर में विश्व को निगल कर उसे पुनः बना दिया। तुम अवश्य अपनी बेटी को सामान्य अवस्था में पाओगी। **3289 | 3065**

इसे ठीक करने का यह उन्मादी नृत्य उचित तरीका नहीं है। हाय ! इसकी बड़ी कमल सी आंखें एवं मूंगा से होंठ भय से श्वेत हो गये हैं। मदमत्त हाथी को मारने वाले प्रभु का नाम गाकर इसके ललाट पर श्वेत मिट्टी का तिलक करो इसका ताप कम हो जायेगा। **3290 | 3066**

सजनी ! प्रेतात्मा से ग्रस्त की तरह नाचने से कोई लाभ नहीं। इससे इसका ताप बढ़ेगा घटेगा नहीं। भक्तों के चरण का धूल इस पर लगाओ। इसके अलावे इसे ठीक करने का कोई अन्य उपाय नहीं है। **3291 | 3067**

सजनी ! इसके उन्माद को ठीक करने के लिये बकरी की बली एवं ताड़ी चढ़ाते हो तथा अपने हाथ बजाकर कंधों को जोर से झकझोरते हो। इससे क्या लाभ ? यह गदहे को अन्न खाते देखने जैसा है। जाओ वैदिक संतों एवं प्रभु के भक्तो से मिलो। **3292 | 3068**

नाहक शब्दों एवं पापमय कृत्यों के साथ ताड़ी चढा कर नगाड़े की धुन पर उन्मत्त सा नाचते हो। हाय ! यह नीच काम है। वैदिक संतों की सहायता से स्वर्गिकों के प्रभु के पावन चरण की पूजा करो। यही इस किशोरी के रोग को ठीक करेगा। **3293 | 3069**

निम्न स्तर के देवता के प्रति किये गये खोखली प्रशंसा एवं भोंडे संगीत पर किये गये नृत्य को मैं खड़ी होकर नही सहन कर सकती। कृष्ण के चरण की प्रेमपूर्वक प्रशस्ति गाओ जो अकेले इस रोग का निदान होगा तथा आने वाले सात जन्म तक संजीवनी की तरह काम करेगा। **3294 । 3070**

नारियों ! अपने उन्माद का प्रदर्शन कंधा हिलाकर मत करो। यह किशोरी कृष्ण को छोड़कर अन्य देवता का आदर नहीं करेगी। वेदों से सम्मानित द्वारका के राजा की प्रशस्ति गाओ। यह किशोरी सामान्य स्थिति को प्राप्त करेगाी तथा प्रेमोन्माद से अर्चना में नृत्य करेगी। **3295 । 3071**

जगप्रसिद्ध नगर कुरूगुर के शडगोपन से विरचित निष्कलंक हजार पद का यह दशक मणि वर्ण के प्रभु को देखकर पूजा करने तथा नाचने से उन्माद की स्थिति से मुक्त होने के उपाय को बताता है। जो इसे गाकर नाचेंगे वे चिंताग्रस्त मन से मुक्त होंगे। **3296 । 3072**

<u>चौथे शतक का सातवां दशक ः **4 । 07** ः शीलम इल्ला</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 । 07 । 01 से **4 । 07 । 11** पासुर **3297** से **3307** या **3073** से **3083**

अपने सिर पर बंधे हाथ को रख खड़ा होकर लगातार बोलता हूॅ 'विश्व को निगलने वाले प्रभु' 'ज्ञान की प्रतीक प्रतिमा' 'नारायण' एवं अनेको अन्य नामों से संबोधित करते हुए कहता हूॅ 'न तो आप दर्शन देते हैं और न हमें अपने पास बुलाते हैं'। हाय ! मैं एक निम्न जन्म का दरिद्र हूॅ तथा हमारे कुकर्म सच में बहुतो हैं। **3297 । 3073**

खड़ा होकर रात दिन यह पुकारता हूॅ 'उदार प्रभु' 'निष्कलंक अप्रमेय आनन्द की बाढ़' 'धरा को मापने वाले प्रभु' एवं अनेकों अन्य नामों से संबोधित करता हूॅ। हाय ! आप आते नहीं। छलिया प्रभु ! हमारी आंखों को दर्शन दीजिये। **3298 । 3074**

अपने हृदय पर अश्रु बहाता हुआ पुकारता हूॅ 'मेरे प्रभु' 'धरा को एक पग में मापने वाले प्रभु' 'दामोदर' एवं अनेकों अन्य नामों से संबोधित करता हूॅ। हाय ! कितने कूर अमिट कर्म हम किये हैं ? जब मैं आपके दर्शन हेतु आता हूॅ तो आप 'पापी' भी नहीं कहते। **3299 । 3075**

मैं यहां लाजविहीन होकर पुकारता हूॅ 'ऊच्चकोटि के सुनहले रंग वाले प्रभु' 'सर्वोत्तम' 'जिसे सभी तप के बाद देवता भी नहीं देख सकते' आदि आदि। यह किस काम का ? आप अपने कमल समान मुखड़े का दर्शन नहीं देते। हाय ! ठीक में मैं एक अधम श्रमिक हूॅ। **3300 । 3076**

मेरे पिता तीक्ष्ण चक्र को धारण करने वाले सागर मंथन करनेवाले शक्तिशाली प्रभु ! क्या कभी मैं आपको चतुर्भज रूप में देख सकूंगा ? सदा आंखों में आंसू भरे हम देखते रहते हैं जबकि हमारा जीवन धीरे धीरे सूखते जा रहा है। प्रभु ! इस भाग्यहीन के पास अभी आइये। **3301 । 3077**

मेरे शरीर में, मेरी जीवात्मा में, तथा सभी वस्तुओं में बिना अपवाद के आप सब प्राणियों में सर्वदा सर्वत्र स्थित हैं। मैं ध्यान पर ध्यान करके आपको अपनी जीवात्मा में खोजता हूँ। हाय ! हमारे पास नाहक जीभ है परंतु ज्ञान नहीं है। **3302 । 3078**

तुलसी माला के प्रभु ! हृदय के गह्वर में आपको ज्ञान की प्रतीक प्रतिमा के रूप में देखता हूँ। जीवन एवं मरण के रास्ते बार बार ध्यान करके हमने आपको ऊंची स्थिति में रखकर अपनी चिंता से मुक्त हुये हैं। **3303 । 3079**

जब आपका दर्शन मिलेगा तो हम आपके चरणों पर अतिउत्साह से आठ दिशाओं से एकत्र किये हुए फूलों की वर्षा कर देंगे एवं बार बार प्रशस्ति गायेंगे। हम सभी भक्त गाकर आनंद में नाचेंगे। तुलसी माला के प्रभु ! क्या आप इस धरा धाम पर नहीं पधारेंगे ? **3304 । 3080**

मेरे पास विश्वास की थाती नहीं है, धन नहीं है, इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है, और न तो आपको फूल से पूजा करने का स्थिर मन है। हमारे पास केवल एक पापी हृदय है। हे पापी मैं! मैं देखता हूँ कि कहां आपका दर्शन पा सकूं ? हे शंख चक्रधारी प्रभु ! **3305 । 3081**

आंसू बहाते नीच मन से मैं सब जगह घूम कर देखता हूँ। हाय ! शंख चक्रधारी प्रभु को आते नहीं देखता। बुद्धि की आंख से वेद की ज्योति एवं ज्ञान की महान प्रतीक प्रतिमा को देखकर आनंदमग्न रहता हूँ। **3306 । 3082**

ऊंचे महलों के नगर कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार तमिल पद का यह दशक कमलनयन कृष्ण को आलिंगन करने वाले प्रेम से सरोबोर है। जो इसे प्रेम से गा कर नाच सकेंगे वे स्वर्ग को प्राप्त होंगे। **3307 । 3083**

<u>चौथे शतक का आठवां दशक ः **4 । 08** ः एराळुम</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 । 08 । 01 से 4 । 08 । 11 पासुर 3308 से 3318 या 3084 से 3094

<u>नायकी भाव में प्रभु से निवेदन</u>

शस्त्रों से सुसज्जित आक्रामक प्रभु ने असुर समूह के संहार के लिये योजना बना ली थी। वृषभारोही शिव चतुरानन ब्रह्मा एवं कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके शरीर पर विराजते

हैं। अगर हमारे निष्कलंक सौंदर्य की चाह प्रभु को नहीं है तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3308 | 3084**

मणिवर्ण के प्रभु पर्वत समान बाहों पर भयानक चक्र धारण करते हैं। अद्वितीय कमल निवासिनी लक्ष्मी आपके वक्ष पर रहती हैं। आपने हमें अपनी सेवा में पूर्णतया स्वीकार कर लिया है। अगर आप हमारे क्षीण हृदय की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3309 | 3085**

फनधारी शेष की शय्या पर शयन करने वाले महान प्रभु की बाहें पर्वत के समान हैं। प्यारी मॉ के छद्म वेष में आनेवाली पूतना राक्षसी का स्तन पीने वाले आप आश्चर्यमय शिशु हैं। अगर आप हमारी मनहारी छटा की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3310 | 3086**

प्रभु लाल वस्त्र एवं मोती का हार पहनते हैं। आप एक दूध का घड़ा एवं चराने वाली छड़ी धारण करते हैं। बांस सी सुघड़ बांह वाली आकर्षक नप्पिनाय के उरोजों के आलिंगन हेतु आपने सात वृषभों का दक्षता से शमन किया। अगर आप हमारी गुलाबी गाल की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3311 | 3087**

पूर्णता के प्रतीक प्रभु सुगंधित तुलसी का मुकुट धारण करते हैं। सुन्दर मृदुभाषिणी सीता को रोके रखने के कारण आपने समुद्र से घिरे भयानक असुर रावण के नगर को जला दिया। अगर आप हमारे मन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3312 | 3088**

विश्व के विचारक लोग यह जान सकें कि ज्ञान के प्रतीक प्रभु ने सत्य का मार्ग स्थापित किया। चतुर वामन के रूप में पधार कर आपने धरा पर अधिकार कर लिया। अगर आप हमारे यौवन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3313 | 3089**

आपका अतिशक्तिशाली भयानक सिंह के रूप में विस्फोट हुआ और आपने हिरण्य की चमकती छाती को बड़ी आसानी से चीर डाली। आप तेजोमय चक्र एवं शंख धारण करते हैं। अगर आप हमारे आभूषित कंगन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3314 | 3090**

महान यशस्वी प्रभु घुमावदार शंख धारण करते हैं। इसकी घोर ध्वनि ने विद्रोही कौरव का नाश कर दिया। तीन देवों ने स्वागत करते हुए कहा 'विश्व की यातना का अंत हो गया'। अगर आप हमारे आभूषित कमरधनी की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3315 | 3091**

ऊषा के पिता बलवान बाणासुर की बांहों को काट गिराने वाले प्रभु विश्व के कल्याणार्थ योगनिद्रा में शेषशय्या पर विराजते हैं। अगर आप हमारे शरीर की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3316 । 3092**

बड़े उत्साह से आपने अनेकों विशाल असुरों को काटकर टुकड़े टुकड़े कर उन्हें निष्प्राण पत्थर की तरह ढ़ेर कर दिया। तेज प्रवाहपूर्ण गंगा के साथ जटाधारी शिव एकांत में आपके दाहिने अंश में स्थित हैं। अगर आप हमारे जीवन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3317 । 3093**

कुरूगुर नगर के शडगोपन के त्रुटिरहित हजार गीतों का यह दशक दही मक्खन खाने वाले जगत के नाथ का प्रशस्ति गान है। इसे गाने वाले जन्म के बंधन को काटकर स्वर्गारोही होंगे। **3318 । 3094**

चौथे शतक का नौवां दशक ः **4 । 09** ः नण्णादार

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 । 09 । 01 से 4 । 09 । 11 पासुर 3319 से 3329 या 3095 से 3105

नारायण के साथ लक्ष्मी का शाश्वत प्रतिपादन है। **3328 । 3104**

जब यह संसार अनगिनत यातना देता है तब अजनवी लोग हंसते हैं और मित्र लोग शोक प्रकट करते हैं। क्या रीति है ? सुन्दर नयनों के सागर मथने वाले प्रभु ! शीघ्र अपने चरणारविंद का मार्ग बताइये या मौत बुला दीजिये। **3319 । 3095**

सम्बंधीजन विनाश एवं मृत्यु लाते है़ं एक दूसरे को ठगते है़ं और च्युत होने पर रोते हैं। क्या रीति है ? शेषशायी प्रभु ! हमारी प्रार्थना स्वीकार करे़ं कोई मार्ग बतायें एवं हमें अपने पास शीघ्र बुला लें। **3320 । 3096**

सुख़, मित्रता़, सम्बंधीजऩ, अपार संपत्ति़, जूड़े वाली नारी, एवं गृह, सभी मृत्यु के समय पयान कर जाते हैं। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम संसार का सहन नहीं कर सकते। क्या रीति है ? जैसा पूर्व में मेरे साथ व्यवहार किया था वैसा नहीं करें। प्रार्थना है कि अपनी सेवा में शीघ्र बुला लें। **3321 । 3097**

अपार संपत्ति तृष्णा को प्रज्चलित करती है एवं संसार को चारो ओर से अंधकार की चादर में समेट लेती है। उदारमना मणिवर्ण के प्रभु ! क्या रीति है ? अपनी दया से हमें इनचीजों से अलग कर दीजिये तथा अपने चरणारविंद का उपहार दीजिये। **3322 । 3098**

प्रलय के जल से प्रस्फुटित होने वाले संसार में प्राणीजन जन्म़ मरण़ रोग़ आयु का दुख भोगकर अंत में नरक का दुख भोगते हैं। क्या रीति है ? मणिवर्ण के प्रभु ! मुझे छोड़िये

नहीं प्रार्थना है अपने पास रख लीजिये । **3323 । 3099**

संसारीजन सत्य को बिना समझे हुए तिरस्कार करना, बांधना, पिटाई करना, वध करना एवं भोजन करना आदि कृत्यों में लिप्त रहते हैं। क्या रीति है ? हमारे अमृत तुलसी के मुकुट वाले प्रभु ! कितना पापी हूं मैं! आपने मुझे परिवर्तित कर अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया अब अपने चरण के पास बुला लीजिये । **3324 । 3100**

जब आप स्वयं जड़ एवं चेतन हैं तथा आप अकारण विश्व में स्थित हैं। प्रार्थना है कि मुझे दुष्ट संसार का जन्म, मरण, रोग, आयु, एवं यातना से अलग रखकर अपने पास अवश्य बुला लीजिये । **3325 । 3101**

आप अपने को प्रकट कर पुनः लुप्त हो जाते हैं। आप संसार को बनाकर इसके साथ पृथ्वी जल अग्नि वायु एवं आकाश बनाये। क्या मैं देवताओं के लोक को पारकर आपके दिव्य चरण तक पहुंच सकूंगा ? अहा ! यह कब होगा ? **3326 । 3102**

शेषशय्या के प्रभु ! आप देवताओं को भी बिना पुनरूद्धार के घुमाते रहते हैं। यह मैं जानता हूँ। हमारी ईच्छा को दूर करते हुए आपने हमारे ऊपर अपना चरण देकर हमें घुमा रहे हैं। यह अब स्पष्ट है कि मैं आपके चरणारविंद से अलग नहीं हो सकता। **3327 । 3103**

हमने देखने सुनने छूने सूंघने एवं खाने का आनंद लिया है तथा इन्द्रियों से परे स्वर्ग का सीमित सुख का भी अनुभव किया है। केवल आप एवं कंगनवाली गोरी लक्ष्मी ही स्थायी हैं। हमारे प्रभु ! क्या आश्चर्य है कि हमने आपका चरणारविंद प्राप्त कर लिया है । **3328 । 3104**

विकासशील कुरूगुर नगर के शडगोपन से विरचित त्रुटिरहित तमिल के हजार पद का यह दशक तेजोमय नारायण एवं केशव के चरणारविंद को समर्पित है। नम्रता के साथ इसका गान प्रभु के चरण को प्राप्त कराने वाला है। **3329 । 3105**

<u>चौथे शतक का दसवां दशक ः **4 । 10** ः ओन्रून्देवुम</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

4 । 10 । 01 से 4 । 10 । 11 पासुर **3330 से 3340 या 3106 से 3116**

<u>अन्य देव की सेवा छोड़कर केवल नारायण की सेवा कर</u>

तब जबकि न तो कोई देवगन थे, न विश्व था, न प्राणी थे, और कुछ भी नहीं था, आपने ब्रह्मा को बनाकर उनके साथ देवगन विश्व तथा अन्य प्राणियों को बनाया। आप आदिपिरान के रूप में रत्नाभूषित पर्वतनुमा महलों वाले कुरूगुर में खड़े हैं। तब अन्य किस देवता को तू खोजता है ? **3330 । 3106**

हे संसार के लोगों ! तब प्रभु ने तुम्हें तथा तुमसे पूजित देवों को बनाया। अंतहीन बड़प्पन एवं यश के साथ आप वरामदे से युक्त महलों वाले मंदिर नगर कुरूगुर में स्वेच्छा से स्थित हैं। सब जगह घूमते हुए आपकी प्रशस्ति गाकर नाचो। **3331**।**3107**
आपने सब देव एवं लोक को रचा तब एक क्षण में सबको निगल गये। तब छिप गये प्रकट हुए सबको मापा एवं स्थान बदल दिया।हे जगत के लोगों ! अब बताओ यह सब जानते हुए तुम अभी भी नहीं समझते ! देवसबों से पूजित कुरूगुर के इस स्वरूप को छोड़कर अन्य कोई प्रभु नहीं है। **3332**।**3108**
शिव ब्रह्मा एवं अन्य सभी देव जिन्हें तुम जानते हो सब के आप ही नाथ हैं।कपाल मोक्ष से शिव के उद्धार को समझ लो। लिंग की पूजा करने वाले द्वारा दीवालों से घिरे सुनहले कुरूगुर नगर में स्थित प्रभु के बारे में दुर्वचन बोलने से क्या लाभ ? **3333**।**3109**
जो लोग लिंग पुराण का संदर्भ देते हो, देखो। जैन एवं बौद्ध लोग ! अंतहीन विवाद करने से अच्छा है कुरूगुर में खड़े प्रभु की प्रशस्ति गाओ जहां धान की लंबी बालियां चवर की तरह हवा में धीरे धीरे झूमती हैं। प्रभु ही तू हैं, तथा प्रभु ही तुम्हारे सब देवगन हैं यह मिथ्या नहीं है। **3334**।**3110**
तुमलोग जो निम्न श्रेणी के देवता की पूजा करते हो ऐसी स्थिति में आ गये हो 'अगर सब को मुक्ति दे दी जाय तो संसार ही नहीं रहेगा'। सुनहले धान एवं कमल फूल से संपन्न कुरूगुर नगर के प्रभु की यह कीड़ा है। यह समझकर दौड़ो। **3335**।**3111**
लगातार चलकर अनेकों जन्म लेकर निम्न श्रेणी के देवता की पूजा कर तूने सच के अनेकों रास्तों को खोजने का प्रयास किया। अब कुरूगुर के आदिमूर्ति प्रभु का सेवक बन जाओ जिनकी स्वर्गिक जन समूह में खड़ा होकर पूजा करते हैं।आपके ध्वज पर सुन्दर गरूड़ नृत्य करते हैं। **3336**।**3112**
नारायण की कृपा से माकण्डेय मुनि की रक्षा हुई जब वे नंगे देव शिव में शरण ले लिये। बगुला जैसा श्वेत पंडनस की झाड़ियों से घिरे कुरूगुर में जब महान आदिपिरान खड़े हैं तब किस अन्य देवता की तू प्रशंसा करेगा!**3337**।**3113**
दर्शन के छः सिद्धांत तथा अन्य इस तरह के मत प्रभु को माप नहीं सकते। सुन्दर खेतों से घिरे कुरूगुर में इस तरह से आप आदिपिरान की तरह स्थित हैं। अगर तू मुक्ति चाहता है तो आपको अपने हृदय में धारण कर। **3338**।**3114**
आप अपने निष्कलंक स्वरूप में सब देवगन सब लोक तथा अन्य सब को धारण करते हैं। आप कुरूगुर में स्थित हैं जहां लंबे धान एवं गन्ना के पौधे होते हैं। आप वामन की तरह आये। आपने घड़ो के समूह के साथ नृत्य किया। आपकी ही सेवा श्रेयस्कर एवं

उपयुक्त है | **3339** | **3115**
त्रुटिरहित हजार पद का यह दशक् कुरूगुर के मारन शडगोपन की प्रेमपूर्ण रचना है जो चक्रधारी तथा वकुला फूल की माला वाले आदिपिरान की गौरवमयी गाथा का गान करती है | जो इसको याद करलेंगे वे उस वैकुंठ को जायेंगे जहां से लौटना नहीं पड़ता | **3340** | **3116**

००

दिव्यदेश **90** | तिरूकुरूगुर या आळवार तिरूनगरी

1 | स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु के तिरूनेलवेली शहर से **25** कि मी पर है तथा श्रीवैंकुठ से **5** कि मी पर है | तिरूनेलवेली तिरूचेन्दूर रेलमार्ग पर आळवार तिरूनगरी रेलवे स्टेशन से आदिनाथ का मंदिर **2** कि मी पर है |

2 | विग्रह स्वरूप ः यहां के आदिनाथ पेरूमाल खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख तिरूमला के भगवान के स्वरूप में हैं तथा गर्भगृह में आदिनायकी एवं भूनायकी दोनों पार्श्व में खड़ी हैं | तायर की अलग सन्निधि है जो आदिनाथवल्ली कही जाती हैं | यहां का विमान गोविन्द विमान कहा जाता है तथा तीर्थ को ब्रह्मा एवं ताम्रपर्णी तीर्थ कहते हैं | दक्षिण माडावीथि में वेंकटनाथ एवं रंगनाथ की पृथक सन्निधियां हैं | उत्तर माडावीथि में पिल्लैलोकाचार्य, देशिकान, तथा आंडाल की पृथक सन्निधियां हैं | आदिनाथ मंदिर से पश्चिम रामानुज स्वामी तथा मानमलामामुनि के अलग अलग मंदिर हैं |

3 | महिमा ः यहां से **8** कि मी के क्षेत्र में **9** दिव्य देश हैं जो नवतिरूपति के नाम से प्रसिद्ध हैं ः **1** | आदिनाथार कोइल तिरूकुरूगुर, **2** | कैसिना वेंदार कोइल तिरूपुलिंगुडी, **3** | विजयासनार कोइल वरगुणमंगै, **4** | कल्लापिरान कोइल श्रीवैकुंठम, **5** | मायाकूदन कोइल पेरूगुळाम या कुलन्दै, **6** | मकरा नेडुंकुळै कादन कोइल तिरूप्पेरै, **7** | देवापिरान कोइल तुलैविल्ली मंगलम, **8** | अरविंद लोचन तुलै विल्ली मंगलम, **9** | वैत्तामानिधि पेरूमाल कोइल तिरूक्कोलूर |

वैशाख महीने के उत्सव में विशाखा नक्षत्र के दिन नवतिरूपति के सभी मंदिरों से एक ही दिन सभी पेरूमाल गरूड़ पर सवार होकर हंस वाहन पर आरूढ़ नम्माळवार को दर्शन देने आळवार तिरूनगरी आदिनाथ मंदिर आते हैं तथा अपनी तुलसी की माला एवं शठारी से आळवार संत को अनुगृहित करते हैं | इसी परंपरा से प्रभावित हो नांगुर में लगभग **150** वर्षो से इसी तरह की शोभा यात्रा निकलती है जिसमें सभी **11** दिव्य देश के पेरूमाल गरूड़ पर आरूढ़ हो एकत्रित होते हैं | नांगुर में तिरूमंगै आळवार एक दिव्य देश से दूसरे दिव्य देश गाते बजाते जाते हैं तथा सभी एकत्रित होकर मणिकर्णिकै नदी

के किनारे पहुंचते हैं। नांगुर की परंपरा में आळवार संत तिरूमंगै आळवार ही सभी जगह के पेरूमाल को गरूड़ पर आरूढ़ करा के नदी किनारे लाते हैं जबकि आळवार तिरूनगरी में नम्माळवार आदिनाथ मंदिर में विराजमान रहते हैं तथा सभी **9** तिरूपति के पेरूमाल गरूड़ पर आरूढ़ हो आदिनाथ मंदिर में ही पधारते हैं। आदिनाथ के मंदिर में पत्थर का वाद्ययंत्र खंभों में बने हैं।इनसे मधुर संगीत की ध्वनि निकलती है।

नवतिरूपति नौ ग्रहों से सम्बंधित बाधा को दूर करते हैं। **1**।विजयासनार कोइल वरगुणमंगै सूर्य के लिये, **2**।कैसिना वेंदार कोइल तिरूपुलिंगुडी चंद्र के लिये, **3**। मायाकूदन कोइल पेरूगुळाम या कुलन्दै मंगल के लिये, **4**। आदिनाथार कोइल तिरूकुरूगुर बुध के लिये, **5**। वैत्तामानिधि पेरूमाल कोइल तिरूक्कोलूर गुरू के लिये, **6**।कल्लापिरान कोइल श्रीवैकुंठम शुक्र के लिये, **7**। मकरा नेडुंकुळै कादन कोइल तिरूप्पैरै शनि के लिये, **8**। अरविंद लोचन तुलै विल्ली मंगलम राहु के लिये, **9**। देवापिरान कोइल तुलैविल्ली मंगलम केतु के लिये।

आळवार तिरूनगरी में लक्ष्मी इमली वृक्ष के रूप में आविर्भूत होकर नम्माळवार का संरक्षण करती हैं।यह भी कहते हैं कि आदिशेष ने इमली वृक्ष के रूप में नम्माळवार को संरक्षण प्रदान किया। इसकी सात शाखायें हैं तथा कई खोढ़रें हैं। यहां के वृक्ष की विशेषता है कि इसके पत्ते रात में भी सीधे रहते हैं इसीलिये इसे 'उरंग पुळी मारम' यानी कभी नहीं शयन करने वाला वृक्ष। नम्माळवार स्वामी यहां **16** वर्ष ध्यान में डूबे रहे तथा इसी स्थान से परमपद प्राप्त किये। कहते हैं आपके पिता कश्यप के अवतार थे तथा कारी कहे जाते थे। माता अदिति की अवतार थी एवं उदयमंगै कही जाती थी। एक कथा के अनुसार जब काल भगवान राम से साक्षात्कार में थे एवं दुर्वासा को लक्ष्मण प्रवेश द्वार पर रोक नहीं सके तो राम की आज्ञा के उल्लंघन के लिये लक्ष्मण को राम ने दंडित किया। भगवान राम ने लक्ष्मण को इमली का वृक्ष होकर स्थावर हो जाने को कहा एवं स्वयं नम्माळवार के रूप में आकर इस वृक्ष के खोढ़र में रहे। माता सीता वकुला माला बनकर नम्माळवार के गले में सदा विराजमान रहीं।आप भगवान कृष्ण के महाप्रयाण के **43** दिन बाद कलियुग में अवतरित हुए थे। आपके माता पिता ने तिरूकुरूंगुडी के प्रभु से संतान के लिये निवेदन किया था। प्रभु के आदेश पर मुख्य सेनापति विष्वकसेन जी के अंश से आपका अवतार हुआ। प्रार्दुभाव काल में आपने न आंख खोली और न रोये तथा माँ का दूध भी नहीं पिया।इसी तरह से **10** दिन बीत गये।**11**वें दिन स्नान करा रत्नजटित पालने में आपको आदिनाथ भगवान के मंदिर में लाया गया तथा आपको 'मारन' यानी 'सबसे पृथक' नाम से सम्बोधित किया गया।

आप पालने से निकल कर पास के इमली वृक्ष के एक खोढ़र में पद्मासन में ज्ञानमुद्रा में बंद आंख एवं मुंह बैठ गये।इस तरह से आप 16 वर्ष तक रहे। इस बीच पास के तिरूक्कोळूर के मधुराकवि मूर्धन्य शास्त्रवेत्ता उत्तरभारत की तीर्थयात्रा पर थे। एक रात मधुराकवि को सुदूर दक्षिण में ज्योति पुंज दिखा। इस तरह से कई रात आप इसे देखे। दिन में विश्राम करते हुए रात में ज्योति की दिशा में चलते चलते आप श्रीरंगम आये। वहां से भी ज्योतिपुंज की दिशा में चलते चलते आप आदिनाथ मंदिर पधारे। दिव्ययोगी की अवस्था में 'मारन' को इमलीवृक्ष में निश्चल देखकर आपने एक बड़ा सा पत्थर पास में गिराया। मारन ने आंखे खोलीं तथा मधुराकवि को देखकर मुस्करा दिया।मधुराकवि ने आपसे एक प्रश्न पूछा 'मृतशरीर के उदर में अगर कोई कीड़ा जन्म ले तो क्या खायेगा। मारन ने बताया कि वह वहीं रहेगा और वही खायेगा। प्रश्न का भावार्थ है कि 'अचित' यानी शरीर में 'चित' प्राण कैसे जीवित रहता है। समाधान था कि प्राणी जिस शरीर में आता है उसी में रहना चाहता है और उसे छोड़ना नहीं चाहता।' मधुराकवि प्रसन्न होकर आपको गुरू मानते हुए आपकी सेवा में लग गये। परमनियंता आदिनाथ प्रकट होकर नम्माळवार के श्रीमुख से प्रशस्ति के पद की रचना कराये। अन्य आळवार संत विभिन्न दिव्यदेशों की यात्रा से लाभान्वित होकर पदों की रचना किये परंतु नम्माळवार ने इमली का वृक्ष कभी नही छोड़ा एवं सूक्ष्म ज्ञान से विभिन्न दिव्यदेशों का यशगान किया।मारन की रचना ः **1**। 'तिरूविरूत्तम' ऋक् वेद माना जाता है। **2**। 'तिरूवाशिरियम' को यर्जुवेद कहते हैं। **3**।' पेरिया तिरूवन्दादि' को अथर्व वेद कहते हैं। **4**।'तिरूवायमोळी' को सामवेद कहते हैं।

नम्माळवार का शाब्दिक अर्थ है 'हमारे अपने संत'।महान कवि कंबन द्वारा विरचित 'शठकोपन अंतादि' में बताया गया है कि 'नम्मा' की उपाधि रंगनाथ भगवान की दी हुई है। भगवान ने आपको 'नाम अळवीरो' यानी 'मेरी बहू' कहा। आपके विभिन्न नाम के तात्पर्य निम्नवत है।

✐'नम्माळवार' हमारे अपने संत

✐'शठकोप' 'शठ वायु पर कुपित होने वाले ।शठ वायु आध्यात्मिक दष्टि का अवरोधक वायु है।

✐'मारन' सबसे पृथक

✐'परांकुश' इन्द्रियों पर अंकुश रखने वाले

✐'वकुलाभरणन' सीता माता वकुला में निवास करती हैं जो राम यानी नम्माळवार के गले में विराजमान हैं। आदिनाथ भगवान के बायें तरफ नम्माळवार की पृथक सन्निधि

है। ताम्रपर्णी के जल को उबालने पर मधुराकवि को उत्सव विग्रह प्राप्त हुआ था। मधुराकवि के रचे हुए कन्निनुम शिरूतांबु के **11** पदों को **12000** बार नाथ मुनि ने यहां नम्माळवार को सुनाया था। फलस्वरूप पसन्न होकर नम्माळवार ने नाथमुनि को दिव्यप्रबंधम के सारे लुप्त प्रबंधों को उपलब्ध करा दिया।

4।दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः मधुरकवि आळवार, कण्णिनुण शिरूताम्बु **937** से **947** तक। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3330** से **3340**।शतक **4**।**10**

ः

पाचवां शतक का पहला दशक ः **5**।**01**ः कैयार

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5।**01**।**01** से **5**।**01**।**11** पासुर **3341** से **3351** या **3117** से **3127**

यह बोलते हुए 'तेजोमय चक्र धारण करने वाले' 'मणिवर्ण के प्रभु' तथा अन्य छोटी प्रशस्ति को गाकर नाचकर हमने सच को पा लिया। हमारा क्या सौभाग्य है! इसे कौन रोक सकता है ? हमारे कृष्ण प्रभु ! अगर हमें छोड़कर आप जाना चाहेंगे तो क्या हम आपको जाने देंगे ? **3341**।**3117**

मैंने मिथ्या बातें बोलीं 'आप मरूदु वृक्षों में घुस गये' 'मेरे नैसर्गिक मणि' 'शहद की तरह मधुर हमारे अमृत' । आश्चर्य ! मेरे प्रभु स्वयं मुझमें आ गये।आकाश पृथ्वी तथा सभी अन्य वस्तु हमारे भीतर आ गये।**3342**।**3118**

दिखावटी कुछ बातें मैंने बोलीं जबकि भीतर सचाई कुछ और थी, मिथ्या बातें जैसे 'उदार प्रभु' 'मणि वर्ण के प्रभु' आदि। छलपूर्ण स्वभाव को त्यागने पर आपका दर्शन हुआ तथा मुक्ति मिली। सागर में शयन करने वाले प्रभु ! कौन अन्य मेरा आश्रय हो सकता है ? **3343**।**3119**

यद्यपि मैं इस तरह से बोलता हूॅ 'हमारा अन्य कौन आश्रय है' 'दुष्ट जो मैं हूॅ' । मुझमें आत्मा को संसार से पृथक करने की शक्ति नहीं है।न तो मैं अपने हृदय को सशक्त बना सका। न अपने आंसू को सुखाकर आपके पास जा सका। मेरे कृष्ण ! कचरे से हटाकर मुझे अपने पास रख लो।**3344**।**3120**

हे कृष्ण, स्वर्गिकों के देव, श्याम मणि, अमृत आनन्द ! आपके पास आ गया हूॅ परंतु आपको पा नहीं सका हूॅ। हम दोनों के बीच में आपने एक शरीर को कर्म की मजबूत रस्सी से कस कर बांध रखा है तथा घाव पर मरहम लगाकर इस धोखाभरे वृहत संसार में फेंक दिया है। **3345**।**3121**

हे श्याम वर्ण के प्रभु ! आपने हमें पूरी तरह आलिंगन पाश में ले लिया है। पुनर्जन्म के

हमारे कर्म का क्षय हो गया है। आपके चार दिव्य हाथ लाल होंठ कमलनयन एवं हाथ में कारण तथा परिणाम का चक्र जी भर कर हमने देखा है। **3346।3122**

चक्रधारी प्रभु ! हमारे शासक प्रभु ! आप कहां हैं और मैं कौन हूँ ? हाथ को सिर पर रखकर मात्र यह कहते हुए 'हाथी के रक्षक' मैं आपका सच्चा प्रेमी बन गया हूँ तथा आप भी मेरे हो गये हैं। कितना भी शक्तिशाली कर्म हो जब आपकी कृपा होती है तो होगी ही। **3347।3123**

स्वर्गिकों एवं राजाओं से पूजित प्रभु आज पधारकर इस अधम हृदय में बस गये हैं। आज से आप हमारे माता, पिता, संतान, संपत्ति, मत्स्य नयना पत्नी, एवं सब कुछ हैं। **3348।3124**

समुद्री तूफान में फंसे जहाज की तरह आपातकाल का संकेत देते हुए जन्म के सागर में कांपते हुए खड़ा होकर मैंने पुकारा। अति उदारपन तथा करूणावश हमें सुनकर हाथ में शंख एवं चक्र लिये आप हमारे पास आये और हमारे साथ एक हो गये। **3349।3125**

हमारे भीतर एक विश्वासी सेवक की झलक देखकर आप उल्लसित होकर आये। अपनी करूणा एवं स्वेच्छा से आप हमारे साथ एक हो गये। देखो, श्याम प्रभु जो मत्स्य कच्छप नरसिंह वामन तथा सूकर स्वरूप में आये पुनः कल्कि स्वरूप में आयेंगे। **3350।3126**

बैल से जोते गये खेतों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित सुन्दर तमिल के हजार पद का यह दशक अरूणाभ राजीव नयन श्याम वदन प्रभु की प्रशस्ति गाता है। जो इसे गायेंगे वे सफल होकर प्रभु का चरणारविंद को पायेंगे। **3351।3127**

<u>पाचवां शतक का दूसरा दशक : **5।02** : पोलिग</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5।02।01 से 5।02।11 पासुर 3352 से 3362 या 3128 से 3138

<u>रामानुज स्वामी के आगमन की भविष्यवाणी</u>

जय होजय हो जय हो! अस्तित्व का शाप क्षीण हुआ। नरक नरम पड़ गया है। यम को अब यहां कोई काम नहीं है। देखो यहां तक कि कलि का अन्त हो जायेगा। सागर सा सलोने प्रभु का चैतन्य धरा पर समूह में पधारा है। हमलोगों ने उन्हें सर्वत्र गाते नाचते देखा है। **3352।3128**

हमलोगों ने आंखों को प्रिय लगने वाला दृश्य देखा है। हॉ देखा है, हॉ देखा है। आओ भक्तों ! पूजा अर्पित करो तथा प्रशस्ति गाकर आनंद में चिल्लाओ। तुलसी माला वाले माधव के चैतन्य प्रतिनिधि पृथ्वी पर घूम रहे हैं। वे खड़े पन्न गाते तथा सर्वत्र नाचते

दिखे हैं। **3353 । 3129**

कलि का लुढ़कता समय अंत को प्राप्त हो रहा है। देवगन भी प्रवेश पा गये हैं। सत्य युग का दिव्य समय शुरू हो गया है। धरा पर आनंद की बाढ़ आ गयी है। सागर सा सलोने प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि गीत गाते आ गये हैं। धरा के सभी स्थानों पर वे भर गये हैं। **3354 । 3130**

घास की तरह नास्तिकों का मत मूलोच्छेदित हो रहा है। सागर शयन करने वाले प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि बहुत सारे गीत गा रहे हैं। सोकर बैठकर खड़ा होकर चलकर उड़कर एवं नाचकर वे विस्मयकारी क्रीड़ा कर रहे हैं। **3355 । 3131**

प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि विस्मयकारी तरीके से पृथ्वी पर पधार गये हैं। वे सर्वत्र खड़े हैं तथा उनके कृत्य ही हमें दष्टिगोचर होते हैं। भक्तों ! संशय छोड़ दो ! अगर तुम्हारे बीच असुर या राक्षस होंगे तो वे बच नही सकेंगे एवं मृत्यु का दर्शन करेंगे। **3356 । 3132**

चक्रधारी प्रभु के भक्त यहां रूककर पृथ्वी को युद्ध, भूख, बुरे कार्य, तथा रोग से मुक्त रखेंगे। उन्मत्त नृत्य तथा प्रेमपूर्ण गीत के साथ वे सर्वत्र फैल गये हैं। सोचना बंद करों भक्तों जाओ उनकी पूजा कर अपनी रक्षा करो। **3357 । 3133**

जानलो कि तुम्हारे प्रिय देवगन तुम्हारी रक्षा केवल प्रभु की कृपा से कर सकेंगे। मार्क ण्डेय इसके प्रमाण हैं। संशय मत रखो कृष्ण को छोड़कर कोई देवता नहीं है। जो स्थित है वह सब आपका स्वरूप है अतः आपकी ही एकमात्र पूजा करो। **3358 । 3134**

आप देवों के नाथ हैं एवं सबलोकों में स्वयं ही देवगन हैं। जो भी तुम अपने देवों को अर्पित करते हो वो सब आपही स्वयं स्वीकार करते हैं। वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न वाले प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि धरा पर गीत गाते भर गये हैं। घृणा का तिरस्कार कर प्रेम का मार्ग चुनो। पूजा अर्पित कर अपने को मुक्त करो। **3359 । 3135**

संसार पावन जनों एवं भक्तों से भर गया है जो ज्ञान के मार्ग में बिना रूके अच्युत की पूजा खिले फूल सुगंधित अग्नि चंदन जल दीप तथा वैदिक मंत्रों से करते हैं। भक्तों ! प्रेमपूर्ण पूजा में भाग लेकर अपने को मुक्त करो। **3360 । 3136**

सभी महान लोकों में देवताओं का विशाल समूह शिव ब्रह्मा तथा इन्द्र के साथ खड़े होकर कृष्ण की पूजा करते हैं। भक्तों ! प्रेमपूर्ण पूजा में अगर तुम भाग ले सके तो कलि का प्रभाव नहीं रहेगा। **3361 । 3137**

कलि के विनाशक दिव्य कृष्ण आश्चर्यमय प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये प्रसिद्ध हजार पदों वाली रचना का यह दशक सुखदायी खेतों से घिरे नगर कुरूगुर के कारीमारन शठगोपन के शब्दों में हैं और भक्तों के हृदय को धो कर कज्जल करने वाले हैं।

3362 । 3138

<u>पाचवां शतक का तीसरा दशक ः **5 । 03** ः माशरू जोति</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 । 03 । 01 से 5 । 03 । 11 पासुर **3363 से 3373** या **3139 से 3149**

<u>सखियों से नायकी की वार्ता एवं मडल की धमकी</u>

बहन ! सर्वदा दिव्य निष्कलंक प्रथम कारण एवं लाल होंठ के रत्न पर्वत प्रभु की मैंने खोज की। कितनी देर पहले मैं उतावली होकर उन्मादग्रस्त हो गयी थी ! संसार की निन्दा से अब क्या क्षति होगी ? **3363 । 3139**

बहन ! हमारे अरूणाभ कमल नयन प्रभु ने हमें भावग्रस्त कर दिया है। हमारे गाल की लाली चली गयी। मेरा वदन क्षीण हो गया है। मेरे लाल होंठ एवं काली आंखों की रंग जाती रही हैं। लोकापवाद से अब क्या क्षति होगी ? **3364 । 3140**

बहन ! पूतना के स्तन से उसके प्राण चूसने वाले तथा भरी गाड़ी को पैरों से नष्ट करने वाले प्रभु ने हमें भावग्रस्त कर दिया है। रात दिन हम बड़बड़ाते रहते हैं परंतु प्रभु पर कोई असर नहीं। लोकापवाद से अब क्या क्षति होगी ? **3365 । 3141**

बहन ! श्याम वदन प्रभु ने हृदय में प्रेम का बीज बो दिया है। लोकापवाद ने अच्छा उर्वरक का काम किया है तथा मॉ के शब्दों ने खेत को सिंचित किया है। मेरी ईच्छा समुद्र की तरह बढ़ रही है। बताओ क्या कृष्ण संकीर्ण मन के हैं बहन ? **3366 । 3142**

बहन ! तुम्हारी कमर पतली है एवं हृदय क्षीण है। हो सकता है प्रभु धूर्त एवं स्वार्थी हों परंतु बहुत दूर हैं। हो सकता है प्रभु विश्व पर अधिकार करने वाले हों परंतु समझ के परे हैं। ओह बहन ! मेरा दुष्ट मन अभी भी उनकी चाह रखता है। मेरी मॉ क्या कर सकती हैं बहन ? **3367 । 3143**

बहन ! मॉ जो भी करे, संसार जो भी कहे, अभी से हमसे कोई प्रेम की अपेक्षा न करे क्योंकि मणिवर्ण वासुदेव तथा स्वर्गिकों के प्राचीन नाथ द्वारिकाधीश की जाल में हम पकड़ लिये गये हैं। **3368 । 3144**

गहरे सागर में हाथ में चक्र लिये शयन करने वाले प्रभु ने अपने जाल में पकड़कर हमारे नेक हृदय को अपने पास बुलाया है। आभूषित चौड़ी अधोभाग वाली बहन ! क्या हम अपनी आंखों से कभी उनको देख सकेंगें तथा एकत्रित सजनियों की उपस्थिति में पूजा कर सकेंगे बहन ? **3369 । 3145**

प्रभु ने राक्षसी का स्तन पिया, गाड़ी नष्ट किया, मरूदु वृक्षों के बीच गये, पक्षी का चोंच चीरा एवं मदमत्त हाथी का वध किया। आपकी मुस्कान मुक्तामय है तथा होंठ मूंगा जैसे

हैं।अहा बहन ! हम कब आपके पास पहुंच कर इन नारियों को लज्जित कर सकेंगे बहन ? **3370** | **3146**

प्रभु ने हमारी लाज को चुराकर हमारे हृदय को अपने पास बुला लिया है। स्वर्गिकों के साथ आप ऊंचे स्वर्ग में रहते हैं। संसार अपवाद करता रहे मैं शपथ लेती हूँ कि अनियंत्रित रहकर नारियल वृक्ष के धड़ की सवारी कर मडल कर लूंगी। **3371** | **3147**

गलियों से नारियल वृक्ष के धड़ की सवारी करने पर नारी की गरिमा का त्याग करने से संसार जो भी अपवाद करे, भद्दी बातें बोले, हमलोग चक्रधारी प्रभु की तुलसी फूल पहन कर अपने को शांत करेंगे। **3372** | **3148**

गरजते सागर के समान श्यामल वर्ण वाले कृष्ण की प्रशंसा में सुगंधित फूल के बागों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित अंतादि से भरपूर हजार पद के इस दशक का जो गान कर सकेंगे वे जहां कहीं भी रहेंगे वैकुंठ प्राप्त करेंगे। **3373** | **3149**

<u>पाचवां शतक का चौथा दशक ः **5**।**04** ः ऊरेल्लाम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5।**04**।**01 से 5**।**04**।**11 पासुर 3374 से 3384 या 3150 से 3160**

<u>नायकी भाव में अर्न्तमन की व्यथा स्वयं को सुनाती है।</u>

संसार सोता है एवं घना अंधकार छा गया है। जल शांत हो गया है। रात शाश्वतकालीन लंबी हो गयी है। धरा को निगलने वाले प्रभु शेषशय्या पर शयन करते हैं। हाय ! वे आते नहीं कौन हमारे पापी मन को बचायेगा ? **3374** |**3150**

एक भयावनी छाया धरा सागर तथा आकाश को निगल कर डरावनी रात में बदल गयी है। मेरे दिव्य कृष्ण नहीं आते। हाय ! मेरा पापी हृदय भी मेरे साथ नहीं है, कौन हमें अब बचायेगा ? **3375** |**3151**

हे हृदय ! देखो तुम हमारे साथ नहीं हो। लंबी रात एक युग में बदल गयी है। अग्नि समान धनुष चलाने वाले हमारे काकुत्स्थ प्रभु आते नहीं। पापिनी एक नारी के रूप में जन्म लेने वाली ! कैसे अपना जीवन का अंत करूं मुझे नहीं पता। **3376** |**3152**

एक व्यथित किशोरी की स्थिति को देखने में असमर्थ तेजोमय सूर्य भी छिप गया है। मेरे काले वृषभ ! बड़ी आंखें एवं लाल होठ वाले प्रभु नहीं आते। हाय ! कौन हमारे प्रेमरोग को ठीक कर सकता है ? **3377** |**3153**

कौन मेरी खबर लेगा ? बिना पूछे मुझे क्या हुआ है। मेरी माँ एवं मेरी सखी रात को सो गयी हैं।मेरे श्याम रंग के कृष्ण भी नहीं आते। धूर्ता मैं ! मेरा नाम मेरे बारे में कहानी बनायेगी परंतु मुझे मरने नहीं देगी। **3378** |**3154**

असाध्य प्रेम रोग मेरे हृदय को व्यथित करता है। मेरी धंसी हुई आंखों पर युग कालीन अंधेरा छाया है। शाश्वत चक्रधारी प्रभु भी नहीं आते। इस प्राणी को पृथ्वी पर कौन रक्षा कर सकता है ? **3379 । 3155**

आकाश काली चूर्ण से घने रूप से भरा है।लंबी रात युग की तरह बड़ी हो गयी है। धवल शंख एवं चक्र के प्रभु प्रकट नहीं होते। हे देवगन ! हम क्या करें ? हमारे कृत्य अग्नि की तरह दुष्ट हैं। **3380 । 3156**

हे देवगन ! अकेली रात सात युग की तरह बड़ी हो गयी है तथा हम पर छा गयी है और मेरे हृदय को क्षीण कर रही है।हाय ! चक्रधारी कृष्ण नहीं आते। बसंत की शीतल हवा आग की तरह झुलस रही है। हम क्या करें ? **3381 । 3157**

अंधकार सूक्ष्म कालिमा से घनीभूत हो आग की तरह जलाती है। सूर्य का सुन्दर रथ प्रकट नहीं होता। हाय ! कमल समान आंख वाले संपन्न प्रभु भी नहीं आते। कौन हमारे हृदय की व्याधि को ठीक कर सकता है ? हाय ! मैं खड़ी होकर पिघल रही हूँ। **3382 । 3158**

हमारी तरह रात में आकाश भी पिघलकर काली बूंदें विखेर रहा है। संसार बेखबर सोया है और हाय ! एक बार भी नहीं कहता कि तब धरा को मापने वाले प्रभु नहीं आयेंगे। **3383 । 3159**

शयनावस्था में योग निद्रा वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये चमकीले रंगीन अंतादि के हजार पदों वाली रचना का यह दशक ऊत्तम बागों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के हैं।इसे गाने से मृत्यु के पश्चात स्वर्ग मिलेगा। **3384 । 3160**

<u>पाचवां शतक का पाचवां दशक ः **5 । 05** ः एङङनेयो</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 । 05 । 01 से 5 । 05 । 11 पासुर **3385 से 3395 या 3161 से 3171**

<u>नायकी भाव में तिरूकुरूंगुडी के प्रभु की प्रशस्ति</u>

तिरूकुरूंगुडी के आकर्षक प्रभु को देखने के बाद हमारा मन आपके शंख चक्र कमल जैसी आंखें तथा अद्वितीय मूंगा जैसे होंठ के लिये तरस रहा है। सजनी ! अब हमें कैसे दोष लगाओगी ? **3385 । 3161**

हमें दोष न लगाओ हमारे हृदय की आंखों से देखो।जबसे हमने नारियल बगान वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है आपका जनेऊ, कान का हीरा, श्रीवत्स, सुन्दर गहने एवं चारो हाथ सर्वत्र हमारे सामने दिखते रहते हैं। **3386 । 3162**

माँ ! तुम हमें यह कह कर दोष लगाती हो 'यह खड़ी होती है लड़खड़ाती है एवं अचेत हो

जाती है'। जबसे हमने ऊंचे महलो वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है आपका विजयी धनुष़ गदा खड्ग़ चक्र एवं शंख हमारी आंखों एवं मन से बिना विस्मृत हुए सर्वत्र दिखते रहते हैं। **3387 | 3163**

मॉ ! तुम हमारी आंखों से सर्वदा प्रवाहित आंसू देखकर हम पर दोष लगाती हो। जबसे हमने अमृतमय बाग वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है आपकी तुलसी फूल की सुन्दर माला़ आपका सुनहला मुकुट़ आपका मुखारविंद़ रेशमी जनेऊ एवं कमरधनी हमारे क्षुद्र मन में कौंधते रहते हैं। **3388 | 3164**

मॉ ! तुम हमें यह कह कर दोष लगाती हो 'यह खड़ी होती है़ एकटक देखती है़ एवं अचेत हो जाती है'। जबसे हमने महान यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है़ आपका दिव्य मूंगा जैसा होंठ लंबी भौंहें एवं सुन्दर कमल सी आंखों ने हमारे क्षुद्र मन को भावग्रस्त कर लिया है। **3389 | 3165**

जबसे हमने शांत बाग वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है़ आपकी पतली नाक़ कमल सी आंखे़ं मूंगा जैसा होंठ़ श्याम वदन एवं चार कंधों ने हमारे हृदय को पूरी तरह भर दिया है। मेरी मॉ यह कहते हुए दूसरों को हमसे मिलने नहीं देती 'यह लड़की हमलोगों के निर्मल यश को कलंकित करेगी'। **3390 | 3166**

जबसे हमने महान यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है़ आपका अतिसुन्दर एवं पूर्णतया तेजोमय दिव्य स्वरूप हमारे हृदय में घर कर गया है। आप सर्वत्र हाथ में चक्र लिये दिखते हैं। मेरी मॉ कहती है 'हमलोगों के निर्मल कुल की यह कलंक है'। **3391 | 3167**

सजनी ! हमें यह कह कर आपलोग दोष लगाती हैं 'यह अपने मुखड़ा को हाथ में छिपाकर अचेत हो जाती है'। जबसे हमने ऊचे महलों वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है़ आपकी अरूणाभ कमलनयऩ, अधोभाग़, पतली कमऱ, मुखड़ा़, लंबी काली लटें, एवं विस्तृत कंधे हम पापिनी के समक्ष दिखते रहते हैं। **3392 | 3168**

सजनी बहनें ! हमें यह कह कर आपलोग दोष लगाती हैं 'तुम कलंक हो'। जबसे हमने मजबूत महलों से घिरे तिरूकुरूंगुडी के दूध एवं शक्कर सा मृदु प्रभु को देखा है़ आपका ऊंचा मुकुट एवं अनगिनत गहनें कभी भी हमारे हृदय को नहीं छोड़ते। **3393 | 3169**

हमारी मॉ किसी को हमसे यह कहते हुए नहीं मिलने देती 'यह दिनानुदिन कामी होती जा रही है'। जबसे हमने शाश्वत यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है़ आपका तेजोमय आभा से उत्प्लावित वदन स्वर्गिकों के समूह से पूजित हमारे हृदय में प्रकट दिखता है जो कि दूसरों के समझ से परे है। **3394 | 3170**

कुरूगुर के गोरे वदन शडगोपन के चिरपरिचित हजार पद का यह दशक अगम्य चक्रधारी तिरूकुरूंगुडी के प्रभु की सेवा में फूल के साथ गाया जाता है। जो इसे समझकर गायेंगे वे इस धरा पर स्थित रहते हुए विष्णु से एकाकार हो जायेंगे। **3395 | 3171**

पाचवां शतक का छठा दशक ः **5 | 06** ः कडल्ञालम्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 | 06 | 01 से 5 | 06 | 11 पासुर 3396 से 3406 या 3172 से 3182

नायकी की मॉ की चिन्ता **5**

मेरी बेटी धरा पर यह गाते हुए घूमती है 'हमने धरा बनाया, हम ही धरा एवं सागर हैं। हमने ही धरा को अधिकार में लिया, हमने ही धरा को ऊपर उठाया, हमने ही धरा को निगल लिया।' क्या धरा एवं सागर के प्रभु ने इसे भावग्रस्त कर लिया है ? धरावासियों ! कैसे मैं आपको यह समझाऊं ? **3396 | 3172**

मेरी बेटी गाती है 'मैं ज्ञान की परिधि से बाहर हूॅ, मैं ही वह ज्ञान हूॅ, मैंने ही उस ज्ञान को उत्पन्न किया है'। क्या ज्ञान के प्रभु इस पर विराजमान हो गये हैं ? ज्ञानीजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3397 | 3173**

भावग्रस्त बेटी जो करती है ! यह कहती है 'धरा मैं हूॅ। आकाश मैं हूॅ। अग्नि मैं हूॅ। वायु मैं हूॅ। सागर मैं हूॅ।' क्या सर्वदृष्टा प्रभु इसमें प्रवेश कर गये हैं ! संसार के साक्षीगन ! मैं क्या बताऊं ? **3398 | 3174**

लाल होंठवाली बेटी जो कहती है ! 'जो हो रहा है मैं हूॅ। जो बचा हुआ है वह मैं हूॅ। जो हो चुका है मैं ही हूॅ। मैं सभी कृत्यों के फल को चखता हूॅ। प्रेरणा मैं ही हूॅ।' क्या राजीवनयन प्रभु ने इसे भावग्रस्त कर लिया है ? संसार के श्रेयजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3399 | 3175**

मेरी बेटी कहती है 'बिना निष्फल हुए मैं संसार पर शासन करता हूॅ। अपनी शक्ति दिखाते हुए हमने पर्वत उठा लिया। असुरों का नाश किया एवं पांचजनों की रक्षा की। सागर हमने ही मथा। क्या सागर सा सलोने प्रभु ने इसे अधिकार में ले लिया है ? संसार के महानजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3400 | 3176**

मेरी मत्स्य नयना बेटी बड़बड़ाती है 'गोप कुल का मैं प्रधान हूॅ। मैंने ही गायों को चराया। मैंने ही पर्वत उठा लिया। मैंने ही गायों की रक्षा की। मैंने ही सात वृषभों का नाश किया।' स्वर्गिकों के देव ने क्या इसे भावग्रस्त कर लिया है ? संसार के महानजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3401 | 3177**

मेरी प्यारी बेटी बड़बड़ाती है 'मेरे कोई मित्र नहीं हैं' । तब कहती है 'यहां सभी हमारे मित्र हैं। मैं ही संबंध जोड़ता हूं। मैं ही संबंध विच्छेद करता हूं। मित्रों के बीच का बंधन मैं ही हूं।' अद्वितीय प्रभु ने क्या इसे भावग्रस्त कर लिया है ! संसार के मित्रभाव वाले लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3402 | 3178**

मेरी सुकुमारी लाड़ली कहती है 'तीन आंख वाले देव की बात करते हो ॠ वह मैं ही हूं। चतुरानन मै हूं। स्वर्गिक जन मैं हूं। स्वर्गिकों का नाथ मैं हूं। संतजन भी मैं ही हूं।' क्या मेघ रंग वाले प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के बातकरने में दक्ष लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3403 | 3179**

मेरी सुकुमारी लाड़ली धूर्त जैसी कहती है 'मैं किसी तरह का धूर्त नहीं हूं। तब कहती है 'कृत्यों की धूर्तता मैं ही हूं। मैं धूर्त का उद्धारक हूं। मैं धूर्त कृत्यों का कर्ता हूं। मैं धूर्त लंका का विनाशकर्ता हूं' । क्या गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के धूर्त लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3404 | 3180**

मेरी सुन्दर बेटी चिल्लाती है 'सुन्दर स्वर्ग मैं हूं। गंदा नरक मैं हूं। तेजोमय मुक्ति मैं हूं। सुन्दर आत्मा सब मैं ही हूं। सुन्दर प्रथम कारण मैं ही हूं। क्या मेघ रंग के प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के धूर्त सुन्दर लोगों ! **3405 | 3181**

उपजाऊ वलुदी पांडया राज्य का नगर कुरूगुर के शडगोपन के चयन किये हुए तमिल के हजार पद की माला का यह दशक श्री देवी, भूदेवी, एवं नीला देवी के पतिदेव की प्रशस्ति है। जो इसे गा सकेंगे वे प्रभु के भक्तों की सेवा अपार संपति से करेंगे। **3406 | 3182**

<u>पाचवां शतक का सातवां दशक ः **5 | 07** ः नोट्र नोन्बु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 | 07 | 01 से 5 | 07 | 11 पासुर 3407 से 3417 या 3183 से 3193

शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहने वाले प्रभु जहां लाल कमल एवं धान की बहुतायत है। मैंने तपस्या नहीं की है और न हमें सूक्ष्म मेधा प्राप्त है। तबभी हम एक क्षण के लिये भी आपसे अलग नहीं रहना चाहते हैं। क्या बहुतों में से मैं वहां एक हूं ? **3407**

लंका के नाशकरने वाले प्रभु ! मैं न तो यहां हूं और न वहां हूं। आपके दर्शन की इच्छा से ग्रस्त मैं कहीं नहीं हूं। चांद से रक्षित ऊंची महलों वाला शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहने वाले शंख चक्रधारी प्रभु ! विनती है इस भूले प्राणी पर कृपा कीजिये। **3408**

चक्र एवं गरूड़ ध्वज वाले वैकुंठ के श्यामल प्रभु ! इस तुच्छ प्राणी को बनाकर आपने अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया। अनेकों वैदिक ऋषियों वाला शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहने वाले प्रभु ! आपने वहीं से कृपा दिखायी है। मैं नहीं जानता कैसे इस उपकार का बदला चुकाऊं ? **3409**

पृथ्वी को उठाने वाले प्रभु ! पांच पांडवों के लिये आपने कौरवों से लड़ाई लड़कर उन्हें धूल में मिला दिया। आप वैदिक ऋषिगन से घिरे शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहने आये हैं जहां अनवरत वैदिक यज्ञ होता है। मैं आपसे वहीं मिलने के लिये पुकार रहा हूँ। **3410**

कण कण में व्याप्त रह कर विस्मयकारी कृत्यों को करने वाले श्यामल प्रभु ! क्या यह संभव है कि मैं आपको बुलाऊं ? शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै के प्रभु जहां ईश्वरीय जन वैदिक यज्ञ करते हैं। यह मैंने देखा है कि आप पूजा के लिये उपलब्ध हैं। **3411**

वराह स्वरूप में आने वाले वैकुंठ के तेजोमय श्यामल प्रभु ! मेरे पिता मेरे कृष्ण महान स्वर्गीय पर्वत वानमामलै के हमारे सर्वदा के लिये नाथ आप मधुर आम के बाग वाले शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै के लोगों से पूजित हैं। विनती है मेरे पास आईये जिससे कि मैं आपकी पूजा कर सकूं। **3412**

अतृप्त अमृत ! प्रथम प्रभु ! मेरा शरीर आपके प्रेम में पिघलता है। आपने हमें रूलाकर अश्रांत जल की तरह तड़पन की स्थिति में रखा है। हमने आपके तेजोमय स्वरूप को तिरूकुडन्दै में देखा है जहां आप उपजाऊ जल में शयन करते हैं और धान के पौधे चवर की तरह हवा करते हैं। **3418**

भ्रम उत्पन्न करने वाले ये दुष्ट इन्द्रियां जो आपकी दी हुई हैं एक दिन मुझे छोड़ देंगे। यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। जरा देखिये आपने भी मेरा त्याग कर मुझे कचरे के ढ़ेर में डाल दिया है। शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै के निवासी प्रभु जहां ऊंचे महल चमकते हैं। आपने पक्षी का चोंच चीर डाला एवं आपके पास पहुंचना कठिन है। **3414**

पक्षी के चोंच चीरने वाले प्रभु मरूदु वृक्षों में घुस गये। आपने सात वृषभों का नाश किया। मणि वर्ण के तेजोमय धूर्त प्रभु ! अनेको स्पष्ट मत वाले वेद के पूर्ण ज्ञाता शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहते हैं। मेरे प्रभु इनके मध्य में स्थित हैं। विनती है मुक्ति का मार्ग बताईये। **3415**

शीतल तुलसी की माला पहने स्वर्गिकों के नाथ ! धान एवं गन्ना के ऊंचे पौधे वाले

शिरीवरमंगल नगर तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै में रहते हैं।आपने अपने चरण मुझे एकमात्र आश्रय के रूप में तथा मार्ग के रूप में दिया है। हमारे पास कृतज्ञता वश देने के लिये कुछ है भी नहीं। यहां तक कि मेरा हृदय भी आपका ही है।**3416**
सुन्दर फूल के बागों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार तमिल पद का यह दशक देवनायक् नारायण् एवं त्रिविक्रम प्रभु के चरण की प्रशस्ति में है। जो इसे गा सकेंगे वे स्वर्गिकों के सदा अमृत समान प्रिय बने रहेंगे। **3417**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **91**। शिरीवरमंगल नगर या नांगुनेरी या तोतादरी या वानमामलै ः
1।स्थान ः यह स्थान नांगुनेरी या वानमामलै या तोताद्री के नाम से प्रसिद्ध है। तिरूनेलवेली से करीब **30** कि मी पर सड़क मार्ग से आसानी से जुड़ा हुआ है। तिरूकुरूंगुडी से यह **13** कि मी पर अवस्थित है।
2।विग्रह स्वरूप ः यहां मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा पार्श्व में दोनों लक्ष्मी विराजमान हैं। मूलावर को तोताद्री नाथ एवं उत्सव मूर्ति को देवनायक कहते हैं। भृगु एवं मार्कण्डेय मुनि गर्भगृह में विराजते हैं। यहां की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी शिरीवरमंगै के नाम से जानी जाती हैं। पेरूमाल का यहां शिरीवरमंगै से परिणय हुआ था। तीर्थ इन्द्रपुष्करणी है तथा विमान को नंदवर्द्धन कहते हैं। आम यहां का स्थल वृक्ष है तथा ब्रह्माण्ड पुराण एवं स्कंद पुराण स्थल पुराण है।
3।महिमा ः यह स्थान आठ स्वयं व्यक्त स्थानों में से एक है ः बदरी् शालग्राम् नैमिषारण्य् पुष्कर् तिरूमला् श्रीरंगम् श्रीमूषण तथा तोताद्री। यहां भगवान को तिल के तेल से स्नान कराया जाता है जो महान औषधि के रूप में लिया जाता है। मानवला मा मुनि यानी वरवर मुनि स्वामी द्वारा स्थापित आठ गद्दियों में से एक है एवं पीठाधीश्वर वानमामलै जीयर के नाम से जाने जाते हैं। यहां मानवला मा मुनि की अंगूठी है जो इप्पसी यानी आश्विन माह में मूल नक्षत्र में उत्सव में दर्शनार्थ बाहर लायी जाती है। प्रार्थ ना करके आदिशेष पेरूमाल के आसन बने।इसलिये इसे 'नागन अन्नै च्वेरी' कहा गया जो कालक्रम में अपभंश होकर नांगुनेरी हो गया। वनों एवं उद्यानों से घिरे रहने के कारण इस वानमामलै कहा गया। यहां चार सरोवर हैं इसलिये इसे 'नांगु एरी' यानी नांगुनेरी कहा गया।
तिलोत्तमा तथा उर्वशी ने ब्रह्मा से चिरंजीवी होने का वर मांगा। बह्मा ने दोनों को यहां सेवा के लिये भेज दिया। दोनों गभगृह में विराजमान होकर पेरूमाल को पंखा की सेवा करते हैं। एक चेरा नरेश संतान की इच्छा से तिरूकुरूंगुडी गया था। भगवान ने स्वप्न

देकर यहां भेजा तथा जमीन के नीचे छिपे विग्रह का निकालकर मंदिर बनाने का आदेश दिया। जमीन से विग्रह निकालने में विग्रह को चोट लग गयी तथा रक्त प्रवाहित होने लगा। राजा ने तेल एवं औषधि से उपचार किया। तेल के उपचार की प्रथा आज भी जारी है। चूँकि भगवान आहत हो गये थे इसलिये भोजन में पथ्य दिया गया जिसमें लाल मिर्च का प्रयोग नहीं किया गया। आज भी यहां के प्रसाद में लालमिर्च का उपयोग नहीं होता है।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3407** से **3417** । शतक **5** । **07**

ःः

पाचवां शतक का आठवां दशक ः **5** । **08** ः आरावमुदे

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 । **08** । **01** से **5** । **08** । **11** पासुर **3418** से **3428** या **3194** से **3204**

नायकी भाव में तिरूकुडन्दै प्रभु से नोक झोंक

अतृप्त अमृत ! प्रथम प्रभु ! मेरा शरीर आपके प्रेम में पिघलता है। आपने हमें रूलाकर अश्रांत जल की तरह तड़पन की स्थिति में रखा है। हमने आपके तेजोमय स्वरूप को तिरूकुडन्दै में देखा है जहां आप उपजाऊ जल में शयन करते हैं और धान के पौधे चवर की तरह हवा करते हैं। **3418** । **3194**

मेरे प्रभु मेरे शासक मेरे शुद्ध प्रतीक चिह्न मेरे सुन्दर काले वृषभ ! आप स्वेच्छा से कोई भी स्वरूप धारण करते हैं। आप तिरूकुडन्दै में कमल फूल से भरे जल में शयन करते हैं। आपकी स्वप्निल आंखें फूल के समान दिखती है। अहा ! मैं क्या कर सकती हूँ ? **3419** । **3195**

मैं क्या कर सकती हूँ ? आपने मेरे लिये क्या किया है ? कौन हमारी रक्षा कर सकता है ? पत्थर की दीवार से घिरे तिरूकुडन्दै में आप शयन करते हैं। आपके अतिरिक्त किसी अन्य से मैं रक्षा की पुकार नहीं करती। विनती है हमारा बचा हुआ जीवन आपके चरणारविंद के आश्रय में बीते। **3420** । **3196**

सदा ज्ञान सीखने में रत ऋषियों से अगम्य प्रभु ! अनंत प्रभु ! आपके स्वरूप में सारा विश्व है। अत्यंत श्रेय जनों से घिरे तिरूकुडन्दै में आप शयन करते हैं। आपके दर्शन का आकांक्षी मैं अव्यवस्थित आकाश को देखकर रोती हूँ तथा विनती करती हूँ। **3421** । **3197**

मैं रोती हूँ तथा विनती करती हूँ। नाच गाकर आपकी सर्वदा प्रशस्ति गाती हूँ। दूर देखकर अपने कृत्यों के लिये अपना सिर लज्जा से झुका लेती हूँ। तिरूकुडन्दै के

उपजाऊ खेतों में शयन करने वाले राजीव नयन प्रभु ! विनती है कि इस पश्चाताप करती आत्मा को अपने चरणारविंद का मार्ग दिखाइये। **3422।3198**

स्वर्गिकों के प्रभु ! चिरंतन गौरव वाले लोगों से घिरे तिरूकुडन्दै में शयन करने वाले पभु ! हे वीणा की ध्वनि अमृत प्रसन्नता ज्ञान के फल, सिंहों के राजा, हमें कर्मो से मुक्त कर दीजिये। अवश्य मार्ग बताईये हमें आप तक पहुंचने की चाह है। कब तक मैं यहां अंतहीन गडढ़े को भरती र हूँगी ? **3423।3199**

सिंहों के राजा सुनहला तेज़ अरूणाभ नयन मेघ वदन प्रभु ! मूंगा के चमकते पर्वत चार भुजाओं के प्रभु ! तिरूकुडन्दै के प्रभु ! अपनी करूणा से आपने हमें बंधुआ प्राणी बना लिया। अब अपना संरक्षण देकर हमें जन्म से मुक्त कीजिये। अब इससे ज्यादा हम नहीं सहन कर सकते। **3424।3200**

तीक्ष्ण चक्र धारण किये तिरूकुडन्दै के शयन किये अति आश्चर्यमय प्रभु ! आप मेरी यातना का अंत करें या न करें आप ही मेरे एक मात्र आश्रय हैं। जब यह शरीर थक जाये एवं मेरा अंत आ जाये कृपा करके अपने चरण में स्थान प्रदान कीजिये। **3425।3201**

प्यार से अपने चरण में बांधने वाले प्रभु ! गतिहीन देवों के स्वामी ! चमकते रत्न वाले तिरूकुडन्दै में शयन किये प्रभु ! प्रथम कारण सभी लोकों से प्रशंसित प्रभु ! विनती है आइये जिससे कि आपका दर्शन मिले। **3426।3202**

बिना स्वरूप के प्रभु जो स्वेच्छा से मनचाहे स्वरूप धारण करते हैं। अतृप्त अमृत हमारे हृदय के आनंद तिरूकुडन्दै के निवासी ! हमारे अंतहीन कर्म का अंत कर हमें संरक्षण प्रदान करनेवाले ! आपके सेवक होने पर भी हमें यातनाग्रस्त रहना ही होगा ? **3427।3203**

बांसुरी से भी मधुर हजार गीतों का यह दशक कुरूगुर शडगोपन से गाये हुए हैं जो पूतना राक्षसी का स्तन चूसते हुए उसके प्राण चूसने वाले कृष्ण के चरणाश्रित हैं। जो इसका त्रुटिरहित गान करेंगे वे मृगनयनी किशोरियों से पूजे जायेंगे। **3428।3204**

पाचवां शतक का नौवां दशक ः **5।09** ः मानेय नोक्कु

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5।09।01 से 5।09।11 पासुर 3429 से 3439 या 3205 से 3215

नायकी भाव में सखियों से वार्ता

मृगनयनी सखियां ! यह क्षुद्र दिनानुदिन क्षीण हो रही है। प्रभु तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां गगनचुंबी अरेका वृक्ष सुगंध विखेरते चमेली के बाग तथा मधु टपकाते फल के

बगानों के बीच हैं। हाय ! कब यह भक्तिन प्रभु के चरण को प्राप्त कर सकेगी ? **3429 | 3205**

सखियां ! हमें इस तरह से पीड़ित क्यों करती हो ? प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां सुनहले पुन्ने मगिळ एवं माधवी फूलों की महक हवा मे व्याप्त है। हाय ! कब हमलोग आपके चरण रज हम अपने सिर पर धारण कर सकेंगे ? **3430 | 3206**

फूल के जूड़े वाली सखियां ! हम स्वयं वेदना हैं। हम क्षीण हो गये हैं। प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां वैदिक वेदी का सुगंधित धुंआ उठता है तथा शमन लोग सागर गर्जन की तरह पाठ करते हैं। हाय ! कब हमलोग आपके चरण बिना व्यवधान के देख सकेंगे ? **3431 | 3207**

सखियां ! हमें इस तरह से सर्वदा पीड़ा क्यों देती हो ? फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां पाऩ कटहल़ अरेका़ नारियल़ एवं कदली के बागों से घिरे ऊंचे महल स्थित हैं। प्रभु की कुशलता हमारे लिये श्रेयस्कर है। **3432 | 3208**

अच्छे स्वभाव की सखियां ! वैदिक ऋषि के वेदी से यज्ञ का धुंआ तिरूवल्लवाळ में बादल की तरह छाये है। यहां मधुर अमृत़ फल़ एवं मिश्री जैसे प्रभु ने हमारी कुशलता चुरा ली है। हाय ! कब हमारी आंखें प्रभु के तेजोमय वदन को देखेंगी ? **3433 | 3209**

वैर की तरह होठ वाली सखियां ! सुन्दर वामन की तरह आने वाले प्रभु उपजाऊ तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां ताजी हवा के घने बागों में ऊंचे वृक्ष हैं तथा मधुमक्खियां वीणा की धुन की तरह मंड़राती हैं।हाय ! कब यह अभागिन प्रस्फुटित कमल समान चरण देखेगी ? **3434 | 3210**

नेक सखियां ! विश्व को निगलने वाले हमारे नाथ एवं प्रभु तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां कुमुद एवं कमल बड़े ताल में ऊंचे बढकर आभापूर्ण नारियों की आंख एवं मुखड़ा तक पहुंच जाती हैं।हाय ! कब हम आपके चरण फूल से हर दिन पूजेंगे ? **3435 | 3211**

चमकते ललाट की सखियां ! विश्व को मापने वाले प्रभु फूलों से भरे अनेकों खेतों से घिरे तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां गन्ना धीरे से झूमते हैं तथा सभी दिशाओं में पके सुनहले धान भरे हैं।हाय ! कब हम आपके चरण हर दिन बिना व्यवधान के पूजेंगे ? **3436 | 3212**

शाश्वत करूणास्वरूप एवं घूमते चक्र को धारण करने वाले प्रभु शीतल बागों के बीच

तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां युवा भौंरे मधु पीकर बांसुरी एवं वीणा की तरह गूंजते हैं। कब हम आपके स्वरूप की पूजा कर अपने कंगन फिर से पहन सकेंगे ? **3437 । 3213**

सखियां ! हमारे प्रभु अनेको हजार भक्तों से अति प्रशंसित हैं। धरा एवं स्वर्ग सुन्दर नगर तिरूवल्लवाळ में रहने वाले नारायण की चिरंतन करूणा से परिचित हैं। हमारा कब सौभाग्य होगा कि हम आपके नाम का गान प्रेम से कर सकेंगे ? **3438 । 3214**

ज्ञानवान एवं समझदार कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक शांत तिरूवल्लवाळ के बारे में गाये हुए हैं और हजार नाम वाले प्रभु की प्रशस्ति में प्रस्तुत हैं। जो इसे गा सकेंगे वे इस जगत में सर्वोत्तम सफलता पायेंगे। **3439 । 3215**

पाचवां शतक का दसवां दशक ः **5 । 10** ः पिरन्दवारूम्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

5 । 10 । 01 से 5 । 10 । 11 पासुर **3440 से 3450** या **3216 से 3226**

आपका जन्म, बचपन, महाभारत में पांच के पक्ष में आपकी शक्ति, ये सब आश्चर्यमयी घटनायें हमारे हृदय को बराबर कौंधती हुई हमारी जीवात्मा को आत्मसात कर ले रही हैं। सबसे ऊंचे तेजोमय प्रभु ! कब आपसे हम मिल पायेंगे ? **3440 । 3216**

नप्पिनाय के हाथ के लिये वृषभों का शमन, भयानक घोड़ा का जबड़ा चीरना, जूड़े वाली प्रिय गोपियों के साथ रासलीला आदि को इस इस तरह से वर्णन करना कठिन है। आपके अनेकों कृत्यों के कारण हम क्षीण काय होते गये हैं। विश्व के प्रथम कारण प्रभु ! कब आपसे हम मिल पायेंगे ? **3441 । 3217**

पूतना के स्तन पीते शिशु के दिव्य चरणारविंद से गाड़ी को नष्ट करने का शौर्य ! यह सुनकर कि आपने मक्खन चुराया है, मां जब छड़ी लेकर खड़ी हो गयी थी, भय से आंखों में आंसू भरकर खड़ा होना ये सब हमारे हृदय को द्रवित करते हैं। **3442 । 3218**

जटाधारी शिव का वेष बदल कर असुरों के नगर में चुपके से प्रवेश कर उनका समूह में नाश करना, तब आपके वदन में विलीन हो जाना, ये सब हमारे हृदय में घुसकर हमारी आत्मा को द्रवित करते हैं। **3443 । 3219**

इन्द्र के लिये एकत्रित भोज्य पदार्थ को चमत्कारिक रूप से गटक जाना तब पर्वत को उठाकर भीषण वर्षा को रोकना, आापका विश्व को बनाना, निगलना, एवं फिर बाहर कर देना, आपका धरा को मापना एवं भूदेवी से व्याह रचाना, ये सब हमारे हृदय को अग्नि में मोम की तरह द्रवित करते हैं। **3444 । 3220**

आपके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विस्मयकारी कृत्य अनगिनत हैं। खड़े बैठे एवं शयन के

अवस्था वाले प्रभु ! सोच सोच कर भी आपको समझ नहीं पाता। धरा को निगलने वाले तेजोमय प्रभु ! इस पापी को मार्ग दिखाइये। **3445 । 3221**

मेरे प्रति किये गये आपके कृत्यों को सोचकर मैं अचेत हो जाता हूँ ः अंधकार के बीच तेज, एवं मिथ्या के बीच सच। मेरे मणिवर्ण के प्रभु ! मात्र एक दिन पधारिये जिससे कि हमारी आंखें आपका स्वरूप देखकर तृप्त हों तथा मैं उसे अपने भीतर जी भरकर भर सकूं। **3446 । 3222**

जब आपके शयन स्वरूप के बारे में लाल नाभिकमल पर ब्रह्मा को बैठने के बारे में, सृष्टि के महान कार्य में आपका गर्भ में प्रवेश करने के बारे में, एवं सबके ऊपर आपका सार्वभौम सत्ता के बारे में सुनता हूँ तो मेरा हृदय पिघल जाता है एवं आंखे आंसू से भर जाती हैं। ओह ! मैं क्या करूं ? **3447 । 3223**

तीन पग जमीन की भिक्षा मांगकर अपना स्वरूप को बढ़ाते हुए दो पगो में धरा गगन एवं सागर को मापकर किस तरह आप अपना लक्ष्य साधते हैं ये सब सुनकर मेरा हृदय केवल आपके लिये द्रवित होता है। यह दुष्ट कार्मिक जीव कब आपसे मिलेगा ? **3448 । 3224**

जिस तरह से आपने अमृत के लिये समुद्र मंथन में हिस्सा लिया, असुरों को अकेले करने की युक्ति से देवों की सहायता की, ये सब हमारे हृदय मे प्रवेश कर हमारी आत्मा को पिघलाते हैं। विषैले शेष शय्या के प्रभु ! बताइये कैसे मैं आपको प्राप्त करूं ? **3449 । 3225**

अंतादि सहित हजार पद का यह दशक कुरूगुर शडगोपन की रचना है जो एकाग्र चित्त से शेषशायी प्रभु के चरणारविंद की एकमात्र आश्रय के रूप में अर्चना करने को बताती है। जो इसको याद करलेंगे वे सदा के लिये ऊंचे वैकुंठ में रहेंगे। **3450 । 3226**

छठा शतक का पहला दशक ः **6 । 01** ः वैगलपूङ्गळि

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 । 01 । 01 से 6 । 01 । 11 पासुर 3451 से 3461 या 3227 से 3237

नायकी दूत भेजकर प्रभु को अपनी स्थिति से अवगत कराना चाहती है।

फूल से भरे सदा नमीपूर्ण जमीन से कीड़ा चुनने वाले पक्षी ! बेर जैसे होंठ एवं हाथ में चक्र धारण करने वाले प्रभु सुन्दर विकासशील तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां धान का बड़े बड़े पौधे होते हैं। उन्हें जाकर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3451 । 3227**

अपनी प्रिया के साथ कीड़ा चुनने वाले काले पक्षी ! समस्त विश्व को निगलने वाले

प्रभु वैदिक उच्चारण से परिपूर्ण शीतल तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। जाओ और उनके चरणों पर गिरकर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ।**3452**।**3228**

खेत से चुनने वाले पंख वाले मित्रों ! बेर जैसे होंठ एवं हाथ में घूमते चक्र धारण करने वाले प्रभु अतिश्रीसंपन्न तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। जाओ और उनका आदर से पूजा कर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ।**3453**।**3229**

सदा साथ स्नान करने वाले हंस की जोड़ी ! स्वर्गिकों के मूल प्रभु सागर सा सलोने कृष्ण वैदिक उच्चारण के बीच तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। विनती है उन्हें बताओ कि एक किशोरी उनकी चाह से संतप्त है। **3454**।**3230**

आपस में मनमुटाव के बाद शांति बनाने में प्रवीण हंस की जोड़ी ! मुकुट पर तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां बालू के ढेर में बहुत सारे शंख मिलते हैं। जाओ और करबद्ध होकर दर्शन करो एवं मेरे बारे में भी विनती करो। **3455**।**3231**

पुन्नै में वास करने वाले कोयल तुमसे निवेदन कर भीख मांगती हूँ। दिव्य हाथ में चक्र धारण करने वाले स्वर्गिकों के प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां जल वाले खेत में मछलियां उछलती हैं। जाकर उनका संवाद लाओ एवं हमें अचेत होने से मुक्त करो। **3456**।**3232**

सुन्दर सुग्गा ! शीघ्र जाकर अपने मीठे शब्दों से बोलो। तिरूवन वण्डूर फूलों का बाग एवं लाल तट से घिरा हुआ है। प्रभु श्याम हैं, लाल होंठ है, कमल समान आंख है, एवं कमल सा चरण है। चक्र एवं शंख आपके पहचान चिह्न हैं। **3457**।**3233**

सुन्दर पुवै पक्षी ! प्रभु से बात करके शीघ्र लौट आओ। आप पुन्नै शेरून्दि नलै कुरूक्कत्ती एवं मगिल फूलों से घिरे तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। आपके कमल समान बड़ी बड़ी आंखें हैं चार शक्तिशाली भुजायें हैं एवं मेघ सा श्याम वदन है। आप ऊंचा तेजपूर्ण मुकुट पहनते हैं। **3458**।**3234**

फूल पर खेलने वाले सुन्दर हंस ! प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां दिन का प्रारंभ शंख वादन से होता है। मूल देव हमारे कृष्ण शीघ्रगामी हैं। विनती है कि आपसे अकेले में मिलकर चरणों की पूजा करो एवं हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3459**।**3235**

सुगंधित मधुमक्खी ! तुम अपने स्वभाव में अलग हो, अतः विनती करती हूँ। तिरूवन वण्डूर पंपा नदी के उत्तर तट पर है। ऊंची दीवाल वाले लंका को जलाकर भस्म करने वाले प्रभु यहां रहते हैं। विनती है मेरे बारे में उनसे बताओ कि मैं भी जीवित हूँ।

3460 | 3236

धरा पर अधिकार करने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक किशोरियों के हृदय को जीतने वाला है | **3461 | 3237**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **92** | तिरूवन वण्डूर ः

1 | स्थान ः यह चेंगान्नुर से **9** कि मी पर पंपा नदी के किनारे स्थित है |

2 | विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े मुद्रामें पश्चिमाभिमुख हैं | भगवान को पंपानयीअप्पन या कमलनाथन कहते हैं | तायर को कमलवल्ली नाच्चियार तथा तीर्थ को पम्पै कहते हैं | यहां वेदालय नाम का विमान है | भगवान का गर्भगृह गोलाकार आकृति का है | पास में गोपालकृष्ण की सन्निधि है |

3 | महिमा ः मलयालम में 'तिरूवन अंडू' का अर्थ है विष्णु | यह स्थान केरल राज्य में है एवं पांच पांडवो सें संबंधित हैं | कहते हैं पांडवों में सबसे सुन्दर नकुल ने इस स्थान का जीर्णोद्धार अज्ञातवास की अवधि में कराया था | नारद ने ब्रह्मा के प्रथम पुत्रों को तपस्या की राय दी जिसके कारण वे सृष्टि करने से उदासीन हो तपस्या में रत हो गये | कुपित होकर ब्रह्मा ने नारद को कहीं भी स्थिर नहीं रहने का शाप दे दिया | नारद को यहां ब्रह्मा के शाप से मुक्ति मिली थी और उनको भगवान ने शंख चक्र गदा पद्यम के साथ दर्शन दिया | साथ ही भगवान से नारद को मानव समुदाय को 'तत्वज्ञान' का उपदेश करने का आदेश हुआ था | नारद जी ने नारद पुराण की रचना इसी स्थान पर की थी | **108** दिव्य देश में तीन स्थान 'वन' शब्द से जुड़े हैंः दो अन्य हैं **1** | तिरूनांगूर क्षेत्र का तिरूवन पुरूषोत्तम जो तमिल नाडु में है | **2** | केरल में ही तिरूवन परिशरम | तीनों जगह मूलावर खड़े मुद्रा में हैं |

राजा कुलशेखर के समय में मंदिर की स्थिति बहुत अच्छी थी | बाद में किसी ने गोपालकृष्ण के विग्रह को ले जाने का प्रयास किया तब किसी अन्य भक्त ने विग्रह को चुपके से पुष्करणी में डुबो दिया | **1963** में किसी भक्त को स्वप्न मिला कि गोपालकृष्ण की मूर्ति पुष्करणी के जल में है | **41** दिनों के अथक प्रयास से पुष्करणी से विग्रह निकाला गया तथा एक पृथक सन्निधि में स्थापित हुआ |

4 | दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3451** से **3461** | शतक **6 | 01**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

छठा शतक का दूसरा दशक ः **6 | 02** ः मिन्निडै मडवार्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 । 02 । 01 से 6 । 02 । 11 पासुर 3462 से 3472 या 3238 से 3248

<u>नायकी का प्रभु से नोंक झोंक</u>

लंका की किला को ध्वस्त करने वाले प्रभु ! पतली कमर की किशोरियां आपकी कृपा को पूजती हैं। मुझे भय है कि क्या होने वाला है। हम आपकी युक्ति को जानते हैं।अब उनलोगों का आप क्या करेंगे ? ाहाशय ! हमारा गेंद एवं डंडा वापस कर यहां से चले जाइये। **3462 । 3238**

महाशय जाइये। आपकी कमल सी आंख एवं मूंगा सा होठ हमलोगों को आहत करता है एवं अचेत करता है। हाय ! हमारी तपस्या का यही फल है।मोर की तरह चलने वाली प्यारी युवती किशोरियां आपकी कृपा की पूजा करेंगी। गायों को उस रास्ते भेज कर अपनी बांसुरी इनके साथ बजाइये। **3463 । 3239**

महाशय जाइये। अपनी कहानी सरल चित्त वालों को बताइये। आपकी कमल सी आंख एवं मूंगा सा होठ हमलोगों के लिये अभिशाप है। आज आपकी कृपा को जीतने वाली न जाने कौन सी सौभाग्यशाली किशोरी होगी ? **3464 । 3240**

आपने विश्व को निगल लिया एवं सो गये। आपका रहस्य देवगन भी नहीं समझते तो हम कैसे समझेंगे। जहां मृगनयनी किशोरियां बालू के महलों से खेलती हैं आप वहीं पर गाय चराना जानते हैं। विनती है हमें तंग न करें। **3465 । 3241**

महाशय ! झूठ मत बोलिये। नर एवं देव आपके छल से परिचित हैं। तेजोमय चक्रवाले प्रभु ! हम आपको कुछ शिक्षा देना चाहते हैं।मृदुभाषिणी उत्सुक किशोरियां सर्वदा आपकी कृपा की पूजा करेंगी। विनती है हमारे गूंगे मैना एवं तोता से खेल न करें। **3466 । 3242**

पश्चाताप का स्वांग भरने से कोई लाभ नहीं। विनती है हमारी गुड़ियों से न खेलें। आपके कृत्य से हम अवगत हैं। हम इसके योग्य हैं नहीं। अनेकों गोरी किशोयिां रानी बनने योग्य हैं। महाशय मेरा आलिंगन न करें, यह बचपना है, एवं आपके लिये अशोभनिय है। **3467 । 3243**

धरा एवं सागर को अधिकार में लेने वाले पूर्ण प्रभु ! विनती है, हमारी गुड़िया न छीनें। आप झूठ बोलकर हमारे साथ खेलते हैं। दोष तो दोष है चाहे वह आपका ही क्यों न हो।अगर हमारे भाई एक दिन सुनेंगे तो डंडा लेकर आपसे न्याय करना नहीं छोड़ेंगे। **3468 । 3244**

दिव्य ज्ञान एवं अनगिनत गौरव के प्रभु ! सब वस्तु कितना भिन्न है केवल आपको

छोड़कर। जब मित्र के बुलाने पर हम जाते हैं तो आप हमें रोककर शुष्क कर देते हैं। हाय ! जो मित्रवत नहीं हैं वे क्या कहेंगे ? **3469 । 3245**

अपने कमल के पाश में हमें फंसाकर हमारे हृदय को द्रवित करने के लिये हमारे द्वारा बनाये गये बालू के महलों को कुचल कर वहां रखे भोजन को आपने अधिकार में ले लिया। अपने दिव्य मुस्कान के साथ खड़ा होकर हमें आपने देखा तक नहीं। हाय ! हम भाग्यशाली नहीं हुए। **3470 । 3246**

तेजोमय मुकुट वाले प्रभु, राजाओं को नष्ट करने वाला फरसा चलाने वाले ! विश्व को बनाने वाले दिव्यवर्ण के प्रभु ! आज आपके आने से गोपकुल का सम्मान बढ़ा है। हाय ! गोपकिशोरियां पीड़ित हैं। **3471 । 3247**

मक्खन चुराने पर गोपमाता से दंडित होने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन ने संगीत के साथ गाया है। जो इसे याद करलेंगे वे गरीबी से मुक्त हो जायेंगे। **3472 । 3248**

<u>छठा शतक का तीसरा दशक ः **6 । 03** ः नल्गुरवुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 । 03 । 01 से **6 । 03 । 11** पासुर **3473** से **3483** या **3249** से **3259**

हम प्रभु को सर्वत्र देखते हैं। आप अनेकों तरह से प्रकट होते हैंः गरीबी एवं संपन्नता, स्वर्ग एवं नरक, शत्रुता एवं मित्रता, विष एवं औषध। आप हमारे नाथ हैं एवं संपन्न लोगों के साथ तिरू विन्नगर में रहते हैं। **3473 । 3249** ओप्पलिअप्पन दिव्य देश ही तिरूविन्नगर कहा जाता है।

सुख एवं दुख, भ्रम एवं स्पष्ट मत, दंड एवं क्षमा, प्रकाश एवं छाया, हमारे प्रभु समझ के परे हैं। आप शुद्ध जल से घिरे तिरू विन्नगर यानी ओप्पलीअप्पन दिव्य देश में रहते हैं। **3474 । 3250**

गांव एवं नगर, ज्ञान एवं अज्ञान, ज्योतिपुंज एवं अंधकार, धरा एवं विस्तृत आकाश, प्रभु महलों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। **3475 । 3251**

अच्छे एवं बुरे कर्म, मिलन एवं विछुड़न, स्मृति एवं विस्मृति, सच्चाई एवं भ्रम ः आप ये सब हैं और नहीं भी हैं। प्रभु महलों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। आप को छोड़कर कोई कर्ता नहीं है, सभी साक्षी हैं। **3476 । 3252**

कर्ता के रंग हैं, गोरा लाल काला एवं श्वेत, सच एवं झूठ, युवापन एवं उम्रदार, नया एवं पुराना। प्रभु दीवारों से घिरे सुरक्षित तिरू विन्नगर में रहते हैं। आपने बागों का लोक बनाकर उसमें सारी अच्छाईयां रखीं। **3477 । 3253**

इस संसार की तरह और नहीं भी, शांति एवं क्रोध, कमल वाली किशोरी एवं दरिद्र किशोरी, प्रशंसा एवं उपहास। तिरू विन्नगर के प्रभु देवों से पूजे जाते हैं। आप दिव्य कमल स्वरूप में हमारे हृदय में रहते हैं। **3478 | 3254**

अतिदिव्य एवं गंदा, अब छिपे हुए एवं तब प्रकट, विश्वासी एवं ठग। तिरू विन्नगर के प्रभु देवों से पूजे जाते हैं। आपके चरणारविंद के सिवा हमारा कोई आश्रय नहीं है। **3479 | 3255**

देवों के स्थायी शरण, असुरों की दर्दनाक मृत्यु, सारे जगत को अपने चरण में संरक्षित रखना और नहीं भी, अब छिपे हुए एवं तब प्रकट, विश्वासी एवं ठग। तिरू विन्नगर के प्रभु दक्षिण दिशा के आश्रय मेरे भी आश्रय हैं। हे मेरे पिता मेरे प्रभु मेरे कृष्ण मेरे नाथ! **3480 | 3256**

मेरे प्रभु एवं पिता, हमारी माँ एवं सौतेली माँ हैं। सुनहले पिता मणिवर्ण के पिता मुक्तामय पिता मेरे पिता ! आप सुनहले दीवारों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। अद्वितीय प्रभु ! आपने अपने दिव्य चरण की साया प्रदान की। **3481 | 3257**

छाया एवं सूर्य प्रकाश छोटा एवं बड़ा लंबा एवं लघु विचरते हुए एवं खड़ा अन्य वस्तु एवं कुछ भी नहीं। प्रभु प्रिय मधुमक्खी से गुंजायमान तिरू विन्नगर में रहते हैं। आपके चरण ही हमारे संरक्षक हैं। इस सत्य को समझो। **3482 | 3258**

कुरूगुर शडगोपन के हजार पद से यह दशक उस प्रभु के बारे में है जिन्होंने हमारी आंखों के सामने अति विशाल रूप धारण कर लिया जबकि आपने एक सुन्दर भिक्षु छोकरे के रूप में आकर कहा था 'देखो बलि'। जो इसे याद कर गा सकेंगे वे देवों के गुरू बन जायेंगे। **3483 | 3259**

<u>छठा शतक का चौथा दशक ः **6 | 04** ः कुरवैयाय्च्चियर</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 | 04 | 01 से 6 | 04 | 11 पासुर 3484 से 3494 या 3260 से 3270

<u>प्रभु की प्रशस्ति गाने से जीवन की सारी बाधायें स्वयं ही दूर हो जाती हैं।</u>

कृष्ण प्रभु की लीला हम दिन रात गाते रहे हैं ः आपका रास में गोपियों के साथ मिल जाना, पर्वत को उठाना, नाग के फन पर नृत्य करना, एवं अनेकानेक इस तरह की लीला। अब हमें कमी किस चीज की है ? **3484 | 3260**

मेरे कृष्ण मुरली का सुरीला स्वर बजाकर गाय चराते थे। आप सुन्दर जूड़े वाली नप्पिनाय के आलिंगन पाश में बंधे रहे। इन चमत्कारों के साथ अन्य को याद कर हमारा हृदय पिघलता है। मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस संसार में कौन मेरी बराबरी

कर सकता है ? **3485 | 3261**

प्रभु ने भारी मल्लयोद्धाओं एवं पर्वत समान मदमत्त हाथी का नाश किया। गायों को वन में चराने की कहानी याद कर अपने दिव्य मणि की चमत्कारिक लीला सुनकर मुझे रूलाई आती है। मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस धरा पर मुझे अब कैसी पीड़ा हो सकती है ? **3486 | 3262**

ओह ! जब यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी थी तो कैसे आप रोते थे। आपने पूतना के विषैले स्तन का पान कर उसके प्राण चूस लिये। गाड़ी को अपने चरण से ध्वस्त कर दिया। आपको सोचकर मेरा हृदय पिघलता है। मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस धरा पर मुझे अब क्या चाहिये ? **3487 | 3263**

देवों की प्रार्थना पर आप देवकी की संतान बन कर आये। तब उसे रात के अंधेरे में रोते छोड़ आप नंद के घर आ गये। छिपे हुए बढकर आपने अनेकों चमत्कार किये एवं कंस का वध किया। आपकी प्रशस्ति गान करने का हमें सौभाग्य मिला है। कौन इस संसार में मेरा शत्रु होगा ? **3488 | 3264**

बकासुर का चोंच चीरना, सात वृषभों का नाश करना, ऊंचे कुरून्दु वृक्ष को ध्वस्त करना। अन्य चमत्कारों के साथ जब आपने आकर धरा नापा, रात दिन हम सौभाग्य से प्रभु के इन विस्मयकारी लीला का गान करते हैं। हमें कोई चिंता नहीं है। **3489 | 3265**

करूणावश आपने गंदे मर्त्यलोक में अवतार लिया। जो स्वरूप आपको अच्छा लगा उसे धारण कर आपने अपना गुस्सा निकाला। मेरे प्रभु एवं पिता, तुलसी फूल का मुकुट पहनते हैं। मेरा हृदय विस्मय से आपको स्मरण करता है। इस संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? **3490 | 3266**

धरा एवं गगन महान युद्ध को देखकर विस्मित था। आपने तब महान बाणासुर के हजारों भुजाओं को काट डाला। वामन के रूप में तीन कदम चलकर आपने धरा को अधिकार में ले लिया। मेरा हृदय यह सब देख सकता है। अब क्या हमें कष्ट देगा ? **3491 | 3267**

सात सागर एवं सात ऊंचे पर्वत को पार करने का एवं सात लोकों के अंत तक रथ चलाने का तथा अन्य इसी तरह का शंख चक्रधारी प्रभु का चमत्कार है। जो कोई इन सबों को मुझे सुनायेगा वह क्या हमारा शत्रु हो सकता है ? **3492 | 3268**

विश्व को भार मुक्त करने के लिये आपने घोर युद्ध किया एवं सेनाओं को नष्ट करने का चमत्कार दिखाया। तब आप पयान कर अपने प्रिय आकाशीय आवास में स्थित हो

गये। मात्र आपके चरण की पूजा कर हम अद्वितीय नाथ को पा गये हैं। **3493 | 3269**

कुरूगुर शठगोपन के हजार पदों यह दशक केशव प्रभु के चरण की प्रशस्ति है जो सात लोक के स्वामी हैं, तथा इसे उठाया, मापा, वही हो गये, और नहीं भी हुए। जो इसे गाकर नाचेंगे वे निर्मल भक्त हो जायेंगे। **3494 | 3270**

<u>छठा शतक का पाचवां दशक : **6 | 05** : तुवळिल्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 | 05 | 01 से 6 | 05 | 11 पासुर 3495 से 3505 या 3271 से 3281

<u>नायकी की माँ की चिन्ता **6**</u>

सजनी ! इस किशारी को अब अकेले छोड़ दीजिये। इसके लिये तुनलोगों में कोई स्नेह नहीं है। कमल सी इसकी काली आंखें आंसू से भरी हैं तथा रूक रूक कर यह कहती है 'सुन्दर शंख एवं चक्र' 'कमल सी बड़ी आंखें' 'तुलैविल्ली मंगलम की धवल महलें'। **3495 | 3271**

आप इस मृदु भाषिणी प्रिय किशोरी को उत्सव की आवाज से गूंजते तुलैविल्ली मंगलम ले गये एवं इसे विना हृदय का छोड़ दिये। भावग्रस्त की नाई लेटी है तथा इसका होंठ 'देवदेवपिरान' कहता है तथा इसकी आंखे आंसू बहाती हैं। हाय ! यह गिरकर पिघल रही है। **3496 | 3272**

शीतल हरे बागों से भरे तुलैविल्ली मंगलम में इस चहकती चहेती किशोरी को ले जाकर हृदयहीन की तरह आपने छोड़ दिया। अश्रुपूरित नयनों के साथ खड़ी होकर धीरे से चरती गायों, धरा का मापना, एवं जल में शयन करने के बारे में प्रसंगहीन बात बोलती है। **3497 | 3273**

वैदिक ऋषियों से भरे तुलैविल्ली मंगलम में जाकर यह अपना नियंत्रण खो बैठी तथा भावग्रस्त हो गयी। बढ़ते उत्साह से यह पुकारती रहती है 'श्याम वदन प्रभु' तब अति आनंदित होकर अचेत हो जाती है। **3498 | 3274**

सजनी तुमलोग इस मृदु एवं आभापूर्ण किशोरी को तुलैविल्ली मंगलम ले गयी तथा वहां कमलनयन एवं रत्नों की ज्योति हरने वाले प्रभु का दर्शन करा दिया। तब से यह इस तरह से ध्यान मग्न रहती है। आंसू की वर्षा के साथ उस दिशा में देखकर सिर झुकाती है। **3499 | 3275**

संपन्न तुलैविल्ली मंगलम शीतल पोरूनल के उत्तरी किनारे पर स्थित है जहां चारो ओर बड़े बड़े गन्ना धान एवं कमल होते हैं। उस महान दिन के बाद से उसी तरफ

देखती हुई रात दिन मणिवर्ण वाले प्रभु के नाम बड़बड़ाती रहती है। **3500 | 3276**

सजनी ! यह मृगनयनी मोरनी तुमलोगों के हाथ से निकल चुकी है। सिवाय तुलैविल्ली मंगलम के यह कुछ नहीं सुनती। उनके प्रतीक चिह्न तथा नाम इसके होठ पर निरंतर रहते हैं। हाय ! यह क्या इसके पूर्व के कर्म का फल है या प्रभु की मायापूर्ण युक्ति है? **3501 | 3277**

प्रभु पोरूनल के श्रीसंपन्न उत्तरी किनारे पर स्थित विकासशील तुलैविल्ली मंगलम में वैदिक वाचकों एवं लक्ष्मी समान नारियों के बीच रहते हैं। जिस दिन से मृग समान काली आंख वाली इस लड़की ने उनकी पूजा की है हर दिन शांति से कहती है 'अरविंदलोचन' एवं तब गिरकर रोती है। **3502 | 3278**

जिस दिन से इस लड़की ने नगर का नाम जाना है रोते रोते अप्रासंगिक बात बोलती है 'हे मणिवण्णा'।इस तरह से चीखती है कि पेड़ भी पिघल जाये। बोलती है 'घोड़ा का जबड़ा चीरने वाले प्रभु तुलैविल्ली मंगलम में रहते हैं' एवं शांतिपूर्वक चुपचाप करबद्ध हो प्रार्थनारत हो जाती है। **3503 | 3279**

इस लड़की ने क्या ही चमत्कारिक जन्म पाया है ! पुकारती है ' प्रभु आप स्थायी रूप से तुलैविल्ली मंगलम में खड़े एवं बैठे मुद्रा में हैं।' अपना सिर झुका लेती है तथा केवल इस नगर का नाम सुनना चाहती है। क्या यह किशोरी नप्पिनाय है या भूदेवी है या लक्ष्मी है ? **3504 | 3280**

तुलैविल्ली मंगलम के प्रभु के बारे में शुद्ध तमिल हजार पद का यह दशक कुरूगुर शडगोपन के हैं जो विचार वचन एवं कर्म से प्रभु को अपनी माँ एवं पिता के रूप में पा चुके हैं। जो इसे गायेंगे वे प्रभु की सेवा के अधिकारी होंगे। **3505 | 3281**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **93** | तुलैविल्ली मंगलम

1 | स्थान ः यह स्थान तमिल नाडु में आळवार तिरूनगरी के पास **3** कि मी पर अवस्थित है तथा नौ तिरूपति में से एक है। आस पास के दो मंदिरों के संयोग से बना यह एक दिव्य देश है। इसलिये इसे 'इरत्ता तिरूपति' यानी 'युगल तिरूपति' भी कहा जाता है। यहां से **1** कि मी पश्चिम में नम्माळवार का अवतार स्थल है जो 'अप्पन सन्निधि' कहा जाता है।

2 | विग्रह स्वरूप ः यहां मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं और देवापिरान देवेश पंकज कहे जाते हैं।साथ में श्रीदेवी एवं भूदेवी भी दर्शन देती है तथा पेरूमाल के वक्षस्थल पर लक्ष्मी विराजमान हैं। तायर को करूणतनदनकन्नी कहते हैं परंतु उनकी अलग सन्निधि

नहीं है। विमान को कुमुद तथा गुप्त विमान कहते हैं। तीर्थ वरूण पुष्करणी, अश्विनी पुष्करणी तथा तामपर्णी नदी है। यहां का स्थल वृक्ष आम है तथा स्थल पुराण ब्रह्मांड पुराण है।

पास के दूसरे मंदिर में वरदहस्त मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं एवं अरविन्द लोचन तथा सेन्दामरै कण्णन कहे जाते हैं।

3। महिमा ः एक बार सुपर्पा ऋषि पास के हरित क्षेत्र से प्रभावित होकर यहां यज्ञ करने का सोचे। जब जमीन तैयार कर रहे थे तो एक तुला एवं एक धनुष साथ साथ मिला। जैसे ही मुनि ने उसे उठाया तुला नारी हो गयी एवं धनुष पुरूष हो गया जो पूर्व के अपने कर्मवश कुबेर के शाप भोग रहे थे। इसीलिये इस स्थान को तुलै विल्ली मंगलम कहते हैं। यज्ञ में सभी देवों ने पधारकर अपना यज्ञभग स्वीकार किया था इसलिये पेरूमाल को देवापिरान कहते हैं।

देवों के वैद्य अश्विनी कुमार ने यहां तपस्या कर यज्ञों में यज्ञभाग प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त किया था। पेरूमाल ने अश्विनी कुमार को बताया कि वे च्यवन ऋषि को वृद्धावस्था से मुक्त करें तथा जब च्यवन ऋषि यज्ञ में उन्हें यज्ञभाग देने लगेंगे तो अन्य जगह भी उन्हें यज्ञभाग मिलेगा।

कहते हैं देवापिरान की पूजा सुपर्पा मुनि नित्य पास के तालाब से कमल फूल लाकर माला बनाकर करते थे। भगवान प्रसन्न होकर मुनि के साथ तालाब देखने गये और इसके प्राकृतिक सौंदये से मुग्ध होकर बैठ गये। अतः बैठे मुद्रा वाले भगवान अरविन्द लोचन के नाम से जाने गये। यहां कमल फूल से पूजा की प्रधानता दी जाती है। तमिल चित्रा पूर्णिमा यानी **15** अप्रैल से **15** मई के बीच के पूर्णिमा को आळवार तिरूनगरी से आदिनाथ भगवान यहां स्वयं पधारते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3495** से **3505**। शतक **6**।**05**।

ःःः

<u>छठा शतक का छठा दशक ः **6**।**06** ः मालुक्कु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6।**06**।**01** से **6**।**06**।**11** पासुर **3506** से **3516** या **3282** से **3292**

<u>नायकी की मॉ की चिन्ता 7</u>

मेघ से श्याम दूल्हे प्रभु को जूड़े वाली हमारी गोरी बेटी ने अपना कंगना गंवा दी है आपके सुन्दर अरूणाभ कमल के समान नयन हैं एवं आपने वामन रूप में धरा को मापा

है। **3506 | 3282**

शंख चक्र गदा खड्ग धुनषधारी प्रभु के पास हमारी सुन्दर बेटी ने अपने गाल का गुलाबी रंग गंवा दी है, आपके सुन्दर अरूणाभ कमल के समान नयन हैं एवं मूंगा के समान होंठ हैं तथा आप अपने मुकुट पर मधु टपकते तुलसी फूल धारण करते हैं। **3507 | 3283**

हाथ में घूमते चक्र धारण करने वाले एवं छोटे मुंह से विश्व को निगलने वाले युक्तिविशारद श्याम प्रभु को जूड़े वाली हमारी बेटी ने अपनी मर्यादा गंवा दी है। **3508 | 3284**

शक्तिशाली ब्रह्मा को बनाने वाले तथा धरा को मापने वाले अविवाहित प्रभु एवं शासक राजा के पास दूत बनकर जानेवाले को चौड़ी अधोभाग वाली हमारी बेटी ने अपने आचार व्यवहार गंवा दिये हैं। **3509 | 3285**

सुन्दर वेद प्रदान करने वाले एवं वराह के रूप में धरा को उठाने वाले तथा शुद्ध जल पर सोने वाले प्रभु को सुन्दर जूड़े वाली हमारी बेटी ने अपना मन गंवा दिया है । **3510 | 3286**

कल्पवृक्ष की तरह भुजाओं वाले एवं तेजोमय स्वर्ण के सुन्दर मुकुट वाले तथा नूतन प्रस्फुटित कमल समान हाथ वाले प्रभु को धनुष के समान भौंहे वाली हमारी सुकुमारी बेटी ने अपना तन गंवा दिया है । **3511 | 3287**

अनेकों सुन्दर गहने वाले तथा फनधारी शय्या पर शयन करने वाले एवं अरूणाभ हाथ और चरण वाले कृष्ण प्रभु को हमारी गोरी सुन्दर बेटी ने अपना गहना गंवा दिया है । **3512 | 3288**

अकेले कुरून्दु पेड़ को उखाड़ने वाले एवं भरी गाड़ी को ध्वस्त करने वाले तथा शिशु रूप में राक्षसी का दूध पीकर उसके प्राण लेने वाले दूल्हा प्रभु को सुगंधित लटों वाली हमारी बेटी ने अपना सौंदर्य गंवा दिया है । **3513 | 3289**

सुन्दर दूलहा एवं काकुत्स्थ कुल भूषण तथा श्याम पर्वत की तरह ऊंचे प्रभु को आभूषित कोमल उरोज वाली हमारी बेटी ने अपना तेज गंवा दिया है । **3514 | 3290**

सभी वस्तुओं में स्थित एवं मल्ल योद्धाओं को पराभव देने वाले चमत्कारी भुजाओं वाले ऊंचे मुकुट पर प्रस्फुटित तुलसी धारण किये प्रभु को हमारी मेधावी तीक्ष्ण बुद्धि की बेटी ने अपना सबकुछ गंवा दिया है । **3515 | 3291**

सुन्दर तेजोमय वेंकटम के प्रभु की प्रशस्ति में सुन्दर तेजोमय कुरूगुर के शडगोपन के सुन्दर तेजोमय हजार पद का यह दशक सुन्दर तेजोमय स्वर्गिक आनंद देता है। **3516 | 3292**

छठा शतक का सातवां दशक ः **6 | 07** ः उण्णुञ्जोरू

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 | 07 | 01 से 6 | 07 | 11 पासुर **3517 से 3527** या **3293 से 3303**

नायकी की माँ की चिन्ता **8**

अश्रुपूरित आंखो से हमारी सुकुमारी मृगी बतायेगी 'हमारा भोजन तथा पेय एवं जो पान हम चबाते हैं सभी कृष्ण हैं।' धरा पर प्रभु के संपन्न यशस्वी नगर के बारे में पता करने के कम में निश्चित रूप से इसने तिरूक्कोलूर का मार्ग जान लिया है। **3517 | 3293**

नगर एवं देश को प्रभु का नाम एवं प्रतीक चिह्न के बारे में बोलते रहने के लिये इसने अपना मर्यादा खो दिया है। उपजाऊ खेतों वाले तिरूक्कोलूर में हमारी लाड़ली अवश्य पहुंच गयी होगी। हाय ! अभागिनी मैं ! हे मैना ! बताओ क्या वह वापस आयेगी ? **3518 | 3294**

इसके मैना, तोता, गेंद, खिलौना, फूल का गमला, सभी प्रभु ही थे तथा सब को प्रभु के नाम से पुकारती थी। हाय ! मेरी गुड़िया अब उपजाऊ तिरूक्कोलूर में है। वरसती आंखें एवं फड़कते होंठ के साथ क्या करती होगी ? **3519 | 3295**

अब क्या होगा ? पड़ोस की बातें क्या इसे मूर्खता की संज्ञा देंगी या ऊंचा कर्तव्य मानेगी ? हाय ! मेरी मृगी अपनी कमर हिलाते तिरूक्कोलूर जाने को निश्चित कर चुकी है जहां प्रभु अपार संपति के साथ रहते हैं। **3520 | 3296**

मेरी छोटी देवी अपने खिलौनों को त्याग कर दिनानुदिन क्षीण होती गयी। अब अपने प्रभु के साथ तिरूक्कोलूर के मंदिर में होगी जहां चारो तरफ फूल के बाग एवं जल सरोवर वर्तमान हैं। आज पता नही वह कितनी प्रसन्न होगी ? **3521 | 3297**

मेरी छोटी मृगी अब हमारे किसी काम की नहीं है। हमें छोड़कर वह तिरूक्कोलूर चली गयी है जहां प्रभु दक्षिण के तिलक के रूप में खड़े हैं। क्या प्रभु की अरूणाभ नयन एवं होंठ के दर्शन की प्रतीक्षा में अपनी आंखों में आंसू भरे अचेत खड़ी होगी ? **3522 | 3298**

अश्रु बहते नेत्रों एवं चाह भरे हृदय से रात दिन वह बोलेगी 'आदि प्रभु'। अब वह तिरूक्कोलूर चली गयी है जहां प्रभु संपन्नता के बीच रहते हैं। हाय ! अपने लड़खड़ाते कदम एवं क्षीण वदन से कैसे वह वहां पहुंची होगी ? **3523 | 3299**

कमर पर हाथ रखे, कष्ट से अपने कदमों को खींचते हुए, क्या वह उबलते हृदय तथा जलती आंखों के साथ कमलनिवासिनी लक्ष्मी के साथ रहने वाले तिरूक्कोलूर के प्रभु के पास गयी होगी ? हाय ! हमारी बेटी ने अपने प्रेम के कारण हमारा त्याग कर दिया है।

3524 | 3300

जितनी अच्छी वस्तुयें होंगी वह अपने कृष्ण के लिये रखती थी। सब को पीछे छोड़कर सभी लोकापवाद को सुनते हुए वह तिरूक्कोलूर चली गयी है। हाय! हम लोगों के लिये उसे कोई चिंता नहीं है। **3525 | 3301**

हे देवगन ! मैं समझ नहीं पाती कि कैसे हमारी मृगी सब कुछ छोड़कर स्वयं अकेली तिरूक्कोलूर चली गयी है। एक क्षण के लिये भी कभी वह अपने 'अरविंदलोचन' को नहीं छोड़ेगी। हाय ! उसने कभी नहीं सोचा कि कुल पर कितना धब्बा लगा है ? **3526 | 3302**

तिरूक्कोलूर के प्रभु वैत्तामानिधि एवं मधुसूदन की प्रशस्ति में बाग वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक उनलोगों को दिव्य धरा का शासनाधिकार प्रदान करेगा जो इसे याद कर लेंगे। **3527 | 3303**

ºº

दिव्यदेश **94** | तिरूक्कोलूर

1 | स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास **3** कि मी पर पूरब में स्थित है तथा नौ तिरूपति में से एक है। ताम्रपणी के दक्षिण में स्थित है तथा यह मधुराकवि आळवार का अवतार स्थल है।

2 | विग्रह स्वरूप ः यहां भगवान भुजंग शयन मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। आपको 'वैयत्तामानिधि' पेरूमल भी कहते हैं। आपका बायां हाथ ऊपर उठा हुआ है तथा आप बायें तलहथी को देख रहे हैं। तायर कुमुदवल्ली कही जाती हैं। तीर्थ को कुवेर तीर्थ एवं ताम्रपणी नदी तथा विमान को श्रीकारा विमान कहते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण यहां का स्थल पुराण है।

3 | महिमा ः कहते हैं पार्वती के शाप से कुबेर नवनिधि गंवाकर कुरूप एवं एक आंख वाले हो गये। कुबेर को छोड़कर शापवस नवनिधि धरा पर आ गये एवं पेरूमाल से संरक्षण पाये। जब कुबेर ने यहां आकर तपस्या की तो भगवान ने प्रसन्न होकर नवनिधि का कुछ अंश ही उनको वापस लौटाया तथा शेष स्वयं रख लिया। इसी लिये भगवान यहां तौलने वाले साधन के साथ तकिया जैसे शिर के नीचे रख कर सोये हैं एवं वैयत्तमानिधि कहे जाते हैं। बायें हाथ के तर्जनी एवं अनामिका अंगुलियां नवनिधि के तरफ संकेत करती हैं। दायें हाथ की तलहथी जमीन के तरफ है। तथा इससे यह संकेत मिलता है कि जब आपने कुबेर को कुछ निधि मापकर वापस दिया तो उसका छोटा अंश भूमि पर गिर गया था।

रामानुज स्वामी एक बार दर्शन के लिये यहां पधारे तो स्वागत में तिरूक्कोलूर अम्मल नामकी एक महिला भी नगर की सीमा पर आयी। साष्टांग करने पर रामानुज स्वामी ने नम्माळवार के तिरूवायमोळी के **6।7।1** का उदाहरण देकर बोला कि सब कोई तिरूक्कोलूर जाता है और आप वहां से बाहर आयीं हैं। उत्तर में उस महिला ने बड़ी गूढ़ बात कही।दोनों के बीच बातचीत लंबी चली जो **80** प्रश्नों तथा उसके उत्तर के रूप में 'तिरूक्कोलूर पेन्न पिल्लै रहस्यम' के नाम से संकलित है।

°°

छठा शतक का आठवां दशकः **6।08**ः पोन्नुलगु

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6।08।01 से 6।08।11 पासुर 3528 से 3538 या 3304 से 3314

नायकी दूत से वेदना बताती है।

एकत्रित श्रेय पक्षीगन ! तुम लोग सुनहले धरती एवं स्वर्ग पर राज्य करो। अभागा प्रेमी कृष्ण तुम्हें बुलाते हैं जिन्होंने विश्व का निर्माण किया एवं मेरी कुशलता चुरा ली है।जाओ एवं मेरी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3528।3304**

हमारे तोतागन ! इन मीननयनी के समक्ष मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि अपने हाथ से मक्खन मिश्रित खीर तुम्हें खिलाऊंगी। विनती है वैर समान होंठ वाले चक्रधारी प्रभु को खोजो।उन्हें हमारे प्रेम के बारे में बताकर शीघ्र आ जाओ। **3529।3305**

हे समूह प्रेमी मधुमक्खी गन ! जाओ और प्रभु द्वारा धारण किये तुलसी फूल से मधु का सेवन करो। उन्होंने पांडव के लिये महान सेना के विरूद्ध युद्ध में रथ चलाया। शीघ्र लौटकर हमारे जूड़े के फूल पर उनका सुगंध विखेरो। **3530।3306**

हे भौंरा गन ! अगर तुम हमारे मुल्लै फूल का अमृत पीना चाहते हो तो प्रभु को खोजो जिन्होंने हमारे साथ छल कर हमारा त्याग कर दिया। वे अपने मुकुट पर सुगंधित तुलसी धारण करते हैं। उन्हें बताओ कि प्रेमी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता। **3531।3307**

हे तोतागन ! मैंने तेरा पालन पोसन किया है।हम तुम्हें कुछ सीख देते हैं। प्रभु गरूड़ की सवारी से आये और हमारे धूर्त हृदय को चुरा ले गये। उनकी आंखें एवं होठ लाल हैं, श्याम वर्ण के हैं तथा वे कल्पवृक्ष की तरह दिखते हैं। जाकर प्रभु को जहां कहीं भी हों खोजो एवं उन्हें बताओ 'यही उचित मार्ग है'। **3532।3308**

हे छोटी मैना ! इसी धूर्त ने तेरा पालन पोसन किया है।हमारे तेजोमय वक्षस्थल वाले श्याम कृष्ण अपने दिव्य चरणारविंद की तुलसी से तुम्हें वंचित नहीं रखेंगे।हमने जो

सिखाया उसे रास्ते भर दुहराते जाओ एवं जाकर उनसे कहो। **3533।3309**

हमारे प्रिय खिलौने ! घोड़े का जबड़ा फाड़ने वाले मधुसूदन प्रभु के पास क्या तू नहीं जाओगे औ मेरा संवाद देकर हमारी दयनीय स्थिति का अंत करोगे ? मेरे प्रभु पुवै फूल की तरह श्याम हैं इनकी आंखें कमल की पंखुड़ी जैसी हैं एवं ये चक्रधारी प्रभु सबमें सबजगह स्थित हैं। **3534।3310**

श्वेत पंख वाले पक्षी ! विनती है मेरी सहायता करो। अपने प्रेम से वंचित होकर कितने युगों तक मैं इस तरह से पीड़ित र हूँगी ? जाकर सावधानीरहित निर्मल वर्ण के तेजोमय मुकुट वाले प्रभु का दर्शन कर बताओ 'यह किशोरी आपके सिवा किसी का दर्शन नहीं करती'। **3535।3311**

जल में कीड़े पकड़ती बत्तकी पक्षी का समूह ! अभागिन मैं ! उनके सिवा मेरा कोई संरक्षक नहीं है। जाकर वर्षा के मेघ के समान श्याम कृष्ण तथा स्वर्गिकों के देव से मिलो। आकर शीघ्र उनकी बातों को ज्यों का त्यों मुझे बताओ। **3536।3312**

जल के कमल में कीड़ा करते सुन्दर हंस ! तू अपने धवल प्रिया तथा सभी परिवार के साथ जाकर वक्षवस्थल पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु को उनके गर्भगृह में जाकर दर्शन कर उन्हें बताओ 'यह किशोरी ऐसी... ऐसी है'। वापस आकर उन्होंने क्या बोला मुझे बताओ। **3537।3313**

सुगंधित बागों के कुरूगुर के शडगोपन को आत्मसाक्षात्कार से प्राप्त होने वाले मधुसूदन के चरणारविंद पर समर्पित ये अतिप्रिय शब्दों से विरचित हजार गीतों का यह दशक हृदय को जल में बालू की तरह द्रवित करता है। **3538।3314**

<u>छठा शतक का नौवां दशकः **6।09**ः नीरायनिलनाय्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6।09।01 से 6।09।11 पासुर 3539 से 3549 या 3315 से 3325

प्रभु ! आप ज्योतिपुंज शिव ब्रह्मा धरा जल अग्नि वायु एवं आकाश बन गये। एक दिन इस धूर्त के पास शंख चक्र हाथ में लिये आप नहीं आयेंगे जिससे कि स्वर्ग एवं धरा पर खुशी में उत्सव मनाया जाये ? **3539।3315**

विस्मयकारी प्रभु ! आपने धरा एवं आकाश पर अधिकार कर लिया। वामन स्वरूप में आपने पृथ्वी पर अपनी शक्ति दिखाई। विनती है, एक दिन पुनः इस पृथ्वी पर कदमों से चलिये।आपको छूने एवं आपके दर्शन लाभ से हम आनंद में नाचेंगे। **3540।3316**

प्रभु ! हर युग में सबों की आपने रक्षा की है। हम आपको चलते खड़े बैठे एवं शयन

करते देखते हैं। कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ प्रभु कितने दिन हम विछुड़कर रहेंगे ? **3541 | 3317**
आपने असुरों को ऐंठकर तथा कूचकर उनका नाश किया। अपने चरण से दुष्ट गाड़ी को ध्वस्त किया। कम से कम एक दिन शिव ब्रह्मा इन्द्र एवं सभी देवों से घिरकर आकाश में प्रकट होइये। **3542 | 3318**
प्रभु ! आप आकाश में बैठते हैं पर्वत पर खड़ा होते हैं, जल में शयन करते हैं, एवं धरती पर चलते हैं। छिपे हुए आप सब में स्थित हैं। प्रभु ! अनेकों अनगिनत लोकों में भी स्थित हैं। हममें मिले हुए क्या हमसे छिपे रहेंगे ? **3543 | 3319**
प्रभु ! एक पग में आपने धरा एवं सागर को पार कर लिया। एक पग में फैलकर ऊपर के लोक में छा गये। प्रभु ! कितने दिन हम आपके दर्शन के लिये तड़पते रहेगे ? हाय ! आग में मोम की तरह पिघलकर हम पृथ्वी पर घूमते हैं। **3544 | 3320**
आप पृथ्वी पर घूमने वाले कर्म की आत्मा हैं। आप विश्व की आत्मा हैं। आप स्वरूपविहीन होकर दस गोल एवं उससे आगे भी हैं। विनती है, अंतहीन अज्ञान वाले इस तुच्छ जीव पर कृपा कीजिये। **3545 | 3321**
मर्त्यों की आत्मा ! इस अज्ञानी पर कृपा कीजिये। अनंत तेज के सुगंधित प्रतीक प्रभु ! क्या अभी भी दूर रह कर आप अपनी युक्ति से हमारी हत्या करेंगे ? हाय ! कोई अन्य को नहीं जानने पर भी हमारी आत्मा पीड़ित है। **3546 | 3322**
इन्द्रियों के सुख से हमारी आत्मा पीड़ित है। क्या अभी भी आप हमारा नाश अलग रहकर करेंगे ? जिसने फैलकर धरा माप दिया क्या उस चरणारविंद से जुड़ने का समय नहीं आया है ? **3547 | 3323**
प्रभु ! अनेकों अंतहीन युगों तक़ जो न बढ़ता है और न घटता है मैं आत्मानंद में बना रहता ! हाय! सोचने पर ऐसा लगता है क्या यह सब आपकी थोड़ी देर की निष्काम सेवा के भी तुलना के योग्य है ? **3548 | 3324**
दर्शऩ, ध्याऩ, एवं अनुभव से परे प्रभु की प्रशस्ति में भक्तों के भक्त के भक्त कुरूगुर शडगोपन को आत्मसाक्षात्कार हुए हजार पद का यह दशक पृथ्वी को निगलने वाले प्रभु का चरण प्रदान करता है। **3549 | 3325**

छठा शतक का दसवां दशक ः **6 | 10** ः उलगमुउण्ड

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

6 | 10 | 01 से **6 | 10 | 11** पासुर **3550** से **3560** या **3326** से **3336**

धरा को निगलने वाले चिरंतन गौरव के प्रभु ! तेजोमय ज्ञान के चरम प्रतीक ! हमारी

आत्मा के नाथ ! धरती का तिलक के रूप में आप वेंकटम में खड़े हैं। विनती है, आपके चरणारविंद तक पहुंचने का इस बंधुआ जीव को अनुमति दीजिये। **3550 | 3326**

स्वर्गिकों के देव ! आप हाथ में भयानक चक्र धारण करते हैं जिसने दुष्ट असुर को काट कर टुकड़े टुकड़े कर तथा पीस कर धूल में मिला दिया। सरोवरों से घिरे वेंकटम के प्रभु जहां अग्नि समान कमल खिले रहते हैं। कृपा कीजिये जिससे कि प्रेमपूरित यह दास आपके चरणारविंद से जुड़ सके। **3551 | 3327**

स्वर्गिकों के देव ! मेघ वर्ण के सुन्दर नैसर्गिक प्रभु ! अमृत आश्चर्यमय प्रभु चेतन मन से शीघ्र समझे जाने वाले। वेंकटम के प्रभु जहां नदियां मणि मुक्ता एवं स्वर्ण बहाकर लाती हैं। मेरे प्रभु ! मेरे बारे में जानकारी प्राप्त कर अपने चरण से जोड़ लीजिये। **3552 | 3328**

कमलनिवासिनी लक्ष्मी के नाथ ! आपने अग्नि बाणों की वर्षा से पृथ्वी को पीड़ित करने वाले हृदयहीन असुरों का अंत किया। वेंकटम के प्रभु जो देव असुर एवं मुनि से पूजित हैं। विनती है इस क्षुद्र जीव को अपने चरणारविंद का मार्ग बताइये। **3553 | 3329**

सात वृक्षों को एक बाण से छेदने वाले दक्ष धनुर्धर प्रभु ! मरूदु वृक्षों में घुसने वाले प्रथम प्रभु ! वेंकटम के प्रभु जहां हाथी घने बादल के समान दिखते हैं। भारी शारंग धनुष को धारण करने वाले प्रभु ! कब आपके चरणारविंद को पा सकेंगे ? **3554 | 3330**

वेंकटम के प्रभु जहां स्वर्गिक हर दिन मन से वचन से कर्मसे प्रशस्ति गाकर आपकी पूजा करते हैं। पृथ्वी को पार करने वाले चरण के दर्शन की चाह है। ओह प्रभु ! कब वह दिन होगा जब हम आपसे अलग न होने के लिये मिल जायेंगे ? **3555 | 3331**

स्वर्गिकों के देव, हमारे अमृत, हमारे प्रेम के लिये स्थित प्रभु, गरूड़ ध्वज एवं सुन्दर बेर जैसे होंठ वाले प्रभु कर्म के घास की औषध वेंकटम के प्रभु ! आपके चरण के दर्शन के बिना अब ज्यादा हम नहीं सह सकेंगे। **3556 | 3332**

हाय ! बिना योग्यता के ही हम आपके चरणाविंद के लिये तड़प रहे हैं। नीलकंठ शिव चतुरानन सूक्ष्म बुद्धि के इन्द्र तथा अनेकों मीननयनी किशोरियां स्वेछा से आपको सर्वदा घेरे रहते हैं। वेंकटम के प्रभु ! आइये, जैसे आप पहले आये थे, एवं जादू से मुग्ध कर दीजिये। **3557 | 3333**

जब आने का आभास होता है आप कभी नही आते। आभास होने पर आप आते भी हैं। मेरे अमृत प्रभु, कमल सी आंख, मूंगा जैसे होंठ, चार भुजाओं वाले प्रभु ! वेंकटम के प्रभु जहां तेजोमय मणि रात को दिन में बदल देते हैं। हाय ! हम आपके चरणारविंद से

एक क्षण का भी अलगाव सह नहीं सकते। **3558।3334**

आप अपने वक्षस्थल पर अलग न होने वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। अतुलनीय यश वाले तीनों लोक को धारण करने वाले स्वर्गिकों एवं महान ऋषियों के चहेते वेंकटम के प्रभु ! आपके चरण पर गिरकर यह आश्रयविहीन जीव अपना आश्रय पा गया है। **3559।3335**

अपने चरण मे आश्रय प्रदान करने वाले वेंकटम प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के संपूर्ण हजार पद का यह दशक सर्वदा वैकुंठ का आनंद देता है। **3560।3336**

सातवां शतक का पहला दशकः **7।01**ः उण्णिलाविय

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7।01।01 से 7।01।11 पासुर **3561 से 3571** या **3337 से 3347**

पांच अजेय इन्द्रियां

अनंत श्रेयस्वान प्रभु ! स्वर्गिकों से पूजे जाने वाले तीनों लोक के प्रभु ! इस शरीर के पांच इन्द्रियों के माध्यम से आप वेदना देते हैं।अपने चरणाविंद से अलग करके आप अभी भी हमें यातनाग्रस्त किये हुए हैं। हे हमारे अमृत, हमारे माता एवं पिता प्रभु ! **3561।3337**

रात दिन कष्ट देते हुए आपने पांच अत्याचारी राजाओं को हम पर राज करने के लिये छोड़ दिया है। गन्ना के रस श्याम प्रभु धरा एवं सागर के संरक्षक तेजपूर्ण चक्र को धारण करने वाले प्रभु ! इस पापी के वैदिक प्रभु ! आपने यह निश्चित व्यवस्था कर दी है कि हम आपके चरणाविंद तक नहीं पहुंच पायें। **3562।3338**

आपने पांच इन्द्रियों को बैठाकर हमारे राह का रोड़ा बनाया है। आप प्रथम कारण हैं। इस विश्व को बनाकर आपने इसे मापा तथा ऊपर उठाया।ऊंचे मुकुट के प्रभु एवं इस दास के अपने मधुसूदन प्रभु ! हाय ! हमें अपने चरण से दूर रखकर आपको क्या लाभ मिलेगा ? **3563।3339**

आपने पांच इन्द्रियों को हमारे इर्द गिर्द बंधन की तरह बैठाकर बच निकलने की कोई संभावना नहीं छोड़ी। बिना किसी को छोड़े हुए आपने सभी बस्तुओं एवं प्राणियों को अपने भीतर रखा एवं शिशु की नाईं जल पर तैरते बटपत्र पर सो गये। हमारे कर्म की औषध प्रभु ! आपने अपने चरण तक पहुंचने में हमें असमर्थ बना रखा है। **3564।3340**

पांच इन्द्रियां एक विशाल गोल घूमने वाले झूले पर हमें घुमाकर रोगग्रस्त कर देती हैं। स्वर्गिकों के प्रभु ! आपने असुर कुल का संहार किया। तेजोमय चक्रवाले प्रभु ! अब

कौन हमारी औषधि होंगे ? हाय ! आप फांसी देने वाले की तरह आगे पीछे एवं पार्श्व को कसकर जकड़ देते हैं। **3565 | 3341**

पांच इन्द्रियां आपकी पूजा करने वाले स्वर्गिकों को भी यातना देती हैं। विशेषकर जब आपने भी हमें अलग छोड़ दिया है तो धरावासियों को वे क्या नहीं क्षति पहुंचायेंगे? महान प्रभु ! आप संगीत् कविता एवं भक्ति में छिपे हैं। हम आपको अपनी आंखों में देखते हैं। अब हृदय मे देखते हैं तथा अपने शब्दों में देखते हैं। विनती है, एक शब्द हमसे बोलिये। **3566 | 3342**

ये चंचल इन्द्रियां एक रास्ते या एक लक्ष्य पर नहीं टिकतीं। हमारे प्रिय अमृत ! आपने देवों एवं असुरों के साथ गहरे में बैठाये हुए एक पर्वत पर नाग को लपेट कर सागर का मंथन किया। हाय ! अगर आपकी करूणा नहीं होगी तो हम कैसे इन्द्रियों पर नियंत्रण रख पायेंगे। **3567 | 3343**

आपकी दी हुई पांच इन्द्रियां किसी को प्रिय अमृत देने के बहाने धोखे में रख सकती हैं।हमारे नाथ् हमारे कृष्ण् स्वर्गिकों के नाथ ! कालातीत माया से मुक्त करने की कृपा कीजिये जिससे कि हम आपके प्रतीक अस्त्र एवं स्वरूप पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें। **3568 | 3344**

पांच इन्द्रियां देवों को भी पाप के गड्ढ़े में डाल देती हैं। मेरे कृष्ण्, मेरे तेजोमय ज्योति प्रभु ! आपने धरा बनाई, सब लोक् गतिमान, तथा स्थिर सब कुछ बनाया। पांचो को उनकी शक्ति एवं सब कुछ के साथ विनाश की कृपा कीजिये । विनती है, हमारी बात सुनलें। **3569 | 3345**

प्रभु आपने सागर मंथन कर अमृत देवों को दिया। हम आपकी गाथा गाते हुए प्रेम से द्रवित हो आपके चरणाविंद पर समर्पित हो जाना चाहते हैं। इसके बदले आपने हमें यह लोथड़ा ढ़ोने के लिये तथा इसके वजन से दब जाने के लिये छोड़ दिया है। ओह ! ये पांच हमें घोर तूफान की ओर खींचती हैं तथा हमें कष्टपूर्ण प्रताड़ना देती हैं। **3570 | 3346**

भक्तों के भक्त के भक्त कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक बनाने़, पालन करने़ एवं संहार करने वाले तीनों गुणों से संपन्न प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं।जो इनका दिन रात गान करेंगे वे कर्मो का क्षय प्राप्त करेंगे। **3571 | 3347**

<u>सातवां शतक का दूसरा दशक ः **7 | 02** ः कङ्गुलुम् पगलुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 | 02 | 01 से 7 | 02 | 11 पासुर 3572 से 3582 या 3348 से 3358

नायकी की मॉ श्रीरंगम प्रभु से बेटी के लिये निवेदन करती है 9

नाचती मछलियों के जल में शयन करने वाले तिरूवरंगम के प्रभु ! हमारी बेटी को क्या कर दिया है आपने ? रात दिन वह सोती नहीं। चुल्लु भर भर कर आंसू फेंकते हुए हाथ जोड़कर कहती है 'चक्र' तब 'कमल वाले प्रभु' एवं अचेत हो जाती है। 'आपके बिना हम कैसे रहेंगे ?' रोती है एवं धरती का सहारा लेती है। **3572 ।3348**

आंखों में आंसू भरकर पूछती है 'कमल वाले प्रभु ! हमारे लिये क्या कर रहे हैं ? ' फिर 'हे रंगा प्रभु ! मैं क्या करूं ?' भारी उसांस के साथ रोती है। 'हे मेरे कर्म ' चीखती है। 'श्याम प्रभु आइये़ क्या यह उचित है ?' आपने धरा बनाया निगल गये फिर बाहर निकाल दिया तथा मापा। इसके लिये अंत कैसा होगा ? **3573 ।3349**

लाज छोड़कर कहती है 'मणि प्रभु' आकाश में देखकर उसांस लेती है। 'असुरों के विनाशक प्रभु !' तब रोने लगती है। 'हे मेरे कृष्ण प्रभु.! काकुत्स्थ, आईये हम आपको यहां देखना चाहते हैं'। दीवारों से घिरे हे रंगा प्रभु ! आपने इसके साथ क्या किया है ? **3574 ।3350**

जैसे छोड़ी गयी थी उसी अवस्था में रहती है। उठती है़ गिरती है़ फिर हाथ जोड़ती है 'यह प्रेमी़ वेदना है' कहती है फिर अचेत हो जाती है। 'अदृश्यमान सागर के प्रभु' 'प्रभामंडल वाले चक्र के प्रभु'। 'कृपया आइये' इस तरह से कहती हुई अचेत हो जाती है। धवल जल पर सोने वाले हे रंगा प्रभु ! इसके लिये आपकी क्या मंशा है ? **3575 ।3351**

सोचने लगती है़, अचेत हो जाती है़, एवं होश में आती है। करबद्ध होकर बोलती है 'अरंगम में' । उस दिशा में झुकती है एवं वर्षा की तरह आंसू बहाती है। कहती है 'आओ पिरीती' फिर अचेत हो जाती है। हिरण्य की छाती फाड़ने वाले़ दुर्लभ अमृत़ सागर मथने वाले़ आपने एक महान किशोरी को तड़पा दिया है़ इसे अब अपने चरण में ले लीजिये। **3576 ।3352**

शेषशायी प्रभु ! इस किशोरी पर करूणा दिखााइये। कहती है 'प्रभु आप हमारा हृदय चुराकर ले गये'। 'हे लाल होंठ एवं मणि वर्ण के प्रभु' 'शीतल जल से घिरे अरंगम में शयन करने वाले प्रभु'। 'स्वर्गिकों के प्रभु शंख चक्र गदा खड्ग एवं धनुष वाले'। हाय ! हमारे कर्म का दोष है। **3577 ।3353**

हमारी कोमल राजकुमारी बड़ी बड़ी आंखों से आंसू बहाते बैठती है। कहती है 'प्रभु ने सुख एवं दुख दोनों बनाया एवं प्रेमहीन से भी प्रेम किये गये'। 'कालचक्र धारण करने वाले तथा सागर में शयन करने वाले' 'शीतल जल में मछली वाले पावन तीर्थस्थल

श्रीरंगम के हे कृष्ण' । **3578** । **3354**

हे रंगाप्रभु ! हम अपनी बहुमूल्य बेटी के लिये क्या करें ? कहती है 'देवों के नाथ आपने गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठा लिया' । रोती है गर्म उसांस लेती है जैसे कि अपनी आत्मा को सुखा देगी । कहती है 'हे प्रभु कैसे आपका दर्शन करू ? ' तब ऊपर एकटक देखती है । **3579** । **3355**

दक्षिण के मंदिर के हे रंगा प्रभु ! कहती है 'मेरी आत्मा' 'अपने दाढ़ों पर उठा लेने वाले भू देवी के दूलहा' 'आपके वक्षस्थल पर स्थित कमल निवासिनी लक्ष्मी के नाथ' 'गोपकुमारी के प्रेमी जिसे आपने सात वृषभों का शमन कर प्राप्त किया' । हाय ! हम इसके लक्ष्य को समझ नहीं सकते । **3580** । **3356**

वह कहती है 'विश्व के प्रभु मुझे अपना लक्ष्य नहीं पता' 'जटाधारी कोन्रैय शिव चतुरानन ब्रह्मा एवं महान स्वर्गिकों के सम्राट' 'सुगंधित श्रीरंगम के प्रभु' । आश्रयविहीन होकर हमारी बेटी ने मेघ वर्ण के प्रभु का चरण प्राप्त कर लिया है। **3581** । **3357**

पोरूनल जल के बागों वाले प्रभु के चरण की कृपा से प्राप्त हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन ने वर्षा के मेघ के वर्ण वाले प्रभु की प्रशस्ति में प्रस्तुत किये हैं । इसे याद करने वाले स्वर्गिकों से पावन किये हुए आनंद का जीवन प्राप्त करेंगे। **3582** । **3358**

सातवां शतक का तीसरा दशक ः **7** । **03** ः वेळळै च्चुरिशङ्गु

इसमें **11** पासुर हैं । दोनों रीति की गिनती दी जा रही है ।

7 । **03** । **01** से **7** । **03** । **11** पासुर **3583** से **3593** या **3359** से **3369**

सखी से नायकी की वार्ता

सजनी ! कैसे मैं इसका वर्णन करूं ? जिस तरह से हमारा हृदय देखता है उस तरह से तुम नहीं देखती। कमल के समान शंख चक्रधारी प्रभु गरूड़ पर चले जा रहे हैं।वे तिरूप्पेरेयिल में हैं जहां वैदिक पाठ एवं उत्सव के स्वर सुनायी पड़ते हैं एवं कीड़ारत बालकों के स्वर कभी कम नहीं होते । वहीं हम जायेंगे । **3583** । **3359**

सुगंधित लटें वाली सखी ! हे सजनी ! पड़ोस के लोगों ! इस उड़ान भरते हृदय को हम रोक नहीं सकते । यह हमारे नियंत्रण में नहीं है । हाय ! दिन रात यह मूंगा समान होंठ वाले स्वर्गिकों के प्रभु के पीछे लगा रहता है।शीतल उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूप्पेरेयिल में कृष्ण बैठे हैं जहां मधु टपकते बाग हैं । **3584** । **3360**

सखी ! हमारा हृदय लाज खोकर तिरूप्पेरेयिल में रहता है जहां प्रभु बैठे हैं एवं जहां

दिनों दिन तथा महीनों महीना उत्सव मनाया जाता है। कैसे हम उनके ऊंचे मुकुट़ शंख़ चक़ कमल सी आंख़े एवं मूंगा से होठ भूल जायें जिसका हम लंबी अवधि तक आनंद ले चुके हैं। **3585 ।3361**

सजनी ! हमें क्यों दोष लगाती हो ? उनके अलौकिक शंख की आकृति में भूलकर हम अपना हृदय खो बैठे। जाकर तिरूप्पेरेयिल के प्रभु से हमारी खोयी हुए छटा वापस लाओ जहां वे समुद्र की शाश्वत लहरों से बढ़ते वैदिक पाठ के बीच बैठे हैं। हाय ! मेरा हृदय भी वहीं रह गया। अब क्या करने के लिये किसकी सहायता हमें मिलेगी ? **3586 ।3362**

हमने अपना सहज नारी का गुण कृष्ण को गंवा दिया जिन्होंने दुष्ट गाड़ी को तोड़ा, राक्षसी का स्तन पान किया, एवं आप घने मरूदु वृक्षों के बीच घुस गये़ तथा एक बछड़ा को ताड़ पेड़ पर पटक दिया। सजनी ! शीघ्र आगे आओ। हमें दोष लगाने का कोई लाभ नहीं। फल से लदे बाग वाले तिरूप्पेरेयिल का मुझे मार्ग बता दो। **3587 ।3363**

समय बचाओ एवं हमें वहां ले चलो। हमारा प्रेम सागर की तरह उमड़ रहा है। मेघ वर्ण के प्रभु हमारे सामने प्रकट हुए हैं लेकिन हमारी पकड़ से बाहर हैं। वे अनवरत वैदिक पाठ के बीच बड़े तालों के बीच तिरूप्पेरेयिल में भूमि पर बैठते हैं जहां धान की बाली उनका पंखा करते हैं। **3588 ।3364**

सखी ! अपनी चाह से हमारा हृदय तिरूप्पेरेयिल में रहता है जहां प्रभु विराजते हैं। आपने सागर से घिरे दीवारों के नगर लंका को नष्ट कर दिया। हाय ! मैं अपने हृदय को वापस आते नहीं देखती अब किसके साथ मैं र हूँगी ? कोई उसे वापस बुलाने वाला भी नहीं है। किसकी सहायता से मैं क्या करूं ? हाय ! मैं वही देखती हूँ जो मेरा हृदय देखता है। **3589 ।3365**

सखी ! तुम सभी एकत्र होकर प्रभु के साथ हाथ मिलाकर हम पर दोषारोपण करती हो इसी कारण हमारा प्रेम उमड़ रहा है। कैसे यह हुआ अगर मैं बताऊं तो यह धरा एवं आकाश की सीमा को पार कर जायेगा। हमें चारो तरफ यश से घिरे तिरूप्पेरेयिल जाकर अवश्य प्रभु से मिलना चाहिये। **3590 ।3366**

सखी ! हमें अवश्य जाना चाहिये। सजनी ! विनती है, हमें रोको नहीं। यह किस काम का होगा ? हृदय में अब हमें कोई संतोष नहीं है। सागर सा सलोने प्रभु जो धरा एवं सागर को निगल गये उपजाऊखेतों से घिरे तिरूप्पेरेयिल में रहते हैं। **3591 ।3367**

सखी ! मैं नगर एवं देश में खोजूंगी। हमें कोई लाज नहीं है। रत्न के पहाड़ के समान महलों से घिरे प्रभु तिरूप्पेरेयिल में रहते हैं। आप मकराकृत कुंडल धारण किये मकरा

नेडु कुलै कादन हैं। आप चक्रधारी प्रभु हैं जिन्होंने कौरवों का नाश किया। कितनी देर पहले आपने हमारे हृदय को चुरा लिया ? **3592 । 3368**

कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक तिरूप्पेरेयिल के प्रभु के बारे में है जो अनगिनत युगों से विश्व की रक्षा हेतु अनेकों रूप एवं नाम धारण करते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे चक्रधारी प्रभु के चरणारविंद के अधिकारी होंगे। **3593 । 3369**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **95** । तिरूप्पेरेयिल

1 । स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु में तिरूनेलवेली एवं तिरूच्चेन्डूर मार्ग पर अवस्थित है जो आळवार तिरूनगरी के पास पूरब में **5** कि मी पर स्थित है।यह दव्यिदेश तिरूक्कोलूर के समीप ही है तथा नौ तिरूपति में से एक है।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा पार्श्व में श्रीदेवी एवं भूदेवी से सुशोभित हैं।यहां भूदेवी श्रीदेवी के समतुल्य आकार का होकर विराजती हैं। पेरूमाल को ‘मकरानेदूकूळैकदर’ कहते हैं। नाच्चियार कुळैकुदवल्ली एवं तिरूप्पेरै कही जाती है।तीर्थ को शुक्र पुष्करणी एवं विमान को भद्र विमान कहते हैं। यहां का स्थल पुराण ब्रह्माण्ड पुराण है।

3 । महिमा ः यह ताम्रपणी के दक्षिण तट पर है तथा यह बड़े बड़े किलों के लिये प्रसिद्ध है। गरूड़ की मूर्ति भगवान के सामने न होकर नदी किनारे है।भगवान बच्चों को अपना अभिनय करते देखना चाहते थे इसलिये बच्चों पर दृष्टि ओझल होने के कारण गरूड़ को सामने से हटा दिये। यहां भगवान को 'मकरा नेडुम कुळे कदर' इसलिये कहते हैं कि भूदेवी को ताम्रपर्णी के जल में दो मकराकृत कुंडल मिले थे और भगवान ने उन्हें धारण कर लिया।

4 । दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3583** से **3593**। शतक **7 । 03** ।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

<u>सातवां शतक का चौथा दशक ः **7 । 04** ः आळियेळ</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 । 04 । 01 से **7 । 04 । 11** पासुर **3594** से **3604** या **3370** से **3380**

चक्र फैल गया शंख एवं धनुष भी फैल गये। पृथ्वी पर जयजयकार की ध्वनि गूंज उठी। खड्ग एवं गदा भी फैल गये। संसार एक बुलबुले की भांति दिखने लगा। प्रभु के चरण असुर के सिर पर आ गये। अहा ! किस तरह से फैलकर हमारे पिता ने एक

नये युग की शुरूआत करते हुए धरा को माप डाला। **3594 | 3370**

जब हमारे पिता ने अमृत के लिये मंथन किया कितनी आवाज हुई ! नदियां जल को पीछे पर्वत पर धकेल रही थीं। नाग से लिपटा पर्वत पृथ्वी को हिला रहा था और सागर का जल चक्कर काटकर आगे पीछे हो रहा था। **3595 | 3371**

जब हमारे पिता ने अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठाया तो सात लोक अपनी जगह पर स्थिर रहे सात पर्वत अपनी जगह पर स्थिर रहे एवं सात समुद्र भी अपनी जगह पर स्थिर रहे। **3596 | 3372**

जिस दिन हमारे पिता ने विश्व को स्वाद से निगला तो दिन लुप्त हो गये़, जल एवं धरा लुप्त हो गये़, आकाश एवं तारे लुप्त हो गये़, अग्नि एवं वायु लुप्त हो गये़, पर्वत एवं मैदान लुप्त हो गये़ एवं चमकते ज्योतिपुंज लुप्त हो गये। **3597 | 3373**

जब हमारे पिता ने घोर भारत युद्ध का नियंत्रण संभाला तो ओह! सुपोषित मल्ल योद्धाओं के पिसने की आवाज़ वीर योद्धा राजाओं के बिखरे अवशेष़ एवं जाग्रत स्वर्गिकों का प्रशस्ति घोष । **3598 | 3374**

जब हमारे पिता ने दुष्ट असुर का अंत किया तो दिन के अंत मे घटते प्रकाश के साथ चट्टान फोड़कर एक सिंह निकला एवं झरना की तरह रक्त चतुर्दिक ऊंचा गिरने लगा। **3599 | 3375**

ओह ! हमारे पिता ने लंका को धूल में मिला दिया। बाण से बाण टकराने लगे। सैंकड़ो शव पर्वत की तरह जमा हो गये। सर्वत्र रक्त की नदियां बह निकलीं। **3600 | 3376**

जब हमारे पिता ने बाणसुर की शक्तिशाली भुजाओं को काट गिराया तो मुर्गा चिह्न के ध्वज वाले देव भाग निकले। जान लो, तब प्रज्वलित अग्नि देव भी भाग चले। तब त्रिनेत्र देव भी भाग खड़े हुए। **3601 | 3377**

जब हमारे पिता ने प्रथम बार विश्व की रचना की तो जल़ पृथ्वी़ अग्नि़ वायु एवं आकाश से शुरूकर पर्वत़ ज्योतिपुंज़, उसके बाद वर्षा़, देवगऩ, चेतन प्राणी़, एवं अन्य सबों को बनाया। **3602 | 3378**

जब हमारे पिता ने पर्वत उठाकर घोर वर्षा बंद की तो गायें एवं अन्य पशु इसके नीचे एकत्र हो गये। बड़े तालाब तेज प्रवाह से जल बाहर बहाने लगे। समस्त गोकुल को एक आश्रय मिल गया। **3603 | 3379**

पर्वत उठाने वाले प्रभु के भक्तों के साथ खड़े होने वाले कृतज्ञ शठगोपन के गाये हुए मधुर हजार पदों से यह दशक प्रेम से पाठ करने पर सफलता प्रदान करता है। **3604 | 3380**

सातवां शतक का पाचवां दशक ः **7 | 05** ः कर्पार्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 | 05 | 01 से 7 | 05 | 11 पासुर 3605 से 3615 या 3381 से 3391

ब्रह्माकी सृष्टि में नीच से नीच तृण या कीड़े मकोड़े को भी गौरवपूर्ण अयोध्या में सभी चेतन एवं जड़ प्राणी के साथ ऊंचा स्थान मिला है। क्यों कोई विद्वान राजा राम को छोड़कर दूसरे के बारे में अध्ययन करेगा ? **3605 | 3381**

मानव समुदाय के कल्याणार्थ नारायण ने धरा पर जन्म लिया एवं अनेकों कष्ट झेलते हुए यहां घूमे तथा राक्षसों के अत्याचार का अंत किया। आपने विभीषण को राज्य दिया तथा अन्य सबों को मुक्ति प्रदान की। यह जानकर मर्त्यजन किसी अन्य के भक्त होंगे क्या ? **3606 | 3382**

कृष्ण के कट्टर शत्रु शिशुपाल ने प्रभु पर कान पका देने वाला भद्दी गाली जैसा शब्दों का प्रयोग किया तब भी वह प्रभु के चरण को पा गया। उनलोगों के बारे में जानकर जो इसे अच्छी तरह समझते हैं कोई भी केशव को छोड़कर किसी अन्य की प्रशस्ति सुनेगा क्या ? **3607 | 3383**

पुराकाल में जब यह सब कुछ भी नहीं था आपने जल बनाया तब चतुरानन ब्रह्माको बनाया और तब सब को अपने भीतर छिपा लिया। इन विस्मयकारी कृत्यों पर विचार कर वैज्ञानिकगन अन्य चीज पर ध्यान देंगे क्या ? **3608 | 3384**

सुन्दर सूकर का रूप धरकर गहरे प्रलय जल में डूबे पृथ्वी को प्रभु ने अपने दाढ़ों पर उपर उठाया। यह जानते हुए कोई भी प्रभु के चरण को छोड़कर अन्य किसी चीज की खोज करेगा क्या ? **3609 | 3385**

उदार बली राजा से पीड़ित होकर देवों ने प्रभु से विनती की। फलस्वरूप आपने वामन के रूप में भिक्षा मांगी। इन विस्मयकारी कृत्यों से अवगत होकर कैसे कोई केशव का भक्त नहीं होगा ? **3610 | 3386**

सुगंधित फूल से सजे मार्कण्डेय ने जीवन के लिये प्रार्थना की। जटाधारी शिव ने उन्हें अपने भीतर प्रवेश करा कर अपनी स्थिति दिखाई। प्रभु ने तब उन्हें अपने में मिला लिया। इस पर विचार करते हुए कृष्ण को छोड़कर अन्य को कोई खोजेगा क्या ? **3611 | 3387**

अपनी तपस्या के बल से असुरों के राजा हिरण्य ने देवों को पीड़ा पहुचाई। नरसिंह के रूप में आकर प्रभु ने आश्चर्यमय पराक्रम दिखाया। इससे अवगत होकर जानकार लोग प्रभु के नाम के सिवा अन्य का नाम सीखेंगे क्या ? **3612 | 3388**

संसार से वर्णित घोर युद्ध में रथ चलाकर जुआ से छल करने वाले सौ जनों का प्रभु ने नाशकिया तथा पांचों को विजयश्री दिलवाई। इससे अवगत होकर प्रभु को छोड़कर अन्य की कोई खोज करेगा क्या ? **3613 | 3389**

माया जनित कष्ट् जन्म् रोग् बुढ़ापा तथा मृत्यु से जड़ से छुटकारा दिला कर हम सबों को आप अपने चरणारविंद में शरण देते हैं। इससे अवगत होकर कोई भी विचारवान प्रभु का भक्त नहीं बनेगा क्या ? **3614 | 3390**

कुरूगुर शडगोपन के सरस हजार पद का यह दशक कृष्ण की प्रशस्ति है जो खड़े होकर पूजा करने वाले अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करते हैं।इसे याद करने वाले शुद्ध विचार से युक्त हो जायेंगे। **3615 | 3391**

<u>सातवां शतक का छठा दशक ः **7 | 06** ः पा मरू मूवुलगुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 | 06 | 01 से 7 | 06 | 11 पासुर 3616 से 3626 या 3392 से 3402

विश्व की रचना करने वाला महान नाभि कमल ! पृथ्वी को मापने वाला महान चरणारविंद ! राजीवनयन प्रभु इस भूले जीव के संरक्षक ! कमल समान हाथ वाले प्रभु ! कब हम आपके पास होंगे ! **3616 | 3392**

हाय! शिव एवं ब्रह्मा से पूजित आपके चरणारविंद से कब हम जुड़ेंगे ? पृथ्वी् अग्नि् जल् वायु एवं आकाश के रूप में स्थित प्रभु ! गायों को पर्वत के नीचे संरक्षण देनेवाले नर्तक प्रभु ! **3617 | 3393**

शीतल तुलसी के मुकुट वाले प्रभु! कोनरै फूल वाले शिव के प्रभु चतुरानन ब्रह्मा के प्रभु एवं प्रशस्ति योग्य नाम वाले प्रभु ! पर्वत उठाकर आपने तूफान को रोक दिया। अगर सच में आप हमारी जीवात्मा की आत्मा हैं् तो विनती है् कब आपसे साक्षात्कार होगा ? **3618 | 3394**

मधु टपकते शीतल तुलसी की माला पहने हमारे गोपाल ! आप तीनों लोक हैं।त्रिनेत्र शिव आप हैं। चतुरानन ब्रह्मा भी आप हीं है। वज्रधारी इन्द्र एवं अन्य देव भी आप ही हैं। कहां आपसे साक्षात्कार होगा ? **3619 | 3395**

मेरे गोपाल् मेरे नैसर्गिक श्याम मणि ! आपक नाभि कमल में तीनों लोक स्थित है।आपके तेजोमय आभा के बीच यह जीव कैसे आपको देख कर प्राप्त कर सकेगा ऋ **3620 | 3396**

मुझे नहीं पता् आपके वक्षस्थल पर लक्ष्मी के साथ आपको कैसे देखें ? नीले प्रकाश की बाढ़ विखेरते आप तेजोमय मणि के समान दिखते हैं। आपके चरण एवं हाथ् होंठ एवं

नयऩ छाती एवं नाभि़ सर्वत्र चमकते लाल ज्योति की तरह दिखते हैं। **3621 । 3397**

वक्षस्थल पर लक्ष्मी के साथ हमारे प्रभु आधे अंग पर पार्वती के साथ के प्रभु हैं। मुखड़े पर सरस्वती के प्रभु हैं, एवं इन्द्राणी के प्रभु हैं। आपने पृथ्वी को उठाया़ तीन नगर को जलाया़ तथा इन्द्रियों को शमित करते हुए स्वर्गिकों के लोक पर शासन करते हैं। हाय ! आप को मैं देख नहीं पाती ? **3622 । 3398**

डरावने मुनष्य की आकृति वाले के सामने घोड़ा़ सिंह के सामने लोमड़ी की जो स्थिति होती है वैसे हीं असुरगन अपना स्थल छोड़कर छिप गये जब गरूड़ पर सवार प्रभु ने भयानक माली का वध किया एवं शवों का पहाड़ जमा कर दिया। क्या हमलोग भी आपका दर्शन नहीं कर सकते ? **3623 । 3399**

हे हृदय ! क्या हम लोग भी आपका दर्शन कर सकते हैं ? आपने शक्तिशाली एवं दुष्ट राक्षसकुल का नाश किया तथा राज्य छोटे भाई को सौंप दिया। देवों के बीच केशरी की तरह आपने स्वयं गौरवपूर्ण शासन किया। **3624 । 3400**

गोपकुल में जन्मलेकर आपने अनेकों विस्मयकारी कृत्य किया ः कंस का वध़ पांडवों के साथ मित्रता़ एवं सेना का नाश। हरि ! श्रेष्ठ धैर्य से युक्त आप अपनी करूणा से हमें वैकुंठ का अमूल्य आरोहण प्रदान करेंगे। **3625 । 3401 । 3626 । 3402**

<u>सातवां शतक का सातवां दशक ः **7 । 07** ः एळैयरआवि</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 । 07 । 01 से **7 । 07 । 11** पासुर **3627** से **3637** या **3403** से **3413**

<u>सखी से नायकी की वार्ता</u>

नारियों के प्राण हरने वाले क्या वे दोनों यमदूत हैं या सागर सा सलोने प्रभु की सुन्दर आंखें हैं ? मुझे नहीं पता वे क्या हैं ? नूतन कमल के फूल की तरह वे सर्वत्र दिखते हैं। ओह ! देखो़ पापिनी मैं ! सखी ! सजनी ! मै क्या करूं ? **3627 । 3403**

सजनी ! घूंसे एवं गालियों से मुझे दंड देने से क्या लाभ ? क्या यह कोई लता है या कल्प लता का धड़ है ? मुझे नहीं पता। चोर प्रभु की सुन्दर नाक हमारे हृदय में गड़ गयी है जैसे कि प्रकाशित दीप चेन से लटक रहा हो। **3628 । 3404**

क्या यह सुन्दर बेर का फल है हमारी दुष्टात्मा का पाप़ या मूंगे की सुन्दर शाखा है ? श्यामल प्रभु के दिव्य होंठ़ हमारी आत्मा को प्रिय़ हमें सर्वत्र दिखते हैं। **3629 । 3405**

किशोरियों पर संधानित प्रेम के देवता मदन का क्या यह सुन्दर श्याम धनुष है ? हाय ! मदन के पिता हमारे कृष्ण की भौंहें सर्वत्र दिखती हुई हमारी जान लेने वाली है। **3630 । 3406**

क्या यह तड़ित की चमक आग को प्रज्वलित कर हमारी आत्मा को जलायेगी या मोती की सुन्दर लड़ियां हैं ऋ मुझे नहीं पता। पर्वत को उठाने वाले प्रभु की आभापूर्ण मुस्कान हमारी जान लेने वाली है। हाय ! सजनी ! कहां भाग जाऊं मुझे नहीं पता। **3631 | 3407**

मकर मछली को झुलाते क्या ये फूल की टहनी हैं ? जिससे असुर एवं किशोरियां भयग्रस्त होकर पूछते हैं 'कहां ? सजनी ! देखो फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु के आभूषित कान निष्ठुर की तरह हमारी जान लेने वाले हैं। **3632 | 3408**

सजनी ! मुझे नहीं पता कैसे इसे मैं दिखाऊं ? परंतु देखो। क्या यह वृद्धि को प्राप्त होने वाला आधा चंद्र है ? हाय ! प्रेमियों के लिये कोई विष है क्या ? प्रभु के चारों हाथ के साथ उनका ललाट निष्ठुरता से हमारी जान लेने वाला है। **3633 | 3409**

कृष्ण का सुन्दर मुखड़ा हमारे मन में बस गया है ः आपकी कमल सी आंख़, उठी हुई नाक़, मूंगावत होंठ, धनुष के समान भौंहें, मोती सा दांत, आभूषित काऩ, एवं चंद्र चिह्नत ललाट़, पूरा मुखमंडल, ज्योतिमय पुंज की तरह दिखता है। **3634 | 3410**

क्या वे तेजोमय सूर्य की किरणें हैं जो रात के अंधकार को सोख लिये हैं ? नहीं नूतन तुलसी से सुगंधित वे प्रभु की काली लटें हैं जो हमारे मन को मोह लिये हैं। हाय ! सजनी ! आप इसे समझे विना मुझे अपशब्द कहती हैं। **3635 | 3411**

सजनी ! आप रूखरे हाथ के साथ चारों ओर से घेरकर हमें वरामदे में खड़े होने के लिये अपशब्द कहती हैं। मेरा हृदय मणि वर्ण के प्रभु पर लग गया है जिनकी आभा सर्वत्र विखर रही हैं। आप हमसे क्या चाहती हैं ? **3636 | 3412**

शायद ही दृश्यमान कृष्ण की प्रशस्ति में कुरूगुर के शडगोपन के अतिप्रभावपूर्ण हजार पद का यह दशक याद करने वालों को सर्वदा के लिये स्वर्गिकों का लोक प्रदान करता है। **3637 | 3413**

<u>सातवां शतक का आठवां दशक ः **7 | 08** ः माया ! वामनने !</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 | 08 | 01 से 7 | 08 | 11 पासुर 3638 से 3648 या 3414 से 3424

आश्चर्यमय प्रभु ! वामऩ मधुसूदऩ बताइये। आप ही धऱा जऌ अग्निऱ आकाश एवं वायु हैं। आप ही माताॖ पिताॖ संताऩ एवं संबंधीॖ तथा अन्य सभी हैं तथा स्वयं भी हैं। क्या है यह सब ? **3638 | 3414**

तुलसी की माला पहने सुन्दर प्रभु ! अच्युत़ कृपाकरके बताइये। आप ही चॉद़ सूर्य़ तारागऩ अंधकाऱ एवं गरजती वर्षा हैं। महान यश, कलंक़, कूर आंखो वाले मृत्यु के

देव यम भी आप ही हैं। क्या है यह सब आश्चर्य ? **3639 | 3415**

शुन्दर चक्रधारी प्रभु ! दक्ष रथी ! कृपा करके बताइये। अनेकों अनंत युग एवं इनमे अनगिनत विभिन्न तरह की वस्तुएं क्षणिक या क्षणिक नहीं सब आप ही का विस्मयकारी स्वरूप है। क्या है यह सब शरारत ? **3640 | 3416**

मधु टपकाते कमल समान आंखों वाले प्रभु ! कृपा करके उत्तर दीजिये। आप गहरे सागर में फनधारी शेष पर शयन करते हैं। क्या यह सब प्राणी या वस्तुयें स्थायी है या अस्थायी ? क्या है यह सब नियोजित कृत्य ? **3641 | 3417**

सुगंधित एवं प्रस्फुटित तुलसी धारण करने वाले प्रभु ! कृपा करके बोलिये। आपने हमें हमारी इच्छाओं से मुक्त कर अपना बना लिया। वदन सांस जन्म एवं मरण सब आप हैं। अनेकों विस्मयकारी कृतियां हैं आपकी। क्या है यह सब छल ? **3642 | 3418**

हे छली वामन प्रभु ! कृपा करके बोलिये जिससे कि मैं समझ सकूं। ज्ञान एवं अज्ञान, शीत एवं ताप, आश्चर्य एवं सामान्य, जीत एवं हार, उपयोग एवं अनुपयोग सब आप हैं। क्या है यह कष्टपूर्ण श्रम ? **3643 | 3419**

हे कठिनता ! हे ऊंचे मुकुट वाले हमारे कृष्ण ! कृपा करके बताइये। कष्टदायक अभिमान, स्वच्छंदता एवं प्रेम, कष्टदायक इच्छा, भारी एवं स्थिर तथा चलायमान, यह सब बनाकर आपने हमें पीड़ित किया। क्या है यह सब खेल ? **3644 | 3420**

हम पर शासन करने वाले कृष्ण ! कितनी चतुराई से आप भरे हुए हैं ! किसी के लिये आपका दर्शन कितना दुर्लभ है एवं आपके बारे में लोग बताते हैं 'यह' और 'वह'। आपने तीन लोक बनाकर वही हो गये। आप हमारे भीतर हैं और बाहर भी। क्या है यह सब रीति ! **3645 | 3421**

हे मेरे कृष्ण ! आप हाथ पैर एवं सभी अंग हैं। स्वाद स्वरूप एवं स्पर्श हैं। शब्द एवं घ्राण भी आप ही हैं। जरा सोचिये आपके सूक्ष्म स्वभाव का कोई अंत नहीं है। क्या है यह सब तथा कैसे ये सब स्थित हैं ? **3646 | 3422**

वेद में वर्णित आप रूप वाले हैं तथा रूपविहीन हैं। सच्चाई से सूक्ष्म रूप में अपृथकशील हैं। वक्षस्थल पर तुलसी माला वाले हे मेरे अच्युत ! जिस रूप में आपका संदर्भ दिया जाता है आप सच में वही हैं। **3647 | 3423**

कुरूगुर शडगोपन के धवल हजार गीतों का यह दशक उस प्रभु के बारे में है जो 'यह' एवं 'वह' से नहीं बताये जा सकते। इसे याद करने वाले हरि के भक्त हो जायेंगे। **3648 | 3424**

<u>सातवां शतक का नौवां दशक : **7 | 09** : एन्रैक्कुम्</u>

इशमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

7 । 09 । 01 से **7 । 09 । 11** पासुर **3649** से **3659** या **3425** से **3435**

गीता की तरह तिरूवायमोळि प्रभु के श्रीमुख के शब्द एवं गीत हैं।

तेजोमय मूल कारण प्रभु की प्रशस्ति हम कैसे गायेंगे ! दिन प्रति दिन आप हमें ऊंचा उठाते जा रहे हैं। प्रति दिन आप हमें अपनाते हैं एवं मेरे माध्यम से तमिल में गाथा गाते हैं। **3649 । 3425**

आज हमारी प्रिय आत्मा को आपने गौरवशाली बना दिया है। लग रहा था कि हम अपने शब्दों से गा रहे हैं परंतु आपही अपने शब्दों में प्रशस्ति गाये हैं। कितनी विस्मयकारी बात है ! **3650 । 3426**

आप हमारी वाणी में प्रवेश कर गये एवं हमें आपके प्रति कृतज्ञ बना दिया। शुद्ध भक्तों की आवाज में आप अपनी प्रशस्ति स्वयं गाते हैं। अपनी बात में कैसे मैं आदि कारण प्रभु को भूल सकता हूँ ? **3651 । 3427**

क्या मैं अपने पिता को भूल सकता हूँ जिन्होंने मेरी वाणी में स्वयं अपनी प्रशस्ति गाई है ? आपने हमें हमारे आदिरहित कर्म से मुक्त कर दिया। हमारी कुशलता को स्थापित करने के लिये आप घूमते रहते हैं। **3652 । 3428**

आपने मुझे अपना बना लिया तथा मेरे द्वारा आपने ही मधुर पदों को गाया जिसकी प्रशंसा सारा संसार करता है। मैं तो केवल शब्द बोल रहा था उसमें सार तो आप भर रहे थे। **3653 । 3429**

हमारे वैकुंठ नाथ ने हमारे साथ मिश्रित हो जाना पसंद किया एवं अपनी प्रशस्ति गाये। आपने सुयोग्य एवं प्रसिद्ध कवि को इस कार्य के लिये नहीं चुना। **3654 । 3430**

हमारे कर्म का क्षय करने वाले प्रभु को कब हम जी भर कर जान सकेगे ? आप ने हमें अपना बना लिया एवं मेरी वाणी से वैकुंठ की प्रशस्ति स्वयं आप गाये। **3655 । 3431**

चक्रधारी प्रभु ने हमें अपना बना लिया एवं हमें योग्यता देकर स्वयं का मधुर गीत गाये। यद्यपि कि हम सारी धरती को मिश्रित कर पी जायें तद्यपि क्या यह आपकी गाथा गाने की हमारी प्यास को मिटा पायेगा ? **3656 । 3432**

यद्यपि कि हम भूत एवं भविष्य से पेय पीते रहें क्या यह आपकी गाथा गाने की हमारी प्यास को मिटा पायेगा ? आपने मेरे जैसा बुद्धिहीन को अपना बना लिया तथा मेरी जीभ से आपने स्वयं अपनी विस्मयकारी गीत गायी। **3657 । 3433**

मेरी जीभ से गाने की सहायता के लिये मैं आपको क्या पारितोषिक दे सकता हूँ ? आपकी प्रशस्ति के पद इतने प्रभावी एवं मुग्धकारी हैं कि इस कोटि की रचना इस लोक

या दूसरे लोक में नहीं पायी जा सकती | **3658 | 3434**

<u>सातवां शतक का दसवां दशक ः **7 | 10** ः इन्बम्पयक्क</u>

इशमें **11** पासुर हैं | दोनों रीति की गिनती दी जा रही है |

7 | 10 | 01 से **7 | 10 | 11** पासुर **3660** से **3670** या **3436** से **3446**

कब वह दिन आयेगा जब हम करबद्ध हो बागों से घिरे तिरूवारन्विलै में सुख से पद्मनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु की परिक्रमा करेंगे ? आप हमारे नाथ हैं एवं हम पर स्नेह वश शासन करते हैं तथा सातो लोक में आनंद का संचार करते हैं | **3660 | 3436**

वामन रूप में आकर आप ऊंचे फैल गये | संदेह को दूर करते हुए फैलकर अपने दोनों चरणों से आपने धरा को मापा | आप तिरूवारन्विलै में रहते हैं जहां महलों के ध्वज आकाश चूमते हैं | करबद्ध हो ताजा जल से कब हम आपकी पूजा करेंगे ? **3661 | 3437**

गरूड़ पर सवार होकर जाते देखने के बदले कब हम आपकी पूजा करेंगे ? आप बागों से घिरे तिरूवारन्विलै में स्थित गोविन्द मधुसूदन एवं नरहरि हैं जो चारो वेद पांच यज्ञ एवं छ आगम के लिये जाना जाता है | **3662 | 3438**

क्या कभी भी हम यहां से कृष्ण के चरणाविंद का चिरंतन ध्यान कर सकते हैं ? विश्व के गौरवशाली प्रभु मथुरा में जन्म लिये थे | आप गन्ना एवं धान से घिरे तिरूवारन्विलै में स्थित हैं | **3663 | 3439**

आपके चरणकमल का ध्यान एवं पूजा करते हुए सदा के लिये अगर हम आपकी सीमारहित प्रशस्ति गायें तो हमारे कर्म का क्षय हो जायेगा | आप महलों की ऊंची दीवारों से घिरे तिरूवारन्विलै में हैं जो पुराकाल के महान भक्तों का साक्षी मित्र है | **3664 | 3440**

भक्तों ! अगर हम आपके स्वरूप का ध्यान करें तो हमारे कर्म का क्षय हो जायेगा | मेरे हृदय से प्रशंसित आप सर्वदा हमारे भीतर हैं | अपनी रूक्मिणी से व्याह के लिये आपने युद्ध जीता | आप महान प्रसिद्धि वाले तिरूवारन्विलै में स्थित हैं | **3665 | 3441**

तिरूवारन्विलै नगर बागों से घिरा है | आप वहां स्वर्गिकों के नाथ कृष्ण के रूप में रहते हैं | पुराकाल में बाणासुर की किला में घुस कर आपने उस असुर की हजारों भुजाओं को काट दिया जबकि शिव भाग गये | आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं | **3666 | 3442**

गहरे जल में खड़ा हाथी ने सूढ़ उठाकर पुकारा 'कृष्ण आपके अतिरिक्त हमारा कोई आश्रय नहीं है |' प्रभु ने उसकी आपदा को तब समाप्त कर दिया | आप तिरूवारन्विलै

में रहते हैं। अगर हम परिक्रमा से आपकी पूजा करें तो हमारे सारे कर्मों का क्षय हो जायेगा। **3667। 3443**

यद्यपि हमारे कर्म का क्षय हो जाये और हम स्वर्ग चले जायें हमारा मन कहेगा 'कब हम आपकी पूजा कर प्रशस्ति गायेंगे ?' उचित कर्म, सुयोग्य हृदय एवं सुन्दर शब्दों के साथ कब हम तिरूवारन्विलै में परिक्रमा करेंगे ? **3668। 3444**

हमने तिरूवारन्विलै के प्रभु के प्रति समर्पण कर दिया है जहां भक्तगन मन वचन कर्म से आपकी पूजा करते हैं। देवपिरान प्रभु हमारे अन्तःमन को जानते हैं। आप जानते हैं कि मेरे पास कोई अन्य छिपी हुई इच्छा नहीं है। **3669। 3445**

संत हृदय कुरूगुर शडगोपन के पावन हजार पद का यह दशक पवित्रात्मा के चरण में समर्पित है। इसे याद करने से स्वर्गिकों एवं उनकी पत्नी की पूजा सुलभता से मिल जाती है। **3670। 3446**

°°

दिव्यदेश **96**। तिरूवारन्विल्लै या अरनमूला

1। स्थान ः यह स्थान केरल में पंपा के तट पर है जो कोट्टायम के पास अवस्थित चेंगानूर से **10** कि मी पूरब में है। इस क्षेत्र में अरनमूला, चेंगानूर, एवं तिरूवल्ला, बहुत ही पावन एवं पवित्र स्थल हैं।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में तिरूक्कुरलअप्पन या पार्थ सारथी कहे जाते हैं। तायर पद्माशिनी नाच्चियार कही जाती हैं। केरल के मंदिर में गर्भगृह प्रायः गोलाकार आकृति का होता है और यहां भी गर्भगृह गोाल है। तीर्थ को वेदव्यास या पंपा तीर्थ कहते हैं तथा विमान वामन विमान के नाम से जाना जाता है। चारों दिशाओं के चार गोपुरम में पूर्व का गोपुरम प्रमुख है जहां **18** सीढ़ियां चढ़ने के बाद प्रवेश होता है। महाभारत के **18** पर्व तथा गीता के **18** अध्याय से यह सम्बंध रखता है। उत्तर के गोपुर से **57** सीढ़ियां उतर कर पंपा में स्नान के लिये पहुंचा जाता है।

3। महिमा ः केरल में पांचो पांडव के पांच दिव्य देश जहां उनके आराध्य कृष्ण के विग्रह विराजमान हैं। युधिष्ठर का तिरूचित्तरारू में, भीम का कुटन्दु पल्लियूर में, नकुल का तिरूवनवन्डुर में, सहदेव का तिरूकोटिदनम में, तथा अर्जुन का अरनमूला में। महाभारत युद्ध की हत्याओं के दोष से निवृत्त होने के लिये अर्जुन यहां तपस्या करने आये थे। कहते हैं ब्रह्मा ने मधु कैटभ के हाथो वेद गंवा दिया और फलस्वरूप उनकी सृष्टि रचना की बुद्धि समाप्त हो गयी। भगवान से प्रार्थना करने पर भगवान ने उनको यहां वेद उपलब्ध करा दिया।

अर्जुन ने पहले 'निलक्कल' के मंदिर में भगवान की पूजा की थी। बाद में भगवान वहां से स्थान परिवर्तन करने के लिये निकल गये और लोंगों ने छः बांस की डेंगी बनाकर भग्वान को यहां नदी के रास्ते नदी किनारे लाया। 'आर' यानी छः तथा 'मूला' यानी डेंगी। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार 'आरिन विलंबु' यानी 'नदी का किनारा' ही 'वारनविल्लै' कहा जाने लगा। अर्जुन ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया था इसलिये अर्जुन अम्बळम भी कहते हैं।

एक नम्बुदरी परिवार ओनम पर्व के अंतिम दिन ब्राह्मण अतिथि को भोजन कराते थे। एकबार कोई भी ब्राह्मण नहीं आ सके तब भगवान स्वयं ब्रह्मचारी बनकर गये और भोजन स्वीकार किया। साथ हीं नम्बुदरी को स्वप्न दिया कि भविष्य में ओनम के उत्सव के लिये ब्राह्मण के भोजन की सारी सामग्री अरनमूला मंदिर में उपलब्ध करा दे। नम्बुदरी वैसा ही करने लगे तथा सारा सामग्री नाव पर रखकर अरनमूला मंदिर में भेजा जाने लगा। एकबार डाकुओं ने नाव को लूटना चाहा तब कोई दूसरे नाव पर सवार अन्य यात्रियों ने नम्बुदरी के नाव को सुरक्षित अरनमूला पहुंचा दिया। इस घटना की पुण्यस्मृति में प्रत्येक वर्ष ओनम के अवसर पर अरनमूला में नौका प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।

शवरीमला के अयप्पन स्वामी का मंदिर जब बन्द रहता है तब वहां से सारे आभूषण अरनमूला के मंदिर में ही लाकर सुरक्षित रखे जाते हैं।

4। दिव्यप्रबंधम संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3660** से **3670**। शतक **7**।**10**।

ºº

<u>आठवां शतक का पहला दशक ः **8**।**01** ः देविमारावार</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8।01।01 से 8।01।11 पासुर 3671 से 3681 या 3447 से 3457

आपकी प्रिया श्री देवी एवं भू देवी के निदेश पर सभी स्वर्गिक जन सेवारत रहते हैं। तीनो लोक आपका क्रीड़ा स्थल है। जो स्वरूप आप चाहते हैं धारण करते हैं। मणि समान वर्ण़ कमल समान आंख़ एवं मूंगा समान होठ वाले प्रभु ! हमारी आत्मा के अमृत ! सागर मंथन करने वाले प्रभु ! हमारी दृष्टि को शुद्ध कीजिये। **3671**।**344!7**

हमारी एकमात्र ईच्छा आपका दर्शन है। हाय ! हमारी आंखे आंसू से भरी हैं। सब तरह से आप हमें प्रेम करने दीजिये तथा अपने नाम का गान करने दीजिये। हमें अपना दर्शन दीजिये। हे राम़ कृष्ण़ तथा कल्प फल ! जल से धरा को उठाने वाले प्रभु ! आप भक्तों

के अमृत हैं। **3672 | 3448**

प्रिय शिशु प्रमुख नंदगोप के प्राणाधार मनमोहक हस्तिशावक यशोदा के आनंदसागर समान गहरा प्रभु ! आपने दुष्ट हिरण्य की चौड़ी छाती को पंजो से चीर दिया। आप स्वामी के स्वरूप में फिर आइये नहीं तो भक्तगन कैसे जीवित रह सकेंगे । **3673 | 3449**

घोर युद्ध में भयानक सेना को लड़ाने वाले प्रभु ! हे स्वर्गिकों के अमृत तथा असुरों के विष! हमारी आत्मा के प्रिय ! तब हमें भी संदेह होने लगेगा कि जिस रूप में वे आपकी पूजा करते हैं आप भक्तों के सामने उसी रूप में प्रकट होते हैं एवं उनकी अर्चना स्वीकार करते हैं। **3674 | 3450**

हे महान आत्मा ! आपने धरा को बनाया उसे खा गये पुनः बनाये उठाया एवं मापा। हे गौरवशाली आत्मा ! आपने सागर बनाया उसपर सोये उसका मंथन किया उसे दो भाग मे बांट दिया तथा उस पर सेतु बनाया। हे अधिआत्मा ! जिसतरह से देवतागन मनुष्यों के लिये हैं उसीतरह से आप देवतागन के लिये हैं। हे विश्व की आत्मा ! कहाँ मैं आकर आपसे मिलूं। **3675 | 3451**

आप स्वरूप रहित आत्मासमूह तथा जाग्रत स्वर्गिक हैं। आप सात लोक तथा उसके देवगन एवं उनके कृत्य हैं। अगर आकाश के आगे कुछ है तो आप हैं। मेरे प्रभु ! यहाँ से कहाँ जाकर आपसे मिलूँ । **3676 | 3452**

बांस सा सुघड़ तथा कोमल बाहों वाली नप्पिनाय का आपने आलिंगन किया। ताजा दूध एवं ताजे मक्खन के समान मृदु प्रभु ! सागर के अमृत समान मधुर प्रभु ! हे भूत वर्त मान एवं भविष्य ! हाय ! हम यह संदेह करने लगेंगे कि आप ये सब हैं। **3677 | 3453**

विवाह के गौरवपूर्ण राजकुमार ! आप हमारे पापी हृदय को तोड़ते हैं। गरूड़ की सवारी कर असुरों को मृत्यु देने वाले प्रभु ! हजारफन के नाग पर सागर में शयन करने वाले प्रभु ! हमारे वचन कर्म तथा हम स्वयं आप ही हैं। मुझे नहीं पता आपकी कैसे पूजा करूं ? **3678 | 3454**

अगर यह सच है कि आप ही हम हैं तथा स्वर्ग नरक भी आप ही हैं तो इसका क्या तात्पर्य कि सुखद स्वर्ग में जाओ या नरक में ? इसके बाद भी नरक की कल्पना हमें भयग्रस्त कर देती है। सुखद स्वर्ग में स्थित प्रभु कृपया अपने चरण से जोड़ लें। **3679 | 3455**

हजार भुजायें हजार सिर हजार कमल सी आंखें हजार चरण एवं हजार नाम वाले तेजोमय प्रभु ! इस क्षुद्र को आपके चरण के उपहार के बदले आपको मेरे पिता एवं नाथ

हम अपना जीवन समर्पित करते हैं तथा आपको अपने हृदय से लगाते हैं। **3680 | 3456**

महान कुरूगुर नगर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक प्रपितामह प्रभु की प्रशस्ति में है जो ब्रह्मा के पिता हैं रूद्र के पिता हैं चारण के पिता हैं देवों के पिता हैं एवं विश्व के एकमात्र पिता हैं। भक्तों ! इसे याद कर लो तुम भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हो। **3681 | 3457**

आठवां शतक का दूसरा दशक : **8 | 02** : नङ्गळवरिवळै

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8 | 02 | 01 से **8 | 02 | 11** पासुर **3682** से **3692** या **3458** से **3468**

सखी से नायकी की वार्ता

कंगन वाली गोरी सखी ! हम अपने धूर्त प्रभु से लज्जित हैं। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि तुमलोगों से बताकर मुंह दिखा सकती हूँ। हमारे कंगन खिसक गये हमारा रंग फीका पड़ गया हमारे उरोज ढ़ीले हो गये मैं अचेत हो जाती हूँ। हाय ! मैं डरावनी आंखों वाले गरूड़ पर सवार वेंकटम प्रभु के पीछे गयी थी। **3682 | 3458**

प्रभु के पास जाकर उनका स्नेह पाने वाली सखीगन ! हाय ! मेरे पास शब्द नहीं हैं कि तुमलोगों से अपनी वेदना बताकर राहत की सांस लूं। अगर आकर्षक राजीव नयन धूर्त प्रभु यहां कभी दिख जायें तो कैसे मैं उतावली होकर उनसे अपना खोया हुआ कंगन एवं वदन का मोहक रंग प्राप्त कर सकूंगी ? **3683 | 3459**

गोरी सखी ! यह समय है जिसका अंत होता है मेरा अंत नहीं होता। प्रतीक्षा करो और देखो। हमने कितने उपहास सहे हैं लज्जित होने से क्या लाभ ? जब तक प्रतीक्षा करनी होगी मैं करूंगी परंतु श्याम वदन आभामय कृष्ण प्रभु से अपना कंगन एवं तेज वापस लूंगी जो इसे चुरा ले गये हैं। **3684 | 3460** सखी ! बागों एवं महलों से घिरे दक्षिण कुळन्दै के पश्चिम तरफ स्थित विस्मयकारी नर्तक मायक्कूत्तन प्रभु रहते हैं। युद्ध में सिद्धहस्त चक्र चलाने वाले प्रभु नाचते गरूड़ पर चले गये। मैंने पीछा की मेरे कंगन गिर गये और मेरा हृदय एवं अन्य सबों ने मेरा त्याग कर दिया। कंगन वाली सखियों के सामने मैं लज्जित खड़ी हूँ। अब मै क्या गंवा ही सकती हूँ। **3685 | 3461**

सखी ! जैसे दीपक पर पतंग कूद पड़ते हैं उसी तरह प्रभु का तेज भी आकर्षक है। अनंत युगों से महान ऋषिगन ने प्रभु को समझने का प्रयास किया परंतु असफल रहे। क्या हमलोग प्रथम हैं जो चक्रधारी प्रभु को अपने बीच देखने के लिये उत्सुक हुए। बताओ क्या तुम ठीक बोल रही थी। **3686 | 3462**

सखी ! तेजोमय प्रभु शब्दों से वर्णनातीत हैं एवं स्वर्गिकों के लिये भी दुर्लभ हैं। जैसा भी हो उन्होंने मेरा रंग चुरा लिया एवं पराग भरे अपनी तुलसी से मुझे वंचित रखा। हाय ! अपनी शिकायत मैं किससे सुनाऊं । वे उपजाऊबागों से घिरे कुळन्दै में स्थित हैं। **3687 । 3463**

फूल के जूड़ो वाली सजनी मेरी प्यारी सखी ! वे हमें छोड़कर बिना ठिकाना के लुप्त हो गये हैं। 'मल़ हरि़ केशव़ नारायण़ श्रीमाधव़ गोविन्द वैकुंठ' तथा अनेकों नाम मैं बड़बड़ाती रहती हूॅं। मैं क्या करूं। यद्यपि कि अनेको वर्ष बीत जायेंगें पर मैं प्रतिज्ञा करती हूॅ उनका दर्शन अवश्य करूंगी। तुमलोग यह समझ सकती हो कि तुम्हारे एवं हमारे एक लक्ष्य नहीं है। **3688 । 3464**

बाहर चले जाओ। बाहर जाओ। हमारे प्रिय मैना़ तोता़ मेरे कोयल़ एवं मेरे मोर। उन्होंने मेरी कुशलता़ सम्पदा़ हृदय़ तथा अन्य सभी कुछ का कण कण चुरा लिया। वे सुन्दर वैकुंठ़ क्षीरसागऱ एवं वेंकटम पर्वत पर रहते हैं। जब तक हमारी अंतिम ईच्छा हमें छोड़ नहीं देती है वे हमारे पास नहीं आयेंगे। अतः बाहर जाओ। **3689 । 3465**

सखी ! स्वर्गिकों के प्रभु आसानी से दर्शन वाले नही हैं। आप एक मनमोहक छोकरा के रूप में आये एवं फैलकर धरा आकाश आदि को अधिकार में कर लिये। उनकी सुन्दर तेजोमय भुजायें शरारत वाली हैं। हमने अपनी गरिमा तथा लाज उनके सामने गंवा दिया है। अब हम क्या गंवायेंगे । **3690 । 3466**

कंगनवाली गोरी प्यारी सखी ! मेरा हृदय हमें छोड़कर चला गया और कह गया 'अबसे तुम्हारा नहीं'। जाकर उसने प्रभु के चरणाविंद को पकड़ लिया जो पर्वत के समान वदन से सूर्य के समान चक्र एवं चांद के समान धवल शंख धारण किये आये। अब मैं क्या करूं । **3691 । 3467**

अंतादि के निर्मल हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन के हैं जिन्होंने कृष्ण के चरणारविंद के लिये अपनी सारी कामनाओं का त्याग कर दिया। जो इसे भगवान कृष्ण के सामने गायेंगे वे निर्मल होकर धरा पर सब कुछ पाजायेंगे। **3692 । 3468**

°°

दिव्यदेश **97** । मायक्कूत्तन या पेरूंकुळम या तिरूकुळन्दै

1। स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास के नौ तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपर्णी के उत्तर में अवस्थित है। यह स्थान श्रीवैकुंठम से **8** कि मी उत्तर पूर्व में स्थित है।

2। विग्रह स्वरूप ः मूलावर यहां खड़े मुद्रा में 'पेरूंकुळम' या 'कुलन्दै' के नाम से जाने

जाते हैं। इस स्थान को तिरूकुलन्दै तथा पेरूकूळम भी कहते हैं। उत्सव मूर्ति को कुलन्दै मायाकूत्तन कहते हैं। भगवान को यहां वेंकटवनन भी कहते हैं। भगवान के साथ श्रीदेवी भूदेवी एवं नीला देवी दर्शन देती हैं। तायर कुलन्दैवल्ली कही जाती है। पेरूकूळम तीर्थ है एवं आनन्दनिलय विमान है।

3। महिमा ः भगवान ने एक बालिका को चुराने वाले असुर माया के सिर पर नाच कर उसका नाश किया था इसलिये इन्हें चोर नाट्यम तथा माया कूत्तन भी कहते हैं। माया यानी असुर एवं कूत्तन यानी नृत्य। चूंकि गरूड़ जी ने भगवान को असुर का पीछा करते हुए शीघता से यहां लाया था इसलिये गरूड़ जी पंख फैलाये हुए अवस्था में दर्शन देते हैं।

4। दिव्यदेश संदर्भ ः नम्माळवार तिरूवायमोळी **3685** शतक **8**। **02**। **04**।

ःः

<u>आठवां शतक का तीसरा दशक ः **8**। **03** ः अङ्गुमिङ्गुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8। 03। 01 से 8। 03। 11 पासुर **3693** से **3703** या **3469** से **3479**

शंख चक्रधारी प्रभु ! आप में समाहित कमलनिवासिनी लक्ष्मी भूदेवी एवं नप्पिनाय हैं। देव एवं असुर सर्वत्र आपकी पूजा करके आपसे आश्रय मांगते हैं परंतु आपको समझने में सक्षम नहीं हैं। **3693**। **3469**

बिना पावन वेद मंत्रों को जाने केवल तेजोमय चक्रवाले प्रभु की पूजा करके हम लोगों ने तृष्णा को काटकर जन्म मरण बुढ़ापा एवं रोग की यातना का नाश कर दिया है। प्रभु हमारी शक्ति के स्रोत हैं। **3694**। **3470**

हाय ! कोई भी आपका शंख एवं चक्र धारण कर नहीं आता और न तो कोई आपका खड्ग एवं धनुष लिये आपके पीछे आता है। हाय ! इश धरा पर हर दिन हम आपकी पूजा हेतु आपको खोजते हैं परंतु आपको पाते नहीं। **3695**। **3471**

प्रभु धरा को एक कौर में निगल कर आप बटपत्र पर शिशु की तरह सोये। भक्त उस मौका को देख रहा है कि आपके पीछे आपका शंख चक्र लेकर जा सके। **3696**। **3472**

प्रभु सुन्दर कोलुर एवं पुलिंगुडी में शांत शयन कर रहे हैं। यहां किस कारण आप इतनी गहरी निद्रा में हैं। क्या आप लंका के युद्ध से या धरती पर लंबी छलांग लगाने से इतना थक गये हैं। **3697**। **3473**

देवों के प्रभु हाने के कारण आप उनकी श्रद्धांजलि स्वीकार करते हैं। आप सुन्दर शंख चक्र धारण करते हैं। देखो आप सृष्टि के अंधकार को दूर करते हैं।आप आकर हमारे हृदय को अपने मणि वर्ण से प्रकाशित करेंगे। **3698**।**3474**

लक्ष्मी को अपने वक्ष्स्थल पर धारण किये हुए प्रभु परिशरम में रहते हैं। यात्री आते हैं एवं जाते हैं परंतु हाय ! कोई कहता नहीं 'एक भक्त प्रतीक्षा में है कि एक कौर खाकर शिशु की तरह सोये प्रभु के जागने पर आपके शंख चक्र को लेकर वह आपके पीछे जाये। **3699**।**3475**

चक्रधारी प्रभु ! आपने सात पर्वत् सात सागर् एवं सात लोक को एक ही पग में लांघ दिया। कब आप हमको अपने चरणारविंद की सेवा कर आनंद मनाने का अवसर प्रदान करेंगे ? **3700**।**3476**

स्नेह के प्रवाह में हम कहते हैं 'मूल प्रभु काल् मणिवर्ण वाले मेरे तिरूमल !' हमारे प्रभु के गौरव को कौन समझ सकता है । न तो ब्रह्मा न शिव् न देवगन। बात करने से क्या लाभ। **3701**।**3477**

स्पष्ट विचार वाले मुनिगन केवल किनारा देख सकते हैं। महान स्वर्गिक गन केवल खड़ा होकर पूजा करते हैं। सागर मथने वाले प्रभु की पूरी प्रशस्ति हमलोग कैसे गा सकते हैं । विनती है् बताओ। **3702**।**3478**

ऊंचे महल वाले कुरूगुर नगर के शडगोपन के सुन्दर हजार पद से लिया गया यह दशक ऊंचे मुकुट वाले प्रभु की प्रशस्ति गाता है जो जन्म की यातना से मुक्ति दिलाते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे पुनर्जन्म से मुक्त हो जायेंगे। **3703**।**3479**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **98**। तिरूपुलिंगुडी

1।स्थान ः यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास नौ तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपर्णी के उत्तर में है तथा वरगुणमंगै दिव्य देश से **2** कि मी तथा श्रीवैकुंठम से **3** कि मी पर अवस्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः पेरूमाल को यहां 'कैसिनी बंदन' या 'भूमि पालार' भी कहते हैं। मूलावर भुजंग शयन मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ दर्शन देते हैं। तायर मालारमगल नाच्चियार या पूमगल नाच्चियार कहते हैं। वरूण तीर्थ है तथा विमान को वेदसर कहते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण तथा स्कंद पुराण यहां का स्थल पुराण है।

3।महिमा ः नौ तिरूपति में भगवान दो स्थान पर शयन मुद्रा में देखे गये हैं जिसमें से एक यह स्थान है तथा दूसरा तिरूक्कोलूर है। यहां भगवान के दोनों चरणारविंद 'तिरूवाडी' का दर्श

न मुख्य द्वार से ठीक से नहीं होता है।अतः परिक्रमा के क्रम में एक छोटे दरवाजे से तिरूवाडी दर्शन मिलता है। नाभिकमल से निकले ब्रह्मा, आदिशेष, एवं पेरूमाल एक ही पाषाण खंड से बहुत ही अलौकिक सौंदर्य स्वरूप में बने हैं।
भगवान श्रीदेवी के साथ विराज रहे थे तब भूदेवी कुपित होकर पाताल लोक चली गयीं। सारी पृथ्वी पर उदासी छा गयी एवं लोग त्राहि माम करने लगे। भगवान भूदेवी को खोजते पाताल लोक में पहुंचे तथा भूदेवी को यह विश्वास दिलाया कि उनका महत्व से श्रीदेवी से कम नहीं है। पृथ्वी की रक्षा करने के कारण भगवान को भूमि पालार कहते हैं।
यहां इन्द्र को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति मिली थी। राक्षसयोनि से मुक्त होकर एक वैदिक ब्राह्मण यज्ञ शर्मा ने अपना मूल रूवरूप इसी स्थान पर पुनः प्राप्त किया था। वशिष्ठ जी के पुत्रों ने अपशब्द कहने के कारण यज्ञ शर्मा को प्रेत बनने का शाप दे दिया था। इन्द्र एक बार हिमालय में भ्रमण कर रहे थे।वहां एक सुन्दर मृग एवं मृगी साथ में घूमते दिखे। इन्द्र ने मृग का शिकार कर दिया। चूंकि मृग एवं मृगी ऋषि तथा ऋषिपत्नी थे इन्द्र को ब्रह्म हत्या का पाप लग गया। यहां आकर इन्द्र ने पाप के प्रायश्चित में यज्ञ किया। प्रेत के स्वरूप में यज्ञशर्मा ने यज्ञ में विघ्न डाला। भगवान ने अपने गदा से प्रेत का अंत कर दिया जिससे यज्ञ शर्मा को प्रेत योनि से छुटकारा मिली।
4।दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3697**, शतक **8**।**03**।**05**, **3792** से **3802** तक, शतक **9**।**02**।

ंंं

दिव्यदेश **99**। परिशरम या तिरूवनपरिशरन
1।स्थान ः यह स्थान केरल में अवस्थित है। इसे तिरूपतीशरम भी कहते हैं तथा नागरकोइल तिरूनेलवेली पथ पर नागरकोइल से करीब **4** कि मी दूर बायें मुड़ने पर आधे कि मी की दूरी पर यह स्थान अवस्थित है।
2।विग्रह स्वरूप ः **9** फीट की ऊंची प्रतिमा मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा चतुर्भुजी हैं।ऊपर के दो हाथ में शंख चक्र हैं। नीचे का दायां हाथ अभय मुद्रा मे है तथा बायां घुटने पर टिका हुआ है। पेरूमाल को तिरूकुरलप्पन या तिरूवळमारबन कहते हैं। प्रतिमा का निर्माण काडु शर्करा योग से किया गया है। ग्रेनाइट चूना शर्करा सरसों आदि के सम्मिश्रण से प्रतिमा बनी हैं इसीलिये इनका कभी जल आदि द्रव्य पदार्थ से अभिषेक नहीं किया जाता। भगवान के गर्भगृह में उनके साथ सप्तऋषि विराजमान हैं। कमलवल्ली तायर हैं परंतु इनकी पृथक सन्निधि नहीं है। लक्ष्मी तीर्थ का नाम है तथा विमान को इन्द्रकल्याण कहते हैं। यहां का स्थल वृक्ष नीम है। राम के साथ सीता तथा लक्ष्मण,

विभीषण, आंजनेय, कुलशेखर आळवार, विष्वकसेन, नटराज, एवं नम्माळवार की पृथक सन्निधियां हैं।

3। महिमा ः तमिल में घोड़ा को 'परि' कहते हैं और कुलशेखर आळवार का खोया हुआ घोड़ा यहां पाया गया था इसीलिये यह परिशरम के नाम से भी जाना जाता है। भगवान का नरसिंह स्वरूप देखकर लक्ष्मी डर गयी थीं। प्रह्लाद की प्रार्थना पर आपने सामान्य स्वरूप से लक्ष्मी को यहां शांत किया।

सप्तऋषियों ने एक बार भगवान के दर्शन के लिये यहां तपस्या की। पहले उन्हें शिवजी का दर्शन मिला परंतु वे संतुष्ट न हुए और अपनी तपस्या बनाये रखी। तत्पश्चात् भगवान ने दर्शन दिया और इसीलिये भगवान के गर्भगृह में सप्तऋषियों का भी दर्शन मिलता है।

नम्माळवार की माँ उदयमंगै का यह जन्मस्थल है और नम्माळवार का भी जन्म उनकी माँ ने इसी स्थान पर दिया था। नम्माळवार के पिता कारी कुरूगुर के थे और दंपति ने तिरूक्कुरूंगुडी के 'नंबी पेरूमाल' से प्रार्थना कर नम्माळवार को पुत्र के रूप में प्राप्त किया था। मंदिर से बाहर यह स्थान है जहां नम्माळवार एक सरकते हुए शिशु के रूप में दर्शन देते हैं।

भगवान ने स्वयं दर्शन देकर कुलशेखर आळवार को तमिल आदि मास यानी आषाढ़ **15** जुलाई से **15** अगस्त के बीच पड़ने वाले स्वाती नक्षत्र में अपने साथ अपने दिव्यलोक परमपद में ले गये थे। प्रत्येक वर्ष यहां का यह एक विशेष उत्सव है।

4। दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3699**, शतक **8**।**03**।**07**।

ºº

<u>आठवां शतक का चौथा दशक ः **8**।**04** ः वार्कडा अरूवि</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8।**04**।**01** से **8**।**04**।**11** पासुर **3704** से **3714** या **3480** से **3490**

मत्त बहाते पर्वत की तरह हाथी लुढ़क गया। चिपका हुआ महावत मारा गया एवं उत्सव के मल्लयोद्धा ध्वस्त हो गये। ऊंची दीर्घा वाले भयग्रस्त राजागन पीछे मुड़कर भाग गये। कंस का सिर कुचल दिया गया। तिरूच्चेंगुनुर के प्रभु गोपकिशोर विजयी हुए। **3704**।**3480**

तिरूच्चेंगुनुर हमारा प्रिय लक्ष्य है जहां अमृत मय जल वाली तिरूच्चिट्रारू में मछलियां प्रसन्न होकर आदि प्रभु को घेर कर नाचती हैं। आप विश्व को बनाऩे पालऩे एवं संहार के लिये विभिन्न रूप धारण करते हैं। हमारे अमृत एवं नाथ ! आपको छोड़कर अन्य कौन हमारा आश्रय हो सकता है ? **3705**।**3481**

हमारे शाश्वत प्रभु आये और पृथ्वी तथा आकाश को मापा। हमारे पूर्व के कर्म का

मूलोच्छेदन कर आप हम पर शासन करते हैं। आप तिरूच्चिट्रारू के किनारे दक्षिण के आभूषण तिरूच्चेंगुनुर में स्थित हैं। आपके चरणारविंद को छोड़कर दूसरा आश्रय हम सोच ही नहीं सकते। **3706** । **3482**

आप वामन की तरह आये आपका स्वरूप फैला एवं धरा को ढ़क लिया। हमारे मणिवर्ण सा सुन्दर प्रभु ने सागर मंथन भी किया। तिरूच्चेंगुनुर में आप खड़े हैं जहां नारियल़ अरेका़ एवं केला के पेड पंक्तिबद्ध आकाश की शोभा बढ़ाते हैं। आपका चरणारविंद ही हमारा आश्रय है। **3707** । **3483**

जो सर्वेसर्वा हैं उनका आश्रय आपसे भिन्न नहीं है। यह सच है परंतु मेरा मन एकमात्र आपको ही खोजता है। ऊंचे किलों से घिरे तिरूच्चेंगुनुर में आपका निवास ही हमारा आश्रय है जहां वैदिक यज्ञ का धुंआ आकाश मे बादल की तरह छाये रहते हैं। **3708** । **3484**

ऊंचे किलों से घिरे तिरूच्चेंगुनुर में हमें अपने हृदय का आश्रय मिल गया है। यहां आप शिव एवं ब्रह्मा तथा तीन हजार भक्तों बीच स्थित हैं। आप स्वर्गिकों एवं संतों के माता पिता हैं। आप गहरे सागर में अपने स्वभाव से अनभिज्ञ शयन करते हैं। **3709** । **3485**

कमल जैसे हाथ चरण आंख नाभि वक्षस्थल़ मूगा वत होंठ पावन लाल मुकुट़ तथा लाल वस्त्रावरण वाले आकर्षक प्रभु को हम तिरूच्चेंगुनुर में खड़ा देखते हैं। पांच अस्त्रों से युक्त आपका तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय में छाये हुए है। **3710** । **3486**

स्वर्गिकों एवं संतो से पूजित हमारे चित्त के प्रभु तिरूच्चेंगुनुर में रहते हैं। आप भक्तों के आश्रय हैं। आप असुरों के संहारक हैं। आपकी कैसे प्रशस्ति गायें हमें नहीं पता। आप तीनों लोक के सृष्टिकर्ता संरक्षक एवं संहारक हैं। **3711** । **3487**

सब कुछ प्रभु हें स्वयं ही इन्द्र ब्रह्मा तथा शिव भी हैं। आप सारे विश्व में व्याप्त हैं तथा स्वयं ही ये सब हैं। आप तिरूच्चेंगुनुर में रहते हैं। सहृदय महानजऩ विद्वाऩ कलाविद़ तथा भक्तगन के पास आपकी गाथा गाने के लिये शब्द नहीं हैं। **3712** । **3488**

चिरंतन प्रभु सब कुछ बनकर सबों पर करूणा करते हैं। जो स्वयं शिव एवं ब्रह्मा हैं हमने आपको पा लिया है। तिरूच्चिट्रारू के किनारे तीन हजार वैदिक ऋषियों एवं ऊंची मेधा के भक्तों को प्रेरणा प्रदान करते आप तिरूच्चेंगुनुर में स्थित हैं। **3713** । **3489**

पृथ्वी को निगलने वाले दूध मधु शक्कर एवं रस जैसे प्रिय नाभिकमल वाले प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शठगोपन के हजार पदों के इस दशक का जो पाठ कर सकेंगे वे यहां के नाटक का अंत कर स्वर्ग प्राप्त करेंगे। **3714** । **3490**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **100** । तिरूच्चेंगुनुर

1 | स्थान ः यह स्थान केरल में तिरूअनंतपुरम एवं इर्नाकुलम के बीच अवस्थित है | वास्तव मे यह स्थान तिरूचित्तार के नाम से जाना जाता है जो चेंगुनुर से **1** कि मी पर मन्नार रोड पर है | चेंगनूर से तिरूवल्ला पथ पर चलने पर शहर से पार करते ही एक रेलवे उपरिपुल पार करने के बाद बायें वाली रोड में **1** कि मी पर मंदिर अवस्थित है | यहां से पांच अन्य दिव्यदेश के पेरूमाल का सुगमता से दर्शन किया जा सकता है | ये दिव्यदेश हैं ः **1** | तिरूपुल्लीयूर **7** कि मी पश्चिम | **2** | तिरूवल्ला **16** कि मी उत्तर | **3** | तिरूवन्वंडूर **15** कि मी उत्तर पश्चिम | **4** | तिरूकडित्तनम जो कि तिरूवल्ला से **7** कि मी उत्तर पूर्व में स्थित है | **5** | तिरूवारनविलै या अरनमूला **10** कि मी पूर्व |

2 | विग्रह स्वरूप ः यहां गोल आकृति के गर्भगृह में मूलावर पश्चिमाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं | भगवान बायें हाथ में चक तथा दायें में शंख धारण किये हुए है | पेरूमाल को इम्यावरप्पन तथा तायर को सेंगनमालवल्ली कहते हैं | विमान जगज्योति तथा तीर्थ चित्तरारू कहा जाता है |

3 | महिमा ः यहां के भगवान धर्मराज युधिष्ठर के आराध्य देव माने जाते हैं | कहते हैं युधिष्ठर ने द्रोणाचार्य से मिथ्याभाषण के अपराध से मुक्त होने के लिये यहां तपस्या की थी | कहा जाता है कि पांडव अज्ञातबास में केरल में ही अपना समय विताये थे इसीलिये इस क्षेत्र में पांडव से जुड़े हुए कई स्थल पाये जाते हैं |

4 | दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार**,** तिरूवायमोळी **3704** से **3714** शतक **8** | **04** |

ःः

<u>आठवां शतक का पाचवां दशक ः **8** | **05** ः मायक्कूत्ता</u>

इसमें **11** पासुर हैं | दोनों रीति की गिनती दी जा रही है |

8 | **05** | **01** से **8** | **05** | **11** पासुर **3715** से **3725** या **3491** से **3501**

वामऩ् हमारे प्रेम ! आपका स्वरूप एक शीतल सरोवर है | आपके आंख़ हाथ़ तथा चरण प्रस्फुटित कमल हैं | आपका दिव्य होंठ उनके कलि की तरह हैं | आपके अंग श्याम पत्ते की तरह हैं | मुग्धकारी नर्तक ! क्या आप एक दिन दर्शन देने नहीं आयेंगे? **3715** | **3491**

लड़खड़ाते कदमों से लज्जित होकर हम धरा पर घूमते हैं | सूखे होंठ एवं सूखी आंसू से चारो तरफ पुकारते हुए हम देखते हैं | हाय ! क्या आप एक दिन अपने श्याम स्वरूप एवं नये पर्व त सा चमकते केश तथा उसके शिखर पर उदित काला सूर्य के साथ दर्शन देने नहीं आयेंगे? **3716** | **3492**

तेजोमय जूड़ा वाले प्रभु सुगंधित माला वाले प्रभु मेघवर्ण के प्रभु ! आपको पुकारते हुए मैं उदास होकर रोता हूं | हाय ! सुन्दर कर्णफूल़ मूंगावत होंठ़ चार भुजाओं एवं पतली कमर

के साथ मैं आपको नहीं देख पाता। **3717 | 3493**
प्रभु !आपका मूंगावत होठ़ नूतन ओसकण सिक्त कमल जैसी आंख़ एवं तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय में घर कर गया है। मैं नहीं जानता कैसे यह हुआ। क्षीर सागर में आपको शयन करते ऐसे देखता हूँ जैसे श्यामल मेघ बर्फ की चोटी वाला पर्वत पर विराजमान हो। **3718 | 3494**
श्याम मेघ सा प्रभु हाय ! आपने गोल पृथ्वी एवं जल को निगल लिया। आपके दिव्य आभापूर्ण चरण का वर्णन हम नहीं कर सकते। ये दो युवा सूर्य की तरह हमारे हृदयाकाश में चमक रहे हैं। कैसे अब दुष्कर्म का अंधकार हमारे पास फटक सकता है? **3719 | 3495**
हमारी आंखों की तरह प्यारे हमारे कृष्ण ! विश्व के नाथ़ मेरे नाथ़ मेघ श्याम प्रभु पात्र नर्तक हमारे प्रभु आपको हम पुकार रहे हैं। आप आकाश से आईये या धरा से आईये या सागर से या कहीं से आईये परंतु आईये अवश्य एवं अपने चरणारविंद का दर्शन कराईये। **3720 | 3496**
मेरे पास आईये या हमें अपने पास बुलाईये जिससे कि हमें आपके धरा को मापने वाले चरणारविंद की सेवा का अवसर मिले। आप का स्वरूप अनंत आभायुक्त काले सूर्य की तरह है जिसपर लाल कमल सी आंखें होंठ हाथ एवं चरण चमक रहे हैं। **3721 | 3497**
जबकभी भी हम श्याम मेघ को एकत्रित देखते हैं हमारा हृदय द्रवित होकर कहता हैं 'हमारे श्याम प्रभु की तरह दिखता है।' एवं हर दिन मैं मरता हूँ। हे प्रभु ! आपने पांच नेक जनों के लिये सौ दुष्टों के विरूद्ध युद्ध में रथ चलाया। अब आईये। क्या यह उचित है? **3722 | 3498** हूँ
रोकर मैं यातना में पुकारता हूँ। प्रदीप्त चकवाले प्रभु गरूड़ ध्वज वाले प्रभु ! हाय ! सच में आपकी क्या मंशा है? क्या आप सुन्दर बागों के मथुरा में नहीं प्रकट हुए तथा विश्व को यातना से मुक्ति नहीं दिलाई ? **3723 | 3499**
महान भारत युद्ध लड़ने वाले प्रभु ! आप ही धरा जल़ अग्नि़ आकाश़ वायु एवं सब कुछ हैं। ताजा दूध में मक्खन की तरह आप अदृश्यमान हैं। हाय ! कहां आपका दर्शन मिलेगा? **3724 | 3500**
कुरूगुर शडगोपन के सरस हजार पद से लिया गया यह दशक प्रभु से पूछता है 'मृदु तुलसी की माला वाले प्रभु ! आपका दर्शन कहां मिलेगा ?' जो इसे गा सकेंगे़ वे अब यहीं रात दिऩ आनंद विभोर रहेंगे। **3725 | 3501**

<u>आठवां शतक का छठा दशक ः **8 | 06** ः एल्लियुम्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8 | 06 | 01 से 8 | 06 | 11 पासुर 3726 से 3736 या 3502 से 3512

प्रस्फुटित तुलसी फूल की माला वाले प्रभु सौभाग्यशाली जनों के साथ तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। प्रसन्नता से दिन रात पूजा करने पर आप करूणा एवं अन्य सब कुछ देते हैं। **3726 | 3502**

हमारे विचार को जोड़कर प्रभु ने यातना का अंत कर दिया। आप शीतल सुगंधित तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। आपने तब बाणों की वर्षा की और हमलोगों ने राक्षसों का अंत किया। **3727 | 3503**

प्रभु एक थे फिर दो हुए फिर तीन हुए एवं सबों में मिश्रित हो गये तथा स्नेह से हमारे हृदय में आ गये। कमलनिवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण कर विस्मयकारी प्रभु तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। **3728 | 3504**

हमारे दुष्ट कर्मों का क्षय करते हुए मुग्धकारी प्रभु ने हमारे हृदय को अपना शीतल आवास बना लिया है। सुगंधित बागों से घिरे तेजोमय देवगनों के बीच आप तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। **3729 | 3505**

प्रभु जो नैसर्गिक तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं उन्होंने हमारे हृदय को मंदिर बना लिया है। विस्मयकारी पात्र नर्तक प्रभु ! आप सभी मंदिर के देवों से पूजे जाते हैं। **3730 | 3506**

लीलामय मधसूदन प्रभु ने हमारी यातना का अंत कर दिया। आप तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। देखो आपकी पूजा से हमारी सारी यातनाओं का अंत हो जायेगा। **3731 | 3507**

धरा आकाश एवं सबकुछ को मापने वाले गोविन्द के चरणारविंद देवों एवं मर्त्यों से तिरूक्कडित्तानम में पूजे जाते हैं। आपको अपने हृदय में स्थापित कर यातनाओं का अंत करो। **3732 | 3508**

प्रभु के अनेकों नगरों में आरामगाह हैं ः आकाश में धरा पर तथा सागर में। तब भी आपने हमारे अधम हृदय तथा तिरूक्कडित्तानम को अपना आवास चुना है। **3733 | 3509**

अनेकों सुन्दर आरामगाहों में रहने वाले प्रभु गोपकुल तथा शाश्वतों के प्रमुख है। आप देवों की संगति में तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। क्या आश्चर्य है हाय ! **3734 | 3510**

आश्चर्यमय देव नारायण हरि हमारे हृदय के वामन प्रभु हैं। वैदिक ऋचाओं के पाठ की आवाज तिरूक्कडित्तानम में कल्प वृक्षों के बागों में गूंजती है। **3735 | 3511**

ऊंचे दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद से लिया गया यह दूध एवं मधु जैसा मृदु दसक तिरूक्कडित्तानम के तिरूमल की प्रशस्ति है तथा यह ऊंचे वैकुंठ प्रदान करता है। आश्चर्य ! **3736 | 3512**



दिव्यदेश **101** । तिरूक्कडित्तानम या तिरूघडित्तानम

1 ।स्थान ः यह स्थान केरल में चेंगनचेरी से **4** कि मी पूरब में तिरूवल्ला कोट्टायम रोड पर अवस्थित है ।

2 ।विग्रह स्वरूप ः यहां मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। आपको अद्भुत नारायण या अमृत नारायण तथा तायर को कर्पगावल्ली कहते हैं। तीर्थ को भूमि के नाम से तथा विमान पुण्यकोटि कहा जाता है ।

3 । महिमा ः यहां के भगवान पांच पांडवों में से एक भाई सहदेव के आराध्य देव माने जाते हैं। मूलावर के अतिरिक्त गर्भगृह में दक्षिणामूर्ति तथा नरसिंह भगवान की भी मूर्ति है जो मुख्य द्वार से नहीं दिखते हैं बल्कि दीवार में बने एक छिद्र से दर्शन देते हैं जबकि मूलावर का मुख्य द्वार से ही दर्शन किया जाता है। कहते हैं एक सेवक ने मंदिर खोलने में विलंब कर भक्तों को समय पर दर्शन से वंचित करता था। भगवान ने उसे शाप देकर पत्थर बना दिया था जो आज भी प्रवेश द्वार पर खड़ा है ।

सूर्य वंश के राजा रूक्मांगद ने अपने सारे एकादशी का फल देवों को दान यहीं किया था जिसके कारण एक घड़ी में देवताओं को खोया हुआ लोक प्राप्त हुआ था। चूँकि सारी घटना एक घड़ी के अंतराल में घटी इसलिये इस स्थान को तिरूघडित्तानम कहते हैं। राजा ने एकबार नारद जी को सुन्दर फूल की माला से सम्मान किया था। इन्द्र ने जब उस माला के फूल को देखा तो उसे राजा के उद्यान से फूल मंगाने की ईच्छा हुई। इन्द्र ने देवों को भेजकर फूल की चोरी कराई। फूलों की चोरी होते देख राजा ने उद्यान की रखवाली कड़ी कर दी। अपने दैवी बल के कारण देवगन फूलों की चोरी करते हुए दृश्यमान नहीं होते थे। रक्षकगण फूल की चोरी न रोक सके। सर्दी की एक रात में रक्षकगन बैगन तथा कन्दमूल के पौधों को जलाकर आग का लाभ ले रहे थे। उसके धुंआ से फूल चुराते देवों की दैविक शक्ति समाप्त हो गयी एवं वे पकड़े गये। राजा ने जब क्षमा करते हुए उन्हें जाने को कहा तब वे अदृश्य भी नहीं हो सकते थे। उसी समय एकादशी व्रत किये एक महिला आयी और उसके दर्शन से देवों की शक्ति वापस आगयी तथा वे अदृश्य हो गये। राजा एकादशी के महात्म्य से बहुत प्रभावित हुए तथा उसके बाद नियमित रूप से एकादशी व्रत का पालन करने लगे।

राजा पांडु का यहां देहावसान हुआ था। उनकी पत्नी माद्री भी साथ में सती हो गयी थी। इस यादगार के लिये कत्तिकै मास यानी **15** नवंबर से **15** दिसंबर के बीच यहां तेल से भीगोकर केला के पत्तों को रंथी के रूप में सजाते हैं तथा घी के साथ उसे जलाते हैं। साथ में नगाड़े पर शोक प्रकट करने वाला 'चडीक्कोटू' धुन भी बजाया जाता है।

4 | दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3726** से **3736**, शतक **8** | **06** |

ःः

आठवां शतक का सातवां दशक ः **8** | **07** ः इरूत्तुमवियन्दु

इसमें **11** पासुर हैं | दोनों रीति की गिनती दी जा रही है |

8 | **07** | **01** से **8** | **07** | **11** पासुर **3737** से **3747** या **3513** से **3523**

उतावला होकर अनेकों दिन हमने पूजा की एवं पुकारा तथा प्रार्थना की कि हमारी आवाज सुनकर अपने चरणारविंद से जोड़ लिया जाय | अहा ! सुन्दर वामन ने हमें देख लिया एवं हमारे हृदय में चोरी से घुसकर हमें अपना बना लिया | **3737** | **3513**

सब समय खड़े होकर इस अधम को देखते हुए आपने पांचों नीच का नाश कर दिया जो हमारे हृदय पर अधिकार किये हुए थे | आपदाग्रस्त हाथी पर करूणा करने वाले प्रभु से अधिक करूणा और क्या चाहिए | **3738** | **3514**

तीन लोक से ज्यादा कीमत वाले हमारे भीतर रहकर आपने अंधकार को दूर किया | कितना आश्चर्यपूर्ण है यह ! इससे अधिक करूणा और क्या चाहिए ? **3739** | **3515**

मेरे प्रभु गोपाल स्वर्गिकों में सिंह हैं | आप अपनी युक्तियों से अब और मुझे नहीं छलेंगे | सारे विश्व में आपकी करूणा चमकती है | **3740** | **3516**

तेजोमय प्रभु सारे लोकों से प्रशंसित हैं | तेजोमय मणि पर्वत की तरह आप आये और हमारे हृदय में खड़े हो गये | क्या अन्य चीज का अब कोई महत्व है ? **3741** | **3517**

अगर हमें आपने किसी मूल्य की वस्तु दी है तो आप अपने को किसे देंगे ? तेजोमय मणि पर्वत की तरह़ मूंगावत होंठ लिये़ कमल जैसी छाती़ अंग़ आंखें एवं नाभि के साथ आप हमारे भीतर खड़े हैं | **3742** | **3518**

आप हमारे सामने नाभिकमल़ मूंगावत होंठ़ मुक्ता सा श्वेत दांत़ तथा तेजोमय कुंडल पहने खड़े हैं | आप दिव्य तेज के हैं | अहा ! मुस्कुराते हुए हम आपका आलिंगन किये होते! आप मेरे हृदय में रहते हैं | इससे बड़ी करूणा हमने नहीं देखी है | **3743** | **3519**

जिसे आप पसंद कर लेते हैं उससे बिना कोई चीज बदले में चाहते हुए उसपर आप कृपा करते हैं | इससे अधिक कृपा हम नहीं जानते | तीनों लोक को स्वयं में स्थित करके आप हमारे छोटे से हृदय में रहने आये हैं | **3744** | **3520**

तीनों लोक समस्त प्राणियों एवं स्वर्गिकों को धारण करने वाले प्रभु कभी भी बिना परिवर्तन के एक स्वरूप में स्थित हैं | हम आपको सर्वदा के लिये अपने हृदय मे पाते हैं | **3745** | **3521**

गहरे शीतल क्षीर सागर में फनधारी नाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु को हमने अपने

हृदय की गुफा में स्थापित कर लिया है। हम आपका ध्यान करते कभी नहीं ऊबेंगे। **3746 | 3522**

कुरूगुर नगर के शडगोपन के हजार पद से लिया गया यह दशक फनधारी शय्या पर शयन करने वाले प्रभु का स्मरण कराते हुए अरूणाभ नयन प्रभु की कृपा से पुनर्जन्म का क्षय कर देगा। **3747 | 3523**

आठवां शतक का आठवां दशक ः **8 | 08** ः इरूत्तुमवियन्दु

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8 | 08 | 01 से 8 | 08 | 11 पासुर 3748 से 3758 या 3524 से 3534

कोई हमारे साथ लाल बड़ी आंख़ लाल मूंगावत होंठ मोती समान श्वेत दांत़ एवं कान में जगमग मकराकृत कुंडल वाला खड़ा है। श्याम मेघ के समान वदन है। तेजोमय मुकुट है। चार भुजाओं पर सुन्दर धनुष चक शंख एवं गदा धारण किये हुए हैं। **3748 | 3524**

जो प्रभु हमारे हृदय में हैं वही शरीर पर तथा विश्व में एवं इसके बाहर भी हैं। सुख दुख से रहित स्वर्गिकों के देव सभी परिभाषा से परे हैं। नैसर्गिक ज्ञान के स्वरूप चिरंतन आनन्द के गौरव वाले आप नूतन ओसकण से भींगे हुए फूल के समान हैं। **3749 | 3525**

नैसर्गिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रभु की कृपा की आकांक्षा से हमने प्रभु को अपने हृदय में प्रभु की मृदु कृपा से रखा। आपने यह आभास कराया कि कियाशील शरीऱ जीवऩ एवं संग्रहण सब व्यर्थ हैं। तब प्रभु मेरे हो गये। **3750 | 3526**

प्रभु जो मेरे हुए थे सब बस्तुओं एवं प्राणियों के समक्ष थे। आदि कारण प्रभु ने अपने को बांट कर ब्रह्मा एवं शिव बना दिया। मधु दूध़ गन्ने के रस की तरह मृदु प्रभु हमारे चैतन्य म़ें शरीर म़ें एवं जीवन में खड़े हैं। मैंने आपको समझ लिया है। **3751 | 3527**

चिरंतन को हमने समझ लिया है। आप का स्वभाव इतना सूक्ष्म है कि आप 'यह' एवं 'वह' ह़ैं नहीं कहा जा सकत़ा और देखना तो दूर की बात रही। सूक्ष्म से सूक्ष्म होने पर जब कुछ जुड़ा हुआ नहीं रहता और आप अच्छा बुरा सब से ऊपर हैं तथा सभी ज्ञान के बाहर हैं। **3752 | 3528**

ज्ञान की परिधि के बाहर जाकर इन्द्रियों की सीमा को तोड़ दो। बार बार महान एवं अंतहीन सत्ता का ध्यान करो। मोह त्यागकर सुख दुख की सीमा से बाहर निकल जाओ। यही एक मात्र तत्क्षण मुक्ति है। **3753 | 3529**

तृष्णा त्यागकर जानकारी के साथ अपने को खाली कर दो। यही सच में मुक्ति है तथा स्वर्ग का आनंद है। यह नहीं जानने वाले थक कर पूछते हैं 'मुक्ति क्या हैऋ आनंद क्या है? ' वे केवल बार बार थकते रहेंगे। **3754 | 3530**

संबंधी जन चारो तरफ घेर कर चित्कार करेंगे 'ये जा रहे हैं'। जब तुम प्रस्थान करोगे तो परिवार जन रोयेंगे गिरेंगे तथा तुम्हारे पैर पकड़े रहेंगे। मोह छोड़ते हुए उन्माद को पारकर अगर तुम प्रभु को अपने हृदय में रख सके तो यही तुम्हाारा प्रशंसनीय कृत्य होगा। **3755 | 3531**

यह अच्छा है कि हम तब प्रभु से मिल जायें परंतु याद रखो कि इसके पहले तक गरूड़ध्वज वाले प्रभु प्रभु हैं तथा जीव जीव है। यह जानना मुश्किल नहीं है कि यहां ऐसे लोग हैं जो स्वनिर्मित स्वर्ग में घूमते रहते हैं। ऐसे योगी धरा पर बहुतायत में हैं पहले हो चुके हैं तथा आगे भी होंगे। **3756 | 3532**

'हैं' एवं 'नहीं हैं' वाले हमारे प्रभु ने अपने बारे में पूरी जानकारी करा दी है। हमारे प्रभु हमारे साथ रहने आये हैं और विकास एवं ह्रास का नाश कर दिया है ः जैसे कि चंद्र घटता बढ़ता है जैसे विद्या एवं अविद्या जैसे सूर्य का प्रकाश एवं छाया। **3757 | 3533**

विद्या एवं अविद्या का नाश करने वाले प्रभु जो ब्रह्मा इन्द्र एवं शिव हैं उन्ही प्रभु का वरदहस्त प्राप्त शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक श्याम मणि वर्ण वाले प्रभु का चरणाविंद प्राप्त कराता है। **3758 | 3534**

<u>आठवां शतक का नौवां दशक ः **8 | 09** ः करूमाणिक्कमलै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8 | 09 | 01 से 8 | 09 | 11 पासुर 3759 से 3769 या 3535 से 3545

<u>सखी वार्ता</u>

मेरी सजनी ! हम क्या करें ? वह तालों वाले कुट्टनाड्डु तिरूप्पुलियूर में मणि पर्वत की तरह खड़े प्रभु के नाम के अतिरिक्त और किसी का नाम नहीं लेती। उनका वक्षस्थल होंठ आंख हाथ चरण एवं वस्त्रावरण सभी कमल के गुच्छे जैसे हैं। **3759 | 3535**

मेरी प्यारी सजनी ! हम क्या करें ? वह मुकुट गले का हार एवं प्रदीप्त आभूषणों की प्रशंसा गाती है 'मेरू के उज्जवल सूर्य एवं आकाश के तारों की तरह' जो पुन्नै बाग वाले तिरूप्पुलियूर के प्रभु धारण करते हैं। **3760 | 3536**

दिन रात खड़ा होकर वह धवल महलों वाले तिरूप्पुलियूर का गौरव गाती है ः 'मानो सागर जैसे आग के गोलो से प्रज्वलित हो उठा है उसी तरह हमारे प्रभु असुरों के विनाश के लिये दिव्य अस्त्र धारण करते हैं।' **3761 | 3537**

कुट्टनाड्डु के उपजाऊखेतों की जोताई हल में जुते बैलों से होती है जहां के ऊंचे बाग एवं पौधे विश्व को निगलकर फिर से बनाने वाले स्वर्गिकों के प्रभु की संपदा की संपन्नता के प्रतीक हैं। हमारी सुन्दर किशोरी किसी से कुछ नहीं बोलकर मात्र प्रभु की गाथा गाती है।

3762 | 3538

गहने एवं वस्त्र जो यह पहनी है तथा इसके मुखमंडल की प्रसन्नता पता नहीं कहां से आते हैं। अहा ! यह कल्पनातीत है। तिरूप्पुलियूर के ताल में एक बड़ा कमल प्रस्फुटित है और यह किशोरी अपने को विश्व के प्रभु की करूणा में डुबोये रहती है। **3763 | 3539**

इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह कृशकाय किशोरी प्रभु का कृपा पात्र बन गयी है। इसके होंठ का लाल रंग प्रभु की कृपा से उत्पन्न तिरूप्पुलियूर के अरेका फल की लाली है। **3764 | 3540**

कोमल पत्ते वाले पान की लता अरेका फल के वृक्ष का यहां आलिंगन करती है। तिरूप्पुलियूर में पके कदली फल के शीतल सुगंध से नारियल फल के पत्ते पुष्ट हो रहे हैं। यहां के श्रीसंपन्न कृष्ण के चरण से यह किशोरी लाभान्वित हो गयी है। **3765 | 3541**

सजनी ! हम कैसे तुमलोगों को समझायें ? शेषशायी प्रभु के प्पुलियूर का शीतल घर संस्कृत के विद्वानों द्वारा दी गयी आहूती से उत्पन्न धुंआ के बादल से आच्छादित रहता है। यह किशोरी सर्वदा इस प्रभु के नाम को बड़बड़ाते रहती है। **3766 | 3542**

रात दिन यह मेघ जैसे श्याम प्रभु का नाम लेती है जो उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूप्पुलियूर में रहते हैं जहां घड़ियाल के ताल लाल कमल से मानो प्रज्वलित दिखते हैं तथा जहां अनवरत वैदिक पाठ के गान का संगीत गूंजते रहता है। **3767 | 3543**

फिर कैसे इस किशोरी का वदन तुलसी का सुगंध विखेरती है ! निश्चित रूप से दक्षिण कुट्टनाट्टु में प्रकाशस्तंभ की तरह खड़े तिरूप्पुलियूर वाले प्रभु का यह किशोरी कृपा पात्र बन गयी है जो सुन्दर ऊंचे आभूषित महलों के समूह से सुशोभित है। **3768 | 3544**

तीनों लोक के नाथ के भक्तों के भक्त शडगोपन के सुन्दर हजार पदों का यह दसक पाठ करने वालों को प्रभु की सेवा में संलग्न जीवन प्रदान करेगा। **3769 | 3545**

ºº

दिव्यदेश **102** | कुट्टनाट्टु तिरूप्पुलियूर

1 | स्थान ः यह स्थान केरल में चेंगुनुर से **7** कि मी पश्चिम में चेंगुनुर मन्नार रोड पर अवस्थित है।

2 | विग्रह स्वरूप ः यहां मूलावर मायाप्पिरान पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। तायर को पुरकोडी नाच्चियार कहते हैं। प्रज्ञा सारस तीर्थ है तथा विमान को पुरूषोत्तम विमान कहते हैं।

3 | महिमा ः यहां भगवान पांच पांडवों में से एक भाई भीम के आराध्य देव माने जाते हैं। सप्तऋषियों ने पेरूमाल की अर्चना कर परतत्व के अर्थ को समझा था। भीम के इष्टदेव

होने के कारण भोजन की मात्रा को प्रधानता दी जाती है। यहां भगवान को **400** माप के चावल से भात बनाकर भोग लगाया जाता है।

राजा शिबी के पुत्र वृषधारी द्वारा दिये गये दान को एक बार सप्तऋषियों ने अस्वीकार कर दिया। राजा के क्षेत्र में भीषण अकाल था और तब ऐसे राजा के दिये गये भिक्षा को ऋषियों ने पापमय समझा था। कुपित होकर राजा वृषधारी ने यज्ञ से एक कृत्या नारी को उत्पन्न कर ऋषियों का अंत करने को कहा। ऋषिगण भगवान की शरण में आये। भगवान ने इन्द्र को उस नारी का अंत करने को कहा। इन्द्र ने व्याघ्र के स्वरूप में कृत्या का यहां अंत किया। 'पुली' का अर्थ है बाघ इसलिये इस स्थान को तिरूप्पुलियूर कहा गया।

तिरूवायमोळी मे 'तोळी पासुर' के नाम से तीन दशक ऐसे हैं जिसमें एक सखी किशोरी नायिका की स्थिति को चित्रित करती है। ये दशक हैं (1) **3286** से **3296**, (2) **3495** से **3505**, (3) **3759** से **3769**

4 | दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3759** से **3769** , शतक **8** | **09** |

ःः

<u>आठवां शतक का दसवां दशक ः **8** | **10** ः नेडुमार्कडिमै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

8 | 10 | 01 से 8 | 10 | 11 पासुर **3770** से **3771** या **3546** से **3556**

<u>प्रभु के भक्तों की भक्ति</u>

केवल मेरे सोचने मात्र से कि मैं प्रभु की सेवा करूंगा हमारे दुष्ट कर्म तत्क्षण बिना किसी विरोध के छोड़ कर चले गये। अब इस पर ध्यान दो कि प्रभु के भक्तों की सेवा के अतिरिक्त तीनो लोक में कोई और प्रिय धन होगा क्या ? **3770** | **3546**

तीनों लोक की संपदा का आनंद एवं स्वर्ग का आत्मानंद को मिलाने पर भी क्या यह मेघवर्ण प्रभु के चरणारविंद के निस्वार्थ भक्तों की सेवा की तुलना कर सकेगा जो हमने अभी यहां पाया है ? **3771** | **3547**

क्या यह उचित होगा कि कमल समान आंखों वाले सुन्दर वामन प्रभु के चरणों से जुड़ जाऊं जिन्होंने अपने छोटे स्वरूप का विस्तार कर पूरी प्रथ्वी पर अधिकार कर लिया था जबकि प्रभु के योग्य भक्तगऩ हमारे नाथ़ इस धरा पर घूम रहे हों ? **3772** | **3548**

मूंगा समान होंठ एवं अरूणाभ कमल के समान आंख वाले प्रभु ने पृथ्वी को निगलकर पुनः बनाया। आपकी गाथा गाता हूँ एवं अपने हाथों के फूल से आपकी करूणा की पूजा करता हूँ । हमारे हृदय में आपका स्वरूप विराजमान है।अब किस वस्तु की कमी है मुझे? **3773** | **3549**

अगर आपके चरणाविंद की सेवा का आनंद मिला होता या आपकी नैसर्गिक छटा की बाढ़ को निहारने का आनंद मिला होता तो क्या ये इस अधम शरीर से जन्म लेकर बैठे हुए आपके नाम के प्रिय पदों की बाढ़ के गान का आनंद लेने की तुलना कर सकेंगे? **3774 | 3550**

तीनों लोक की संपदा का आनंद एवं स्वर्ग का आत्मानंद को मिलाने पर भी क्या यह मेघवर्ण प्रभु के चरणारविंद के निस्वार्थ भक्तों की सेवा की तुलना कर सकेगा जो हमने अभी यहां पाया है! **3775 | 3551**

महान गौरवशाली तथा तीनों लोक का अंकुरण कराने वाले स्वयंजात बीज एवं चिरंतन प्रभु के चरणाविंद की सेवा से कहीं ज्यादा आनंददायक होगा प्रभु के प्रिय भक्तों के साथ सर्वदा के लिये समागम। **3776 | 3552**

आपने शीतल सागर बनाकर उस पर अपना अद्वितीय स्वरूप फैला दिया। आपके अनगिनत सिर हाथ एवं पैर हजारों सूर्य के समान तेजस्वी मणि पर्वत पर कल्प वृक्ष के महान वन की तरह हैं। प्रभु के प्रिय भक्तों के साथ प्रिय समागम ही मेरी एक मात्र चाह है। **3777 | 3553**

प्रभु शंख चक्र धनुष गदा एवं खड्ग तथा अन्य अस्त्रों से अपने भक्तों के कर्म का क्षय करने की शक्ति रखते हैं। आप पूर्ण युवा एवं प्रेम के देवता कामदेव के जनक हैं। आपके भक्तों के एक मात्र सेवकों की मैं सेवा करना चाहता हूँ। **3778 | 3554**

मेरी एक मात्र इच्छा है कि काया के वर्ण वाले चार भुजाओं से युक्त चक्रधारी प्रभु के सेवकों के सेवक के परिवार में मेरा जन्म हर युग के हर जीवन में हो। **3779 | 3555**

कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह उत्तम दशक विश्व में पूरी तरह सर्वत्र विराजमान नीले कमल के वर्ण वाले कृष्ण की प्रशस्ति है। इसे गाने वालों का पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। **3780 | 3556**

<u>नौवां शतक का पहला दशक : **9 | 01** : कोण्ड पेण्डिर</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 01 | 01 से 9 | 01 | 11 पासुर 3781 से 3791 या 3557 से 3567

पत्नी एवं संतान मित्र एवं संबंधी को कोई स्नेह नहीं है सिवाय इसके कि वे देखते हैं कि तुम्हारे पास कितना है ? आठों दिशाओं स्वर्ग नरक तथा सभी कुछ को निगलने वाले प्रभु ही मुक्ति के एकमात्र मार्ग हैं। आपकी पूजा ही श्रेयस्कर है। **3781 | 3557**

मित्र एवं संबंधी तुम्हें अपना समय देते हैं परंतु वे जोंक की तरह तुम्हारे धन को समाप्त होने तक चूसते रहते हैं। उस राजकुमार को खोजो जिन्होंने एक बाण से सात वृक्षों को वेध

दिया था। आप ही मुक्ति के लिये मरूभूमि की हरियाली हैं। यह निश्चित है कि आप के सिवा अन्य कोई चारा नहीं है। **3782 | 3558**

आपको संपन्न देखकर वे आपका स्वागत करेंगे। विपन्नता में एक भी खबर लेने नहीं आयेगा कि क्या हुआ। दुष्ट असुरों को नाश करने हेतु प्रभु मथुरा में पधारे। स्नेह से आपकी सेवा करो। आपको छोड़कर सच में कोई आश्रय नहीं है। **3783 | 3559**

जो तुम्हारी संपत्ति के रखवाले हैं वे तुम्हारे बुरे दिन में ऋण देने वाले की तरह व्यवहार करेंगे। इस पर वर्णन से क्या लाभ ? मथुरा के प्रभु की प्रशस्ति ही बुद्धिमानी का काम है। आप ही हमारी आशा एवं आश्रय हैं। **3784 | 3560**

जिनलोगों ने तोता की तरह मृदु भाषी नारियों के समागम का आनंद लिया है वे भी कुछ काल बाद फल चखेंगे। मथुरा के प्रभु ने अनेकों असुरों का अंत किया। आपकी सेवा में लगे रहो जो एक मात्र आनंद है। **3785 | 3561**

यहां कोई आनंद निश्चित नहीं है। हाय! पुराकाल से कितने लोग व्यर्थ आये एवं गये। संक्षेप में समझो कि प्राचीन नगर मथुरा में पधारने वाले प्रभु की गाथा गाओ क्योंकि इसे छोड़कर कुछ है नहीं। **3786 | 3562**

इसमें कोई संदेह नहीं है हमने कहा यहां कुछ है नहीं। इस धरा के प्राणियों के लिये प्रभु के बारे में सोचना भी पर्याप्त है। हाय ! कम से कम आपके नाम के बारे में जानसे कोई क्षति नहीं है। मथुरा के गोपकिशोर का नाम जपो। **3787 | 3563**

कृष्ण के चरण की आजीवन सेवा ही श्रेयस्कर है। हाय ! आपकी गाथा गाने से श्रेयस्कर अन्य कोई काम नहीं है। उत्तर मथुरा में प्रभु का अवतार शुद्ध हृदय के भक्तों को संरक्षण देने के लिय हुआ है जो एकमात्र आपको ही चाहते हैं। **3788 | 3564**

मानों अनंत है ही नही एवं जो केवल सीमित लक्ष्य रखते हैं उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ गंवाया। हाय ! जैसे कान का छेद बड़ा होने पर कर्णफूल को गंवा दिया जाता है। ध्वज सुशोभित महलों वाले मथुरा नगर के प्रभु का आश्रय लो। **3789 | 3565**

यह निश्चित है कि कृष्ण के सिवा कोई आश्रय नहीं है। इसे प्रमाणित करने के लिये आपने मथुरा में अवतार लिया एवं विश्व को भार मुक्त किया। जिसे तुम अपना मानते हो उसे प्रभु को समर्पित कर दो। भक्तों इसमें संदेह नहीं है कि सब कुछ प्रभु की कृपा से ही होता है। **3790 | 3566**

माला से विभूषित वक्षस्थल वाले कृष्ण के चरणाश्रित कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक है। जो इसे गायेंगे वे हमारे चिरंतन नाथ हैं। **3791 | 3567**

<u>नौवां शतक का दूसरा दशक ः **9 | 02** ः पण्डैनाळाले</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 02 | 01 से 9 | 02 | 11 पासुर **3792** से **3802** या **3568** से **3578**

पोरूनल के जल से घिरे तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु हमलोगों पर अपने कमल सी आंखों से दष्टि डालिये एवं अपना शांत होठ खोलिये। पुराकाल से आपकी तथा कमलनिवासिनी लक्ष्मी की कृपा से हम आपके मंदिर में एकत्रित होकर आपकी हर तरह से बंधुआ सेवक की तरह सेवा करते रहे हैं। **3792 | 3568**

सुनहले दीवार एवं उपजाऊखेतों से घिरे तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु ! आपके मंगलमय सार्वभौम क्षेत्र को बिना लांघे हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हम बंधुआ सेवक की तरह आपके दिव्य चरण की सेवारत रहे हैं। धरा को मापने वाला आपका चरणारविंद हमारे सिर को एक दिन सुशोभित करे ! **3793 | 3569**

तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु ! तीनों लोक एकत्रित होकर आपकी पूजा करे! आप हर दिन शयन में रहते है़ं कितनी अवधि तक रहेंगे़ तबकत जबतक कि आपका शरीर दुखने नहीं लगे? अनवरत सेवारत अपने बंधुआ सेवक का आवेदन सुन लीजिये प्रभु! प्रार्थना है़ अपनी कमल सी आंखे खोलिये़ जागिये़ एवं लक्ष्मी के साथ विराजमान होईये। **3794 | 3570**

तिरूपुलिंगुडी में शयनावस्था मे़ं वरगुणमंगै में बैठने की मुद्रा मे़ं तथा वैंकुठम में खड़े मुद्रा वाले प्रभु ! हमारे हृदय में विराजकर आपने हमारे विचार को शुद्ध कर दिया है। आपकी इतनी महती कृपा है प्रभु ! तीनों लोक आपका दर्शन करे तथा हम पुकारें नाचें तथा आनंद मनायें ! प्रार्थना है अपना मेघ सा श्याम वदन का दर्शन दीजिये और आपका मूंगावत होंठ और अधिक लाल हो जाये। **3795 | 3571**

तिरूपुलिंगुडी में शीतल जल से घिरे शयनावस्था वाले प्रभु जहां शंख एवं मूंगा की बहुतायत है। प्रार्थना है़ मूंगावत लाल होंठ और मोती से चमकते दांत के साथ मुस्कान एवं अर्द्धखुली कमल सी आंखों के साथ आप सामने खड़े होकर दर्शन दीजिये। क्या गरूड़ पक्षी पर सवार होकर फंसे हुए पैर वाले हाथी की रक्षा में आप नहीं आये ? **3796 | 3572**

तिरूपुलिंगुडी के सुखद खेतों वाले प्रभु कायशिनवेन्दे़ क्रोधी राजा़ सुनहले शिखर पर काले मेघ की तरह़ आप गर्स्सैल गरूड़ पर सवार होकर आये़ खड़ा हुये़ तथा माली एवं सुमाली की घमासान युद्ध में अंत कर किया। अपने शंख तथा अन्य भीषण अस्त्रों से आप निश्चित हमारी यातना का अंत कर देंगे। **3797 | 3573**

शीतल जल से घिरे एवं आग की तरह खिले कमल वाले तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था के प्रभु ! स्वर्गिकों के भी प्रभु आप हमारी यातना का अंत करें़ तथा हम पर शासन करें।

आइये और एकदिन हमारे सामने बैठिये जिससे कि हम आनंदित होकर अपना हृदयोद्‌गार प्रकट करें आपके भक्तगन भीड़भाड़ में आनंद मनायें एवं यह मूर्ख संसार साक्षी रहे। **3798 | 3574**

चांद को छूते महलों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु ! श्रीवैंकुठम के प्रभु सारा संसार आपस में स्पर्द्धा के साथ आपकी चरण की पूजा करे एवं हृदय के पूर्ण स्नेह तथा पूरे ओजसपूर्ण वाणी से आपकी प्रशस्ति गाये। एकदिन हमारे आंखो के सामने आइये एवं उपयुक्त जगह देखकर हमारे साथ बैठिये। **3799 | 3575**

सुनहले धान के खेत में नाचती मछलियों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु ! उपयुक्त जगह देखकर यहां भी बैठिये जहां संसार आपकी प्रशस्ति गाये तथा हमभक्त लोग मधुमक्खी की तरह मंड़राते हुए आपके मुखमंडल के अमृत से लाभान्वित हों। अनेकों भीषण अस्त्रों के साथ असुरगनों का समूह में नाश करने वाले प्रभु ! **3800 | 3576**

सुखद खेतों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु ! हमारे अमृत ! आपने असुरों का अंत किया। अनेकों भीषण अस्त्रों के साथ प्रभु ने देवों की यातना का अंत किया। अद्वितीय कमल निवासिनी लक्ष्मी तथा भू देवी आपके चरणारविंद की सेवा कर आपके चरण का दर्द दूर करते हैं। मैं भी आपका चरण दबाऊं या आप मेरे पास आयें या हमें अपने पास बुला लें। **3801 | 3577**

प्रवाह पूर्ण पोरूनल के वलुदि क्षेत्र के शडगोपन का यह दसक सागर मंथन करने वाले प्रभु को अपने पास बुलाता है या प्रभु के पास स्वयं जाने के लिये चाहता है। इसे याद करने वाले प्रभु के चरण को प्राप्त करेंगे। **3802 | 3578**

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

दिव्यदेश **103** | वरगुणमंगै ः

1 | स्थान ः यह स्थान तमिल नाडु में आळवार तिरूनगरी के पास **9** तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपर्णी के उत्तर में अवस्थित है | यह 'नाथम' नाम से प्रसिद्ध है तथा श्रीवैकुण्ठम से **3** कि मी पूरब में स्थित है। |

2 | विग्रह स्वरूप ः मूलावर को विजयासनार कहा जाता है जो बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ दर्शन देते हैं। भगवान आदिशेष के छत्र के नीचे हैं। उत्सव विग्रह को 'एम इदर कडिवन' कहते हैं। तायर वरगुणवल्ली कही जाती हैं परंतु आपका पृथक सन्निधि नहीं है।स्थल तीर्थ को अग्नि तीर्थ एवं विमान को विजयकोटि कहते हैं। यहां का स्थल पुराण ब्रह्माण्ड पुराण है।

3 | महिमा ः यह स्थान वेदवती का तपस्थली रहा है। लोमश ऋषि के एक शिष्य ने एक

मछुआरे की सांप काटने की मृत्यु के बाद स्वर्ग जाते देखा। मुनि से उसने कारण पूछा। ज्ञात हुआ कि वह विष्वकसेन का पुत्र था तथा उसे पूर्व में कुसंगति के कारण नरक में रहने के बाद मछुआरा बनना पड़ा था। वरगुणमंगै जैसे पवित्र स्थल पर उसके शरीर छूटने से उसे स्वर्ग मिला।

4 । दिव्यप्रबंध संदर्भ ః नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3795**, शतक **9** । **02** । **04** ।

ॐॐ

दिव्यदेश **104** । दिव्यदेश श्रीवैकुण्ठम

आळवार तिरूनगरी के पास पांडय देश तमिल नाडु

1 । स्थान ః यह दिव्यदेश तमिलनाडु के तिरूनेलवेली के पास आळवार तिरूनगरी से **5** कि मी पर अवस्थित है। यह दिव्यदेश आळवार तिरूनगरी के पास अवस्थित नौ तिरूपति में से एक है तथा श्रीवैकुण्ठम रेलवेस्टेशन से **2** कि मी पर स्थित है।

2 । विग्रह स्वरूप ః मूलावर वैकुंठनाथार चतुर्भुज रूप में खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं तथा श्रीवैकुण्ठनाथन कहे जाते हैं। आपका स्वरूप कांची के वरदराज पेरूमाल के समरूप है। उत्सव विग्रह को 'कल्लापिरान' कहते हैं। तायर वैकुंठवल्ली कही जाती हैं तथा उत्सव विग्रह भूमि देवी हैं। यहां का तीर्थ भृगु तीर्थ एवं ताम्रपर्णी नदी है। यहां का विमान चंद्र विमान कहा जाता है। भगवान राम, वेंकटनाथ, लक्ष्मीनरसिंह, आळवार, आंजनेय स्वामी, एवं मानवला मा मुनि की अलग सन्निधि है। बह्माण्ड पुराण यहां का स्थल पुराण है।

3 । महिमा ః कालदूषक नाम का स्थानीय चोर अपनी चोरी का आधा भगवान को निष्ठापूर्वक समर्पित कर देता था। एक बार उसके गिरोह वाले पकड़े गये तथा कालदूषक भाग निकला परंतु उसने भगवान का स्मरण किया। भगवान कालदूषक बनकर राजा के यहां उपस्थित हुए। राजा ने जब कालदूषक से पूछा कि चोरी करना अपराध है कि नहीं तब कालदूषक ने बताया कि धन के चार हिस्सेदार होते हैं ః धर्म, अग्नि, चोर, एवं राजा। कालदूषक धर्म में न लगने वाले धन की ही चोरी करता है। राजा इससे प्रभावित हो गये तथा कालदूषक में भगवान ने राजा को अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराया। तब से राजा ने आपको 'कल्लापिरान' नाम से सम्बोधित किया।

एक कथा है कि ब्रह्मा से सोमकन असुर ने जब वेद छीन लिया तो भगवान ने यहां वेद का पुनरूद्धार किया था।

यहां के मंदिर का निर्माण इतनी कुशलता से की गयी है कि तमिल चित्रै तथा अप्पिसाइ माह यानी चैत एवं आश्विन के छठे दिन भगवान के गर्भगृह में सूर्य की किरण स्वयंमेव विराजती

है। यहां चैत में ब्रह्मोत्सवं मनाया जाता है।

4 । दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3795**, शतक **9** । **02** । **04**, **3799**, शतक**9** । **02** । **08** ।

ःः

नौवां शतक का तीसरा दशक ः **9** । **03** ः ओरायिरमाय्

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 । 03 । 01 से 9 । 03 । 11 पासुर 3803 से 3813 या 3579 से 3589

अद्वितीय प्रभु ! सात लोकों के आप हजार तरह से रक्षक हैं तथा आपके हजार नाम हैं। मेघ समान श्याम प्रभु आप हमारे प्रभु नारायण हैं। **3803** । **3579**

आपने विस्तृत धरा को बनाया एवं इसे ऊपर उठाया। आपने इसे निगला, पुनः बनाया, तथा मापा। आप ही शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र हैं। अन्य सब भी आप ही हैं हमें यह विदित है। **3804** । **3580**

वेद हरि को चेतन का सार मानता है। विचारक जनों ! प्रभु की पूजा सभी यातनाओं के विनाशक के रूप में करो। **3805** । **3581**

स्वर्गिकों ने आपको आनंद का सोम रस माना है। श्याम कृष्ण ही हमारी मुक्ति हैं। हे हृदय ! इसे समझो एवं कभी आपको छोड़ो नहीं। **3806** । **3582**

तुलसी माला वाले प्रभु एक हैं ऐसा दूसरा नहीं है। आपका अनुभव करो। विनती है हे हृदय ! ध्यान से सुनो। प्रभु को कभी छोड़कर जाने मत दो। **3807** । **3583**

कमलनिवासिनी लक्ष्मी का आलिंगन सुखद है। असुरों से अनवरत युद्ध कठिन है। सागर का अमृत ही मंथन है। प्रभु के साथ मिलना मेरे हृदय को तोड़ता है। **3808** । **3584**

हमारा हृदय वैकुंठ की एक झलक के लिये लालायित है जहां प्रभु का निवास है। असुर की चौड़ी छाती को आपने अपने नख से चीर दिया। **3809** । **3585**

परस्पर विरोधी युग्मों का नाश करते हुए आप पुनर्जन्म से मुक्ति देते हैं। आप वेंकटम में रहते हैं जहां देवगन आपकी पूजा करते हैं। **3810** । **3586**

शेषशायी गौरवशाली प्रभु ! फूल जल दीप तथा सुगंधित अग्नि से आपकी पूजा निरर्थक है। हाय ! हम आपके चरण की सेवा करना नहीं जानते। **3811** । **3587**

ब्रह्मा आपके नाभिकमल पर बैठते हैं तथा शिव आपके दायें भाग में रहते हैं। स्वर्गिक जन आपके पास खड़ा होकर आपकी पूजा करते हैं। क्या हम कभी आपकी पूरी प्रशस्ति गा सकते हैं ? **3812** । **3588**

प्रभु के सद्गुणों का बखान करने वाला कुरूगुर के गोरे शडगोपन के हजार पद का यह

दशक महान वैकुंठ की प्राप्ति कराता है। **3813 | 3589**

<u>नौवां शतक का चौथा दशक ः **9 | 04** ः मैयार</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 04 | 01 से 9 | 04 | 11 पासुर 3814 से 3824 या 3590 से 3600

काली आंख वाली लक्ष्मी को अपने वक्ष पर धारण करने वाले प्रभु ! शंख एवं चक्र वाले प्रभु ! हमारी आंखें आपके दर्शन के लिये आतुर हैं। **3814 | 3590**

प्रभु ! आपको देखने की ईच्छा से हमारा हृदय अनेकों तरह का विचार करता है। मैं कहता हूँ 'आपको जाने नहीं देंगे'।हाय ! आप तो देवों एवं संतो से भी बच निकलते हैं। **3815 | 3591**

अधम कुत्ता जैसे अपनी पूंछ हिलाते रहता है वैसे ही हम पिघले हृदय से आपको पुकारते हैं। आपने पशुओं की रक्षा पर्वत से की। हमें भय है कि आपकी कृपा से हम वंचित रह गये हैं। **3816 | 3592**

देवों एवं असुरों को भ्रमित करते हुए आप नरसिंह रूप में आये। हमने समर्पण कर दिया है परंतु भय है आगे क्या होगा ? **3817 | 3593**

देवों के प्रभु नरसिंह रूप में आये। आपने ब्रह्मा की सृष्टि की। आप फनधारी शेष पर शयन करते हैं। मेरा हृदय आपके चरण का अभिलाषी है। **3818 | 3594**

आपके दर्शन की ईच्छा से आपके स्वरूप का ध्यान करते हैं। वैकुंठ के अद्वितीय प्रभु ! मेरा हृदय आप से आनंदित रहता है। **3819 | 3595**

प्रभु आप नरसिंह रूप में आये और आपने चौड़ी छाती को चीर डाला। आप हमारे हृदय के अन्तःपुर में रहते हैं एवं मेरा हृदय आप से आनंदित रहता है। **3820 | 3596**

हमने अपने कृष्ण प्रभु को देखा है। आप छः सिद्धांत से ऊपर स्थित हैं। समस्त विश्व के सूक्ष्म कारण आप देवों के भी गर्भ हैं यानी हिरण्य गर्भा हैं। **3821 | 3597**

हमने प्रभु को अपने समक्ष देखा है।हमारे हृदय ने भक्तों को आनंद देने वाली गाथा गायी है। हमारे कर्म के बंधन कट गये हैं। **3822 | 3598**

गरूड़ध्वज वाले प्रभु ने हमें अपना सेवक बनाया है। एक बार आपके चरण ने पृथ्वी तथा अन्य सबों को माप डाला।कितना आश्चर्य है ! हमने आपको पा लिया।**3823 | 3599**

मदमत्त हाथी को नाश करने वाले प्रभु की प्रशस्ति में उपजाऊखेतों वाले कुरूगुर के शठगोपन के हजार पदों के इस दशक से सबों की आत्मा प्रभु स्वयं मिल जाते हैं। **3824 | 3600**

<u>नौवां शतक का पाचवां दशक ः **9 | 05** ः यिन्नुयिरच्चेवल्</u>

इसमें 11 पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 । 05 । 01 से 9 । 05 । 11 पासुर 3825 से 3835 या 3601 से 3611

<u>नायकी का दुखी होकर पक्षी आदि से शिकायत</u>

मादा कोयल ! हमसे क्या शिकायत है? तुम एवं तुम्हारी जोड़ी यहां आकर अवश्य मीठी वाणी बोलो। हाय ! तू मेरे कृष्ण को यहां आने के लिये नहीं बुलाती। मेरे जीवन का अंत करने के लिये तू इतना कठिन परिश्रम कर रही है? **3825 । 3601**

मछली पकड़ने वाली मादा पक्षी ! तू अपने जोड़ी के साथ उदासी पूर्ण बात करती है। तूझे इतना कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं थी। हाय ! यह तय है छली गोविन्द सच्चे प्रेमी नहीं हैं। मेरा जीवन उनके ही हाथ में है। **3826 । 3602**

मछली पकड़ने वाली मादा पक्षी ! मेरा जीवन उनके हाथ में है। क्या यह आवश्यक है कि तू हमारे आस पास कामी एवं सहभागिता की चाल से घूमो ? इस पापिनी ने जीवित रहने के लिये कोई तपस्या नहीं की है। हाय ! तुम्हारी दयाभरी आवाज सुनकर हम कैसे जीवित रहेंगे ? **3827 । 3603**

मोर एवं मोरनी ! छली कृष्ण तुम्हारी पुकार नहीं सुनते। विनती है कि ऊंचा मत पुकारो। मेरा हृदय कृत्य एवं वाणी सब उनके साथ है। मेरी आत्मा एवं वदन बीच में कहीं भटक रहे हैं। **3828 । 3604**

टहनी पर बैठी मैना ! छल नहीं करो। तुमसे हमारा अब कोई नाता नहीं है। श्रीपति ने तब धरा को छल से ले लिया अब वे हमारा जीवन लेने की योजना बनाये हुये हैं। **3829 । 3605**

मूर्ख तोता ! हमने तुम्हें ठीक से पाला है। अब अपनी मृदु भाषा का प्रयोग मत करो। तुम्हारे चोंच एवं पंख हमें राम प्रभु का स्मरण कराते हैं। आपने तब हमारे साथ मिलन का आनंद लिया और फिर छोड़ कर चले गये। **3830 । 3606**

तड़ित वाले काले मेघ! तुम मुझे हमारे कृष्ण का स्मरण कराते हो। उन्होनें हमारे मिलन का आनंद लिया फिर छोड़ कर चले गये। कृपा करके उनकी कमल सी आंख होंठ एवं श्याम वर्ण मत दिखाओ। तुम्हारा रंग हमारी आत्मा के लिये मृत्युवत है। **3831 । 3607**

मूर्ख कोयल ! कृष्ण का नाम नहीं लेने के लिये तुमसे निवेदन किया है। हाय ! तूने हमारी हत्या कर दी। हमने तुम्हें दही भात एवं मीठा खीर देकर बोलने के लिये सिखाया। हे उदार पक्षीगन ! हमारे परिश्रम का अच्छा पारितोषिक है ! **3832 । 3608**

भौंरा गन ! यहां मत मंड़राओ तुम्हारा संगीत हमारे घाव मे छेद करते हुए घुस जाता है। हमारे श्याम कृष्ण प्रभु बड़े तालाब के प्रस्फुटित कमल के समान बड़ी आंख के साथ केवल

हमारी जान लेने के लिये हमारे पास आते हैं। **3833 | 3609**

अच्छे जल के सारस ! मैने जानबूझकर वैकुंठाधिपति से समागम की चाह की। आभूषित शरीर कण कण कर खिसक रहा है। हमारे पास एकत्र होने का क्या लाभ ? सर्वत्र आनंद का पदार्पण हो तथा उसका साम्राज्य हो ! **3834 | 3610**

प्रभु जो सर्वत्र आनन्द का साम्राज्य कायम करते हैं उनकी प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक सबके हृदय को द्रवित करने वाला गाने योग्य गीत है। **3835 | 3611**

<u>नौवां शतक का छठा दशक ः **9 | 06** ः उरूगुमाल्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 06 | 01 से 9 | 06 | 11 पासुर 3836 से 3846 या 3612 से 3622

जिताना मैं सह सकता हूँ हमारा हृदय उससे ज्यादा पिघलता है। उनके सारे विस्मयों को याद करने पर हमारा प्रेम उमड़ने लगता है। हाय ! एक साधारण सेवक मैं क्या कर सकता हूँ ? आप तिरूक्काटकरै में रहते हैं जहां कमल वीथियों में खिलते हैं। **3836 | 3612**

हर विचार एवं शब्द में मेरा हृदय असफल रह जाता है। जब आपकी गाथा गाता हूँ तो हमारी आत्मा पिघलती है। मेरे प्रभु एवं पिता सरोवर भरे तिरूक्काटकरै में रहते हैं। यह मैं नहीं सोच पाता कि कैसे आपकी सेवा कर सकता हूँ ? **3837 | 3613**

अच्छाई का प्रदशर्न कर धोखे से आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये। तब आप हमारी आत्मा हो गये एवं मुझे आहत कर हमारे जीवन को हर ले गये। मेरे श्याम प्रभु एवं मेरे पिता तिरूक्काटकरै में रहते हैं। मैं आपका छल नहीं समझ सकता। **3838 | 3614**

प्रभु जो सारे लोकों को अपने भीतर रखते हैं इनलोगों के भीतर स्थित हो गये। हमें नही पता कैसे तिरूक्काटकरै के प्रभु इस अधम आत्मा से मोहित हो गये। **3839 | 3615**

करूणा का बहाना कर आप हमारे भीतर प्रवेश कर गये एवं एक क्षण में मुझे मेरी आत्मा तथा मेरे शरीर को निगल गये। हाय ! श्याम प्रभु कृष्ण की कितनी युक्तियां हैं ? आप उपजऊबाग वाले तिरूक्काटकरै में रहते हैं। **3840 | 3616**

हमारे कृष्ण की युक्तियां सच्ची प्रतीत होती हैं। हमारी आत्मा को चूसने के बाद जो शुष्क पदार्थ उन्होंने फेंक दिया है वह अब सच्चाई समझ सका है और दिन रात रोते हुए कहता है 'मेरे कृष्ण मेरे कृष्ण' तथा उनकी तिरूक्काटकरै में पूजा करता है। **3841 | 3617**

तिरूक्काटकरै में प्यारे कृष्ण की पूजा करने से मेरा प्रेम रोग बढ़ जाता है। यह सोचकर मैं रोता हूँ । वे आये और हमें स्नेह से अपनी सेवा में स्वीकार कर लिये। हाय ॐ परंतु मेरी आत्मा दिन ब दिन सूख रही है। **3842 | 3618**

वे हमारी सेवा स्वीकार करने नहीं हमारी आत्मा को खाने आये। दिन ब दिन कण कण वे हमारा सब कुछ खा रहे हैं। तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम घन प्रभु क्या हमारी सेवा में अभिरूचि रखते हैं? उनकी दृष्टि हमारी आत्मा पर है। **3843 । 3619**

तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम प्रभु की आंख कमल सी हैं होंठ मूंगा जैसा है चार भुजायें हैं तथा नैसर्गिक छटा है। जैसा वे हमारी आत्मा को यातना देते हैं वैसा किस अन्य आत्मा के साथ करते हैं ? **3844 । 3620**

मैंने सोचा 'जब कभी भी हम उनको देखेंगे निगल जायेंगे' लेकिन इसके पहले वे शीघ्रता से हमारा सब कुछ चूस लिये। तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम प्रभु बहुत ही चतुर हैं। **3845 । 3621**

ऊंची दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दसक कंस के विनाशक प्रभु की प्रशस्ति है। देखो यह संसार की मृगतृष्णा का अंत करने वाला है। **3846 । 3622**

॰॰

दिव्यदेश **105** । तिरूक्काटकरै ः

1 । स्थान ः यह स्थान केरल में आलुवे त्रिशूर मार्ग के पास अवस्थित है तथा एरनाकुलम से **9** कि मी पर राष्ट्रीय उच्च पथ से एडपल्ली के बाद **4** कि मी की दूरी पर स्थित है।

2 । विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े मुद्रा में दक्षिणाभिमुख हैं। आपके ऊपर के हाथ में दायें में चक्र तथा बयें में शंख है। नीचे का दायां हाथ कमल धारण किये हुए है तथा बायां हाथ कमर पर टिका है। पेरूमाल को काटकरैअप्पन या वामन भगवान कहते हैं। तायर पेरूनचेल्वनायकी तथा वात्सल्यवल्ली कही जाती हैं। यहां का तीर्थ कपिला कहा जाता है। विमान को पुष्कल कहते हैं।

3 । महिमा ः यह स्थान राजा महाबली से संबंध रखता है। 'काटकरै' का शाब्दिक अर्थ है 'जहां भगवान ने अपना चरण रखा था'। इसे 'महाबली करै' या 'वामन क्षेत्र' भी कहते हैं। केरल का अतिप्रसिद्ध 'ओनम' उत्सव यहां से संबंध रखता है। यह पूरे 'सिंहम' मास का पर्व है एवं अंतिम दिन को 'तिरूओनम' कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि वामन भगवान ने महाबली को पाताल में राजा बना दिया था परंतु वर्ष में एक दिन वे अपने पुराने क्षेत्र को देखने आते हैं और वही दिन 'ओनम' कहा जाता है जब अपनी प्रजा की स्थिति से अवगत राजा महाबली पृथ्वी पर पधारते हैं।

कहते हैं कि एक कृषक के खेत का केला नष्ट हो जाता था। उसने वामन भगवान को स्वर्ण का केला का पौधा समर्पित किया। इसके बाद उसके खेत में नेंड्रमवळा प्रजाति का सुस्वादु केले की प्रचुर फसल होने लगी।

3845 पासुर यानी **9 | 06 | 10** को तिरूवायमोळी का बहुत ही महत्वपूर्ण पासुर माना जाता है जिसमें आळवार एवं पेरूमाल के बीच प्रतियोगिता में पेरूमाल की जीत देखी जाती है। भक्त भगवान को पाता है एवं भगवान भी भक्त को पाते हैं। इस पासुर में भगवान ने ही भक्त को प्राप्त कर लिया है।

4 | दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3836** से **3846**, शतक **9 | 06** |

ःःः

<u>नौवां शतक का सातवां दशक ः **9 | 07** ः एङ्गानल्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 07 | 01 से **9 | 07 | 11** पासुर **3847** से **3857** या **3623** से **3633**

<u>नायकी दूत भेजती है।</u>

हमारे बाग की भींगी जमीन में कीड़ा खोजते पक्षी ! सुगंधित तुलसी धारण किये हमारे पात्र नर्तक प्रभु के पास दूत बनकर तिरूमूळिक्कळम जाओ। तब तू अपने परिवार के साथ सभी जन अपने चरण हमारे सिर पर रखो। **3847 | 3623**

अपनी प्रिया एवं संतान के साथ एकत्र होने वाले प्रेमी पक्षी ! हम उनसे भी वंचित हो गये हैं तथा परिवार जन भी निरादर करते हैं। जीने से क्या लाभ ? तिरूमूळिक्कळम में दलबल के साथ रहने वाले प्रभु से जाकर पूछो कि क्या हम उनके दल के योग्य हैं या नहीं? **3848 | 3624**

हमारे सरोवर में एकत्र होकर कीड़ा खोजते पक्षीगन ! प्रभु शीतल तिरूमूळिक्कळम में रहते हैं। आपके अंग कमल के समान हैं तथा वदन का श्याम रंग पत्ता जैसा है। जाकर उनसे पूछो कि क्या हम उनके दल के योग्य हैं या नहीं ? **3849 | 3625**

विकासशील तिरूमूळिक्कळम की ओर जाते सुन्दर मेघ ! हमारे मनोहारी प्रभु के पास दूत की तरह जाकर इस अधम जीव को दर्शन देने के लिये बताओ। क्यों वे तुम्हारे रंग छीनकर तुम्हें आकाश से भगा देंगे ? **3850 | 3626**

तड़ित रेखा की आग जैसे बलय को आकाश मे घुमाते तेजोमय मेघ ! तिरूमूळिक्कळम में रहने वाले प्रभु का हमारा हृदय ही वैकुंठ है। जूड़े से अमृत टपकते हमारे प्रभु के पास जाकर यह बताओ । **3851 | 2627**

मृदु होंठ वाले भौंरे ! अमृत टपकते फूल के बागों से घिरे तिरूमूळिक्कळम में स्थित अपने वक्ष पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु के पास दूत बनकर जाओ एवं हमारे शब्दों को दुहराओ 'प्रदीप्त गहने एवं रेशमी वस्त्र' | **3852 | 3628**

वनमुर्गी गन ! कमल जैसी आंख एवं मूंगावत होंठ वाले बदनाम प्रभु हमारी भाग्यहीना बाहों

को छोड़कर तथा हमारे गहने एवं रेशमी वस्त्र ले जाकर तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। उनका एक दिन दर्शन करो और मेरी तरफ से शुभ संदेश दो। **3853 | 3629**

बड़े फूलों पर मंड़राते भौंरे एवं बिढ़नी ! हमारे प्रभु से जाकर हमारा पक्ष रखते हुए बोालो 'आपके शब्द हृदय को प्रिय लगते हैं'। आप ऊंचे दीवारों से घिरे तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। उनका रंग काया फूल की तरह है एवं वे प्रस्फुटित तुलसी धारण करते हैं। **3854 | 3630**

कोमल जल कुक्कुट ! हमारे प्रभु तुलसी का मुकुट एवं सुनहले चक धारण कर तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। गहने के लिये सुयोग्य हमारे उरोज पीले पड़ गये हैं एवं कमल सी आंखों में आंसू भर गये हैं। उनसे कहो कि हमसे दूर रहना बिल्कुल ही उचित नहीं है। **3855 | 3631**

हमारे सरोबर में भोजन करते मृदुचाल की हंस की जोड़ी ! तुम सुखद कामी संगति का आनंद ले रहे हो। हमारे प्रभु तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। हम कृशकाय हो गये हैं हमारा कमरधनी खिसक गया है एवं मेरा प्राण पयान कर रहा है। उनको बताओ यह उचित नहीं है। **3856 | 3632**

तोता जैसे मधुर शब्दो में तिरूमूळिक्कळम के तेजोमय प्रभु की प्रशंसा करते विकासशील कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक सभी रोग की औषधि है। **3857 | 3623**

<u>नौवां शतक का आठवां दशक : **9 | 08** : अरूक्कुम विनै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 08 | 01 से 9 | 08 | 11 पासुर 3858 से 3868 या 3634 से 3644

जो लोग आपको हृदय मे रखते हैं एवं आपका ध्यान करते हैं तिरूनावाय के प्रभु उनके कर्मो का नाश करते हैं। हाय ! मैं कैसे आपसे मिलूं ? **3858 | 3634**

तिरूनावाय के प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी तथा मत्स्य नयना नप्पिनाय के दूलहा हैं। हाय ! कब मैं आपसे मिलूंगी ? **3859 | 3635**

मैं किसी बात से नहीं रोती बल्कि कब मैं आपसे तिरूनावाय में मिलूंगी इस बात के लिये रोती हूँ जहां आप अच्छे लोगों की संगति में रहते हैं। **3860 | 3636**

बागों से घिरे तिरूनावाय के नप्पिनाय के नाथ ! मुझे नहीं पता नहीं लौटने का उपकम करते हुए मैं यहां कब तक टिकूं। **3861 | 3637**

कमलनिवासिनी लक्ष्मी श्री देवी एवं भूदेवी के दूलहा मनुष्यों एवं देवों के आंख के तारा हैं। आप तिरूनावाय में रहते हैं। कब मेरी आंखें आपके दर्शन से उत्सव मनायेंगाी ऋ **3862 | 3638**

मेरे प्रभु ! गोपकुल के सम्राट ! अब तिरूनावाय में रहते हैं। कब मेरी आंखें आपका यहां दर्शन कर शुद्ध प्रेम से आनंदित होंगी ? **3863 | 3639**

आपने बली राजा से धरा को धारण किया। देवों के नाथ ! तिरूमल हाय ! मेरे सखा तिरूनावाय में रहते हैं। अपना सेवक बना लीजिये। **3864 | 3640**

सारी शंकाओं को दूर करते हुए मेरे हृदय में स्थित तिरूनावाय के प्रभु ! अपने चरण के योग्य बना लीजिये या त्याग दीजिये। आपका सेवक ! **3865 | 3641**

अपनी स्वयं की इच्छा से तिरूनावाय के प्रभु सब देवों एवं ऋषियों के लिये अदृश्यमान हैं। अब कौन आपके साथ रहेगा ! **3866 | 3642**

अवश्यम्भावी मिलन को सोचकर मेरा हृदय घवराया हुआ है। हाय सुगंधित तिरूनावाय के प्रभु को मैं पुकारती हूँ। **3867 | 3643**

ऊंचे दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार गीतों का यह पन्न आधारित दशक रंगीन महलों वाले तिरूनावाय में स्थित प्रभु की प्रशस्ति है। इसे याद करने वाले पृथ्वी पर शासन करेंगे तथा चमेली का सुगंध बिखेरेंगे। **3868 | 3644**

<u>नौवां शतक का नौवां दशक : **9 | 09** : मल्लिगै कमळ्</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 | 09 | 01 से 9 | 09 | 11 पासुर **3869 से 3879 या 3645 से 3655**

<u>नायकी भाव में अर्न्तवेदना</u>

हाय ! चमेली की सुगंध विखेरती हवा याल पर कुरूंजी का सम्बंध अस्त होता सूर्य एवं क्षितिज पर सुन्दर लाल बादल सब मेरे प्राण लेने वाले हैं। कमल समान आंख वाले गोपकुल केसरी ने हमलोगों का त्याग कर दिया है। हमे नहीं पता हमारे उरोज एवं बाहें जिसके साथ उन्होंने आनंद मनाया यहां से हम कहां जायें ? **3869 | 3645**

हाय ! यह त्यक्त जीव का कोई ठौर नहीं है जिससे कि हम हवा बांसुरी सायंकालीन सूर्य चंदन सुगंध मुल्लै फूल एवं पंचम पन्न से बचे रहें। धरा को बनाने उठाने एवं मापने वाले प्रभु ने असुरों पर कहर ढ़ा दिया है। हाय ! गोपाल मेरे संरक्षक नहीं आते। अब कैसे हम अपना जीवन बचा कर रखें ? **3870 | 3646**

धूर्त युवापूर्ण केशरी ! हमारे प्रभु नहीं आते। हाय ! आपने हमारे कोमल उरोज एवं झूलते कमर का आनंद लिया। हमें तब छोड़कर चले गये। अब कैसे हम अपना जीवन बचा कर रखें ? उनकी कमल सी आंख लाल होंठ एवं काली लटें हमारे पापी हृदय को पीड़ित करने के लिये विराजमान है। **3871 | 3647**

हाय ! गरूड़ के पंखों पर एक बहुत बड़ा बिढ़नी आया। इस नारी रूप फूल का रस लिया

और चला गया। अब ठंढ़ी हवा गर्म बहती है तथा हमारे पापी हृदय को जलाती है। प्यारा चांद एवं फूल की शय्या भी तप्त हो गये हैं। हाय ! मेरा हृदय भी मेरे साथ नहीं रहा। अब इससे ज्यादा हम क्या सहन करें ? **3872 | 3648**

हाय ॐ मेरा हृदय भी मेरे साथ नहीं रहा। अब कैसे हम अपना जीवन रखें ! सूर्यास्त हो चला है। गायें लौट रही हैं। बांसुरी की धुन धीरे धीरे हमें व्यथित कर रही है। हाय आपका हृदय पत्थर का है। हमारे विश्वासी संगी हमारे समक्ष मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। आपकी करूणा का समय दूर है। **3873 | 3649**

सजनी ! करूणा का समय दूर है। उनके अलावे किसी अन्य को देखता भी नहीं। हाय! इतनी लंबी अवधि तक हम जीवित नहीं रह सकेंगे क्योकि गोधूलि वेला आ गयी है परंतु मेरा हृदय नहीं आया। ब्रह्मा शिव़ एवं लक्ष्मी को साथ में रखने वाले प्रभु ने हमारी आत्मा को शुष्क कर दिया है। अब कहां जायें ? क्या करें ? क्या कहें ? और कैसे कहें ? **3874 | 3650**

सजनी ! किसे यह बतायें ? हाय ! हमारा हृदय चोर के साथ है। ठंढ़े चंदन का लेप़ अगरबत्ती का सुगंध एवं नूतन चमेली के फूल से शक्तिवान होकर प्रभावकारी शीतल वायु शांति से मेरा वध कर रही है तथा याल वाद्य यंत्र पर पंचम के साथ यह हम पर टूट पड़ती है। **3875 | 3651**

शीतल सुगंधित वायु एवं धूमिल होते लाल बादल कृष्ण से ज्यादा खतरनाक है। आप छल के साथ आये एवं छोड़कर चले गये। गोपियों के लिये अपनी बांसुरी पर पंचम धुन तथा मधु टपकते चमेली की माला एवं शीतल चंदन का लेप ये सब हमारी सहन शक्ति से बाहर हैं। **3876 | 3652**

गोपियों के लिये अपनी बांसुरी पर पंचम धुन अकेले ही हमारी जान लेने के लिये पर्याप्त है। आपकी सुन्दर आंखे तथा आपके गीत के शब्दों के चुभते संदेश़ तब उदास मुख बनाकर आहत होने का बहाना़ हाय ! हाय ! ये सब हमारी सहन शक्ति से बाहर है। शाम आ गयी पर प्रभु नहीं आये। **3877 | 3653**

शाम आ गयी पर प्रभु नहीं आये। कैसे मैं जीवित रहूँ ? गाय के घुंघरू बज रहे हैं। बांसुरी की तान हवा में व्याप्त है। मुल्लै चमेली एवं करूमुगै से रस पान कर भौंरे मस्त हैं। सागर की गर्जन हवा में छा गयी है। हाय ! **3878 | 3654**

प्रभु से अलगाव पर उदास कुरूगुर नगर के मारन शडगोपन के मधुर हजार पदों से लिया गया यह दसक धरा निगलने प्रभु की प्रशस्ति है तथा सायंकाल की गोधूली वेला में प्रभु से गोपियों का अलगाव के विषाद का स्मरण कराता है। भक्तो़ इसे पूजा के साथ गाओ एवं

धरा का शासक बनो। **3879** । **3655**

<u>नौवां शतक का दसवां दशक ः **9** । **10** ः मालै नण्णि</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

9 । 10 । 01 से 9 । 10 । 11 पासुर 3880 से 3890 या 3656 से 3666

अपना विषाद मिटाओ। उठो। प्रातः शाम प्रभु के चरणों का कमल के फूल से पूजा करो। प्रलय जल पर बटपत्र पर सोने वाले प्रभु सागर से प्रक्षालित तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं। **3880** । **3656**

मधुर फूलों को विखेरकर प्रति दिन पूजा करो। भक्तों सर्वदा आपको अपने हृदय में रखो। प्रभु तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं जहां गगनचुंबी दीवारे हैं तथा उपजाऊखेतों एवं तालों में केकड़े की बहुतायत है। **3881** । **3657**

भक्तों ! नूतन ताजा फूल जमा कर पूजा करो। मधुमक्खी मंड़राते बागों के बीच प्रभु तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं। आप तुम्हारे एक एक विषाद का अंत कर देंगे। **3882** । **3658**

मधु टपकते नूतन ताजा फूल से नप्पिनाय के दूलहा की तिरूकण्णपुरम में पूजा करो जहां गगनचुंबी दीवारें हैं। जो वहां स्वेच्छा से रहते हैं हमे आश्रय प्रदान करेंगे। **3883** । **3659**

जो आपको खोजते हैं उनको यहां तथा मृत्यु पश्चात्वैकुण्ठ में आप आश्रय प्रदान करते हैं। ऊंची दीवारो वाले तिरूकण्णपुरम में आप भक्तों के प्रेम के कारण रहते हैं। **3884** । **3660**

आप उन सबों के सखा हैं जो आपका चरण खोजते हैं। आप सुनहले स्वर्णाभूषित दीवारो वाले तिरूकण्णपुरम में रहते हैं। आपने हिरण्य की चौड़ी छाती को चीरा। जो खोजता है उसके आप चिरंतन मित्र हैं। **3885** । **3661**

जो प्रेम से आपको खोजता है आप उनके प्रति सच्चे हैं। जो दिखाने के लिये आपकी पूजा करता है उसके लिये आप सच्चे नहीं हैं। मछली वाले खेतों से घिरे तिरूकण्णपुरम में आप उनके पास हैं जो आपको अपने हृदय में रखते हैं। **3886** । **3662**

आप उसके पास हैं जो आपका चरण खोजता है। आप उसे जन्म मरण के चक्कर से मुक्त कर देते हैं। आभूषित दीवारों वाले तिरूकण्णपुरम के प्रभु के चरणों की नित्य पूजा करो। **3887** । **3663**

आपकी पूजा कर रोग मुक्त बनो। हमारे कर्म हमें नहीं बांधेगे अतः हम क्या खोयेंगे! वैदिक ऋषिगन तिरूकण्णपुरम के प्रभु को चाहते हैं। जो आपको पा जाते हैं उनका विषाद समाप्त हो जाता है। **3888** । **3664**

हमें कोई विषाद नहीं है हमें किस बात की कमी है ? आभूषित दीवारों वाले तिरूकण्णपुरम में कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर स्थित हैं।आपकी प्रशस्ति गाओ एवं विषाद सदा के लिये दूर रहेगा। **3889।3665**

जो कर्म के विषाद से मुक्ति चाहते हैं वे ऊंची महलों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद के इस दशक को गायें एवं नाचें तथा तिरूकण्णपुरम में प्रभु के चरण की पूजा करें। **3890।3666**

<u>दसवां शतक का पहला दशकः **10।01**ः ताळतामरै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10।01।01 से 10।01।11 पासुर 3891 से 3901 या 3667 से 3677

चार भुजा घुंघराले बाल कमल सी आंख मूंगावत होंठ वाले आकर्षक मेघ सा श्याम प्रभु ही हमारे एक मात्र आश्रय हैं। कमल की बहुतायत वाले सरोवरों के बीच स्थित तिरूमोगूर में प्रभु सारे असुरों का विनाशकर अपनी स्वेच्छा से रहते हैं।**3891।3667**

योग्य वैदिक ऋषियों वाले तिरूमोगूर में प्रभु हजार नाम वाले हैं तथा तुलसी का सुन्दर मुकुट धारण करते हैं। हर जन्म में आपके अतिरिक्त हमारा कोई आश्रय नहीं है। आपके चरणारविंद की साया में सभी अच्छाई का बड़ा सरोवर है।**3892।3668**

चतुरानन ब्रह्मा शिव एवं अन्य देवगन आपकी पूजा कर आपकी शरण में अपना संरक्षण पाते हैं। लोकों को संरक्षण देते हुए धरा पर आप विजयी होकर घूमते हैं। हमलोगों के लिये तिरूमोगूर में आपके पास आना ही श्रेयस्कर है। **3893।3669**

चलो भक्तों क्षीर सागर में फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु की तिरूमोगूर में पूजा करें। देव एवं ऋषिगन गाथा गाते हुए सदा आपके पास रहकर अपनी सारी आवश्यकताओं के लिये आपकी पूजा करते हैं तथा अपना संरक्षण चाहते हैं। **3894।3670**

चलो भक्तों अपने प्रिय मंदिर के पास चलें। गन्ने एवं धान के बड़े बड़े पौधे वाले तिरूमोगूर में प्रभु स्थित हैं। आप सबके आदि कारण हैं। आपने धरा मापी ।चलें आनंद में नृत्य करें। **3895।3671**

गोपाल प्रभु असुरों के लिये मृत्यु हैं तथा भक्तों एवं ऋषियों को प्रिय हैं। चलो भक्तों अपने प्रिय मंदिर के पास चलें। तिरूमोगूर के चारो ओर शीतल एवं उपजाऊ बाग तथा खेत फैले हैं।अपने आत्तन के चरणारविंद के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं है। **3896।3672**

हमारा कोई आश्रय नहीं है। आपने विस्तृत एवं शांत स्थान बनाया फिर इसे जल से भर दिया।तब देवगन एवं प्राचीन ऋषियों की रचना की। फिर लोको को बनाकर आनन्द से

तिरूमोगूर में रहने लगे। अगर हम आपकी एक परिक्रमा करें तो हमारे सभी विषाद भाग खड़ा होंगे। **3897**।**3673**
भक्तों ! विषाद भाग खड़ा होंगे। आओ एवं पूजा करो। हजारनाम वाले प्रभु करूणा के सरोवर हैं। आप सरोवरों एवं सुन्दर बागों के साथ तिरूमोगूर में रहते हैं। लंका का नाश करने के लिये आप दशरथ पुत्र राम बनकर आये। **3898**।**3674**
सरोवरों एवं सुन्दर बागों का तिरूमोगूर अब पास में है। असुरों के विनाशक चार भुजावाले योद्धा प्रभु का यहां निवास है। हमने विशाल किला रूपी प्रभु की सेवा की जिनका चरण एक बड़ा सा सरोवर है कमल जैसी आंखें हैं एवं प्रवाल जैसे होंठ हैं। **3899**।**3675**
दुष्ट असुरों से भयग्रस्त स्वर्गिक जन प्रभु को चाहते हैं जो उसी स्वरूप में दर्शन देते हैं जिस स्वरूप की चाह रहती है तथा वे रक्षा करते हैं। तिरूमोगूर के प्रभु सदा के लिये हमारे किला हैं। आइये प्रसन्न होकर प्रभु के नाम की प्रशस्ति गायें। **3900**।**3676**
कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक पात्रनर्तक तिरूमोगूर के प्रभु की प्रशस्ति है। जो प्रभु की पूजाकर इसे गायेंगे निश्चित ही उनके विषाद का अंत हो जायेगा। **3901**।**3677**

ஃஃஃ

दिव्यदेश **106**। तिरूमोगूर ः

1।स्थान ः यह तमिलनाडु में मदुरै से **10** कि मी पर है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं एवं चतुर्भजी हैं। शंख चक्र के अलावे दायां हाथ वरद मुद्रा में तथा बायां गदा के साथ है।यहां एक और सन्निधि हैं जहां पेरूमाल भुजंग शयनम मुद्रा में हैं। कहते हैं भगवान का शयन मुद्रा सात तरह की है ः भोग, बाल, उत्थान, आनंद, वीर, स्थल, एवं प्रार्थना। यहां प्रार्थना मुद्रा है जिसमें दोनों लक्ष्मी हाथ उठाकर पूजा कर रही हैं तथा शयन करते प्रभु को भक्तों के दर्शनार्थ उठने के लिये प्रार्थना कर रही हैं। तायर को मोहनवल्ली एवं तीर्थ को क्षीराब्धि कहते हैं। यहां का विमान केतकी कहा जाता है।

3।महिमा ः समुद्रमंथन के समय इसी स्थान पर पेरूमाल ने मोहिनी रूप धारण किया तत्पश्चात अमृत बांटा गया। देवों ने प्रभु से मूल रूप के दर्शन की प्रार्थना की तब यह चतुर्भु ज रूप यहां दृश्यमान हुआ। मेघ के समान श्याम स्वरूप को कालमेघ पेरूमाल कहते हैं। सुदर्शन चक्रतआळवार की अलग सन्निधि है जिसमें **16** हाथ में **16** तरह के आयुध विराजमान हैं तथा विग्रह दौड़ने की मुद्रा में हैं। इसके पीछे योग नरसिंह हैं दोनो ऊपर के हाथ शंख चक्र के साथ तथा नीचे के दोनो हाथ घुटने पर विश्राम करते हुए योगमुद्रा में हैं।

नम्माळवार इस रूप पर अपने मुग्धावस्था के भाव को दर्शाते हैं। **3899** द्रष्टव्य है।
4।दिव्यप्रबंध संदर्भ ः परकाल स्वामी, शिरिय तिरूमडल **2673**। नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3891** से **3901,** शतक **10**।**01**।

ःःः

दसवां शतक का दूसरा दशक ः **10**।**02** ः केडुमिडर

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10।**02**।**01** से **10**।**02**।**11** पासुर **3902** से **3912** या **3678** से **3688**

केशव का नाम लेने पर हमारे सारे व्यवधान लुप्त हो जायेंगे। दुष्ट यमदूत भी पास नहीं आयेंगे। हम सुखद खेतों से घिरे तिरूवनन्दपुर नगर चलें जहां प्रभु विषधर शेषशय्या पर शयन करते हैं। **3902**।**3678**

अगर हम अभी जायें तो सात जन्म तक विषाद नहीं सतायेगा। महलें पर्वत की तरह खड़ी हैं। हजार नाम से एक नाम भी लेने वाले स्वर्गिकों का नगर तिरूवनन्दपुर नगर में कुरून्दु शेरून्दि़ एवं पुन्नै फूल का सुगंध फैला है। **3903**।**3679**

विश्व को निगलकर पुनः बनाने वाले प्रभु अपने बाहन गरूड़ से चिह्नित ध्वज के साथ तिरूवनन्दपुर नगर में शयन कर रहें हैं।अगर विश्वासपूर्वक वहां जाओगे तो तुम्हारे सारे विषाद मिट जायेंगे।हजार नाम से मात्र एक भी नाम का जप करो। **3904**।**3680**

बिना भय के बोलो।आप सबों को मित्र बना लेते हैं तथा वहां सुगंधित फूल के बागों एवं खेतों से घिरे तिरूवनन्दपुर नगर में शयन कर रहें हैं।सागर किनारे वे लोग आपकी पूजा फूल एवं उचित विधि से करते हैं। कितने सौभाग्यशाली हैं वे लोग! **3905**।**3681**

जो सुगंधित तिरूवनन्दपुर नगर में प्रभु का चरण चाहते हैं एवं आपकी पूजा पवित्र जल तथा नूतन पुष्प से करते हैं और आपके नाम का ध्यान करते हैं वे इस जीवन का अंत कर स्वर्गिक हो जायेगें। हम इसे निश्चित जानते एवं बोलते हैं। **3906**।**3682**

तिरूवनन्दपुर नगर में शयन करने वाले प्रभु स्वर्गिकों के प्रभु हैं जो इनके प्रथमगण विष्वकसेन से पहले पूजे जाते हैं तथा दूसरे लोग इनके बाद पूजा अर्पित करते हैं। हमारे लोगों! ध्यान से सुनो़ हमें भी वहां जाकर सम्मिलित होना है। आप गोविन्द हैं जिन्होंने सुब्रमनियम के पिता का विषाद मिटाया था। **3907**।**3683**

हमारे महान गोविन्द प्रभु विश्व़ देवगऩ जीव तथा अन्य सभी के संहारक एवं सृष्टिकर्ता हैं।आप उपजाऊखेतों एवं मछलियां कूदते तालों के बीच तिरूवनन्दपुर नगर में शयन करते हैं। यहां परिसर में भी झाड़ू लगाने की सेवा करने से सभी कर्मों का अंत हो जाता है। **3908**।**3684**

तिरूवनन्दपुर नगर का सुन्दर स्थल सारे कर्मों के नाश हेतु कामदेव के पिता ने स्वयं पसंद से चुना है। भक्तगनों ! यह मेरी अंतिम पुकार है फनधारी शेष पर शयन करते प्रभु का चरण देखने के लिये तैयार हो जाओ। **3909 | 3685**

देखो सूचना की अवधि का भी अंत हो गया है। सुगंधित बागों वाले तिरूवनन्दपुर नगर पावन प्रतीकों से भरा हुआ है। नूतन चुने हुए सुगंधित फूल एवं अगरबत्ती से वामन के चरण की पूजा करो। तुम्हारे विषाद का बिना किसी चिह्न के अंत हो जायेगा। **3910 | 3686**

हमारे सारे विषाद माधव का नाम लेने पर स्वतः लुप्त हो जायेंगे। प्रभु सुनहले दीवारों वाले तिरूवनन्दपुर नगर में स्थित हैं। जो आपकी पूजा चंदन लेप दीपक अगरबत्ती एवं नूतन कमल पंखुड़ियों से करेंगे वे चिरंतन गौरव के अधिकारी बनेंगे। **3911 | 3687**

कुरूगुर शडगोपन के हजारपद का यह दसक तिरूवनन्दपुर नगर के प्रभु की शाश्वत गाथा है। यह स्वर्गिकों के लोक में सुघड़ बांस की तरह बांह वाली आभूषित नारियों के आलिंगन का सुख देने वाला है। **3912 | 3688**

ஃஃஃ

दिव्यदेश **107** | तिरूवनन्दपुर नगर ः

1 | स्थान ः यह केरल की राजधानी तिरूअनंतपुरम नगर के बीच में स्थित विख्यात पद्मनाभ स्वामी का मंदिर है जो रेलवे स्टेशन से **2** कि मी पर अवस्थित है।

2 | विग्रह स्वरूप ः भगवान भुजंग शयनावस्था में पूर्वाभिमुख हैं। पेरूमाल अनंत पदमनाभन कहे जाते हैं तथा **12000** शालग्राम से बने हैं। आपका तिरूमेनी यानी तिलक नवरत्न का बना है। ब्रह्मा भगवान की नाभि कमल पर विराजमान हैं तथा शिव भगवान के शिर के पास विराजते हैं। तायर श्रीहरिलक्ष्मी कही जाती हैं। यहां का तीर्थ मत्स्य तीर्थ कहा जाता है तथा विमान को हेमकूट कहते हैं। प्रवेश में द्वारपाल के बाद के कक्ष में गरूड़ तथा आंजनेय साथ में भगवान की ओर देखते हुए अंजलिबद्ध मुद्रा में विराजते हैं। यहां योगनरसिंह, कृष्ण, लक्ष्मीहयग्रीव, तथा आंजनेय की अर्चना सन्निधियां हैं।

3 | महिमा ः दिवाकर मुनि के शालग्राम भगवान को दो वर्ष के एक बालक ने चुरा लिया। आप उसका पीछा करते जंगल की ओर गये जहां वह एक वृक्ष के पास छिप गया। आश्चर्यमय रूप में वह वृक्ष भगवान विष्णु के शयन स्वरूप में वदल गया। मुनि की विनती पर भगवान ने उस स्वरूप में दर्शन देने का वचन दे दिया। सभी दिव्यदेशों की शयन मूर्तियों में अनंत पदमनाभन अधिकतम लंबाई के हैं तथा गर्भगृह में आपका दर्शन तीन द्वारों से किया जाता है ः दक्षिण द्वार से मुखमंडल का, बीच के द्वार से नाभि एवं ब्रह्मा का, तथा

उत्तर द्वार से चरणारविंद का। ट्रावण्कोर का राजपरिवार आपके दास के रूप में जाना जाता है। तमिल ऐप्पासी या आश्विन यानी **15** अक्टूबर से **15** नवंबर के बीच एवं पांगुनी या फागुन यानी **15** मार्च से **15** अप्रैल की अवधि के महीनों में यहां विशेष उत्सव मनाया जाता है।

1000 प्रतिमाओं वाला कुलशेखर मंडप दर्शनीय है। भीतरी परिसर में प्रशस्त एवं लंबे रास्ते में **324** पत्थर के संगीत उत्पन्न करने वाले खंभे हैं जिसपर सुन्दर चित्रकारी में महिलायें दीपक लिये खड़ी हैं। इसे श्रीवेली मंडप तथा मूर्तियों को 'पवै विलक्कु' कहते हैं। यहां एक साथ **5000** लोगों के भोजन प्रसाद बनने की व्यवस्था है।

भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलराम जी तीर्थ यात्रा के क्रम में यहां दर्शन करने आये थे।

4 । दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3902** से **3912**, शतक **10** । **02** ।

ः:ःः

दसवां शतक का तीसरा दशक ः **10** । **03** ः वेय मरूदोळ

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 । 03 । 01 से 10 । 03 । 11 पासुर 3913 से 3923 या 3689 से 3699

गाय चराने जाने से विछुड़न हुआ है। गोपियों का दिन विषादपूर्ण हो गया है।

जब प्रेम पक्षी कोयल पुकारता है हमारा सुघड़ बांस की तरह बांहें झुक जाती हैं। हमारे अकेलेपन का तिरस्कार कर ये मोरगन समूह में नाच रहे हैं। हे कृष्ण ! आप अपनी गायों को चराने चले गये। आप हृदयहीन हैं। हाय ! आप अपनी कमल सी आंखों से हमारा प्राणांत कर रहे हैं। दिन चिरंतन अवधि वाला हो गया है। **3913** । **3689**

जब जब आपने हमारे स्थिर उरोज का स्पर्श किया है आनंद उमड़ कर हमारे मन को धोते हुए आकाश को छेद दिया है तथा आप हमें स्वप्निल की तरह छोड़ गये हैं। हाय ! हमारी सहन शक्ति से ज्यादा रोम रोम में हमारी चाह घुस गयी है। हे कृष्ण! आप हृदयहीन हैं हमें छोड़कर गायों को चराने चले जाते हैं। हाय ! **3914** । **3690**

हमारी गर्म सांस आत्मा को शुष्क बना रही है। हाय ! मैं बिना साथी के मरूंगी। ओह! आपके श्याम वदन के कृत्य देखने के लिये मैं जीवित ही नहीं र हूँ गी। मत्स्य नयनों से आंसू रूकते ही नहीं। दिन भी नहीं बीतता। इस गोपकुल का जन्म ही अभिशाप है। इस अकेलापन का अवश्य अंत होना चाहिये। **3915** । **3691**

गोविन्द हाय ! आप हमारी अकेलापन की चुभन को नहीं समझते। आप केवल अपनी गायों को चाहते हैं एवं हमे छोड़कर उनके पीछे चले जाते हैं। आपकी मिथ्या बातें मीठे जहर के समान आपके वेर जैसे होंठ से निकलती हैं। हमारे रोम रोम में ये घुस गयी हैं एवं

जब भी स्मरण करती हूँ प्राणांत का दुख झेलती हूँ । **3916 | 3692**

कृष्ण ! आप सारा दिन गाय चराने में बिताते हैं। आपकी क्षमायाचना हमारा प्राणांत करती है। यह मदमत्त भौंरा सायं काल की चमेली का सुगंध विखेरता है। आओ तुम अपनी छाती से मुलै फूल की गंध को हमारे उरोजों पर लगाओ। तुम अपना होंठ हमे दे दो। हाय ! तू अपना आभूषित हाथ हमारे सिर पर रख दो। **3917 | 3693**

कृष्ण ! आप अपना आभूषित हाथ शीघ्र हमें दीजिये। हाय ! हमारा नारीपन इसे सह नहीं सकता। इसबीच अन्य किशोरियां आपके चरण को अपने अधिकार में ले लेंगी। हाय! आपकी गाय की चरवाही हमारे लिये कितना विध्वंसक है जो हमें शुष्क कर रही है। इन आंखों में आंसू रूकते ही नहीं और न तो मेरा हृदय रूकता है। **3918 | 3694**

हमारा हृदय आग में मोम की तरह पिघल रहा है। हमारी कमरधनी ढ़ीली पड़ गयी है। हमारी निर्मल आंखे मोती गिराती हैं उरोज मुर्झा गये हैं बाहें ढ़ीली होकर झुक गयी हैं। मणिवर्ण वाले प्रभु ! कमल से सुकोमल चरण को आप प्यारी गायों को चराने में आहत कर लेते हैं। क्या होगा अगर असुर गन वहां आक्रमण कर दें ? **3919 | 3695**

हमारा हृदय बैठ रहा है विनती है मत जाइये। क्या होगा अगर असुर गन वहां आप पर आक्रमण कर दें? मिलन की चाह भींग कर हमारे भीतर फैल गयी है। कृष्ण ! चुपके से भाग मत जाइये। अपने मनमोहक कमल जैसी आंख होंठ हाथ एवं पीत वस्त्र को प्रदर्शित करते हुए इन पतली कटि वाली अन्य गोपकिशोरियों के साथ मधुर मिलन का आनंद लीजिये। **3920 | 3696**

जब जब आप गोपकिशोरियों के साथ मधुर मिलन का आनंद लेते हैं तथा आप अपना विषाद का अंत करते हैं हमारे भीतर का नारीपन अनियंत्रित हो जाता है। हम लोग ज्यादा ही आनंद लेते हैं। हाय ! विनती है आप गायों के पीछे मत जाइये। कंस ने असुरों के समूह को छोड़ रखा है। हाय ! अगर आप पकड़े गये तो हाहाकार मच जायेगा। **3921 | 3697**

कंस के भेजे गये दुष्ट असुर घूमकर व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। ध्यान दीजिये। ओह! आप अकेले जाना चाहते हैं। बलराम या उनके साथियों की चिंता आपको नहीं है। हाय ! मेरी संवेदनायें हमारी आत्मा को जला रही हैं। कृष्ण ! मूंगावत होंठ के गोपकिशोर ! गाय चराना आपको वैकुंठ से भी ज्यादा प्रिय है। **3922 | 3698**

पोरूनल कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक मूंगावत होंठ के श्रीपति गोपकिशोर के बारे में है जिनको गाय चराने जाने के लिये मना करती हुई एक युवती गोपी समझा रही है। जो इसे गा सेकेंगे वे उस गोपी की तरह लाभान्वित होंगे। **3923 | 3699**

<u>दसवां शतक का चौथा दशक ः **10 | 04** ः शार्वे तवनेरि</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 | 04 | 01 से **10 | 04 | 11** पासुर **3924** से **3934** या **3700** से **3710**

दामोदर के चरण भक्ति के उपाय हैं। चक्रधारी श्याम वदन राजीवनयन प्रभु जल़ मिट्टी अग्नि़ वायु एवं आकाश के रूप में खड़े हैं। आपकी गाथा महान स्वर्गिकों द्वारा गायी जाती है। **3924 | 3700**

स्वर्गिकों में गौरवशाली प्रभु का दर्शन प्रेम के बिना संभव नहीं है। श्री देवी से सुशोभित वक्षस्थल वाले राजीवनयन प्रभु परस्पर विरोधी युग्मों के बाहर हैं। **3925 | 3701**

जब चक्रधारी प्रभु हमारे शासक हैं तो कौन हमारी क्षति पहुंचायेगा ? पुनर्जन्म की यातना से ऊपर उठ कर अब हम दुबारे जन्म नहीं लेंगे। मत्स्यनयना नप्पिनाय के पति को हमने देखा है एवं आपको हम अपने सिर पर स्थापित कर चुके हैं। **3926 | 3702**

बटपत्र पर सोने वाले प्रभु पर्वतों पर खड़े होकर देवों से पूजित हैं एवं हमारे हृदय में स्थित हैं। आपके चरण हमारे सिर पर हैं। मुझे विश्वास है कि आप मुझसे अलग नहीं किये जा सकते। **3927 | 3703**

मुझे विश्वास है कि आप मेरे हृदय को नहीं छोड़ सकते। चक्रधारी प्रभु के भीतर शरारत कूट कूट कर भरा है। जो आपको नहीं समझते उन्हें आप मिथ्या को सच के रूप में प्रदर्शित करते हैं। आप में प्रेम रखने वाले हमलोगों को आप शयनावस्था में दर्शन देते हैं। **3928 | 3704**

शेषशायी प्रभु का ध्यान करने वाले आपके कृपापात्र बनते हैं। जटाधारी शशिभूषण शिव आपके एक अंश में अवस्थित हैं। हम अपने हृदय में प्रभु का ध्यान करते हैं। **3929 | 3705**

हे हृदय ! अतिश्रेयस्कर की पूजा कर। रोग दूर रहेंगे तथा पुनर्जन्म से मुक्त हो जाओगे। मणिवर्ण वाले प्रभु चक्र धारण करते हैं। आप हम पर शासन करने वाले मधुसूदन हैं। **3930 | 3706**

चक्रधारी प्रभु देवों के समूह से ऊपर हैं। आप कालातीत प्रभु सृष्टि कर्ता हैं तथा गाय चराने वाले हैं। अपने चौड़े कंधों पर आपने पर्वत उठाया। हे नेक हृदय ! आपके श्रीचरण की प्रशस्ति गाओ। **3931 | 3707**

जैसा आपने पूर्व में शिक्षा दी थी हमने अनवरत आपकी सेवा की एवं पूजा की तथा आपके दिव्य चरणारविंद का दर्शन पाया। तत्क्षण हमारे कर्मो का नाश हो गया। **3932 | 3708**

हर दिशाओं में प्रशंसित माधव हीं देवों के नाथ हैं। आपके चरणकमल सर्वत्र आपके भक्तों से पूजित हैं। अपना मन आप पर टिका कर नित्य दीपक़ अगरबत्ती़ नूतन पुष्प़ तथा जल से

पूजा अर्पित करो। **3933 | 3709**

वळुदि क्षेत्र के कुरूगुर शडगोपन के हजार पदों का यह दशक स्वर्गिकों के देव मल्ल योद्धा के शक्तिशाली कंधों वाले प्रभु की प्रशस्ति है। इसके गान से प्रभु के चरणों का आश्रय मिलता है। **3934 | 3710**

दसवां शतक का पाचवां दशक ः **10 | 05** ः कण्णन्कळलिणै

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 | 05 | 01 से 10 | 05 | 11 पासुर **3935 से 3945** या **3711 से 3721**

जो कृष्ण के चरण की चाह रखते हैं वे आपके नाम का स्मरण करें। नारायण मंत्र हैं। **3935 | 3711**

भूदेवी के पति हमारे प्रभु नारायण मदमत्त हाथी के विनाशक हैं। आप स्वयं ही स्वयं के कारण हैं। **3936 | 3712**

आपने विश्व बनाया। आपने इसे उठाया। आप इसे निगल गये एवं पुनः बना दिया। आप ही संरक्षक हैं। **3937 | 3713**

स्वामी सागर में शेष पर शयन करते हैं। आपके चरण पर फूल विखेर कर प्रतिदिन पूजा करो। **3938 | 3714**

नूतन पुष्प से प्रतिदिन पूजा करो एवं नाम गान करो। मुक्ति यहीं मिलेगी। **3939 | 3715**

काया फूल के रंग वाले प्रभु वेंकटम में रहते हैं। आप पूतना के स्तन चूसने वाले माधव हैं। **3940 | 3716**

अगर माधव के नाम का गान करोगे तो कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और न तो पाप ही पास रहेगा। **3941 | 3717**

मेघ समान रंग वाले प्रभु के त्रुटि रहित नाम गान से देवों की तरह सम्मानित रहोगे। **3942 | 3718**

आप देवों की दृष्टि से ओझल रहकर कर्मों का नाश करते हुए भक्तों के पास रहते हैं। **3943 | 3719**

कमल का फूल चढ़ाकर ध्यान लगाओ। कर्मों का समूह डर से भाग जायेगा। **3944 | 3720**

कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक भक्तों को प्रभु के मुखमंडल का दर्शन करायेगा। **3945 | 3721**

चक्रधारी प्रभु तिरूवत्तारू में भक्तों के आदेश की प्रतीक्षा करते हुए स्थित हैं। इस काले संसार में मैं अब कोई जन्म नहीं चाहता। हे मन ! सब संशय हटाकर आपकी पूजा करो।

3946 | 3722

तिरूवत्तारू में केशव नाम का गान एवं पूजा करके हम कर्म के बंधन काटते हुए संसार के मोह को त्याग चुके हैं। हम नारायण के चरण को प्राप्त कर गये हैं जो पुनर्जन्म का अंत करते हैं। हे क्षीण हृदय! क्या तुम सुनते हो ? **3947 | 3723**

10 | 06 | 03 ः आप आजही धरा पर श्रीसंपन्न तिरूवत्तारू में आये हैं एवं हमारे आदेश पर वैकुंठ प्रदान करेने के लिये शीघ्रता में हैं। हे मेरे हृदय! यह मात्र संयोग नहीं है। **3948 | 3724**

तिरूवत्तारू के प्रभु ने हिरण्य की चौड़ी छाती अपने नखों से विदार दी। आपने पांडवों के लिये घोर भारत की लड़ाई लड़ी। हमारे हृदय में रहते हुए आपने हमें महान तमिल गीत प्रदान किया। हे मेरे नेक हृदय! हमारे करूणानिधान प्रभु सच में श्रेयस्कर हैं। **3949 | 3725**

तिरूवत्तारू के प्रभु ने स्वेच्छा से हमें मुक्ति का मार्ग दिया है। हम आपके चरण अपने सिर पर रखते हैं। आप मधु टपकते तुलसी धारण करते हैं तथा गरूड़ की सवारी करते हैं। हे मेरे हृदय ! अब नरक का उपहास कर सकते हो। **3950 | 3726**

मेरे राजीवनयन प्रभु कभी हमारे हृदय का त्याग नहीं करेंगे। तिरूवत्तारू के पर्वत पर प्रभु शेषशायी हैं। आपने मदमत्त हाथी का उसके दांत से नाश किया। आपके नुपूर की ध्वनि वाले चरण हमारे सिर पर हैं। **3951 | 3727**

हमने गोविन्द प्रभु के चरण पा लिये जो रत्नों से आभूषित महलों वाले तिरूवत्तारू में स्थित हैं। यह सागर तट वाले दक्षिण क्षेत्र का तिलक है। हमारा वदन आपके चरण की तुलसी का सुगंध विखेर रहा है। **3952 | 3728**

तेजोमय मुकुट एवं सुगंधित तुलसी माला वाले प्रभु चक्र से जहां भी चाहते हैं विजय प्राप्त करते हैं। पर्वत के रंग वाले प्रभु तिरूवत्तारू में स्थित हैं। मैं यह नहीं समझता कि आपका कृपापात्र बनने के लिये हमने क्या किया है। **3953 | 3729**

रत्न आभूषित प्रभु शीतल तिरूवत्तारू में शयन करते हैं। अपने दिव्य वक्षस्थल पर आप कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। महान गरूड़ पर सवार हो आपने अनेकों असुरों का अंत किया। आप स्वेच्छा से हमारे हृदय में सर्वदा विराजमान हैं। **3954 | 3730**

तिरूवत्तारू में प्रभु फनधारी शेष पर शयन करते हैं। नरसिंह रूप में पधारकर आपने हिरण्य की चौड़ी छाती चीर दी। हमारे पुनर्जन्म के बंधन को काटकर हमे सेवक बनाते हुए आपने अपनी करूणा दी जो पूर्व में हमें कभी नहीं मिला था। **3955 | 3731**

कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दसक तिरूवत्तारू प्रभु की प्रशस्ति है जो अपना

चरण का दर्शन देकर नरक की यातना का अंत करते हैं। यह मधुर कविता देवों की चाह को सदा बनाये रखता है। **3956**।**3732**

ஃஃ

दिव्यदेश **108**। तिरूवत्तारू ः

1।स्थान ः यह स्थान केरल में तिरूअनंतपुरम से करीब **45** कि मी पूरब में तथा नागरकोइल से **25** कि मी पश्चिम में अवस्थित है। तोडावत्तु से उत्तर मुड़ने पर **8** कि मी पर स्थित है।

2।विग्रह स्वरूप ः मूलावर भुजंगशयन मुद्रा में पश्चिमाभिमुख हैं एवं आदिकेशव पेरूमाल कहे जाते हैं। उत्सव विग्रह को माधवन कहते हैं। तायर को मार्गतवल्ली, तीर्थ को वत्तारू तथा कडलवोई एवं राम तीर्थ कहते हैं। यहां के विमान को अष्टांग विमान तथा अष्टाक्षर विमान कहते हैं। यहां के स्थल पुराण ब्रह्माण्ड पुराण एवं गरूड़ पुराण हैं।

3। महिमा ः पद्मनाभ स्वामी मंदिर तिरूअनंतपुरम एवं आदिकेशव मंदिर तिरूवत्तारू में बहुत समानता है।दर्शन तीन द्वारों से किया जाता है। आदिकेशव को पद्मनाभ स्वामी का बड़ा भाई माना जाता है एवं दोनों एक दूसरे को शयनावस्था में देख रहे हैं। दोनों के शिर दक्षिण दिशा में तथा चरणारविंद उत्तर दिशा में हैं। कहा जाता है कि **12000** शालग्राम से पद्मनाभ स्वामी के विग्रह को बनाया गया है जबकि आदिकेशव का विग्रह **16008** शालग्राम से बने हैं। आदिकेशव का संपूर्ण स्वरूप स्वर्ण एवं हीरे से जड़ित है।बालू के कण जैसे हीरे आदिकेशव भगवान के शरीर पर विराजमान हैं। अनंतशयनम भगवान के शिर के पास शिवलिंग है परंतु यहां आदिकेशव भगवान के पैर के पास शिवलिंग स्थापित है। आदिकेशव की नाभि से कमलासीन ब्रह्मा अनुपस्थित हैं।

केशी नामका असुर मुनियों के यज्ञ में विघ्न डालता था। भगवान ने उसका अंत किया। उसकी पत्नी आसुरी ने गंगा एवं ताम्रपर्णी से विनती कर यहां जलप्लावित करने को कहा।भूदेवी ने स्थल को ऊंचा कर दिया जिसके कारण यह स्थान नदी से घिरा हुआ है परंतु जलमग्न नहीं होता। वत्तारू का शाब्दिक अर्थ 'गोल' होता है यानी जो वृत्ताकर जल प्रवाह के बीच होने के कारण तिरूवत्तारू हुआ। मंदिर परिसर पार्श्ववर्ती क्षेत्र से **55** फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

तिरूवायमोळी में पासुर **3946** के पहले आळवार पेरूमाल का अन्वेषण करते हैं परंतु **3946** यानी **10**।**06** से क्रम बदल जाता है एवं पेरूमाल ही आळवार का अन्वेषण करने लगते हैं। **10**।**6**।**3** में तो पेरूमाल आळवार संत को मोक्ष देने के लिये दौड़ पड़ते हैं।

4।दिव्यप्रबंध संदर्भ ः नम्माळवार, तिरूवायमोळी **3946** से **3956**, शतक **10**।**06**।

ஃஃ

दसवां शतक का सातवां दशक ः **10 | 07** ः शेञ्जोर्कविगाळ

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 | 07 | 01 से 10 | 07 | 11 पासुर **3957 से 3967 या 3733 से 3743**

मधुर भाषी कविगन! जब आप गाते है तो सावधान रहें। तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु धूर्त युक्ति वाले हैं। हमारे हृदय एवं आत्मा में आपने मुग्धकारी कवि की तरह प्रवेश किया। फिर सबको खा गये। फिर स्वयं वही हो गये एवं बिना मेरी जानकारी के मुझमें पूरी तरह भर गये। **3957 | 3733**

आप 'हम' हो करके समस्त विश्व एवं सब आत्मा हो गये एवं सबको भर दिया। तब स्वयं 'हम' होकर आपने अपनी प्रशंसा की। मधु दूध एवं गन्ने के रस की तरह मधुर तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारी आत्मा को खा जाने के बाद आप ये सब हो गये। **3958 | 3734**

हमें खाकर प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में स्थित हैं। आप हमारी विस्मयकारी वाणी में प्रवेश कर गये और तब हमें सब अपना बना लिया। कितनी बड़ी कृपा है। पूजा में करबद्ध हैं हम। ज्यादा हम क्या बतायें ? **3959 | 3735**

समस्त विश्व एवं इसकी सारी आत्मा होकर आप हमारे भीतर पूरी तरह से पृथक नहीं करने लायक मिल गये। आपने धरा का सर्वेक्षण कर तिरूमालिरूञ्जोलै को चुना। आप हमारा त्याग कभी नहीं करेंगे। हमारे शत्रुओं का अंत हो जायेगा। **3960 | 3736**

युद्धरत असुरों का अंत हो गया। स्वर्गिकगन प्रगति पथ पर हैं। अज्ञात का ध्यान करने वाले ऋषिगन भी प्रसन्न हैं। हमारे माध्यम से पान्न आधारित गीत गाने वाले प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में पावन तेनेका गाते हुए खड़े हैं। **3961 | 3737**

तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु समस्त विश्व को खा जाते हैं। हमारे प्रिय प्रभु सबों को युगों तक संरक्षण देते हैं। शिव एवं ब्रह्मा को न दिखने वाले श्रीपति ने हमें अपना गौरवशाली चरण स्नेह से पूजा के लिये दिया। **3962 | 3738**

प्रेम गीत गाने वाले मणि पर्वत समान तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु इन्द्र शिव ब्रह्मा एवं अन्य देवों से पूजित हैं। महान ज्ञान वाले ऋषि गन पर्वत की प्रशस्ति गाते हैं। **3963 | 3739**

तिरूमालिरूञ्जोलै पर्वत! क्षीर सागर! मेरे शिखर! तिरूमल! वैकुंठ! शीतल वेंकटम पवत! मेरे शरीर! महान विस्मय ! मेरे जीवन विचार एवं कृत्य! आदिकारण प्रभु! आप हमें कभी नहीं छोड़ते। **3964 | 3740**

सागर सा सलोने तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारे नाथ हैं। युग युगान्तर से आप सार्वभौम नाथ हैं जो स्वयं सृष्टिकर्ता पालन कर्ता तथा संहारकर्ता हैं। हे हृदय! अच्छे काम के लिये

श्रेय है तुम्हारा। आपके पास ही रहो। इस शरीर एवं जीवन का अंत होने दो। **3965 | 3741**

तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारे संरक्षक़ हमारी आत्मा ! पांच इन्द्रियों के क्षेत्ऱ पांच इन्द्रियों के अवयव़ पांच संचालक अंग़ पांच तत्व़ एवं आत्मा के चार आवरण सब आपकी नैसर्गिक लीला के अंग हैं। विनती है़ इनका अंत होनें दें। **3966 | 3742**

मधु टपकते कुरूगुर के बागों के शडगोपन के हजार पद का यह सुन्दर दसक महत़ अहंकाऱ मनस़ एवं पांच इन्द्रियों के नाश का वर्णन करते हुए तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु की प्रशस्ति गाता है जो हमारे भीतर प्रवेश कर स्वयं हम हो गये। **3967 | 3743**

<u>दसवां शतक का आठवां दशक ः **10 | 08** ः तिरूमालिरूञ्जोलैमलै</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 | 08 | 01 से 10 | 08 | 11 पासुर **3968 से 3978 या 3744 से 3754**

जैसे ही हमने तिरूमालिरूञ्जोलै बोला हमारे हृदय में प्रवेश कर प्रभु ने इसे भर दिया। कावेरी के दक्षिणी तट पर जहां बहुमूल्य रत्न प्रवाह से धुलते हैं श्री के साथ श्रीपति तेन तिरूप्पेर में स्थित हैं। **3968 | 3744**

तेन तिरूप्पेर में स्थित प्रभु हमारे पास आज आये और हमारे हृदय में प्रवेश कर इसे भर दिया़ आप इसे कभी नहीं छोड़ेगे। सातो लोक़ बादल़ पर्वत़ एवं सागर को निगलने वाले प्रभु हमारे भीतर दृढ़ता से स्थिर हैं। **3969 | 3745**

आपको धारण करके हमने पुनर्जन्म का नाश कर दिया़ रोग पर विजयी हो गये़ एवं अपने को सांसारिक जीवन के लोभ से दूर कर लिया। तेन तिरूप्पेर ध्वज वाले ऊंचे महलों से घिरा है। देखो़ आपके चरण की प्राप्ति हमारे लिये एक सरल कार्य है। **3970 | 3746**

आपको देखकर हमारी आंखें कितनी सरलता से प्रसन्न हो जाती है। हृदय को भारविमुक्त होने से हम भी प्रसन्न होते हैं। तेन तिरूप्पेर मृदु भाषी तोता वाले बागों से घिरा है। यहां के प्रभु हमें निश्चित वैकुंठ देंगे। **3971 | 3747**

अमृतमय बागों से घिरा तेन तिरूप्पेर के मुक्ति प्रदान करने वाले प्रभु आज हमारे भीतर प्रवेश कर गये हैं। इस मांस के पिंजड़ा में प्रवेश कर आप सारे व्यवधानों को दूर कर रहे हैं। **3972 | 3748**

तेन तिरूप्पेर एवं तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारे हृदय को भरकर सर्वदा के लिये इसमें स्थित हो गये हैं। मुक्ति के शीतल अमृत का स्वाद चखकर हम परम संतुष्ट हैं। **3973 | 3749**

उमड़ते स्नेह के द्वारा हमारे हृदय ने चरम शब्द को प्राप्त कर लिया है। मधुमक्खी मंड़राते

बाग वाले तेन तिरूप्पेर के प्रभु सदा प्रसन्नता देने के लिये हमारी आंखों में बस गये हैं। इस स्वाद को चखने के बाद हमें किस चीज की कमी है? **3974 । 3750**

बुद्धि से परे प्रभु हमारी आंखों में बसे हैं। आप सातो स्वर के सूक्ष्म सार हैं। तेन तिरूप्पेर के प्रभु रत्न जड़ित महलों से घिरे हैं। आज हमारे हृदय को आपने पूरी तरह से भर दिया है। **3975 । 3751**

पर्वत समान महलों से घिरे तेन तिरूप्पेर के प्रभु ने हमारे हृदय में स्थान लेकर हमे आज एक व्यक्ति बना दिया है। इतने लंबे घूमने के लिये आपने हमें क्यों छोड़ दिया था? विस्मित हूँ । विनती है उतर दीजिये। **3976 । 3752**

हमारे प्रभु ! सुखद सेवा करके हमने आपका चरण पा लिया है। यही मैं चाहता था। अनेको वैदिक ऋषियों वाले तेन तिरूप्पेर के प्रभु के भक्तों को कभी यातना नही सतायेगी। **3977 । 3753**

श्रेयवान लोगों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक बड़े खेतों से घिरे तेन तिरूप्पेर के प्रभु की प्रशस्ति है। यह भक्तों को दिव्य वैकुंठ प्रदान करने वाला है। **3978 । 3754**

<u>दसवां शतक का नौवां दशक ः **10 । 09** ः शुळिवशुम्बु</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10 । 09 । 01 से 10 । 09 । 11 पासुर **3979 से 3989 या 3755 से 3765**

<u>वैकुंठ के मार्ग का विवरण</u>

आकाश मे बादल शुभ संकेत देते कीड़ारत थे। सागर की लहरें ताली बजाकर नाच रही थीं। नारायण के चिरप्रशंसित भक्त को घर आते देख सात महादेश उपहार से प्रसन्न था। **3979 । 3755**

नारायण के भक्त को देखकर मेघ प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ण पात्र भर रहे थे। खड़ा होकर सागर ने प्रसन्नता से स्वागत किया। पर्वत ने ध्वज बनाये एवं सारा विश्व पूजा में झुक गया। **3980 । 3756**

धरा मापने वाले प्रभु के भक्त को देखकर उनलोगों ने पुष्पवर्षा की अगरबत्ती जलायी एवं पूजा अर्पित की। चारण दोनो ओर खड़े होकर जयजयकार करते हुए बोल रहे थे 'वैकुंठ का यह मार्ग है' । **3981 । 3757**

मार्ग पर स्वर्गिकों ने विश्राम स्थल बना रखे थे। चांद एवं सूर्य मार्ग को प्रकाशित कर रहे थे। अमृतमय तुलसी धारण करने वाले माधव के भक्त के सम्मान में बजते नगाड़े सागर की तरह गरज रहे थे। **3982 । 3758**

देवगन देखने के लिये बाहर आकर अपना स्थान प्रभु के भक्त को दे रहे थे। किन्नर एवं गुरूदास गीत गा रहे थे जबकि वैदिक ऋषिगन अग्नि होम कर रहे थे। **3983।3759**

अग्नि होम की सुगंधि व्याप्त हो गयी थी। वाद्य यंत्र की ध्वनि एवं शंख नाद आकाश में गूंज रहे थे। मत्स्य नयना नारियों ने हर्षनाद करते हुए कहा 'हे भक्त ! आकाश पर शासन करो'। **3984।3760**

नारियां प्रभु के बंधुआ सेवक को देखकर हर्षनाद कर रही थीं। सागर में शयन करने वाले दिव्य मुकुट धारी गोपाल तथा कुडन्दै के प्रभु के भक्त की घर वापसी यात्रा पर आगवानी में मरूत एवं वसु पूजा अर्पित कर रहे थे। **3985।3761**

देवगन समूह में पंक्तिबद्ध हो कह रहे थे 'ये गोविन्द के बंधुआ सेवक हैं'। भक्त की झांकी पाने के लिये तब गोपुरम की ऊंची दीवार पर चढ़ गये। माधव के स्वरूप में भक्तने वैकुंठ में प्रेवश किया। **3986।3762**

भक्त के प्रवेश द्वार पर आते ही चारणजन आनंदमग्न हो गये। देवगन झुककर अपना स्थान समर्पित कर रहे थे क्योंकि वैकुंठ में जाना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। **3987।3763**

एकतरफ भक्त के चरण धोने में वैदिक ऋषिगण अपना सौभाग्य मान रहे थे तो दूसरी ओर चंद्रमुखी नारियां पुमा़ कुंभ़ दीपक़ तथा केशर युक्त जल से स्वागत में तल्लीन थीं। **3988।3764**

रत्न जड़ित मंडप में भक्त प्रभु के समक्ष खड़ा होकर चिरआनन्द में मग्न था। कुरूगुर शडगोपन के हजार पद से लिया गया यह दसक जो याद कर लेंगे वे चारण बन जायेंगे। **3989।3765**

<u>दसवां शतक का दसवां दशक ः 10।10 ः मुनिये</u>

इसमें **11** पासुर हैं। दोनों रीति की गिनती दी जा रही है।

10।10।01 से 10।10।11 पासुर 3990 से 4000 या 3766 से 3776

चारण़ ब्रह्मा़ शिव़ राजीवनयन प्रवाल होंठ के धूर्त प्रभु श्याम प्राकृतिक मणि़ इस तिरस्कृत जीव की आत्मा ! अंत में आप हमारे पास आये। अब हम आपको नहीं जाने देंगे। कृपा करके पुनः अपनी युक्ति मत खेलिये। **3990।3766**

कृपा करके पुनः अपनी युक्ति मत खेलिये।आपके वक्षस्थल पर विराजने वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी की शपथ लेकर कहता हूँ।ध्यान से सुनें। खुलेयाम हमसे प्रेम करके आप हमारी आत्मा में मिश्रित हो गये। हाय ! अब आप अवश्य हमें अपने पास बुलायें।**3991।3767**

आदि कारण प्रभु ! नाभि कमल से उत्पन्न ब्रह्मा शिव इन्द्र एवं अन्य देव जो आपकी पूजा करते हैं आपके सबके भंडारगृह हैं। आपको छोड़कर हमारे पास सहारा के लिये कोई डंडा भी नहीं है। हमारे श्याम प्राकृतिक मणि! आप अवश्य आकर हमें बुलाइये। **3992 । 3768**

व्योम के अंधकार एवं सभी जो इसमें है। आप गगन प्रकाश देवगन एवं अन्य सब कुछ हैं। आप देवों एवं मनुष्यों के आदि कारण हैं। हाय ! आपने हमें अकेले बोझ ढ़ोने के लिये छोड़ दिया है। **3993 । 3769**

अगर आप हमें त्याग कर भ्रमने के लिये छोड़ देंगे तो हम किसके साथ क्या करेंगे ? हाय ! क्या बचा है हमारे पास ? हम हैं कौन? मेरे प्रभु ! जैसे तप्त लोहा जल में डालने पर जल सोखता है उसी तरह आपने हमारी आत्मा को पिया है। फिर भी आप हमारे अमृत हैं। **3994 । 3770**

मेरे प्रिय प्रभु मेरे जीवन मेरी आत्मा ! आपने हमें अतृप्त की तरह पिया है। अब हमें आप पीते रहें। कया के रंग वाले पवाल होंठ वाले राजीव नयन प्रभु ! कमलनिवासिनी लक्ष्मी की उपयुक्त जोड़ी हमारे स्नेह ! **3995 । 3771**

हमारे स्नेह ! आप कमलनिवासिनी लक्ष्मी के स्नेह बन गये। काले पहाड़ पर अर्द्धचंद्र की तरह वराह स्वरूप में आपने धरा को अपने दाढ़ों पर रखा। सागर मंथन करने वाले प्रभु ! हम आपको जाने कैसे देंगे ? **3996 । 3772**

हमारी अपनी प्रिय आत्मा ! हम आपको जाने कैसे देंगे ? आप चिरंतन कर्म उसके फल तथा उसके आनंद भोगने वाले हैं। एक विशाल काली छिद्र की तरह तीनों लोक में प्रवेश कर आप अपने को पूर्णतया छिपा लिये हैं। मेरे आदि बीज ! **3997 । 3773**

तीनो लोक के आदि बीज ! आदि कारण आप। कब हम आकर आपमें मिल जायें ! आदि व्योम यहां वहां एवं सर्वत्र हमारे चारो तरफ चौड़ा लंबा एवं अनंत। **3998 । 3774**

महत व्योम चौड़ा लंबा एवं अनंत ! उससे भी बड़ा विस्तार। तेजोमय पुष्प ! उससे भी बड़ा विस्तार । तेजोमय ज्ञानानंद ! उससे भी बड़ा विस्तार ।आप हममें मिश्रित हो गये। **3999 । 3775**

अपनी मुक्ति प्राप्त करलेने वाले कुरुगुर शडगोपन के पूज्यनीय हजार पद का यह पूर्णाहुति दसक प्रभु की प्रशस्ति है जो हरि ब्रह्मा एवं शिव के रूप में प्रकट हुए। जो इसे याद करलेंगे वे ऊंचे कुल में जन्म लेंगे। **4000 । 3776**

नालायिरा **4000** पासुर वाले दिव्यप्रबंधम का चौथा एवं अंतिम हजार पूरा हुआ।

अरैयर सेवई परिशिष्ट

प्रकीर्ण विशिष्टियाँ

1। 'अरैयर सेवई ' पेरूमाल के विशेष उत्सव का एक अंग है। जैसे ः मार्गळि मास यानी **15** दिसंबर से **15** जनवरी का धनुर्मास तिरूप्पावै मास का अध्ययन उत्सव।

2। अरैयर सेवई को प्रस्तुत करने वाले एक ही कुल के लोग हैं जो अपने को नाथमुनि के वंशज बताते हैं। अरैयर सेवई में ह्रास को देखते हुए कुछ श्रीवैष्णवों (जैसे ः श्रीराम भारती) ने अलग से प्रशिक्षण पाठशालायें चला रखी हैं जो वंशानुगत न होकर सार्वजनिक रूप से अन्य लोगों के लिये भी उपलब्ध है।

3। जो प्रस्तुति करते हैं वे अरैयर कहे जाते हैं।

4। अरैयर विशेष प्रकार के वेशभूषा से विभूषित रहते हैं। ये वेष्टी धारण करते हैं तथा शिर पर वर्तुलाकार मुकुट के समान ऊंची टोपी धारण करते हैं जिससे झूलता हुआ कानों का ढक्कन लटकता रहता है। इस मुकुटाकार टोपी को 'अरैयर कुल्लै' कहते हैं और इसपर आकर्षक चक, शंख, एवं तिरूनामम यानी तिलक बने रहते हैं।



5। तमिलनाडु में धोती को वेष्टी कहते हैं जो केरल में मुन्डा तथा आंध्रप्रदेश में पंच कहा जाता है।

6। तिलक को उर्ध्वपुण्ड्र तिलक कहते हैं जो तमिल में तिरूमन तथा तेलगु में तिरूनामम कहा जाता है।

7। सेवई प्रारंभ होने के समय पेरूमाल के अर्चक अरैयर कुल्लै से पेरूमाल का वस्त्र बांधकर लटकाते हैं तथा पेरूमाल की माला भी अरैयर के गलों में धारण कराते हैं।

8। अरैयर अपने हाथ में झाल रखते हैं जिसे 'कुल्लीतालम' कहते हैं और समयानुसार प्रस्तुति में झाल बजाकर दिव्यप्रबन्धम के पद गाये जाते हैं।

9। भगवान के अर्चक आवाज देकर अरैयर के प्रमुख को उत्सव विग्रह के समक्ष पास में पहुंचकर अरैयर सेवई प्रस्तुत करने की अनुमति लेने का आमंत्रण देते हैं। इसे 'अरूल पत्तु' कहते हैं। इसमें अर्चक जोर से बोलते हैं 'तिरूवरंगा पेरूमाल अरैयर'। प्रमुख अरैयर कुल्लीतालम को अपने कुल्लै पर रखते हुए मृदु आवाज में बोलते हैं 'आयैन्दन आयैन्दन' तथा भगवान के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। अर्चक अरैयर के कुल्लै से बांधते हुए भगवान का माला अरैयर के गले में भगवान के परिपट्टम को पहना कर अरैयार का सम्मान करते हैं तथा

सेवई करने की अनुमति देते हैं। तत्पश्चात्अरैयर भगवान से कुछ कदम पीछे हटकर कुल्लीतालम से मृदु आवाज देते हुए भगवान से सीधा संपर्क साधते हैं। तत्पश्चात् अपने साथियों के पास वापस आजाते हैं तथा सेवई का प्रारंभ करते हैं।

10। प्रस्तुति तीन मुख्य भागों में बॅटा होता है। पहला, तालम बजाते हुए पद का गाना। दूसरा, नृत्य करते हुए कुछ कदम भ्रमण करना। तीसरा, 'तामपिरान पदी' से पद का व्याख्यान करना। तामपिरान पदी पूर्वाचार्यो द्वारा किये गये दिव्यप्रबंधम व्याख्यान का संग्रह है।

11। किसी विशेष दिनों में भगवान के चरित्र से सम्बन्धित कथाओं की पस्तुति व्याख्यान वाले भाग में संपन्न किये जाते हैं जिसमें आंडाल का अवतार, भगवान का मक्खन चुराना, कालिय नाग के शिर पर नृत्य करना, अमृत मंथन, वामनावतार, कंस वध, रावणनाश आदि सम्मिलित हैं।

12। अंतिम प्रस्तुति को 'मुतुक्कुरी वैभवम' कहते हैं। प्रियतम के रूप में भगवान के साथ प्रेमिका के रूप में अपनी बेटी की मनोस्थिति से चिंतित होकर माँ भविष्य बताने वाली 'कट्टुवीच्चि' से संपर्क करती है। इसी प्रस्तुति को मुतुक्कुरी वैभवम कहते हैं तथा इसमें मोती के दाने फेंककर शकुन निकाला जाता है। तत्पश्चात्कट्टुवीच्चि बताती है कि हजारनाम वाले पेरूमाल ने कन्या के ऊपर जादू डाल रखा है और भगवान की तुलसी माला उपलब्ध कराना ही एक मात्र उपचार है।

13। मुतुक्कुरी वैभवम श्रीरंगम में पगल पत्तु के नौवें दिन संपन्न होता है। आळवार तिरूनगरी में यह दसवें दिन सम्पन्न होता है। श्रीविल्लीपुत्तुर में यह तीन अवसरों पर होता है ः मार्गळि माह में, ताई मास में, तथा आदि पूरम में।

दिव्यप्रबंधम के चार प्रमुख प्रबंधों को हिन्दी पद के रूप में रूपान्तरित कर हृदयग्राही बनाने का प्रयास किया गया है।

ये चार प्रबंध हैंः

1। तिरूपल्लांडु

2। तिरूप्पळिळयळुच्चि

3। अमलनादिपिरान

4। कण्णिनुण्शिरूत्ताम्बु

1। तिरूपल्लांडु **(**श्रीविष्णुचित्त स्वामी या पेरिया आळवार 'पेरियाआळवार तिरूमोड़ी' के प्रारंभ में तमिलनाडु स्थित मदुरै शहर के 'कूडल आळगर' भगवान की छवि से मोहित होकर उनको कुदृष्टि से बचे रहने के लिये मंगल कामना प्रकट करते हैं। दिव्यप्रबंधम का प्रारंभ ही पल्लांडु से होता है तथा श्रीवैष्णवों के सभी उत्सवों में भगवान की सवारी निकलने पर इसका पाठ उत्सव का आवश्यक अंग माना जाता है। मूल रचना तमिल में है परंतु हिन्दी भक्तों के लिये इसे पद में रूपांतरित कर हृदयग्राही बनाने का प्रयास किया गया है। दिव्यप्रबंधम के समेकित पासुर संख्या के कमांक प्रत्येक पद के साथ दे दिये गये हैं।**)**

1। वर्षों अनेकों**,** सहस्रों वर्षों मिले आश्रय हमें
रणजीत कंधों व प्रभु श्याममणि के अरूणाभ चरणों का। **1**।

2। बनें रहें वर्षों अनेकों सहस्रों हमारे बीच के नाते
बनीं रहें वर्षों अनेकों सहस्रों वक्षवल्लभा वरदा माता सुलक्ष्मी
गाजते रहें वर्षों अनेकों सहस्रों दक्षिण कंध पर ज्योतिर्मय सुदर्शन
बने रहें वर्षों अनेकों सहस्रों बाम भाग पाञ्चजन्य शत्रुदमन ।**2**।

3।झेलते आप कठिन अवतार कष्ट**,** चंदन सुगंधि हमारा स्वीकार करें
न हो हमें उनका संग कभी जो जीभ स्वाद के बस में रहें
कोदंडराम का सात जन्म हम सभी भक्त यशगान करें
सेना ले चढ़गये दुर्ग पर लंका के असुरगण नष्ट हुए ।**3**।

4।अगर विश्वास करें इस धरती का संग हमारे आप आयें
जो छोड़ चलें भौतिक सुख को शीघ्र हमारे संग आयें
नगर देश सब गूंज उठें 'नमो नारायणाय' उद्घोष करें
गान करें सब भक्तप्रवर मधुर पल्लांडु का गान करें ।**4**।

5।सृष्टिनियामक हृषिकेश ने असुरों का कुल नष्ट किया
श्रीचरणों को भक्तन पूजें सहस्र नाम यशगान करें

तोड़ चले सब नातों को वर्षो वर्षो पल्लांडु गान करें।**5**।

6।सात जन्मों से पितु समेत श्रीचरणों में रमें रहें
श्रवण संध्या में नरसिंह प्रभु शत्रु असुर को विदीर्ण करें
संग चलें वासना विहाय वर्षो अनेकों सहस्रों पल्लांडु गान करें।**6**।

7। ज्योतिचक्र से अंकित होकर मेरे बंशज सेवक बने रहें
मायावी बाणा की कटी भुजायें आओ पल्लांडु गान करें।**7**।

8।घी मिश्रित भोजन पान सुपारी मिले हार और कनबाली
निर्मल हुए हम प्रभु सेवा करके चंदन प्रसाद सब सुलभ हुए
नागारि गरूड़ से ध्वज अंकित प्रभु का पल्लांडु गान करें ।**8**।

9।पीतांबर अन्न प्रसाद व तुलसी माल से प्रभु सबों को तृप्त किये
हैं शेषशायी प्रभु श्रवण नक्षत्री जगवत्सल का पल्लांडु गान करें।**9**।

10।बंधुआ दास हम हुए आपके पीढ़ी दर पीढ़ी मुक्त हुए
शुभदिन को मथुरा में प्रकटे शस्त्रागार सब नष्ट किये
फनिआरे के नर्तक प्रभु का आओ पल्लांडु गान करें।**10**।

11।कोट्टियूर के शेल्बानांबी का निर्मल गिरि सम मान करें
प्रभु के सेवक हम पुराकाल से 'नमो नारायण' गान करें
उद्घोष करत सहस्र नाम से प्रभु का पल्लांडु गान करें।**11**।

12।श्रीविल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त ने पल्लांडु का गान किया
उदार हृदय के सत्व प्रभु ने सारंगधनु संधान किया
हम सभी प्रभु को घेर आज 'नमो नारायणाय' उद्घोष करें
मंगलमय हो वर्ष सबोंका आओ पल्लांडु गान करें।**12**।

2।तिरूप्पळिळयळुच्चि **(**तोंडरादिप्पोडियाळवार या भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी द्वारा रचित यह प्रबंध श्ररंगनाथ भगवान के प्रातःकाल जगाने के लिये स्तुति है जिसे रंगनाथ सुप्रभातम कहा जाता है तथा श्रीरंगम में प्रत्येक दिन इसके पाठ से ही प्रातःकाल के कार्यक्रम का प्रारंभ होता है। धनुर्मास में श्रीविल्लीपुत्तुर**,** श्रीरंगम**,** तथा तिरूमला तिरूपति एवं अन्य श्रीवैष्णव मंदिरों में तिरूप्पावै के पूर्व इसी का पाठ करके भगवान को जगाया जाता है। तिरूमला में अन्यदिनों वाला सुप्रभातम का कार्यक्रम धर्नुमास में बन्द रहता है तथा धनु से मकर संक्रान्ति तक रंगनाथ सुप्रभातम से ही भगवान को जगाया जाता है।मूल रचना तमिल में है परंतु हिन्दी भक्तों के लिये इसे पद में रूपांतरित कर हृदयग्राही बनाने का प्रयास किया गया है।

दिव्यप्रबंधम के समेकित पासुर संख्या के कमांक प्रत्येक पद के साथ दे दिये गये हैं।)

1।उदित हुआ सूरज पूरब में अंधकार सब दूर भगे
खिलउठे फूल सर्वत्र महीपर सुर महीसुर तेरे द्वार खड़े
हाथी करे मेघ गर्जन सागर सुर में ढ़ोल बजे
विनती है प्रभु रंगनाथ से शुभ वेला है आप जगें । **917**।

2। पुरवैया की मन्दगति से मूलै महके सर्वत्र यहां
कमलफूल पर हंसन जागे झाड़ पंख से ओस जहां
मृत्युजाल जब ग्राह ने डाला गजेन्द्र उबारा आप वहां
विनती है प्रभु रंगनाथ से शुभ वेला है जागें यहां । **918**।

3।चारो ओर ऊषा बिखरी तारे गन अब लुप्त हुए
नभ में चॉद हुआ ओझल आभा में सब तिमिर घुले
सुवर्ण मौर गाजे खजूर पर चारो ओर फल फूल खिले
विनती है प्रभु रंगनाथ से शुभ वेला है आप जगें । **919**।

4।गोप जनों के बंशी धुन पशुओं के रून झुन से मिले
देखों खेतों में पौधों पर गान करत भौंरे झूले
मुनिमख रक्षक साकेतनाथ ने असुर लंका के नष्ट किये
बंधुआ दास की विनती है रंगनाथ प्रभु अब आप जगें। **920**।

5।रात्रिमान का अंत हुआ बागों में पक्षी चहक उठे
जाग उठी सागर की लहरें गुंज उठे काले भौंरे
कदंब माल से सेवा करने सुरगन तेरे द्वार पड़े
लंकेश विभीषण से पूजित विनती प्रभु रंगनाथ जगें। **921**।

6।अधिपति ग्यारह आदित्यों के रत्नजटित रथ पर आये
षड़मुख भूषित कन्दकुमार मोर सबारी चढ़ धाये
बसुओं के संग जगमोहन में सभी मरूतगन भीड़ किये
विनती है प्रभु रंगनाथ से शुभ वेला है आप जगें । **922**।

7।भीड़ लगी है देवों की मुनिगन मरूत चहुँ ओर पड़े
ऐरावत पर हो सवार इन्द्र आपके द्वार खड़े
विद्याधर की रेल पेल है श्रीचरणों में यक्ष रमें
ठौर कहॉ अब ठहरन को विनती प्रभु रंगनाथ जगें ।**923**।

8।मधुरगान है देवगनों की खड़ी कपिला निहार रही

सुन्दर स्वरूप देखन मन मुनिगन दर्पण लिये खड़े
तुम्बुरू व नारद प्रविशे सूर्य रश्मि से तिमिर भगे
विनती है प्रभु रंगनाथ से शुभ वेला है आप जगें । **924**।
9।झाल ढ़ोल बंशी एकतारा चहुँ ओर संगीत करे
किन्नर गरूड़ गंधर्व संग सारी रात यश गान करें
मुनिवर सिद्ध यक्ष चारण संग देव चरणों का ध्यान करें
स्तुति सबकी स्वीकार करें विनती प्रभु रंगनाथ जगें।**925**।
10।खिल उठे कमल अनगिनत सभी दिनकर सागर से निकल चले
नहा चलीं नदी से कृशकटि नारियां खुली लटें व वस्त्र परे
तोंडरादिप्पोडि है प्रसून पात्र संग कावेरी के प्रभु दया करें
भक्तों की सेवा हेतु प्रभु विनती है सबकी अब आप जगें ।**926**।

3।अमलनादिपिरान **(**मुनिवाहन स्वामी या तिरूपण आळवार द्वारा श्ररंगनाथ भगवान के चरणारविंद से केश पर्यन्त शोभा का वर्णन। इस कम में आळवार संत ने दो बार वेंकट प्रभु का भी स्मरण कर यह स्पष्ट कर दिया है कि दोनों भगवान एक ही नारायण प्रभु के विभिन्न स्वरूप हैं। मूल रचना तमिल में है परंतु हिन्दी भक्तों के लिये इसे पद में रूपांतरित कर हृदयग्राही बनाने का प्रयास किया गया है। दिव्यप्रबंधम के समेकित पासुर संख्या के कमांक प्रत्येक पद के साथ दे दिये गये हैं।**)**
1।देवाधिदेव हैं वेंकट प्रभु स्थित मध्य बगानों में
आदि जगत के कारक प्रभु ने हमें लगाया भक्तन चरणों में
निर्मल सत्व हैं प्रभु श्रीरंगम बसते बीच ऊंची दीवारों में
नयनन में अब ठौर नहीं मन मधुप लगा श्रीचरणों में । **927**।
2।युक्त मुकुट से काकुत्स्थ हैं स्वयं प्रभु श्रीरंगम के
बाणों की बौछार लगी दिन बीत गये सब असुरों के
ब्रह्मांड छत को मुकुट छुआ मापा हर्षित जब धरती को
अम्बर लाल गात अति साजे बहुत लुभाया दासन मन को। **928**।
3।कपिमय उत्तर वेंकट गिरि पर आप खड़े देवन पूजें
श्रीरंगम में शेषशायी हैं सांझ गगन रंग परिधान गजे
नाभि क्षेत्र से उदित कमल है सुन्दर ठौर ब्रह्मा बैठे
इस सुन्दर स्वरूप में अब हृदय हमारा जा अंटके। **929**।

4।संरक्षित लंका रावण की बाण चले औ दसमाथ गिरे
नीला है जस रंग उदधि का वदन प्रभु का तस शोभे
श्रीरंगम में नाचत मयूर ताल पकड़ धुन भौंरों के
प्रभु का कमरबन्द अतिसुन्दर हिय मम वहां पै जा अंटके। **930**।
5।दास बनाकर प्रभु रंगनाथ ने दुष्कर्मों को काट दिया
अपने स्वरूप से आप ही ने मेरे हिय को भरपूर किया
कितना महान है तप मेरा समझ नहीं आता मुझको
छोड़ता नहीं मन मधुप उसे सुन्दर मंगल वनमाला को । **931**।
6।बरसी जब प्रभु कृपा आपकी शशिभूषण के पाप कटे
गगन मही संग प्राणी जगत के सातों गिरी उदरस्थ हुए
मधुमक्खी जहं गूंजे बागों में आप बसे श्रीरंगम में
सुन्दर ग्रीवा देख आपकी आह्लाद भरे मेरे मन में। **932**।
7।हाथों में है शंख चक्र काजल गिरी सम वदन निखरे
हैं आपही नाथ हमारे माले मुकुट तुलसी मंहके
शेषशायी हो आप प्रभु नाथ बने श्रीरंगम के
अतिसुन्दर है लाल होंठ तहं मेरा मन जा ठहरे। **933**।
8।आप कारण हैं आदि सृष्टि के अगम बने सब देवन से
उदर विदारक हिरण्यकशिपु के श्रीरंगम में आप बसे
मुखमंडल की शोभा निखरी सुन्दर लाल बड़ आंखों से
हुआ बाबरा मन मेरा देख देख इन नयनन से । **934**।
9।निगल गये प्रभु सात लोक को सुख सोये बट पत्ते में
नाग समान प्रभु शयन करत हैं आज यहां श्रीरंगम में
है अनन्त आभा प्रभु की सुन्दर निखार नीले रंग में
मोतीन माल व रतन आभूषण छा बैठे मेरे हिय में । **935**।
10।हर्षित देखा श्रीरंग प्रभु को एक ही नाथ हैं जगतन के
हृदय चुराया आज प्रभु ने सुन्दर शरीर नीले गिरी के
बालक बन प्रभु गोप बंश में चोर बने मृदु माखन के
मूंद रखब इन नयनन को अब नहीं देखब कुछ जगतन के । **936**।

4। कण्णिनुण्शिरूत्ताम्बु **(**मधुरकवि आळवार द्वारा रचित यह प्रबंध नम्माळवार की स्तुति है। मधुरकवि के लिये नम्माळवार ही सर्वेसर्वा थे। अतः आपने अन्य किसी की स्तुति न करके मात्र अपने गुरू शठकोप स्वामी या नम्माळवार की ही स्तुति की है जो दिव्यप्रबंधम का बहुत महत्वपूर्ण अंश है। नाथमुनि स्वामी ने आळवार तिरूनगरी में नम्माळवार के समक्ष इसी प्रबंध का **12000** बार पाठ किया और नम्माळवार को प्रसन्न कर लिया। फलस्वरूप दिव्यप्रबंधम के लुप्त सभी अंश को आपने नम्माळवार की कृपा से प्राप्त किया। मूल रचना तमिल में है परंतु हिन्दी भक्तों के लिये इसे पद में रूपांतरित कर हृदयग्राही बनाने का प्रयास किया गया है। दिव्यप्रबंधम के समेकित पासुर संख्या के कमांक प्रत्येक पद के साथ दे दिये गये हैं।**)**

1।मुनि कुरूगुर के अधिक मधुर हैं उखलबंध नटवर प्रभु से
नाम लेन जब सोचत हैं लार चले अविरल मुंह से । **937**।

2। पावन नाम आनंद देत है चरण ध्यान से सत्य प्रकटे
पद गावत विचरत वीथि नहीं जानत किसी औरों के। **938**।

3। झांकी मिलत मुनि कार वदन की भ्रमण करत सर्वत्र मही
कृपा पात्र हम कुरूगुर मुनि के है मेरा सौभाग्य यही। **939**।

4।योग्य नहीं हम किसी काम के पंडित प्रवरों ने बयान किया
शठकोपन प्रभु हमें अपनाये जिमि बालक को मातु पिता । **940**।

5।परधन ने मुझे बहुत लुभाया और लुभाया नारी वदन
क्या चाहिये अब और मुझे जब मिला कुरूगुर संत चरण । **941**।

6।हमें मिली है कृपा आपकी सात जनम यश गान करें
कुरूगुर की ऊंची दीवार है आप ही अब उद्धार करें । **942**।

7।मुनि करिमारन ने हमें चुना पाप पूर्व के नष्ट हुए
वाणी निर्मल है शठकोपन की आठों दिक्आश्वस्त हुए। **943**।

8। दिया आपने तमिल वेद जो ढूंढ़े आपसे भक्ति सीख
जग हुआ आपका कृपा पात्र पाकर सहस्र मधुर तमिल गीत। **944**।

9।वेद वाक्य को सरल गीत में गाकर मेरा हृदय भरा
प्रवर संत शठकोपन ने मुझे प्रपन्न स्वीकार किया। **945**।

10।सभी प्रमादी व नाकाम जीव संग आपके सफल हुए
कोयल कूक भरे कुरूगुर में हमें आपके चरण मिले। **946**।

11।आश्रय ढूंढ़ते मित्रगणों को मधुरकवि पुकार कहे

कुरूगुर नाथ ही आश्रय हैं सबको यहां वैकुण्ठ मिले । **947**।

तिरूप्पावै तमिल मूल एवं तनियन

तिरूप्पावै के पाठ का विशेष महत्व है जो किसी भी समय किसी स्थान पर किया जा सकता है। इस उद्देश्य से प्रारंभ के तनियन एवं मूल पाठ के साथ अंत का मंगलानुशन दिया जा रहा है।

1। तनियन ः

नीळातुङ्ग स्तनगिरि तटी सुप्तमुद्बोध्य कृष्णं। पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिर सिसद्धमध्यापयन्ती। स्वोच्छिष्टायां स्त्रिजनिगलितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते। गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः।

अन्नवयल पुदुवै आण्डाल। अरङ्र्कु ःः प्पन्नु तिरूप्पावै प्पल्पदियम । इन्निशैयाल ःः पाडि क्कोडुत्ताळ नर्पामालै। पूमालै ःः शूडि क्कोडुत्ताळै च्चोल्लु ःः शूडि क्कोडुत्त शुडरक्कोडिये । तोल्पावै ःः पाडि अरूळवल्ल पल्वळैयाय। नाडिनी ःः वेङगडवरकेन्नै विदि एन्र इम्माट्रम। नाङगडवा वण्णमे नल्गु।

2। मूल पाठ के 30 पासुर

।**1**। मार्गळि तिंगळ मदि निरैन्द नन्नाळाल। नीराड प्पोदुवीर पोदुमिने नेरीलैयीर। शीर मल्गुम आयप्पाडि च्चैल्व च्चिरूमीर्गाळ्। कूरवेल् कोडुन्दोळिलन नन्दगोपन कुमरन्। एरारन्द कण्णि यशोदै इळञ्शिङ्गम्। कारमेनि च्चेङ्गण कदिर्मदियम पोल मुगत्तान। नारायणने नमक्के परै तरूवान्। पारोर पुगळ प्पडिन्देलोर एम्बावाय।**1**।

2। वैयत्तु वाळवीर्गाळ नामुम नम पावैक्कु। शेय्युम किरिशैगळ केळीरो। पर्कडलुळ ःः पैयत्तुयिन्र परमनडि पाडि। नेय्युणोम पालुण्णेम नाटकाले नीराडि। मैयिट्टेळुदोम मलरिटटु नाम मुडियोम। शेय्यादन शेय्योम तीक्कुरळै च्चेन्रोदोम। ऐयमुम पिच्चैयुम आन्दनैयुम कैकाट्टि। उय्युमारेण्णि उगन्देलोर एम्बावाय।

3। ओङ्गि उलगलन्द उत्तमन पेर पाडि। नाङ्ळ नम पावैक्कु च्चाट्रि नीर आडिनाल। तीङ्गिन्रि नाडेल्लास तिङ्ल मुम्मारि पेय्दु। ओडगु पेरूञ्जेन्नेलूडु कयल उगल। पङ्गुवळै प्पोदिल पोरिवण्डु कण्णपडुप्प। तेङ्गादे पुक्किरून्दु शीरत्त मुलै पट्रि ःः वाङ्ग। क्कुडम निरैक्कुम वळळल पेरूम पशुक्कल। नीङ्गाद शेल्वम निरेन्देलोर एम्बावाय।**3**।

4। आळि मळैक्कण्णा ओन्रू नी के करवेल। आळिउळ पुक्कु मगन्दु कोडारत्तेरि ।उळि मुदल्वन उरूवमपोल मेय करूत्तु। पाळियन तोळुडै प्पर्पानाबन कैयिल। आळिपोल मिन्नि

वलम्बुरिपोल निन्रदिरन्दु।ताळाद शरङ्गम उदैत्त शरमळै पोल्। द्याळ उलगिनिल पेय्दिडाय।नाङ्गळुम ꣵ मार्गळि नीराड मगिळन्देलोर एम्बावाय।

5।मायनै मन्नु वडमदुरै मेन्दनै। तय पेरूनीर यमुनै त्तुरैवनै।आयर कुलत्तिनिल तोन्रूम अणि विळक्कै। तायै क्कुडल विळक्कम शैय्द दामोदरनै।तयोमाय वन्दु नाम तुमलर तवि तोळुदु। वायिनाल पाडि मनत्तिनाल शिन्दिक्क। पोय पिळैयुम पुगुदरूवान निन्रनवुम।तीयिनिल तूशागुम शेप्पेलोर एम्बावाय।

6।पुळलुम शिलम्बिन काण पुळळैयन कोयिल। वेळळै विळि शङ्गिन पेररवम केट्टिलैयो । पिळळाय एळुन्दिराय पेय्मुलै नेञ्जुण्डु।कळळ च्चगडम कलक्कळिय क्कालोच्चि। वेळळत्तरविल तुयिल अमरन्द वित्तिनै। उळळत्तु क्कोण्डु मुनिवर्गळुम योगिगळुम। मेळळ एळुन्दरि एन्र पेररवम।उळळुम पुगुन्दु कुळिरन्देलोर एम्बावाय।

7।कीशु कीशेन्रेङ्गुम आनैच्चात्तन ।कलन्दु ꣵ पेशिन पेच्चरवम केट्टिलैयो पेय प्पेण्णे।काशुम पिरप्पुम कलकलप्प क्कै पेरत्तु।वाश नरूम कुळल आयच्चियर।मत्तिनाल ꣵ ओशै पडुत्त तयिर अरवम केट्टिलैयो।नायग प्पेण्पिळळाय नारायणन मूरत्ति। केशवनै प्पाडवुम नी केट्टे किडत्तियो।तेशम उडैयाय तिरवेलोर एम्बावाय।

8। कीळवानम वेळळेन्रेरूमै शिरू वीडु। मेय्वान परन्दन काण मिक्कुळळ पिळळैगळुम।पोवान पोगिन्रारै प्पोगामल कात्तु।उन्नै ꣳ क्कूवुवान वन्दु निन्रोम ꣳ कोदुगलम उडैय।पावाय एलुन्दिराय पाडि प्परै कोण्डु।मावाय पिळन्दानै मल्लरै माट्टिय। देवादि देवनै च्चेन्रू नाम शेवित्ताल।आवा एन्रारायन्दरूळेलोर एम्बावाय।

9।तूमणि माडत्तु च्चुट्रुम विळक्केरियत। दूपम कमळ त्तुयिल अणैमेल कण्वळरूम।मामान मगळे मणि क्कदवम ताळ तिरवाय। मामीर अवळै एळुप्पीरो।उन मगळ तान ꣳ ऊमैयो अन्रि च्चेविडो अनन्दलो ।एम प्पेरून्दुयिल मन्दिर प्पट्टाळो। मामायन मादवन वैकुन्दन एन्रेन्रू। नामम पलवुम नविन्रेलोर एम्बावाय।

10।नोट्रु च्चुवरक्कम पुगुगिन्र अम्मनाय। माट्रमुम् तारारो वाशल तिरवादार। नाट्र त्तुळाय मुडि नारायणन। नम्माल ꣵ पोट्र प्परै तरूम पुण्णियनाल । पण्डोरूनाळ ꣵ कुट्रत्तिन वाय्वीळन्द कुम्बकरणनुम।तोट्रुम उनक्के पेरून्दुयिल तान तन्दानो। आट्र अनन्दल उडैयाय अरूङ्गलमे।तेट्रमाय वन्दु तिरवेलोर एम्बावाय।

11। कट्रु क्करवै क्कणङ्गळ पल करन्दु।शेट्रार तिरल अळिय च्चेन्रू शेरू च्चेय्युम । कुट्रम ओन्रिल्लाद कोवलर तम पोरकोडिये। पुट्ररवल्गुल पुनमयिले पोदराय।शुट्रत्तु त्तोळिमार एल्लारूम वन्दु।निन ꣵ मुट्रम पुगन्दु मुगिल्वण्णन पेर पाड। शिट्रादे पेशादे शेल्व प्पेण्डाट्टि। नी ꣵ एट्रुक्कुरङ्गुम पोरूळेलोर एम्बावाय।

12 । कनैत्तिळङ्गट्रेरूमै कन्रूक्किरङिग । निनैत्तु मुलै वळिये निन्रू पाल शोर । ननैत्तिल्लम शेराक्कुम नरचेल्वन तङ्गाय । पनि त्तलै वीळ निन वाशर कडै पट्रि । शिनत्तिनाल त्तेन इलङ्गै क्कोमानै च्चेट्र । मनत्तुक्किनियानै प्पाडवुम नी वाय तिरवाय । इनि त्तान एळुन्दिराय ईदेन्न पेर उरक्कम । अनैत्तिल्लत्तारूम अरिन्देलोर एम्बावाय ।

13 । पुळिळन वाय कीण्डानै प्पोल्ला अरक्कनै । किळिळ क्कळैन्दानै क्कीरत्तिमै पाडि प्पोय । पिळळैगळ एल्लारूम पावै क्कळम पुक्कार । वेळिळयेळुन्दु वियाळम उरङिग्ट्रु । पुळळुम शिलम्बिन काण पोदरि क्कण्णिनाय । कुळळ क्कुळिर क्कुडैन्दु नीराडादे । पळिळ क्किडत्तियो पावाय नी नन्नाळाल । कळळम तविरन्दु कलन्देलोर एम्बावाय ।

14 । उङ्गळ पुळैक्कडै त्तोट्टत्तु वावियुळ । शेङ्गळुनीर वाय नेगिळन्दाम्बल वाय कूम्बिन काण । शेङ्गरपोडि क्कूरै वेण्बर तवत्तवर । तङ्गल तिरूक्कोयिर च्चङिग्डुवान पोदन्दार । एङ्गळै मुन्नम एळुप्पुवान वाय पेशुम । नङ्गाय एळुन्दिराय नाणादाय नावुडैयाय । शङ्गोडु चक्करम एन्दुम तडक्कैयन । पङ्गय क्कण्णानै प्पाडेलोर एम्बावाय ।

15 । एल्ले इळङिकिळिये इन्नम उरङ्गुदियो । शिळ एन्रळैयेन्मिन नङ्गैमीर पोदरूगिन्रेन । वल्लै उन कट्टुरैगळ पण्डेयुन वायरिदुम । वल्लीर्गळ नीङ्गळे नाने तान आयिडुग । ओल्लै नी पोदाय उनक्केन्न वेरूडैयै । एल्लारूम पोन्दारो पोन्दार पोन्देण्णिक्कोळ । वल्लानै कोन्रानै माट्रारै माट्रळिक्क ꣸ वल्लानै । मायनै प्पाडेलोर एम्बावाय ।

16 । नायगनाय निन्र नन्दगोपनुडैय ꣸ कोयिल काप्पाने । कोडित्तोन्रूम तोरण ꣸ वायिल काप्पाने ।. मणिक्कदवम ताळ तिरवाय । आयर शिरूमियरोमुक्कु । अरै परै ꣸ मायन मणिवण्णन नेन्नले वाय्नेरन्दान । तूयोमाय वन्दोम माट्रादे अम्मा । नी ꣸ नेय निलै क्कदवम नीक्केलोर एम्बावाय । **16**

17 । अम्बरमे तण्णीरे शोरे अरम शेय्युम । एम्बेरूमान नन्दगोपाला एळुन्दिराय । कोम्बनारक्केल्लाम कोळुन्दे कुल विळक्के । एम्बेरूमाट्टि यशोदाय अरिबुराय । अम्बरम ऊडरूत्तोङिग उलगळन्द । उम्बर कोमाने उरङ्गादेळुन्दिराय । शेम्बोर कळलडि च्चेल्वा बलदेवा । उम्बियुम नीयुम उरङ्गेलोर एम्बावाय ।

18 । उन्दु मद कळिट्रन ओडाद तोळ वलियन । नन्द गोपालन मरूमगळे नप्पिन्नाय । कन्दम कमळुम कुळलि कडै तिरवाय । वन्देङ्गुम कोळि अळैत्तन काण । मादवि ꣸ प्पन्दल मेल पल्गाल कुयिल इनङ्गळ कूविन काण । पन्दार विरलि उन मैत्तुनन पेर पाड । शेन्दामरै क्कैयाल शीरार वळै ओलिप्प । वन्दु तिरवाय मगिळन्देलोर एम्बावाय । **18**

19 । कुत्तु विळक्केरिये कोट्टुकाल कट्टिल्मेल । मेत्तेन्र पञ्च शयनत्तिन मेल एरि । कोत्तलर पूङ्ग
प्पूङ्गुळल नप्पिन्नै कोङ्गै मेल। वैत्तु क्किडन्द मलर मार्बा वाय तिरवाय।मै त्तडङ्कण्णिनाय नीयुन मणाळनै।एत्तनै पोदुम तुयिलेळ ओट्टाय काण। एत्तनै येलुम पिरिवाट्रगिल्लायाल। तत्तुवम अन्रू तगवेलोर एम्बावाय।

20। मुप्पत्तु मूवर अमरक्कु मुन शेन्रू। कप्पम तविरक्कुम कलिये तुयिल एळाय। शेप्पम उडैयाय तिरल उडैयाय । शेट्रारक्कु ঃঃ वेप्पम कोडुक्कुम विमला तुयिल एळाय। शेप्पन्न मेन मुलै च्चेव्वाय च्चिरू मरूङ्गुल। नप्पिन्नै नङ्गाय तिरूवे तुयिल एळाय। उक्कमुम तट्टोळियुम तन्दुन मणाळनै। इप्पोदे एम्मै नीराट्टेलोर एम्बावाय।

21। एट्र कलङ्ल एदिर पोङ्गि मीदळिप्प।माट्रादे पाल शोरियुम वळळल पेरूम पशुक्कळ।आट्र प्पडैत्तान मगने अरिवुराय।ऊट्रम उडैयाय पेरियाय। उलगिनिल ঃঃ तोट्रमाय निन्र शुडरे तुयिल एळाय। माट्रार उनक्कु वलि तोलैन्दुन वाशर्कण। आट्रादु वन्दुन अडिपणियुमा पोले। पेट्रियाम वन्दुन अडिपणियुमा पोले। पोट्रियाम वन्दोम पुगळन्देलोर एम्बावाय।

22 । अङ्गण मा ञालत्तरशर। अबिमान ঃঃ पङ्गमाय वन्दु निन पळिळक्कट्टिल कीळे। शङ्गम इरूप्पार पोल वन्दु तलैप्प्येय्दोम।किङ्गिणिवाय च्चेय्द तामरै प्पू प्पोले।शेङ्गण शिरू च्चिरिदे एम्मेल विळियावो । तिङ्गळुम आदित्तियनुम एळुन्दारपोल।अङ्गण इरण्डुम कोण्डेङ्गळमेल नोक्कुदियेल।एङ्गळमेल शापम इळिन्देलोर एम्बावाय।

23 । मारि मलै मुळैञ्जिल मन्नि क्किडन्दुरंङ्गुम। शीरिय शिङ्गम अरिविट्टु त्ती विळित्तु। वेरि मयिर पोङ्ग एप्पाडुम पेरन्दुदरि। मूरि निमिरन्दु मुळङ्गि प्पुरप्पट्टु।पोदरूमा पोले नी पूवैप्पू वण्णा।उन ঃঃ कोयिल निन्रिङ्ङने पोन्दरूळि । क्कोप्पुडैय ঃঃ शीरिय शिङ्गाशन त्तिरून्दु । याम वन्द ঃঃ कारियम आरायन्दरूळेलोर एम्बावाय। **23**

24। अन्रिव्वुलगम अळन्दाय अडिपोट्रि। शेन्रङ्गु त्तेन इलङ्गै शेट्राय तिरल पोट्रि। प्पोन्र च्चकडम उदैत्ताय पुगळ पोट्रि। कन्रू कुणिला एरिन्दाय कळल पोट्रि। कुन्रू कुडैयाय एडुत्ताय गुणम पोट्रि। वेन्रू पगै केडुक्कुम निन कैयिल वेल पोट्रि। एन्रेन्रून शेवगमे एत्ति प्परै कोळवान । इन्रू याम वन्दोम इरङ्गेलोर एम्बावाय। **24**

25। ओरूत्ति मगनाय प्पिरन्दु । ओर इरविल ঃঃ ओरूत्ति मगनाय ओळित्तु वळर। तरिक्किलान आगि त्तान तीङ्गु निनैन्द। करूत्तै प्पिळैप्पित्तु क्कञ्जन वयिट्रिल।नेरूप्पेन्न निन्र नेडुमाले। उन्नै ঃঃ अरूत्तित्तु वन्दोम परै तरूदि यागिल। तिरूत्तक्क शेल्वमुम शेवगमुम याम पाडि। वरूत्तमुम तीरन्दु मगिळन्देलोर एम्बावाय।

26 । माले मणिवण्णा मार्गळिनीर आडुवान । मेलैयार शेय्वनगळ वेण्डुवन केट्टियेल ।

ञालत्तै एल्लाम नडुङ्ग मुरल्वन। पालन्न वण्णत्तुन्न पाञ्चजन्नियमे । पोल्वन शङ्गङ्गळ पोय प्पाडुडैयनवे।
शाल प्पेरूम परैये पल्लाण्डिशैप्पारै । कोल विळक्के कोडिये विदानमे। आलिन इलैयाय अरूळेलोर एम्बावाय।
27। कूडारै वेल्लुम शीर गोविन्दा । उन तन्नै ःः प्पाडि परैकोण्डु याम पेरू शम्मानम। नाडु पुगळुम परिशिनाल नन्राग। शूडगमे तोळवळैये तोडे शेवि प्पूवे। पाडगमे एन्नैय पल कलनुम याम अणिवोम। आडैयुडुप्पोम अदन पिन्ने पार चोरू। मूड नेय पेय्दु मुळङ्गै वळिवार। कूडियिरून्दु कुळिरन्देलोर एम्बावाय। **27**
28।करवैगळ पिन शेन्रू कानञ्जेरन्दुण्बोम । अरिवोन्रूम इल्लाद आयक्कुलत्तु । उन तन्नै ःः प्पिरवि
पेरून्दनै प्पुण्णियम याम उडैयोम । कुरूैवोन्रूम इल्लाद गोविन्दा । उन तन्नो ःः डुरवेल नमक्किङगोळिक्क ओळियादु। अरियाद पिळळैगळोम अन्बिनाल । उन तन्नै ःः शिरूपेर अळैत्तनवुम शीरियरूळादे । इरैवा नी ताराय परैयेलोर
एम्बावाय।**28**
29। शिट्रम शिरूकाले वन्दुन्नै शेवित्तु । उण ःः पोट्रामरै अडिये पोट्रुम पोरूल केळाय। पेट्रम् मेयत्तुण्णुम कुलत्तिल पिरन्दु। नी ःः कुट्रेवल एङगळै क्कोळळामल पोगादु। इट्रै प्परै कोळवान अन्रू काण गोविन्दा। एट्रैक्कुम एळेळ पिरविक्कुम । उण तन्नो ःः डुट्रोमेयावोम उनक्के नाम आट्चेय्वोम । मट्रै नम कामङ्गळ माट्रेलोर एम्बावाय। **29**
30। वङग क्कडल कडैन्द मादवनै केशवनै । तिङगल तिरूमुगत्तु शेयिळैयार शेन्रिरैञ्जि । अङ्ग प्परै कोण्डवाट्रै । अणि पुदुवै ःः प्पैङगमल त्तण तेरियल पट्टर्बिरान कोदै शोन्न । शङग तमिळमालै मुप्पदुम तप्पामे । इङ्गिगप्परिशुरैप्पार ईरिरण्डु माल वरै त्तोळ। शेङ्गण तिरूमुगत्तु च्चेल्व त्तिरूमालाल । एङगुम तिरूवरूळ पेट्रिन्बुरूवर एम्बावाय।**30**
3। मंगलानुशासन ः तिरूवाडि पूरत्तिल शेगत्तु दित्ताळ वाळियै। तिरूप्पावै मुप्पदुम शेप्पिनाळ वाळियै।पेरियाळवार पेट्रेडुत्त पेणपिल्लै वाळिडये।पेरूम्बूदूरू मा मुनिक्कु पिन्नानाळ वाळियै। ओरनुत्तु नार्पत्तु मून्नुरै त्ताळ वाळियै। उषरअरङ्गक्र्के कण्णि उगन्दळित्ताळ वाळियै। मरूवारूम तिरूमल्ली वलनाडी वाळियै।वण्पुदवै नगर्क् कोदै मलर्प् पदङ्गळ् वाळियै।

तिरूवायमोळी व्याख्यान ः

सभी प्रबंधों में तिरूवायमोळी सर्वोत्तम महत्व का है। इस पर पूर्वाचार्यों ने विभिन्न काल में विशेष तरह से व्याख्यान दिये हैं। मूल पाठ **1102** पासुर का है परंतु इस पर लिखे गये व्याख्यान **6000** पद से लेकर **36000** पदों तक हैं। बरवर मुनि स्वामी यानी मानमला मामुनि की रचना "उपदेशरत्नमालै" में आळवार सन्तों, आचार्यों, एवं दिव्यप्रबंधम पर उपलब्ध व्याख्यानमाला संबंधित रचनाओं का उत्कृष्ट उल्लेख है।

1। <u>आरयिर पदी</u> ः **6000** पद ः तिरूवायमोळी पर यह सबसे पहला व्याख्यान है। श्रीरामानुज स्वामी के प्रोत्साहन पर तिरूक्कुरूकै प्पिरान पिल्लन ने इसे लिखा। लेखक गोष्ठीपूर्ण स्वामी के पुत्र थे और इनका व्याख्यान विष्णु पुराण पर आधारित है।

2। <u>ओनपदिनायिर पदी</u> ः **9000** पद ः कुरेश स्वामी के पुत्र पराशर भट्ट ने वेदांती नाम से प्रसिद्ध एक अद्वैत मतावलंबी को शास्त्रार्थ में पराजित कर अपना शिष्य बना लिया था जो नान जीयर या वेदांती नानजीयर के नाम से जाने गये। नान जीयर ने तिरूवायमोळी पर **100** बार मौखिक व्याख्यान दिये और इनके द्वारा लिखा गया व्याख्यान **9000** पदों में समाहित है।

3। <u>इरापत्तु नालयिरा प्पदि</u> ः **24000** पद ः नामपिल्लै यानी कलकन्रीवैरी स्वामी के दो प्रखर विद्वान शिष्य थे और दोनों युगल कृष्ण कहे जाते थे ः पेरियावचन पिल्लै, तथा वडक्कुत्तिरूवीदी पिल्लै। पेरियावचन पिल्लै ने वालमीकि रामायण के **24000** श्लोक की तरह तिरूवायमोळी पर **24000** पदों में व्याख्यान की रचना की। पेरिया वचन पिल्लै ने रामायण एवं तिरूवायमोळी को अनमोल ग्रंथ बताया है। तिरूवायमोळी के अतिरिक्त पेरियावचन पिल्लै की अन्य सभी प्रबंधों पर रहस्यार्थ के साथ टीकायें उपलब्ध हैं। यह विदित हो कि सभी आळवार संतों द्वारा विरचित कुल **23** प्रबंधों पर एकमात्र पेरियावचन पिल्लै ने ही सबों पर टीका लिखी है।

4। <u>ईडू</u> ः **36000** पद ः जैसा कि ऊपर बताया गया है कि नामपिल्लै के एक प्रखर प्रज्ञा वाले शिष्य वडक्कुत्तिरूवीदी पिल्लै थे जो पिल्लै लोकाचार्य स्वामी के पिता थे और उन्होंने **36000** पदों में तिरूवायमोळी पर अपने गुरू नामपिल्लै द्वारा दिये गये मौखिक व्याख्यान को लिपीबद्ध किया। _ श्रीभाष्य की एक टीका श्रुतप्रकाशिका है जो **36000** श्लोकों में है। तिरूवायमोळी के **36000** पदों वाले व्याख्यान की रचना श्रुतप्रकाशिका के पूर्व हो चुकी थी परंतु बाद में विद्वज्जनों ने दोनों की तुलना की तथा तिरूवायमोळी के व्याख्यान को 'ईडू' से संबोधित किया यानी जो श्रुतप्रकाशिका के समान है। _इसीलिए इसे ईडू कहा जाने लगा। जब वडक्कुत्तिरूवीदी पिल्लै ने इसकी रचना कर अपने आचार्य नामपिल्लै

को समर्पित किया था तो इसका अवलोकन करके आचार्य बहुत प्रसन्न हुए परंतु उन्होंने यह कहते हुए इस रचना को अपने पूजा घर में रख दिया कि बिना उनकी अनुमति के इसकी रचना हुई है। कुछ समय बाद नामपिल्लै ने इस रचना को अपने प्रिय शिष्य इयुन्नी माधव को दे दिया। माधव स्वामी ने इसे अपने पुत्र पद्मनाभ को दिया। अळगर कोईल सन्निधि यानी मालीरूञ्जोलै में भगवान की सन्निधि में यह रखा रहा था और माधव स्वामी ने अपने पुत्र पद्मनाभ को दिया था।

पद्मनाभ स्वामी ने इसे अपने शिष्य नालुर पिल्लै को दिया जिनका दूसरा नाम कोळवराह प्पेरूमाल भी था। जब पद्मनाभ स्वामी इसे अपने प्रिय शिष्य को देना चाहे तो वे शिष्य के साथ कांची श्रीवरदराज स्वामी के समक्ष गये। पद्मनाभ स्वामी ने इसे आचार्य शिष्य परंपरा में गुप्त रखने की मंशा के साथ शठारी एवं ईडू को जब नालुर पिल्लै को दिया तो वरदराज भगवान की मुखाकृति बदल गयी एवं अर्चक ने पद्मनाभ स्वामी को बताया कि पेरूमाल चाहते हैं कि यह अब गुप्त न रहके वैष्णवों के बीच प्रसारित हो। पद्मनाभि स्वामी ने इस आदेश को स्वीकार किया एवं अपने शिष्य नालुर पिल्लै को इसे प्रसारित करने को कहा। नालुर स्वामी ने ईडू को लेकर वरदराज भगवान के मन्दिर की प्रदक्षिणा की एवं इसके प्रसार में लग गये। तदुपरांत नालुर स्वामी ने इसे अपने पुत्र अच्चन पिल्लै को दिया जिन्होंने उदारतावश इसे अपने शिष्यों में प्रसारित किया और इन्हीं शिष्यों में तिरूवायमोळी पिल्लै भी थे। स्मरण रहे कि तिरूवायमोळी पिल्लै ही बरवरमुनि स्वामी के आचार्य थे जिन्होंने रंगनाथ भगवान के समक्ष ईडू को पेरिया जीयर यानी बरवरमुनि स्वामी को समर्पित कर दिया था।

5 | <u>पन्नीरायिरा प्पदी</u> ः **12000** पद ः इस व्याख्यान की रचना अळगिया मानवला जीयर ने की। इसमें तिरूवायमोळी के पदों के शब्दों के अर्थ के साथ गूढ़ार्थ को उदभासित किया गया है। लेखक पेरियावचन पिल्लै के पुत्र एवं आचार्य नयनार अच्चन पिल्लै के शिष्य थे। विपक्षियों को परास्त करने के कारण आपको 'वादीकेशरी' कहा जाता है।



श्री आण्डाल, श्री रङ्गमन्नार – श्री विल्लीपुत्तुर